कृत्तिवास रामायण

[लंका काण्ड]

(तुलसी-रामचरितमानस से एक शती प्राचीन)

रचयिता सन्त कृत्तिवास

हिन्दी-अनुवाद सहित देवनागरी-लिप्यन्तरण

नन्दकुमार अवस्थी

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

प्रथम संस्करण— १९७३

मूल्य ८·००

मुद्रक—

वाणी प्रेस,

'प्रभाकरनिलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

विषय-प्रवेश

बंगला-देवनागरी वर्णमाला

অ अ	আ आ	ই इ	ঈ ई	উ उ
ঊ ऊ	ঋ ऋ	৯ ऌ	এ ए	ঐ ऐ
ও ओ	ঔ औ		অং अं	অঃ अः
ক क	খ ख	গ ग	ঘ घ	ঙ ङ
চ च	ছ छ	জ ज	ঝ झ	ঞ ञ
ট ट	ঠ ठ	ড ड	ঢ ढ	ণ ण
ত त	থ थ	দ द	ধ ध	ন न
প प	ফ फ	ব ब	ভ भ	ম म
য य	র र	ল ल	ব व	শ श
ষ ष	স स	হ ह	ক্ষ क्ष	জ্ঞ ज्ञ
শ্র श्र	ড় ड़	ঢ় ढ़	ৎ त्	য় य़

वाणी, भाषा और लिपि

मन के भावों और उद्गारों को मुख से प्रकट करना, यही वाणी है। पशु, पक्षी अथवा मनुष्यों में जब कोई वर्ग एक प्रकार की वाणी बोलता है, उस बोली से परस्पर भावों को कहता, सुनता और समझता है, तब वाणी के उस प्रकार को उस विशिष्ट-वर्ग की भाषा की संज्ञा दी जाती है। और उसी भाषा को जब चिह्नों-आकृतियों में लिख कर प्र-

किया जाता है, तब उन्हीं चिह्नों और आकृतियों को उस भाषा-विशेष की लिपि कहा जाता है।

कुछ विद्वानों के मत से धरातल पर पृथक्-पृथक् भूखण्डों में विभिन्न समयों पर मानवों की सृष्टि और विकास होता रहा है। वे सब एक ही स्थान पर एक ही मानव से उत्पन्न नहीं हैं। फलत: उन सब की भाषाएँ भी एक दूसरे से बिलकुल पृथक् और स्वतंत्र हैं। इन पृथक् कुलों को ये विद्वान् आर्य, मंगोल, सेमेटिक, हेमेटिक, द्रविड़ आदि की संज्ञा देते हैं।

किन्तु भारतीय मत की घोषणा इसके विपरीत है, और इस्लामी तथा ख्रीष्ट मान्यता भी उसका अनुमोदन करती है। इस मत के अनुसार सारी मानव जाति एक ही मूल पुरुष मनु अथवा आदम की सन्तान हो कर मानव अथवा आदमी कहलायी। कालान्तर में विभिन्न भूखण्डों में फैलने, एक दूसरे से अलग-अलग होने और वहाँ की विशिष्ट जलवायु और संस्कारों से प्रभावित होने के फल-स्वरूप वह मानव जाति अनेक रूप, रंग, आकार और बोलियों में विभक्त होती गई। यह परिवर्त्तन लाखों वर्षों से चलते आ रहे हैं और इसलिए उन मानव-समूहों के रूप, रंग, आकार और बोलियों के अन्तर भी इतने सघन हो गये हैं कि ज्ञान की उपेक्षा करनेवाले और केवल तर्क, अनुमान, प्रयोग, अनुसंधान आदि भौतिक साधनों को ही ज्ञान मान कर उन पर निर्भर रहनेवाले पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके अनुवर्ती भारतीयों का भ्रमित हो जाना स्वाभाविक ही है। यह बात इनसे ओझल हो जाती है कि कितना भी बड़ा वैषम्य इन जातियों के लक्षणों में दिखाई देता हो, उनकी आकृतियों और भाषाओं में कुछ ऐसे तथ्य लाखों वर्ष बाद भी झलकते हैं जो सारी मानव-जाति को किसी पुरातनकाल में एक मूल मानव का पितृत्व प्रदान करते हैं।

भारतीय वाङ्मय के सृष्टिक्रम-सम्बन्धी विशाल ज्ञानकोश को विस्तार-भय से किनारे भी रख दें, तो भी जन-साधारण की समझ में आनेवाली कुछ बातें तो हमारे मत की पुष्टि करती ही हैं। उदाहरण के लिए—(१) द्रविड़कुल की भाषाएँ आर्यकुल की भाषाओं से पाश्चात्य मत में-मूलत: पृथक् मानी गई हैं। किन्तु संस्कृत की वर्णाक्षरी, उनका वर्गीकरण तथा लिपि का बायें से दाहिने लिखा जाना उनके समान ही है। इसके विपरीत, आर्यकुल की अनेक भाषाओं का खरोष्टी लिपि में (दायें से बायें) लिखा जाना और वर्णों की संख्या, क्रम, वर्गीकरण आदि में संस्कृत से बड़ा अन्तर है। (२) अर्वी और संस्कृत की शब्दावली और लिपि में नाममात्र को भी मेल नहीं है, किन्तु उनकी व्याकरण में बड़ी समानता है, जबकि संस्कृत का अपने आर्यकुल ही की अन्य भाषाओं के व्याकरण से साम्य

नगण्य सा है। (३) उत्तर-पश्चिम में सुदूरस्थ ईरान की अवेस्ता और गाथाओं की भाषा में असुर का अहुर उच्चारण है। बीच के पूरे आर्यावर्त्त में इसका अभाव होने के बाद उत्तर-पूर्व में असम प्रदेश में फिर दस को दह और गोसाईं को गोहाईं बोलते हैं। (४) नेपाल के आदिम निवासी आर्यकुल के रूप, आकृति से सर्वथा भिन्न हैं। किन्तु वहाँ कुछ ही समय से आबाद आर्यकुल के राज-परिवार तथा राना-परिवार की आकृतियों पर नेपाली प्रभाव प्रत्यक्ष है; आदि, आदि।

भारतीय भाषाएँ

अस्तु, जब मानव मात्र एक मनु (आदम) की सन्तान हैं और आज पृथ्वी पर उपलब्ध विविध भाषाओं और बोलियों का आदि-स्रोत एक है, तब भारत के निवासियों और भारतीय भाषाओं को मूलत: पृथक् मानना, उनका बुनियादी वर्गीकरण करना, कहाँ तक समुचित है। जहाँ तक हिन्दी, गुरुमुखी, सिन्धी, राजस्थानी, ओड़िया, बंगला, असमिया, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, सिंहली आदि भाषाओं, लिपियों अथवा बोलियों का सम्बन्ध है इन सब की वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण आदि में इतना अधिक साम्य है कि उनको एक परिवार से बाहर समझने की रत्ती भर गुंजाइश नहीं। ये सभी प्राचीन संस्कृत की पौत्री और भारतीय जनपदों में शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत अथवा उनके अपभ्रंशों की पुत्रियाँ हैं। अलबत्ता भारत की दक्षिणी भाषाओं—मलयाळम, तॆलुगु, कन्नड़ और तमिऴ—का शेष भारतीय भाषाओं और लिपिओं से भेद अधिक दूर का है। किन्तु उनके अक्षरों का देवनागरी लिपि के समान ही वर्गीकरण तथा संस्कृत के तद्भव-तत्सम अनेक शब्दों का घुलन-मिलन उनको भी अन्य भारतीय भाषाओं के समीप ले आता है।

किन्तु उर्दू को तो हिन्दी से पृथक् मानना ही भूल है। उसका तो हिन्दी से वही सम्बन्ध है जो एक रूह का दो क़ालिब से—एक प्राण का दो शरीर से। उर्दू-हिन्दी की व्याकरण, क्रियाओं के विभिन्न कारकों, कालों में प्रत्यय और रूप—ये सब एक समान हैं। अ़रबी लिपि में लिखी जाने अथवा अ़रबी-फ़ारसी भाषाओं के शब्दों के अधिक समाविष्ट हो जाने से वह पृथक् भाषा नहीं हो सकती। कदाचित् लोगों को कम पता है कि नगरों में नहीं ग्रामों तक में नित्य बोली जानेवाली और हिन्दी कही जानेवाली भाषा में एक चौथाई से अधिक शब्द अ़रबी, फ़ारसी, तुर्की आदि के बार-बार बोले जाते हैं। उनमें ऐसे भी अ़रबी शब्दों की भरमार है जिनको लोग ठेठ हिन्दी की सम्पत्ति समझने लगे हैं, उनके अ़रबी-फ़ारसी होने की कल्पना भी नहीं करते। जैसे हलुवा, साइ़त (मुहूर्त्त),

मेहरिया, हमेल, तरह, अन्दर, अगर, अचार, अजगर, अतलस, अबीर, अमीर, गरीब, अरक, मेवा, मल्लाह, मसखरा, मक्कर, लाला, लहास, स्याही, संदूक, रूमाल आदि।

उद्देश्य

उपर्युक्त भाषाई पहलुवों के अलावा, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक दृष्टि से भी सारा देश परस्पर ऐसा गुथ गया है कि उसमें एकात्म-भाव के सर्वत्र दर्शन होते हैं। उसके प्रभाव की छाप सभी भाषाओं के साहित्य पर मौजूद है। इसलिए अपने-अपने क्षेत्र में विभिन्न लिपियों के फलते-फूलते रहने के बावजूद, यह ज़रूरी है कि राष्ट्र में सबसे अधिक सुपरिचित और व्याप्त देवनागरी लिपि के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा और साहित्य को भारत के कोने-कोने तक पहुँचाया जाय। भारत भूमि के हर कोने में प्रस्फुटित वाङ्मय को हर भारतवासी तक पहुँचाया जाय। लिपि और भाषा के सेतुकरण द्वारा सारे राष्ट्र का एकीकरण—यही इस 'भाषा-शिक्षण-सीरीज़' का उद्देश्य है।

उद्देश्य-पूर्ति का माध्यम देवनागरी लिपि

आसेतु हिमालय, सारे देश के साहित्य, संस्कृति, आचार-विचार और सन्तों की वाणी को, किसी एक क्षेत्र अथवा समुदाय तक सीमित न रहने देकर, सारे भारतीयों की सामूहिक सम्पत्ति बनाना ही राष्ट्रीय एकीकरण की उपलब्धि है। इस्लामी हदीसें, फ़ारसी और उर्दू का विशाल गद्य-पद्य साहित्य, तमाम शायरों के दीवान, कुल्यात, मस्नवी और अदबी नावेल, नरसी मेहता के भजन, टैगोर की गीताञ्जलि, तिरुवल्लुवर का तिरुक्कुरळ् और सन्त नानक की अमर वाणी क्रमशः उत्तरप्रदेश, गुजरात, बंगाल, तमिळनाडु और पञ्जाब को ही नहीं, अपितु सारे देश को प्राण प्रदान करें, यह उनके अनुवाद मात्र के द्वारा संभव नहीं। जिस भाषारूपी सुधाभाण्ड से यह अमृत प्रवाहित हुए हैं उस भाषा के बोध के विना वह प्राण सुलभ नहीं।

प्रत्यक्ष प्रणाली (डाइरेक्ट मेथड)

अस्तु, एक ही मार्ग है। देवनागरी लिपि, जो सारे देश में अपेक्षाकृत सर्वाधिक व्याप्त है, भारतीय प्राचीन वाङ्मय की भाषा—देवभाषा संस्कृत की अपनी लिपि है, उसके माध्यम से हम क्षेत्रीय भाषा का आरंभिक ज्ञान प्राप्त करें। देवनागरी लिपि में क्षेत्रीय भाषाओं की वर्णमाला, उनके विशेष अक्षर-उच्चारण, मात्राएँ, सामान्य व्याकरण, वाक्यरचना,

देशज एवं संस्कृत के तत्सम-तद्भव शब्दों के उदाहरण आदि का कामचलाऊ ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत सम्बन्धित क्षेत्रीय भाषा के किसी मान्य लोक-प्रिय ग्रंथ को चुन कर उसके अध्ययन द्वारा अपने अर्जित उपर्युक्त ज्ञान का अभ्यास किया जाय। धीरे-धीरे, अभ्यास के द्वारा उस भाषा में तथा अन्य वाञ्छित भाषाओं का अभीष्ट ज्ञान सुलभ होगा।

एक भाषाक्षेत्र में अन्यभाषा-भाषी निवासी

यह तो हुई भावनात्मक एकता की बात। देवनागरी लिपि के माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं को पढ़ने-समझने की ज़रूरत भी पैदा हो गई है। बहुत बड़ी संख्या में एक क्षेत्र या राज्य के निवासी दूसरे क्षेत्र अथवा राज्य में स्थायी तौर पर बस गये और बसते जा रहे हैं। वह अपने परिवार और सक्षेत्रीयों के साथ परस्पर तमिळ, बंगला, सिन्धी आदि अपनी मातृभाषाएँ बोलते हैं, और परम्परा के अभ्यास से सदैव बोलते भी रहेंगे, किन्तु उस क्षेत्र-विशेष में शिक्षा-दीक्षा पाने के कारण बच्चे अपनी लिपि के ज्ञान से अपरिचित रह जाते हैं। फलतः नित्य की बोलचाल को छोड़ कर, अपनी मातृभाषा के सम्पन्न और बहुमूल्य वाङ्मय से वे अपरिचित होते जा रहे हैं, और इस प्रकार अपनी क्षेत्रीय संस्कृति से दिन प्रति दिन दूर होते जायँगे। अन्य क्षेत्रों में आवासित उन परिवारों, जिनकी संख्या आज के आज़ाद भारत में अपरिमित है, के लिए तो अनिवार्यतः आवश्यक है कि देवनागरी लिपि में अपनी मातृभाषा के अमूल्य साहित्य को पढ़ कर अपनी क्षेत्रीय साहित्यिक निधि को अपने बीच संजोये रखें।

अन्य लिपियों का विरोध नहीं

उपर्युक्त प्रयास से यह किसी प्रकार अभीष्ट नहीं कि भारत में प्रयुक्त अन्य लिपियों के शिक्षण अथवा प्रचार में ज़रा भी कमी हो। वह वैसे ही, वरन् और अधिक फलती-फूलती रहें। किन्तु यह भी न भूलना चाहिए कि अन्य भाषाओं और लिपियों से सम्बन्धित जन, अथवा उनकी लिपि और भाषा के ही लोग जो परिस्थिति-वश दूसरे क्षेत्रों में स्थायी तौर पर बस गये हैं, उनको उनके प्रचुर साहित्य से वञ्चित होने की परिस्थिति पैदा न होने पाये। दो हज़ार वर्ष पूर्व तमिलनाडु के अमर सन्त तिरुवल्लुवर का 'पञ्चम वेद' समझा जाने वाला नीति-ग्रंथ 'तिरुक्कुऱळ्' अपनी लिपि के साथ-साथ देवनागरी लिपि के कलेवर में राष्ट्र के कोने-कोने में लोकप्रिय होने की स्थिति में आ जाय, यह संकल्प भी कम पुनीत नहीं। जय भारत!

बंग प्रदेश (बंगाल)

वंग प्रदेश भारत का पूर्वी सीमान्त राज्य है। आज़ादी प्राप्त होने के समय देश के बटवारे में पश्चिमी बंगाल (भारत) और पूर्वी बंगाल (पाकिस्तान) —इन दो भागों में बट गया। किन्तु राजनैतिक बटवारे से बंगला भाषा के क्षेत्र में कोई कमी नहीं आने पाई। पाकिस्तान सरकार के द्वारा उर्दू के लिए हठ के बावजूद पूर्वी पाकिस्तान में बंगला भाषा ही राज्य-भाषा है, जिसके फलस्वरूप पाकिस्तान विघटित हुआ और स्वतंत्र 'बंगला देश' का जन्म हुआ। इसी पुनीत प्रदेश में प्राचीन काल में सूर्यवंशी महाराज सगर के साठ हज़ार पुत्र कपिल मुनि के शाप से भस्म हुए थे, जिनको सद्गति देने के लिए राजा भगीरथ के घोर तप के फल-स्वरूप भागीरथी गंगा धरती पर प्रवाहित हुई। सगर-सुतों के तरने के स्थान पर ही गंगा-सागर का मेला हर साल लगता है। द्वादश महाविद्याओं में कलकत्ता की काली देवी भी एक हैं। नदिया (नवद्वीप) में सर्वोपरि न्यायशास्त्र का विश्वविद्यालय था। नदिया की शान्तीपुरी साड़ियाँ और ढाका की मल-मल संसार में प्रख्यात थीं। कलकत्ता और चटगाँव प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं, जहाँ से सारे विश्व से व्यापारी और सामाजिक सम्बन्ध है। दुर्गापूजा बंगालियों का महान् पर्व है। बड़ी सजावट और धूमधाम रहती है।

बंगला भाषा और बंग भूमि के प्रति अनन्त निष्ठावान् बंगालियों ने राष्ट्र को बड़ी-बड़ी विभूतियाँ दीं। बन्देमातरम के मंत्र-द्रष्टा बंकिम, नोबुल पुरस्कार-विजेता रवीन्द्रनाथ ठाकुर, द्विजेन्द्रलाल राय जैसे नाटककार, शरत् बाबू जैसे उपन्यासकार, सर माइकेल मधुसूदन दत्त जैसे कवि, राजा राममोहन राय, विपिनचन्द्र पाल जैसे समाज-सुधारक, गोस्वामी तुलसीदास से एक शती पूर्व बंगला रामायण के रचयिता सन्त कृत्तिवास, महाप्रभु चैतन्य, योगिराज अरविन्द घोष, स्वामी विवेकानन्द, रासबिहारी बोस तथा अनन्त क्रान्तिकारी वर्ग, देश के महान् नेता सुभाषचन्द्र बोस—कितने गिनाये जायँ, बंग की उर्वरा भूमि ने राष्ट्र को प्रत्येक क्षेत्र में आद्वितीय नर-रत्न प्रदान किये। भारत का वर्त्तमान उपन्यास-साहित्य का जन्म बंग-साहित्य ही से हुआ है। अस्तु उस मधुर भाषा का आरंभिक ज्ञान प्राप्त कर, उसके समृद्ध साहित्य का रसास्वादन कीजिए। सच मानिए, देवनागरी लिपि के माध्यम से बंगला भाषा नितांत सरल है।

बंगला वर्णाक्षरी, उच्चारण तथा भाषा

बंगला की वर्णमाला 'देवनागरी वर्णमाला' के समान है। केवल 'ज' दो प्रकार का है। एक वर्ग्य 'ज' जो जल, जन्तु आदि में प्रयुक्त होता है। दूसरा अवर्ग्य 'ज' जो शब्द के आदि में 'य' होने पर 'ज' पढ़ा जाता

है, जैसे यदि-जदि, यार-जार, यज्ञ-जज्ञ। किन्तु मध्य या अन्त में आने पर 'नियम' 'समय' के अनुसार 'य' ही बोला जाता है। 'रेफ' के साथ 'य' अन्त में होने पर भी 'ज' पढ़ा जायगा, जैसे 'सूर्य्य' का 'सूर्ज्ज'। देवनागरी-लिप्यन्तरण में अवर्ग्य 'ज' य अथवा ज दोनों प्रकार से लिखा गया है। पढ़ने में बंगला-पद्धति पर दोनों सूरतों में 'ज' ही पढ़ना उचित होगा; किन्तु हिन्दी-पद्धति पर 'य' अथवा 'ज' इच्छानुसार पढ़ सकते हैं। उसी प्रकार 'व' को प्रायः 'ब' पढ़ते हैं। 'ण' का उच्चारण भी प्रायः 'न' के समान है।

संस्कृत के तो सभी तत्सम शब्द हिन्दी के समान ही बंगला में प्रयुक्त होते हैं। और भी शब्द जैसे के तैसे दोनों भाषाओं में बोले जाते हैं—जैसे बासन, बेलन, घड़ा, कुदाल, खुरपी, हाँड़ी, खाओ, जाओ, ताला, गरीब, गरम, कान, शहर, खाट आदि। कुछ हेर-फेर के साथ बोले जाने वाले शब्द—जैसे तुमि-तुम, दुध-दूध, घड़ि-घड़ी, पछेन-पीछे, किछु-कुछ, धोया-धोबी, पछन्द-पसन्द, खिचुड़ी-खिचड़ी, फुल-फूल, साँड़ासी-सँड़सी, गरु-गोरू, दइ-दही, दोकान-दुकान, मशला-मसाला, मेथर-मेहतर, पाशे-पास, भेतरे भीतर, ओपरे-ऊपर, दोयात-दावात, काशि-खाँसी, दिदि-दीदी, रुटि-रोटी, अड़हर-अरहर, मुग-मूंग आदि।

अक्षरों की लिखावट प्रायः देवनागरी ही का विकृत रूप है। पुस्तक के तीसरे पृष्ठ पर 'बंगला देवनागरी वर्णमाला' का चार्ट दिया हुआ है। वैसे बंगला और असमिया लिखावट, तथा प्रत्यय, कारक आदि में काफ़ी समानता है। "यह अच्छा बकस है" में हिन्दी में 'है' लगाया जाता है। बंगला में संस्कृत की पद्धति सर 'एइटा सुन्दर बाक्स' पर्याप्त है। पाठकों के ज्ञान के लिए आगे आरंभिक व्याकरण का प्रकरण दिया गया है। व्याकरण का सामान्य बोध हो जाने के बाद बंगला का लोकप्रिय श्रेष्ठ काव्य 'कृत्तिवास रामायण लंका काण्ड' का पर्याप्त अंश देकर 'प्रत्यक्ष प्रणाली' द्वारा भाषा के अध्ययन का साधन प्रस्तुत किया गया है। व्याकरण-प्रकरण में एक-दो क्रियाओं के विभिन्न कालों तथा संज्ञा-सर्वनाम की विभक्तियों के उदाहरण को देखकर, उसी प्रकार अन्य क्रियाओं आदि के रूप बनाए जा सकते हैं। अगले पृष्ठ पर प्रस्तुत पंक्तियों में पाठक देखेंगे कि हिन्दीभाषी के लिए, देवनागरी लिपि में रूपान्तरित कर देने मात्र से बंगला भाषा को समझना कितना सुगम हो गया है।

शमन-दमन रावणराजा रावण-दमन राम * शमनभवन नाहय गमन ये लय रामेर नाम
राम नाम जप भाइ अन्य कर्म्म पिछे * सर्व्व कर्म्म धर्म्म रामनाम बिना मिछे १
राम नाम लइते ना कर भाइ हेला * भवसिन्धु तरिवारे राम-नाम भेला
रामनाम स्मरणे यमेर दाय तरि * भवसिन्धु तरिवारे रामपद तरी २
श्रीराम स्मरणे येबा महारण्ये जाय * धनुर्ब्बाण लये राम पश्चाते गोड़ाय
एमन रामेर गुण कि दिब तुलना * पादस्पर्शे शिला नर, नौका हय सोना ३
पार कर रामचन्द्र पार कर मोरे * दीन देखि नौका राम लये गेल दूरे
वार सने कड़ि छिल गेल पार ह'ये * कड़ि बिना पार करे तारे बलि नेये ४
ध्यान पूजा तंत्र मंत्र यार नाहिं ज्ञान * तारे यदि करे पार तबे जानि राम
योग-याग तंत्र-मंत्र जेइ जन जाने * तुमि कि तराबे तारे तरे निजगुने ५
मोर संगे कड़ि नाइ, पार हब किसे * कर वा न कर पार कूले आछि ब'से
नेयेर स्वभाव आमि जानि भालेभाले * कड़ि ना पाइले पार करे सन्ध्याकाले ६

जिस यम का दमन रावणराज ने किया उस रावण का दमन करनेवाले राम हैं। जो राम का नाम लेता है उसको यमलोक नहीं जाना पड़ता। भाई! राम-नाम जपो, दूसरा काम बाद में। राम-नाम के बिना सारे धर्म-कर्म व्यर्थ हैं ॥ १ ॥ भाई, राम-नाम लेने में आलस मत करना, भवसागर पार करने के लिए राम-नाम नौका के समान है ॥ २ ॥ राम-नाम के स्मरण से यम के हाथों से निस्तार मिल जाता है। भवसिन्धु को पार करने के निमित्त राम के चरण, तरणि (नौका) के समान हैं ॥ ३ ॥ श्रीराम का स्मरण कर जो घनघोर जंगल में भी जाता है तो राम उसके पीछे-पीछे धनुष-बाण लिये चलते हैं ॥ ४ ॥ राम के ऐसे ही गुण हैं, उनकी क्या तुलना दूँ। उनके चरणों के स्पर्श से पत्थर प्राणी में बदल जाता है और नाव सोने की बन जाती है ॥ ५ ॥ जिनके पास (उतराई देने के लिए) कौड़ी थी वे पार लग गये, बिन-कौड़ी के भी पार लगाओ तो समझूँ कि नाविक हो। जिसको ध्यान-पूजा, तंत्र-मंत्र का ज्ञान न हो उसको पार लगाओ तो जानूँ कि राम हो। जो व्यक्ति योग-याग और तंत्र-मंत्र में कुशल है वह तो अपने ही गुण के बूते पार हो जायगा, तुम उसे क्या पार लगाओगे? मेरे पास कौड़ी नहीं है. मैं पार कैसे जाऊँगा? चाहे पार लगाओ या न लगाओ मैं तो तट पर बैठा ही रहूँगा। केवटों की आदत से मैं भली-भाँति परिचित हूँ—कौड़ी न मिलने पर भी वे शाम को पार कर देते हैं ॥ ६ ॥

उपर्युक्त पंक्तियों में संत कृत्तिवास ने राम-नाम-माहात्म्य का मार्मिक वर्णन किया है। अब बंगला भाषा पर ध्यान दीजिए। (१) गमन, जप, शमन, दमन, भवन, मृत्युकाले, कर्म्म, धर्म्म, सर्व्व, विमान, स्मरण, ध्यान, गुण, मंत्र, तंत्र, आदि प्रायः नब्बे प्रतिशत शब्द संस्कृत के तत्सम अथवा सामान्य तोड़-मरोड़ के साथ तद्भव रूप में वर्तमान हैं, जो न केवल हिन्दी वरन् भारत के अन्य भाषाभाषियों को भी सुपरिचित हैं। (२) मृत्युकाले, देवलोके, स्मरणे, महाराज्ये, सन्ध्याकाले आदि अधिकरण कारक (संस्कृत के अनुरूप) जिसमें 'में' विभक्ति-चिह्न लगता है—व्याकरण के पृष्ठ बाइस पर 'कारक' देखिए। अर्थात् मृत्युकाल में, देवलोक में, स्मरण करने पर, महा अरण्य में, सन्ध्याकाल में, आदि। (३) नर, चड़िया,

जाय, भाइ, भवसिन्धु, शुनियो, नाहि, देखि, चूर आदि भी प्राय: सभी भाषाओं में जाने-समझे शब्द हैं। (४) ये, सर्व्व, यदि, यमेर, येवा, योग-याग आदि शब्दों को बंगला-असमिया की पद्धति पर क्रमश: जे, सर्ब्ब, जदि, जयेर, जेवा, जोग-जाग आदि पढ़ें, अथवा शुद्ध हिन्दी के ढङ्ग पर उनके मौलिक रूप में पढ़ें। (५) रामेर, यमेर, यार, आदि में सम्बन्ध कारक है, जिसका हिन्दी में विभक्तिचिह्न 'का, की, के' है। क्रमश: अर्थ— राम का, यम का, जिसका आदि—देखिए व्याकरण पृष्ठ अठारह 'कारक'। इस प्रकार क्रियाओं के काल, वचन, कारक, अव्यय आदि को व्याकरण-अंश से समझिए और दूसरी क्रियाओं तथा शब्दों के रूप भी उसी प्रकार बनाने का अभ्यास कीजिए। (६) मिछे, डाके, हेला, भेला गोड़ाय कड़ि (कौड़ी), आदि देशज बंगला शब्दों को ऊपर दिये हिन्दी अनुवाद की सहायता से समझिए और ध्यान में चढ़ाइए ताकि आगे पाठ में उनके पुन: आने पर आपको वह शब्द याद रहें। मूल ग्रंथ के साथ हिन्दी अनुवाद देने में यह एक उद्देश्य है। (७) कुछ शब्द जैसे गोड़ाय (अवधी में गोड़ अर्थात् पैर), मिछे (कदाचित् मिथ्या अर्थात् व्यर्थ) आदि देशज शब्द भी अन्य क्षेत्रीय शब्दों से मिलते-जुलते हैं, अथवा संस्कृत से बिलकुल बदल कर देशज का रूप ले लेते हैं। कुछ शब्द काव्य में छन्द की गति अथवा अन्त्यानुप्रास (तुकान्त) के लिए अपने वास्तविक रूप से कुछ बदल कर सभी भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं, वही बात बंगला काव्य में भी वर्तमान है। वह भी हिन्दी अनुवाद के सहारे आसानी से समझ में आ जायँगे।

विदेशी शब्द

कुछ विदेशी शब्द बंगला भाषा में ऐसे घुलमिल गये हैं कि उनका अंग बन गये हैं। वे ही शब्द न केवल हिन्दी वरन् अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्राय: सुपरिचित हैं। ऐसे शब्दों के कुछ उदाहरण :—

अर्सा, आपस, आदमशुमार, आफसोस, आशनाइ, आशरफि, आसमान, इशारा, किशमिश, कूर्निश, क्लास, खरगोश, खुशि, चशमा, जिनिस, तल्लाश, तामाशा तोशक, दुशमन, नकशा, नालिश, नोटिस, पोस्ट, बकशिश, बदमाश, बिस्कुट, बुरुश, मासूल, मुन्शी, मुश्किल, लश्कर, लाश, शयतान, शरम, शरिक, शर्त, शहर, शहिद, शागरेद, शादि, शबाश, शामियाना, शामिल, शुरु, शेमिज, शोरगोल, सादा, सुपारिश, स्टीमार, स्टेशन, स्ट्रीट, हामेशा, हिस्टिरिया, हूशियार, आदि।

क्षेत्रीय उच्चारण

लिखने-पढ़ने-समझने के लिए उपर्युक्त विवरण है। अब रही क्षेत्रीय-उच्चारण की बात। प्रत्येक क्षेत्र की जलवायु तथा परम्परागत संस्कार व अभ्यास का उच्चारण पर प्रभाव अनिवार्य है। उदाहरण के लिए बंगला में 'जल' लिख कर 'जोल', 'कृष्ण' लिख कर 'कृष्टो' पढ़ते हैं। उसी प्रकार पन्जाबी (गुरमुखी) में 'घड़ी', 'घण्टाघर' लिखते हैं, किन्तु 'घड़ी', 'घण्टा' तथा 'घर' में 'घ' का उच्चारण 'घ' और 'ग' के बीच का करते हैं। यह उनका परम्परागत भाषाई प्रयत्न है। अत: दूसरे क्षेत्रों के निवासियों के लिए दो विकल्प हैं। (१) एक तो यह कि अपने निजी क्षेत्र के प्रयत्नों के अनुसार जैसा लिखा है वैसे पढ़ें—जैसे जल, कृष्ण, घड़ी, घण्टाघर आदि। यह भाषा की अशुद्धि न होगी। अलबत्ता प्रयत्नों की कमी कही जायगी। (२) दूसरा यह कि उस भाषा के क्षेत्र में प्रयुक्त प्रयत्नों के तदनुरूप ही उच्चारण करने का शौक रखें। इस दशा में उनको उस भाषा और क्षेत्र से सम्बन्धित जनों से सत्संग और आलाप-संलाप का सहारा लेना होगा। इस शौक की पूर्ति पुस्तकों के आधार पर असंभव है।

आगे आरंभिक व्याकरण प्रस्तुत है :—

सर्वनाम

[बंगला भाषा में तीन पुरुषों (उत्तम, मध्यम, अन्य) तथा कर्त्ता, कर्म, करण, आदि सात कारकों और एक तथा बहु-वचनों में सर्वनामों के रूप इस प्रकार बनते हैं :—]

आमि	मैं, मैंने	तुइ	तू, तूने
आमाके, आमाय	मुझको, मुझे	तोके	तुझको, तुझे
आमाके दिये, आमा द्वारा	मुझसे	तोके दिये, तोर द्वारा	तुझसे
आमाके, आमार जन्य	मेरे लिए	तोके, तोर जन्य	तेरे लिए
आमा हते, आमार चेये	मुझसे	तोर थेके, तोर चेये	तुझसे
आमार	मेरा, मेरी, मेरे	तोर	तेरा, तेरी, तेरे
आमाते, आमार ओपर	मुझमें, मुझपर	तोते, तोर ओपर	तुझमें, तुझपर
आमरा	हम, हमने	तुमि	तुम, तुमने
आमादेर	हमको, हमें	तोमाके, तोमाय	तुमको, तुम्हें
आमादेर दिये, आमादेर द्वारा	हमसे	तोमाके दिये, तोमार-द्वारा	तुमसे

आमादेर, आमादेर-जन्य	हमारे लिए	तोमाके, तोमार जन्य	तुम्हारे लिए
		तोमा हते (चेये)	तुमसे
आमादेर हते (चेये)	हमसे	तोमार	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
आमादेर	हमारा, हमारी, हमारे		
आमादेर मध्ये, आमादेर-ओपर	हममें, हमपर	तोमाते, तोमार-ओपर	तुममें, तुमपर
		आपनि	आप, अपने
निज	अपने ने	आपनाके	आपको
निजेके	अपने को	आपनाके दिये, आपनार द्वारा	आपसे
निजेके दिये, निजेर द्वारा	अपने से	आपनाके, आपनार-जन्म	आपके लिए
निजेके, निजेर जन्य	अपने लिए	आपनार हते (चेये)	आपसे
निजेर हते (चेये)	अपने से	आपनार	आपका, आपकी आपके
निजेर	अपना, अपनी, अपने	आपनार मध्ये, आपनार ओपर,	आपमें, आपपर
निजेते, निजेर मध्ये	अपने में, अपने पर		
ओ, ने, ता	वह, उस, उसने	ए	यह, इसने
ओके, ताके	उसको,	एके	इसको, इसे
ताके दिये, तार द्वारा, ओके दिये, ओर द्वारा	उससे	एके दिये, एर द्वारा	इससे
		एके, एर जन्य	इसके लिए
ओके, ओर जन्य, ताके, तार जन्य	उसके लिए	ए हते, एर चेये, एर अपेक्खा	इससे
तार हते, ओर हते	उससे	एर	इसका, इसकी, इसके
तार, ओर	उसका, उसकी, उसके	एते, एर मध्ये, एर ओपर	इसमें, इसपर
ताते, ओते, तार ओर-मध्ये, ओपर	उसमें, उसपर	एरा, एदे,	ये इन्होंने,
ओरा, ओदे	वे, उन्होंने	एदेर	इनको, इन्हें
ओदेर	उनको, उन्हें	एदेर द्वारा, एदेर दिये	इनसे
ओदेर द्वारा, ओदेर दिये	उनसे	एदेर, एदेर जन्य	इनके लिए
		एदेर हते, एदेर चेये	इनसे
ओदेर, ओदेर जन्य	उनके लिए	एदेर	इनका, इनकी, इनके
ओदेर हते, ओदेर चेये	उनसे	एदेर मध्ये, एदेर ओपर	इनमें, इनपर
		के, का	कौन, किसने
ओदेर	उनका, उनकी, उनके	काके	किसको, किसे
ओदेर मध्ये, ओदेर ओपर	उनमें, उनपर	काके दिये, कारद्वारा	किससे
		काके, कार जन्य	किसके लिए,
कारा, कादे	कौन (बहुवचन)	कार हते, कार चेये	किससे
,, ,,	किन्होंने,	कार	किसका, किसकी, किसके
कादेर	किनको, किन्हें		
कादेर दिये, कादेर	किनसे	कार मध्ये, कार ओपर	किसमें, किसपर

कादेर, कादेर जन्य	किनके लिए,	ये, या (जे, जा)	जो, जिसने
कादेर हते (चेये)	किनसे	याके (जाके)	जिसको, जिसे
कादेर	किनका, किनकी, किनके	याके दिये, यार द्वारा, (जाके दिये-द्वारा)	जिससे
,,		याके, यार जन्य	जिसके लिए
कादेर मध्ये, कादेर ओपर	किनमें, किनपर	यार हते, यार चेये	जिससे
		यार (जार)	जिसका, जिसकी जिसके
यारा	जो (बहुवचन)	यार मध्ये, यार ओपर	जिसमें, जिसपर
,,	जिन्होंने		
यादेर	जिनको, जिन्हें	यादेर हते (चेये)	जिनसे
यादेर दिये, यादेर द्वारा	जिनसे	यादेर‡ (जादेर)	जिनका, जिनकी जिनके
यादेर, यादेर जन्य	जिनके लिए	यादेर मध्ये, यादेर ओपर	जिनमें, जिनपर

सहायक क्रिया

[जब केवल सर्वनाम के साथ 'होना' क्रिया वर्त्तमान काल में प्रयुक्त हो तब 'हइ-हस' आदि का प्रयोग होता है। किन्तु संज्ञा के साथ में होने पर हिन्दी के प्रयोग के विपरीत 'होना' क्रिया का प्रयोग नहीं होता। 'मैं हूँ' में 'आमि हइ' किन्तु 'मैं लड़की हूँ' में 'आमि मेये' काफ़ी होगा। 'हइ या हस' की आवश्यकता नहीं।]

आमि हइ	मैं हूँ	आमरा हइ	हम हैं
तुइ हस	तू है	तुमि हओ	तुम हो
आपनि हन	आप हैं	से हय	वह है
ओ हय	वह है	ओटा हय	वह है
ओरा हय (ओंरा हन)	वे हैं	ओगुलो हय	वे हैं
तारा हय (ताँरा हन)	वे हैं	ए हय	यह है
एटा हय	यह है	एइ हय, से हय	यह है
एरा हय (एँरा हन)	ये हैं	एगुलो§ हय	ये हैं
इनि हन	ये हैं	आमि छेले	मैं लड़का हूँ
आमि मेये	मैं लड़की हूँ	ओटा बइ	वह पुस्तक है
ओगुलो बइ	वे पुस्तकें हैं	एटा कि	यह क्या है
एटा बइ	यह पुस्तक है	तुमि के	तुम कौन हो

‡ बंगला में दो 'ज' बोले जाते हैं। एक वर्ग्य जैसे 'जल'। दूसरा 'जार (यार)' में अवर्ग्य 'ज'; य का ज। § बहुवचन बनाने के लिए 'गुलो' शब्द को जोड़ दिया जाता है। जैसे एइ हय (यह है); एगुलो हय (ये हैं), ओगुलो एखाने नेइ (वे यहाँ नहीं हैं) आदि-आदि।

तुमि कोथाय	तुम कहाँ हो	ए दुटो बाड़ि	ये दो घर हैं
एगुलो फल	ये फल हैं	आपनि छात्र	आप विद्यार्थी हैं
आपनि भाल	आप अच्छे हैं	ओ (से) एखाने नेइ	वह यहाँ नहीं है
ए बुद्धिमान नय	यह होशियार-नहीं है	ओगुलो-एखाने नेइ	वे यहाँ नहीं हैं

उसी प्रकार

[संस्कृत के अनुरूप बंगला भाषा में सामान्य वर्त्तमान काल में सहायक क्रिया 'है' आदि लगाये विना क्रिया का काम चल जाता है। जैसे संस्कृत में 'इदम् जलम्' में 'अस्ति' लगाये विना 'यह जल है' ऐसा बोध होता है, वैसे ही बंगला भाषा में 'एटा जल' कहना पर्याप्त है। हिन्दी के समान 'है' लगाने की ज़रूरत नहीं होती।]

एइ, इनि, ए,	...	...	यह
ओ, ओइ, उनि	...	...	वह
एटा कि	यह क्या है	एटा पाठशाला	यह पाठशाला है
एटि मेये	यह लड़की है	एटा जल	यह पानी है
एटा फुल	यह फूल है	ओ के	वह कौन है
ओ राम	वह राम है	ओटि मेये	वह लड़की है
ओ मानुष	वह आदमी है	ओटा बाड़ि	वह घर है
एटा भाल काज	यह अच्छा काम है	एटा भाल-बइ	यह अच्छी-पुस्तक है
एटा सुन्दर बाक्स	यह सुन्दर सन्दूक है	ओ चतुर व्यबसायी	वह चतुर व्यापारी है
एटा असुस्थ छेले	यह बीमार लड़का है	ओटा गरम दुध	वह गरम दूध है
ओटि छोट मेये	वह छोटी लड़की है	एगुलो भाल काज	ये अच्छे काम हैं
एटा बाक्सेर ताला	यह सन्दूक का ताला है	एगुलो भाल बइ	ये अच्छी-पुस्तकें हैं
एरा असुस्थ छेले	ये बीमार-लड़के हैं	ओरा गरीब लोक	वे गरीब-आदमी हैं
ओगुलो बड़ बाड़ि	वे बड़े घर हैं		
एइ कागज गुलो छोट	ये कागज छोटे हैं		

[विभिन्न कालों में क्रिया के रूपों के उदाहरण।]

सामान्य वर्त्तमान काल

आमि आसि	मैं आता हूँ, आती हूँ	तुइ आसिस	तूआता है, आती है
ओ (से) आसे	वह आता है	ए आसे	यह आता है
आमरा आसि	हम आतेहैं, आती हैं	तुमि आसो	तुम आते हो, आती हो
ओरा (तारा) आसे	वे आते हैं, आती हैं	एरा आसे	ये आते हैं, आती हैं
आपनि आसेन	आप आते हैं, आती हैं	ओ (से) आसे ए आसे	वह आती है, यह आती है

अपूर्ण वर्त्तमान काल

आमि आसछि	मैं आ रहा हूँ	तुइ आसछिस	तू आ रहा है
ओ (से) आसथे	वह आ रहा है	ए आसछे	यह आ रहा है
तुमि आसछो	तुम आ रहे हो, रही हो	आमरा आसछि	हम आ रहे हैं रही हैं
एरा आसछे, एँरा आसछेन	ये आ रहे हैं, रही हैं	तारा (ओरा)-आसछे	वे आ रहे हैं, रही हैं
आमि आसछि	मैं आ रही हूँ	आपनि आसछेन	आप आ रही हैं रही हैं
तुइ आसछिस	तू आ रही है		
ए आसछे	यह आ रही है	ओ (से) आसछे	वह आ रही है

सामान्य भविष्यत् काल

आमि आसब	मैं आऊँगा,मैं आऊँगी	तुइ आसबि	तू आएगा, आएगी
ओ आसबे	वह आएगा	ओ आसबे	वह आएगी
ए आसबे	यह आएगा	ए आसबे	यह आएगी
आमरा आसब	हम आयेंगे, आएंगी	तुमि आसबे	तुम आओगे, आओगी
ओरा आसबे	वे आयेंगे, आएंगी		
एरा आसबे	वे आयेंगे, आयेंगी	एरा आसबे	ये आयेंगी,
आपनि आसबेन	आप आएँगे, आएँगी	,,	ये आयेंगी

सामान्य भूतकाल

आ मिएलाम	मैं आया, आई	तुइ एलि	तू आया, आई
ओ एल	वह आया	ओ एल	वह आई
ए एल	वह आया	ए एल	यह आई
आमरा एलाम	हम आए, आईं	तुमि एले	तुम आए, आईं
ओरा एल	वे आए,	एरा एल	ये आए, आईं
ओरा एल	वे आईं	आपनि एलेन	आप आए, आईं

अपूर्ण भूतकाल

आमि आसछिलाम	मैं आ रहा था रही थी	तुइ आसछिलि	तू आ रहा था रही थी
ओ आसछिल	वह आ रहा था	ओ आसछिल	वह आ रही थी
ए आसछिल	यह आ रहा था	ए आसिछिल	यह आ रही थी
आमरा आसछिलाम	हम आ रहे थे	तुमि आसछिले	तुम आ रहे थे,
	हम आ रही थीं	,, ,,	तुम आ रही थीं
ओरा आसछिल	वे आ रहे थे	एरा आसछिल	ये आ रहे थे
,, ,,	वे आ रही थीं	आपनि आसछिलेन	आप आ रहे थे
एरा आसछिल	वे आ रही थीं	,, ,,	आप आ रही थीं

आज्ञा और विधि

तुइ बल	तू बोल	तुइ कर	तू कर
तुइ पड़	तू पढ़	तुमि बलो	तुम बोलो
तुमि करो	तुम करो	तुमि पड़ो	तुम पढ़ो
आपनि बलुन	आप बोलिए	आपनि पड़ुन	आप पढ़िए
आपनि करुन	आप कीजिए	तुइ ओखाने बसो	तू उधर बैठ
तुइ एखाने आय	तू यहाँ आ	तुमि एखाने एसो	तुम यहाँ आओ
तुइ बइ ने	तू पुस्तक ले	तुमि बइ नाओ	तुम पुस्तक लो
तुमि ओखाने बसो	तुम वहाँ बैठो	आपनि ओखाने बसुन	आप वहाँ बैठिए
आपनि एखाने आसुन	आप यहाँ आइए	आपनि ताला खुलुन	आप ताला खोलिए

आपनि बइ निन—आप पुस्तक लीजिए

[वर्तमान, भूत और भविष्यत्—इन कालों के कुछ अन्य प्रयोग ।]

आमि एसेछि	मैं आया हूँ	आमि एसेछिलाम	मैं आया था
आमि एसे थाकब	मैं आया हूँगा	तुइ एसेछिस	तू आया है,
तुइ एसेछिलि	तू आया था	तुइ एसे थाकबि	तू आया होगा
ओ एसेछे	वह आया है	ओ एसेछिल	वह आया था
ओ एसे थाकबे	वह आया होगा	ए एसेछे	यह आया है
ए एसेछिल	यह आया था	ए एसे थाकबे	यह आया होगा
आमरा एसेछि	हम आये हैं	आमरा एसेछिलाम	हम आये थे,
आयरा एसे थाकब	हम आये होंगे	तुमि एसेछ	तुम आये हो
तुमि एसेछिले	तुम आये थे	तुमि एसे थाकबे	तुम आये होगे
ओरा एसेछे	वे आये हैं	ओरा एसेछिले	वे आये थे
ओरा एसे थाकबे	वे आये होंगे	एरा एसेछे	ये आये हैं
एरा एसेछिल	ये आये थे	एरा एसे थाकबे	ये आये होंगे
आपनि एसेछेन	आप आये हैं	आपनि एसेछिलेन	आप आये थे
आपनि एसे थाकबेन	आप आये होंगे	आमि एसेछि	मैं आई हूँ
आमि एसे थाकब	मैं आई हूँगी	आमि एसेछिलाम	मैं आई थी
तुइ एसे थाकबि	तू आई होगी	तुइ एसेछिस	तू आई है
ओ एसे थाकबे	वह आई होगी	तूइ एसेछिलि	तू आई थी
ए एसे थाकबे	यह आई होगी	ओ एसेछे	वह आई है
आमरा एसेछिलाम	हम आई थीं	ओ एसेछिल	वह आई थी
तुमि एसेछ	तुम आई हो	ए एसेछे	यह आई है
तुमि एसेछिले	तुम आई थीं	ए एसेछिल	यह आई थी
ओरा एसेछे	वे आई हैं	आमरा एसेछि	हम आई हैं
ओरा एसेछिल	वे आई थीं	आमरा एसे थाकब	हम आई होंगी
एरा एसेछे	ये आई हैं	तुमि एसे थाकबे	तुम आई होगी
एरा एसेछिल	ये आई थीं	ओरा एसे थाकबे	वे आई होंगी
आपनि एसेछेन	आप आई हैं	एरा एसे थाकबे	ये आई होंगी
आपनि एसेछिलेन	आप आई थीं	आपनि एसे थाकबेन	आप आई होंगी
से एसेछे	वह आया है		

से एसेछिल	वह आया था	से एसे थाकबे	वह आया होगा
से एसेछे	वह आई है	ऐ एसेछिल	वह आई थी
से एसे थाकबे	वह आई होगी	ओरा एसेछे	वे आए हैं
ओरा एसे थाकबे	वे आए होंगे	ओरा एसेछिल	वे आए थे
ओरा एसे थाकबे	वे आई होंगी	ओरा एसेछे	वे आई हैं
		ओरा एसेछिल	वे आई थीं

कारक-प्रत्यय

[बंगला भाषा में संज्ञा अथवा सर्वनाम के सातों कारकों में शब्द के अन्त में निम्न प्रत्यय साधारणतः दिये जाते हैं। उनके साथ ही, नीचे दिये हुए वाक्यों में, उदाहरण भी ध्यान देने योग्य हैं। जैसे कर्म कारक में 'के' प्रत्यय है, इसलिए तोमाके, आपनाके (तुमको, आपको); सम्बन्ध कारक में में 'र, एर' प्रत्यय है, इसलिए 'गरुर, गोलापेर (गाय का, गुलाब की); अधिकरण कारक में 'य, ए' आदि प्रत्यय हैं, इसलिए पाठशालाय, खाटे (पाठशाला में, खाट पर) आदि-आदि।

कोई चिह्न नहीं	कर्ता—ने	के	कर्म—को
दिये (द्वारा)	करण—से	र जन्य, एर जन्य	संप्रदान—के लिए
थेके (हइते) चेये, (अपेक्खा)	अपादान—से	र, एर	सम्बन्ध—का, की
ए,य, एते, ते,ओपरे	अधिकरण—में, पर		
तोमाके डाके	आपको बुलाता है	आपना के पड़ाब	आपको पढ़ाऊँगा
छुरि दिये	चाकू से	कमल दिये	कलम से
काठ थेके	लकड़ी से	चोरर जन्य	चोरों के लिए
गरुर दुध	गाय का दूध	ओर काछ थेके निते हबे	उससे लेने हैं
गाछेर पाता	पेड़ का पत्ता	गोलापेर कुँड़ि	गुलाब की कली
पाठशालाय-छात्रा पड़े	पाठशाला में-विद्यार्थी पढ़ते हैं	आमि खाटे घुमाइ	मैं चारपाई पर सोता हूँ

अव्यय

[कुछ वह अव्यय शब्द जो प्रायः हर समय बोलने में प्रयुक्त होते हैं। नीचे उनके प्रयोग की विधि समझाई गई है। जैसे वाक्य है 'घर के बाहर'। बंगला भाषा में सम्बन्ध कारक में 'र', एर' प्रत्यय लगते हैं। इस प्रकार हुआ 'बाड़िर' (घर के)'। 'बाइरे' का अर्थ 'बाहर'। 'बाड़िर बाइरे'—घर के बाहर। नीचे दिये हुए अव्ययों और वाक्यों की सहायता से अभ्यास करें।]

निचे	नीचे	ओपर	ऊपर
बाइरे	बाहर	पेछने	पीछे
परे	बाद	संगे	साथ

अनुसारे	अनुसार	आगे, पूर्बे	पहले-पूर्व
द्वारा, माध्यमे	द्वारा-जरिए	जन्य	कारण-मारे
		भेतरे, मध्ये	अन्दर-भीतर
परे	आगे-सामने	छाड़ा	अलावा
काछे, पाशे	पास, निकट	बइटिर बिषये	पुस्तक के बारे में
ब्यतीय	सिवाय	जायगाय, बदले	वजह
जन्य	वास्ते-लिए	मत, न्याय, रकम	तरह, भाँति
चेये,अपेक्खा,तुलनाय	अपेक्षा	केनना, कारण	क्योंकि
दिके	ओर, तरफ	अतएब, ताइ, सुतरां	अतएव
एइ जन्य,एइ काजेइ	इसलिए	तुइ आसिस ना	तू मत आ
लिखे दिल	लिखकर दिया	उठे	उठकर
शेखा उचित	सीखना चाहिए	आपनार काछे	आपके पास
		ए छाड़ा	इसके अलावा
बाड़िर बाइरे	घर के बाहर	मन्दिरेर दिके	मन्दिर की तरफ

व्याकरण-प्रकरण से मिला कर अभ्यास के लिए कुछ वाक्य—

१. निजेर ग्राम बा शहर सम्बन्धे आटटि पंक्ति लिखुन ।	१. अपने गाँव या शहर के बारे में आठ पंक्तियों में लिखिए ।
२. तुइ एदिक-ओदिक ताकास ना ।	२. तू इधर-उधर मत देख ।
३. जेते जेते आमि ओके देखलाम ।	३. जाते-जाते मैंने उसे देखा ।
४. एखन आपनि कोथाय जाबेन ?	४. अब आप कहाँ जायँगे ?
५. एखाने थेके आमार बासा अनेक दुर ।	५. यहाँ से मेरा निवास बहुत दूर है ।
६. आपनि कोथा थेके आसछेन ?	६. आप कहाँ से आ रहे हैं ?
७. आमि कलिकाता थेके आसछि ।	७. मैं कलकत्ता से आ रहा हूँ ।
८. तुमि एखाने बसो, भालकरे बसो।	८. तुम यहाँ बैठो, मज़े में बैठो ।
९. आपनार बाड़िटा कि सुन्दर ! चारिदिके परिष्कार-परिच्छन्न ।	९. आपका मकान कितना सुन्दर है ! चारो ओर साफ़-सुथरा है।
१०. दुर्गापूजाइ आमादेर सब चेये बड़ ऊत्सब ।	१०. दुर्गापूजा हमारा सब से बड़ा त्यौहार है ।
११. तिनि आमार संगे कथा पर्यन्त बललेन ना ।	११. उन्होंने मुझसे बात तक नहीं की ।
१२. तुमि आज नेओ ना ।	१२. तुम आज मत नहाओ ।
१३. आमार बाड़िते अतिथिरा एसेछिलेन ।	१३. मेरे घर मेहमान आये हैं ।
१४. आपनार सम्बन्धे आमि अनेक शुनेछि ।	१४. आपके बारे में मैंने बहुत सुना है ।

संख्या

बंगला	हिन्दी	बंगला	हिन्दी
एक	एक	त्रिश	तीस
दुइ	दो	चल्लिश	चालीस
तिन	तीन	पञ्चाश	पचास
चार	चार	षाठ	साठ
पाँच	पाँच	सत्तर	सत्तर
छय	छः	आसी	अस्सी
सात	सात	नब्बई	नब्बे
आट	आठ	श	सौ
नय	नौ	दु,दुइ श	दो सौ
दश	दस	तिन श	तीन सौ
एगार	ग्यारह	चार श	चार सौ
बार	बारह	पाँच श	पाँच सौ
तेर	तेरह	छ, छय श	छः सौ
चोद्द	चौदह	सात श	सात सौ
पनेर	पन्द्रह	आट श	आठ सौ
षोल	सोलह	न, नय श	नौ सौ
सतेर	सत्रह	हाजार	हजार
आठार	अठारह	लाख	लाख
उनीश	उन्नीस	कोटि	करोड़
कुड़ि, बिश	बीस	दश कोटि	दस करोड़

महीना-दिन

बंगला और हिन्दी में दिन तथा मास के नाम प्रायः समान होते हैं ।

विषय-सूची

विषय-सूची

श्री गणेशाय नमः

कृत्तिवास रामायण

लंका काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद बँगला मूल सहित)

मंगलाचरण

शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्म्माम्बरं-
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं-
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामहम् ॥ १ ॥

यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमतिदुर्ल्लभम् ।
खलानां दण्डकृद् योऽसौ शंकरः शं तनोतु मे ॥ २ ॥

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं-
योगीन्द्रध्यानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्व्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं-
वन्दे मन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्व्वीशरूपम् ॥ ३ ॥

शुक-सारणेर गुप्तभावे रामसैन्य-परिदर्शन ओ विभीषणादि-कर्त्तृक निग्रह ।

बाँधा गेल सागर कटक हैल पार * दिने दिने रावणेर टूटे अहंकार
फाँफर हइल राजा गनि मने-मने * दुइ चर शुक आर सारणेरे भने

रावण के आदेश से शुक एवं सारण का गुप्तरूप से राम-सेना का निरीक्षण और विभीषण आदि द्वारा उनका निग्रह

सागर बाँधा गया और सारा कटक भी दूसरे तट पर पहुँच गया। इस प्रकार दिन-प्रतिदिन रावण का अहंकार टूटने लगा। किंकर्त्तव्यविमूढ़

शुन शुक-सारण, तोमरा बुद्धिमान * चर्च्च गिया रामेर कटक कि प्रमान
पाथरेते बाँधा गेल सागर गभीर * त्रिभुवने हेन कर्म्म करे कोन वीर
भालमते जान विभीषणेर ये मति * एके एके जान सब योद्धा सेनापति
बल-बुद्धि जान सब रामेर मन्त्रणा * प्रथमे जानिह सब प्रधान ये जना
रामेर सहित थाके कोन महावीर * लंकाय आसिया केवा रणे हवे स्थिर १
राजार आदेश चर बन्दिलेक माथे * राज-प्रदक्षिण करि जाय मनोरथे
कपिरूपे सान्धाइल वानर-भितर * लेखा जोखा नाइ, यत देखिल वानर
कत पार हैल कत हैते आछे पार * लिखिवार शक्ति कार देखिते अपार
कटक चर्चिया भ्रमे चर दुइ जन * दूरे थाकि देखे ताहा मित्र विभीषण
राक्षसेर माया से राक्षस भाल जाने * विभीषण दुइ चरे चिने सेइ क्षणे
घरेर सेवक बलि ना करिल आस्था * वानरेर हाते कैल पंचम अवस्था
आपनार प्रत्ययित्व जानावार तरे * रथ हैते नामिया से दुइचरे धरे २

होकर राजा (दशानन) ने अपने दोनों चर शुक और सारण को बुलवाया। सुनो शुक-सारण ! तुम लोग बुद्धिमान हो, जाकर पता लगाओ कि राम की सेना का परिमाण क्या है। अथाह सागर को जिसने शिलाओं से बाँध दिया, तीनों लोक में ऐसा वीर वह कौन है। अच्छी तरह से विभीषण के चाल-ढाल का पता लगाओ और एक-एक कर उसके सारे योद्धा और सेना-पतियों को भी जान लो। राम की मंत्रणा क्या होगी, यह बुद्धि-बल से ज्ञात कर लो। आरम्भ में जान लो कि (उसके दल में) प्रधान कौन-कौन हैं। राम के साथ-साथ कौन सा महावीर रहता है। लंका में आकर कौन युद्ध में स्थिर रहेगा ॥ १ ॥

राजा के आदेश को चरों ने सिर नवा कर ग्रहण किया और राजा की प्रदक्षिणा करके वे चल पड़े। कपि का रूप धारण कर वे वानरों के भीतर समा गये। देखा वानरों की संख्या अनगिनत है। कितनों को वे पार कर गये, फिर भी कितनों को पार करना बाकी है। इनकी संख्या लिखने की शक्ति किसमें है, देखने ही में इस सेना का कोई ओर-छोर नहीं। सेना का निरीक्षण करते हुए दोनों चर घूमते रहे। दूर से मित्र विभीषण ने यह देख लिया। निशाचर की माया निशाचर ही भली प्रकार समझ सकता है। विभीषण ने दोनों चरों को तत्काल पहचान लिया। घर के सेवक थे, यह जानकर भी उनकी आवभगत नहीं की उसने। बन्दरों के हाथ उनकी दुर्गति कर दी। अपनी विश्वस्तता जताने के लिए रथ से उतर कर उसने दोनों चरों को पकड़ लिया ॥ २ ॥

विभीषणे ठेलि चर जाय पलाइया ※ दूरे थाकि सुग्रीव ता' देखिल चाहिया
शालगाछ उपाड़िया आने आचम्बिते ※ महाकोपे धाय वीर राक्षसेर भिते
एड़िलेक शालगाछ मेघेरे समान ※ राक्षसेर वाणे गाछ हैल खान-खान
आर गाछ आने, तार दश क्रोश गोड़ा ※ गाछेर वाड़ीते रथ करिलेक गुँड़ा
पड़िल सारथि-घोड़ा नाहिक दोसर ※ गदा हाते दुइजन जुझे घोरतर
गदार वाड़िते सब करे चूरमार ※ सुग्रीव बलेन, गर्व्व करिस गदार
मार देखि गदा, बुक पेते दिनु तोरे ※ तारे घा सहिया तोरे दिइ यमघरे
दुइ हात तुलिया पातिया दिनु बुक ※ मार देखि गदा सबे देखुक कौतुक
पातिया दिलेक वक्षः सुग्रीव भूपति ※ गदा मारे शुक आर सारण दुर्म्मति
वज्रसम वक्षः तार वज्रेते निर्म्माण ※ ताहाते लागिया गदा हैल खान-खान
गदा मारि दुइजन हइल फाँफर ※ दुइचर बाँधि निल रामेर गोचर
बसिया आछेन मध्य राम गुणवान ※ वामदिके उपविष्ट अनुज लक्ष्मण
दक्षिणेते मंत्रि ताँर शोभे जाम्बवान ※ जोड़ हाते बसियाछे यत मंत्रिगण ३
हेन काले दुइचर धेये आगुसरे ※ प्रणाम करिल दोंहे राजव्यवहारे
भयेते छाड़िल तारा जीवनेर आश ※ कहिते लागिल किछु गदगद भाष

विभीषण को ढकेल कर चर भागने लगे। दूर से सुग्रीव ने यह देख लिया। तुरन्त ही साखू का एक पेड़ उखाड़ कर वह राक्षस की ओर सक्रोध लपका। बादलों जैसे उस साखू के पेड़ से वे कतरा गये, राक्षस के वाण से वह पेड़ खंड-खंड हो गया। दूसरा पेड़ लाया गया जिसकी दस-कोस वाली जड़ थी। उसी पेड़ के प्रहार से रथ को चूर्ण-चूर्ण कर डाला गया। सारथि और घोड़े काम आ गये, अब कोई दूसरा सहाय न रहा। दोनों चर हाथ में गदा लेकर घोरतर युद्ध करने लगे। गदा के प्रहार से वे सब कुछ चूर-चूर करने लग गये। सुग्रीव ने कहा, तू अपनी गदा पर इतराता है? ले, मैं सीना तान देता हूँ, इस पर गदा की चोट तो कर भला। दोनों हाथ उठा कर मैं सीना ताने देता हूँ, चला तो अपनी गदा। तेरा प्रहार सहकर तुझे यमलोक भिजवा देता हूँ, और लोग यह तमाशा देखें। भूपति सुग्रीव ने अपना वक्ष उन्मोचित कर दिया और मतिभ्रष्ट शुक और सारण ने उस पर गदा का प्रहार किया। वज्र के समान कठिन वक्ष से टकराकर गदा चूर-चूर हो गयी। गदा मारने के बाद दोनों भौचक्के रह गये। दोनों चरों को बाँध कर राम के समक्ष लाया गया। गुण के सागर रामचन्द्र बीच में विराजमान हैं, उनके बाएँ लक्ष्मण और दाहिने मंत्री जाम्बवान शोभायमान हैं। सारे सचिवगण हाथ जोड़े बैठे हैं॥ ३॥

कटक चर्च्चिते मोरे पाठाय रावणे ※ कि जाने एमन दाय घटिबे एखाने
लुकाइया आसिलाम, ह'लाम विदित ※ बुझिया करह प्रभु जे हय उचित
शुनिया चरेर कथा श्रीरामेर हास ※ उभयेरे दयामय दिलेन आश्वास
विभीषण धरिलेन काटिवार मने ※ रावण करेन राम तारे सेइ क्षणे
क्षान्त हओ, चर-हत्या नहे राजधर्म्म ※ सेवक मारिले सिद्ध हबे कोन कर्म्म
गोपने आइसे चर, भ्रमे सर्व्वस्थाने ※ दुई चारि कथा एइ बलिह रावणे
शून्यघरे सीता हरि आनिल आमार ※ भये पलाइया एल सागरेर पार
सेइ त सागर आमि हइलाम पार ※ जिज्ञास, रावण राजा कि बलिबे आर
हरिया आनिल सीता मम अगोचरे ※ सेई हेतु सेतुबन्ध हइल सागरे
शुनियाछ खर-दूषणेर ये प्रकार ※ प्रभाते हइबे सेइ प्रकार तोमार
ये कोन प्रकारे आजि पोहाउक राति ※ एक जन ना राखिब वंशे दिते वाति
कृत्तिवास कविर कवित्व विचक्षण ※ लंका-काण्डे गाइलेन गीत रामायण ४

ऐसे ही समय दोनों चरों ने आगे बढ़कर राजकीय सम्मान प्रदर्शित करते हुए राम को प्रणाम किया। भय के मारे दोनों ने प्राणों की आशा छोड़ दी और भयातुर भाषा में गिड़गिड़ाने लगे। रावण ने सेना के निरीक्षण के लिए हमें भेजा है, कौन जानता था कि यहाँ ऐसी विपत्ति आ पड़ेगी। हम छिप कर आए थे लेकिन भेद खुल गया। अब हे प्रभु, जैसा आप उचित समझें करें। चर की बातें सुनकर श्रीराम हँस पड़े और उनको आश्वासन देने लगे। विभीषण ने निश्चय किया था कि इनको काट डाला जाय किन्तु रामचन्द्र ने तत्काल उनको मना किया। रुको, चर की हत्या करना राजधर्म नहीं है, सेवक की हत्या करने से कौन सा काम सफल होगा। चर गुप्तरूप से आता है और सभी जगहों में विचरता है। (हे चर युगल!) रावण से मेरी ये दो-चार बातें बता देना। सूनी कुटिया से मेरी सीता को वह चुरा लाया और डर के मारे सागर लाँघ कर इस ओर आ गया। उस सागर को भी मैं लाँघ आया हूँ। पूछना, अब राजा रावण को क्या कहना है। मेरे अगोचर सीता को वह हर लाया और इसी कारण सागर पर सेतुबन्ध बना। खर-दूषण की दशा के बारे में तो सुना होगा, सबेरे तुम्हारी भी वही दशा हो कर रहेगी। आज किसी प्रकार रात तो बीत जाने दो, फिर मैं उसके वंश में किसी को भी दीया दिखाने के लिए भी जीवित नहीं छोड़ूँगा। कवि कृत्तिवास का यह विचक्षण कवित्व है—लंकाकांड में उन्होंने रामायण का गीत गाया ॥ ४ ॥

शुक-सारण-समीपे श्रीराम-कर्त्तृक रावणेर भर्त्सना

त्रिभुवन से जिनिया, सुन्दरी सब आनिया, नाना अलंकार दिया साजे।
ता' सबार प्राणनाथ, डरे नाहि हाँटे वाट, अनाथा हइया तारा भजे॥
सीतार से शापानले, आमार ए कोपानले, रावणेर नाहिक निस्तार।
विश्वकर्म्मार निर्म्माण, ए कनक लंका खान, पुड़िया हइल छारखार॥
राजा ह'ये चर मारे, अपयश ए संसारे, कह गिया तोरे लंकेश्वर।
देखुक से दशकन्ध, सागरेते सेतुबन्ध, लंकापुरी घेरिल वानरे॥
कपिगण ये प्रचण्ड, मेघकरे खण्ड-खण्ड, मार्त्तण्ड धरिते पारे बले।
सागर ना सहे टान, रणे नाहि परित्राण, हनुमान बधिबे सकले॥
एले सैन्य चर्च्चिबारे, जाबे केन अगोचरे, ब'लो तारे कथा दुइचारि।
काटि तार दशमुण्ड, विभीषण छत्रदण्ड, दिब आर राणी मन्दोदरी॥
बन्दि रामेर चरण, कृत्तिवास विचक्षण, विरचिल सरस्वती वरे।
सर्व्वपाप-विनाशन, सारग्रन्थ रामायण, मुक्तिपाय श्रवण जे करे॥५॥

शुक-सारण के निकट श्रीराम द्वारा रावण की भर्त्सना

तीनों लोक पर विजय प्राप्त कर सारी सुन्दरियों को लाकर उसने आभूषणों से सजाया है। वे नारियाँ अनाथा सी हो कर उसको प्राणनाथ के रूप में सेवा करने को विवश हैं और वह निडर होकर घूमता-फिरता है। सीता के अभिशाप की आग से और मेरे क्रोधानल से रावण का निस्तार नहीं। विश्वकर्मा-निर्मित यह स्वर्ण-लंका जल कर खाक हो गयी (समझो)। राजा होकर जो चर को मारता है उसका अपयश सारे संसार में व्याप्त हो जाता है। जाकर अपने लंकेश्वर से बताना, वह दशस्कन्ध देख ले कि सागर पर सेतुबन्ध रच कर वानरों ने लंकापुरी को घेर लिया है। ये कपि इतने प्रचंड हैं कि मेघ को खंड-खंड कर देते हैं और मार्त्तंड को भी अपनी शक्ति से पकड़ ला सकते हैं; सागर भी इनके बल का सामना नहीं कर सकता और रण में भी किसी को छुटकारा नहीं—हनुमान सभी का वध करेगा। तुम लोग सैन्य का भेद लेने के लिए आए थे, अनजाने ही क्यों चले जाओगे। उसको भी जाकर दो-चार बातें बताना। उसके दस मुंडों को काटकर विभीषण को राजछत्र और राजदंड प्रदान करूँगा—साथ में रानी मन्दोदरी भी। राम के चरणों की वन्दना कर विचक्षण कृत्तिवास ने सरस्वती के वरदान से इस सर्व-पाप-विनाशकारी सारग्रन्थ रामायण की रचना की। जो भी इसे सुनता है, मुक्ति पा जाता है॥५॥

रावण-समीपे शुक-सारण-कर्त्तृक श्रीरामेर प्रशंसा ओ सम्वाद-ज्ञापन

दिया राज प्रसाद पाठान राम चर * रावणेरे भेटे गिया लंकार भितर
दाण्डाइते नारे चर, नाहि नाड़े पाश * ऊर्द्ध वमुखे वार्त्ता कहे घने ऊर्द्ध श्वास
तोमार आज्ञाय गेनु कटक भितरे * यावामात्र विभीषण चिनिल आमारे
विभीषण धरि निल काटिवार मने * प्राणदान करिलेन राम निजगुणे
श्रीराम लक्ष्मण विभीषण कपिराजे * देखिलाम चारिजने आनन्दे विराजे
रामेर येमन धनु, शर तुल्य तारि * आछुक अन्येर काज, एका रामे नारि
भुवन सहाय यदि अष्ट लोकपाल * तबु ना जिनिबे राम विक्रमे विशाल
शतेक योजन सेतु हइल सागरे * बान्धिल योजन शत वृक्ष ओ पाथरे
उत्तर कूलेर सेतु ठेकिल दक्षिणे * पार हैल राम-सैन्य जुझिवार मने
पाले-पाले कपिगण पर्व्वत आकार * देखिया डराय, येन महा अन्धकार
केह वा पिंगलवर्ण केह वा श्यामल * रक्तवर्ण केह, केह वरण उज्ज्वल
उभे परिमाण देखि पर्व्वत प्रमाण * रणे प्रवेशिते चाइ, किन्तु काँपे प्राण

रावण के समक्ष शुक-सारण द्वारा श्रीराम की प्रशंसा और समाचार-निवेदन

राज-प्रसाद प्रदान कर राम ने चरों को विदा किया। चरों ने जा कर लंका में रावण से भेंट की। बेतहाशा भागते हुए जाने के कारण चरों की साँस फूलने लगी। फिर भी सिर उठाकर एक साँस में कहने लग पड़े; (शुक ने कहा)—आपकी आज्ञा से हम राम-सेना के भीतर पहुँच गये। पहुँचते ही विभीषण ने हमको पहचान लिया। विभीषण ने हम लोगों को काट डालने का निश्चय करके पकड़ लिया। राम ने सदय हो कर प्राणदान दिया। श्रीराम, लक्ष्मण, विभीषण और कपिराज (सुग्रीव), इन चारों को आनन्द से विराजमान देखा। जैसा राम का धनुष है उनके बाण भी उसी के योग्य हैं। दूसरों का चाहे जो कुछ कर लो, राम अकेले हों तो भी उनसे निबटा नहीं जा सकता। यदि आठों दिक्पाल अथवा जगत् आपका सहायक बन जाय, फिर भी राम से जीत नहीं सकते, वे इतने प्रबल पराक्रमी हैं। सागर पर उन्होंने वृक्ष और पत्थरों से सौ योजन का सेतु बना डाला है। उत्तर तट का सेतु आकर दक्षिण से लगा। युद्ध का निश्चय लेकर राम-सेना इस पार आ गई है। पर्वत के आकार वाले वानरों के कितने ही दल हैं—महान् अन्धकार स्वरूप उनको देखकर डर लगता है। इनमें कोई तो पिंगल वर्ण का है तो कोई श्याम वर्ण का, कोई रक्त वर्ण का है तो कोई गोरे रंग का। ऊँचाई में ये पर्वत के समान हैं। रण में प्रवेश करने

एक चापे कपि सेना जाय पृष्ठे-पृष्ठे ❋ ओर नाहि पाइ, यत चाइ एक दृष्टे
गणिते यद्यपि पारि वरिषार धारा ❋ दृष्टे संख्या करि यदि आकाशेर तारा
यदि ओ निर्णय करि सागरेर पाणि ❋ तथापि वानर सैन्य निश्चय ना जानि
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पाञ्चाली ❋ लंकाकाण्ड गाय तार प्रथम शिकलि ६

शुक-सारण-कर्त्तृक रावण के परिचय सह राम-सैन्य-प्रदर्शन

हइल शुकेर वाक्य यदि अवसान ❋ सारण बलिछे दशानन विद्यमान
आमादेर वाक्ये यदि न हय प्रत्यय ❋ प्राचीरे उठिया देख, हय कि ना हय
अति उच्च लंकार प्राचीर स्वर्णमय ❋ चर सह उठिल रावण दुराशय
चतुर्द्दिके जल-स्थल व्यापिल वानर ❋ देखिया रावण राजा सभय अन्तर
सहस्र वत्सर युद्ध करि निरन्तर ❋ तथापि ना फुराइबे कटक विस्तर ७
वानर चिनिते चाहे राजा दशानन ❋ तुलिया दक्षिण हस्त देखाय सारण
वानर सहस्र कोटि याहार संहति ❋ ऐ देख नीलवर्ण नील सेनापति
नील सेनापति से हेलाय यदि नड़े ❋ द्वादश प्रहर पथ सैन्य आड़े जोड़े

की चाह है लेकिन दिल धड़कता है। आगे-पीछे कपि सेना की टुकड़ियाँ चली ही गयी हैं—कितनी ही दृष्टि दौड़ाऊँ उनका ओर-छोर नहीं दिखाई पड़ता। चाहे बरसात में वृष्टि की बूँदों को गिन लूँ, चाहे गगन के तारों को आँखों से देखकर गिन लूँ, समुद्र के जल का परिमाण भी चाहे कूत लूँ, लेकिन फिर भी वानर-सेना की संख्या का अनुमान नहीं लगा सकता। पंडित कृत्तिवास की यह मधुर गीत-गाथा है—लंकाकांड में जिसका प्रथम खंड गाया जा रहा है॥ ६॥

शुक-सारण द्वारा रावण के समक्ष परिचय-सहित राम-सैन्य-प्रदर्शन

शुक का कहना समाप्त हुआ तो सारण ने कहा, हे दशानन! यदि आप को हमारी बातों पर विश्वास न हो तो प्राचीर पर चढ़ कर देखिये, भला हम सही हैं कि नहीं। लंका का स्वर्ण-मय प्राचीर बहुत ऊँचा है। दुष्ट रावण अपने चरों के साथ उस पर चढ़ गया। देखा, चारों ओर जल-थल में वानर व्याप्त हैं। देखकर राजा रावण का अन्तर भय से भर गया। कटक इतना विशाल है कि हजारों वर्ष तक निरन्तर युद्ध करने पर भी उसका अन्त नहीं होगा॥ ७॥

राजा दशानन ने वानरों को पहचानना चाहा। दाहिना हाथ उठाकर सारण उनको दिखाने लगा। वह देखो नीले वर्ण का सेनापति नील है जिसके संग सहस्र-कोटि वानर हैं। नील सेनापति यदि तनिक भी

वानर सत्तर-कोटि यार पाछु लागे * सुग्रीव भूपति देख श्रीरामेर आगे
विशकोटि कपि सह ओइ ये गवाक्ष * त्रिशकोटि वानरेते देखह धूम्राक्ष
सम्पाति वानर देख गौरवर्ण धरे * रणे गेले विपक्ष पलाय यार डरे
हिंगुली पर्व्वतेर हिंगुल येन अंग * पञ्चशत कोटि कपि संगे शरभंग
मलय पर्व्वते कपि वर्ण येन गेरि * सहित सत्तर कोटि देखह केशरी
शरभ वानर देख सहस्र कोटि सह * रणेते पशिले तारे नाहि पारे केह
हेलाय सम्पाति कपि कभु यदि नड़े * शरीर योजन-दश तार आड़े जोड़े
एकादश कोटिते वानर महामति * सहस्र कोटिते ऐ कुमुद सेनापति
शत शत उत्तरेर वीर महावली * यादेर चरणे उड़े गगनेते धूलि
देख धूम्र-धूम्राक्ष राजार दुइ शाला * वानर कटक मध्ये येन मेघमाला ८
देख गय-गवाक्ष से साक्षात् शमन * पञ्चशत कोटि द्वय भायेर भिड़न
वैद्यराज सुषेण से राजार श्वसुर * तिनकोटि वृन्दवीर याहार प्रचुर
नल वीर देख विश्वकर्म्मार नन्दन * ये बाँधिल पारावार शतेक योजन

हिलता है तो उसकी सेना बारह पहर का पथ छेंक लेती है। श्रीराम के सम्मुख सुग्रीव राजा को देख रहे होंगे—उसके पीछे सत्तर करोड़ वानरों की सेना है। बीस करोड़ की सेना लेकर वह देखो गवाक्ष खड़ा है और तीस करोड़ वानर लेकर धूम्राक्ष। वह गोरे रंग का वानर सम्पाति है जिसके रणक्षेत्र में पहुँचते ही विपक्ष की सेना में मारे डर के भगदड़ मच जाती है। हिंगुली पर्वत के अंग के समान (वीरवर) हिंगुल है जिसके साथ पाँच सौ करोड़ कपि हैं। मलय-पर्वत के कपियों के शरीर का रंग गेरू जैसा है—ऐसे सत्तर करोड़ कपियों के संग केशरी है। शरभ नामक वानर सहस्र-कोटि वानरों के साथ है, वह युद्ध में उतर पड़े तो कोई सामना नहीं कर सकता। यदि सम्पाति कपि ने कभी अँगड़ाई भी ली तो उसका दश-योजन का शरीर लम्बाई-चौड़ाई में डोल जाता है। महामति वानर के पास ग्यारह करोड़ की सेना है। उस कुमुद नामक सेनापति के पास सहस्र कोटि की सेना है। उत्तर के सैकड़ों वीर महाबलियों को देखो जिनके पदचाप से गगन में धूल उड़ती है। राजा (सुग्रीव) के दो साले धूम्र और धूम्राक्ष मानों वानर-सेना में मेघमाला के समान हों ॥ ८ ॥

मूर्तिमान् यम जैसे गय और गवाक्ष को देखो—दोनों भाइयों की सेना पाँच सौ करोड़ की है। राजा के श्वसुर वैद्यराज सुषेण के पास तीन करोड़ वीर हैं। विश्वकर्मा-नन्दन नल वीर को देखो जिन्होंने सौ-योजन समुद्र

गाछ पाथरेते जेइ बाँधिलेक सेतु ※ लंकापुरी विनाशिबे एइमात्र हेतु
देखह सुग्रीव राजा वानराधिपति ※ त्रिभुवन नाहि आँटे याहार संहति
बालिर विक्रम तुमि जान भालमत ※ तार भाइ सुग्रीव लंकाते समागत
महेन्द्र-देवेन्द्र देख सुषेणनन्दन ※ आशी कोटि वीर दुइ भायेर भिड़न
भल्लुक कटक देख मंत्री जाम्बवान ※ आशी कोटि वानरेते देख हनुमान
युवराज अंगद से बालिर कुमार ※ कुड़ि लक्ष कपि तार निज परिवार ९
रामेर वानर संख्या कि कब काहिनी ※ शत कोटि वानरेते एक वृन्द गनि
शत कोटि वृन्द एक महावृन्द हय ※ शत कोटि महावृन्द अर्व्वुद निश्चय
शत कोटि अर्व्वुदेते महार्व्वुद लेखा ※ शत कोटि महार्वुदे एक खर्व्व शिक्षा
शत कोटि खर्व्व एक महाखर्व्व हय ※ शत कोटि महाखर्व्व शंख सुनिश्चय
शत कोटि शंखे एक महाशंख जानि ※ शत कोटि महाशंख एक पद्म जानि
शत कोटि पद्मे एक महापद्म हय ※ शतकोटि महापद्म सागर निर्णय
शत कोटि सागरे महासागर जानि ※ शत कोटि महासागरे एक अक्षौहिनी
शतकोटि अक्षौहिणीते एक अपार ※ अपारेर अधिक गणना नाहि आर १०

को बाँध डाला। लंकापुरी के विनाश के निमित्त उन्होंने पेड़-पत्थरों की सहायता से सेतु का निर्माण किया। वानरों के अधिपति सुग्रीव राजा को देखो जिनका तीनों लोक में कोई मुकाबला नहीं कर सकता। तुम को बालि का पराक्रम तो भली प्रकार विदित ही है, उसी के भाई सुग्रीव लंका में पधारे हैं। सुषेण के पुत्र महेन्द्र की अस्सी कोटि वीरों की सेना है। मंत्री जाम्बवान के अधीन भालुओं का कटक और अस्सी कोटि वानरों सहित हनुमान को देखिये। बालि का पुत्र युवराज अंगद है जिसके अपने परिवार में बीस लाख कपि हैं॥ ९॥

राम की वानरी-सेना की संख्या के बारे में क्या वर्णन करूँ। शत-कोटि वानरों से एक वृन्द की गिनती होती है। शत-कोटि वृन्द से एक महावृन्द। शत-कोटि महावृन्द से एक अर्बुद। शत-कोटि अर्बुद से एक महार्बुद। शत-कोटि महार्बुद से एक खर्व। शत-कोटि खर्व से एक महाखर्व। शत-कोटि महाखर्व से एक शंख। शत-कोटि शंख से एक महाशंख। शत-कोटि महाशंख से एक पद्म। शत-कोटि पद्म से एक महा-पद्म। शत-कोटि महापद्म से एक सागर। शत-कोटि सागर से एक महा-सागर। शत-कोटि महासागर से एक अक्षौहिणी। और शत-कोटि अक्षौहिणी से एक अपार। अपार से अधिक आगे कोई गिनती नहीं है॥१०॥

हेथा विभीषण बले श्रीराम गोचर ❋ हेर राजा दशानने प्राचीर उपर
झाट वाण मारि तुमि काटह सत्वर ❋ घुचुक मनेर दुःख जुड़ाक अन्तर
धनुर्व्वाण लये राम करेन सन्धान ❋ ताहा देखि रावण पलाय लये प्राण
शुकसारण बले, छाड़ जीवनेर आस ❋ कटकेर चाप देखि लागये तरास
जीवनेर वासना यद्यपि थाके मने ❋ सीता देह रामेरे रावण, एइक्षणे
सीता दिया रामेरे ना कर यदि प्रीत ❋ श्रीरामेर हाते राजा, मरिबे निश्चित
गरुड़ पाइले सर्प गिले ततक्षणे ❋ अव्याहति नाहि तव श्री रामेर वाणे
शुक ओ सारण दोंहे कहे एइ रूपे ❋ कोपे दुइ चरे भर्त्से दशानन भूपे
कृत्तिवास पण्डित भाविया नारायण ❋ लंकाकाण्ड गाइलेन गीत रामायण ११

शुक-सारणेर प्रति रावणेर भर्त्सना

कोपे कहे लंकेश्वर, मृत्युर नाहिक डर, शत्रुर प्रशंसा वारे-वारे।
कि छार मिछार नर, भये कांपे चराचर, सदा खाटे आमार दुयारे ॥
स्वर्ग-मर्त्य-त्रिभुवने, देवता-गन्धर्व्वगणे, यक्ष कि किन्नर-विद्याधर।
कम्पित आमार डरे, कि भय नर-वानरे, कि बलिल हीन बुद्धि चर ॥

इधर विभीषण ने श्रीराम से कहा, वह देखिये राजा दशानन प्राचीर के ऊपर खड़ा है। शीघ्र ही वाण मारकर उसका वध कीजिये—मेरे मन का क्लेश दूर हो, दिल ठंडा हो। धनुष-वाण लेकर राम निशाना लगाने लगे। देख कर रावण अपने प्राण लेकर भाग खड़ा हुआ। शुक-सारण ने कहा, अपने प्राणों की आशा त्याग दें। कटक की अधिकता देखकर त्रास लगता है। यदि मन में प्राणों की आकांक्षा है, तो हे (लंकाधिपति) रावण! सीता को तत्काल राम के हाथों में सौंप दें। सीता को देकर यदि राम को प्रसन्न नहीं किया तो राम के हाथों आपकी मृत्यु निश्चित है। राजन्! जिस प्रकार गरुड़ के ग्रास से सर्प का बचाव नहीं उसी प्रकार श्रीराम के वाण से आपका कोई बचाव नहीं। शुक और सारण दोनों चर मिलकर इस प्रकार भूपति दशानन की भर्त्सना करने लगे ॥ ११ ॥

रावण द्वारा शुक-सारण की भर्त्सना

क्रोध में आकर लंकेश्वर ने कहा, तुझे मृत्यु का भय नहीं, बार-बार शत्रु की प्रशंसा कर रहा है। यह तुच्छ मानव किस बूते का है, सारा चराचर मेरे भय से काँपता रहता है और मेरे दरवाजे पर बेगार झेलता रहता है। स्वर्ग-मर्त्य—त्रिभुवन में देवता, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, विद्याधर मेरे भय से सभी कम्पित रहते हैं। मुझको नर-वानर से कौन सा डर है।

कपि देखि लक्ष-लक्ष, राक्षस जानिर भक्ष्य, तारे भय कर कि कारणे ।
श्रीराम-लक्ष्मण दोंहे, बले मम तुल्य नहे, इंगिते बधिब दुइजने ।।
कुपिले कुमार भागे, के आसि जुझिबे आगे, भय कर मानुष-वानरे ।
कृत्तिवास रचे गीत, दशानन क्रोधान्वित, वारे वारे भर्त्से दुइ चरे ।।१२।।
पर सैन्य चर्च्चिते पाठाइलाम तोरे ❋ परेर बड़ाइ करिस आमार गोचरे
याहार प्रसादे वाड़े हेन राजा निन्दे ❋ मारिते आइले वैरी तार गुण वन्दे
पूर्व्व उपकार ये करिलि स्थाने-स्थाने ❋ आजि कोपे एड़ाइलि एइ से कारणे
दूर हरे बेटा चर ना कर बाखान ❋ आपनार दोषे पाछे हाराइस प्राण
एत यदि दशानन बलिलेक रोषे ❋ प्रान लये धाय शुक-सारण तरासे १३

कटक-निर्णये शार्द्दूलेर गमन ओ विभीषणादि-कर्त्तृक लाञ्छना

जोड़ हात करि बले वीर महोदर ❋ ये ना जाने किछुइ, पाठाओ हेन चर
कहिते ना जाने कथा सभा विद्यमाने ❋ हेन चर आपनि पाठाओ कि कारणे

हीन बुद्धि चर ! तू क्या बकवास कर रहा है। यह जो लाख-लाख कपि देख रहे हो वे राक्षस जाति के भक्ष्य हैं, उनसे डरने का कौन सा कारण है। श्रीराम-लक्ष्मण को कहते हो कि दोनों मेरे वश के नहीं हैं—अरे इनका वध तो मैं संकेतमात्र से कर डालूँगा। इन राजकुमारों में कौन युद्ध के लिए अग्रसर हो सकेगा ? (निरीह) नर-वानरों से भय कैसा ? कृत्तिवास गीत की रचना कर रहा है। दशानन मारे क्रोध के बार-बार दोनों चरों को डाँट-फटकार रहा है ।। १२ ।।

तुम दोनों को दूसरे की सेना का भेद लेने के लिए मैंने भेजा और तुम आकर मेरे ही सामने उन्हीं की बड़ाई करने लग गये। जिस राजा के अनुग्रह से तुम्हारा पालन-पोषण हो रहा है उसी की निन्दा करने लग गये। जो वैरी मारने आ रहा है उसी का गुण बखानने लग गये। इससे पूर्व तुम दोनों ने कभी-कभार जो उपकार किया है उसी के कारण आज मेरे क्रोध से बच रहे हो। रे अधम चर ! दूर हो जाओ, आगे मत बखानो। कहीं अपने ही दोष से अपने प्राणों से हाथ न धो लो। दशानन ने सरोष यह सब कहा तो शुक-सारण त्रास से वहाँ से प्राण लेकर भाग खड़े हुए ।। १३ ।।

कटक-निर्णय के लिए शार्दूल का जाना और विभीषण आदि द्वारा उसका निग्रह

वीर महोदर ने हाथ जोड़ कर कहा, ऐसे चर को आप क्यों भेजते हैं जो कुछ भी नहीं जानता और सभा में बात करने की भी जिसको तमीज नहीं। रावण ने फिर शार्दूल नामक राक्षस को बुलवाया। वह पाँच

रावण डाकिया आने शार्दूल-राक्षसे * पञ्चजन संगे से आइल तार पाशे
पञ्चजन मध्ये तार शार्दूल प्रधान * दशानन दिल तार हाते गुया-पान
कोन खाने राम सैन्य पोहाय रजनी * कोन बाटे कपिगण करिल उठानि
चरेर प्रसादे राजा सर्व्व वार्त्ता जाने * चरेर प्रसादे राजा परचक्र जिने
लक्ष्मण सुग्रीव रामे जान भालमते * परचक्र जानि तुमि आइस त्वरिते १४
राजार आदेश चर वन्दिलेक माथे * गतमात्र ठेकिलेक विभीषण हाते
विभीषण वले कोथा गेलि रे वानर * हेथा आसियाछे देख रावणेर चर
सेइ वाक्ये वानर चरेर चुले धरे * चारि दिके वेड़िया ताहारे किल मारे
घरेर सेवक वलि ना करिल खून * वानर ताहारे दिल कष्ट पुनः पुनः
आपन प्रत्यय रामे जानावार तरे * पञ्चचर लये गेल रामेर गोचरे
दाण्डाइते नारे चर, नाहि नाड़े पाश * ऊर्द्धवमुखे वार्त्ता कहे घन बहे श्वास
चर्च्चिते तोमार सैन्य पाठाय रावणे * विभीषण धरे प्रभु काटिवार मने १५
श्रीराम वलेन आमि चर नाहि मारि * रावणे कहिओ मोरे कथा दुइचारि
सर्व्वदा पाठाओ चर कोन प्रयोजने * तोमाय आमाय देखा हइवेक रणे

राक्षसों के साथ वहाँ उपस्थित हुआ। इन पाँचों में शार्दूल प्रधान था। दशानन ने उसके हाथों में पान-सुपारी दी। किस स्थान पर राम की सेना रात वितायेगी, किस रास्ते से कपि आयेंगे? चर की सहायता से राजा सब कुछ जान लेता है, चर की सहायता से राजा को शत्रु का सारा कूट-कौशल प्रकट होता है। लक्ष्मण, सुग्रीव और राम को भली-भाँति जान लो और शत्रु-पक्ष के सम्बन्ध में सारी बातों का पता लेकर तुम शीघ्र लौट आना ॥ १४ ॥

राजा का आदेश चर ने शिरोधार्य किया। किन्तु जाते ही विभीषण के हाथ पकड़ा गया। विभीषण ने कहा, अरे वानर किधर गये तुम सब, वह देखो रावण का चर आया है। यह वाक्य सुनते ही वन्दरों ने चरों के केश धर लिये और चारों ओर से घेर कर मुष्टि प्रहार करने लगे। घर के सेवक होने के कारण उनको प्राणों से तो नहीं मारा गया, किन्तु वानरों ने उनको बार-बार उत्पीड़ित किया। (विभीषण ने) अपना विश्वास राम के समीप सिद्ध करने के लिए पाँचों चरों को राम के समक्ष ले जाकर पेश किया। वे खड़े भी नहीं हो पा रहे हैं और न हिलडुल पा रहे हैं। तीव्र श्वास चल रही है। वे मुँह उठाकर बोले, हे प्रभु! रावण ने आपकी सेना का भेद लेने के निमित्त हमको भेजा है और विभीषण ने हमारे वध की मन्शा से हमको पकड़ लिया है ॥ १५ ॥

आपनि देखिबे एइ कटक दुर्व्वार ॐ कि रूपे रावण, तुमि पाइबे निस्तार
मारिब रावण तोरे करि खण्ड-खण्ड ॐ विभीषण उपरे धराब छत्र-दण्ड
आमार विक्रम घुषिवेक त्रिभुवने ॐ रावणे मारिया राजा करि विभीषणे १६

रावण-समीपे शार्दूलेर कटक-वार्त्ता-कथन ओ श्रीरामेर प्रशंसा

प्रसाद पाइया चर विदाय हइल ॐ लंकार मध्येते गिया रावणे भेटिल
दाँड़ाइते नारे चर नाहि नाड़े पाश ॐ ऊर्द्ध्वमुखे वार्त्ता कहे, घन बहे श्वास
तोमार आज्ञाय गेनु सैन्य चर्च्चिवारे ॐ यावामात्र विभीषण चिनिल आमारे
रक्ते रांगा ह'ये गेनु रामेर गोचरे ॐ रघुनाथ प्राणदान दिलेन आमारे
कहिल सारण-शुक सैन्य यतोधिक ॐ देखिलाम कटक नयने ततोधिक
कि कब रामेर रूप से अति सुठाम ॐ ज्ञान हय देखिले, मानुष नहे राम
विराट् पुरुष राम सुदृश्य शरीर ॐ आजानु लम्बित बाहु नाभि सुगभीर
उन्नत नासिका ताँर श्रीखण्ड कपाल ॐ फलमूल खान, तबु विक्रमे विशाल
दूर्व्वादल श्याम तनु अति मनोहर ॐ कन्दर्प जिनिया रूप परम सुन्दर
आकार प्रकार ताँर हेरि हय ज्ञान ॐ त्रिभुवने वीर नाइ ताँहार समान

श्रीराम ने कहा, मैं चरों का वध नहीं करता हूँ। रावण से मेरी दो-चार बातें बता देना। सदा किस कारण तुम चर भेजते रहते हो। मेरी और तुम्हारी भेंट रणक्षेत्र में होगी, तब स्वयं इस दुर्जय सेना को देख लेना। हे रावण! तुम कैसे इससे निस्तार पाओगे? तुमको खंड-खंड मार कर विभीषण (के शीश) पर राजछत्र अर्पण करूँगा। त्रिभुवन में मेरा विक्रम घोषित होगा कि रावण को मार कर विभीषण को राजा बनाया ॥१६॥

रावण के निकट शार्दूल द्वारा कटक का वर्णन और श्रीराम की प्रशंसा

प्रसाद पाकर चर ने विदा ली और लंका में जाकर रावण से भेंट की। चरों में खड़े होने या हिलने-डुलने की शक्ति नहीं रह गयी थी। तेज साँस चल रही थी। वे ऊर्द्ध्वमुख होकर सुनाने लगे—आपकी आज्ञा से हम सेना का भेद लेने गये और जाते ही विभीषण ने हमको पहचान लिया। (वानरों द्वारा किये गये) लहूलुहान दशा में हम राम के समक्ष पहुँचे। रघुनाथ ने हम लोगों को प्राण दान किया। सारण और शुक ने सेना की जो वृहद् संख्या बताई थी अपनी आँखों से उससे अधिक सेना हमको देखने को मिली। राम के रूप का क्या वर्णन करूँ, उनकी कद-काठ इतनी सुन्दर है कि क्या बताऊँ। देखने से यह लगता है कि राम मनुष्य नहीं हैं। राम अति विशाल व सुदर्शन शरीर वाले हैं—जांघ तक

धर्म्मेते धार्म्मिक राम, गुणेर सदन ❋ विपक्षे देखिते राम प्रलय ज्वलन
ना मारेन राम तारे यार नम्रवाणी ❋ जे बड़ाइ करे तार उपरे उठानि
आछुक अन्येर काज देवे तारे नारे ❋ राक्षस हाजार चौद्द एका राम मारे
पात्र मित्र बुझाय ना लय तव चिते ❋ विधिर निर्व्वन्धे बुझि गेल विपरीते
सीता लागि रावण मरिल हाय हाय ❋ पांचालीप्रबन्धेगीतकृत्तिवासगाय १७

श्रीरामेर माहात्म्य-वर्णन

शमन-दमनरावणराजारावण-दमनराम❋शमनभवन नाहयगमन येलयरामेरनाम
राम नाम जप भाइ अन्य कर्म्म पिछे ❋ सर्व्व कर्म्म धर्म्म रामनाम बिना मिछे
मृत्युकाले यदि नर राम बलि डाके ❋ विमान चड़िया सेइ जाय देवलोके
श्रीरामेर महिमार कि दिब तुलना ❋ ताहार प्रमाण देख गौतम-ललना
पापी जन मुक्त हय वाल्मीकिर गुणे ❋ अश्वमेध फल पाय रामायण शुने

लम्बी भुजाओं और गंभीर नाभिवाले हैं। उनकी नासिका समुन्नत और चन्दन सा माथा है। फल-मूल खाते हैं फिर भी महा-पराक्रमी हैं। दूर्वादल सा श्यामल उनका अति-मनोहर तन है और कन्दर्प को भी नीचा दिखानेवाला उनका सौन्दर्य। उनका आकार-प्रकार देखकर ऐसा लगता है कि तीनों लोक में उनके समान कोई वीर नहीं। राम धार्मिक हैं, गुणों का आलय हैं, शत्रु को भस्म करने के लिए प्रलय की अग्नि के समान हैं। जो नम्रभाषी है उसे राम नहीं मारते, लेकिन जो बढ़-बढ़ कर बोलता है उसी पर वे आक्रमण करते हैं। दूसरों की क्या बताऊँ अकेले राम चौदह हजार (खरदूषणादि) राक्षसों को मार डालते हैं। आपके पात्र-मित्र सभी समझा रहे हैं किन्तु आपकी समझ में कोई बात आ नहीं रही है। लगता है भाग्य आपके विपरीत हो गया है। हाय-हाय सीता के कारण (लंकपति) रावण की मृत्यु आ गयी। कृत्तिवास गीत-गाथा के माध्यम से राम की महिमा गाता है॥ १७॥

श्रीराम का माहात्म्य-वर्णन

जिस यम का दमन रावणराज ने किया उस रावण का दमन करने वाले राम हैं। जो राम का नाम लेता है उसको यमलोक नहीं जाना पड़ता। भाई! राम-नाम जपो, दूसरा काम बाद में। राम-नाम के बिना सारे धर्म-कर्म व्यर्थ हैं। मृत्यु के समय यदि मनुष्य राम का नाम ले लेता है तो विमान पर सवार होकर वह देवलोक चला जाता है। श्रीराम की महिमा की कौन सी तुलना दूँ। प्रमाण के रूप में गौतम-पत्नी अहल्या

राम नाम लइते ना कर भाइ हेला * भवसिन्धु तरिवारे राम-नाम भेला
अनाथेर नाथ राम प्रकाशिला लीला * वनेर वानर वन्दी जले भासे शिला
राम-जन्म-पूर्व्वे षाटि सहस्र वत्सर * अनागत पुराण रचिला मुनिवर
रामनाम स्मरणे यमेर दाय तरि * भवसिन्धु तरिवारे रामपद तरी
चण्डाले याँहार दया बड़ सकरुण * पाषाणे निशान आछे श्रीरामेर गुण
श्रीराम-नामेर गुणे कि दिब तुलना * पाषाण मनुष्य हय, नौका हय सोना
राम नाम लैते भाइ ना करिह हेला * संसार तरिते राम नामे बाँध भेला
श्रीराम स्मरणे येबा महारण्ये जाय * धनुर्व्वाण लये राम पश्चाते गोड़ाय
राम-राम बल भाइ मुखे वार-वार * भावि देख राम विना गति नाहि आर
करिलेन अश्वमेध श्रीराम यतने * अश्वमेध फल पाय रामायण शुने
एमन रामेर गुण कि दिब तुलना * पादस्पर्शे शिला नर, नौका हय सोना १८
पार कर रामचन्द्र पार कर मोरे * दीन देखि नौका राम लये गेल दूरे

को देख लो। बाल्मीकि की कृपा (अर्थात् रामकथा) से पापियों को मुक्ति मिली। रामायण सुनने से अश्वमेध-यज्ञ का फल प्राप्त होता है। भाई, राम-नाम लेने में आलस मत करना, भवसागर पार करने के लिए राम-नाम नौका के समान है। अनाथ के नाथ राम ने अपनी लीला प्रदर्शित की—वन के वानर वन्दी बन गये और जल पर शिला तैरने लगी। राम-जन्म से साठ-हजार वर्ष पूर्व मुनिवर ने अनागत-पुराण की रचना की। राम-नाम के स्मरण से यम के हाथों से निस्तार मिल जाता है। भवसिन्धु को पार करने के निमित्त राम के चरण, तरणि (नौका) के समान हैं। जिनकी करुणा चंडाल पर भी है और जिनके गुणों के चिह्न पाषाण पर भी अंकित हैं। राम-नाम लेने में भाई कतई काहिली मत करना, संसार तरने के लिए राम-नाम की भेला बाँधो। श्रीराम का स्मरण कर जो घनघोर जंगल में भी जाता है तो राम उसके पीछे-पीछे धनुष-बाण लिये चलते हैं। भाई, राम-नाम बार-बार मुँह से बोलो, सोच कर देखो, बिना राम के कोई गति नहीं। श्रीराम ने तो यत्न करके अश्वमेध-यज्ञ किया और केवल रामायण के श्रवणमात्र ही से अश्वमेध का फल मिल जाता है। राम के ऐसे ही गुण हैं, उनकी क्या तुलना दूँ। उनके चरणों के स्पर्श से पत्थर प्राणी में बदल जाता है और नाव सोने की बन जाती है ॥ १८ ॥

पार लगाओ हे रामचन्द्र, मुझे पार लगाओ। मुझे दीन देखकर तुम नाव लेकर दूर हट गये। जिनके पास (उतराई देने के लिए) कौड़ी थी

यार सने कड़ि छिल गेल पार ह'ये * कड़ि बिना पार करे तारे बलि नेये
ध्यान पूजा तंत्र मंत्र यार नाहि ज्ञान * तारे यदि करे पार तबे जानि राम
योग-याग तंत्र-मंत्र जेइ जन जाने * तुमि कि तराबे तारे तरे निजगुने
मोर संगे कड़ि नाइ, पार हब किसे * कर वा न कर पार कूले आछि ब'से
नेयेर स्वभाव आमि जानि भालेभाले * कड़ि ना पाइले पार करे सन्ध्याकाले
कारे भांग कारे गड़ एइ तव काज * कारो मुण्डे छत्रदण्ड कारो मुण्डे वाज
एक शत पुत्र कारो अक्षय करि दाओ * एक पुत्र दिया कारे ताओ हरि लओ
आपनि से भांग प्रभु आपनि से गड़ * सर्प ह'ये दंश तुमि ओझा ह'ये झाड़
सकलि तोमार लीला सब तुमि कर *हाकिम ह'ये हुकुम दाओ पेयादा ह'येमार
अधम देखिया यदि दया ना करिबे * पतितपावन नाम कि गुणे धरिबे
साधु जने तराइते सर्व्व देव पारे * असाधु तरान जिनि, ठाकुर बलि ताँरे
अहल्या पाषाण ह'ये छिल दैव दोषे * मुक्ति-पद पाय तव चरण परशे
पार कर रामचन्द्र रघुकुलमणि * तरिवारे दुटि पद क'रेछ तरणी

वे पार लग गये, बिन-कौड़ी के भी पार लगाओ तो समझूँ कि नाविक हो। जिसको ध्यान-पूजा, तंत्र-मंत्र का ज्ञान न हो उसको पार लगाओ तो जानूँ कि राम हो। जो व्यक्ति योग-याग और तंत्र-मंत्र में कुशल है वह तो अपने ही गुण के बूते पार हो जायगा, तुम उसे क्या पार लगाओगे? मेरे पास कौड़ी नहीं है, मैं पार कैसे जाऊँगा? चाहे पार लगाओ या न लगाओ मैं तो तट पर बैठा ही रहूँगा। केवटों की आदत से मैं भली-भाँति परिचित हूँ—कौड़ी न मिलने पर भी वे शाम को पार कर देते हैं। किसी को बिगाड़ते हो तो किसी को बनाते हो—यही तुम्हारा काम है। किसी के सिर पर राजछत्र है तो किसी के सिर गाज गिराते हो। किसी को तो सौ पुत्रों से अक्षय बना देते हो और किसी को एक पुत्र देकर भी छीन लेते हो। हे प्रभु, तुम स्वयं तोड़ते हो, स्वयं गढ़ते हो। साँप बनकर डस लेते हो और ओझा बनकर विष उतार देते हो। सभी कुछ तुम्हारी लीला है, तुम ही सब कुछ करते हो। हाकिम बनकर हुक्म देते हो और कारिन्दा बनकर ताड़ित करते हो। अधम देख कर यदि दया नहीं करोगे तो अपना पतितपावन नाम किस बल पर रख सकोगे। साधुओं को तारने में तो सभी देवता समर्थ हैं, असाधु को जो तारे वही सबका स्वामी (देवताओं का देवता) है। दैव-दोष से अहल्या पाषाण बन गयी थी, तुम्हारे चरणों के स्पर्श से उसे मुक्ति मिल गयी। हे रघुकुलमणि रामचन्द्र! मुझको पार लगाओ, तुम्हारे दोनों चरणों को मैंने अपनी तरणी बना लिया है। यदि

यदि मोरे छाड़ प्रभु आमि ना छाड़िब ❋ बाजन नूपुर ह'ये चरणे बाजिब
राम नदी ब'ये जाय, देखह नयने ❋ तथा गिया स्नान कर कूले बसि केने
हेदे रे पामर लोक पार हबे यदि ❋ पिओ राम नामामृत, ब'ये जाय नदी
मृत्युकाले एक बार राम बले डाके ❋ सेइ स्वर्गे जाय, यम दाण्डाइया देखे
एमन रामेर गुण वर्णिते कि पारि ❋ हेलाय तरिया जावे मुखे बल हरि १९

रावण-कर्त्तृक सीताके श्रीरामेर मायामुण्ड-प्रदर्शन

शार्दूल बलिछे, राजा कर अवधान ❋ रामेर विक्रम कथा शुन विद्यमान
खर आर दूषण त्रिशिरा तिनजन ❋ राक्षस सहस्र चतुर्द्दशेर मिलन
एके एके संहारिला एका रघुनाथ ❋ केमने दाँड़ाबे रणे ताँहार साक्षात्
देखिनु शुनिनु जे, कहिते भय करि ❋ बुझिया करह कार्य्य लंका-अधिकारि
शुक आर सारण कहिल तव हित ❋ अपमान करिले तादेर यथोचित
आपनि सुबुद्धि राजा विचारे पण्डित ❋ बुझिया करह कर्म ये हय उचित २०
शार्दूलेर कथाय रावण राजा हासे ❋ राजार प्रसाद देय यत मने आसे

तुम मुझको त्याग भी दो प्रभु ! तो मैं तुमको छोड़ने वाला नहीं। तुम्हारे पैरों की पजनिया बनकर बजा करूँगा। नयनों से देखो, राम-सरिता बह रही है, उसमें चल कर स्नान करो, किनारे क्यों बैठे हो। अरे पामर, यदि पार ही होना है तो राम-नाम का अमृत पी लो, नदी बहती चली जा रही है। मृत्यु के समय यदि एक बार भी राम का नाम लेकर कोई पुकार ले तो यम खड़ा देखता रह जाता है और वह (प्राणी) स्वर्ग चला जाता है। ऐसे राम के गुणों का बखान करना क्या मेरे सामर्थ्य में है, मुँह से 'हरि' का नाम लो, सुगमता से नौका पार लग जायगी ॥ १९ ॥

रावण-द्वारा सीता के सम्मुख श्रीराम के मायामुंड का प्रदर्शन

शार्दूल कह रहा है, हे राजन् ! ध्यान से राम की पराक्रम-कथा सुनिए। खर, दूषण और त्रिशिरा ने चौदह हजार राक्षसों सहित सामना किया तब अकेले रघुनाथ ने एक-एक कर प्रत्येक का संहार किया। रण में उनके सम्मुख कैसे खड़े हो सकिएगा। जो कुछ देखा और सुना उसे कहने में डर लगता है। हे लंकाधिपति ! समझ-बूझकर काम कीजिए। शुक और सारण ने आपके हित के लिए कहा और आपने उनका सर्वथा अपमान किया। हे राजा ! आप स्वयं बुद्धिमान हैं, विद्वान हैं, समझ-बूझकर जो समुचित लगे वही काम कीजिए ॥ २० ॥

शार्दूल की बातों पर राजा रावण हँस पड़ा और जी-भर कर प्रसाद देने

वलय कंकण दिल माणिक रतन ❋ पञ्चशंख वाद्य दिल राजार बाजन
विचित्र निम्र्माण दिल हार ओ केयूर ❋ नाना रत्न मणि दिल चरणे नूपुर २१
चरेर वचन जेइ हैल अवसान ❋ अन्तरे हइल चिन्ता उड़िल पराण
दशानन पात्र मित्रे दिलेक मेलानि ❋ विद्युज्जिह्व निशाचरे डाकिल तखनि
तोरे वलि विद्युज्जिह्व मायार सागर ❋ तुमि-त अलंघ्य पात्र लंकार भितर
मैथिलीके आनिलाम बड़ सुख आशे ❋ अद्यापि ना हय सुख हइबे कि शेषे
एत दिन सीता ना हइल अनुगता ❋ निकट आगत स्वामी शुनि हरषिता
पात्र-कार्य्य करि मोर कुलाओ आरति ❋ रामेर धनुक-मुण्ड करह सम्प्रति
धनु-मुण्ड देखि सीता पाइवेक त्रास ❋ स्वामि देवरेर तरे हउक निराश २२
एत यदि विद्युज्जिह्व राज-आज्ञा पाय ❋ रामेर धनुकमुण्ड गठिवारे जाय
वसिल जे विद्युज्जिह्व करिया धेयान ❋ गुरुर चरण बन्दि जोड़े ब्रह्मज्ञान
वसिल से विद्युज्जिह्व ध्यान नाहि टूटे ❋ ब्रह्मज्ञान तेजेते धनुकमुण्ड उठे
विचित्र निम्र्माण सेइ धनुकेर गुणे ❋ कुण्डल निर्म्मित रत्ने शोभे दुइ काने
मुकुता जिनिया तार दशनेर ज्योति ❋ अविकल बिम्बफल ओष्ठाधर द्युति

लगा। उसने वलय (कड़े) और कंगन दिये, माणिक्य और रत्न दिये। राजा का वाद्य पंचशंख दिया। विचित्र ढंग से निर्मित हार, बाजूबन्द, विविध मणि-रत्नादि तथा पैरों के लिए नूपुर दिये॥ २१॥

चर का कथन ज्यों ही समाप्त हुआ त्यों ही रावण के मन में चिन्ता का उदय हुआ और होश उड़ गये। दशानन ने सभासदों को विदा किया। फिर उसी समय विद्युज्जिह्व नामक निशाचर को बुलवाया। हे विद्युज्जिह्व! तुम्हें हम माया का सागर कहते हैं—लंका में कोई तुमसे पार पाने वाला नहीं। मैथिली को मैं बड़ी ही सुखद आशा से ले कर आया था। अभी तक वह आशा पूर्ण नहीं हुई, अन्त में जाने क्या हो। इतने दिनों में भी सीता (मेरी) अनुगता न बन सकी, और पति निकट आ गया है सुनकर वह प्रसन्न हो उठी है। (इसलिए तुम) सखा का कर्तव्य कर मेरी मनोकामना पूर्ण करो। तुरन्त राम का मायारूपी धनुष और मुंड बनाओ। धनुष-मुंड देखकर सीता डर जायगी और पति एवं देवर के सम्बन्ध में निराश हो जायगी॥ २२॥

इतनी राजाज्ञा पाकर विद्युज्जिह्व राम के सदृश धनुष-मुंड निर्माण के लिए चल पड़ा। गुरु के चरणों की वन्दना कर ध्यान लगाकर विद्युज्जिह्व बैठ गया और ब्रह्मज्ञान को केन्द्रित करने लगा। ब्रह्मज्ञान के तेज से माया-धनुष और माया-मुंड का आविर्भाव हुआ। उस धनुष की प्रत्यंचा की निर्माण-कला भी विचित्र थी। दोनों कानों में मणिमय कुण्डल शोभित हैं और दाँतों

चाँपा नागेश्वर दिया वान्धिलेक चूड़ा * अतिशुभ्र वसने रामेर जटा बेड़ा
श्रीरामेर मुण्ड सेइ करिल निर्म्माण * जे देखेछे सेइ जाने रामेर समान
रामेर समान धनु करिया निर्म्माण * रावणेर आगे लये करिल योगान
श्रीरामेर मुख देखि दशानन हासे * राजार प्रसाद देय यत मने आसे २३
विद्युज्जिह्व निशाचरे थुइलेक द्वारे * प्रवेशिल आपनि अशोक वनान्तरे
मिथ्या-सत्य करि पाड़े कथार पातन * ये प्रकारे सीतार प्रतीत हय मन
मोर वाक्य नाहि शुन बाड़ाओ जन्जाल * तोर अपेक्षाय राखियाछि एत काल
हेन मने करि तोरे काटि एइ दण्डे * तोर रूप देखिया तखनि कोप खण्डे
मने मने भाव ये रामेर कत गुन * आजिकार रणकथा मन दिया शुन
वहिल पाथर गाछ यत कपिगन * हइलेक ताहारा निद्राय अचेतन
निद्राय वानरगण गड़ागड़ि जाय * मुण्डे-मुण्डे ठेकाठेकि मूर्च्छितेर प्राय
एइ सब वार्त्ता आमि शुनि चर मुखे * रात्रियोगे गेलाम ये केह नाहि देखे
वानर-उपरे आगे करि हानाहानि * वाणेते काटिया करिलाम दुइ खानि
वानरेर मध्ये राम हैल आगुयान * खड्गाघाते मुण्ड काटि करि दुइ खान

की आभा ऐसी कि मोतियों को भी निष्प्रभ कर दे। बिम्बफल की भाँति उनके होठों की द्युति है। चम्पक और नागेश्वर फूलों से केश का जूड़ा मंडित है और जटा अति शुभ्र वस्त्र से बँधी हुई। श्रीराम का इस प्रकार का मायामुंड उसने निर्मित किया—जिसने भी देखा उसी ने कहा यह मुंड राम जैसा ही है। राम के समान धनुष का निर्माण कर रावण के सम्मुख ला पहुंचाया। श्रीराम का मुख देखकर दशानन हँसने लगा और दिल खोलकर राज-प्रसाद प्रदान किया ॥२३॥

विद्युज्जिह्व निशाचर को द्वार पर छोड़कर रावण ने स्वयं अशोक-वन में प्रवेश किया। मिथ्या को इस प्रकार सत्य जैसा रूप दिया कि सीता को विश्वास हो जाय। मेरी बात तुम सुनती नहीं और झंझट बढ़ाये चली जा रही हो। तुम्हारी ही प्रतीक्षा में इतने दिन बिता चुका हूँ। जी करता है कि तुमको इसी क्षण काट कर फेंक दूँ लेकिन तुम्हारा रूप देखकर तुरन्त गुस्सा ठंडा पड़ जाता है। मन ही मन सोचा करती हो कि राम के कितने गुण हैं तो तनिक आज के युद्ध का हाल भी ध्यान लगाकर सुन लो। सारे वन्दर पेड़-पत्थर ढोकर थककर अचेत सो गये। नींद में वे लोग लुढ़क रहे थे और उनके मुंड आपस में टकरा रहे थे; मानों वे सब मूर्च्छित हो गये हों। चरों के मुँह यह सुनकर रात को मैं वहाँ गया, कोई मुझे नहीं देख पाया। वन्दरों पर पहला आक्रमण कर उनको बाण के द्वारा दो-दो टुकड़े कर डाला। वन्दरों में से निकलकर तुम्हारा राम आगे बढ़ आया। खड्ग से मैंने उसका मुंड

पड़िल तोमार राम, लक्ष्मण कातर * देशे गेल लइया से सकल वानर
वानरेर मध्ये एक सुग्रीव प्रधान * प्रहारे जर्जर अति आछे मात्र प्राण
महेन्द्र देवेन्द्र छिल कपि एक जोड़ा * काटिलाम दुइ पद तारा दोंहे खोंड़ा
वानरेर मध्ये यार करिस वाखान * हस्त पद काटिलाम पड़े हनूमान
एइमत करिलाम वानरेर दण्ड * एइ देखि जानकि रामेर काटामुण्ड
कोथा गेलि विद्युज्जिह्व-नाम निशाचर * जानकीर सम्मुखे रामेर मुण्ड धर
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व वाखान *लंकाकाण्डे गाहे मायामुण्डेर आख्यान२४

मायामुण्ड दर्शने सीतार विलाप

देखिया रामेर मुण्ड जानकी दुःखिता * विलाप करेन बहु धरणी-पतिता
कुक्षणे पोहाले प्रभु आजिकार राति * अभागिनी हारालाम तोमा हेन पति
आपदे पड़िले प्रभु सहोदर छाड़े * लक्ष्मण वानर-सैन्य लये देशे नड़े
विदेशे आसिया प्रभु हाराले जीवन * देशेते लक्ष्मण गेल एड़िया मरण
सहोदर छाड़िया देवर देशे गेलि * राक्षसेर हातेते प्रभुरे दिया डालि
शुनिया कौशल्या देवी तोमार मरण * त्यजिवेन प्रभु, तव शोकेते जीवन

काट डाला। तुम्हारे राम के गिरते ही लक्ष्मण उन बन्दरों को लेकर अपने देश लौट गया। बन्दरों में प्रधान है सुग्रीव। उसकी तो इतनी पिटाई हुई है कि वह बेहाल है—शरीर में केवल प्राण रह गया है। देवेन्द्र और महेन्द्र नाम के दो कपि थे उन दोनों के मैंने पैर काट लिये और वे लुंज हो गये हैं। बन्दरों में जिसकी प्रशंसा करती रहती हो उस हनुमान के हाथ और पैर काट लिये। इस प्रकार मैंने बन्दरों को दंड दिया। अरी जानकी! यह देख राम का कटा मुंड। क्यों रे विद्युज्जिह्व निशाचर! तू कहाँ गया, जानकी के सम्मुख राम का कटा मुंड तो रख। कृत्तिवास पंडित के कवित्व का क्या कहना है, लंकाकांड में वह माया-मुंड का आख्यान गा रहा है॥ २४॥

माया-मुंड देखकर सीता का विलाप

राम का मुंड देखकर जानकी शोकमग्न हो गयी और धरती पर लोटकर विलाप करने लगी। हे प्रभु, किस बुरे क्षणों में आज प्रभात आया कि मैंने तुम जैसा पति खो दिया। हे प्रभु, विपत्ति आने पर सहोदर भी छोड़ जाता है, लक्ष्मण वानरी सेना लेकर देश की ओर खिसक गया। हे प्रभु, तुमने विदेश में आकर प्राण गवाँया और लक्ष्मण मृत्यु से कतराकर देश चला गया। अरे देवर, तू अपने सहोदर को राक्षसों के हाथ सौंपकर देश चला गया! हे प्रभु, तुम्हारी मृत्यु का संदेश पाते ही कौशल्या देवी तुम्हारे शोक में प्राण त्याग

जनकेर घरे छिनु अभागिनी सीता * जनम दुःखिनी आमि, नाहि माता-पिता
चरण सेविते तव आइलाम वने * आमारे त्यजिया कोथा गेले हे एक्षणे
अग्निते प्रवेश करि त्यजिब जीवन * एक वार देखा देह कमललोचन
राज्यनाश वनवास स्त्री निल रावणे * केन विधि विड़ंविल राम हेन जने
सर्व्वलोके बले मोरे अविधवा सीता * आमारे विधवा कैला केमन देवता
अकारणे आछ रे रावण मोर आशे * गलाय काटारि दिया जाब प्रभुपाशे
ये खाण्डाय प्रभुरे करिलि दुइ खान * सेइ खड्गे काट मोरे जाउक परान
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व शोभन * गाहिलेन सीतादेवी-हृदय-वेदन २५

श्री रामेर प्रशंसापूर्व्वक सीतार खेद

एमनि वाणेर शिक्षा, मुनिगणे कैले रक्षा, ताड़का मारिले एक वाणे ।
सुबाहु राक्षस मारि, मुनि-यज्ञ रक्षा करि, गेल प्रभु जनक भवने ।।
शिवेर धनुक भंगे, लोके चमत्कार लागे, करेछिले ए पाणिग्रहण ।
परशुरामे करि जय, गेला प्रभु अयोध्याय, जय-जय सकल भुवन ।।

देंगी। मैं अभागिन सीता जनक के घर पर थी। जन्म की दुखियारी हूँ—मेरे पिता-माता नहीं। वन में तुम्हारे चरणों की सेवा करने आई, अब मुझको छोड़कर तुम कहाँ चले गये? आग में कूदकर अपने प्राण दे दूँगी—हे कमल-लोचन एक बार तो दर्शन दे दो। राज्य से हाथ धोया, वन आना पड़ा, रावण पत्नी उठा ले आया—विधाता ने राम जैसे व्यक्ति को इतने कष्ट-भोग क्यों दिये। सभी लोग मेरे लिए कहते हैं कि सीता अविधवा है। यह किस प्रकार देव ने मुझको विधवा बना दिया। ऐ रावण, तू व्यर्थ ही मेरी आशा में बैठा है, मैं गले में कटारी मार कर अपने स्वामी के पास चली जाऊँगी। जिस खड्ग से मेरे प्रभु को तुमने काटा है उसी से मुझको भी काट डालो, मेरा प्राण चला जाय। कृत्तिवास पंडित का कवित्व शोभन है—उसने सीतादेवी के हृदय की वेदना गाकर सुनाई ।। २५ ।।

श्रीराम की प्रशंसा करती हुई सीता का विलाप

तुमको धनुर्विद्या में ऐसी ही दक्षता थी कि एक बाण से ताड़का का वध कर तुमने मुनियों की रक्षा की। सुबाहु राक्षस को मारकर, मुनियों के यज्ञ की रक्षा कर तुम जनक-भवन में पधारे। लोगों को आश्चर्य-चकित करते हुए तुमने शिव-धनुष तोड़कर मेरा पाणिग्रहण किया था। परशुराम पर विजय प्राप्त कर तुम अयोध्या लौट गये और तीनों लोकों में तुम्हारी जय-जयकार होने लगी। मैं कैसी अभागिन पत्नी हूँ कि तुम सरीखे पति को खो दिया।

आमि स्त्री अभाग्यवती, हारालाम हेन पति, काँदे सीता मायामुण्ड लैया।
दैव-घटना-कारणे, एले प्रभु तपोवने, कोथा गेले आमारे त्यजिया ॥
परे निल राज्यखण्ड, विधि मोरे कैल दण्ड, भाग्ये मोर दैवेर लिखन।
दारुण कैकेयी ताते, वाद साधे विधिमते, हाराइनु आमि रामधन ॥
त्यजिया राज्येर आश, करिले हे वनवास, पञ्चवटी एले तिनजन।
शूर्पनखा नाक कान, केटे कैले अपमान, राक्षस विपक्ष से कारण ॥
करिला विषम रण, मारिला खरदूषण, चौद्द हाजार निशाचर जिनि।
मारीच राक्षसे मारि, पाठाइला यमपुरी, हेन प्रभु लोटाय धरणी ॥
वालि वानरेरे मारि, सुग्रीवेरे मित्र करि, सागर शुषिले एक वाणे।
करिला विषम रण, वधि कत शत जन, कार वाणे हाराइला प्राणे ॥
स्मरिते से सब कथा, अन्तरे लागिछे व्यथा, सहने ना जाय एइ दुःख।
धन-जन-सुसम्पद, किछु नहे चिरपद, आर ना देखिब चाँदमुख ॥
अनले प्रवेश करि, कलेवर परिहरि, आमार जीवने नाहि काम।
एइ कृत्तिवास वाणी, शुन सीता ठाकुराणी, पाइबे आपन प्रभु राम ॥ २६

सीता मायामुंड लेकर विलाप करने लगी। हे प्रभु, दैवयोग से तुम तपोवन आये, मुझको त्यागकर कहाँ चले गये हो? बाद में राजपाट भी जाता रहा—यह सारा दण्ड मेरे भाग्य का ही फेर है। निष्ठुर कैकेयी के बीच में पड़ने के कारण मैंने रामधन खोया। राज्य की आशा त्यागकर वनवास करने हम तीनों पंचवटी आये। शूर्पनखा के नाक-कान काटकर तुमने उसका अपमान किया और इसी कारण राक्षस तुम्हारे विरोधी हो गये। तुमने घनघोर युद्ध किया, खर-दूषण को मारकर चौदह हजार निशाचरों को परास्त किया। तुमने मारीच राक्षस को भी यमलोक पहुँचा दिया। हाय! ऐसे (पराक्रमी) प्रभु, आज तुम धरती पर लोट रहे हो। वानर वालि का वध कर, सुग्रीव से मित्रता कर, एक वाण के प्रहार से सागर को भी सोख लिया। तुमने घनघोर युद्ध किया, कितनों के प्राण लिये। तुम्हारा प्राण किसके वाण से चला गया। ये सब बातें स्मरण करने पर हृदय व्यथा से भर जाता है और यह क्लेश सहा नहीं जाता। धन-जन-सम्पदा—कुछ भी चिरस्थायी नहीं है—दुःख है कि तुम्हारा चाँद सा मुखड़ा अब देखने को नहीं मिलेगा। मुझको अपने जीवन से कोई मोह नहीं, मैं आग में प्रवेश कर अपना शरीर त्याग दूँगी। कृत्तिवास का कहना है, हे सीता-माता! चिन्ता न करो, अपने प्रभु राम को फिर से पा जाओगी ॥ २६ ॥

निकषा ओ माल्यवान कर्त्तृक रावणेर प्रति उपदेश एवं सरमा कर्त्तृक सीतार सान्त्वना

कातर हइया सीता करेन रोदन * विमुख हइया हासे राजा दशानन
करिले परेर मन्द अवश्य प्रमाद * रामजय वलिया पड़िल सिंहनाद
वानरेर सिंहनादे काँपे लंकापुरी * मुण्ड लये पलाय लंकार अधिकारी
दशानन गिया शीघ्र वैसे सिंहासने * ताहारे बेड़िया बसे पात्रमित्रगणे २७
कान्देन अशोक वने श्रीराम प्रेयसी * हेनकाले आइल से सरमा राक्षसी
सीता बलिलेन, एस सरमा बहिनी * तव अपेक्षाय आमि राखियाछि प्राणी
विषपाने मरि किंवा, अनले प्रवेशि * एतक्षण आछे प्राण तोमारे आश्वासि
जाह देखि, रावण कि करिछे मंत्रणा * सत्य कि प्रभुर प्रति दिलेक से हाना
जानाइया स्वरूपे आमारे कर रक्षा * प्राण राखियाछि आमि तोमार अपेक्षा
सीता वाक्ये सरमा हइल एक पाखी * रावण निकटे गेल चतुर्दिक देखि
रावण कहिछे, मन्त्रिगण, कह सार * केमने रामेर सैन्य करिव संहार
मंत्री बले सीता दिले हबे अपमान * स्वयं करिया युद्ध लह रामेर प्राण २८

निकषा और माल्यवान द्वारा रावण के प्रति उपदेश और सरमा द्वारा सीता को सान्त्वना-दान

दुखी होकर सीता क्रन्दन कर रही थीं और राजा दशानन मुँह घुमाकर हँस रहा था। दूसरे की बुराई करने से अपने पर ही विपत्ति आती है। इतने में ही राम-जय का सिंहनाद लंकापुरी को कंपित करने लगा। झट मुंड लेकर लंकेश वहाँ से भाग खड़ा हुआ और जाकर सिंहासन पर बैठ गया। उसको घेर कर सभी सभासद बैठ गये ॥ २७ ॥

श्रीराम की प्रियतमा अशोक वन में रो रही थी कि ऐसे ही समय वहाँ सरमा राक्षसी आई। सीता ने कहा, आओ बहन सरमा, तुम्हारी ही प्रतीक्षा में मैंने अभी तक प्राण रख छोड़ा है। या तो विष खाऊँगी, अन्यथा अग्नि में प्रवेश करूँगी; केवल तुम्हारी ही आशा में अभी तक प्राण रखे हुए हूँ। जाओ, जाकर देखो कि रावण कौन सी मंत्रणा कर रहा है, क्या यह सच है कि उसने प्रभु पर हमला किया था। सारी बातों को जानकर मुझको बताओ, तुम्हारे ही कारण मैंने प्राण बचा रखा है। सीता के कहने पर सरमा एक पखेरू का रूप धारण कर चारों ओर देखते-भालते रावण के निकट पहुँची। रावण कह रहा है, मंत्रियो ! अब मूल बात बताओ कि राम की सेना का कैसे संहार किया जाय। मंत्री ने कहा, सीता को देने पर अपमान होगा, अतः स्वयं युद्ध कर राम का वध कीजिए ॥ २८ ॥

हेनकाले रावणेर माता अति बुड़ी ❋ रावणेर काछे गेल अति ताड़ाताड़ि
आगे पाछे चाहे बुड़ी रावणेर पाने ❋ रावणेरे बेड़ियाछे यत मंत्रिगणे
सवार हइते पोड़े मायेर परान ❋ कहिते लागिल बुड़ी हये आगुयान
देवता गन्धर्व नहे सीता त मानुषी ❋ कत बड़ देखियाछ ताहारे रूपसी
राक्षस हइया केन मनुष्येते साध ❋ एखन ये देखितेछि पड़िबे प्रमाद
चतुर्दश सहस्र राक्षस मारे वाणे ❋ त्रिशिरा, दूषण आर खर पड़े रणे
से राम कृतान्त-दण्ड-तुल्य-दण्डधारी ❋ कि बुझिया आन तुमि से रामेर नारी
आमार वचन शुन पुत्र लंकेश्वर ❋ सीतादेवी देह गिया रामेर गोचर
सीता दिया रामेर सहित कर प्रीति ❋नतुवा तोमार नाहि देखि अव्याहति२९
एत यदि बले बुड़ि मनेर सन्तापे ❋ शुनिया बुड़ीर कथा राजा मने कोपे
मायेर गौरव राखि ते कारणे सइ ❋ अन्यजन हइले ताहार प्राण लइ
कुड़ि चक्षु रांगा करि चाहे लंकेश्वर ❋ नड़ि भर करि बुड़ी उठि दिल रड़३०
बुड़ि यदि पलाइल पेये अपमान ❋ रावणेरे बुझाय तखन माल्यवान
एतदिन नाति, तव विक्रम बाखानि ❋ बुझिया आपन बल करह आपनि

ऐसे ही समय रावण की अत्यन्त वृद्धा माँ (निकषा) रावण के पास तुरंत गई। अगल-बगल देखकर बुढ़िया ने रावण की ओर देखा—सारे मंत्रियों ने रावण को घेर रखा है। लेकिन माँ का हृदय अपने पुत्र के लिए सबसे अधिक कातर होता है। आगे बढ़कर बुढ़िया कहने लगी, सीता कोई देवता या गन्धर्व नहीं, मामूली मानुषी है; वह तुमको कितनी रूपवती लगने लगी? राक्षस होकर मनुष्य की साध क्यों होने लगी, इससे तो विपत्ति आ पड़ेगी। बाणों से चौदह हजार राक्षसों के प्राण जा चुके हैं—युद्ध में त्रिशिरा, खर और दूषण काम आ गये। वह राम यम-दंड-धारी कृतान्त के समान हैं। पता नहीं क्या समझ कर तुम ऐसे राम की नारी उठा लाये हो। हे लंकेश! तुम मेरा कहना मानो, जाकर सीतादेवी को राम के अर्पण करो। सीता देकर राम से मित्रता कर लो वर्ना तुम्हारा निस्तार तो दिखाई नहीं पड़ता ॥ २९ ॥

बुढ़िया ने मन के सन्ताप के वश इतना कहा तो रावण क्रोध से भर गया। माँ के सम्मान के कारण कुछ कह न सका, दूसरा होता तो उसके प्राण ले लेता। लंकेश्वर ने लाल-लाल बीसों नेत्रों से देखा तो बुढ़िया लकुटी के सहारे उठ कर भाग खड़ी हुई ॥ ३० ॥

बुढ़िया जब अपमानित होकर चली गयी तो रावण को माल्यवान समझाने लग गया। हे नाती! अब तक तो तुम्हारे बल-विक्रम का बखान

यत यत राजा हैल चन्द्र-सूर्यकुले * कोन राजा भासाइल पाषाण सलिले
सागर हइल पार हइया मानव * हेन रामे घाँटाइला ए कि असम्भव
एतदिन शुनितेछ रामेर विक्रम * सुजनेर बन्धु राम दुर्ज्जनेर यम
कुड़ि चक्षु रांगा करि चाहिल रावण * माल्यवान रहिल हइया भीतमन ३१
रावण राक्षसगणे डाक दिया आने * दिके दिके राखिल से लंकार रक्षणे
महोदरे दक्षिणे राखिल दशानन * एक लक्ष राक्षस से द्वारेते भिड़न
पश्चिमे राखिल इन्द्रजिते ये प्रधान * राक्षस अर्ब्बुद-कोटि पर्व्वत प्रमान
पूर्व्वद्वारे राखिल प्रहस्त सेनापति * तिनकोटि राक्षस ये ताहार संहति
रहिल उत्तरद्वारे आपनि रावण * तिन द्वारे यत, तार द्विगुण भिड़न
ताहार छत्रिश कोटि मुख्य सेनापति * रहिल उत्तरद्वारे रावण संहति
अक्षौहिणी-सत्तर सहित से रावण * सतर्क सशंक सदा सब पुरजन ३२
सरमा जानिया इहा चलिल सत्वर * सकलि कहिल गिया सीतार गोचर
रावण कहिल मिथ्या ना करे संग्राम * सर्व्वथा कुशले तव आछेन श्रीराम

करता रहा। अब अपना बल कूत कर ही जो कुछ करना है करो। चन्द्रवंश, सूर्यवंश में अब तक जितने राजा हुए, बताओ उनमें कौन ऐसा है जिसने पानी में पत्थर तैराया। मनुष्य होकर भी जिसने सागर पार कर लिया ऐसे राम को तुमने छेड़ दिया, यह कैसी अनहोनी कर डाली तुमने। इतने दिनों से राम के पराक्रम के बारे में सुन रहे हो कि राम सुजन का मित्र है और दुर्जन का यम है। (इस पर) बीसों आँखें लाल-लाल करते हुए रावण ने देखा तो माल्यवान भयभीत बैठा रह गया॥ ३१ ॥

रावण ने राक्षसों को बुलवाकर उपस्थित किया और उनको लंका की सुरक्षा में चारों ओर नियुक्त किया। दक्षिण द्वार पर उसने महोदर को नियत किया जिसके साथ एक लाख राक्षस डटे थे। पश्चिम द्वार पर इन्द्रजीत को प्रधान बनाया और वहाँ अर्बुद-कोटि राक्षस तैनात कर दिये गये। पूर्वी द्वार पर प्रहस्त को सेनापति बनाया—उसके अधीन तीन-कोटि राक्षस सन्नद्ध हो गये। उत्तरी द्वार पर स्वयं रावण ने मोर्चा लगाया और तीनों द्वार पर जितनी सेना थी उसकी दुगुनी इस द्वार पर नियुक्त हुई। रावण के छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति उसके संग उत्तरी द्वार पर रहे। सत्तर अक्षौहिणी सेना के साथ रावण तथा सारे पुरवासी सदा चौकन्ने और सशंक बने रहे॥ ३२॥

इतना सब जान-समझकर सरमा झटपट चल पड़ी और सीता के निकट पहुँचकर सब कुछ बताया। रावण ने झूठ कहा है, उसने कोई भी युद्ध नहीं

तोमा दिते बलिल निकषा रावणेरे * कतमत बुझाइल रामे भजिवारे
मातार वचन दुष्ट ना शुनिल काने * सेइमत ताड़ाइल बुड़ा माल्यवाने
कारो युक्ति ना शुनिया युद्ध करे सार * विना युद्धे सीता तव नाहिक उद्धार
बहुकष्ट गेल सीता अल्पमात्र आछे * देखिया रामेर मुख सुख पावे पिछे
क्रन्दन सम्वर सीता त्यज अभिमान * दिन दुइ चारि बादे जावे प्रभुस्थान
सरमार वाक्ये सीता सम्वरि क्रन्दन * चिन्तेन श्रीराम पाद पद्म अनुक्षण
श्रीराम वलिया सीता छाड़ेन निःश्वास *लंकाकाण्डे मायामुण्ड गाय कृत्तिवास ३३

10413 सुग्रीव कर्तृक लंकार चारि द्वारे वानर-सैन्य-सन्निवेश

सुमेरुर चूड़ा येन आकाशेते लागे * सेइमत उच्चगिरि शोभा पाय आगे
गड़ेर वाहिर गिरि तिरिश योजन * ताहाते उठिले हय लंका दरशन
पर्व्वते चड़ेन राम सह सेनागण * संगेते सुग्रीव राजा आर विभीषण
पर्व्वत उपरे राम करेन देयान * देखेन से लंका विश्वकर्म्मार निर्म्माण
स्वर्ण रौप्य घर सव देखिते रूपस * छादेर उपरे शोभे कनक-कलस

किया, तुम्हारे श्रीराम विलकुल कुशल से हैं। निकषा ने रावण को समझाया कि तुम्हें वह लौटा दे और कितने ही ढंग से कहा कि वह राम को प्रसन्न करे। पर इस दुष्ट ने माँ का कहना भी नहीं सुना और वृद्ध माल्यवान को भी इसी प्रकार से दुत्कार दिया। किसी का भी परामर्श न मानकर उसने युद्ध करना ही निश्चित कर लिया है—विना युद्ध के सीता तुम्हारे उद्धार की कोई आशा नहीं। सीता, तुमने बहुत क्लेश झेले हैं अब केवल तनिक सा रह गया है। अन्त में राम का मुखड़ा देखकर सुख पाओगी। सीता, अपना रुदन-क्रन्दन रोको, क्षोभ का त्याग करो। दो-चार दिनों वाद ही अपने प्रभु के पास पहुँच जाओगी। सरमा के वाक्य से सीता ने रोना बन्द किया। श्रीराम के चरण-कमलों का निरन्तर चिन्तन करने लगी। श्रीराम कहकर सीता ने गहरी साँस ली। लंकाकाण्ड में कृत्तिवास मायामुंड-आख्यान गा रहा है ॥ ३३ ॥

सुग्रीव द्वारा लंका के चारों द्वार पर वानर-सैन्य नियुक्ति

सुमेरु की चोटी मानों आकाश को छू रही है। इसी प्रकार का ऊँचा पर्वत सम्मुख शोभा पा रहा है। गढ़ के बाहर तीस योजन का पर्वत है। इस पर चढ़ने पर लंका का दर्शन हो जाता है। राम ससैन्य इस पर्वत पर चढ़े। उनके साथ राजा सुग्रीव और विभीषण भी चले। पर्वत के ऊपर राम ने सभा की। उन्होंने विश्वकर्मा निर्मित लंका को देखा। सोने और चाँदी के बने मकान देखने में वड़े सुन्दर हैं जिनकी छतों पर कनक-कलश

ध्वजा आर पताका उड़िछे चतुर्द्दिके ❋ राजगृह पात्रगृह शोभे एके एके
पुरी देखि रामचन्द्र करेन बाखान ❋ पृथिवीमण्डले नाहि हेन रम्यस्थान
ए पुरीर राजा केन हयेछे रावण ❋ तबे शोभे यदि राजा हय विभीषण
रघुवंशे यदि आमि राम नाम धरि ❋ विभीषणे करिब लंकार अधिकारी
विभीषण मिताके लंकाय भाल साजे ❋ विभीषणे राजा करि लोके येन पूजे
आनन्दित विभीषण रामेर आश्वासे ❋ गिरि हैते उलेन सकले रात्रिशेषे ३४
पर्व्वत उपरे राम वञ्चि कत राति ❋ नामिलेन सत्वर सहित सेनापति
पोहाइते आछे अल्प यखन रजनी ❋ हेनकाले लंका बेड़िलेन रघुमणि
पाइया सुग्रीव श्रीरामेर अनुमति ❋ चारि द्वारे राखिल वानर-सेनापति ३५
नील सेनापति बलि घन-घन डाके ❋ एकेरे डाकिते सबे धाय झाँके झाँके
सुग्रीव बलेन नील तुमि सेनापति ❋ लंकाय जुझिते तव प्रथम आरति
बाछिया वानर लह रणेते प्रधान ❋ भालमते राख गिया पूर्वद्वारखान
नील वीर पूर्व्वद्वारे जाय हरषित ❋ डाक दिया अंगदेरे आनिल त्वरित ३६

शोभायमान हैं। चारों ओर ध्वज और पताका लहरा रहे हैं। राजगृह और सभासद-भवन एक-एक कर शोभायमान हैं। लंकापुरी देखकर श्री रामचन्द्र ने कहा कि पूरे भूमंडल में ऐसा सुरम्य स्थान नहीं है। ऐसी पुरी का राजा रावण क्यों बना! यदि विभीषण इसका राजा बन जाय तभी इसकी शोभा है। यदि रघुवंश में (जन्म और) मेरा नाम राम है तो मैं विभीषण को इस लंका का राजा बनाऊँगा। मित्र विभीषण ही इस लंका में शोभा देंगे। विभीषण को राजा बनाकर लोग उसकी पूजा करेंगे। राम के आश्वासन पर विभीषण को बड़ी खुशी हुई। सभी लोग रात्रि के अन्त में पर्वत के नीचे उतर आए ॥ ३४ ॥

पर्वत पर रात बिताकर रामचन्द्र अपने सेनापति के साथ नीचे उतर आए। उस समय रात समाप्त होने में थोड़ी देर थी, रघुमणि ने लंका को चारों ओर से घेर लिया। श्रीराम की सम्मति पाकर सुग्रीव ने चारों दरवाजों पर वानर सेनापति नियत कर दिये ॥ ३५ ॥

नील-सेनापति का नाम लेकर वह बारम्बार पुकारने लगे। एक को बुलाने पर सभी झुंड के झुंड उस ओर लपके। सुग्रीव ने कहा! नील, तुम सेनापति हो, लंका के युद्ध में तुम्हारी ही पहली नियुक्ति है। अपने मन के अनुसार श्रेष्ठ वानर चुनकर पूर्वी द्वार पर जाकर उनका समावेश भलीभाँति करो। वीर नील सहर्ष पूर्वी द्वार के लिए चल पड़ा। अंगद को भी झटपट बुलाकर लाया गया ॥ ३६ ॥

सुग्रीव बलेन, हे अंगद युवराज ❊ तोमार अधीन सर्व्व वानर समाज
बाछिया कटक तुमि लह सारात्सार ❊ भालमते राख गिया दक्षिणेर द्वार
चले अंगदेर ठाट सबे बाछेर बाछ ❊ एक हाते पर्व्वत द्वितीय हाते गाछ
धूलि उड़ाइया तारा करे अन्धकार ❊ मार मार शब्दे धाय दक्षिणेर द्वार
दक्षिणे अंगद गेल हये हरषित ❊ डाक दिया हनूमाने आनिल त्वरित ३७
सुग्रीव बलेन शुन वीर हनूमान ❊ सबा हैते राखि आमि तोमार सम्मान
शिशुकाले लाफ दिले धरिते भास्कर ❊ साहस करिया बाछा डिंगाले सागर
संग्रामे पशिले तुमि विक्रमे प्रधान ❊ पश्चिमेर द्वार रक्षा कर सावधान
येखाने थाकेन राम-लक्ष्मण दु-भाइ ❊ सावधान हये तुमि थाकिबे तथाइ
धाय हनूमानेर कटक महाबल ❊ किलकिल शब्देते व्यापिल नभःस्थल
धूलि उड़ाइया जाय करि अन्धकार ❊ मार मार करि गेल पश्चिमेर द्वार ३८
पूर्व्वे नील वीरे दिया ना हय प्रत्यय ❊ डाकिया कुमुद वीरे आनिल तथाय
सुग्रीव बलेन, हे कुमुद सेनापति ❊ सहस्र वानर आछे तोमार संहति

सुग्रीव ने कहा, हे युवराज अंगद ! तुम्हारे ही अधीन सारा वानर-समाज है, तुम अच्छे-अच्छे योद्धाओं को चुनकर अपना कटक लेकर दक्षिण का द्वार जाकर सँभालो। अंगद का सैन्य-समूह चला जिसमें उत्तमोत्तम चुने हुए योद्धा थे। इनके एक हाथ में वृक्ष तो दूसरे हाथ में पर्वत थे। धूल उड़ाकर इन लोगों ने चारों दिशाओं में अन्धकार फैला दिया और मार-मार का नाद करते हुए वे दक्षिणी द्वार की ओर दौड़ पड़े। अंगद सहर्ष दक्षिण की ओर चल पड़ा। हनुमान को भी तत्काल बुलाया गया ॥ ३७ ॥

सुग्रीव ने कहा, हे वीर हनुमान ! सुनो। मैं तुम्हारा सब से अधिक सम्मान करता हूँ। बचपन ही में तुमने उछलकर सूर्य को पकड़ लिया था। हे वत्स ! साहस कर तुम (अलंघ्य) सागर लाँघ गये। संग्राम में जुटने पर तुम्हारे पराक्रम का क्या कहना। सावधान होकर पश्चिमी द्वार को संभालो। जहाँ राम-लक्ष्मण दोनों भाई रहेंगे, तुम वहीं सावधान होकर डटे रहोगे। हनुमान का महाबलशाली कटक भी दौड़ा—उनके पद-चाप के शब्द से नभमण्डल भर गया। धूल उड़ाते, चारों ओर अंधेरा छाते हुए उनके योद्धा मार-मार शब्द करते हुए पश्चिमी द्वार की ओर लपके ॥ ३८ ॥

पूर्वी द्वार पर नील वीर को तैनात कर भी सुग्रीव के मन को भरोसा नहीं हुआ; उन्होंने कुमुद-वीर को वहाँ बुलवाया। कहा, हे कुमुद सेनापति, तुम्हारे पास एक सहस्र वानरों की टुकड़ी है। इन वानरों को लेकर तुम पूर्वी

से सब वानर लये पूर्व्वद्वारे चल * नीलेर कटके गिया हओ अनुबल
तोमा सत्वे यद्यपि नीलेर सैन्य भागे * तार भाल मन्द दाय तोमरे ये लागे
सुग्रीवेर आदेश लंघिबे कोन जन * नीलेर काछेते करे कुमुद गमन ३९
दक्षिणे अंगदे राखि प्रतीति ना जाय * डाक दिया महेन्द्रेर तथाय पाठाय
महेन्द्र देवेन्द्र शुन सुषेणनन्दन * आशी कोटि कपि दुइ भायेर भिड़न
से सकल लइया दक्षिण द्वारे चल * अंगद कटके गिया हउ अनुबल
तोमा विद्यमाने यदि तार सैन्य भागे * भद्राभद्र ताहार तोमार प्रतिलागे
सुग्रीवेर आदेश लंघिबे कोन जना * अंगद पश्चाते गेल महेन्द्रेर थाना ४०
पश्चिमे हनूके दिया ना हय प्रतीत * डाक दिया सुषेणेर आनिल त्वरित
सुग्रीव बलेन शुन सुषेण सुहृत् * तिनकोटि वृन्द कपि तोमार सहित
से सबे लइया जाह पश्चिमेर द्वार * वायुतनयेर कर साहाय्य एवार
आपनि थाकिते यदि कोन मन्द घटे * अपयश तोमारि से, लोके धर्म्म टुटे
सुग्रीवेर आदेशे सुषेण महावीर * हनुर पश्चाते गिया हइलेक स्थिर ४१
उत्तरे काहारे दिया ना हय प्रतीत * आपनि सुग्रीव रहे वानर सहित

द्वार पर चले जाओ और जाकर नील के कटक की सहायता करो। तुम्हारे होते हुए भी यदि नील की सेना के पैर उखड़ जाते हैं तो उसके भले-बुरे का दायित्व तुम पर है। सुग्रीव के आदेश का लंघन कौन कर सकता है, कुमुद ने नील की ओर प्रस्थान किया ॥ ३९ ॥

दक्षिण में अंगद को रखकर भी मन को भरोसा नहीं हुआ। सुग्रीव ने महेन्द्र को वहाँ बुलवा भेजा। सुषेण-नन्दन महेन्द्र और देवेन्द्र सुनो, तुम दोनों भाइयों के पास अस्सी कोटि कपि हैं। इनको लेकर दक्षिणी द्वार पर पहुँच जाओ और वहाँ अंगद के कटक की सहायता करो। तुम्हारे रहते हुए उसकी सेना के यदि पैर उखड़ते हैं तो सारी जिम्मेदारी तुम पर है। सुग्रीव के आदेश का कौन लंघन कर सकता है। महेन्द्र की सेना ने जाकर अंगद के पीछे छावनी डाली ॥ ४० ॥

हनुमान को पश्चिम में नियुक्त कर भी मन में पूर्ण विश्वास नहीं हुआ। सुषेण को वहाँ तुरन्त बुलवा भेजा। सुग्रीव ने कहा, हे मित्र सुषेण सुनो, तुम्हारे पास तीन-कोटि वृन्द वानर हैं। उनको लेकर पश्चिमी द्वार पर जाओ और इस समय पवनसुत हनुमान की सहायता करो। तुम्हारे रहते हुए यदि कोई अनिष्ट हो गया तो तुम्हारा ही अपयश होगा। सुग्रीव के आदेश से महावीर सुषेण जाकर हनुमान के पीछे स्थित हो गये ॥ ४१ ॥

उत्तर में किसी को भी नियुक्त कर निश्चिन्तता नहीं, सो सुग्रीव स्वयं

सागरेर कूलेते ये वानरेर घर * जांगाल वहिया पाछे पलाय वानर
बहुकोटि सेनापति पात्र-मित्र लये * रहिल सुग्रीव राजा उत्तर चापिये४२
औषध आनिते रहे वीर हनुमान * मंत्रणा कर्म्मेते थाके मंत्री जाम्बवान
प्रहरी हइया थाके द्वारे विभीषण * चारि द्वार सुग्रीव देखेन घनेघन
येइ द्वार सुग्रीव देखेन हीन वल * दुना करिदेन सैन्य समरे अटल
चारि द्वारे सुग्रीव से दितेछे आश्वास *चारि द्वार रक्षा विरचिल कृत्तिवास४३

देवगणेर अन्तरीक्षे आगमन ओ हर-पार्व्वतीर कोन्दल

साजिछे यतेक वीर वाजिछे वाजना * अन्तरीक्षे अमरगणेर हय थाना
आइल गन्धर्व्व यक्ष किन्नर चारण * आसिलेन विधाता मराले आरोहण
ऐरावत आरोहणे आसे पुरन्दर * मकर वाहने आसे जलेर ईश्वर
वृषभ वाहने आसिलेन पशुपति * केशरि वाहने चड़ि आसिला पार्व्वती
बसिलेन देवगण सवे सारि सारि * गन्धर्व्वेरा गीत गाय नाचे विद्याधरी४४
पृष्ठ दिया पार्व्वती वसेन एक दिके * क्रोध करि महादेवे कहेन सम्मुखे

वानरों के साथ वहीं रहे। सागर-तट पर ही वानरों के घर हैं। कहीं सेतु पार कर वानर भाग खड़े हों इस आशंका से बहुकोटि सेनापति और पार्षद लेकर सुग्रीव राजा उत्तरी द्वार पर डट गये ॥ ४२ ॥

वीर हनुमान दवा लाते रहे, मंत्री जाम्बवान मंत्रणा-कार्य में रत रहे, विभीषण द्वार पर प्रहरी बनकर रहे और सुग्रीव बार-बार चारों द्वारों का निरीक्षण करते रहे। जिस द्वार को भी सुग्रीव ने हीन-बल देखा उसी में सैन्य-संख्या दुगुनी कर उसको दृढ़ बनाते रहे। चारों द्वारों पर सुग्रीव सब को आश्वासन देते रहे। चारों-द्वारों की सुरक्षा पर कृत्तिवास ने यह विवरण लिखा ॥ ४३ ॥

देवताओं का अन्तरिक्ष में आगमन और शिव-पार्वती में कलह

सारे वीर सज्जित हो रहे हैं और रण-वाद्य बज रहा है। अन्तरिक्ष में अमर-वृन्द देवगण विराजमान हैं। गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, चारण सभी समवेत हो गये। ब्रह्मा हंस पर सवार वहाँ आ पहुँचे। ऐरावत पर सुरराज इन्द्र और जल-देवता वरुण, मकर पर सवार होकर आ गये। वृषभ-वाहन पर शंकर और सिंह पर आसीन पार्वती आईं। देवगण पंक्तियों में विराजमान हुए, गन्धर्व लोग गीत गाने लगे और विद्याधरियाँ नृत्य करने लगीं ॥ ४४ ॥

पार्वती एक ओर पीठ फेर कर बैठ गईं और सामने बैठे महादेव से सक्रोध बोलीं। तुम तो भंगेड़ी हो, श्मशान में सदा फिरते रहते हो। यह

तुमि त भांगड़ सदा बेडाओ श्मशाने ※ कोन गुणे पूजे तोमा लंकार रावणे
धने-प्राणे मजिल लंकार अधिकारी ※ केमने आछ हे स्थिर, बुझिते ना पारि
आपनार माथा काट आपनार करे ※ दुःख नाहि हय केन सेवकेर तरे
आर कोन सेवक छुँइबे तव छाया ※ रावण सेवके तव नाहि किछु दया४५
एत यदि बलिलेन क्रोधे भगवती ※ पार्व्वतीर वचने कुपिला पशुपति
वामा जाति, तोमार तिलेक नाहि शंका ※ आपनि राखह गिया स्वर्णपुरी लंका
तपस्या करिल दश हाजार वत्सर ※ अमर हइते नाहि पाइलेक वर
एखन मरण-पथ चिन्तिल रावण ※ त्रिभुवने हेन कर्म्म करे कोन जन
स्वयं विष्णु जन्मिलेन दशरथ-घर ※ आपनि दिलेन पृष्ठ अलंघ्य सागर
द्वारे राम, रावणेर जीवन-संशय ※ बल देखि, रावणेर किसे रक्षा हय
मानुष हइया राम विष्णु अधिष्ठान ※ श्रीरामेर हाते किसे पावे परित्राण
मिथ्या अनुयोग मोरे ना कर पार्व्वति ※ रावणे राखिते नाहि आमार शकति
विधातार निर्व्वन्ध ये नारि घुचाइते ※ आपनि ये आछि आमि आपनार मते
शंकर-शंकरी दुइ जनेते कोन्दल ※ विमुख हइया हासे देवता सकल

लंकाधीश तुम्हारे किस गुण पर रीझकर तुम्हारी पूजा करता है। लंकेश तो धन-प्राण से विनष्ट हो जाने वाला है। पता नहीं, तुम कैसे स्थिर बैठे हो। मस्तक काट-काट कर चढ़ानेवाले अपने भक्त के प्रति तुमको दुःख नहीं। सेवक रावण के प्रति जब तुमको इतनी भी दया नहीं है तब आगे कोई भी सेवक तुम्हारी परछाहीं से कतरायेगा ॥ ४५ ॥

क्रोध में आकर जब भगवती ने इतना कहा तो महादेव भी कुपित हो गये। तुम नारी जाति की ठहरीं, तुमको बात करते तिल भर शंका नहीं, तुम स्वयं ही जाकर स्वर्णपुरी लंका की रक्षा कर लो। रावण ने दस हजार वर्ष तक तपस्या की, फिर भी उसको अमर होने का वरदान नहीं मिला। अब रावण ने मृत्यु का पथ स्वयं ही चुन लिया। तीनों लोक में कौन ऐसा आदमी है जो ऐसा (निन्द्य) काम करता है। दशरथ के घर पर स्वयं विष्णु ने जन्म लिया। उन्होंने ही अलंध्य सागर पर सेतु बनवा डाला। द्वार पर राम खड़े हैं और रावण के प्राण संशय में हैं। बताओ भी, रावण के प्राणों की रक्षा कैसे हो सकती है! मनुष्य होकर भी राम विष्णु का अवतार हैं, ऐसे राम के हाथ रावण को कैसे त्राण मिलेगा। पार्वति! मुझसे नाहक शिकायत मत करो, रावण को बचाने की मुझमें शक्ति नहीं। विधाता का लिखा मैं नहीं मेट सकता हूँ—मैं स्वयं अपने ही तरंग में रहा करता हूँ। शंकर-शंकरी में यह कलह देखकर सारे देवता मुँह फेरकर हँसने लगे। धूर्जटि महादेव

धूर्ज्जटिर कोपे देखि हासे देवगण * आजि कालि रावणेर हइबे मरण
रावण मरिबे, सर्व्व-देवतार हास * हर-गौरी-कोन्दल रचिल कृत्तिवास४६
पंच दिन उभय सैन्येर समावेश * परस्पर केह कारे नाहि करे द्वेष
श्रीराम बलेन, तत्व जान विभीषण * कि कारण नाहि रण देय दशानन
विभीषण बले, प्रभु, कर अवगति * उभय सैन्येर शब्दे स्तब्ध लंकापति
ताइ विपक्षेर प्रति नाहि देय हाना * निश्चय जानिते दूत या'क् एक जना
विभीषण-सह राम युक्ति करि सार * हनूमाने डाकिया कहेन समाचार
आइस बाछा हनूमान पवननन्दन * लंकाते जानिया एस कि करे रावण
सभामध्ये उठिया बलिछे जाम्बवान् * एकवार गियाछिल वीर हनूमान्
येइ जाइबेक हनू लंकार भितर * हनूमाने देखिया कुपिबे लंकेश्वर
मनेते करिबे एइ आसे बार-बार * इहा विना राम सैन्ये वीर नाहि आर
दक्षिण द्वारेते आछे अंगदेर थाना * ताहारे आनिते दूत जाक् एक जना
हनूमान हइते अंगद वीर बड़ * ताहारे पाठाउ, ये बलिबे दड़ बड़ ४७

का कोप देखकर सारे देवता हर्ष मनाने लगे। आज ही कल में रावण का मरण समीप है। रावण-मरण और देवताओं का उल्लास! इस प्रकार कृत्तिवास ने हर-गौरी कलह का विवरण प्रस्तुत किया॥ ४६॥

पाँच दिन तक दोनों सैन्यों का जमाव होता रहा। किसी ने भी एक दूसरे को छेड़ा नहीं। श्री राम ने कहा, विभीषण! जरा इस बात का रहस्य बताओ कि दशानन लड़ाई में उतर क्यों नहीं रहा है। विभीषण ने कहा, प्रभु, जान लीजिये कि लंकापति दोनों सैन्यों के शब्द से स्तंभित रह गया है, इसीलिए विपक्ष पर धावा नहीं बोल रहा है। (फिर भी) सही बात का पता लगाने के लिए एक दूत भेजना चाहिए। विभीषण के साथ ऐसा परामर्श कर राम ने हनुमान को बुलवा कर यह समाचार सुनाया और कहा, हे प्रिय पवननन्दन, तुम एक बार लंका जाकर यह पता लगा आओ कि रावण क्या कर रहा है। सभा में जाम्बवान उठ कर खड़ा हो गया और बोला, एक बार वीर हनुमान वहाँ गये थे; जैसे ही वह फिर लंका में जायँगे तो उसे देखकर लंकेश कुपित हो जायगा। वह (यह भी) सोचेगा कि यही बार-बार यहाँ आता है, शायद इसके अतिरिक्त राम-सेना में कोई अन्य वीर नहीं है। दक्षिण-द्वार पर अंगद का मोर्चा है, उसे बुलवाने के लिए एक पायक चला जाय। हनुमान से भी अंगद अधिक वीर है, उसको भेज दो। वह खूब खरी-खोटी सुनाये गा॥ ४७॥

अंगद रायवार

रामेर आज्ञाय चले सुषेण सत्वर ※ माथा नोयाइया कहे अंगद-गोचर
शुन बलि तोमारे अंगद युवराज ※ रामेर आज्ञाय चल वानर समाज
अंगद बलेन आमि जाब कि एकाकी ※ किबा थाना-सह जाब, तुमि बल देखि
थाना भांगिवारे नाहि कोन प्रयोजन ※ एका गिया कर तुमि राम सम्भाषण
दूत वाक्ये चलिल अंगद युवराज ※ आसिया मिलिल वीर रामेर समाज
रामेरे प्रणाम करि कहे करपुटे ※ आज्ञा कर महाराज एसेछि निकटे ४८
श्रीराम बलेन हे अंगद महाबली ※ रावण राजारे किछु दिया एस गालि
अंगद बलेन प्रभु युक्ति नाहि हय ※ बालिपुत्र आमि ये आमाते कि प्रत्यय
श्रीराम बलेन सत्य-हेतु बालि बधि ※ तोमाते प्रत्यय मम आछे तदवधि
अंगद बलेन प्रभु एवा कोन कथा ※ नखे छिड़ि आनिव ताहार दशमाथा
बालिर विक्रम तुमि जान भाले-भाले ※ विक्रम जानिबा मम संग्रामेर काले
पशिब राक्षस मध्ये करिब उठानि ※ रावणेरे गालि दिया आसिब एखनि
सुग्रीव बलेन बाछा प्राणेर दोसर ※ विक्रमे विशाल तुमि बापेर सोसर

अंगद का दौत्य

राम की आज्ञा से सुषेण तत्काल चल पड़ा। अंगद के पास जाकर सिर नवा कर उसने कहा, हे युवराज अंगद, सुनो बताता हूँ, राम की आज्ञा से वानर-सभा में चलो। अंगद ने कहा, मैं अकेले चलूँ या साथ में अपना सैन्य भी ले चलूँ। दूत ने कहा, सैन्य ले चलने की कोई आवश्यकता नहीं, तुम अकेले ही जा कर राम-सम्भाषण करो। दूत के कहने पर अंगद युवराज चल पड़ा और राम के समक्ष पहुँचकर करबद्ध प्रणाम करते हुए बोला, महाराज आज्ञा कीजिये, मैं सम्मुख प्रस्तुत हूँ ॥ ४८ ॥

श्री राम ने कहा, हे महाबली अंगद ! जाकर रावण राजा को कुछ कुवचन सुना आओ। अंगद ने कहा, प्रभु ! यह कोई युक्ति का काम नहीं होगा, मैं बालि-पुत्र हूँ, मुझ पर क्या भरोसा ! श्री राम ने कहा, सत्य के हेतु मैंने बालि का वध किया और तभी से तुम पर मेरा विश्वास बना हुआ है। अंगद ने कहा, प्रभु ! यह भी कौन सी बात है, नखों से उसके दस सिर नोच कर ले आऊँ। बालि का पराक्रम तो आपको भली भाँति विदित है, मेरे पराक्रम के बारे में आपको संग्राम के समय मालूम होगा। राक्षसों में मैं अभी पैठ जाऊँगा और रावण को खरी-खोटी सुना कर अभी तत्काल आऊँगा। सुग्रीव ने कहा, बेटा, तुम मेरे प्राणों के प्राण हो, अपने पिता के समान पराक्रमी हो,

एतकाल पालिलाम तोमा राजभोगे * देखाओ बाहुर बल श्रीरामेर आगे
लंका मध्ये गिया तुमि बुझाओ रावणे * आसिया शरण लउक रामेर चरणे
नतुवा सवंशे तारे श्रीराम लक्ष्मण * खण्ड खण्ड करिबेन राखे कोन जन ४९
अंगद करिल यात्रा हये हृष्ट मन * हेनकाले उठिया बलिछे विभीषण
कहिओ आमार वाक्य भाइ लंकेश्वरे * निज दुष्टाचार यत येन मने करे
सभामध्ये बलिलाम हित ये वचन * से कारणे हइलाम लाथिर भाजन
मूढ़ विभीषण नाहि बुझे कोन काज * भाल मंत्री लये तिनि ह'न महाराज
वंश रहिलाम मात्र करिते तर्पण * कहिओ ए सब कथा बालिर नन्दन ५०
बार बार बन्दिया से रामेर चरण * रावणे भर्त्सिते जाय बालिर नन्दन
सुग्रीव राजारे बन्दे बापेर सोसर * आर यत बन्दिलेक प्रधान वानर
करिछे मंगल ध्वनि सर्व्व कपिगण आनन्दे देखेन चेये श्रीराम लक्ष्मण
जाय अन्तरीक्षेते अंगद डाकाबुका * वायुभरे उड़े येन ज्वलन्त उलका
लंकापुरी गेल वीर त्वरित गमन * पात्र मित्र लये यथा बसेछे रावण
देवान्तक नरान्तक अतिकाय वीर * महोदर महोल्लास दुर्ज्जय शरीर

इतने दिनों राजभोग से तुम्हारा पालन-पोषण करता रहा, अब राम के सम्मुख अपना बाहुबल दिखाओ। लंका में जाकर तुम रावण को समझाओ कि वह आकर श्री राम के चरणों में शरण ले ले; वर्ना श्री राम-लक्ष्मण दोनों मिलकर उसका सवंश निधन करेंगे। उसको कोई भी बचा नहीं सकेगा ॥ ४९ ॥

अंगद ने प्रसन्न - मन से यात्रा की। ऐसे ही समय विभीषण ने उठकर कहा, मेरी भी दो चार बातें भाई लंकेश्वर से बता देना कि वह अपने सारे दुष्ट आचरणों का स्मरण करे। सभा में मैंने उससे हित की बात कही और इस कारण उसने मुझ पर पदाघात किया। मूढ़ विभीषण तो कोई काम ठीक नहीं समझ पाता, अब योग्य मंत्री लेकर वे महाराज बने रहें। हे बालि-नन्दन ! उससे बता देना कि वंश में पुरखों को पानी देने के लिए मैं ही अकेला रह जाऊँगा ॥ ५० ॥

बार-बार राम के चरणों की वन्दना कर बालि-तनय रावण की भर्त्सना करने चल पड़ा। पिता के तुल्य सुग्रीव राजा का नमन किया और जितने भी वानर-प्रधान थे उनका भी नमन किया। सारे कपि मंगल-ध्वनि करने लगे और श्री राम-लक्ष्मण आनन्द से निहारने लगे। वीर और दिलेर अंगद अन्तरिक्ष में चल पड़ा; पवन-गति से चला मानो उल्का प्रकाशमान हो। लंका में, जहाँ अपने पार्षदों के साथ रावण बैठा था, वहीं तत्काल जा पहुँचा। वहाँ वीर देवान्तक, नरान्तक और अतिकाय बैठे थे। दुर्जय-शरीर वाले महोदर और

हस्तिपृष्ठे प्रणाम जानाय प्रकम्पन ❋ अश्व-पृष्ठे आरोहिया से धूम्रलोचन
रथ साजाइया दिया मणि मुक्ता हीरा ❋ आसिया प्रणाम करे कुमार त्रिशिरा
आइल निशठ शठ येन यमदूत ❋ अजय विजय आदि युद्धे मजबूत
कुम्भकर्ण-सुत कुम्भ निकुंभ दुजन ❋ आर बज्रदन्त माथा नोयाय तखन
आइल खरेर पुत्र सत्वर सभाय ❋ तपन स्वपन आर वीर महाकाय
यार भये त्रिभुवन हय त कम्पित ❋ पितारे प्रणाम करे वीर इन्द्रजित
आइल सामन्त सैन्य वीर नानावर्ण ❋ सबे मात्र ना आइल वीर कुम्भकर्ण
निद्रा जाय कुम्भकर्ण आपनार मने ❋ लंकाते अनर्थ एत किछुइ ना जाने ५१
सभामध्ये बलिछे रावण सबाकारे ❋ नरकपि आसियाछे आमा मारिवारे
शिशु राम शिशु कपि ना जाने आमाय ❋ ताइसे आमार सने जुझिवारे चाय
बाटा भरि गुया दिब आड़ने-आड़न ❋ येइ जन मारिबेक श्रीराम लक्ष्मण
एतेक बलिल यदि वीर लंकापति ❋ वीर दाप करि उठे सब सेनापति
नरकपि आसियाछे तारे भय किसे ❋ आपना आपनि निधि गृहेते प्रवेशे
वानर खाइते साध छिल बहुकाले ❋ हेन भक्ष्य मिलिल अनेक पुण्य फले
आजि यदि कुम्भकर्ण उठेन जागिया ❋ खाइबेन लक्ष लक्ष वानर धरिया

महोल्लास जमे थे। हाथी पर बैठे अकम्पन ने प्रणाम किया और अश्व पर बैठे धूम्रलोचन ने। कुमार त्रिशिरा मणि-रत्न से सुसज्जित रथ पर बैठकर आया और प्रणाम किया। निशठ-शठ भी आये जो यमदूत जैसे थे। युद्ध में दृढ़ अजय-विजय भी आये। कुम्भकर्ण के दोनों पुत्र कुम्भ-निकुम्भ आये और वज्रदन्त ने आकर सिर नवाया। खर का पुत्र भी सभा में आया। तपन, स्वपन और वीर महाकाय भी आये। जिसके भय से त्रिभुवन कम्पित होता है उस वीर इन्द्रजित् ने भी आकर पिता के चरणों में प्रणाम किया। विभिन्न वर्णों के विभिन्न सामन्त वीर भी आये। केवल वीर कुम्भकर्ण नहीं आया, वह अपनी सुखनिद्रा में मग्न है। लंका में इतना अनर्थ हो रहा है, इस सम्बन्ध में उसको कतई कुछ मालूम नहीं ॥ ५१ ॥

सभा में रावण सबको कह रहा है—नर और कपि मुझको मारने के लिए आये हैं। राम अबोध है और ये कपि भी नादान हैं; ये मुझको जानते नहीं इसीलिए मुझसे लड़ना चाहते हैं। जो भी राम-लक्ष्मण को मार गिरायेगा उसी को थाल भरकर सुपारी दूंगा। जब लंकापति ने इतना कहा तो सारे सेनापति वीरदर्प से बोल पड़े—नर और वानर आये हैं तो इसमें डर किस बात का है। सम्पदा अपने आप ही घर में आ गई। बहुत दिनों से बन्दर खाने की साध थी, आज जाने किस पुण्य के प्रताप से ऐसा भोजन मिल गया।

इन्द्रजित आछे एक महा धनुर्द्धर * तार वाणे शतशत मरिबे वानर
आगे गिया वानरेर गले दिब फाँस * खाइब घाड़ेर रक्त कामड़े खाब मास
मनुष्य दुटार मांस बड़इ सुस्वाद * सवाकार घुचाब मांसेर अवसाद
जाठि ओ झकड़ा शेल मुषल मुद्गर * हाते करि दर्प करे यत निशाचर
राजार सम्मुखे कहे यत सेनापति * आमरा थाकिते तव किसेर दुर्गति
सीता लये क्रीड़ा कर आनन्दिते मने * आमरा बान्धिया दिब श्रीराम लक्ष्मणे
त्रिभुवन सहाय करि यदि राम आने * सीता निते नारिबे आमरा विद्यमाने
से बेटा प्रधान तार कटकेर सार * से थाकिते महाराज रक्षा नाहि आर
लंका दग्ध करे गेल रात्रे एसे पड़े * सेइ भय करि पुनः आसे वा बाहुड़े
सेइ आसि देखे गेल अशोक-वने सीता * सेइ कराले रामेर सने सुग्रीवेर मिता
सेइ भुलाले विभीषणे नाना कथा कये * सेइ सागर बेंधे दिल गाछ पाथर व'ये
यत देख महाराज सब चक्र तारि * से थाकिते राखिते नारिबे रामेर नारी
रावण बले,या बलिले मोर मने ताइमिले*जन्मे ये ना पाइ दुःख घरपोड़ा तादिले

आज यदि कुम्भकर्ण जाग पड़ें तो लाख-लाख बन्दर पकड़ कर भच्छ लगें। महान धनुर्धर इन्द्रजित् भी है जिनके बाण से सैकड़ों बन्दर मर मिटेंगे। पहले जाकर बन्दर के गले में फाँसी डाल देंगे, फिर गर्दन का खून पी लेने के बाद उसका मांस खायेंगे। उन दो मनुष्यों का मांस बड़ा ही स्वादिष्ट होगा—सभी लोगों की मांस की तृष्णा पूरी हो जायगी। जाठि, झंखड़ा, शेल, मूसल, मुद्गर आदि अस्त्र हाथ में लेकर सारे निशाचर दर्प करने लगे। राजा के सम्मुख सारे सेनापति डींग हाँकने लगे, हम लोगों के रहते तुम पर आँच कैसी ? तुम सीता को लेकर मज़े में क्रीड़ा करो, हम लोग राम-लक्ष्मण को बाँध लायेंगे। यदि राम सारे त्रिभुवन की सहायता लेकर भी आ जाये तो भी हम लोगों के रहते सीता को नहीं ले जा सकेगा। बन्दर से क्या डरना, वे तो जंगली जानवर हैं, केवल वह लंकादाही हनुमान न आये। वह निगोड़ा उस (राम) के कटक में श्रेष्ठ और प्रधान है, उसके रहते महाराज ! कोई बचाव नहीं। रात को आकर लंका जलाकर चला गया। वही डर बना हुआ है कि कहीं फिर न लौट आये। वही आकर अशोक-वन में सीता को देख गया। उसी ने राम से सुग्रीव की मित्रता कराई। उसी ने विभीषण से बात-चीत कर उसे भरमाया। उसी ने पेड़-पत्थर ढोये और समुद्र को बाँध डाला। जो कुछ भी देखते हो महाराज, सभी कुछ उसी का कुचक्र है। उसके रहते तुम राम की नारी को रख नहीं सकोगे। रावण ने कहा, तुमने मेरे मन की कही, इस लंकादाही ने मुझको वह क्लेश पहुँचाया जो किसी ने

धरत मोर बाप सब कोन काल्के आर ※ रामलक्ष्मणथाकुकआगेघरपोड़ाकेमार ५२
एइ युक्ति रावण राजा करते छिल बसे ※ एमत काले अंगद वीर उत्तरिल एसे
प्रकाण्ड शरीर तार मन्द मन्द गति ※ पूर्व्वाचिल हैते येन एल दिनपति
आकाशे देउटि येन दुइ चक्षु ज्वले ※ मस्तक ठेकेछे तार गगन मण्डले
रावणेर सेनापति द्वारे छिल यारा ※ अंगदेर अंग देखे भंगदिल तारा
राजार रक्षक यत साक्षात् तक्षक ※ रड़े यथा भक्ष्य लखिय समक्षे भक्षक
दुयारे दुयारी छिल, उठि दिल रड़ ※ लाथिर चोटे कपाटभेंगे प्रवेशिल गड़
येखाने रावण राजा बसेछे देउयाने ※ लम्फ दिया वीर गिया वैसे मध्यखाने
बसेछे रावण राजा उच्च सिंहासने ※ ताहा देखि अंगदेर बड़ दुःख मने
कुण्डली करिया लेज बसिल सभाते ※ पुरन्दर वार येन दिल ऐरावते
सुमेरु पर्व्वत येन अंगदेर देह ※ राक्षसेरा बले, बाप, एटा एलो केह
बड़ बड़ वीर छिल रावणेर, काछे ※ अंगदेर अंग देखे चुप करे आछे ५३
अंगद के देखे रावण छले मायापाते ※ शत शत रावण ह'ये बसिल सभाते
ये दिके अंगद चाहे, से दिके रावण ※ दशमुण्ड कुड़िबाहु विंशति लोचन

भी नहीं पहुँचाया। मेरे बेटा! राम-लक्ष्मण को रहने दो, पहले उस घर-फूँकने वाले ही को मारो॥ ५२॥

रावण राजा बैठे-बैठे यही सब परामर्श कर रहा था कि वीर अंगद वहाँ जा पहुँचा। प्रकांड शरीर लिये मन्द-मन्द गति से वह ऐसे पहुँचा मानों पूर्वाचल से सूर्य उदय हुआ। दोनों आँखें इस प्रकार धधक रही थीं मानों गगन में दीपक जल रहे हों—उसका सिर गगनमंडल से छू रहा था। द्वार पर रावण के जो सेनापति थे वे अंगद के डील-डौल को देखकर भाग खड़े हुए। द्वार पर द्वाररक्षक था। वह भी सिर पर पैर रखकर भागा। पदाघात से किवाड़ तोड़कर अंगद ने गढ़ में प्रवेश किया। जहाँ राजा रावण सभाकक्ष में बैठा था, वहीं फाँदकर वीर जा पहुँचा और बीच में बैठ गया। रावण-राजा ऊँचे सिंहासन पर बैठा है, देखकर अंगद के मन में बड़ा क्लेश हुआ। उसने अपनी पूँछ की कुंडली बनाकर उस पर आसन जमाया मानों ऐरावत पर विराजमान इन्द्र दरबार लगाये हैं। सुमेरु पर्वत के समान अंगद का शरीर देखकर राक्षसों ने कहा, हाय बाप, यह कौन आ गया। रावण के निकट बड़े-बड़े वीर बैठे थे, लेकिन अंगद का शरीर देखकर वे भी चुप किये रहे॥ ५३॥

अंगद को देखकर रावण मायाजाल पर उतर आया। (इन्द्रजाल की माया से) वहाँ सब रावण ही रावण दिखाई देने लगे। अंगद जिस ओर भी

सवाइ रावण, भेद नाहि एक जने * अंगद बले कथा कब कोन रावणेर सने
सवेमात्र इन्द्रजित् छिल आपन साजे * पुत्र ह'ये पितार मूर्त्ति धरे कोन लाजे
निकुम्भिला यज्ञ करे रावणेर बेटा * कपाले देखिल तार यज्ञ शेष फोंटा ५४
अंगद बले, बुझिलाम एइ बेटा मेघनाद * आकार इंगिते तारे कहेन संवाद
अंगद बले, सत्य करे कओ रे इन्द्रजिता * एइ यत बसि आछे सवाइ कि तोर पिता
तारि जन्य एत तेज गुरु लघु ना मानिस् * तोर बापेर एत तेज इन्द्र बेंधे आनिस्
धन्य नारी मन्दोदरी धन्य रे तोर माके * एक युवती एतेक पति भाव केमने राखे
कोन बाप तोर दिग्विजय कैल तिन लोके *कोन बाप तोर कोथा गेल परिचय देमोके
कोन बाप तोर चेड़ीरअन्नखाइलपाताले* कोनबापबाँधाछिलअर्ज्जुनेरअश्व-शाले
कोन बाप यम जिनिते गियाछिल दक्षिण * कोन बापमान्धातारवाणे दाँतिकैलतृण
कोनबापधनुकभांगितेगियाछिलमिथिला*कोनबापकैलासगिरि तुलितेगियाछिला

दृष्टि डालता उसी ओर देखता कि दशमुड, बीस हाथ, बीस आँखों वाला रावण बैठा है। सभी एक समान रावण हैं; कोई भेद नहीं। अंगद ने सोचा मैं किस रावण के साथ बात करूँ। केवल इन्द्रजित् ही ऐसा था जो जैसे का तैसा अपने रूप में था; पुत्र होकर भला पिता का रूप कैसे धारण कर ले। रावण का पुत्र इन्द्रजित् 'निकुम्भिला-यज्ञ' करता है, उसके माथे पर अंगद ने यज्ञ-समाप्ति का तिलक देखा ॥ ५४ ॥

अंगद ने कहा, समझ गया कि यही बेटा मेघनाद जी हैं। इंगित से उसी को संन्देश सुनाने लग गया। अंगद ने कहा, अरे इन्द्रजित्! जरा सच-सच बताना, ये जो सारे बैठे हैं, ये सभी क्या तेरे पिता हैं? इसलिए क्या (इतने पिता होने के कारण ही) तुझमें इतना तेज है कि छोटे-बड़े किसी को नहीं गिनता? तेरे पिता का ही इतना तेज है कि उसके बल पर इन्द्र को भी बाँध लाता है। धन्य है नारी मन्दोदरी और धन्य है तेरी माँ, कि एक युवती होकर इतने पतियों को कैसे प्रसन्न रखती है। इनमें से तेरे किस बाप ने तीनों लोकों को जीता? तेरा कौन-सा बाप कहाँ गया, मुझको तनिक परिचय तो दे। तेरा कौन-सा बाप है जिसने पाताल में दासी का अन्न खाया? तेरा कौन-सा बाप है जो अर्जुन के अस्तबल में बँधा पड़ा था। तेरा कौन-सा बाप यम पर विजय प्राप्त करने दक्षिण गया था? तेरा कौन-सा बाप है जिसने मान्धाता के वाण से त्रस्त होकर दाँतों से तिनका उठाया था? तेरा कौन-सा बाप धनुष तोड़ने मिथिला गया था? तेरा कौन-सा बाप कैलास पर्वत उठाने गया था? तेरा कौन-सा बाप बहू के प्रेम में आसक्त हो गया था? तेरे कौन-से बाप की बहिन को मधु दैत्य ने चुरा लिया? तेरा कौन-सा बाप जामदग्न्य

कोन बाप तोर बधू र प्रेमे हइल आसक्त ❋ तोरकोन बापेर भग्नीहरेनिलमधुदैत्य
कोन बाप तोर जब्द हैलजामदग्न्येरतेज ❋ मोरबापतोरकोन बापकेबेन्धेछिललेजे
एके एके कहिलाम तोरसकलबापेरकथा ❋ एसबारेकाजनाइतोरयोगीबापटिकोथा
शूर्पणखा राँड़ी जारे कराइल दीक्षा ❋ दण्डक कानने ये मागिया खाय भिक्षा
शंखेर कुण्डल कर्णे रक्त वस्त्र परे ❋ डम्बरु बाजाय भिक्षा करे घरे घरे
संन्यासीर वेश धरे मुखे माखे छाइ ❋एसबारेकाजनाइतोरयोगीबापटिचाय५५
सहिते ना पारे रावण अंगदेर कथा ❋ लज्जा पेये रावण भये हेंट करिल माथा
दुःखित हइया रावण करिल माथा भंग ❋ दुइजने लेगे गेल वाक्येर तरंग
रावण बले, शोन ओरे वानरा तोरे बलि ❋ कोथा हते मरिवारे लंकापुरे एलि
के तोरे पाठाये दिल मरिवार तरे ❋ वनेर वानर केन राक्षसेर घरे
कि नाम काहार बेटा, कोन देशे वास ❋ भय कि मारिब नाहि कह सत्यभाष
अंगद बले तोर भयेते थरथराये काँपि ❋ एखनएमनधर्म्मकथामर रे बेटा पापी
तुइ कोन ठाकुरेर बेटा तोरे भय कि ❋ आमि के जानिसना तुइशोन परिचयदि
बालि आर सुग्रीव दुइ वीर अवतार ❋यारेजिन्तेकिष्किन्धायगिछिलिएकवार

परशुराम के तेज के सम्मुख पराभूत हुआ था। मेरे बाप ने तेरे किस बाप को अपनी पूँछ में लपेट लिया था ? एक-एक कर तेरे सारे बापों की कथा वर्णन की। अच्छा, यह सब बातें भी रहने दे, तेरा वह तपसी बाप कहाँ है ? दुष्ट शूर्पणखा ने जिसको मंत्र दिया और दंडक अरण्य में जो भीख मांगकर खाता रहा ? कानो में शंख का कुडल और (अंग में) भगवा वस्त्र पहने डम्बरु बजा-बजा कर घर-घर में भीख माँगता था। संन्यासी का वेश धारण किये मुँह पर राख पोतकर घूमता था। अस्तु, इन बापों की जरूरत नहीं; मुझे तो तेरे उस जोगड़े बाप की चाहना है ॥ ५५ ॥

अंगद की बातों को रावण सह न सका; लज्जा से उसने अपना सिर झुका लिया। दुखी होकर रावण ने अपना मायाजाल समाप्त किया। फिर दोनों में वाक्यों के बाण चलने लगे। रावण ने कहा, अरे वानरा ! सुन तुझे बताऊं। कहाँ से तू लंकापुर मरने चला आया, किसने तुझे मरने के लिए भेज दिया ? वन के बन्दर हो, राक्षस के घर कैसे ? क्या नाम है तुम्हारा, किसके बेटे हो और कौन से देश के रहने वाले हो ? सच-सच बताओ, कोई डर नहीं, मारूंगा नहीं। अंगद ने कहा, तेरे डर से तो मैं थर-थर काँपने लग गया हूँ, अब ऐसी धार्मिक बातें करने लग गया है, अरे पापी, मरता भी नहीं। तू कौन खेत की मूली है, तुझ से क्या डरना है मुझे ? मैं कौन हूँ यह भी तू नहीं जानता। ठहर मैं अपना परिचय देता हूँ। बालि और सुग्रीव ये दो वीरों के अवतार हैं जिनको

पड़े कि ना पड़े मने हैल अनेक दिन * हात बुलाये देख गले आछे लेजेर चिन
से बालिर सुत आमि सुग्रीवेर चर * अंगद नाम धरि आमि रामेर किंकर
राम कि जानिस् नाइ आनिलि सीता हरे * एखन देखि लंकापुरी राखिस् केमन करे
एइ तोर लंकापुरी राम बेड़िलेन एसे * बेर ना रावणा केन घरे रहिलि बसे
अरुण नय वरुण नय रामेर संगे वाद * वंशे केह ना थाकिबे ना करिस साध५६
रावण वले,वलिल कि राम लंकापुरे एसे * बुझि वा रामेर डरे रैते नारि देशे
एइ कि भेवेछे गुहक-चण्डालेर मिता * वनेर वानर सहायकरे उद्धारिबेसीता
रामेर योग्यता यत सब देखते पाइ * नैले केन देशे थेके दूर करे देय भाइ
नारी संगे लइया से वने केन आसे * भाइके मेरे राज्य लये रय ना केन देशे
राम या पारे करुक एसे तोर सने मोर कि * शूर्पनखार नाक काटे बृथा आमि जी
एनेछि रामेर सीता बलगे तार तरे * करुक एसे राम तपस्वी प्राणे यत परे
सुमेरु पर्व्वत यदि मक्षिकाय नाड़े * सती नारी कभु यदि निज पति छाड़े

जीतने के लिए तू एकबार किस्किन्ध्या भी गया था। काफी दिन हो गये, शायद याद न हो, गले में हाथ सहला कर देख ले कदाचित् पूँछ का चिह्न अब भी मौजूद हो। मैं उसी बालि का बेटा हूँ और सुग्रीव का चर हूँ। मेरा नाम अंगद है और मैं राम का अनुचर हूँ। राम कौन है यह तो तुझे मालूम नहीं था, तभी सीता को तू उठा लाया। अब देखता हूँ कि कैसे तू लंकापुरी को बचा लेता है। तेरे इस लंकापुरी को राम ने घेर लिया है। अरे, बाहर क्यों नहीं निकलता रे रावणा, घर में मुँह छिपाये क्यों बैठा है? यह कोई अरुण-वरुण नहीं, यह राम के साथ विवाद है। इसमें तेरे वंश में कोई भी बचा नहीं रह जायगा, [वंश की] लालसा न रखना॥ ५६॥

रावण ने कहा—क्या कहा तूने कि राम लंकापुर आ गया तो उसके डर से हम अपने देश में रह नहीं सकेंगे। यह क्या तूने गुहक-चंडाल की मित्रता समझ रखी है। वन के बन्दरों की सहायता से वह सीता का उद्धार करेगा? राम की कितनी योग्यता है यह तो दिखाई ही पड़ रही है, वर्ना उसका भाई उसे देश से बाहर क्यों निकाल देता; और अपनी नारी को साथ लेकर वह जंगल भी क्यों आया होता; भाई को मार कर वह अपना राज्य क्यों नहीं छीन लेता। राम से जो कुछ बन पड़े आकर मेरा बिगाड़ ले; तुझसे मेरा क्या झगड़ा है? शूर्पनखा की नाक उसने काट ली और नाहक ही मैं जिन्दा हूँ। मैं राम की सीता उठा लाया हूँ, उस तपसी राम से जाकर बताना कि उसके जी में जो आवे सो कर ले। यदि सुमेरु पर्वत को मक्खी परिचालित कर दे, सती नारी अपने

गरुड़ेर धन यदि हरे लय काके ❋ खलेर शरीरे पाप यद्यपि न थाके
खद्योत उदये यदि हय चन्द्रपात ❋ रावण जिते सीता निते नारबे रघुनाथ
बल् गिया वानरा रे तोर रघुनाथे ❋ सेतुबन्ध भेंगे दिक् आपनार हाते
येखाने पर्व्वत छिल, सेखाने ता थोबे ❋ उपाड़िल यत बृक्ष पुनर्व्वार रोबे
विभीषण एसे मोर पाये धरुक केंदे ❋ घरपोड़ाके एने दिबि हाते गले बेंधे
द्वितीय प्रहर रात्रि घोर निशाभागे ❋ दुयारे प्रहरी मोर केह नाहि जागे
लंका दग्ध करे गेल रात्रे एसे पड़े ❋ तार शास्ति करे लब, तबे दिब छेड़े
धनुक वाण फेले राम खत् दिक् नाके ❋ सर्व्व दोष क्षमा करे कृपा करि ताके ५७
अंगद बलिछे, रावण, आमरा ताइचाइ ❋ कचकचिते काजकि मोरादेशे फिरे जाइ
रामके गिया बलि इहा ना करिले नय ❋ सेतुबन्ध भेंगे दिब दण्ड चारि छय
या बलिले ता करिते मुस्किल कि आछे ❋ येखाने पर्व्वत छिल थोब तार काछे
विभीषण के बेंधे एने दिब तोर काछे ❋ बुझे पड़े शास्ति करो, मने यत आछे
निर्म्माइया दिब लंका यत गेछे पोड़ा ❋ शूर्पनखार नाककान किसे जाबे जोड़ा
अक्षकुमार मेरेछे ये श्रीरामेर चरे ❋ तार स्त्री विधवा हये आछे तोर घरे

पति का परित्याग कर दे, गरुड़ का धन यदि कौआ छीन लेने में समर्थ हो जाय, खल के शरीर में यदि पाप का लेश न रहे, जुगनू के निकलने से यदि चन्द्र का पतन हो जाय, फिर भी रावण को जीत कर रघुनाथ सीता को नहीं ले जा सकेगा। अरे वानरा ! जाकर अपने रघुनाथ से ताकीद कर दे कि वह अपने हाथों से सेतुबन्ध तोड़ डाले; जहाँ पर्वत था वहीं उसे रख कर जितने पेड़ उखाड़े हैं उनको वही फिर से रोप दे; विभीषण आकर मेरे पैरों पर रोये-कलपे और लंकादाही हनुमान के हाथ-पैर बाँध कर मुझे सौंप दे। दो पहर रात बीते घनघोर रात्रि में जब मेरे दरवाजों पर भी प्रहरी जाग नहीं रहा था वह आकर लंका जला कर चला गया। दण्ड देने के बाद उसे छोड़ दूँगा। राम धनुष-बाण फेंक कर जमीन पर नाक रगड़ते हुए क्षमा माँगले, मैं उसके सारे अपराधों को सदय होकर क्षमा कर दूँगा ॥ ५७ ॥

अंगद ने कहा, रावण हम भी यही चाहते हैं। इस व्यर्थ के वाद में क्या रखा है, हम भी अपने देश लौट जायँ। राम से जाकर बताता हूँ कि यह किये बिना कोई चारा नहीं। चार-छह दंड में ही सेतुबन्ध तोड़ दूँगा। तुमने जो कुछ बताया वह करना कोई कठिन नहीं, जहाँ पर पर्वत था वहीं उठाकर उसे रख दूँगा। विभीषण को बाँध कर तुम्हारे पास ला दूँगा, जो समझ में आवे सजा देना। लंका में जितना कुछ जल गया है उसका निर्माण भी कर दूँगा, लेकिन यह बताओ कि शूर्पनखा की नाक कैसे जोड़ी जा सकेगी ? श्री राम के चर ने

ये तोर दारुण पन तेमन करे के * कबे बल्बि, आमार बधूर स्वामी एने दे
एकजन के एने दिले ताउ मने ना लबे * मनेर मत ना हइले ताहाओ फिरे दिबे
घर पोड़ाके एने दिते बल्लि बटे हय *सेदिन तारेदूर करेछेन खुड़ा महाशय ५८
अंगदेर कथा शुने रावण राजा हासे * घरपोड़ाके दूर करिल तार कोन दोषे
अंगदबलेन हनूयखन आसितेछिलहेथा * बलेछिलेन खुड़ा तारे गोटा चारेककथा
जाओ लंकाय हनूमान पवनकुमार * पालन करिया कथा आसिह आमार
कुम्भकर्णेर माथाटा आनिबे नखेछिंड़े * सागरेर जले लंका फेलिबे उपाड़े
अशोकवन सहसीताआनबे माथायकरे * वाम हस्ते आनिबे रावणेर जटे धरे
पाठाये छिलेन तारे चारि कार्य्येर तरे * चारिकार्य्येर एक कार्य्य किछुइनाकरे
कोपेते सुग्रीवराजा काटितेछिलेन ताय * आमरा सकलवानरधरेरेखेछि ताँरपाय
अनाथेर नाथ राम गुणेर सागर * सुग्रीवेरे आज्ञा दिला, ना मार वानर
ना मारिल सुग्रीव शुनिया रामेर कथा * दूर करे दिल तारे मुड़ाइया माथा
कोन देशे पलायेछे आछे किवा नाइ * तारतत्व करिमोरा फिरिठाँइ-ठाँइ ५९

जिस अक्ष-कुमार को उस दिन मारा है, उसकी पत्नी विधवा होकर तुम्हारे घर में रह रही है। तुम्हारी प्रतिज्ञा भी बड़ी जबर्दस्त है, ऐसी प्रतिज्ञा कोई दूसरा कर भी कैसे सकता। कभी यह कह बैठोगे कि मेरी बहू का पति ला दो। अगर एक को ला भी दूँ तो तुमको पसन्द नहीं आएगा। यदि मनपसन्द न हुआ तो उसको भी लौटा दोगे। लंकदाही को तो तूने ला देने के लिए कहा, किन्तु उसको उस दिन चाचा सुग्रीव ने भगा दिया है ॥ ५८ ॥

अंगद की बातें सुनकर राजा रावण हँसने लगा; कहा, घर जलाने वाले को किस दोष पर खदेड़ दिया गया। अंगद ने कहा, हनुमान जब यहाँ आ रहा था तो चाचा ने उससे दो-चार बातें कही थीं—पवनकुमार तुम लंका जाओ और मेरी दो चार आज्ञाओं का पालन कर आओ। नखों से कुम्भकर्ण का सिर नोच लाना। लंका को उखाड़ कर समुद्र के जल में फेंक देना। सीता-सहित अशोक-वन अपने सिर पर उठा कर ले आना। बायें हाथ से रावण को जटाओं के बल पकड़ लाना। उसको केवल चार काम देकर भेजा था और उनमें से उसने एक काम भी नहीं किया। गुस्से में आकर राजा सुग्रीव उसका वध करने ही वाले थे कि हम सब वानरों ने उनके पाँव पकड़ लिए। अनाथों के नाथ और गुणों के सागर. राम ने सुग्रीव को आज्ञा दी कि वानर की हत्या मत करो। सुग्रीव ने राम के कहने पर उसे मारा नहीं लेकिन उसका सिर मुँड़ा कर उसको दूर भगा दिया। किस देश को वह भाग गया है, जिन्दा है भी या नहीं, इसका पता हम कहाँ लगाते फिरेंगे ॥ ५९ ॥

अंगदेर कथा शुनि राक्षसेरा चाय ❋ से करे नाइ चारिकर्म्म एइ वा करे जाय
अंगद बलेबुझिलाम तोर एसब किछुनय ❋ रघुनाथेर हाते तोर मरण निश्चय
जा थाके वासना तोर एइ बेला ता कर ❋ राज आभरण लये सर्व्वांगेते पर
तुइ मरिले एसब आर भोग करिबे के ❋ भाण्डार भाँगिया धन दरिद्रेके दे
हय हस्ति रथ आदि महिष गोधन ❋ नयन मुदिले सब हबे अकारण
स्वप्नगत लोके येन निधि पाय हाते ❋ आँखि कचालिया उठे रजनी प्रभाते
एसब सम्पद तोर देखि सेइमत ❋ चैतन्य थाकिते देख आपनार पथ
स्त्री सकले डाकिया जिज्ञासा करकथा ❋ केबा जाबे तोर सने ह'ये अनुमृता
आपनि कुठार दिलि आपनार पाय ❋ अहंकार करे डिंगा डुबालि दरियाय
बुद्धिमान हये ज्ञान हारालि अभागा ❋ शिरे हैल सर्पाघात कोथा बाँधबि तागा
विभीषणेर कथा तुइ ना शुनिलिकाने ❋ सुखे शय्या कर गिया श्रीरामेर वाणे
सर्व्वशास्त्र पड़े बेटा ह'लि हतमुख ❋ बल्ले कथा शुनिस् नाक एइत बड़दुःख
पूर्णब्रह्म नारायण राम रघुमणि ❋ दुष्टेरे करिते नष्ट जन्मिला अवनी
मदमत्त निशाचर पापिष्ठ रावण ❋ मजिबि सवंशे तार उठेछे लक्षण

अंगद की बातें सुनकर राक्षस एक दूसरे का मुँह ताकने लगे—उसने तो चारों काम नहीं किये, कहीं यही न यह सब करने लग जाय! अंगद ने कहा, तेरी सारी बात ही व्यर्थ है, समझ में आ गया कि तेरी मौत रघुनाथ के हाथ ही होगी। मन में तेरी जो कुछ वासना हो अभी पूरी कर ले। राज-आभरण लेकर सारे अंगों में पहिन ले क्योंकि तेरे मरने के बाद यह सब कौन भोगेगा? भंडार खोल कर सारा धन दरिद्रों को बाँट दे। घोड़ा, हाथी, रथ और गोधन आदि सब बाँट दे क्योंकि आँखें मुंदने के साथ-साथ सभी कुछ व्यर्थ हो जायगा। जिस प्रकार सपने में लोगों को निधि मिल जाती है और सबेरे उठते ही आँखें मसल कर देखता कि कहीं कुछ नहीं। तेरी यह सारी सम्पदा भी मैं इसी प्रकार देखता हूँ। चेतना रहते हुए अपना पथ देख ले। अपनी नारियों को बुला कर पूछ ले कि कौन-कौन तेरे साथ सहमरण में साथ देंगी। तूने स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी। घमंड के मारे मँझधार में ही अपनी नाव डुबो दी। बुद्धिमान होते हुए भी अभागे तूने अपना ज्ञान खो दिया। सिर पर यदि साँप डस ले तो पट्टी कहाँ बाधेगा। विभीषण की बातों पर तूने ध्यान नहीं दिया, अब श्री राम के बाण की बदौलत आराम की सेज पर सो जा। सारा शास्त्र पढ़कर भी तू वज्र-मूरख रह गया—कहने पर भी सुनता नहीं, यही तो अफसोस है। राम रघुमणि पूर्णब्रह्म नारायण हैं—धरती पर दुष्टों का संहार करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। हे मदमत्त निशाचर! हे पातकी

राम विष्णु सीता लक्ष्मी ना बुझिलि मने * दशरथेर घरे जन्म दुष्टेर दमने
मत्त हये धरलि बेटा, जानकीर केशे * सेइ अपराधे तुइ मजिलि सवंशे
विधाता विमुख तोरे शुनरे आभागे * आनिलि रामेर सीता मरिवार लेगे
दशहाजार देवकन्या मजिस रात्रि दिने * रहिते नारिस बेटा परदार विने
कामरसे मत्त हये पड़े गेलि फाँदे * वामन हइया हात वाड़ाइलि चाँदे
सूर्य्यवंश-चूड़ामणि दशरथ राजा * देवता गन्धर्व्व आदि करे यार पूजा
तार घरे रघुनाथ जन्मिला आपनि * एतदिन निर्व्वंशे हलि रे वैश्रवणि
कामरसे मजे गेलि विषय आस्वादे * तक्षके दंशिल तोरे कि करे औषधे
जे राम ताड़का वधे पञ्च वर्ष काले * हरेर धनुक जिनि भाँगे अवहेले
ताँहार वनिता सीता आन्‌लि बेटा हरे * कालकूट विष खेलि डान हाते करे
अहल्या पाषाणी ह'ये छिल दैवदोषे * मुक्त ह'ये गेल रामेर चरण परशे
कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन तृण कराइल दाँते * तार दर्प चूर्ण हल परशुरामेर हाते
हारिल परशुराम प्रभु रामेर ठाँइ * ताँर संगे तोर द्वन्द्व आर रक्षा नाइ
गेलि रे रावणा, तुइ गेलि एत दिने * उपाय ना देखि तोर राम नाम विने

रावण ! तू अपने पूरे वंश के साथ ध्वंस होगा, ऐसे लक्षण दिखाई दे रहे हैं। तू यह नहीं समझ सका कि राम विष्णु हैं और सीता (साक्षात्) लक्ष्मी। दुष्टों के दमन के लिए दशरथ के लिए दशरथ के घर उन्होंने जन्म लिया है। मदमत्त होकर तूने जानकी को केशों से पकड़ा—इसी अपराध से तू अपने वंश के साथ चौपट हो गया। सुन ले रे अभागे ! विधाता तुझसे विमुख है, मरने के निमित्त ही तू राम की सीता को ले आया। रात-दिन दस हजार देवकन्याओं से सम्बन्ध रखता है, फिर भी निगोड़े, तू बिना पर-स्त्री रह नहीं सका ? कामरस में मत्त होकर तू जाल में फँस गया है, बौना होकर तू चाँद पकड़ने लपका था। सूर्यवंश के चूड़ामणि सदृश राजा दशरथ की पूजा देवता गन्धर्व तक करते हैं। उन्हीं के घर में रघुमणि भगवान् ने स्वयं जन्म लिया। रे रावण अब तू निर्वंश हुआ। कामरस में डूब गया, व्यसन में मस्त हो गया। तक्षक ने तुझे डस लिया, अब औषध क्या कर सकता है ? जो राम पाँच वर्ष की अवस्था में अनायास ताड़का का वध करता हो और शिवधनुष को जो अनायास ही तोड़ डालता हो, तू उसकी वनिता को चुरा कर ले आया—कालकूट विष तूने स्वेच्छा से पी लिया। दैव-दोष से अहल्या पत्थर की बनी पड़ी थी, श्री राम के चरणों के स्पर्श से मुक्त हो गयी। कार्त्तवीर्यार्जुन ने तुझसे दाँतों से तृण उठवाया था, उसका घमंड परशुराम के हाथों चूर-चूर हो गया। वही परशुराम प्रभु राम से पराजित हुए। और उन्हीं के साथ तेरा कलह है, अब तेरी कोई रक्षा

यदि जिते आशा थाके गलवस्त्र हये * काँधे दोला करे सीता ब'ये दिवि लये
तबे यदि रघुनाथ तोरे करेन रोष * श्रीचरणे धरि मोरा मेगे लव दोष६०
रावण बले बानरा तोर मुखे पड़ुक छाइ *आमार जन्य दुःख पेये मरबि केन भाई
आमार तरे तोरा केन धरबि रामेर पाय* युद्धकरेमरबआमितोरबापेरकिदाय६१
अंगद बले, यत बुझाइ, तोर मने ना लय* रघुनाथेर हाते तव मरण निश्चय
हितोपदेश कि बुझिबि शोनरे बेटा गरु* तुइ बाँचिलेआमारबापेरकीर्त्तिकल्पतरु
नैले तोरे बेंचे थाकते साध करे किबलि* लोकेब'लवे,एइबेटा के बेंधे छिल बालि
घुषिबे आमार बापेर कीर्त्ति जगन्मय * ताइ बलिदिनकतकबाँचलेभाल हय६२
रावणबले,शोनबानरा, धिकजीवनेतोर * राजार बेटा हये हलि नरेर नफर
पुत्र हये परशुराम, शुधते पितारधारे * निःक्षत्रिया कैल धरा तिन-सातवार
पुत्र हये तुइ तार कोन कर्म्म कैलि * बाप के मारिया तोर माके दिलाइलि
धिक् धिक् जीवने तोर मा यार कुलटा *वारे वारे कहिसकथामरवानरा बेटा६३

नहीं। अरे रावण! इतने दिनों में तेरी दुर्गति हुई, अब तो राम-नाम के बिना तेरा कोई चारा नहीं। अगर जीने की इच्छा हो तो गले में वस्त्र डाल, कन्धे पर सीता देवी की डोली ढोकर (राम की शरण में) उपस्थित हो। फिर भी अगर रघुनाथ तुझ पर रोष प्रगट करते हैं तो उनके श्रीचरणों को पकड़ कर हम लोग क्षमा माँग लेंगे ॥ ६० ॥

रावण ने कहा, अरे वानर; तेरे मुँह में राख। मेरे लिए क्यों क्लेश उठायेगा भाई! मेरे लिए तुम लोग क्यों राम के पैर पकड़ोगे। मैं लड़कर मरूँगा, तेरे बाप का उससे क्या? ॥ ६१ ॥

अंगद ने कहा, जितना भी तुझको समझाता हूँ, तेरी समझ नहीं आता। अवश्य तेरी मौत रघुनाथ के हाथों ही है। हितोपदेश तू क्या समझे, तू बैल है। सुन, तेरे जीने से मेरे बाप का यशोवर्धन होगा। वर्ना तुझे क्यों मैं जिन्दा रहने को कहता। लोग कहेंगे, इन्हीं बच्चू को बालि ने बाँधा था और इस प्रकार मेरे बाप का यश संसार भर में फैलेगा। इसीलिए कहता हूँ कि तू और कुछ दिन जी ले तो अच्छा ॥ ६२ ॥

रावण ने कहा—सुन रे वानर, तेरे जीवन पर धिक्कार है। राजा का बेटा होकर तू मनुष्य का नौकर बना। पुत्र होकर परशुराम ने पिता का ऋण चुकाने के लिए धरती को इक्कीस बार क्षत्रियशून्य किया। पुत्र होकर तूने अपने पिता का कौन सा काम किया। बाप को जिसने मरवाया उसीको माँ को सौंप दिया। तेरे जीवन पर धिक्कार है, जिसकी माँ कुलटा हो। बातें मारता है, रे वानर, तुझे मौत आये ॥ ६३ ॥

अंगद बले बेटा रावण मोर मा कुलटा * सत्य करि वल देखि रे तुइ कार बेटा
जन्म तोर ब्रह्मवंशे त्रिभुवने ख्याति * विश्वश्रवार बेटा तुइ पुलस्त्येर नाति
विश्वश्रवा महातपा विश्वे याँर यश * तुइ यदि ताँर बेटा, केनरे राक्षस
मा तोर राक्षसी रे ब्राह्मण तोर पिता * तुइ विभा कैलि बेटा दानव दुहिता
कुम्भनसी भग्नी तोर दैत्य निल हरे * कय-जेते तुइ बेटा देख मने करे
रम्भावती सती से श्वशुर बले तोरे * बलात्कार कैलि तारे पर्व्वतेर कोरे
आत्मछिद्र ना जानिस, परके दिस खोंटा*बारे-बारे कहिस कथामर रे पाजि बेटा
तार आगेते बड़ाइ कर, जे ना तोरे जाने * दाँते कुटा करे एलि अर्जुनेर स्थाने ६४
अंगदेर कथा शुनि रावण उठे ज्वले * ज्वलंत अनले येन घृत दिल टेले
दशानन बले, बसे करिस किरे दूत * पलावे वानर बेटा धर तो मोर पूत ६५
अंगद वीर बड़ स्थिर दर्प करे कय * आर के धरिबे, आपनि आइस नय
कुपिल अंगद दशाननेर वचने * कोपे गालि देय से रावण ताहा शुने
अंगद वलिल मर पागल रावण * किसेर बड़ाइ तुइ करिस एखन

अंगद ने कहा, अरे रावण, मेरी माँ को तू कुलटा कहता है, सच-सच बता तू किसका बेटा है। तेरा जन्म ब्राह्मणवंश में हुआ, त्रिभुवन में यही विदित है। तू विश्वश्रवा का बेटा है और पुलस्त्य का पौत्र है। विश्वश्रवा महातपा थे—विश्व भर में उनका यश है। अगर तू उनका बेटा है तो राक्षस कैसे बन गया। तेरी माँ राक्षसी है और पिता ब्राह्मण। तूने दानव-कन्या से विवाह कर लिया। तेरी बहन कुम्भनसी को दैत्य चुरा ले गया। तेरी जाति कौन सी है कुछ विचार कर के देख। सती रम्भावती तुझको श्वसुर कहकर पुकारती, तूने उसके साथ पर्वत की गुहा में बलात्कार किया। अपनी खोट नहीं देखता, दूसरे को ऐब लगाता है। बार-बार तू बड़ाई करता है, मर कहीं के। उसके सामने अपनी बड़ाई किया कर, जो तेरे बारे में कुछ जानता न हो। कार्तवीर्याजु‍र्न के सामने तुझको दाँतों से खर पकड़ना पड़ा था ॥ ६४ ॥

अंगद की बातें सुनकर रावण तिलमिला उठा, मानों जलते अनल पर किसी ने घी डाल दिया हो। दशानन ने कहा, अरे बेटा, जरा इस बन्दर को तो पकड़ ले नहीं तो भाग जायगा ॥ ६५ ॥

वीर अंगद स्थिर अटल बना रहा, दंभ करते हुए बोला—दूसरा कौन मुझको पकड़ेगा, स्वयं ही चेष्टा न कर ले। रावण के कथन पर अंगद को गुस्सा आ गया और वह (दशानन को) गाली देने लग गया। रावण सुनता रहा। अंगद ने कहा, अरे पागल रावण मर, अब तू किसकी बड़ाई कर रहा

तार आगे दर्प कर, ये जन ना जाने ❋ तोर यत विक्रम विदित मोर स्थाने
कार्त्तवीर्य्य यखन से केलि करे जले ❋ तार आगे गेलि तुइ नर्म्मदार कूले
एइ मत वीर दर्प करिलि से स्थले ❋ लुकाय थुइल तोरे वाम कक्षतले
चक्षे नीर बहे तोर मुखे घनश्वास ❋ तार ठाँइ प्राय तुइ हइलि विनाश
आसिया पुलस्त्य मुनि करि स्तवस्तुति ❋ तोरे मुक्ति करिया दिलेन अव्याहति
ताँर ठाँइ हये छिल संशय जीवन ❋ भाग्ये प्राणरक्षा तोर मुनिर कारण
आर-बार गिया छिलि पितार निकट ❋ शठता करिलि बहु तुइ बेटा शठ
सन्ध्या हेतु मम पिता ना करने रण ❋ यत अस्त्र छिल तोर कैलि वरिषण
सन्ध्या सांग करि पिता तोरे बाँधि लेजे ❋ डुबाइल चारि सागरेर जल माझे
लेजे बाँधि डुबाइल जलेर भितर ❋ जल खेये रावणारे हइलि फाँफर
आमार पितार लेजे योजन पञ्चाश ❋ जल मध्ये राखि तोरे उठिल आकाश
स्वीकार करिलि तुइ निज पराजय ❋ तबे से पितार ठाँइ पाइलि विदाय
लेजेर बन्धन तोर किष्किन्ध्याय घोषे ❋ बन्दिया पिताके मोर आइलि तरासे
बहुदिन गियाछे ना जाने कोन जन ❋ बुझिनु बड़ाइ तोर एइ से कारण

है। उसके सामने इतरा जो न जानता हो, तेरा सारा पराक्रम मुझको मालूम है। कार्त्तवीर्य जिस समय जल-केलि कर रहा था, तू भी नर्मदा के तट पर गया और वहाँ इसी प्रकार वीरता की डींग हाँकने लगा। उसने तुझे उठाकर अपने बायें बगल में दाब लिया। तेरी साँस उखड़ने लगी और आँखों से आँसू निकलने लगे। वहाँ तेरे प्राण निकलने ही वाले थे कि पुलस्त्य मुनि ने आकर स्तव-स्तुति की और तुझे मुक्ति दिलायी। उसके निकट तेरे प्राण जाने ही वाले थे कि मुनि की कृपा से तू बच गया। और एकबार तू मेरे पिता के पास गया था। वहाँ तूने हर प्रकार की शठता की। सन्ध्या-जप के कारण मेरे पिता तुझसे युद्ध नहीं कर रहे थे और तेरे पास जितने अस्त्र थे तूने उन पर बरसाये। सन्ध्या समाप्त होने पर पिता ने तुझको पूँछ में लपेट कर चार सागर के पानी में गोता-लगवाया। पूँछ में बाँधकर तुझे पानी में डुबो दिया; पानी पेट में भर जाने से तेरी जान साँसत में आ गयी। मेरे पिता की पूँछ पचास योजन लम्बी थी; तुझे पानी में छोड़ वह आकाश में उठ गये। तूने अपनी पराजय मान ली, तब पिता जी से तूने छुटकारा पाया। किष्किन्ध्या में सर्वत्र तेरा पूँछ में बँध जाना घोषित हो गया। मेरे पिता की बन्दना कर [किसी प्रकार] तू त्रास से भाग आया। बहुत दिन बीत चुके हैं अत: किसी को इस घटना की जान कारी नहीं हैं, तभी तू इतना घमंड करता फिरता है। जरा याद तो कर ए रावन! तुझे सहस्रवीर्यार्जुन ने हराया था, वलि-द्वार पर तुझे चेरी

मने कर रावणा तोरे हाराय अर्ज्जुन * वलि द्वारे चेड़ीर एँटो खेये हलि खून
अन्य के आमार पिता वान्धिलेन लेजे * परिचय देह किवा आछे एर माझे
यद्यपि रावण नाहि दिलि परिचय * सेइ से रावण तुइ बुझिनु निश्चय
सेइ सब काल गेल हास्य परिहासे * एखन समय एलो धन-प्रान-नाशे
सिंह प्रति शृगालेर नाहि भारिभूरि *रामेघाँटाइया रे, मजालि लंका-पुरी ६६
कुपिल रावण राजा अंगदरे बोले * कुड़ि चक्षु रक्त करि अग्नि हेन ज्वले
दूतेरे काटिते नाइ राज व्यवहार * सेकारणे सहि आमि तोर अहंकार
जिनिलाम देव दैत्य यक्ष विद्याधार * अनरण्य मान्धाता प्रभृति नरेश्वर
वालि अर्ज्जुनेर सने तुल्य गेल रणे * कि करिते पारे राम मनुष्य-पराणे ६७
अंगद वलिछे मर पागल रावण * भाग्ये तोर वर्जिजल राक्षस विभीषण
रामेर वाणेर सने नाहि तोर देखा * काटा नाक कान देख, घरे शूर्पणखा
घरे आछे भगिनी, से तोर नहे भिन्न * विद्यमान देखह रामेर वाण चिह्न
रामेण वाणेर सने हइले दर्शन * एक वाणे सवंशेते मरिवि रावण

का जूठन खाना पड़ा। दूसरों की बात क्या बताऊँ मेरे ही पिता ने तुझे पूँछ में लपेट लिया था—बताना जरा, इसमें तुझे कुछ कहना तो नहीं है? हालाँकि, रावण! तूने अपना यह परिचय नहीं दिया फिर भी मैं जानता हूँ कि तू वही रावण है। लेकिन वे सब दिन तो हँसी-मजाक में बीत गये, अब धन-प्राण से विनष्ट होने का दिन आ गया है। सिंह के प्रति सियार की अकड़-धकड़ बेकार है—राम से छेड़-छाड़ करके तू लंकापुरी के ध्वंस की स्थिति ले आया ॥ ६६ ॥

अंगद के वचन से रावण राजा कुपित हुआ। बीस आँखें लाल-लाल हो गयीं और आग सी धधकने लगीं। राजोचित धर्म के अनुसार दूत का वध नहीं करना चाहिए, इसीलिए मैं तेरे अहंकार को सह रहा हूँ। मैंने देव, दैत्य, यक्ष, विद्याधरों पर विजय पाई है। अनरण्य मान्धाता आदि नृपतियों को पराजित किया। रण में कार्त्तवीर्य और बालि जैसों के साथ मेरी जोड़ रही—यह तुच्छ मानव राम मेरा क्या बिगाड़ सकता है ॥ ६७ ॥

अंगद ने कहा, अरे पागल रावण, तू मरा। तेरे भाग्य का फेर है कि राक्षस विभीषण ने तुझे त्याग दिया। राम के बाण से अभी सामना नहीं हुआ; घर में सूर्पणखा है उसके कटे हुए नाक-कान देख ले। घर में तेरी बहिन है—वह तुझसे कोई भिन्न नहीं है—राम के बाण के चिह्न तेरे निकट ही विद्यमान हैं। राम के बाण से तेरा सामना हो जाय तो एक ही बाण से

यत वाण धरेन श्रीराम गुणधाम * अबोध रावण शुन से-सवार नाम
अमर्त्त समर्थ वाण, वाण महाबल * विष्णुजाल इन्द्रजाल कालान्त अनल
उल्कामुख वरुण विद्युत खरशान * ग्रहपति नक्षत्र गगन रुद्र वाण
सूचीमुख शिलीमुख घोरदरशन * सिंहदन्त वज्रदंत वाण विरोचन
कालदण्ड ऐषिक देखह कर्णिकार * चन्द्रमुख अश्वमुख देख सप्तसार
विकट संकट वाण सप्त धाराधार * अर्द्धचन्द्र खुरपा आशुग क्षुरधार
पशु पक्षी अग्नि आर अग्नि मुखवाण * कुवेरास्त्र राजहंस वाण वर्द्धमान
यमक दुर्ज्जय वाण भंग ये विभंग * त्रिशूल अंकुश वाण वायव्य आतंक
वज्रवाण गरुड़ मयूर सुसन्धान * काकमुख भेकमुख कपोतक वाण
विष्णुचक्र षटचक्र वाण हुताशन * सन्तापन विलापन संग्रामे शमन
गजांक सन्धान वाण चारि दिके आँटा * सिंह ओ शार्दूल तार चारि दिके काँटा
एत वाण रघुनाथ करेन सन्धान * याँर एक वाणे वालि त्यजिलेक प्राण
ये बालिर निकटेते तोर पराजय * से वालिके मारिलेन राम महाशय
वाल्यक्रीड़ा याँहार शिलेर धनुर्भंग * कि साहसे तार संगे युद्धेर प्रसंग
भेदिलेन सप्तताल राम एक शरे * ताँर तुल्य वीर केवा आछे चराचरे

रावण तू अपने सारे वंश सहित नष्ट हो जायगा। गुणसागर राम के पास जितने वाण हैं, हे अबोध रावण! उन सब के नाम तो सुन। अमर्त्त-समर्थ वाण, महाबल वाण, विष्णुजाल, इन्द्रजाल, कालान्त, अनल, उल्कामुख, वरुण, विद्युत, खरशान, गुहपति, नक्षत्र, गगन, रुद्रवाण, सूचीमुख, शिलीमुख जैसे भयानक रूपवाले वाण, सिंहदन्त, वज्रदन्त और विरोचन, कालदन्त, ऐषीक व कर्णिकार वाण, चन्द्रमुख, अश्वमुख एवं सप्तसार विकट संकट-वाण जिसके सप्तमुख हैं, अर्द्धचन्द्र, खुरपा, आशुग, क्षुरधार वाण, पशु, पक्षी, अग्नि और अग्निमुख वाण, कुवेरास्त्र, राजहंस, वर्धमान वाण, यमक दुर्जय-वाण, मंत्र-विमंत्र वाण, त्रिशूल, अंकुश, वायव्य, आतंक, वज्रवाण, गरुड़, मयूर, सुसन्धान वाण, काकमुख, भेकमुख, कपोतक वाण, विष्णुचक्र, षटचक्र, हुताशन, संतापन, विलापन जैसे संग्राम-शमन वाण, गजांक चारों ओर से कसा हुआ सन्धान वाण, सिंह और शार्दूल जिनके चारों ओर काँटे हैं—इतने वाणों पर रघुनाथ की गति है, जिनमें से एक वाण से वालि ने प्राण त्याग दिया। जिस वालि से तू पराजित हुआ था उसी वालि को श्रीराम ने मार गिराया। शिव का धनुष तोड़ना जिनके लिए बाल-क्रीड़ा के समान है, उनके साथ तेरे युद्ध का क्या प्रसंग? राम ने एक वाण से सप्तताल को भेद किया, उनके समान वीर इस चराचर पर दूसरा कौन है। किस बूते पर तू आँखें लाल कर

कि हेतु देखिस रे पाकल करि आँखि ※ माकड़ेर डिम्ब सम तोर लंका देखि
तोर काछे आछे तोरे नाहि करि शंका ※ उपाड़िया लैते पारि स्वर्णपुरी लंका
हेर हेर मुण्ड मोर सुमेरुर चूड़ा ※ हेर हेर पद मोर कैलासेर गोड़ा
हेर हेर हस्त मोर बज्रेर समान ※ एकइ चापड़े तोर लइब परान
अपमाने रावण करिल हेंट माथा ※ पात्र मित्र सहित ना कहे कोन कथा ६८
रावण अंगदे बले गञ्जिलि विस्तर ※ एक वार्त्ता जिज्ञासि रे अवगति कर
ये वानर पोड़ाइल मोर लंकापुरी ※ ये वा अक्षकुमारे मारिल बले धरि
भांगिल अशोक वन अति सुशोभन ※ तार मत वीर आछे कह कत जन ६९
अंगद बलिछे तारे भर्त्सिया वचने ※ तोर बल विक्रम बुझिनु एत दिने
सेवकेर सने यदि पाइलि पराजय ※ केमने राखिबि लंका कह रे निश्चय
तार छोट वीर नाहि वानर कटके ※ निर्बल बलिया तारे केह नाहि डाके
से मरिले दुःखशोके नाहिक वानरे ※ तेंइ पाठाइया छिनु लंकार भितरे
वीर मध्ये तारे नाहि गणे कोन जन ※ घरेर सेवक बेटा पवननन्दन
हनुमाने वान्धिया बेड़ेछे अहंकर ※ पड़िलि आमार हाते जाबि यमद्वार

रहा है, तेरी लंका को मैं मकड़ी के अंडे के समान देखता हूँ। तेरे ही निकट हूँ लेकिन तुझसे कोई डर नहीं है मुझको, चाहूँ तो समूची स्वर्णपुरी लंका को उखाड़ लूँ। देख, देख, मेरा सिर सुमेरु के शिखर के समान है; देख, देख, मेरे पैर कैलास पर्वत का सानुदेश हैं; देख, देख, मेरे हाथ वज्र के समान हैं, एक ही झापड़ से तेरे प्राण ले लूँ। अपमान से रावण ने शिर झुका लिया, पार्षदों से कुछ भी बात नहीं की ॥ ६८ ॥

रावण ने अंगद से कहा, तूने काफी भर्त्सना कर ली है, अब एक बात तो बता। जिस बन्दर ने यह लंकापुरी जला डाला, जिसने अक्षकुमार को मार डाला, सुशोभन अशोक वन को जिसने तहस-नहस कर दिया उसके जैसे वीर और कितने हैं ॥ ६९ ॥

अंगद ने तिरस्कार करते हुए कहा, इतने दिनों में तेरे बल-विक्रम का सही अन्दाजा लगा। यदि सेवक से ही तेरी ऐसी करारी हार हुई है तो तू कैसे लंका को अपने अधिकार में रख सकेगा। वानर सेना में उससे छोटा कोई वीर नहीं है। कमजोर होने के कारण उसे कोई नहीं बुलाता। उसके मरने पर वानरों में कोई क्लेश नहीं होगा, इसी कारण उसको लंका में भेजा गया था। उसकी गिनती वीरों में कोई नहीं करता। वह पवन-नन्दन तो घर का नौकर मात्र है। हनुमान को बाँध कर तेरा घमंड बढ़ गया है; आज

लइया जाइव तोरे गले दिया दड़ि *दशमाथा भांगिव मारिया लेजेर बाड़ि
तोर सर्व्वनाश हेतु उत्पत्ति सीतार * निर्व्वंश करिते तोरे राम अवतार
कोथाय वैसेन राम अयोध्या नगरी * कोथा आइलेन तिति एइ लंकापुरी
एत दूरे आसि राम वान्धिला सागर * से रामेर सने दुष्ट तोर पाठान्तर
देवता जिनिया तोर वाड़ियाछे आश * एक सीता जन्ये तोर हवे सर्व्वनाश
वंशे केह रहिवेक, ना करिह साध * आपना आपनि तुइ पाड़िलि प्रमाद
खाटे पाटे शुये थाक् दिन दुइ चारि * हास्य परिहास कर लये दिव्यानारी
परिवार गणे देख दिने दुइ वार * विश्वकर्म्मार निर्म्माण देख घर द्वार
देख तुइ लंकापुरी कनक निर्म्माण * अंगद विक्रम यत कृत्तिवास गान ७०

रावणेर प्रति अंगदेर भर्त्सना

तुइ आति दुराचारी, हरिलि परेर नारी, परलोके नाहि तोर भय ।
दशरथ महाराजा, देवलोक करे पूजा, श्रीराम ये ताँहार तनय ॥
याँहार दुर्ज्जय वाण, भये विश्व कम्पमान, हेन राम लंकार भितर ।
देवराज करे पूजा, हेले मारे वालिराजा, ताँर सने तोर पाठान्तर ॥

तू मेरे हाथों में आ पड़ा है, अब सीधे मृत्यु-पुरी को पहुँचेगा। तेरे गले में रस्सी डालकर तुझे ले जाऊँगा। पूँछ के प्रहार से तेरे दस मुंडों को चूर-चूर कर दूँगा। तेरे सर्वनाश के निमित्त ही सीता का जन्म हुआ है और तुझको निर्वंश करने के लिए ही राम ने अवतार लिया है। कहाँ राम का स्थान अयोध्या नगरी में है और कहाँ वह इस लंकापुरी में आए हैं। इतनी दूर आकर राम ने सागर बाँध डाला है और इन्हीं राम के साथ तूने विवाद छेड़ दिया है। अरे दुष्ट ! देवताओं पर विजय प्राप्त कर तेरा दिमाग खराब हो गया है, अकेली सीता के लिए ही तेरा सत्यानाश हो जायगा। ऐसी आकांक्षा न रखना कि तेरे वंश में कोई भी जीवित रह जायगा। तूने स्वयं ही अपनी विपत्ति बुला ली। पलंग पर पड़े मौज से दो चार दिन बिता ले, दिव्य-नारियों के साथ हास-परिहास कर ले, दिन में दोबार परिवार-वर्ग को देख ले, विश्वकर्मा के बनाये घर-द्वार देख ले, इस सोने की लंकापुरी को भी देख ले। यों अंगद की विक्रम-कथा कृत्तिवास गा रहे हैं ॥ ७० ॥

रावण के प्रति अंगद की भर्त्सना

तू बड़ा दुराचारी है, दूसरे की नारी का तूने अपहरण किया, तुझे परलोक का भय नहीं है। श्रीराम उसी महाराजा दशरथ के पुत्र हैं जिनकी पूजा देवता भी करते हैं। जिनके दुर्जय वाण के भय से सारा विश्व काँपता रहता

सुग्रीवेर बल यत, ताहा वा कहिव कत, से सकल हइबि विदित ।
तोरे एक लाथि मारि, काँपाइव लंकापुरी, कि करिबे तोर इन्द्रजित् ॥
शुन राजा लंकेश्वर, आमार वचन धर, आइलाम दिते समाचार ।
श्रीराम सागर पार, नाहिक निस्तार आर, निकटे ये तोर यमद्वार ॥
राजा हये परदार, हरिलि रे दुराचार, बोध मात्र नाहि तोर घटे ।
केवल ब्रह्मार वरे, जिनिलि रे पुरन्दरे, राम नामे तोरे बल टुटे ॥
राख रे आपन प्राण, कर सीता प्रतिदान, भज गिया रामेर चरण ।
घाटि माग ताँर ठाँइ, इहा भिन्न गति नाइ, तबे तोर रहिबे जीवन ॥
तोरा जाति निशाचर, ना चिनिस आत्म पर, तोर भाइ रामे कैल मित ।
श्रीरामेर अंगीकार करिबेन एइवार विभीषण लंकाय पूजित ॥
शुनिया अंगदवाणी, करे सबे कानाकनि, ए लंकार नाहिक निस्तार ।
कोपे उठे लंकेश्वर, बले राजा धर धर, देखि अंगदेर अहंकार ॥

है, वही आज लंका के भीतर उपस्थित हैं। जिनकी पूजा देवराज किया करते हैं, वालिराज को जिन्होंने अनायास ही पराजित किया है उनके साथ तेरा द्वन्द्व है। सुग्रीव कितना शक्तिशाली है यह मैं क्या बताऊँ, तुझको स्वयं ही मालूम पड़ जायगा। तुझे एक लात मारकर लंकापुरी को थर्रा दूँ, तेरा इन्द्रजीत क्या कर सकेगा। ऐ राजा लंकेश्वर! मेरा वचन सुन ले, मैं यह समाचार देने आया हूँ कि श्रीराम ने सागर लाँघ लिया है, तेरा अब कोई निस्तार नहीं, तू यमद्वार के बहुत निकट पहुँच गया है। राजा होकर तूने परस्त्री का अपहरण किया, तेरे दिमाग में थोड़ी सी भी बुद्धि नहीं है। केवल ब्रह्मा के वरदान के कारण तूने पुरन्दर पर विजय प्राप्त की, लेकिन राम-नाम के कारण तेरी सब शक्ति लुप्त हो गई है। अपने प्राण बचा, सीता को जाकर लौटा आ और राम के चरणों की वन्दना कर। उनके समक्ष जाकर क्षमा माँग ले, इसके सिवा तेरा कोई उपाय नहीं है, तभी तेरे प्राण बच सकते हैं। तू निशाचर जाति का है, अपना पराया नहीं समझता, तेरे भाई ने जाकर राम से मित्रता कर ली। श्रीराम ने यह अंगीकार कर लिया है और वे अब विभीषण को लंका में सुप्रतिष्ठित करेंगे। अंगद के वचन सुनकर सभी लोग कानाफूसी करने लगे कि इस लंका के लिए अब कोई बचाव नहीं रहा। राजा लंकेश्वर कोप से उठ खड़े हो गये और बोले, इसको पकड़ लो, इस अंगद के अहंकार को तो चूर करूँ। सारे सेनापति यह देखकर मन ही मन यह परामर्श करने लगे कि अब हम लोगों की कोई रक्षा नहीं कर सकता। श्रीराम

देखि सब सेनापति, मने युक्ति करे इति, आमादेर रक्षा नाहि आर ।
राम पद करि आश, सरस्वती-परकाश, कृत्तिवास नाचाड़ि सुसार ७१ ॥

अंगद कर्त्तृक चारि राक्षस वध ओ रावणेर मुकुट लइया श्रीरामचन्द्रेर निकटे गमन

अंगदेर रावण देखाय यत डर ✽ रुषिया अंगद वीर करिछे उत्तर
आर कपि नहि, आमि वालिर तनय ✽ तोर क्रोधे रावणा, आमार किवा भय
रावण, बड़ाइ ना करिस मोर आगे ✽ आमि तोरे मारिले रामेर सत्य भागे
राम सुग्रीवेर युक्ति आमि भाल जानि ✽ तोरे आर कुम्भकर्णे बधिवेन तिनि
इन्द्रजिते अतिकाये बधिवे लक्ष्मण ✽ आर यत राक्षसे बधिवे कपिगण
कोन बेटा धरिबे आसुक त्वरा करि ✽ एक चड़े ताहारे पाठाव यमपुरी ७२
क्रोधाकुल चारि दिके चाहे दशानन ✽ अंगदेर हाते पाये धरे चारि जन
चारि निशाचर करे अंगदे प्रहार ✽ अंगदेर दृढ़ अंग कि करिबे तार
अंगद से चारि जने धरिल सापुटे ✽ एक लाफे प्राचीरेर उपरे से उठे
प्राचीरे तुलिया वीर मारिल आछाड़ ✽ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़

के चरणों की आशा कर कृत्तिवास नृत्य छन्द में गाया जाने वाला सुन्दर गीत सरस्वती की कृपा से रचता है ॥ ७१ ॥

अंगद के द्वारा चार राक्षसों का वध और रावण का मुकुट लेकर श्रीरामचन्द्र के पास जाना

अंगद को रावण ने भय दिखाया तो रोष में आकर अंगद वीर ने जवाब दिया, मैं कोई सामान्य कपि नहीं—बालि का बेटा हूँ। तेरे क्रोध से मुझको कोई डर नहीं, ऐ रावणा, मेरे सामने तू लम्बी-चौड़ी बातें मत कर। मैं अगर तुझे मार डालूँ तो राम का सत्य-पालन खंडित हो जायगा। राम-सुग्रीव की युक्ति मैं भली-भाँति जानता हूँ। वे तेरा और कुम्भकर्ण का वध करेंगे। अतिकाय इन्द्रजीत का वध लक्ष्मण करेंगे। और बाकी राक्षसों का निधन कपियों के हाथ होगा। कौन निगोड़ा मुझको पकड़ना चाहता है आगे बढ़ आवे। एक ही झाँपड़ में उसको यमपुरी भेजता हूँ ॥ ७२ ॥

दशानन ने क्रोध से चारों ओर देखा। चार राक्षसों ने अंगद के हाथ-पैर पकड़ लिये। चार निशाचर मिलकर अंगद को पीटने लगे। लेकिन अंगद का शरीर वज्र के समान है, उसका इससे कुछ भी नहीं बिगड़ा। अंगद उन चारों राक्षसों को समेट कर एक छलांग में प्राचीर के ऊपर जा बैठा। प्राचीर पर चढ़ कर उसने उनको धर पटका। उनके सिर चकना चूर हो गये

से चारि राक्षसे मारि भांगिल प्राचीर ※ अंगद वीरेर डरे केह नहे स्थिर ७३
प्राचीरे उठिया भावे वालिर कुमार ※ कोन द्रव्य लये जाव रामे भेटिवार
हनूमान एसे छिल लंकार भितर ※ दिलेक सीतार मणि रामेर गोचर
मणि पेये रघुमणि आनन्दित अति ※ तदवधि महातुष्ट हनूमान प्रति
एइ स्थिर करिलेक अंगद अन्तरे ※ रतन मुकुट आछे रावणेर शिरे
ए मुकुट लये जाव राम सम्भाषणे ※ प्रसन्न हवेन राम इहा दरशने
प्राचीरे वसिया छिल वालिर कोडर ※ एक लाफे गिया पड़े रावण उपर
सिंहासने वसिया रावण तारे धरे ※ जड़ाजड़ि करि पड़े भूमिर उपरे
धरा टलमल करे उभयेर भरे ※ इन्द्र गरुड़ेर युद्ध गगन उपरे
दुइ सिंह युद्धे येन करि सिंहनाद ※ दुइ जने मल्लयुद्ध, हइल प्रमाद
रावणेरे आछाड़िया वालिर नन्दन ※ मुकुट लइया वेगे उठिल गगन
अंगदेर विक्रमे रावण काँपे डरे ※ अधोमुखे उठिया गायेर धूला झाडे
रावणेर काछे आछे सव सेनापति ※एत वीर थाकिते तार एरूप दुर्गति ७४
रावण वलिछे, सवे आछ कोन काजे ※ वानरे मुकुट लय सवाकार माझे

और हड्डियाँ चूर-चूर। उन चारों राक्षसों को मार कर उसने प्राचीर तोड़ डाला। वीर अंगद के भय से सभी चंचल हो उठे॥ ७३॥

प्राचीर पर चढ़ कर वालि-नन्दन सोचने लगे कि राम को भेंट चढ़ाने के लिए कौन सी वस्तु लेकर जाया जाय। हनुमान लंका में आया था तो सीता की चूड़ामणि लेकर गया था। मणि पाकर रघुमणि बहुत आनन्दित हुए थे और तभी से वे हनुमान के प्रति बहुत प्रसन्न हैं। अंगद ने मन ही मन यह विचार किया कि रावण के सिर पर जो रत्न-जड़ा मुकुट है वही लेकर मैं राम के पास जाऊंगा जिसको देखकर राम निःसन्देह प्रसन्न होंगे। वालिपुत्र प्राचीर पर वैठा था उछल कर रावण पर जा गिरा। सिंहासन पर वैठे रावण ने उसे पकड़ लिया। एक दूसरे से उलझ कर वे जमीन पर आ गिरे। दोनों के भार से धरती डगमगाने लगी, मानों ऊपर गगन में इन्द्र और गरुड़ का युद्ध हो रहा हो। सिंहनाद करते हुए दोनों ऐसे जूझने लगे मानों दो सिंह हों। दोनों में मल्लयुद्ध होने लगा और सभी लोग भयाकुल हो गये। वालि-तनय ने रावण को धर पटका और उसका मुकुट लेकर तुरन्त गगन में चढ़ गया। अंगद के पराक्रम से रावण डर के मारे काँपने लगा। उठकर सिर झुकाये वदन की धूल झाड़ने लगा। रावण के पास इतने सेनापति थे और इतने वीरों के रहते हुए रावण की ऐसी दुर्दशा हुई॥ ७४॥

रावण ने कहा, तुम लोग किस काम के हो? तुम लोगों के रहते बन्दर

वीरगण बले, शुन लंका-अधिकारि * आपनि हारिले मोरा कि करिते पारि
तव सने युद्ध करे बालिर नन्दन * मोरा भावि पाछे लय सवार जीवन
चारि वीर धरे छिल तारे सावधाने *आछाड़िया अंगद मारिल सबे प्राणे ७५
पात्र मित्र सहित चिन्तित दशानन * वैरी काँपाइया गेल बालिर नन्दन
एक लाफे पड़े गिया वानर भितर * श्रीरामे भेटिल, यथा सुग्रीव वानर
शत्रुर मुकुट दिल राम विद्यमान * देखिया वानर सव करिछे बाखान
मुकुट देखिया राम सहास्यवदन * तुष्ट हये अंगदेरे देन आलिंगन
चारि द्वारे शुनि वानरेर हुलाहुलि * अंगदेरे पुष्प देय अंजलि अंजलि
श्रीराम बलेन, वीर, कह त कुशल * किमते भेटिले गिया सेइ महाबल
रघुपति अनुमति करिल तत्पर * अंगद कहिछे वार्त्ता यथा पूर्व्वापिर ७६

श्रीरामेर निकटे अंगद कर्त्तृक रावणेर ऐश्वर्य्य ओ अपमान ज्ञापन

श्रीरामे नोयाये माथा, अंगद कहिछे कथा, हरषित सकल वानर ।
रघुमणि हरषित, सुग्रीव सुआनन्दित, लक्ष्मणेर हर्ष वहुतर ॥

मुकुट लेकर चला गया। वीरों ने कहा, सुनो लंकेश ! तुम स्वयं हार जाओ तो हम लोग क्या कर सकते हैं। बालि का बेटा तुम्हारे साथ लड़ रहा था और हम लोग सोच रहे थे कि कहीं दूसरों की जान न ले ले। चार वीर उससे लिपट गये थे, उनको उसने पटक-पटक कर मार डाला ॥ ७५ ॥

अपने पार्षदों सहित दशानन चिन्तित हो गया। शत्रु बालि-कुमार आकर सबको कँपा गया। एक ही छलांग में वह वानरों में जा उतरा और श्री राम से भेंट की, जहाँ सुग्रीव भी बैठे थे। राम के सम्मुख उसने रावण का मुकुट रख दिया तो सभी वानर उसकी प्रशंसा करने लग गये। मुकुट देखकर राम के चेहरे पर मुस्कान छा गयी और प्रसन्न होकर उन्होंने अंगद को बाहों में भर लिया। चारों द्वार पर बन्दरों का कोलाहल सुन पड़ा—सभी आकर अंगद को अंजुरी भर-भर कर पुष्प देने लगे। श्रीराम ने कहा, वीर अपना कुशल-समाचार सुनाओ। बताओ उस महाबल से तुमने किस प्रकार भेंट की। रघुपति की आज्ञा से अंगद पूरी वार्त्ता ब्योरेवार सुनाने लगा ॥ ७६ ॥

श्रीराम के समक्ष अंगद द्वारा रावण की सम्पदा और अपमान का वर्णन

श्रीराम के सम्मुख सिर झुका कर अंगद सारा विवरण सुना रहा है और सारे बन्दर हर्षमग्न हैं। राम, लक्ष्मण और सुग्रीव आनन्द से उत्फुल्ल हैं। तुम्हारे आदेश से मैं भागता हुआ लंका गया और गढ़ के भीतर प्रवेश कर गया।

तोमार आरति पेये, लंकाय गेलाम धेये, प्रवेशनु गड़ेर भितर ।
सुवर्णेर आउयास येन चन्द्र परकाश, तथि शोभे प्रवाल प्रस्तर ।।
विश्वकर्म्मा कृत घर, देखि अति मनोहर, चारिभिते काञ्चन देयाल ।
श्वेत रक्त नील पीत, प्रस्तरेते सुशोभित, ताहे शोभे रतन मिशाल ।।
गेलाम राजार घर, देखि सैन्य वहुतर, खाण्डा जाठि विचित्र निर्म्माण ।
सोनोर पाटेर पड़ा, नाना वर्ण देखि घोड़ा, हस्ती सब पर्व्वत प्रमाण ।।
देखिलाम सरोवरे, हंस-हंसी केलि करे, घाट सब विचित्र निर्म्माण ।
कमल कुमुदोपरे, केलि करे मधुकरे, रूपसी राक्षसी करे स्नान ।।
देखिलाम नारीगण, रूपे मोहे त्रिभुवन, दुइ कर्णे रत्नेर कुण्डल ।
पारिजात माला हारे, शोभे नाना अलंकारे, येन चन्द्र गगनमण्डल ।।
वीणा वाँशी वाजे ताय, केह वा संगीत गाय, गाने करे मोहित संसार ।
नाना आभरण परि, येन स्वर्ग विद्याधरी, रूपे येन देव अवतार ।।
देखिलाम पुष्पवन, मयूर मयूरीगण, क्रीड़ा करे मुग्ध कामरसे ।
प्रति गाछे पिकध्वनि, बड़इ मधुर शुनि, भ्रमर भ्रमरी रसे भासे ।।
गेलाम राजार पाश, चतुर्द्दिके महोल्लास, रावणेरे भर्त्सिनु विस्तर ।
यतेक बलिले तुमि, द्विगुण शुनाइ आमि, कोपे ज्वले राजा लंकेश्वर ।।

वह सब सुवर्ण से बने आवास हैं, मानों चन्द्रमा के प्रकाश से जगमगा रहे हों और प्रवाल-प्रस्तर से बने निर्माण-कार्य हैं। विश्वकर्मा द्वारा बनाए हुए मनोहर सारे भवन हैं और चारों ओर कांचन के बने प्राचीर हैं। सफेद नीले, लाल, पीले पत्थरों से वे सुशोभित हैं जिनमें स्थान-स्थान पर रत्न जड़े हैं। राजा के महल में भी गया। तरह-तरह के सैन्य हैं जिनके हाथों में खड्ग और लौहदंड शोभित हैं। विभिन्न वर्ण के घोड़े हैं और पहाड़ के समान हाथी। देखा, सरोवर में हंस-हंसिकाएँ केलि कर रही हैं और उनमें अद्भुत सारे घाट बने हुए हैं। कमल और कुमुद पर मधुकर गुंजन कर रहे हैं और जल में रूपवती राक्षसी स्नान कर रही हैं। ऐसी नारियों को भी देखा जिनके रूप से त्रिभुवन मुग्ध है, जिनके कानों में रत्नजड़े कुंडल लटक रहे हैं। गले में पारिजात की माला है। वे विभिन्न अलंकारों से गगनमंडल में चन्द्रमा के समान सुशोभित हैं। वहाँ कहीं पर वीणा और बंशी का वादन हो रहा है तो कहीं संगीत का गायन हो रहा है; गीत-वाद्य से सारा संसार प्रमुदित है। विभिन्न आभरणों से सज्जित नारियाँ मानों स्वर्ग की विद्याधरियाँ हों, अथवा दिव्य अवतार हों। वहाँ फुलवाड़ियाँ भी देखीं जिनमें मयूर-मयूरियाँ मुग्ध कामरस से क्रीड़ा कर रही हैं। प्रत्येक वृक्ष पर कोयल मधुर स्वर में कूक रही है और भँवरे गुंजन कर

आज्ञा दिल लंकेश्वर, धरे चारि निशाचर, लाफ दिनु प्राचीर उपर ।
चारि जने संहारिया, रावणेरे गालि दिया, शून्य पथे आइनु सत्वर ॥
शुनिया अंगदवाणी, हरषित रघुमणि, अंगदेरे दिलेन प्रसाद ।
सरस्वती परकाश, विरचिल कृत्तिवास, वानरेर जयजय-नाद ॥ ७७
श्रीराम बलेन हे अंगद युवराज ※ तोमार पिताके मारि पाइलाम लाज
से सकल दुःख किछु ना करिह मने ※ तोमारे बाड़ाब आमि अशेष सम्माने
दक्षिणेर द्वारे जाह आपनार थाना ※ तव कोपे दशानन पाछे देय हाना
विदाय हइया जाय दक्षिणेर द्वार ※ कृत्तिवास रचिल अंगद रायवार७८

इन्द्रजितेर प्रथम वार युद्धे गमन एवं नागपाश द्वारा श्रीरामेर लक्ष्मणेर बन्धन

अंगदेर भर्त्सने कुपित दशमुख ※ असम्मान लज्जाय हइल अधोमुख
बहुकोटि सेनापति प्रधान प्रधान ※ जुझिवारे सवाकारे करे संविधान
सप्त स्वर्ग जिनिलाम सप्त ये पाताल ※ मम डरे देवगण काँपे सर्व्वकाल

रहे हैं। राजा के पास गया और उसको बहुत डाँटा-फटकारा। आपने मुझ से जितना बताया था उसका दुगुना मैंने कह सुनाया और राजा लंकेश्वर क्रोध से तिलमिलाने लगा। लंकेश्वर की आज्ञा से उसके चार अनुचरों ने मुझको पकड़ लिया तो उन चारों का वध कर रावण को बुरा-भला कह कर मैं शून्य पथ से तुरन्त लौट आया। अंगद की बातें सुनकर रघुनाथ बहुत प्रसन्न हुए और अंगद को उन्होंने प्रसाद दिया। वन्दरों ने इस पर जय-घोष किया॥ ७७ ॥

श्रीराम ने कहा, हे युवराज अंगद ! तुम्हारे पिता को मारकर मुझको बड़ी लज्जा मिली। उन बातों का कुछ ख्याल न करना, तुमको मैं अमित सम्मान का अधिकारी बनाऊँगा। जाओ दक्षिण-द्वार पर अपना मोर्चा जाकर संभालो, कहीं तुमपर कुपित रावण उस पर हमला न कर दे। अंगद विदा लेकर दक्षिण-द्वार की ओर चला। कृत्तिवास ने अंगद के दौत्य-विवरण को प्रस्तुत किया ॥ ७८ ॥

इन्द्रजीत का पहली बार युद्ध में जाना और नागपाश द्वारा
राम-लक्ष्मण को बाँधना

अंगद की भर्त्सना सुनकर दशानन बहुत क्रोधित हो गया, लज्जा और अपमान से उसका सिर झुक गया। मुख्य-मुख्य सेनापतिओं को बुलाकर सभी को युद्ध करने का आवाहन किया। मैंने सातों स्वर्ग और सातों पाताल पर विजय प्राप्त की, मुझसे देवता सदा भय के मारे काँपा करते हैं।

इन्द्र यम सूर्य्य मम डरे नाहि आँटे * एत दूरे आसिया वानर बेटा ठाटे
इन्द्रजित, वलि तोमा सबार प्रधान * राम लक्ष्मणेरे मारि राखह सम्मान
हस्ती घोड़ा ठाट आदि लह त अपार * आजिकार युद्धे मार तार चारिद्वार
सावधान हये वापू, कर गिया रण * आगे मार अंगदेरे, शेषे अन्यजन ७९
बापेर दुलाल बेटा वीर मेघनाद * सर्व्वांग भरिया परे राजार प्रसाद
साजिल से मेघनाद, बापेर आरति * लेखा जोखा नाहि, यत साजे सेनापति
सारथि आनिल रथ संग्रामे गहन * मनोमत रथखान करिल साजन
कनक रचित रथ विचित्र निर्म्माण * वायुवेग अष्टघोड़ा रथेर योगान
पर्वतीय घोड़ा मुखे हीरार विम्बकी * क्षणे रथखान देखि क्षणे हये लुकि
स्वर्ण रौप्य साजे रथ करे झिकिमिकि * अष्ट अक्षौहिणी ठाट योद्धा ये धानुकी
दशकोटि हाती चले विशकोटि घोड़ा * पञ्चविंश कोटि चले शेल ओ झकड़ा
नानामत रथ लये योगाय सारथि * नाना अस्त्र लये चले सब योद्धपति
पितृ प्रदक्षिण करि रथे गिया चड़े * त्रिशति योजन पथ सैन्य आड़े जोड़े

इन्द्र, यम, सूर्य मेरे सम्मुख डरते रहते हैं और इतनी दूर आकर यह निगोड़ा बन्दर मेरी खिल्ली उड़ा गया। सुनो इन्द्रजीत, तुम सबके प्रधान हो, राम लक्ष्मण को मार कर मेरे सम्मान की रक्षा करो। असंख्य हाथी, घोड़े और सेना लेकर हमला करो और आज युद्ध में उसको चारों ओर से घेर कर मारो। सावधान होकर रण में जाओ और सबसे पहले उस अंगद का वध करो और बाद में अन्य लोगों का ॥ ७६ ॥

वीर मेघनाद बाप का लाड़ला बेटा है। सारे अंगों पर राजा के प्रसाद के रूप में आभूषण पहन कर, पिता का आदेश लेकर चल पड़ा। उसके साथ असंख्य सेनापति भी सुसज्जित हुए। सारथी अपने रथ को घनघोर संग्राम में ले आया। रथ को अपने मनमाने ढंग से उसने सुसज्जित किया। कनकनिर्मित रथ की बनावट भी विचित्र है। पवन की गति वाले आठ घोड़े उस रथ में जोते गये। पर्वतीय घोड़ों के मुख हीरक-बिम्बकी आभूषण से सुसज्जित हैं। सोना और चाँदी से बना रथ चमचमा रहा है—कभी दिख जाता है तो कभी आँखों से ओझल हो जाता है। धनुर्धारी योद्धाओं की दस अक्षौहिणी सेना चल पड़ी। साथ में दस करोड़ हाथी और बीस करोड़ घोड़े भी चले। पच्चीस करोड़ शेल और झकड़ा नामक अस्त्र भी साथ हैं। विभिन्न प्रकार के रथ लेकर सारथी आए और विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लेकर योद्धागण भी। पिता की प्रदक्षिणा कर वह रथ पर

कटकेर पदभरे कम्पिता मेदिनी ※ कटकेते वाद्य बाजे तिन अक्षौहिणी
सहस्र दगड़ बाजे, सहस्र काहाल ※ कोटि कोटि घण्टा बजे मृदंग विशाल
भेउरी झांझरी बाजे त्रिशकोटि काड़ा ※ कांस्य करताल बाजे तिन लक्ष पड़ा
घन घन बाजे ताय कत कोटि दामा ※दण्डी ओ महरी बाजे नाहि तार सीमा
सहस्र भोरंग बाजे डम्फ कोटि कोटि ※ दश लक्ष दगड़ेते घन पड़े काठि
बहु लक्ष शिंगा बाजे अति खरशान ※ कत कोटि बाजे सिन्धु आर विन्दुयान
विरान्नइ कोटि बाजे धुरि ओ महरी ※ त्रिशकोटि शानाइ बाजे आर ये झांझरी
खमक ठमक बाजे पञ्चाश हाजार ※ विशकोटि बाजिछे पाखज ओ रसार
नाना शब्द करि बाजे पायेर नूपुर ※ माल साट मारे केह शब्द जाय दूर
बाजे स्वर मंगल साताश लक्ष काँसी ※ मृदुस्वरे बाजिछे आटाश लक्ष वाँशी
वाद्य शब्द देवतार मने लागे त्रास ※ सहस्र सहस्र वाजे रुद्रक पिनाश
डहर विशाल ढाक बाजे जयढोल ※ समस्त पृथिवी जुड़े उठे गण्डगोल
राक्षस कटक भरे पृथिवीर काँप ※ हाथी घोड़ा रथ नड़े हये एक चाप८०

जाकर बठा। उसकी सेना लम्बाई-चौड़ाई में बीस योजन रास्ता छेके हुए है। कटक के पदचाप से पृथ्वी डगमगाने लगी। तीन अक्षौहिणी सैन्य में मारू बाद्य बज रहा है। हजार-हजार नगाड़े बज रहे हैं और करताल भी हजार-हजार; करोड़ों घंटियाँ बज रही हैं और विशालाकार मृदंग भी, झाँझरी और झाँझ बज रहे हैं और तीस करोड़ डफली भी। काँसे के मंजीरे भी तीन लाख बज रहे हैं। द्रुतलय में कितने ही करोड़ दमामे बज रहे हैं। दंडी और अद्भुत डुगडुगियाँ भी असंख्य बज रही हैं। सहस्र भेरियाँ बज रही हैं और करोड़ों डफ भी। दस लाख धौंसे पर दनादन चोब बरस रही है, कई लाख सींगियाँ उच्च स्वर से बज रही हैं, कितने ही करोड़ दुन्दुभि, बयानबे करोड़ तुरही और मौहरें बज रही हैं। तीस करोड़ शहनाई और झाँझों का बादन हो रहा है। पचास हजार खमक-ठमक बज रहे हैं। बीस करोड़ पखाबज और रसार बज रहे हैं। पैरों के घुंघुर भी विभिन्न ध्वनियों से बज रहे हैं और तरह-तरह के नाद और रवों की आवाज बहुत दूर तक जा रही है। मंगल-स्वर बज रहा है और सत्ताइस लाख घड़ियाल भी। अट्ठाइस लाख बाँसुरी भी मृदु मन्द ध्वनि में बज रही हैं। सहस्रों की संख्या में ढाकें बज रही हैं और वाद्य-रव से देवताओं के मन में त्रास का संचार हो रहा है। डंके बज रहे हैं और जयढोल भी—सारी पृथ्वी पर कोलाहल छाया है। राक्षसों के कटक के भार से धरती थर्रा रही है और हाथी, घोड़े, रथ भी एक पद-चाप में समस्वर बढ़ रहे हैं॥ ८०॥

कटकेर धुलाय पृथिवी अन्धकार ※ प्रथमे चापिल गिया पूर्व्वकार द्वार
एक चापे करे वीर वाण वरिषण ※ गाछ ओ पाथर वरिषये कपिगण
राक्षस ओ वानरे हइल मिशामिशि ※ कौतुक देखिछे देवगण तथा आसि
वाण जुड़े राक्षस धनुके दिया चाड़ा ※ वानर उपरे पड़ितेछे जोड़ा जोड़ा
वानर पाथर-गाछ करे वरिषण ※ कोटि कोटि राक्षस रणे त्यजिछे जीवन
चापड़ मुकुटि मात्र वानरेर ताड़ा ※ मुकुटिर घाये कारो माथा हैल गुँड़ा
वाघेर येमन रूप वानरेर रंग ※ मरणेर भय नाहि रणे नाहि भंग
उभय कटक जुझे रक्ते हैल रांगा ※ रक्ते नदी वहे येन भाद्रमासे गंगा
घोड़ा हाती वीर आदि रक्तस्रोते भासे ※ हरिषे वानर सैन्य मने मने हासे
तार तुल्य ढेउ उठे रक्त कलकलि ※ युद्धेर नाहिक सीमा अधिक कि बलि
कोन युगे एइ मत युद्ध नाहि हय ※ ज्ञान हय, असमय प्रलय उदय ८१
पूर्व्वद्वारे समर करिया यथोचित ※ चलिल दक्षिणद्वारे वीर इन्द्रजित
अंगदेरे देखि तथा इन्द्रजित हासे ※ गालागालि देय तारे, यत मने आसे

कटक के पैरों से उठती धूल से पृथ्वी अंधकारमयी हो गयी। पहले वे पूर्वी द्वार पर जा धमके। एक साथ ये वीर वाण चलाने लगे और वानर पेड़ और पत्थर बरसाने लगे। राक्षस और वानर वहाँ आपस में गुथ गये और देवगण वहाँ आकर कौतुक निहारने लगे। धनुष पर वाण चढ़ाकर राक्षस सन्धान करने लगे और वानरों पर वे वाण ढेर के ढेर गिरने लगे। वानर भी पेड़-पत्थर फेंकने लगे और करोड़ों राक्षस रण में प्राण त्यागने लगे। वानरों का आक्रमण केवल मुक्के और झाँपड़ के माध्यम से हो रहा है। झाँपड़ खाकर किसी का सिर टूट गया। व्याघ्र का जैसा रूप होता है वानरों का भी वैसा ही रंग-ढंग है। न तो उनको मृत्यु का कोई भय है और न वे युद्धक्षेत्र से भागते ही हैं। दोनों सेनाएँ जूझ रही हैं और रक्त से चारों ओर लाली छा गयी है। खून की नदी बहने लगी है मानों भादों के महीने की गंगा हो। घोड़ा, हाथी, वीर सभी खून के प्रवाह में बह रहे हैं। हर्ष से वानरी-सेना मन ही मन हँस रही है। रक्त में खलबली मची हुई है और युद्ध मानों एक उत्ताल तरंग के समान बढ़ता ही जा रहा है। किसी भी युग में ऐसा घमासान युद्ध नहीं हुआ। प्रतीत होता है असमय ही प्रलय आ गया है ॥ ८१ ॥

पूर्वी द्वार पर यथोचित युद्ध करने के पश्चात वीर इन्द्रजीत दक्षिण द्वार की ओर चला। वहाँ अंगद को देखकर इन्द्रजीत हँसने लगा। जी भर कर उसको गालियाँ दी। मेरे बाप को गाली देकर डर से तू भाग गया,

मोर बापे गालि दिया पलाइलि डरे ❊ आय तोर कोन बाप आजि रक्षा करे
बापके मारिया तोर माके दिलि आने ❊ धिक् रे वानरा तोर लाज नाहि मने
यार शरे मरे तोर पिता बालिराज ❊ धिक् तोरे अधम करिस तार काज
खाइब घाड़ेर मांस कामड़ाब मास ❊ मोर हाते आज तोर निश्चित विनाश
देशेते जीयन्त जाबि ना करिस साध ❊अन्य जन नहि आमि वीर मेघनाद८२
अंगद बलिछे, रे, गर्जिस अकारण ❊ पदाघाते आजि तोर लइब जीवन
मारिते गेलाम तोरे लंकार भितर ❊ से कोप पड़िल चारि राक्षस उपर
योगिवेशे तोर बाप सीतादेवी हरे ❊ तार पापे मोर बाप मरे एक शरे
तार पापे पड़े रणे त्रिशिरा कबन्ध ❊ तोर बापेर पापेते सागरे सेतुबन्ध
तोर बाप नारीचोरा तोर रण चुरि ❊ आजि तोरे निश्चित पाठान यमपुरी
चोर-पुत्र चोर तुइ चुरि तोर रण ❊ आजिकार युद्धे तोर लइब जीवन८३
एत शुनि इन्द्रजित् पूरिल सन्धान ❊ कोटि कोटि वानरेर लइल परान
अंगदे एड़िया सबे पलाय वानर ❊ रण मध्ये अंगद रहिल एकेश्वर
महा क्रोधे अंगद काँपिछे थर थर ❊ इन्द्रजित परे फेले पादप पाथर

देखूँ की आज तेरा कौन सा बाप आकर तेरी रक्षा करता है। अरे वानरा! तूने अपने बाप को मरवा कर माँ को दूसरे के हाथों में सौंप दिया, तुझे धिक्कार है। तुझको शर्म भी नहीं आती, जिसके बाण से तेरे पिता बालि राजा का देहान्त हुआ तू उसी की सेवा करता है—तुझे धिक्कार है। तेरी गर्दन का मांस मैं चबाकर खा जाऊँगा, आज मेरे ही हाथों तेरा विनाश लिखा हुआ है। देश को जिन्दा वापस जायगा ऐसी साध मन में न रखना, मैं कोई सामान्य जन नहीं, मेघनाद हूँ॥ ८२॥

अंगद ने कहा, अरे नाहक ही तू गरज रहा है, आज पदाघात से ही तेरे प्राण ले लूँगा। तुझको लंका के भीतर मारने गया तो मेरा क्रोध चार राक्षसों पर ही उतर पड़ा। तेरे बाप ने योगी का भेष रखकर सीता देवी का हरण किया और उसी के पाप से मेरे पिता एक बाण से मारे गये, उसी के पाप से त्रिशिरा-कबन्ध भी रण में गिरे। तेरे बाप के पाप के कारण ही सागर पर सेतु बँध गया। तेरा बाप स्त्री-चोर है और तू रण-चोर। आज ही के संग्राम में मैं तेरे प्राण लूँगा॥ ८३॥

इतना सुन कर इन्द्रजीत ने धनुष पर बाण चढ़ाया और करोड़ों वानरों के प्राण चले गये। अंगद से कतरा कर सब वानर भागने लगे—रणक्षेत्र में अंगद अकेला अडिग खड़ा रहा। असह क्रोध से अंगद थरथर काँप रहा है और इन्द्रजीत पर वृक्ष और पत्थर फेंक रहा है। क्रोधित हो अंगद वीर ने

कटकेर धुलाय पृथिवी अन्धकार ❊ प्रथमे चापिल गिया पूर्व्वकार द्वार
एक चापे करे वीर वाण वरिषण ❊ गाछ ओ पाथर वरिषये कपिगण
राक्षस ओ वानरे हइल मिशामिशि ❊ कौतुक देखिछे देवगण तथा आसि
वाण जुड़े राक्षस धनुके दिया चाड़ा ❊ वानर उपरे पड़ितेछे जोड़ा जोड़ा
वानर पाथर-गाछ करे वरिषण ❊ कोटि कोटि राक्षस रणे त्यजिछे जीवन
चापड़ मुकुटि मात्र वानरेर ताड़ा ❊ मुकुटिर घाये कारो माथा हैल गुँड़ा
वाघेर येमन रूप वानरेर रंग ❊ मरणेर भय नाहि रणे नाहि भंग
उभय कटक जुझे रक्ते हैल रांगा ❊ रक्ते नदी बहे येन भाद्रमासे गंगा
घोड़ा हाती वीर आदि रक्तस्रोते भासे ❊ हरिषे वानर सैन्य मने मने हासे
तार तुल्य ढेउ उठे रक्त कलकलि ❊ युद्धेर नाहिक सीमा अधिक कि बलि
कोन युगे एइ मत युद्ध नाहि हय ❊ ज्ञान हय, असमय प्रलय उदय ८१
पूर्व्वद्वारे समर करिया यथोचित ❊ चलिल दक्षिणद्वारे वीर इन्द्रजित
अंगदेरे देखि तथा इन्द्रजित हासे ❊ गालागालि देय तारे, यत मने आसे

कटक के पैरों से उठती धूल से पृथ्वी अंधकारमयी हो गयी। पहले वे पूर्वी द्वार पर जा धमके। एक साथ ये वीर वाण चलाने लगे और वानर पेड़ और पत्थर बरसाने लगे। राक्षस और वानर वहाँ आपस में गुथ गये और देवगण वहाँ आकर कौतुक निहारने लगे। धनुष पर वाण चढ़ाकर राक्षस सन्धान करने लगे और वानरों पर वे वाण ढेर के ढेर गिरने लगे। वानर भी पेड़-पत्थर फेंकने लगे और करोड़ों राक्षस रण में प्राण त्यागने लगे। वानरों का आक्रमण केवल मुक्के और झाँपड़ के माध्यम से हो रहा है। झाँपड़ खाकर किसी का सिर टूट गया। व्याघ्र का जैसा रूप होता है वानरों का भी वैसा ही रंग-ढंग है। न तो उनको मृत्यु का कोई भय है और न वे युद्धक्षेत्र से भागते ही हैं। दोनों सेनाएँ जूझ रही हैं और रक्त से चारों ओर लाली छा गयी है। खून की नदी बहने लगी है मानों भादों के महीने की गंगा हो। घोड़ा, हाथी, वीर सभी खून के प्रवाह में बह रहे हैं। हर्ष से वानरी-सेना मन ही मन हँस रही है। रक्त में खलबली मची हुई है और युद्ध मानों एक उत्ताल तरंग के समान बढ़ता ही जा रहा है। किसी भी युग में ऐसा घमासान युद्ध नहीं हुआ। प्रतीत होता है असमय ही प्रलय आ गया है॥ ८१॥

पूर्वी द्वार पर यथोचित युद्ध करने के पश्चात वीर इन्द्रजीत दक्षिण द्वार की ओर चला। वहाँ अंगद को देखकर इन्द्रजीत हँसने लगा। जी भर कर उसको गालियाँ दी। मेरे बाप को गाली देकर डर से तू भाग गया,

मोर बापे गालि दिया पलाइलि डरे ※ आय तोर कोन बाप आजि रक्षा करे
बापके मारिया तोर माके दिलि आने ※ धिक् रे वानरा तोर लाज नाहि मने
यार शरे मरे तोर पिता बालिराज ※ धिक् तोरे अधम करिस तार काज
खाइब घाड़ेर मांस कामड़ाब मास ※ मोर हाते आज तोर निश्चित विनाश
देशेते जीयन्त जाबि ना करिस साध ※अन्य जन नहि आमि वीर मेघनाद८२
अंगद बलिछे, रे, गर्जिस अकारण ※ पदाघाते आजि तोर लइब जीवन
मारिते गेलाम तोरे लंकार भितर ※ से कोप पड़िल चारि राक्षस उपर
योगिवेशे तोर बाप सीतादेवी हरे ※ तार पापे मोर बाप मरे एक शरे
तार पापे पड़े रणे त्रिशिरा कबन्ध ※ तोर बापेर पापेते सागरे सेतुबन्ध
तोर बाप नारीचोरा तोर रण चुरि ※ आजि तोरे निश्चित पाठान यमपुरी
चोर-पुत्र चोर तुइ चुरि तोर रण ※ आजिकार युद्धे तोर लइब जीवन८३
एत शुनि इन्द्रजित् पूरिल सन्धान ※ कोटि कोटि वानरेर लइल परान
अंगदे एड़िया सबे पलाय वानर ※ रण मध्ये अंगद रहिल एकेश्वर
महा क्रोधे अंगद काँपिछे थर थर ※ इन्द्रजित परे फेले पादप पाथर

देखूँ की आज तेरा कौन सा बाप आकर तेरी रक्षा करता है। अरे वानरा! तूने अपने बाप को मरवा कर माँ को दूसरे के हाथों में सौंप दिया, तुझे धिक्कार है। तुझको शर्म भी नहीं आती, जिसके बाण से तेरे पिता बालि राजा का देहान्त हुआ तू उसी की सेवा करता है—तुझे धिक्कार है। तेरी गर्दन का मांस मैं चबाकर खा जाऊँगा, आज मेरे ही हाथों तेरा विनाश लिखा हुआ है। देश को जिन्दा वापस जायगा ऐसी साध मन में न रखना, मैं कोई सामान्य जन नहीं, मेघनाद हूँ ॥ ८२ ॥

अंगद ने कहा, अरे नाहक ही तू गरज रहा है, आज पदाघात से ही तेरे प्राण ले लूँगा। तुझको लंका के भीतर मारने गया तो मेरा क्रोध चार राक्षसों पर ही उतर पड़ा। तेरे बाप ने योगी का भेष रखकर सीता देवी का हरण किया और उसी के पाप से मेरे पिता एक बाण से मारे गये, उसी के पाप से त्रिशिरा-कबन्ध भी रण में गिरे। तेरे बाप के पाप के कारण ही सागर पर सेतु बँध गया। तेरा बाप स्त्री-चोर है और तू रण-चोर। आज ही के संग्राम में मैं तेरे प्राण लूँगा ॥ ८३ ॥

इतना सुन कर इन्द्रजीत ने धनुष पर बाण चढ़ाया और करोड़ों वानरों के प्राण चले गये। अंगद से कतरा कर सब वानर भागने लगे—रणक्षेत्र में अंगद अकेला अडिग खड़ा रहा। असह क्रोध से अंगद थरथर काँप रहा है और इन्द्रजीत पर वृक्ष और पत्थर फेंक रहा है। क्रोधित हो अंगद वीर ने

कुपिया अंगद वीर रथे मारे लाथि ❋ लाथिर चोटे चूर्ण करे रथ ओ सारथि
अंगद विक्रमे इन्द्रजित काँपे त्रासे ❋ लाफ दिया इन्द्रजित उठिल आकाशे
आकाशे थाकिया देखे दुइ सैन्य रण ❋ राक्षस वानरे युद्ध नहे निवारण ८४
प्रचण्ड राक्षस एल हये आगुयान ❋ सम्पाति वानरे मारे तिनशत वाण
वाण खेये सम्पाति ये हइल विवर्ण ❋ उपाड़िया आने वृक्ष नामे अश्वकर्ण
अश्वकर्ण वृक्ष धरि दिल तिन पाक ❋ वायुवेगे घुरे येन कुमारेर चाक
एड़िलेक गाछ-गोटा करिया हुंकार ❋ वृक्षाघाते प्रचण्ड हइल चूरमार
सम्पाति वानर वीर प्रचण्डे मारिया ❋ असंख्य राक्षस मारे लेजे जड़ाइया
चारि वीर लेजे बाँधि मारिल आछाड़ ❋ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़
तपन नामे निशाचर आइल गजस्कंधे ❋ संधान पूरिया वाण नील वीरे विन्धे
वाण खेये नील वीर उठि दिल रड़ ❋ चड़िया हातीर कांधे तारे मारे चड़
चड़-चापड़ेते गेल दुइ आँखि उड़े ❋ संग्रामेर माझेते तपन गेल पड़े ८५
रथे चड़ि आइल विद्युन्माली नाम ❋ वानरेर संगे करे दुर्ज्जय संग्राम

रथ पर लात जमा दी और रथ एवं सारथि दोनों चूर्ण-चूर्ण हो गये। अंगद का पराक्रम देख इन्द्रजीत त्रास से काँपने लगा। छलांग मारकर वह आकाश में चढ़ गया आकाश में रह कर वह दोनों सेनाओं का युद्ध देखने लगा। राक्षस-वानर के युद्ध में कोई विराम नहीं ।। ८४ ।।

प्रचंड नामक राक्षस आगे बढ़ आया और सम्पाति नामक वानर पर तीन सौ बाण फेंके। बाण की चोट खाकर सम्पाति व्याकुल हुआ और वह लपककर एक शालवृक्ष उखाड़ लाया। वृक्ष को पकड़ कर उसको उसने तीन बार घुमाया। इतनी जोर से वह घूमा मानों कुम्हार का चाक हो। हुंकार के साथ पेड़ को उसने चलाया, पेड़ के प्रहार से प्रचंड चूर-चूर हो गया। वीर प्रचंड का निधन करने के उपरान्त सम्पाति वानर ने पूँछ में लपेट कर असंख्य राक्षसों का वध किया। चार वीरों को पूँछ में लपेट कर उसने पटक दिया। उनके शिर फूट गये और हड्डियाँ चूर-चूर हो गयीं। हाथी पर सवार हो तपन नामक निशाचर आया। नील वीर को निशाना बनाकर उसको बाण से बींध डाला। बाण से चोट खाकर नील वीर दौड़ पड़ा और हाथी के कन्धे पर चढ़कर उसको झापड़ मारने लगा। झापड़ की चपेट में उसकी दोनों आँखें जाती रहीं और वह युद्ध क्षेत्र में जा गिरा ।। ८५ ।।

विद्युन्माली नामक राक्षस रथ पर सवार आया। वह वानरों के साथ घनघोर संग्राम करने लगा। ऐसे ही समय उसने हनुमान को देखा और

हेनकाले हनूमाने देखिल सम्मुखे ❋ तिनशत वाण मारे हनूमानेर बुके
वाण खेये हनूमान भीत नहे चिते ❋ लाफ दिया उठिल विद्युन्मालीर रथे
रथेते उठिया तार धरिलेक चूले ❋टानाटानि करि तारमाथा छिड़िफेले८६
रणेते प्रवेश करे सुवर्ण राक्षस ❋ एकेबारे मद खाय साताश कलश
सोनार उपर तार सोनार वाहार ❋ रावण कटके आसि छाड़े हुहुंकार
खाँड़ा धरे कखन, कखन धनुव्वीण ❋ वानर कटक कोटि कैल खान खान
घोर अन्धकार हैल सेइ रण स्थले ❋ वानर कटक सब धरे धरे गिले
रणस्थले वानरेर देखिया दुर्गति ❋ आइल दारुण कोपे नील सेनापति
कुपिया से नील वीर चारिदिके चाय ❋ विद्युन्मालीर रथ-चक्र एक पाय
उपाड़िया चाका गोटा तुलि निल हाते ❋ दानवे रुषिल येन देव जगन्नाथे
एड़िलेक चाका गोटा तुलि बाहुबले ❋ अन्तरीक्षे फिरे चाका गगनमण्डले
वायुवेगे आसे चाका, कि कहिब कथा ❋चाकार धारे काटिपाड़ेसुवर्णेरमाथा८७
सुषेण वानरराज राजार श्वशुर ❋ दुइ पुत्र लये बुड़ा जुझिछे प्रचुर
जुझिते जुझिते बुड़ार बेड़े गेल रंग ❋ लाफ दिया उठे येन वयस तरंग

हनुमान के सीने पर तीन सौ बाण प्रहार किये। बाण खाकर हनुमान कुछ भी भयभीत न हुए, वरन् उछल कर विद्युन्माली के रथ पर जा धमके। रथ पर चढ़कर उन्होंने विद्युन्माली के झोंटे धरे और खींच-खाँच कर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया ॥ ८६ ॥

अब रण में सुवर्ण राक्षस ने प्रवेश किया। यह एकबारगी सत्ताईस घड़ा मदिरा पीता है। 'सुवर्ण' पर सुवर्ण की बहार है। वानर कटक के बीच आकर उसने हुंकार भरी। कभी तो वह हाथ में खड्ग ले लेता तो कभी धनुष-बाण। वानरी-सेना को काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े करने लगा। रणक्षेत्र में अंधेरा छा गया और वानरों को पकड़-पकड़ कर वह लीलने लगा। समरभूमि में वानरों की दुर्दशा देखकर नील-सेनापति क्रोध से आगे बढ़ आए। चारों ओर क्रोध से निहारकर उनकी आँखें विद्युन्माली के रथ के चक्र पर पड़ीं। समूचा पहिया उखाड़ कर उन्होंने हाथ में ले लिया मानों दानवों पर देव जगन्नाथ कुपित हो गये। समूचे पहिये को घुमा कर ऊपर की ओर फेंका। पहिया गगन-मंडल में चक्कर लगाकर वायुवेग से नीचे उतरा और सुवर्ण का सिर काट कर फेंक दिया ॥ ८७ ॥

वानर-राज सुषेण राजा के श्वसुर हैं। अपने दोनों पुत्रों को लेकर वृद्ध खूब लड़ रहा है। लड़ते लड़ते बूढ़ा तरंग में आ गया—ऐसी छलांग भरने

जुझिते जुझिते बुड़ा पड़े गेल भोले ❊ दश विश राक्षस चापिया धरे को
बुड़ार चापड़े चड़े कर्णे तालि लागे ❊ निमिषे राक्षस सब लंका मध्ये भागे ८८
युझेन लक्ष्मण वीर सुमित्रानन्दन ❊ अवसन्न नहे वीर प्रथम यौव
रघुवंशे उद्भव लक्ष्मण महामति ❊ सूर्य्येर किरण वीर शशधर ज्योति
उदयास्त युझे वीर, नाहि अवसान ❊ धन्य शिक्षा वीरेर से, धन्य धनुर्व्वा
मारे लक्ष निशाचरे चक्षुर निमिषे ❊ राक्षस सहस्र कोटि मारे वेला शे
लक्ष्मणेर युद्ध देखि देवतार धन्ध ❊ तिन लक्ष राक्षसेर काटि पाड़े स्कन्ध
रक्ते नदी बहे वाटे, रक्त उठे फेना ❊ लक्ष्मणेर वाणे पड़े राक्षसेर थाना।
वाद्यभाण्ड भंग दिया पलाइल त्रासे ❊ इन्द्रजित देखे ताहा थाकिया आकाशे ८९
पिता मोर कटक सँपिल हाते हाते ❊ राखिते नारिन ठाट जाइब किमते
अग्निकेतु भस्मकेतु विक्रमे विशाल ❊ बज्रदन्त वीर पड़े लंकार कोटाल
पड़े शठ निशठ साक्षात् यमदूत ❊ अक्षय राक्षस पड़े समरे अद्भुत

लगा मानों नई जवानी से भरा हो। लड़ते-लड़ते बूढ़ा जोश में आ गया और दस-बीस राक्षसों को बाहों में दबोच लेने लगा। बूढ़े के झापड़ और तमाचों की आवाज से कान बहरे होने लगे। क्षण भर में सारे राक्षस लंका के भीतर भागने लग गये ॥ ८८ ॥

सुमित्रा-नन्दन वीर लक्ष्मण लड़ रहे हैं। उनकी नई जवानी है और उनमें नाम मात्र भी अवसाद नहीं है। महामति लक्ष्मण का जन्म रघुवंश में हुआ है, सूर्य की किरणों और चन्द्रकान्ति के सदृश वह दीप्तिमान् हैं। प्रातः से सन्ध्या तक वीरवर लड़ते रहे, उनमें थकान नहीं आई; धन्य है इस वीर की शिक्षा और धन्य हैं उसके धनुष-बाण। पलक झंपते ही लाख निशाचरों को मार गिराता। दिन ढलते-ढलते उसने सहस्र-कोटि राक्षस मार डाले। लक्ष्मण का युद्ध देखकर देवता चकित रह गये। तीन लाख राक्षसों के सिर काट कर फेंक दिये। खून से राह में नदी बहने लगी और उसमें लहरें और फेन उठने लगे। लक्ष्मण के बाणों से राक्षसों का मोर्चा टूट गया। गाजा-बाजा लेकर वे त्रास से भाग खड़े हुए। इन्द्रजीत ने आकाश में रहकर यह सब देखा ॥ ८९ ॥

पिता ने मेरे हाथों में सेना को सौंपा—उस सेना को मैं नहीं रख सका! अब मैं किस प्रकार से लौट सकूँगा? पराक्रमी अग्निकेतु भस्मकेतु और लंका के कोतवाल वीर बज्रदन्त भी गिर गये। साक्षात् यमदूत जैसे शठ-निशठ भी पराभूत हुए। समर में बेजोड़ अक्षय राक्षस का भी निधन हो गया।

वज्रमुष्टि पड़े शब्द कर्णे लागे तालि ❋ पनस राक्षस पड़े लये सैन्य गुलि
हाती घोड़ा पड़िल अनेक राज्यखण्ड ❋ माहुत पड़िल रणे समरे प्रचण्ड
देवमुष्ठि पड़िल सकल सेनापति ❋ तिनलक्ष पड़े राजार प्रधान पदाति
हातीर पृष्ठे पड़े सैन्य देउलेर चूड़ा ❋ पड़िल अर्व्वुद कोटि पार्व्वतीय घोड़ा
राज्येर महापात्र पड़े राज्य शून्य करि ❋ कोन मुखे प्रवेश करिब लंकापुरी
आदर करिया पिता दिला गुया पान ❋ एतेक कटक पड़े मोर विद्यमान
कटकेर भालमन्द मोरे सव लागे ❋ कोन लाजे गिया दाण्डाइवे पितृ आगे
देखादेखि युद्ध करि जिनिवारे नारि ❋ अदेखा हइले युद्ध करिवारे पारि
महायुद्ध करिब मायाते करि भर ❋ मेघ आड़े थाकि मारि नर ओ वानर ९०
डाक दिया श्रीरामेरे बले मेघनाद ❋ जीयन्ते जाइते देशे ना करिह साध
निर्व्बल राक्षस मारि हरिष अन्तर ❋ आजिकार युद्धे पाठाइव यमघर
एतेक वलिया धनुकेते दिल चाड़ा ❋ देउल देहरेर येन भांगि पड़े चूड़ा
सोनार धनुके वीर योड़े तीक्ष्ण शर ❋ सप्तद्वीपा पृथिवी काँपिछे थर-थर
धनुकेते दिया गुण तिनवार लोफे ❋ ब्रह्मादि देवतागण थरथरि काँपे

वज्रमुष्टि गिरा तो घोर निनाद से कान बहरे हो गये और अपनी सारी सेना के साथ पनस राक्षस का भी पतन हुआ। बहुत सारे हाथी और घोड़े गिरे और इस प्रचंड समर में बहुत से महावत भी काम आ गये। सेनापति देवमुष्टि भी गिरा और राजा के श्रेष्ठ तीन लाख पैदल भी गिरे। हाथी की पीठ पर से हौदा गिर पड़ा और अर्बुद-कोटि पहाड़ी घोड़े भी काम आ गये। राज्य को सूना बनाते हुए राज्य का महापात्र गिर पड़ा। कौन सा मुँह लेकर अब मैं लंकापुरी लौटूँ। पिता ने लाड़ से पान-सुपारी दी और मेरे रहते हुए इतनी सेना विध्वंस हो गयी। कटक (सेना) के भले-बुरे की जिम्मेदारी मेरे सिर है, अब पिता के सम्मुख मैं किस मुँह से जाकर खड़ा हूँगा। आमने-सामने की लड़ाई में मैं जीत नहीं पाता हूँ—अदृश्य रहकर मैं युद्ध कर सकता हूँ। माया का सहारा लेकर मैं महारण छेड़ दूँगा। बादलों की ओट में रहकर नर और वानरों का संहार करूँगा ॥ ९० ॥

श्रीरामचन्द्र को पुकार कर मेघनाद ने कहा, जिन्दा अपने देश लौट जाने की साध न रखना। कमजोर राक्षसों को मारकर दिल ही दिल खुश हो रहे हो। आज की लड़ाई में तुमको यमराज के घर भेज दूँगा। इतना कहकर उसने धनुष की प्रत्यंचा को टंकोरा—मानों मन्दिर की चूड़ा (शिखर) काँप कर टूट पड़ी। सोने के धनुष पर वीर ने तीक्ष्ण बाण चढ़ाया—सातों द्वीप वाली पृथ्वी थर-थर काँपने लगी। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उसने तीन

राम लक्ष्मण बलि वीर घन डांक छाड़े ✲ संवर आमार वाण झाँके झाँके पड़े
एड़िलाम वाण एइ यमेर दोसर ✲ छुटिल दुर्ज्जय वाण संवर संवर
एत बलि करे वीर वाण वरिषण ✲ जर्ज्जर करिया विन्धे श्रीराम लक्ष्मण
नानावर्णे वाण एड़े जाने नाना छला ✲ राम लक्ष्मणेर काटि पाड़िल मेखला
तिलार्द्ध नाहिक स्थान रक्त पड़े स्रोते ✲ दु भाइयेर रक्तधारे वसुमति तिते ९१
हेथा इन्द्रजित विन्धे श्रीराम लक्ष्मण ✲ उत्तर द्वारे वार्त्ता पाइल सुग्रीव राजन
उत्तर द्वारेते तखन नाहि हानाहानि ✲ रक्षक राखिया राजा चलिल आपनि
पश्चिम द्वारे महायुद्ध करे इन्द्रजित ✲ चलिल सुग्रीव राजा बाचाइबे मित
धाइल सुग्रीव राजा अति शीघ्र गति ✲ छत्रिश कोटि सेनापति चलिल संहति
पूर्व्वद्वारेर थानाय आसिया शीघ्रगति ✲समाचार दिल राजा यथा नील सेनापति
नील ओ कुमुद धाय कटक युझार ✲ थाना भाँगि गेला सबे पश्चिम दुयार
दक्षिण द्वारेते आछे अंगदेर थाना ✲ महेन्द्र देवेन्द्र ताहे आछे दुइ जना
महेन्द्र देवेन्द्र चले सह सेनागण ✲ आशीकोटि सैन्य दुइ भायेर भिड़न

बार उसको फेंककर गोच लिया तो ब्रह्मा आदि देवता थर-थर काँपने लगे। 'राम-लक्ष्मण' गुहार कर वीर बार-बार हाँक लगाने लगा—अब मेरे बाणों को संभालो। बाण झुंड के झुंड आकर गिरने लगे। यम सा भयानक यह बाण मैं फेंक रहा हूँ, यह लो दुर्जय बाण भी फेंक रहा हूँ—संभालो भी। इतना कहकर वीर, बाण बरसाने लगा। राम-लक्ष्मण दोनों, बाणों से जर्जर हो गये। विभिन्न वर्णों के बाणों से कतराकर विभिन्न प्रकार के छल-कपट से बाण फेंकने लगा और राम-लक्ष्मण की मेखलाएँ कट कर गिर गईं। शरीर में कोई भी स्थान बाकी नहीं रह गया, खून से वे लोग लहूलुहान हो गये, दोनों भाइयों के खून से धरती भीग गयी॥ ९१॥

यहाँ इन्द्रजीत श्रीराम-लक्ष्मण को बाणों से बाँध रहा है, यह वार्त्ता सुग्रीव राजा को उत्तर के द्वार पर मिली। उस समय उत्तरी द्वार पर कोई मुठभेड़ नहीं हो रही थी—अत: रक्षकों को पीछे छोड़कर राजा स्वयं चल पड़ा। पश्चिम-द्वार पर इन्द्रजीत महासमर छेड़े हुए है। सुग्रीव राजा अपने मित्र की सहायता करने चल पड़ा। राजा सुग्रीव अति शीघ्र दौड़े और उनके साथ-साथ छत्तीस करोड़ सेनापति भी चल पड़े। पूर्वी द्वार के मोर्चे पर पहुँचकर यह समाचार सुनाया गया, जहाँ नील सेनापति था। रण-कुशल नील और कुमुद भी दौड़ पड़े—मोर्चा तोड़कर सब लोग पश्चिमी दरवाजे पर गये। दक्षिणी द्वार पर अंगद का मोर्चा था। वहाँ महेन्द्र और देवेन्द्र थे।

ताड़ाताड़ि वार्त्ता तारा कहे जनेजन ※ सबे मात्र ना जाने राक्षस विभीषण
विभीषणे ना कहिल विपक्षेर ज्ञाने ※ एइ हेतु संवाद ना पाय विभीषणे
चारी द्वारेर कटक हइल एक ठाँइ ※ मेघ आड़े इन्द्रजित बिन्धे दुइ भाइ
लाफ दिया वानर सव उठये आकाश ※ कोथाय थाकिया युझे ना पाय तल्लास
श्रीराम लक्ष्मण वले, हइनु निराश ※ मेघ आड़े इन्द्रजित करे उपहास
सहस्र लोचने ना देखिल पुरन्दर ※ दुइ चक्षे कि देखिवे नर ओ वानर
श्रीराम लक्ष्मण, तोरा मानुषेर जाति ※ आजि बूझि तोदेर पोहाल कालराति
मेघ आड़े थाकि करे वाण वरिषण ※ जर्ज्जर करिया बिन्धे श्रीराम लक्ष्मण
कोथा थाकि जुझे बेटा देखिते ना पाइ ※ जीवनेर वासना छाड़िल दुइ भाइ
एक वाण मारि बेटा क्षमा नाहि माने ※ नागपाश वाण जुड़े धनुकेर गुणे
नागपाश वाण एड़े बड़इ दारुण ※ यार नामे इन्द्र यम काँपये वरुण
ब्रह्म अस्त्र नागपाश दुर्ज्जय प्रताप ※ एक वाणे हइल चौराशी लक्ष साप
साप हये जाय वाण आकाशे धरे फणा ※ सापेर मुखे ज्वले येन आगुनेर कणा
मुखेते दारुण अग्नि ज्वले धिकि धिकि ※ आछये अन्येर काज काँपये बासुकि

दोनों भाइयों के पास अस्सी करोड़ की सेना थी—उसे लेकर वे चल पड़े। वे झटपट एक दूसरे को सन्देश पहुँचाते रहे। केवल विभीषण को इस बात की सूचना नहीं मिली—विपक्षी राक्षस समझकर उसको किसी ने यह खबर नहीं पहुँचाई। चारों द्वारों की सेना एकत्र हो गयी और बादलों की ओट से इन्द्रजीत दोनों भाइयों को वाणों से छेदता रहा। सारे वानर छलाँग मार-मार कर आकाश में उठते रहे लेकिन वह कहाँ छिपकर लड़ रहा है इसका पता नहीं चल सका। श्रीराम-लक्ष्मण ने कहा, हमतो निराश हो गये, बादलों की ओट से इन्द्रजीत हमारी खिल्ली उड़ा रहा है! सहस्रलोचन होते हुए भी पुरन्दर (इन्द्र) उसको न देख सके, नर और वानर उनको दो आँखों से कैसे देख सकते हैं। अरे राम और लक्ष्मण! तुम लोग मनुष्य जाति के हो, आज शायद तुम लोगों का मृत्यु-दिवस है। मेघनाद मेघ की ओट में रहकर वाण बरसाता है और राम-लक्ष्मण के शरीर को छेद रहा है। यह दुष्ट कहाँ से छिपा लड़ाई कर रहा है, दिखाई नहीं पड़ता। दोनों भाइयों ने प्राणों की आशा त्याग दी। इतने वाण मारने के उपरान्त भी वह शान्त नहीं हुआ। उसने नागपाश वाण धनुष पर चढ़ाया। नागपाश वाण बड़ा ही भयंकर वाण है, जिसके नाम पर इन्द्र, यम और वरुण तक काँपते हैं। प्रबल ओजपूर्ण ब्रह्मास्त्र सा नागपाश वाण है। उसके एक वाण से चौरासी लाख साँप उत्पन्न हो गये। साँप बनकर वह वाण गगन में गया और फन काढ़ लिया और साँप

चलिल ये वाण गोटा दुर्ज्जय प्रताप ❋ अग्निर समान येन एक एक साप
वायुवेगे जाय वाण मेघेर गर्ज्जने ❋ हाते पाये वान्धे गिआ श्रीराम लक्ष्मणे
कोन साप गलाय जड़ाय केह पाय ❋ पाक दिया भुजंग जड़ाय सर्व्वगाय
हात पा नाड़िते नारे गले लागे फाँस ❋ यमेर दोसर हैल बद्ध नागपाश
सापेर विषेर ज्वालाय जर्ज्जर शरीर ❋ उत्तर शियरे ढलि पड़े दुइ वीर
लक्ष्मण पड़िल आर राम रघुमणि ❋ चन्द्र सूर्य्य खसि येन पड़िल अवनी
लोटाय कोमल अंग आलु थालु वेश ❋ लोटाय धनुक तूण आलुयित केश ९२
रण जिनि इन्द्रजित छाड़े सिंहनाद ❋ पितृस्थाने जाय वीर लइते प्रसाद
वानरेर शुन आज क्रन्दनेर रोल ❋ लंकार प्रवेशे बाजाइया ढोल
आगे पाछे पड़े कत चन्दनेर छड़ा ❋ ताहार उपरे पाते नेतेर पाछड़ा
हस्तेक प्रमाण पड़े पुरु पारिजात ❋ सौरभेते पूर्णित शीतल बहे वात
पितृ आगे दाँड़ाइल करि जोड़ करे ❋ तिनवार माथा नोयाय राज व्यवहारे
रावण जिज्ञासा करे रणेर संवाद ❋ जोड़ हाते कहिछे कुमार मेघनाद

के मुँह से मानों आग लपलपाने लगी। उनके मुँह से भयंकर अग्नि की लौ निकलने लगी—दूसरों की क्या बताऊँ वासुकि तक काँपने लग गये। वह अजेय बाण चल पड़ा, एक-एक साँप मानों अग्नि के समान हो, और वे जाकर राम-लक्ष्मण के हाथ-पैरों में लिपट गये। कोई साँप तो गले में लिपट गया तो कोई पैर में। भुजंग सारे अंग भर में लिपट गये। हाथ-पैर हिलाने डुलाने में वे असमर्थ हो गये और गले में फाँसी जैसी लग गयी। नागपाश से बँध गये और विष की ज्वाला से उनके शरीर शिथिल हो गये। लक्ष्मण और राम रघुमणि उत्तर की ओर सिरहाना कर ढुलक गये—मानों धरती पर चन्द्र-सूर्य ढुलक पड़े। उनके कोमल अंग लोटने लगे, कपड़े अस्त-व्यस्त हो गये, धनुष और तूण अलग जा गिरे, बाल भी बिखर गये ॥ ९२ ॥

युद्ध जीतकर इद्रजीत ने सिंहनाद किया और पिता के निकट अनुग्रह प्राप्त करने चल पड़ा। इधर बन्दर क्रन्दन करने लगे। लंका में वीर ने ढोलक बजाते हुए प्रवेश किया। आगे-पीछे चन्दन के छींटे पड़ने लगे। सूक्ष्म रेशमी वस्त्र धरती पर बिछा दिया गया और उस पर एक हाथ ऊँचे पारिजात के फूल बिछा दिये। चारों दिशा सुगन्ध से महमहाने लगी और ठंडी हवा चलने लगी। हाथ जोड़कर वह पिता के सम्मुख खड़ा हो गया और राजोचित प्रथा के अनुसार तीन बार सिर झुकाया। रावण ने रण का समाचार सुनाने के लिए कहा और कुमार मेघनाद हाथ जोड़ कर सुनाने लगा। यक्ष, राक्षस, गन्धर्व,

यक्ष रक्ष गन्धर्व देवता चराचर ॥ सबार कठिन युद्ध नर ओ वानर
प्रथम करिते युद्ध वानर संहति ॥ चूर्ण कैल रथ छत्र मारिल सारथि
आपना राखिते आमि हइनु कातर ॥ प्राण भये पलाइनु आकाश उपर
दाण्डाइया देखिलाम राक्षस दुर्गति ॥ एक दण्डे पड़िल सकल सेनापति
पड़िल सकल सेना पाइ अपमान ॥ श्रीराम लक्ष्मणे विन्धि करि खान खान
खण्ड खण्ड करिलाम माथार टोपर ॥ रक्तमात्र ना राखिनु शरीर भितर
बाणे विन्धि दुइ भाये करिनु जर्ज्जर ॥ पड़िल अनेक ठाट, असंख्य वानर
ब्रह्मअस्त्र नागपाश प्रचण्ड प्रताप ॥ एके वारे जन्मिल चौरासी लक्ष साप
साप हये चले बाण आकाशे धरे फणा ॥ हाते पाये गलाय बान्धिल दुइ जना
त्रिभुवन मिलि यदि करे अकिञ्चन ॥ तबुना खसिवे नागपाशेर बन्धन
राम लक्ष्मणेर तरे नाहि आर डर ॥ सीता सने केलि कर लंकार भितर
हरिषे युद्धेर कथा मेघनाद कहे ॥ रावण करिया कोले चुम्ब दिल ताहे
हस्ती घोड़ा रत्न दिल भाण्डार प्रचुर ॥ अमुल्य रतनहार दिलेक केयूर

और देवता से लड़ना सहज है—सबसे कठिन लड़ाई इन नर और वानरों के साथ है। आरम्भ में वानर-यूथ के साथ युद्ध हुआ तो उन लोगों ने रथ-छत्र तोड़ डाला और सारथी को मार डाला। अपने को भी बचाना मेरे लिए कठिन हो गया तो मैं प्राण लेकर गगन में ऊपर चला गया। खड़े-खड़े मैंने राक्षसों की दुर्दशा देखी। बहुत शीघ्र ही सारे सेनापति काम आ गये। सारी सेना इस प्रकार गिरने से मुझको अपमान का बोध हुआ, तो मैंने बाण से श्रीराम-लक्ष्मण को छेदना शुरू कर दिया। बाण मार-मार कर मैंने दोनों भाइयों को बेहाल कर दिया। उनके सिर के मुकुट को मैंने खंड-खंड कर डाला और उनके शरीर में बिन्दुमात्र भी रक्त नहीं रह गया। असंख्य वानरों के साथ बहुत बड़ी सेना भी जमीन चूमने लगी। फिर मैंने ब्रह्मास्त्र नागपाश फेंका। एक ही बाण में चौरासी लाख साँप उत्पन्न हो गये और फन काढ़कर वे आकाश में उठ गये और उतर कर दोनों के हाथ-पैरों तथा गले को बाँध लिया। तीनों लोक भी मिलकर चेष्टा करें फिर भी उनको इस नागपाश-बन्धन से मुक्त नहीं कर सकते। अब राम-लक्ष्मण के लिए तुमको कोई डर नहीं, सीता को लेकर लंका के भीतर आनन्द से क्रीडा करो। हर्ष से मेघनाद ने यह समाचार जब सुनाया तो रावण ने उसको बाहों में खींचकर चुम्बन किया। हाथी, घोड़ा और पर्याप्त रत्नों का भंडार प्रदान किया—अनमोल रत्नों का हार और बाजूबन्द दिया। नीलम जड़े विभिन्न आभूषण प्रदान किये और अनेक रूपवती

नाना अलंकार दिल नीलकान्त मणि * आनि दिल विद्याधरी रूपसी रमणी
राजप्रसाद दिल राज्य करे लण्ड भण्ड * सबे मात्र नाहि दिल नव छत्र-दण्ड ९३

श्रीराम-लक्ष्मणेर नागपाशे बन्धन दर्शने सीतार विलाप

पितृस्थाने विदाय ल'ये गेल इन्द्रजित् * रावण त्रिजटा बलि डाकिल त्वरित
रावण बले, त्रिजटागो, जाह एक बार * चूर्ण करि आइस सीतार अहंकार
पुष्पक विमाने लह सीतारे तुलिया * क्षणेक आइस तुमि आकाशे भ्रमिया
राम लक्ष्मण पड़ेछेन वद्ध नाग पाशे * स्वचक्षे देखुक सीता थाकिया आकाशे
रामलक्ष्मण मैले सीता हइबे निराश * आमारे भजिबे सीता मने पेये त्रास ९४
रावणेर आज्ञा यदि त्रिजटा पाइल * राम लक्ष्मणेर कथा सीता के कहिल
राम लक्ष्मण पड़ियाछे इन्द्रजितेर वाणे * स्वामि देवर देख यदि एस मोर सने
चलिलेन सीतादेवी त्रिजटा संहति * रथे चड़ि दुइजन जान शीघ्रगति
नागपाशे वद्ध हेरि श्रीराम लक्ष्मण * शिरे कर हानि देवी करिछे रोदन
पोहाइल बुझि मोर आजि कालराति * अभागिनी हारालाम तोमा हेन पति
शिशुकाले छिनु जावे जनकेर घरे * अविधवा बलि लोक कहित आमारे

विद्याधरी रमणी भी दीं। छत्र और राजदंड तो नहीं दिया, लेकिन राज्य उलट-पुलट कर सारा राजप्रसाद उसे दे दिया ॥ ९३ ॥

श्री राम-लक्ष्मण को नाग-पाश बन्धन में देखकर सीता का विलाप

इन्द्रजीत पिता से विदा लेकर चला गया। उसके जाते ही रावण ने त्रिजटा कहकर पुकारा। रावण ने कहा, त्रिजटा! तुम जाकर एक बार सीता का घमंड चूर-चूर कर आओ। पुष्पक विमान में सीता को बिठाकर तुम थोड़ी देर के लिए आकाश में भ्रमण कर आओ। राम-लक्ष्मण नागपाश में बँध गये हैं—आकाश से सीता अपनी आँखों से देख ले। राम-लक्ष्मण के मरने पर सीता निराश हो जायगी और डरकर मेरी सेवा करने लगेगी ॥ ९४ ॥

त्रिजटा को जब रावण का आदेश मिला तो उसने सीता से राम-लक्ष्मण की बात बताई। इन्द्रजीत के बाण से राम-लक्ष्मण गिरे हैं, अगर पति और देवर को देखना चाहती हो तो मेरे साथ आओ। सीतादेवी त्रिजटा के साथ चल पड़ीं और रथ पर दोनों शीघ्रगति से रवाना हो गयीं। श्रीराम-लक्ष्मण को नागपाश में बँधा देखकर सिर पर हाथ मारती हुई देवी (सीता) रोने लगीं। आज शायद मेरी कालरात्रि उदय हुई, जो तुम जैसे पति को मैं अभागिन खो बैठी। बचपन में जब मैं जनक के घर पर थी तब लोग मुझको अविधवा

सकलेर वाक्य मोर हैल विपरीत ❀ धूलाते पड़िया प्रभु हले असंवित ९५
वधिया ताड़कासुर, तुष्ट कैले तिनपुर, जनकेर पन पूर्ण करि।
हरेर धनुकखान, भांगि कैला खान-खान, धन्य कैला जनकेर पुरी ॥
विविध विलाप करि, श्रीरामेर गुण स्मरि, कान्दे सीता, नहे निवारण ।
कैकेयी-सताइ-दोषे आसिया कानन-वासे, विपाकेते हाराले जीवन ॥
भरत करिल स्तुति, ना करिले अनुमति, वने आइले सत्ये करि भर ।
रत्नमय सिंहासन, परिहरि कि कारण, कोमलांग धूलाय धूसर ॥
अयोध्यार छत्रधर, आज्ञाचारी चराचर, सागर बाँधिया हैला पार ।
आमि कि अभाग्यवती, हारालाम रामपति, तव मुख ना देखिब आर ॥
आमा अन्वेषण करि, एले प्रभु लंकापुरी, दुःख मोर ना हैल मोचन ।
दुराचार इन्द्रजित्, कैल युद्ध विपरीत, ताहे प्रभु हाराले जीवन ॥
त्रिजटार हाते धरि, विस्तर विनय करि, कहिछेन करुण वचन ।
तोमार सहाय गुणे, जाब आमि स्वामि सने, रथ राख, ना कर गमन ॥
सीतार रोदन शुनि, हइल आकाशवाणी, कभु नाहि रामेर विनाश ।
तोमारे उद्धार करि, जाबेन अयोध्यापुरी, रचिल पण्डित कृत्तिवास ॥९६

कहकर पुकारते थे। आज सभी का कहना विपरीत हो गया, मेरे प्रभु धूल में बेहोश लोट रहे हैं ॥ ९५ ॥

ताड़का का वध कर तुमने तीनों लोकों को तुष्ट किया। शिव-धनुष को तोड़ कर तुमने जनक-पुरी को सन्तुष्ट किया। श्रीराम के विभिन्न गुणों का स्मरण करती हुई सीता रो रो कर विलाप करने लगीं। सौतेली माँ कैकेयी के दोष से तुमको वनवास करने आना पड़ा और इस प्रकार अकारण प्राण त्यागना पड़ा। भरत ने तुमसे प्रार्थना भी की लेकिन तुमने उसकी एक न सुनी और सत्यपालन के लिए वन चले आए। रत्नजड़े सिंहासन को त्याग कर किस कारण तुम धूल में लोट रहे हो। तुम अयोध्या के छत्रपति हो, सारा संसार तुम्हारा आज्ञाकारी है, सागर को बाँध कर तुम उसको लाँघ आए। मै कैसी अभागिन हूँ कि फिर तुम्हारा मुख नहीं देख सकूँगी। मुझ ही को ढूँढ़ते हुए प्रभु, तुम लंकापुरी आए लेकिन मेरा दुख दूर न हो सका। दुराचारी इन्द्रजीत ने छल-कपट का युद्ध किया और उसी में प्रभु तुमने अपने प्राण खो दिये। त्रिजटा के हाथ थाम कर सीता करुण स्वर में उससे विनती करने लगी, तुम्हारी ही सहायता से मैं पति के साथ सहगमन करूँगी, रथ को रोक लो और आगे मत चलो। सीता का रुदन सुनकर आकाशवाणी

सीतार प्रति त्रिजटार सान्त्वना एवम् श्रीराम-लक्ष्मणेर नागपाश हइते मुक्ति

कातर हइया कान्दे से सीता रूपसी * सीतारे प्रबोध देय त्रिजटा राक्षसी
पुष्परथ देख सीता देव अवतार * कखन ना सहे एइ अशुचिर भार
एकान्त श्रीराम यदि हारात जीवन * अचल हइत रथ, ना जाय खण्डन
ना कर रोदन सीता, ना कर रोदन * प्राण ना त्यजेन तव श्रीराम लक्ष्मण
बहुकाल गेल, दुःख अल्प दिन आछे *भावि आमि, क्षणे सीता मरे जाह पाछे
एत बलि त्रिजटा बिस्तर बुझाइया * अशोकेर वने गेल सीतारे लइया
अशोकेर वृक्ष तले वसिलेन सीते * स्वर्णवेत हाते घुरे यतेक चेड़ीते ९७
नागपाशे बन्दी रन श्रीराम लक्ष्मण * माथे हात दिया कान्दे यत कपिगण
बड़ बड़ कपि कान्दे बले हाय हाय * नील सेनापति कान्दि गड़ागड़ि जाय
सकल कटक कान्दे हइया अज्ञान * पिता पुत्रे कान्दिछे केशरा हनूमान
कान्दिछे सुग्रीव राजा कटकेर आड़े * मित्र मित्र बलि राजा घन डाक छाड़े
लंकाते यद्यपि प्रभु रघुनाथ मरे * कि बलिया जाब आमि किष्किधा नगरे

हुई, राम का कभी विनाश नहीं होगा। तुम्हारा उद्धार कर वे अयोध्यापुरी जायँगे—ऐसा कृत्तिवास ने कहा ॥ ९६ ॥

सीता के प्रति त्रिजटा की सान्त्वना और श्री राम-लक्ष्मण की नागपाश से मुक्ति

रूपवती सीता व्याकुल होकर रोने लगी तो त्रिजटा राक्षसी उसको ढाढ़स बँधाने लगी। सीता, यह पुष्पक-रथ देखो—यह देव-अवतार के समान है। यह अपवित्र का भार कभी नहीं सह सकता। यदि श्रीराम अपने प्राण से हाथ धो लिये होते तो यह रथ अचल हो गया होता, इसमें कोई सन्देह नहीं। ऐ सीता, तुम मत रोओ, मत रोओ। तुम्हारे राम-लक्ष्मण ने प्राण नहीं त्यागा है। बहुत दिन बीत गये, अब तुम्हारे दुख के दिन इने-गिने हैं। मुझको चिन्ता है कि तुम इसी दुख में क्षणभर में प्राण न त्याग दो। इतना कह सीता को बहुत कुछ समझा-बुझा कर त्रिजटा उसको अशोक-वाटिका में ले गयी। अशोक वृक्ष के नीचे सीता जाकर बैठ गयी और उसको घेर कर राक्षसी दासियाँ हाथ में सोने के बेंत लिये पहरा देने लगीं ॥ ९७ ॥

नागपाश में श्री राम-लक्ष्मण बन्दी हो गये और सिर पर हाथ रखे सारे कपि रोने लगे। बड़े-बड़े कपि हाय-हाय कर रोने लग गये। सारा कटक बेहाल होकर रोने लगा। केसरी और हनुमान भी रोने लगे। सेना की आड़ में खड़े राजा सुग्रीव भी रोने लग गये और 'मित्र-मित्र' कहकर बार-बार पुकारने लगे। जब प्रभु रघुनाथ ने लंका में प्राण त्याग दिया, तो मैं कौन सा मुँह लेकर

किष्किन्धार राजपाट सब पोड़ाइया * पराण त्यजिब आमि सागरे डुबिया
सुग्रीव बलेन, मोरा सबे ऐक्य करि * दुइभाय जाव लये किष्किन्धानगरी
श्रीराम लक्ष्मणे यदि पारि बाँचाइते * आनिब औषध यथा पाब संसारेते
बाँचाइया श्रीराम लक्ष्मण दुइजने * करिब तुमुल युद्ध रावणेर सने
सवंशे मारिब जबे लंकार रावण * तबे से जानिया मोर स्वदेशे गमन ९८
दूर हैते क्रन्दन शुनिया विभीषण * चारिदिके चाहिया भाविछे मनेमन
कोन वीरे लइया पड़ेछे अथान्तर * माथे हात दिया केन कान्दिछे वानर
कान्दिछे सुग्रीव वीर अंगद युवराज * सकल वानर कान्दे नहे छोट काज
एत भावि विभीषण चलिल सत्वर * विभीषणे देखि छोटे यतेक वानर
विभीषण इन्द्रजित् अभेद रूपेते * विभीषणे देखि बले एल इन्द्रजिते ९९
सुग्रीव डाकिया बले अंगदेर आगे * तुमि आछ सम्मुखे कटक केन भागे
अंगद बलेन, शुन वानरेर पति * विभीषणे देखि भागे यत सेनापति
डाक दिया कहिछे अंगद युवराज * कारे देखि पलाह सुण्डेते पडुक बाज
हाना दिया इन्द्रजित् गेल लंकापुरे * विभीषणे देखि केन पलाइछ डरे

किष्किन्धा जाऊँगा। किष्किन्धा का सारा राज-पाट जलाकर खाक कर दूँगा और समुद्र में डूबकर अपने प्राण दे दूँगा। सुग्रीव ने कहा, चलो, हम सब इकट्ठे होकर दोनों भाइयों को किष्किन्धा नगरी ले चलें। वहाँ संसार भर में ढूँढकर दवा ले आऊँगा और श्रीराम-लक्ष्मण को बचाने की कोशिश करूँगा। श्रीराम-लक्ष्मण को बचाकर फिर रावण के साथ प्रबल युद्ध करूँगा। लंका के रावण को जब उसकी सारी सन्ततियों के साथ मार सकूँगा तभी जान लेना मैं स्वदेश को लौटूँगा ॥ ९८ ॥

दूर से क्रन्दन सुनकर विभीषण चारों ओर देखता हुआ मन ही मन सोच रहा है कि कौन सा वीर रणक्षेत्र में काम आ गया कि सारे बन्दर सिर पर हाथ रखे रो रहे हैं। सुग्रीव वीर भी रो रहा है और अंगद युवराज भी। सारे बन्दर रो रहे हैं, यह कोई मामूली बात नहीं है। इतना सोचकर विभीषण झटपट चल पड़ा। विभीषण को देखकर सारे बन्दर भागने लग गये। विभीषण और इन्द्रजीत देखने में एक जैसे हैं, विभीषण को देखकर वे कहने लगे कि इन्द्रजीत आ गया है ॥ ९९ ॥

सुग्रीव ने अंगद को बुलाकर कहा, तुम सामने हो फिर भी तुम्हारा कटक क्यों भाग रहा है। अंगद ने कहा, हे वानरराज, सुनो ! विभीषण को देखकर सारे सेनापति भाग खड़े हुए हैं। फिर हाँक लगाकर अंगद युवराज ने ललकारा, अरे तुम लोग किसको देखकर भागने लगे हो, तुम लोगों के सिर

देशे पलाइया जावे पुत्र दारा आशे ※ एक गाड़े गाड़िबे सुग्रीव राजा देशे
यदि देशे जाबे, मने करह वासना ※ उलटिया राख गिया आपनार थाना
अंगदेर देखिया दन्तेर कड़मड़ि ※आपनार थानाय सबे जाय ताड़ाताड़ि१००
विभीषण बले शुन राजीवलोचन ※ जीयन्ते मरिनु आमि तोमार कारण
पलाइते नाहि ठाँइ जाब कोन देश ※ विशेष सागरे गिया करिब प्रवेश
धिक् धिक् राज्यभोग धिक् धिक् सुख ※जनम गोयाब आमि देखिकार मुख१०१
एतेक शुनिया तबे विभीषण वाणी ※ धीरे धीरे कहिछेन राम रघुमणि
सब छाड़ि विभीषण कैले आमासार ※ शुधिते नारिनु मिता तोमार से धार
नागपाश बन्धे मृत्यु घटिल आमारे ※ मरा लागि जीयन्ते कोथाय केवा मरे
शुन हे सुग्रीव मिता कहि तवस्थाने ※ सैन्य लये जाह तुमि आपन भवने
आमा स्थाने मित्र, तुमि सत्ये हैले पार ※ तुमि कि करिबे, दैव विपक्ष आमार
नूतन भूपति तुमि देखह विचारि ※ तोमा बिने लण्डभण्ड हबे राजपुरी

पर क्यों गाज आ गिरी है। इन्द्रजीत तो धावा बोलने के बाद लंकापुरी में चला गया, अब विभीषण को देखकर डर से क्यों भागने लगे हो। अपने बाल-बच्चों के पास देश भाग जाने की साध लिये हुए हो, राजा सुग्रीव तुमको जमीन में तोप कर रख देंगे। दिल में अगर अपने देश लौट जाने की अभिलाषा है तो जाकर अपना-अपना मोर्चा सँभालो। अंगद को देखकर सभी लोग दाँत पीसने लगे और लौटकर अपने-अपने मोर्चों पर पहुँच गये ॥ १०० ॥

विभीषण ने कहा, हे राजीवलोचन ! तुम्हारे कारण मैं तो जिन्दा ही मर गया। भागने को मेरे लिए कोई ठौर नहीं, किस देश को जाऊँ। कहीं अन्ततः मुझको समुद्र में ही प्रवेश करना न पड़ जाय। राज्य भोगने की आकांक्षा को धिक्कार है और सुख को भी धिक्कार है। किसका मुख देख-कर मैं अपना जीवन बिताऊँगा ॥ १०१ ॥

विभीषण के ये वाक्य सुनकर राम रघुमणि धीरे-धीरे बोल पड़े—हे विभीषण ! तुम सब कुछ छोड़कर मुझ पर निर्भर हुए। हे मित्र, मैं तुम्हारा यह ऋण चुका न सका, नागपाश-बन्धन से मेरी मृत्यु हो रही है। मरे हुए व्यक्ति के लिए कब कौन जीवित व्यक्ति अपने प्राण दे देता है। सुनो मित्र सुग्रीव, तुमसे बताऊँ। तुम अपनी सेना लेकर अपने घर लौट जाओ। तुम मेरे लिए परम मित्र हो और अपना सत्य तुमने पाला है। तुम क्या करोगे, दव मेरे विपक्ष में है। तुम नए नृपति हो, तुम्हारे बिना राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो

करह राज्येर चर्च्चा गिया निज राज्ये * आमार निकटे आर आछ कोन् कार्य्ये
नागपाश अस्त्र एल आमा-दोंहा तरे * भाग्ये जाहा छिल, हैल, तुमि जाह फिरे
अंगदेर बापे मारि पाइयाछि लाज * प्राणपणे पालिह अंगद युवराज
गय गवाक्ष शरभादि ओ गन्धमादन * महेन्द्र देवेन्द्र एइ सुषेणनन्दन
शरभंग वानर ये कुमुद सेनापति * देशे तबे जाह सबे करिया पीरिति
देशे जाह सकले आमारे दिया कोल * गालागालि ना दिह ना बलो मन्द बोल
अयोध्या नगरे तुमि जाह हनूमान * समाचार कहिओ सवार विद्यमान
जानाइओ भरतेरे आमार सम्वाद * कारो संगे येन नाहि करे विसम्वाद
धर्म्मेते पालिबे प्रजा राखि धर्म्मपथ * एइ रूपे राज्य येन करेन भरत
कौशल्या मायेरे जानाइबे नमस्कार * कैकेयी मातारे कह एइ समाचार
प्रणाम करिब गिया मने छिल साध * विधाता साधिल ताहे निदारुण वाद
जानकी रहिल बन्दी अशोकेर वने * नागपाशे बद्ध राम लक्ष्मण दु जने
सुमित्रा माताके मोर दिओ नमस्कार * यथायोग्य सवारे जानाह समाचार
आमा लागि लक्ष्मण छाड़िल निजपुरी * सुखभोग छाड़ि भाइ हैल वनचारी

जायगा। अपने राज्य को लौट जाओ और राजकाज संभालो। मेरे पास तुम किस कारण रुके हो। हम दोनों के लिए नाग-पाश अस्त्र का प्रहार आया। मेरे भाग्य में जो कुछ था सो तो हो गया, अब तुम लौट जाओ। अंगद के बाप को मारकर मुझको बड़ी लज्जा पहुँची है। अंगद युवराज का हर तरह से पालन-पोषण करना। गय, गवाक्ष, शरभ, गन्धमादन, महेन्द्र, देवेन्द्र नामक सुषेण के पुत्र, शरभंग कपि और सेनापति कुमुद तुम सभी लोग प्रेम से अपने-अपने देश लौट जाओ। मुझसे गले मिलकर सभी देश को लौट जाओ। मुझको बुरा-भला मत कहो और न मुझको गाली दो। हनुमान तुम अयोध्या चले जाओ और सबसे मेरा समाचार बता दो। भरत से मेरा समाचार कहना और यह भी बता देना कि किसी से कलह-विवाद न करें, धर्म के अनुसार प्रजा-पालन करें और धर्म-पथ पर चलते हुए भरत राज्य-शासन करें। माता कौशल्या को मेरा प्रणाम पहुँचाना। माता कैकेयी से कहना कि मन में साध थी कि स्वयं जाकर प्रणाम करूँगा लेकिन विधाता की इच्छा कुछ और ही थी। जानकी अशोक-वाटिका में बन्दिनी रह गई और राम-लक्ष्मण दोनों नागपाश में बद्ध हो गये। माता सुमित्रा से भी मेरा नमस्कार कहना। सभी लोगों से यथायोग्य समाचार बताना। मेरे ही कारण लक्ष्मण ने अपना घर छोड़ा, राजसुख को त्याग कर मेरा भाई वनचारी बना। मेरे प्राणों के समान

प्राणेर लक्ष्मण भाइ छिल हातेर नड़ि ※ हेन भाइ नागपाशे जाय गड़ागड़ि १०२
नागपाशे कातर हइला रघुवीर ※ ब्रह्मादि देवता भावि हइल अस्थिर
इन्द्र आदि करिया यतेक देवगण ※ डाक दिया आनिलेन देवता पवन
इन्द्र बले समाचार ना जान पवन ※ नागपाशे बाँधा आछे श्रीराम लक्ष्मण
अरुण वरुण यम सबे काँपे डरे ※ भये ना आइसे केह लंकार भितरे
आमि इन्द्रदेव त्रिभुवन अधिपति ※ रावणेर बेटा मोर करिल दुर्गति
लंकाते लइल बाँधि, संसारे विदित ※ आमारे जिनिया बेटार नाम इन्द्रजित्
बड़ निदारुण बेटा विख्यात भुवने ※ नागपाशे बान्धियाछे श्रीराम लक्ष्मणे
नागपाशे अचैतन्य दुइ सहोदर ※ बल बुद्धि हारायेछे सकल वानर
श्रीरामेर स्थाने जाह आमार वचने ※ कह रामे मुक्त हबे गरुड़ स्मरणे
विष्णुर वाहन गरुड़ धरे विष्णु तेज ※ नागपाश घुचाइते सेइ महावेज ३
इन्द्रेर वचन मानि देवता पवन ※ कहिल श्रीरामे, कर गरुड़ स्मरण
पवन श्रीरामे यदि हैल कानाकानि ※ गरुड़े स्मरण करे राम रघुमणि

भाई लक्ष्मण, जो मेरा सबसे बड़ा सहारा था, नागपाश से बँध कर भूमि पर लोट-पोट रहा है ॥ १०२ ॥

कातर रघुवीर को नागपाश में बँधा देखकर ब्रह्मा आदि सारे देवता बड़े चिन्तित हुये। इन्द्र आदि देवता जाकर पवन को बुला लाए। इन्द्र ने कहा, पवन तुमको शायद यह समाचार ज्ञात न हो, राम-लक्ष्मण नागपाश में बँध गये हैं। अरुण-वरुण और यम सभी डर से काँपते रहते हैं—कोई भी डर के मारे लंकापुरी में प्रवेश नहीं करते हैं। मैं त्रिभुवन का पति इन्द्र हूँ, मेरी भी दुर्गति इस रावण के बेटे ने कर दी। संसार भर में यह विदित है कि मुझको इसने लंका में बाँध लिया। मुझको हरा कर ही इस दुष्ट का नाम इन्द्रजीत पड़ा है। यह निगोड़ा बड़ा ही भयानक है, उसने राम-लक्ष्मण को नागपाश से बाँध डाला है। दोनों भाई नागपाश से अचेतन हैं। सारे बन्दरों की बुद्धि पर भी पत्थर पड़ गया है। मेरे कहने पर तुम राम के निकट जाओ और बताओ कि गरुड़ के स्मरण करने पर वह मुक्त हो जायगा। गरुड़ विष्णु का वाहन है और महातेज-सम्पन्न है। नागपाश का अन्त करने में वही महावैद्य के समान है ॥ ३ ॥

इन्द्र के वचन के अनुसार पवन ने जाकर श्रीरामचन्द्र जी से गरुड़ का स्मरण करने के लिए कहा। पवन और श्रीराम में कानाफूसी हुई और राम रघुमणि ने तुरन्त गरुड़ का स्मरण किया। विष्णु-अवतार श्रीराम ने जैसे

गरुड़े स्मरण राम विष्णु अवतार ※ गरुड़ेर ललाटे ते पड़िल टंकार
कुशद्वीपे चरे गरुड़ सागरेर कूले ※ गिलेछिल अजगर, उगारिया फेले
शून्यभरे गरुड़ आइल उभ-रड़े ※ पाख साटे पर्व्वत-पादप जाय उड़े
दिग् दिगन्तेर गाछ आने पाखे टेने ※ झञ्झना पड़ये जेन घोर वरिषणे
सागरेर जलजन्तु लुकाइल जले ※ भय पेये नागगण कम्पित पाताले
उपाड़िया पड़े वृक्ष पाखार बातासे ※ दश योजन हैते सर्प सर्व पलाय तरासे
दूर हैते गरुड़ेर लागिल निःश्वास ※ रामलक्ष्मणेर खसि पड़े नागपाश
पद्महस्त बुलाइल विनतानन्दन ※ सचैतन्य हये उठे श्रीराम लक्ष्मण
गरुड़ पक्षीरे कन राम रघुमणि ※ प्राणदान दिले, सखा छिले हे आपनि
गरुड़ बलेन, शुन सविशेष कहि ※ श्रीचरण भृत्य आमि सखा योग्य नहि
तुमि विष्णु अवतार जगतेर पति ※ पतिव्रता शापे आछे आपना विस्मृति
आमि ये गरुड़ पक्षी तोमार वाहन ※ पूर्व्वकथा प्रभु केन हओ विस्मरण ४
श्रीराम बलेन पक्षि कैले उपकार ※ वर माग पक्षिवर जे वाञ्छा तोमार
गरुड़ बलेन, वाञ्छा आछे एइमने ※ द्विभुज मुरलीधर देखिबो नयने
त्रिभंगभंगिम रूप गले वनमाला ※ शिखि पुष्पवद्ध चूड़ा वामे अर्द्ध हेला

ही गरुड़ का स्मरण किया कि गरुड़ का माथा ठनका। कुशद्वीप में समुद्र के किनारे गरुड़ विचर रहा था। एक अजगर को वह लील चुका था, उसको उसने वमन कर दिया। शून्य में गरुड़ तीव्र गति से उड़ने लगा—उसके डैनों के झपट्टे से पेड़-पहाड़ सब उड़ने लगे। दिगदिगन्त के पेड़ों को वह डैनों में समेटे चला—मानों घोर वर्षा में आँधी चल पड़ी हो। समुद्र के सारे जल-जन्तु पानी में छिप गए और सारे नाग पाताल में भय से काँपने लगे। डैनों की हवा से वृक्ष जड़ से उखड़ने लगे और दस योजन की दूरी से सारे साँप भागने लगे। दूर से गरुड़ की साँस आकर लगते ही राम-लक्ष्मण के नागपाश अलग जा गिरे। विनता-नन्दन ने श्रीराम-लक्ष्मण के वदन को कमल-कर से सहलाया और वे दोनों तुरन्त सचेतन हो उठे। राम-रघुमणि ने गरुड़ पक्षी से कहा, तुमने मेरा प्राण बचाया, तुम मेरे सखा हो। गरुड़ ने कहा, मैं आपके श्रीचरणों का दास हूँ, मैं सखा बनने योग्य नहीं हूँ। तुम जगत के पति विष्णु के अवतार हो, पतिव्रता के शाप से तुम अपने को भूले हुए हो। मैं गरुड़ पक्षी तुम्हारा वाहन हूँ, हे प्रभु! ये पुरानी बात क्यों भूल रहे हो॥ ४॥

श्रीराम ने कहा, हे पक्षिराज! तुमने मेरा बड़ा उपकार किया, तुम्हारे मन में जो इच्छा हो सो वर माँगो। गरुड़ ने कहा, मेरे दिल में आकांक्षा है कि मैं द्विभुज मुरलीधर को अपने नयनों से देखूँ। उनका त्रिभंग-बंकिम रूप मैं

अलका आवृत शशि श्रीमुखमण्डल ❋ श्रुतियुगे मनोहर मकरकुण्डल
गले वनमाला परिधान पीताम्बर ❋ सेइ रूप देखिते वासना निरन्तर
श्रीराम बलेन हब सेरूप केमने ❋ धनुर्द्धारी राम आमि सकलेते जाने
ना बलिह कृष्णमूर्त्ति करिते धारण ❋ से रूप देखिले कि कहिबे कपिगण
गरुड़ बलेन कि कहिबे कपिगणे ❋ करिया पाखार घर बसाब गोपने ५
एतेक मन्त्रणा करि विनतानन्दन ❋ पाखाते करिल घर अद्भुत रचन
भकतवत्सल राम ताहार भितरे ❋ दाण्डाइल त्रिभंगभंगिम रूप धरे
धनुक त्यजिया बाँशी धरिलेन करे ❋ हनूमान देखि बसि भावितेछे दूरे
हनू भावे प्राणपणे करि प्रभुहित ❋ पक्षीर संगेते एत किसेर पीरित
देखिलेन हनूमान महायोगे बसि ❋ धनु खसाइया पक्षी करे दिल बाँशी
हनूमान बले, पक्षि, एत अहंकार ❋ धनुक खुलिया बाँशी दिलि हाते ताँर
यदि भृत्य हइ, मन थाके श्रीचरणे ❋ लइब इहार शोध तोरि विद्यमाने
बाँशी खसाइया दिब धनु:शर करे ❋ लइब इहार शोध कृष्ण अवतारे ६

देखना चाहता हूँ—उनके गले में वनमाला होगी, सिर पर मोरपंख लगी चूड़ा बाईं ओर ढुलकी हुई होगी; उनके चन्द्रवदन पर बाल के गुच्छे आ पड़ेंगे, कानों में मनोहर मकराकृति कुंडल होंगे। पीताम्बर पहने और गले में वनमाला डाले—ऐसा रूप देखने की लालसा मुझमें निरन्तर है। श्रीराम ने कहा, बताओ मैं ऐसा रूप कैसे ले लूँ ? सभी जानते हैं कि मैं धनुषधारी राम हूँ। मुझको कृष्णमूर्त्ति धारण करने को मत कहो, वर्ना वह रूप देखकर ये सारे वानर क्या कहेंगे। गरुड़ ने कहा, वानर क्या कहेंगे ! मैं अपने डैनों की ओट में गुप्त-कक्ष बना कर उसमें तुमको बिठाऊँगा ॥ ५ ॥

विनतानन्दन ने इतना कहकर अपने डैनों से विचित्र कक्ष का निर्माण किया। भक्तवत्सल राम उसी कक्ष के भीतर त्रिभंग-बंकिम रूप धारण कर खड़े हो गये। धनुष त्याग कर उन्होंने हाथों में बाँसुरी ले ली। हनुमान दूर बैठे सोचने लगे कि प्रभु के हित के लिये मैं इतना-कुछ किया करता हूँ—इस पक्षी के साथ प्रभु का इतना प्रेमभाव क्यों है ? महायोग में बैठकर हनुमान ने देखा कि हाथों से धनुष हटाकर पक्षी ने बाँसुरी थमा दी। हनुमान ने कहा, हे पक्षी, तुझे इतना घमंड है कि तूने धनुष उतरवाकर हाथों में बाँसुरी थमा दी; अगर मैं सेवक हूँ और मेरा चित्त उन्हीं चरण-कमलों पर टिका हुआ हो तो तेरी ही उपस्थिति में मैं इसका बदला लेकर रहूँगा। इसका बदला मैं कृष्ण-अवतार के समय लूँगा और बाँसुरी उतरवा कर धनुष-बाण पकड़वाऊँगा ॥ ६ ॥

एतेक शुनिया तवे विनतानन्दन ❋ ईषत् हासिया पाखा करे संवरण
श्रीरामे प्रणाम करि जाय शून्यपथे ❋ दाण्डाइला रघुनाथ धनुर्व्वाण हाते
अँग झाड़ा दिया उठे अनुज लक्ष्मण ❋ आनन्द सागरे मग्न यत कपिगण
गरुड़ेर पक्ष शव्द यत दूर जाय ❋ तत दूर कपिगण उठिया दाँड़ाय
नागपाशे मुक्त हैला श्रीराम लक्ष्मण ❋ रामजय शव्द करे यत कपिगण ७
एक वारे सव कपि छाड़े सिंहनाद ❋ शुनिया रावण राजा गणिल प्रमाद
वानरेर शव्द निशि तृतीय प्रहर ❋ शय्या हैते उठि वसे राजा लंकेश्वर
रावण प्राचीरे उठि चाहे चारिभिते ❋ दाण्डायेछे राम-लक्ष्मण धनुर्वाण हाते
रावण वले ये वाण वन्धन नागपाश ❋ नागपाशे मुक्त हैल लंकार विनाश
मरिया ना मरे राम ए केमन वैरी ❋ अनुमाने वुझिनु मजिल लंकापुरी ८

धूम्राक्षेर युद्ध ओ पतन

दैवेर निर्व्वन्ध, रावण देखिछे विपाक ❋ धूम्राक्ष वलिया राजा घन पाड़े डाक
आज्ञामात्र आइल धूम्राक्ष महावीर ❋ राजार चरणे आसि नोआइल शिर

इतना सुनने के वाद विनतानन्दन मुस्कराया और अपने डैनों को समेट लिया। श्रीराम को प्रणाम कर वह शून्य पथ पर चला गया। रघुनाथ धनुष-वाण लेकर फिर खड़े हो गये। वदन झाड़ कर अनुज लक्ष्मण उठ कर खड़े हो गये और सारे कपि आनन्दमग्न हो गये। गरुड़ के डैनों का शब्द जहाँ तक पहुँचा वहाँ तक सारे कपि उठकर खड़े हो गये। श्रीराम-लक्ष्मण नागपाश से मुक्त हो गये—समस्त कपि श्रीरामचन्द्र की जय का घोष करने लगे ॥ ७ ॥

एक साथ जब सारे कपियों ने सिंहनाद किया तो राजा रावण बहुत घबड़ा उठे। रात के तीसरे पहर में वानरों का यह महानाद उठा तो लंकेश्वर बिस्तर पर उठकर बैठ गया। प्राचीर पर उठकर रावण चारों ओर देखने लगा। देखा राम-लक्ष्मण धनुष-वाण हाथ में लेकर खड़े हो गये हैं। रावण ने कहा, इस वाण ने नागपाश-बन्धन से इनको बाँध डाला था और उससे ये मुक्त हो गये। अब तो लंका का विनाश निश्चित है। यह राम मर कर भी नहीं मरता—यह कैसा वैरी है—अब यही अनुमान है कि लंकापुरी के बुरे दिन आ गये ॥ ८ ॥

धूम्राक्ष का युद्ध और पतन

रावण ने यह विपत्ति देखी और इसको दैव की इच्छा समझी तो उसने जोर-जोर से धूम्राक्ष को गुहारा। आज्ञा पाते ही महावीर धूम्राक्ष आया।

रावण बले तुमि हे प्रधान सेनापति ※ आजिकार युद्धे तुमि कुलाबे आरति
राज व्यवहारे तार बाड़ाय सम्मान ※ जुझिवारे अनुमति दिल गुयापान ९
राज आज्ञामात्र वीर रथे गिया चड़े ※ हाती घोड़ा ठाट सैन्य चले मुड़े मुड़े
हाती घोड़ा चले आर अगणन ठाट ※ धूलि उड़ाइया चले नाहि देखे बाट
लंकाते धूम्राक्ष वीर परम सुज्ञानी ※ यात्राकाले अमंगल देखिल आपनि
आउदर चुले भिक्षा मागिछे योगिनी ※ रथध्वजे उड़ि वैसे शकुनि गृधिनी
यात्राकाले अमंगल देखिछे अपार ※ किछुइ ना माने वीर बले मार मार १०
दुइदले मिशामिशि दृढ़ बाजे रण ※ नाना अस्त्र गाछ पाथर करे वरिषण
रुषिया धूम्राक्ष बले कोथाय तपस्वी ※ उखाड़िया मरे केन एत दूरे आसि
छाड़िया सीतार आशा फिरि जाह घर ※ मनुष्य हइया बेटा लंकार भितर
कपिगण बले बेटा चक्षु थेके अन्ध ※ मनुष्य कि सागर करिते पारे बन्ध
स्वयं विष्णु रघुनाथ बान्धिलेक सेतु ※ अवतीर्ण राक्षसेर वंशनाश हेतु

आकर राजा के चरणों पर नमन किया। रावण ने कहा, तुम प्रधान सेनापति हो, आज के युद्ध में तुम मेरी मनोकामना पूर्ण करो। राजकीय आचरण से उसके सम्मान की वृद्धि कर, संग्राम करने की अनुमति के रूप में पान-सुपारी उसके हाथों में दी ॥ ९ ॥

राजा की आज्ञा पाते ही वीर जाकर रथ पर सवार हो गया। हाथी घोड़ा और पैदल सेना के यूथों के साथ अग्रसर हुआ। हाथी, घोड़ा और अगणित सेना चलने लगी और धूल के उड़ने से पथ भी नहीं दिखाई पड़ने लगा। लंका में वीर धूम्राक्ष परम ज्ञानी माना जाता है—यात्रा के समय उसने खुद अपना असगुन देखा। खुले बालों वाली योगिनी भीख माँग रही है और गिद्ध आकर रथ-ध्वजा पर बैठ रहा है। यात्रा के समय इन असगुनों को बार-बार देखने के बाद भी वह वीर मार-मार शब्द करता हुआ युद्ध में टूट पड़ा ॥ १० ॥

दोनों दलों में मुठभेड़ हो गई और घोर युद्ध छिड़ गया—विभिन्न अस्त्र-शस्त्र, पेड़ और पत्थरों की वर्षा होने लगी। धूम्राक्ष ने क्रोधित होकर कहा, वह तपस्वी कहाँ है जो मरने के लिए इधर छिटक कर आ गया है। सीता की आशा त्याग कर अपने घर लौट जाओ—मनुष्य होकर लंका में कैसे चले आये? कपियों ने कहा, अरे आँख रहते हुये भी क्या तुम अन्धे हो, मनुष्य क्या सागर को बाँध सकता है। स्वयं विष्णु-अवतार रघुनाथ ने सेतु का निर्माण किया और राक्षसों के वंश के ध्वंस के निमित्त ही वे धराधाम पर

गड़ागड़ि जावे रावणेर दशमुण्ड ※ विभीषण उपरे धराब छत्रदण्ड
कुपिल धूम्राक्ष वीर ज्वलंत आगुनि ※ मुषल लइया एक कपिगणे हानि
मुषलेर घाये भांगे कारो माथार खुलि ※ कारो मुण्ड काटि भूमे पाड़े महाबली
खाण्डाखान काहारो मस्तके तुलि हाने ※ भंग दिल वानर अस्थिर हये रणे
हनूमान देखिल वानरगण भागे ※ दाण्डाइल हनूमान धूम्राक्षेर आगे
हनूमान बले बेटा कि नाम तोमार ※ आमार सहित युद्ध कर एकवार
राक्षस बलिल यदि तोरे आमिपाइ ※ अन्येर कि प्रयोजन तोर रक्त खाइ ११
एत यदि दुइ जने हैल गालागालि ※ दुइ वीरे युद्ध करे दौहे महाबली
हनूमान आनिल पाथर दुइ खान ※ रथेर उपरे फेलि डाके हानाहान
रथ घोड़ा सारथि करिल चूरमार ※ रथ एड़ि धूम्राक्ष धाइल आरवार
धूम्राक्षेर हाते छिल एक महागदा ※ तार आगे पाछे बाजे जयघण्टा सदा
देव दैत्य गन्धर्व्वगणेर भय लागे ※ गदा हाते करि गेल हनूमान आगे
दोहातिया बाड़ि मारे हनूमानेर बुके ※ हनूमानेर बुक येन वज्र हेन देखे
बुकेते ठेकिया गदा हैल खान खान ※ कोप करि पासरे आपना हनूमान

अवतीर्ण हुए हैं। रावण के दस मुंड जमीन पर लुढ़केंगे और विभीषण के सिर पर राजछत्र की छाया होगी। इस बात पर वीर धूम्राक्ष ज्वलन्त-अग्नि सा क्रोधित हुआ और एक मूसल लेकर कपियों पर दे मारा। मूसल के प्रहार से किसी का सिर टूट गया तो किसी का मुंड कट कर जमीन पर जा गिरा। महाबली ने खड्ग उठाकर किसी के सिर पर दे मारा। सारे वानर घबड़ाकर तितर-बितर होने लगे। हनुमान ने देखा कि वानर भाग रहे हैं तो वह धूम्राक्ष के सामने जाकर खड़ा हो गया। हनुमान ने कहा, अरे दुष्ट, तेरा क्या नाम है, जरा मेरे साथ भी तो लड़ कर देख ले। राक्षस ने कहा, तुझको अगर पा जाऊँ तो मुझे दूसरे की क्या जरूरत, मैं तेरा ही रक्त पी जाऊँ ॥ ११ ॥

दोनों में जब इस प्रकार का गाली-गलौज हो चुका तो दोनों महाबली युद्ध में जुट गए। हनुमान दो पत्थर उठा लाये और रथ पर फेंके। रथ, घोड़ा और सारथी चूर-चूर हो गए और धूम्राक्ष रथ से कूद कर अलग खड़ा हो गया। धूम्राक्ष के हाथों में एक महागदा थी और उसके आसपास सदा जय-घंटा बजा करता था जिससे देव-दैत्य और गन्धर्वगण सदा भयभीत रहते थे। हाथ में गदा लिये वह हनुमान के सम्मुख गया और दोनों हाथों से हनुमान के वक्ष पर उस गदा का प्रहार किया। लेकिन हनुमान का वक्ष मानों

हनूमान बले गदा गेल रसातल ❊ एखन आइस आमि बुझि तोर बल
एक बज्र चापड़ मारिल तार शिरे ❊ कातर हइया पड़े भूमिर उपरे
हनूमान महावीर संग्रामेते शूर ❊ लाथि मारि धूम्राक्षेर देह करे चूर
पड़िल धूम्राक्ष वीर समरे दुर्ज्जय ❊ सकल वानर घोषे राम जय जय
धूम्राक्षेर सेना छिल दुइ अक्षौहिणी ❊ पलाय सकले लये निज निज प्राणी
भग्न पाइक कहे गिया रावण गोचर ❊ धूम्राक्ष पड़िल वार्त्ता शुन लंकेश्वर१२

अकम्पनेर युद्ध ओ पतन

धूम्राक्ष पड़िल, वार्त्ता पाइल रावण ❊ अकम्पन बलि डाक छाड़े घनेघन
आज्ञामात्र उपनीत अकम्पन वीर ❊ राजार निकटे आसि नोङाइल शिर
रावण बले शुन अकम्पन सेनापति ❊ आजिकारि युद्धे तुमि कुलाबे आरति
वीर मध्ये वीर तुमि सकलेते जाने ❊ त्रैलोक्य जिनिते तुमि पार एक दिने
तोमार सम्मुखे जुझे आछे कोन जन ❊ हाते करे बान्धि आन श्रीराम लक्ष्मण
मधुर वचने राजा अकम्पने तोषे ❊ जुझिते चलिल वीर राजार आदेशे

वज्र सा कठोर है—गदा उससे टकरा कर खंड-खंड हो गई। हनुमान ने अब कहा, तेरी गदा तो चूर-चूर हो गयी, अब आ जा, देखें तुझमें कितना बल है। इतना कहकर उसने एक वज्र-सरीखा-झाँपड़ उसके सिर पर मारा। झाँपड़ खाकर वीर जमीन पर जा गिरा। महावीर हनुमान संग्राम में शूरवीर है—लात मार-मार कर उसने धूम्राक्ष का शरीर चूर-चूर कर दिया। समर में दुर्जय वीर धूम्राक्ष का पतन हुआ। सभी बानर श्रीराम की जय घोषित करने लगे। धूम्राक्ष की दो अक्षौहिणी सेना थी, उनके पैर उखड़ गए और वे अपने-अपने प्राण लेकर भागने लगे। भग्नदूत ने जाकर रावण को सूचना दी, हे लंकेश्वर! रणक्षेत्र में धूम्राक्ष का पतन हुआ ॥ १२ ॥

अकम्पन का युद्ध और पतन

रावण को जब सूचना मिली कि धूम्राक्ष का पतन हुआ है तो उसने जोर-जोर से अकम्पन का नाम लेकर पुकारा। आज्ञा पाते ही वीर अकम्पन राजा के सामने आकर सिर झुका कर खड़ा हो गया। रावण ने कहा, हे सेनापति अकम्पन! आज के युद्ध में तुम मेरी मनोकामना पूरी करोगे। सभी जानते हैं कि तुम वीरों में वीर हो, एक दिन में तीनों लोक जीत सकते हो। ऐसा कौन है जो तुमसे जूझ सकता हो? राम-लक्ष्मण के हाथ-पैर बाँध कर ले आओ। मीठी-मीठी बातों से राजा ने अकम्पन को तुष्ट किया। राजा के

सारथि योगाय रथ विचित्र गठन ❋ससैन्ये साजिया चले वीर अकम्पन
आचम्बिते गृधिनी पड़िल रथध्वजे ❋ उखाड़िया पड़े घोड़ा जाय मन्द तेजे
अकम्पन नाम तार कम्पे ना कखन ❋ यात्राकाले हस्तपद कम्पे घन घन
यात्राकाले अमंगल देखिल अपार ❋ मार मार शब्दे गेल पश्चिम दुयार
दुइ सैन्ये मिशामिशि दृढ़ बाजे रण ❋ नाना अस्त्र गाछ पाथर करे वरिषण
दुइ सैन्ये महायुद्ध हइल अपार ❋ रणेर धूलिते दशदिक् अन्धकार
अन्धकारे केह नाहि चिने आत्मपर ❋ राक्षसे राक्षस मारे वानरे वानर
रक्ते रांगा हैल बाटे धूला नाहि उड़े ❋ देखादेखि युद्ध करे दुइ दले पड़े
महेन्द्र देवेन्द्र आर कुमुद सेनापति ❋ रण देखि तिन वीर एल शीघ्रगति
तिन वीर आसि करे वृक्ष वरिषण ❋ सम्मुख संग्रामे स्थिर नहे तिन जन
भंग दिया तिन वीर पलाइल त्रासे ❋ हाते धनु दाण्डाइया अकम्पन हासे
नील वीर बड़धीर सकले बाखाने ❋ भंग दिया पलाइल अकम्पन रणे
नल वीर करेछिल एका सेतुबन्ध ❋ अकम्पन वाणे तार चक्षु हैल अन्ध

आदेश से वीर लड़ने चल पड़ा। सारथी उसके लिए विचित्र बनावट का रथ ले आया। वीर अकम्पन सजधज कर अपनी सेना के साथ चल पड़ा। अचानक ही रथ की ध्वजा पर गिद्ध आकर बैठ गया। घोड़े के पैरों में ठोकर लगी और वह धीरे-धीरे चलने लगा। चूँकि वह कभी कम्पित नहीं होता तभी उसका नाम अकम्पन पड़ा था। आज यात्रा के समय उसके हाथ-पैर काँपने लगे। यात्रा के समय उसने असंख्य अमंगल-सूचक लक्षण देखे। मार-मार शब्द करता हुआ वह पश्चिमी द्वार पर गया। दोनों सैन्य आपस में गुथ गए और युद्ध छिड़ गया। तरह-तरह के अस्त्र और पेड़-पत्थर बरसने लगे। दोनों सेनाओं में महायुद्ध हुआ। रण की धूल से चारों ओर अँधियारा छा गया। अँधियारे में अपना-पराया समझ में नहीं आता। वानर, वानर को, और राक्षस, राक्षस को मारने लगे। खून से जब धूल दब गई तो दोनों दल एक दूसरे को देख कर लड़ने लगे। महेन्द्र, देवेन्द्र और कुमुद—तीनों वीर सेनापतियों ने रण होते देखा तो शीघ्रगति से इधर चले आये। तीनों वीरों ने आकर पेड़ बरसाना शुरू कर दिया। सम्मुख-संग्राम में इन तीनों वीरों के पैर उखड़ गये और वे भय से भागने लगे। हाथ में धनुष लेकर अकम्पन हँसने लगा। सभी लोगों का कहना है कि वीर नील बड़ा धैर्यशील है। वह भी अकम्पन के साथ युद्ध में भाग खड़ा हुआ। नलवीर ने अकेले सेतुबन्ध का निर्माण किया था। अकम्पन के वाण से उसकी एक आँख अन्धी

शरभंग पलाइल पेये अपमान ❋ रणेते प्रवेश करे वीर हनूमान १३
हनूमान बले, बेटा पलाबि कोथाय ❋ एकचड़े यमालये पाठाब तोमाय
पाइक मारिया बेटा जिनि याह रण ❋ अवश्य आमार हाते तोमार मरण
एत यदि दुइ वीरे हैल गालागालि ❋ दुइ जने युद्ध बाजे दोंहे महाबली
आशीकोटि वाण एड़े वीर अकम्पन ❋ वाणे अचेतन हैल पवननन्दन
संज्ञा लभि उठे पुनः वीर हनूमान ❋ क्रोधे आने शालगाछ दिया एक टान
वाहुबले एड़े गाछ वीर हनूमान ❋ अकम्पन वाणे गाछ हैल दुइ खान
जिनिते ना पारे हनू भावये अन्तरे ❋ लाफ दिया पड़े तार रथेर उपरे
चुलेते धरिया तारे मारिल आछाड़ ❋ भांगिल माथार खुलि चूर्ण हैल हाड़
अकम्पने पड़े यदि संग्रामे दुर्ज्जय ❋ सकल वानर बले राम जय जय
भग्नपाइक कहे गिया रावण गोचर ❋ अकम्पन पड़िल शुनह लंकेश्वर १४

(वज्रदंष्ट्रेर युद्ध ओ पतन)

अकम्पन-मृत्यु शुनि चरेर बदने ❋ किछु भय उपजिल रावणेर मने
हृदये करिया विवेचना बहुतर ❋ युद्ध विना हित नाहि देखिल अपर

हो गई। अपमानित होकर शरभंग भी भाग खड़ा हुआ। तब रण में वीर हनुमान ने प्रवेश किया ॥ १३ ॥

हनुमान ने कहा, अरे नीच, तू भागेगा कहाँ। एक ही झोंपड़ में तुझे यमालय भेज दूँगा। छोटे सैनिकों को मार कर तू रण जीत कर जा रहा है—बेशक तेरी मौत मेरे ही हाथों लिखी हुई है। दोनों वीरों में जब गाली-गलौज खत्म हुआ तो दोनों महाबलियों में लड़ाई छिड़ गई। वीर अकम्पन ने अस्सी करोड़ वाण फेंके—तो वाण से पवननन्दन अचेत हो गये। सुधि पाकर फिर वीर हनुमान उठ कर खड़े हो गए और एक साखू का पेड़ उखाड़ लाये। बाहों की शक्ति से हनुमान ने वह पेड़ फेंका—अकम्पन ने अपने वाण से उसके दो टुकड़े कर दिये। किसी तरह से यह काबू में नहीं आ रहा है—हनुमान सोच में पड़ गये। फिर छलाँग मारकर वह रथ पर जा धमके। बालों से पकड़ कर उसको उठाकर दे पटका। उसका सिर टूट गया और हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं। संग्राम में दुर्जेय अकम्पन का जब पतन हुआ तो सभी वानर राम रघुनाथ का जय-घोष करने लगे। भग्नदूत ने जाकर लंकेश्वर से कहा, रणक्षेत्र में अकम्पन का पतन हो गया है ॥ १४ ॥

वज्रदंष्ट्र का युद्ध और पतन

चर के मुँह अकम्पन की मृत्यु का समाचार सुनकर रावण के मन में

तबे अग्रे देखि वज्रदंष्ट्र निशाचरे ❋ कहिते लागिल तारे अति समादरे
वज्रदंष्ट्र तुमि हओ सुपण्डित रणे ❋ तोमार समान वीर ना देखि भुवने
धनुक धरिया तुमि दाँड़ाले समरे ❋ निजे इन्द्र सम्मुख हइते नारे डरे
तोमारे सहाय करि आमि देवगणे ❋ पराजय करियाछि अनायासे रणे
अपर कि कब सर्व्वनाशक शमने ❋ तोमार साहाय्ये जिनियाछि अयतने
तुमिह समरे जाह सेनानी हइया ❋ सुग्रीव लक्ष्मण रामे आइस वधिया १५
एत वाणी शुनि वज्रदंष्ट्र निशाचर ❋ प्रणमिया कहितेछे रावण गोचर
महाराज एइ आमि चलिलाम रणे ❋ आपनि परमानन्दे थाकुन भवने
बधिब तोमार शत्रु सेइ दुइ नरे ❋ सुग्रीव मारुति आर मुख्य कपिवरे
आपनि मंगल-चिन्ता करिया आमार ❋ गृहे थाकि सीता लये करुन विहार १६
तबे बलाध्यक्ष करि सेनार साजन ❋ दशानन आगे आसि कैल निवेदन
ताहा शुनि प्रणाम करिया दशानने ❋ वज्रदंष्ट्र वीर यात्रा करिलेक रणे
करिल विविध मते मंगलाचरण ❋ बान्धिलेक निज अंगे अनेक रक्षण
परिलेक अंगे साना माथाय टोपर ❋ पृष्ठेते बान्धिल तूण पूरि तीक्ष्ण शर

कुछ भय का संचार हुआ। मन ही मन उसने विवेचन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि युद्ध के विना हित नहीं। सामने वज्रदंष्ट्र निशाचर को देखकर उससे रावण आदरपूर्वक कहने लगा, वज्रदंष्ट्र ! तुम रण में विचक्षण हो। तुम्हारे समकक्ष वीर इस संसार में नहीं। समर में यदि तुम धनुष लेकर खड़े हो जाओ तो स्वयं इन्द्र भी सामना करने से डरेगा। तुम्हारी सहायता से मैंने रण में अनायास ही देवताओं को पराजित किया था। दूसरे की क्या चर्चा करूँ तुम्हारी सहायता से मैंने सर्व-नाशक यमराज पर भी अनायास विजय प्राप्त की थी। तुम ही सेनापति बन कर युद्ध में जाओ और राम, लक्ष्मण और सुग्रीव का वध करके चले आओ ॥ १५ ॥

इतना सुनकर वज्रदंष्ट्र निशाचर ने प्रणाम कर रावण से कहा, महाराज ! मैं रण को चला, आप आनन्द से अपने भवन में रहें। मैं आपके शत्रु दोनों मानवों का वध करूँगा—सुग्रीव, मारुति जैसे मुख्य-मुख्य वानरों का भी। आप मेरी मंगल-कामना करते हुए घर पर रह कर सीता के साथ विहार करें ॥ १६ ॥

सेनापति ने सेना को सज्जित कर दशानन के सम्मुख आकर निवेदन किया। सुनकर दशानन को प्रणाम कर वीर वज्रदंष्ट्र ने रण के लिए प्रस्थान किया। तरह-तरह का मंगलाचरण किया और अपने अंगों पर कवच चढ़ा लिया। बदन पर दुर्भेद्य कवच पहन लिया और सिर पर शिरस्त्राण। पीठ

आर नाना अस्त्र शस्त्र करिला बन्धन ❋ रथेर उपरे गिया कैल आरोहण
किवा तार रथ अति मनोहर हय ❋ अलंकृत दिव्य दिव्य घोटके वहय
तार रथ दुइ दिके जाय मनोरम ❋ द्विसहस्र सप्तति संख्यक तुरंगम
घोड़ार पश्चाते दुइ सहस्र सप्तति ❋ जाइतेछे मदमत्त हाती मन्दगति
मध्येते याइछे बज्रदंष्ट्र दिव्य रथे ❋ एक लक्ष धनुर्द्धर जाय अग्रपथे
आर कत ढाली शूली तोमरी खर्परी ❋ जाइतेछे रथे गजे घोटकेते चड़ि
बाजितेछे सहस्र सहस्र रणभेरी ❋ निनाद छाड़ये घोड़ा हाती वेरि वेरि
सेइ सब शब्दे लंका करि दलमाल ❋ रणे जाय बज्रदंष्ट्र येन महाकाल१७
जाइते जाइते देखे नाना अमंगल ❋ अग्रेते पड़ये तार उल्का झलमल
मुख दिया अग्निशिखा करिया वमन ❋ शिवा सब करितेछे अशिब निःस्वन
रथेर घोड़ार नेत्रे पड़े अश्रुजल ❋ पुनः पुनः त्याग करे तारा मूत्रमल
ताहा देखियाओ बज्रदंष्ट्र अशंकित ❋ कहितेछे सैन्यगणे अत्यंत गर्व्वित
अमंगल देखि केह ना करो चिन्तन ❋ अतिमन्द शुभकर, कहे सर्व्वजन
आर शुन, कि करिबे एइ अमंगले ❋ सब अमंगल विनाशिब बाहुबले

कर पैने बाणों से भरा तरकस बाँध लिया। और भी तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र से वह लैस हो गया। रथ पर जाकर वह सवार हो गया। उसका रथ बड़ा ही दिव्य और मनोहर है जिसको अलंकारों से सुसज्जित घोड़े खींच रहे हैं। उसका रथ दोनों दिशाओं में जाने वाला रथ है। साथ में दो हजार सत्तर घुड़सवार चले और घोड़ों के पीछे दो हजार सत्तर मदमत्त हाथी मन्दगति से चले। बीच में बज्रदंष्ट्र दिव्य रथ पर सवार चल पड़ा। अग्रपथ पर एक लाख धनुर्धर चल पड़े। कितने ही ढाली, शूली, तोमरी और खर्परी सैनिक रथ-गज और अश्व पर सवार चल पड़े। हजारों रणभेरियाँ बजने लगीं। घोड़ा और हाथी बार-बार हिनहिनाने और चिंघाड़ने लगे। इन सब शब्दों से लंका को आन्दोलित करता हुआ बज्रदंष्ट्र रण के लिए महाकाल की तरह चल पड़ा ॥ १७ ॥

चलते समय उसने अमंगल-सूचक विभिन्न लक्षण देखे। उसके सामने आग उगलती हुई उल्का गिरी। सियार अमंगल-जनक ध्वनि करने लगे। रथ के घोड़े की आँखों से आँसू टपकने लगे। और वे बार-बार मल-मूत्र त्याग करने लगे। यह देखकर भी बज्रदंष्ट्र निडर बना रहा और अपनी सेना से सगर्व कहने लगा, अमंगल देखकर चिन्ता मत करो। सभी लोगों का कहना है कि बहुत बुरे लक्षण भी शुभंकर होते हैं। और यह भी सुन लो, यह अमंगल हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं, मैं तो बाहुबल से इन अमंगलों का नाश करूँगा।

देखिबि सकले तोरा विक्रम आमार ❊ राजार सकल शत्रु करिब संहार
आजि मोर वाणहत कपिर आमिषे ❊ निशाचर पिण्ड दिवे वान्धवे हरिषे
आमिह बधिया सुग्रीवादि कपिगणे ❊ भक्षण करिब निजे श्रीराम लक्ष्मणे
ब्रज्रदंष्ट्र नाम मोर बज्र हेन दाड़ ❊ चर्व्वण करिब आमि ताहादेर हाड़
तोरा सबे भय तजि चलह समरे ❊ शत्रुवध करि शीघ्र फिरि जाव घरे
एत कहि बज्रदंष्ट्र सैन्य हुहुंकारे ❊ उपनीत हैल आसि उत्तरेर द्वारे१८

तबे देखि ताहारे, सेइत द्वारे प्लवंगमगण।
तारा, तरुशिखरी करेते धरि रहे सुखिमन॥
ताहा निरखि तारा, मेघेर धारा, हेन बर्षे वाण।
ताहे वानर गणे, विन्धि सघने, कैला खान खान॥
तबे कुपित मति, वानर तति वृक्षशिला मारि।
करे कुलिश दन्त, सेनार अन्त, गभीर हाँकारि॥
ताहे त्रासित मन, कौणपगण पलायन करे।
ताहा देखि दुरन्त, वजरदन्त, वरिषये शरे॥
तार वाणेर तूणे, धनुक गुणे, कर्ण वारे वारे।
कर, भ्रमण करे, केह ताहारे, लक्षिते ना पारे॥

तुम सब लोग मेरा पराक्रम देख लेना, राजा के सारे शत्रुओं का मैं संहार करूँगा। आज मेरे वाणों से मरे कपियों के माँस से, निशाचर अपने पुरखों को पिंड चढ़ाएँगे। मैं सुग्रीव आदि कपियों का निधन कर स्वयं श्रीराम और लक्ष्मण का भक्षण करूँगा। मेरा नाम वज्रदंष्ट्र है, वज्र जैसे कठोर मेरे दाँत हैं—मैं उन लोगों की हड्डियाँ चबा लूँगा। तुम लोग सारा भय त्याग कर युद्ध में चलो, झटपट युद्ध समाप्त कर घर लौट आना है। इतना कहकर वज्रदंष्ट्र ने सैन्य में हुँकार मारी और उत्तरी द्वार पर वह पहुँच गया॥ १८॥

तब उसको द्वार पर देखकर वानर-समूह हाथों में वृक्षों की चोटियाँ थामे बहुत आनन्दित हुआ। यह निरख कर ये लोग वर्षा की धारा जैसे वाण बरसाने लगे जिससे वानर लोग आहत होकर टुकड़े-टुकड़े होने लगे। तब क्रोध में आकर कपि-समूह वृक्ष और शिला फेंक-फेंक कर मारने और कुलिशदन्त की सेना का अन्त करने लगे। इससे घबड़ाकर राक्षस भागने लगे तो वज्रदन्त ने वाण बरसाना शुरु कर दिया। उसका हाथ कभी तो तूण के तीरों पर, तो कभी धनुष की डोरी पर इतनी तेजी से चलने लगा कि दृष्टि में न आता था। उसके वाणों से सभी वानर बेहाल होने लगे—उनके खून

तार शर-निकरे, यत वानरे, जर्ज्जर करिल।
ताहे, रुधिर धारे, रणभितरे तटिनी हइल ॥
ताहे, प्राण छाड़िया, जाय भासिया, भल्ल कपिगण।
ताहे काक शृगाली, टानिया तुलि, करये भक्षण ॥
सेइ बजरदन्त, शरेते अन्त देखि आत्मकूले।
यत वानर वृन्द त्यजिया द्वन्द्व, भागे सिन्धुकूले ॥
ता'हा करिया दृष्ट, हइया रुष्ट, कपि चूड़ामणि।
निजे, चलिला रणे, करि सघने, घोर सिंह ध्वनि ॥
शुनि, सेइ त रव, कौणप सब, मूर्च्छित हइल।
कत घोटक करी भूमिते पड़ि, चीत्कार करिल ॥
परे तारे देखिया, त्रास पाइया, बज्रदंष्ट्र सेना।
तारा पलाये जाय, पाछे ना चाय (वारण) शोनेना ॥
तबे ताहा निरखि, मनेते रोखि ब्रज्रदंष्ट्र वीर।
सेइ तपनसुते अतिवेगेते, विन्धे बहुतीर ॥
ताहे कुपित मति, कपिर पति, चपेट प्रहारे।
तार वाम डाहिने, घोटक गणे निला यमद्वारे ॥
आर दुइ पाशेते, सारिक्रमेते, यत करी छिल।
मारि गाछेर वाड़ि, यमेर वाड़ी, तादिगे प्रेरिल ॥
परे शाल उपाड़ि, घूर्णित करि तपनकुमार।
सेइ बज्रदशन प्रतिक्षेपण कैल हुहुंकार ॥

से नदियाँ बहने लगीं जिनमें कपि और रीछ बहने लगे। कौवे और सियार उनको खींच कर नोच-नोच कर खाने लगे। उस वज्रदन्त के शरों से अपनी सारी बिरादरी का अन्त होते देखकर युद्धक्षेत्र छोड़कर सब वानर समुद्रतट की ओर भागने लगे। यह देखकर घोर रोष में आकर कपियों के शिरोमणि सुग्रीव स्वयं रण में कूद पड़े और सिंहनाद करने लगे। वह निनाद सुनकर सारे निशाचर मूर्च्छित होने लगे। कितने ही घोड़े और हाथी जमीन पर लोट कर चिल्लाने लगे। फिर उसको देखकर वज्रदंष्ट्र की सेना भागने लगी। वे न तो पीछे पलट कर देखते और न निषेध मानते। यह देखकर वज्रदंष्ट्र मन में हौसला लाकर सूर्य-तनय सुग्रीव को वाणों से बिंधने लगा। तेजी से उसने बहुत से वाण चलाये। इससे बिगड़ कर वानर-पति ने जो झाँपड़ मारा तो दाहिने और बाएँ सारे घोड़े मर गये और दोनों बाजुओं में कतारों में लगे जितने हाथी थे उन पर पेड़ों से प्रहार कर उनको यमालय

सेइ रजनीचर, छाड़िया शर, शत परिमाण ।
सेइ शाल तरुरे, काटिया पाड़े करि खानखान ।।
ताहा निरखि सूर्य्य-तनय शौर्य्य, करि प्रकाशन ।
एक वृहत् शिला तुलिया निला पर्व्वत येमन ।।
तारे वजरदन्त, रथेर अन्त, करिते छाड़िल ।
सेइ ताहा देखिया, रथ छाड़िया, भूमिते नामिल ।।
सेइ घोर पाषाणे, ताहार याने, सुग्रीव भांगिला ।
आर घोटक साते ध्वज सहिते सारथि नाशिला ।।
परे एक तरुरे, धरिया करे, करिया घूर्णित ।
सेइ वजरदंत, सेनार अन्त, कैल राममित ।।
तेंह गिरिर शृंग, करिया भंग, छाड़िया हुंकार ।
बज्रदशन वीरे, मारिते परे, हैल आगुसार ।।
ताहा निरखि सेह, विकट देह, गदा घुराइया ।
वीर तपनसुते, मारिला माथे, गर्ज्जन करिल ।।
किवा सुग्रीव शिरे, ठेकिया भरे, सेइ गदादण्ड ।
एकि अश्रुत कथा, कर्कटी यथा, हैल शतखण्ड ।।
तवे कपि-भूपति, ताहार प्रति, सेइ गिरि-चूड़ा ।
निज बाहुर जोरे, मारिया शिरे, करिलेन गुँड़ा ।।

भेज दिया। फिर सूर्य-कुमार ने एक शाल-वृक्ष उखाड़ कर उस वज्र-दशन की ओर घूमाते हुए फेंका। उस रजनीचर ने सैकड़ों वाण फेंक कर उस शाल-वृक्ष को खंड-खंड कर डाला। यह देखकर सूर्य-तनय ने शूरवीरता प्रदर्शित करते हुए एक वृहद् शिलाखंड उठा लिया जो पर्वत के आकार का था। उससे वज्र-दन्त का रथ चूर्ण-विचूर्ण हो गया और वह रथ छोड़ कर भूमि पर उतर आया। उस भयानक पाषाण के आघात से अपनी ध्वजा के साथ रथ, उसका घोड़ा और सारथी का विनाश हुआ। बाद में एक वृक्ष को हाथ में लेकर घुमाते हुए राम-मित्र ने वज्रदन्त की सेना का नाश करना आरम्भ कर दिया। फिर एक पर्वत का शिखर उखाड़ कर हुँकार करते हुए वह वज्र-दशन को मारने के लिए बढ़ा। यह निरख कर उस वीर ने गरजते हुए सूर्य-पुत्र के सिर पर विकटाकार गदा दे मारा। लेकिन आश्चर्य की बात है कि सुग्रीव के सिर से टकराकर वह गदा ककड़ी के फल की तरह खंड-खंड हो गया; और वानर-राज ने वह गिरि-शिखर उसके सिर पर मार कर उसको चूर्ण-चूर्ण कर दिया। लहूलुहान होकर वीर, भूमि पर जा

ताहे रुधिर धार, बदने तार, बहे अनिवार।
सेह पड़िल भूमे, देखिते यमे, गेल प्राण तार ॥
तबे बज्रदशन, पाइल मरण, देखि तार सेना।
तारा, त्रासित हये, जाय पलाये, फिरिया चाहे ना ॥
तबे समर जिति, रावण पति, करि सिंहनाद।
दिल आपन सखा, निकटे देखा मनेते आह्लाद ॥
शुनि ताहार वाणी, श्री रघुमणि, करि प्रशंसन।
दिला बाहु पसारि, हृदय भरि, तारे आलिंगन ॥ १९

प्रहस्तेर युद्ध ओ पतन

एखानेते भग्नदूत जाइया लंकाय ❋ बज्रदंष्ट्र मृत्युकथा कहिला राजाय
बज्रदंष्ट्र पड़े रणे रावण चिन्तित ❋ बलिया प्रहस्त मामा डाकिल त्वरित
रावण बले मामा तुमि राज्येर ठाकुर ❋ तिन कोटि वृन्द ठाट तोमार प्रचुर
तुमि आमि कुम्भकर्ण आर इन्द्रजित् ❋ एइ कयजन आछि समरे पण्डित
विशेष अधिक तुमि जानि चिरदिन ❋ करिया अनेक युद्ध हयेछ प्रवीण
प्रतापे प्रचण्ड ताहे जान बहु सन्धि ❋श्रीराम लक्ष्मणे आन हाते गले बान्धि२०
रावणेर कथा शुनि प्रहस्तेर हास ❋ श्रीराम लक्ष्मणे रणे करिब विनाश

गिरा और यमलोक चला गया। फिर वज्रदशन की मृत्यु हो गई सुनकर उसकी सेना त्रास से भागने लगी और पीछे पलट कर भी नहीं देखा। समर में जीत कर वानरपति ने सिंहनाद किया और अपने मित्र राम के सम्मुख सोल्लास जा पहुँचा। उसकी बातें सुनकर रघुमणि ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और बाँहें पसार कर उसको आलिंगन-बद्ध कर लिया ॥ १९ ॥

प्रहस्त का युद्ध और पतन

इधर भग्नदूत ने लंका में जाकार राजा रावण से वज्रदंष्ट्र की मृत्यु के बारे में बताया। वज्रदंष्ट्र रण में काम आया सुनकर रावण चिन्तित हो उठा। उसने प्रहस्त मामा को पुकारा। कहा, मामा तुम राज्य में सभी के पूज्य हो, तुम्हारे अधीन तीन करोड़ वृन्द सेना मौजूद है। तुम, मैं, कुम्भकर्ण और इन्द्रजीत—यही चारजने युद्ध में पंडित हैं। खासतौर से तुमने कई युद्ध किये हैं, अत: युद्ध में प्रवीण भी हो। प्रचंड पराक्रमी और काफी कला-कौशल में भी दक्ष हो। श्रीराम-लक्ष्मण को गला धरकर बाँध लाओ ॥ २० ॥

रावण की बातें सुनकर प्रहस्त हँसने लगा। श्रीराम-लक्ष्मण का विनाश मैं रण में करूँगा। मेरे रहते हुए क्यों किसी दूसरे को भेजते हो। अभी

आमि आछि रणे केन प्रेर अन्यजने ❋ एखनि धरिया दिब श्रीराम लक्ष्मणे
आगे आमि तोमारे बलेछि युक्ति सार ❋ सीता नाहि दिब युद्ध करिब अपार
अ-वानर अ-राम करिब धरातल ❋ दशानन बले, मामा, जानि तव बल
अष्ट अंगे पर मामा रत्न अलंकार ❋ युद्ध जिनि एले मामा सकलि तोमार२१
रावणेर कथा केह लंघिते ना पारे ❋ ससैन्य प्रहस्त जाय युद्ध करिवारे
चारि वीर अग्रे जाय हाते धरि धनु ❋ यज्ञधूम महानाद कोपन महाहनु
देवगण स्थिर नहे याहार विवादे ❋ हेन सब वीर धाय संग्रामेर साधे
साजिया आइल सैन्य प्रहस्तेर पाश ❋ सवारे प्रहस्त वीर दितेछे आश्वास
राम लक्ष्मणेर आजि अवश्य मरण ❋ शकुनि गृधिनी उड़े ढाकिल गगन
प्रहस्तेर सैन्ये दशदिक् अन्धकार ❋ मार मार करिया चलिल पूर्व्वद्वार
दुइ सैन्ये मिशामिशि दृढ़ बाजे रण ❋ नाना अस्त्र गाछ पाथर करे बरिषण२२
प्रहस्तेर सेनापति मुख्य चारिजन ❋ हाते धनु आइल ये करिवारे रण
युझिवार काज थाक देखि चारि वीर ❋ भंग दिल वानर संग्रामे नहे स्थिर
पूर्व्व द्वारे दृढ़तर हैल गण्डगोल ❋ तिन द्वारे थाकि शुने कटकेर रोल

श्रीराम-लक्ष्मण को पकड़ कर ला दूँगा। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि सीता को नहीं दूँगा और घमासान लड़ाई लड़ूँगा। धरती को वानर-शून्य और श्रीरामचन्द्र-शून्य बना दूँगा। दशानन ने कहा, मामा तुम्हारी शक्ति के बारे में मैं भलीभाँति जानता हूँ। तुम आठों अंगों में अलंकार पहन लो मामा! युद्ध जीत कर लौटने पर सभी कुछ तुम्हारा है॥ २१॥

रावण की बात को कोई टाल नहीं सकता है। अपनी सेना के साथ प्रहस्त लड़ने के लिए चला। चार वीर हाथों में धनुष लेकर आगे-आगे चले— यज्ञधूम, महानाद, कोपन और महाहनु। जिनके साथ संग्राम में देवता भी स्थिर नहीं रह पाते ऐसे ये चारों वीर संग्राम करने के लिए लपके। सारा कटक सुसज्जित होकर प्रहस्त के पास आया। सभी को प्रहस्त वीर आश्वासन देने लगे। आज तो राम-लक्ष्मण को निश्चित रूप से मरना है। गिद्ध और चीलों ने आकाश ढक लिया है। प्रहस्त की सेना के अभियान से दशों दिशाएँ अन्धकारमय हो गईं। मार-मार शब्द करते हुए वे पूर्वी द्वार की ओर चल पड़े। दोनों सेनाएँ आपस में घुलमिल गईं और घमासान रण ठन गया। तरह-तरह के हथियार, पेड़ और पत्थरों की वर्षा होने लगी॥ २२॥

प्रहस्त के जो चार मुख्य सेनापति थे वे हाथों में धनुष लेकर युद्ध करने आये। चार वीरों को देखकर युद्ध करना तो दरकिनार, सारे बन्दर भाग खड़े हुए। पूर्वी द्वार पर घनघोर कोलाहल होने लगा। तीन द्वारों पर वानरों

तिन द्वारे चारि वीर आछिल प्रधान ※ महेन्द्र देवेन्द्र ये अंगद हनुमान
पूर्व्व द्वारे चारि वीर आइल शीघ्रगति ※ नीलेर सपक्ष हैल चारि सेनापति
चारि वीर आसि करे वृक्ष वरिषण ※ भंग दिल राक्षस सहिते नारे रण
प्रहस्तेर चारि वीर देखि दूर हैते ※ रणते प्रवेश करे धनुर्व्वाण हाते
महेन्द्र देवेन्द्र ओ अंगद हनुमान ※ चारि वीरेर काड़ि निल धनु चारिखान
हाँटुर चापान दिया चारि धनु भाँगे ※ मालसाट दिया गेल चारि वीर आगे
कुपिया अंगद वीर छाड़े सिंहनाद ※ लाथिर चोटे मारिल राक्षस महानाद२३
महाहनू हनूमाने दोंहे बाजेरण ※ महाहनू चेपे धरे पवननन्दन
करिया पाथालि कोला लये गेल दूर ※ कपटे कहिछे हनू वचन मधुर
तोर नाम महाहनू आमि हनूमान ※ मितालि करिब नाम मिलिल समान
दुइ मिता छोट बड़ के हय केमन ※ वारेक करिया युद्ध बुझिब दुजन
शुनिया त महाहनू बलये तरासे ※ मित्र सने युद्ध करा युक्ति ना आइसे
हनूमान बल, कर बाचिबार आश ※ तिलेक विलम्ब नाहि करिब विनाश
राक्षसेर संगे मोर किसेर मितालि ※ बज्रमुष्टि मारिया भांगिब माथार खूलि

को वह कोलाहल सुन पड़ा। तीन द्वारों पर चार प्रधान वीर थे—महेन्द्र, देवेन्द्र, अंगद और हनुमान। चारों वीर तुरन्त शीघ्रगति से पूर्वी द्वार पर चले आये। नील के पक्ष में चार सेनापति आ गये। चारों वीरों ने आकर वृक्ष फेंकना शुरू कर दिया तो राक्षसों के पैर उखड़ गये, रण से भाग खड़े हुए। दूर से दिखाई पड़ा कि धनुष-वाण हाथों में लेकर प्रहस्त के चार वीर रणक्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। महेन्द्र, देवेन्द्र, अंगद और हनुमान—इन चारों ने उन चार वीरों के हाथों से धनुष छीन कर उनको घुटनों के नीचे दबाकर तोड़ डाला। ताल ठोकते हुए चारों वीर आगे बढ़ गये। अंगद वीर ने क्रोध से सिंहनाद किया और एक ही पदाघात से राक्षस महानाद को मार डाला ॥ २३ ।

महाहनु और हनुमान में अब घनघोर लड़ाई छिड़ गई। महाहनु को पवननन्दन ने धर दबाया। उसको दोनों बाहों से गोद में उठाकर वह दूर ले गये। कपट से हनुमान मधुर बचन बोलने लगे, तुम्हारा नाम महाहनु है और मेरा नाम हनुमान है; दोनों हमनाम हैं इसलिए हम एक दूसरे के मित्र बन जाएँ। दोनों मित्र हैं लेकिन कौन छोटा है और कौन बड़ा है यह जानने के लिए हमलोग लड़ेंगे। सुनकर महाहनु ने भय से कहा, मित्र से युद्ध करना तो उचित नहीं होगा। हनुमान ने कहा, तू जीने की आशा लगाये हुए है, रुक, क्षणभर की देर नहीं, तेरा विनाश करता हूँ। राक्षस के साथ भला मेरी

एत बलि हनूमान कसे मारे चड़ ❊ भूमे पड़े महाहनू करे धड़ फड़ २४
महाहनू पड़िल रुषिल यज्ञधूम ❊ प्रवेशिल रणे येन कालान्तक यम
कुपिल महेन्द्र वीर सुषेणनन्दन ❊ दीर्घ एक शाल गाछ उपाड़े तखन
एड़िलेक शाल गाछ दिया हुहुंकार ❊ रथ सह यज्ञधूम हैल चूरमार २५
यज्ञधूम पड़े रणे, रुषिल कोपन ❊ रुषिल देवेन्द्रवीर सुषेण नन्दन
युड़िल कोपन वीर तिन शत शर ❊ विन्धिया देवेन्द्र वीरे करिल जर्ज्जर
कुपिया देवेन्द्र वीर करिल उठानि ❊ पर्व्वतेर चूड़ा धरि करे टानाटानि
दुइ हाते उपाड़िल गाछ ओ पाथर ❊ गाछ पाथर लये वीर धाइल सत्वर
झन्झना पड़ये येन गाछ पाथर हाने ❊ पड़िल राक्षस वीर दुर्ज्जय कोपने
चारि सेनापति पड़े प्रहस्त ता देखे ❊ संधान पूरिया आइल चारि वीर आगे
प्रहस्तेर रणे देवगण कम्पमान ❊ महेन्द्र देवेन्द्र भागे भागे हनूमान
पूर्व्वद्वार खान सेई नील वीर राखे ❊ भांगिल कटक सब नील ताहा देखे
नील बले, प्रहस्त, तोर बाड़ियाछे आश ❊ अवश्य आजिके तोरे करिव विनाश
रुषिया प्रहस्त बले, ओरे बेटा नील ❊ पाठाइबे यमालये मेरे एक कील

मित्रता कैसी। वज्र जैसा मुक्का मार कर तेरा खोपड़ा चूर-चूर कर दूँगा। इतना कहकर हनुमान ने उसको एक झाँपड़ मारा। महाहनु जमीन पर गिर कर तड़पने लगा ॥ २४ ॥

महाहनु के गिरते ही यज्ञधूम क्रोधित हो उठा। कालान्तक यम के समान उसने रणक्षेत्र में प्रवेश किया। इधर सुषेण का बेटा महेन्द्र वीर भी क्रोधित हो गया। उसने एक बड़ा सा शाल-वृक्ष उखाड़ लिया और हुँकार करते हुए उसे दे मारा। रथ-सहित यज्ञधूम चूर-चूर हो गया ॥ २५ ॥

यज्ञधूम के गिरते ही कोपन बेहद कुपित हुआ। उधर सुषेण-नन्दन वीर देवेन्द्र भी रोष से भर गया। वीर कोपन ने तीन सौ वाण फेंके जिनसे वीर देवेन्द्र का शरीर छलनी बन गया। रोष से वीर देवेन्द्र उठ खड़ा हुआ और पर्वत का एक शिखर लेकर खींचातानी करने लगा। दोनों हाथों से पेड़ और पत्थर उठाकर तेजी से दौड़ पड़ा। इस प्रकार पेड़ और पत्थर गिराने लगा मानों आँधी आ गयी हो। दुर्जय राक्षस वीर कोपन रणक्षेत्र में ढेर हो गया। प्रहस्त ने देखा कि उसके चारों वीर खेत रहे तो वह धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाये चारों वीरों के सम्मुख आ गया। प्रहस्त के युद्ध से देवता भी काँपने लगे। महेन्द्र और देवेन्द्र भागने लगे, हनुमान के भी पैर उखड़ गये। पूर्वी द्वार की रक्षा का भार वीर नील पर था। नील ने यह देखा कि उनकी सेना के पैर उखड़ रहे हैं। नील बोल पड़ा, अरे प्रहस्त! तूने मन में बड़ी आशा बाँध रखी है,

एत यदि दुइ वीरे हैल गालागालि ※ दुइजने युद्ध बाजे दोंहे महाबली
तिन शत वाण वीर युड़िल धनुके ※ संधान पूरिया मारे नील वीर बुके
वाण खेये नील वीर करिल उठानि ※ पर्व्वतेर चूड़ा धरि करे टानाटानि
दश योजन आने वीर पर्व्वतेर चूड़ा ※ प्रहस्तेर माथाय मारिया कैल गुँड़ा
प्रहस्त पड़िल रणे लागे चमत्कार ※ भग्नदूत रावणे जानाय समाचार
प्रहस्त पड़िल वार्त्ता शुन लंकेश्वर ※ रावण बले काल हैल नर ओ बानर
रावण वले, ये ये वीर धनु धरिते जाने ※ छोट बड़ राक्षस चलुक मोर सने
सेनापति पड़िल राज्येर चूड़ामणि ※ आर कारे पाठाइब जाइब आपनि२६

रावणेर प्रथम दिवसेर युद्धे गमन

रावणेर छत्रिश कोटि प्रधान सेनापति ※ साजिया चलिल सबे रावण संहति
भाइ भाइपो आदि कुमार भागे नड़े ※ हाती घोड़ा आदि ठाट नड़े मुड़े मुड़े
युझिवार तरे नड़े राजा से रावण ※ सर्व्वांग भूषित करे नाना आभरण
मेघेते चपला येन गलाय उत्तरी ※ लेपिलेक मृगमद सुगन्धि कस्तूरी

आज मैं अवश्य ही तेरा विनाश करूँगा। रुष्ट होकर प्रहस्त ने कहा, अरे अभागे नील, एक मुक्का मार कर मैं तुझको यमालय भिजवा दूँगा। इतना गाली-गलौज हो जाने के बाद दोनों महावलियों में युद्ध छिड़ गया। प्रहस्त ने धनुष में तीन सौ बाण लगाकर निशाना साधकर नील के सीने पर फेंका। बाण खाकर नीलवीर उछल पड़ा और एक पर्वत की चोटी पकड़ कर खींचने लगा। महाबली ने दश योजन वाला पर्वत का शिखर लाकर प्रहस्त के सिर पर दे मारा। प्रहस्त का सिर टूटकर चकनाचूर हो गया। प्रहस्त को युद्धक्षेत्र में वीरगति प्राप्त हुई, यह सुनकर सभी को चमत्कार सा लगा। भग्नदूत ने जाकर रावण को समाचार सुनाया कि प्रहस्त का पतन हुआ है। रावण ने कहा, यह नर और वानर मेरे काल बन गये। ललकार कर कहा, जो भी धनुष पकड़ना जानता हो ऐसे छोटे-बड़े सभी राक्षस मेरे साथ चलें। राज्य का सर्वश्रेष्ठ सेनापति युद्ध में गिरा, अब किसे भेजूँ, स्वयं ही चलता हूँ॥ २६॥

रावण के प्रथम दिवस की युद्ध-यात्रा

रावण के छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति सुसज्जित होकर रावण के साथ चल पड़े। भाई-भतीजे जितने राजपुत्र थे सब लोग चल पड़े—हाथी-घोड़ों का विशाल दल भी साथ-साथ चला। युद्ध करने के लिए राजा रावण ने निश्चय किया, तो सारे अंगों को आभूषणों से सुसज्जित किया। गले में ऐसा दुपट्टा डाला मानों बादलों में बिजली चमक रही हो। मृगमद और सुगन्धित

दशभाले दशमणि करे झलमल ※ चन्द्र सूर्य्य जिनि शोभे कर्णेर कुण्डल
रावणेर रथखान साजाय सारथि ※ नाना रत्न मणि मुक्ता साजाइल तथि
कनके रचित रथ माणिकेर चाका ※ रत्नेर कलसे साजे नेतेर पताका
विचित्र निर्म्माण रथ साजाय सुन्दर ※ रथेर उपरे उठे राजा लंकेश्वर
खाण्डा टांगी शेल शूल मुषल मुद्गर ※ नानाजाति अस्त्र तुले रथेर उपर
गदा लये जाय केह केह वा कामान ※ विचित्र निर्म्माण करे लये धनुर्व्वाण
हस्ती अश्व ठाट कटक चले मुड़े मुड़े ※ विंशति योजन पथ सैन्य आड़े जोड़े
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी ※ रावणेर वाद्य भाण्ड सात अक्षौहिणी
एक लक्ष दगड़, दुलक्ष करताल ※ दुसहस्र घण्टा वाजे मृदंग विशाल
भेउरी झाँझरी बाजे, तिन लक्ष काड़ा ※ चारि लक्ष जयढाक, छय लक्ष पड़ा
बाजिल चौरासी लक्ष शंख आर वीणे ※ तिन लक्ष तासा वाजे दामामार सने
ढेमचा खेमचा बाजे, दुइ लक्ष ढोल ※ तिन लक्ष पाखोयाज विस्तर मादल
जयढाक रामकाड़ा बाजे जगझम्प ※ पाखोयाज आदि बाजे त्रिभुवने कम्प
बाजिल राक्षस ढाक पञ्चाछ हाजार ※ दुन्दुभि तुम्बूर शिंगा संख्या कराभार
खञ्जनी खमक बाजे सेतार तबोल ※ प्रलयेर काले येन उठे गण्डगोल

कस्तूरी का लेपन किया। दश माथों पर दश रत्न झलमलाने लगे। कानों में कुंडल चन्द्र-सूर्य जैसे चमकने लगे। रावण का रथ सारथी ने विभिन्न हीरे-जवाहरात से सजाया। कनकनिर्मित उस रथ में माणिक्य के बने पाहए थे। ध्वजा रत्न-कलश से सुशोभित की गई। सुन्दर रूप से सुसज्जित उस विचित्र आकार के रथ पर राजा लंकेश्वर बैठा। रथ में खड्ग, फरसा, शेल, शूल, मूसल, मुद्गर आदि विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लादे गये। कोई तो गदा लेकर चल पड़ा तो कोई कमान और धनुष-वाण-धारी सेना ने व्यूह का निर्माण किया। हाथी, घोड़ा और पैदल सेना झूम-झूम कर आगे बढ़ने लगी और बीस योजन का पथ उन लोगों ने घेर लिया। कटक के पदचाप से धरती थर्राने लगी। रावण के रणवाद्य-वादकों का दल ही सात अक्षौहिणी के समान है। एक लाख नगाड़े, दो लाख करताल, दो हजार घंटे और विशाल मृदंग बजने लगे। झाँझरी, मंजीरा बजने लगे, तीन लाख डफली भी। चार लाख डंका और छह लाख धौंसा भी बज उठे। शंख और वीणा मिलाकर चौरासी लाख बाजे बजने लगे। तीन लाख ताशा दुंदुभी के साथ बजने लगे और दो लाख ढोल भी। तीन लाख पखावज और असंख्य मादल भी। जयडंका, रामकाड़ा, जगझम्प, पखावज आदि के शब्द से त्रिभुवन काँपने लगा। तुरही, सींगी असंख्य बजने लगीं, खंजरी, सितार, तबला के शब्द से

तुरी भेरी रणशिंगा बार लक्ष बाँशी ❋ दगड़े रगड़ दिते दश लक्ष काँसी
टिकारा टंकार आर चौताल मोचंग ❋ वाद्य शुने वानरेर बेड़े गेल रंग
तिन कोटि वृन्द ठाटे साजिल रावण ❋ शतकोटि रवि जिनि रथेर किरण
रत्नमय कलसे पताका सारि सारि ❋ संग्रामेते साजिल लंकार अधिकारी २७
रावण करिल यदि रथे आरोहण ❋ भय पेये मन्द मन्द बहिछे पवन
रवि हैल मन्द तेज ढाकिया किरण ❋ सशंकित स्वर्गेर सकल देवगण
धनुक धरिते जाने यत निशाचर ❋ रावणेर संगे चले करिते समर
राक्षसेर सिंहनाद, धनुक टंकार ❋ पश्चिमे द्वारेते जाय करि मार मार
मणिमय मुकुट शोभिछे दशमाथे ❋ त्रिभुवनविजयी धनुक वाण हाते २८
सैन्य देखे दशानन दाण्डाइया रथे ❋ विभीषणे जिज्ञासा करेन रघुनाथे
शतकोटि रविशशि जिनिया किरण ❋ बल देखि संग्रामे आइल कोन जन
विभीषण बले, रणे आइल दशानन ❋ ज्येष्ठ भाइ आमार विजयी त्रिभुवन
ब्रह्मार निर्म्मित रथ बहुरूप धरे ❋ तुष्ट हये देवगण दिला धनेश्वरे
कुबेरे जिनिया रथ निलेक रावण ❋ आसियाछे सेइ रथे करि आरोहण

लगा कि प्रलय के समय का कोलाहल सुनाई पड़ रहा है। दस लाख घड़ियाल और बारह लाख बाँसुरी बजने लगीं। बाजे की आवाज सुनकर बन्दरों में मस्ती आ गई। तीन करोड़ वृन्द सेना के साथ रावण सुसज्जित हुआ। शतकोटि सूर्य की किरणों के समान उज्वल रथ पर रत्नमय कलशों में पंक्तियों में लगी पताकाएँ फहराने लगीं। लंका का अधिकारी इस प्रकार युद्ध में सुसज्जित हुआ ॥ २७ ॥

रावण ने रथ पर आरोहण किया तो पवन भी डर कर मन्द-मन्द चलने लगा। रवि का प्रकाश भी धीमा पड़ गया और स्वर्ग के समस्त देवता शंकित हो उठे। जितने भी निशाचर धनुष पकड़ना जानते हैं, रावण के साथ समर पर चल पड़े। धनुष का टंकार हुआ। राक्षस मार-मार शब्द से सिंहनाद करते पश्चिमी द्वार की ओर चल पड़े, दश शिरों पर मणिमय मुकुट और त्रिभुवन-विजयी रावण के हाथों में धनुष-बाण शोभायमान है ॥ २८ ॥

रथ पर खड़ा दशानन अपनी सेना का परिदर्शन कर रहा था। रघुनाथ ने विभीषण से पूछा, शतकोटि रवि-शशि की किरणों से अधिक दीप्तिमय यह कौन है जो आज संग्राम में आया है। विभीषण ने कहा, रण में आज दशानन आया है जो मेरा त्रिभुवन-विजयी बड़ा भाई है। यह ब्रह्मा का बनाया रथ है जो बहुत सी आकृतियों को धारण करता है। देवताओं ने सन्तुष्ट होकर धनेश्वर को दिया था। कुबेर को जीत कर रावण ने यह रथ ले लिया।

कोटि सूर्य्य जिनिया सौन्दर्य्य खरतर ❊ रथेर किरण कत देख रघुवर
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सुन्दर ❊ राम-रावणेर युद्ध शुनि अतः पर २९

रावण-सैन्येर परिचय

कहितेछे विभीषण, रथे देख नारायण, छत्रदण्ड धरे देवगण।
कपालेते दशमणि, दीप्त येन दिनमणि, ऐ राजा लंकार रावण॥
हासि रघुनाथ कन, चिनिलाम दशानन, योग्य वटे लंका अधिकारी।
कुबुद्धि एमन केने, देवकन्या केन आने, परनारी केन करे चुरि॥
पाइया ब्रह्मार वर, नाम धरे लंकेश्वर, देवमाया ना बुझे रावण।
आमि रावणेर यम, ना थाकिबे पराक्रम, मोर हाते सवंशे मरण॥
कहे सुमित्रानन्दन, एइकि राजा रावण, आर केबा उहार संहति।
हाते धनु सुरचित, ऐ पुत्र इन्द्रजित, संगेते उहार सेनापति॥
कुम्भ निकुम्भ दुजन, कुम्भकर्णेर नन्दन, संगे सैन्य आइल अपार।
शारदा चरण सेवि, वाल्मीकि ये महाकवि, रामायण करिल प्रचार३०॥

रावणेर प्रथम दिनेर युद्ध

विभीषण कहिछे लंकार समाचार ❊ राम बले, विभीषण हओ आगुसार

उसी रथ पर सवार होकर आज वह आया है। हे रघुवर! इस रथ से निकलती हुई किरणें कितनी प्रखर और सौन्दर्य से पूर्ण हैं। कृत्तिवास पंडित का कवित्व दिव्य है। इसके बाद राम-रावण के युद्ध के बारे में सुनो॥ २९॥

रावण-सैन्य का परिचय

विभीषण कह रहा है, हे नारायण! माथे पर दशमणि लगाये दिनमणि सा ज्योतित वह राजा रावण है, जिसके सिर पर देवता छत्र पकड़े हैं। हँस कर रघुनाथ ने कहा, ठीक है दशानन को पहचान लिया, लंका के योग्य अधिकारी जैसा ही रूप-रंग है। लेकिन इसमें ऐसी कुबुद्धि क्यों आ गई कि देवकन्याओं को पकड़कर लाता है और परनारियों को चुराता है। ब्रह्मा का वर-दान पाकर लंकेश्वर कहलाता है किन्तु रावण देवताओं की माया को समझता नहीं है। मैं रावण का यम-स्वरूप हूँ, मेरे सम्मुख उसका पराक्रम जाता रहेगा और मेरे ही हाथों उसका सवंश निधन होगा। सुमित्रानन्दन ने कहा, क्या यही राजा रावण है और उनके साथ वे कौन हैं? हाथों में सुनिर्मित धनुष लिये वह उसका पुत्र इन्द्रजीत है—और साथ में उनके दो सेनापति हैं। कुम्भकर्ण के दो पुत्र कुम्भ और निकुम्भ अपार सेना के साथ आये हैं। महाकवि वाल्मीकि ने शारदा के चरणों की सेवा कर रामायण का प्रचार किया॥ ३०॥

रावण के प्रथम दिवस का युद्ध

विभीषण लंका का समाचार बखानने लगा। राम ने कहा, विभीषण

जिज्ञासा करिल यदि प्रभु रघुनाथ ॐ कटक चिनाये देय तुलि डान हात
रावणेर धनु ओइ रतने खचित ॐ राजार दक्षिणे ऐ कुमार इन्द्रजित
मेघ सम अंग, ताम्रवर्ण द्विलोचन ॐ नागपाशे बेंधेछिल तोमा दुइजन
नगेन्द्र-देवेन्द्र-आदि रणे पराभव ॐ कोटि-इन्द्र जिनि दशाननेर वैभव
एमन ऐश्वर्य आज हाराय रावण ॐ तोमार संग्रामे ना बाँचिबे कोनजन ३१
रावणेरे देखिया सुग्रीव ज्वले कोपे ॐ रुषिया सुग्रीव-राजा जाय वीरदापे
कुपिया सुग्रीव से पर्व्वते दिल टान ॐ एकटाने उपाड़े पर्व्वत एक खान
घुराय पर्व्वतगोटा अतिशय रोषे ॐ गर्ज्जिया हानिल वीर रावणे-उद्देशे
रावण कोपेते एड़े दशगोटा बाण ॐ बाणे काटि पर्व्वत करिल खान-खान
व्यर्थ गेल पर्व्वत, सुग्रीव-राजा देखे ॐ कोपेते रावण बाण जुड़िल धनुके
तिनशत बाण रावण जुडिल धनुके ॐ गर्ज्जिया मारिल बाण सुग्रीवेर बुके
बाण खेये सुग्रीव सघने घुरे बुले ॐ भाग्येते बाँचिल प्राण पूर्व्वपुण्यफले ३२
सुग्रीव हारिल यदि, पलाय बानर ॐ कोपेते धनुक करे निला रघुवर
सन्धान पूरिया जान करिबारे रण ॐ हेनकाले जोड़हाते बलेन लक्ष्मण
लक्ष्मण बलेन, प्रभु थाक तुमि ब'से ॐ आमि मारि दशानने चक्षुर निमिषे

आगे बढ़ो। प्रभु रघुनाथ ने पूछा तो विभीषण दाहिना हाथ उठाकर सैन्य का परिचय कराने लगा। रत्न-खचित धनुष वाला तो रावण है और उसके दक्षिण में कुँवर इन्द्रजीत है जिसके शरीर का रंग बादलों सा है और आँखें ताम्रवर्ण हैं। उसीने तुम दोनों को नागपाश से बाँधा था। नगेन्द्र, देवेन्द्र आदि रण में उससे पराभव मान चुके हैं। कोटि इन्द्रों सा दशानन का वैभव है, ऐसा वैभव आज रावण गँवा रहा है। तुम्हारे साथ संग्राम में किसी के भी प्राण नहीं बचेंगे ॥ ३१ ॥

रावण को देखकर सुग्रीव क्रोध से तिलमिला उठा और वीरदर्प से आगे बढ़ गया। गुस्से में आकर सुग्रीव ने एक पर्वत को पकड़कर खींचा और समूचा पर्वत ही उखड़कर उसके हाथों में आ गया। समूचे पर्वत को उसने रोष से रावण के प्रति फेंका, तो रावण ने दश बाण चलाकर उस पर्वत को खंड-खंड कर दिया। सुग्रीव राजा ने देखा कि पर्वत फकना व्यर्थ गया। कुपित होकर रावण ने धनुष में तीन सौ बाण लगाकर गरजते हुए फेंका। सुग्रीव के सीने पर जाकर वे बाण टकराये। बाणों के आघात से सुग्रीव को चक्कर आ गया। केवल पूर्वपुण्य के कारण ही उसके प्राण बच गये ॥ ३२ ॥

सुग्रीव का हारना था कि भय से सब बन्दर भागने लगे। यह देखकर रघुवर हाथ में धनुष लेकर प्रत्यंचा चढ़ाकर युद्ध करने आगे बढ़े। ऐसे ही समय लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा, प्रभो! तुम बठे रहो मैं पलभर में रावण को मार गिराता हूँ। राम ने कहा, लक्ष्मण तुमको भला कितने कौशल ज्ञात

राम बले, कत सन्धि जानह लक्ष्मण ※ रावण-सन्मुखे जुद्धे संशय जीवन
बाहुबले त्रिभुवन जिनिल राक्षस ※ रावणेर संगे युद्धे ना कर साहस
तथापि लक्ष्मण जान पूरिया सन्धान ※ हेनकाले लक्ष्मणेरे बले हनूमान ३३
हनूमान् बले, तुमि तिष्ठह लक्ष्मण ※ कौतुक देखह, आमि मारिब रावण
आमार संग्रामे यदि पाय से निस्तार ※ तबे त लक्ष्मण, तव जुझिवार भार
लक्ष्मणेर पदधूलि ल'ये हनू माथे ※ लाफ दिया पड़े गिया रावणेर रथे
सन्मुखे दाँड़ाय वीर परम-सन्धाना ※ सारथिर केड़े लय हातेर पाँचना
देव-दानव जिन बेटा, ब्रह्मार कारण ※ बानर हइया तोर बधिब जीवन
हेर हेर मुण्ड मोर सुमेरुर चूड़ा ※ हेर हेर पद मोर कैलासेर गोड़ा
हेर हेर हस्त मोर पर्व्वतेर सार ※ हातेर अंगुली हेर सर्पेर आकार
हेर हेर नख मोर बज्रेर सोसर ※ एकचड़े पाठाइब तोरे यमघर ३४
रावण बले, तोरे पेले अन्ये नाहि कथा ※ पड़िलि आमार हाते, जाबि आर कोथा
हनू बले, तोरे कि मारिब एइक्षणे ※ पूर्व्वे मारियाछि बेटा भेबे देख मने
से अक्ष-कुमारे मारि पोड़ालाम शोके ※ से शोक रावण, तोर विन्धियाछे बुके
आपना पासरे कोपे वीर हनूमान ※ रावणे चापड़ मारे वज्रेर समान

हैं ? रावण के साथ युद्ध में प्राणों का भय है। बाहुबल से इस राक्षस ने त्रिभुवन पर विजय प्राप्त की है। रावण के साथ युद्ध में प्रवृत्त होने का साहस मत करो। फिर भी लक्ष्मण धनुष पर वाण चढ़ाये आगे बढ़े तो हनुमान ने लक्ष्मण से कहा ।। ३३ ।।

हनुमान ने कहा, लक्ष्मण तुम ठहरो। जरा तमाशा तो देखो, मैं रावण को मारता हूँ। मुझसे अगर वह बच गया तो उसके साथ भिड़ने का भार तुम पर है। लक्ष्मण के पैरों की धूल सिर से लगाकर हनुमान छलाँग मारते हुए रावण के रथ पर जा धमके। रथ के सामने खड़े होकर परम दक्ष वीर सारथी के हाथों से रास छीन कर रावण से बोले– ब्रह्मा के वर से तुम देव-दानवों पर विजय प्राप्त किये हुए हो। बन्दर होकर भी आज तेरे मैं प्राण ले लूँगा। मेरे मुंड की ओर देख, देख वह सुमेरु का शिखर है। मेरे पैरों की ओर देख, देख वह कैलाश का मूलप्रदेश है। मेरे हाथों की ओर देख, देख यह पहाड़ के समान है। मेरी अँगुलियों की ओर देख, ये सर्प के समान हैं। मेरे नाखून की ओर देख, देख ये वज्र के समान हैं। एक ही झाँपड़ में तुझे यमालय भेज दूँगा ।। ३४ ।।

रावण ने कहा, तू मिल जाय तो फिर दूसरों से मेरा क्या लेना-देना है। अब तू मेरे चंगुल में आ गया है, बचकर निकल नहीं सकता। हनुमान ने कहा, तुझे क्या मैं अभी मारूँगा ? जरा सोचकर देख, तुझे मैंने इससे पूर्व भी मारा है। जिस अक्षय-कुमार को मैंने मारा उसके शोक से मैंने तुझे जलाकर

चापड़ खाइया रावण हैल अचेतन * भाग्येते रहिल प्राण ब्रह्मार कारण
संवित् पाइया पुनः उठिल सत्वर * डाक दिया हनूमाने कहिछे उत्तर
रावण बले, बानरा रे, तुइ बड़ वीर * तोर चापड़ेते मोर काँपिल शरीर
बले हनूमान, मोर किसेर बाखान * मोर चापड़ेते तोर रहिल पराण
तोरे मारिलाम बेटा, उठि तोर रथे * हारि सिद्ध ह'लो तोर सबार साक्षाते
आपना पासरि कोपे राजा से रावण * हनूरे चापड़ मारे करिया गर्ज्जन
हनूमान बुके मारे से वज्र-चापड़ * रथ हैते पड़ि हनू करे धड़फड़
भूमे पड़ि हनूमान घुरे घुरे बुले * हनूमाने छाड़ि बिन्धे सेनापति नीले
संवित् पाइया उठे वीर हनूमान * डाक दिया बले, रावण हओ सावधान
राक्षस रावणा, तोर एइ वीरपणा * मोर सने युद्ध क' रे अन्ये दाओ हाना
हनूमान यत बले, रावण ना शुने * नील सेनापति बिन्धे आपनार मने
बाछिया बाछिया मारे चोख-चोख शर * नीलेरे बिंधिया वीर करिल जर्ज्जर ३५
आपन रक्तेते तिते नील सेनापति * केमने जिनिब रण, करेन युकति
दीर्घाकार नील वीर, येमन देउल * माया करि नील वीर हइल नेउल
नेउल-प्रमाण वीर हइल मायाते * एक लाफे पड़े गिया रावणेर रथे

खाक किया। ऐ रावना, वह शोक तेरे दिल में चुभ गया है। क्रोध से वीर हनुमान अपने आपे में न रहा और वज्र के समान एक झाँपड़ रावण को मार बैठा। झाँपड़ खाकर रावण बेहोश हो गया। केवल ब्रह्मा के वर के कारण ही उसके प्राण रह गये। सुध पाकर फिर वह उठा और हनुमान को बुलाकर कहने लगा। रावण ने कहा, ऐ वानर तू तो बड़ा वीर है, तेरे झाँपड़ से मेरा शरीर झनझना गया। हनुमान ने कहा, मेरा क्या बखान करता है, धन्य है कि मेरे झाँपड़ खाने के बाद भी तेरे प्राण रह गये। तेरे रथ पर चढ़कर तुझे मारा, सभी के सम्मुख तेरी हेठी सिद्ध हुई। रावण राजा भी आपे से बाहर हो गया और क्रोध से गरजते हुए उसने हनुमान के एक झाँपड़ मारा। हनुमान के वक्ष पर वह प्रहार वज्र सा लगा और रथ से गिरकर हनुमान तड़फड़ाने लगे। जमीन पर गिर कर वह लोट पोट हो गये। अब हनुमान को छोड़कर रावण सेनापति नील को बाणों से छेदने लगा। होश में आकर वीर हनुमान उठे और ललकारते हुए बोले, ऐ रावण, सावधान हो जा। अरे राक्षस रावण, क्या यही तेरी वीरता है कि मेरे साथ लड़ते समय दूसरों पर हमला कर रहा है। हनुमान कितना ही कहते रहे लेकिन रावण ने एक न सुना। वह अपनी ही धुन में नील सेनापति पर चुने हुए पैने-पैने बाण फेंकने लगा। नील का सारा शरीर जर्जर हो गया ॥ ३५ ॥

नील सेनापति अपने ही खून से तर हो गये। युद्ध कैसे जीता जा सकता है इसी पर सोच विचार करने लगे। दीर्घ आकार के नीलवीर अटारी जसे

रावणेर रथे पड़ि नाहि करे डर ॐ नीलेर विक्रम देखि रावण फाँफर
नीलेरे मारिते धनुकेते वाण जोड़े ॐ लम्फ दिया नील गिया रथ ध्वज धरे
माथा तुलि रावण से उपर नेहाले ॐ नील वीर पड़े तार धनुकेर हुले
नीलवीरे धरिवारे रावण चिन्तिल ॐ लाफ दिया नील तार मस्तके उठिल
नीलेरे धरिते हात बाड़ाय रावण ॐ माथा हैते मुकुटे उठिल ततक्षण
रावणेर मुकुट शोभिछे सारि-सारि ॐ मुकुट उपरे बेड़ाय फिरि घुरि घुरि
माया करि बेड़ाय रावणे दिया फाँकि ॐ वनपाके घुरे येन नाचनीया पाखी
कुड़िचक्षे चाय, तवु ना देखे रावण ॐ चाहे पुनः पुनः, नाहि पाय दरशन
क्षणेक देखिते पाय चक्षुर निमिषे ॐ धरि धरि मने करे स्थानान्तरे आसे
नाना-माया जाने वीर मायार निदाने ॐ नेउल-प्रमाणे वीर फिरे स्थाने-स्थाने
कुपिल से नील-वीर बुद्धिर सागर ॐ लाथि मारे रावणेर मुकुट उपर
भाग्य बले रावणेर रहे दश-माथा ॐ बहुमते रावणेर करिल अवस्था
नीलेर विक्रम येन सिंहेर प्रताप ॐ रावणेर मस्तकेते करिल प्रश्राव
रावणेर मुकुटेते नील-वीर मुते ॐ मुख वये पड़े मूत्र, सर्व्व-अंगतिते
प्रस्रावेर धारा वहे रावण-अंगेते ॐ आभरन कुंकुम भासिया गेल स्रोते

ऊँचे थे, माया से वे नेवला जैसे बन गये और कूद कर रावण के रथ पर चढ़ गये। रावण के रथ पर आकर वह भयभीत नहीं होते। नील का पराक्रम देखकर रावण हक्का-बक्का हो गया। नील को मारने के लिए उसने धनुष पर वाण चढ़ाया। नील रूपी नेवला भी कूद कर रथ-ध्वजा पर चढ़ गया। सिर उठाकर रावण ने ऊपर की ओर देखा तो नीलवीर कूदकर उसके धनुष पर आ गिरा। ज्योंही नीलवीर को पकड़ने के लिए रावण ने सोचा त्योंही कूद कर नील उसके सिर पर चढ़ गया। नील को पकड़ने के लिए रावण ने हाथ बढ़ाया। वह भी सिर से मुकुट पर चढ़ गया। रावण के मुकुट-पंक्ति में सुशोभित था, वह फुदक-फुदक कर एक से दूसरे मुकुट पर विचरने लग गया। माया का जाल फेंक वह रावण को भरमाता रहा और नाचनेवाले पक्षी की तरह फुदकता रहा। रावण बीस आँखों से उसे देखता रहा पर देख न सका, बार-बार देखने पर भी उसका दर्शन नहीं मिलता। क्षणभर को वह दिखाई पड़ता तो क्षणभर में ओझल हो जाता, पकड़ने का उपक्रम करते ही वह अन्य स्थान पर पहुँच जाता। यह वीर तो बड़ा मायावी है, विभिन्न मायाओं का जानकार है। बुद्धि के सागर नीलवीर ने रावण के सिर पर लात मारी—भाग्य के बल से रावण के दश मुंड साबित रह गये। विभिन्न प्रकार से उसने रावण की दुर्दशा कर दी। नील का पराक्रम मानों सिंह के प्रताप के समान है—रावण के सिर पर उसने पेशाव कर दिया। रावण के सिर पर नीलवीर ने पेशाब कर दिया और मूत्र उसके मुख पर से टपकते हुए सारा अंग भिगोने

देखिया त देवगण दिल टिटकारी ❋ कुपिल रावण-राजा लंका अधिकारी
धनुके जुड़िया वाण आछे त सन्धाने ❋ देखिते ना पाय, बाण मारिबे केमने
एक बार माया करि उठे मुकुटेते ❋ आर बार लाफ दिया पड़े गिया रथे
मुकुट ह'ते रथे जेते देखिलेक छाया ❋ सन्धान पूरिया नीलेर भांगि दिल माया
बाण खेये नील वीर पड़े भूमि तले ❋ भाग्येते बांचिल प्राण पूर्व्व-पुण्यफले ३६
नील वीर हनूमान हइले विमुख ❋ लक्ष्मण आइल रणे पातिया धनुक
लक्ष्मण बलेन, तोर बुझि वीरपण ❋ आमार संगेते युद्ध करह रावण
लक्ष्मणेर कथा शुनि रावण-राजा हासे ❋ पला रे तपस्वि बेटा, प्राण ल'ये देशे
एत यदि दुइजने हैल गालागालि ❋ दुइजने युद्ध बाजे, दोंहे महाबली
दुइ शत बाण एड़े राजा दशानन ❋ बाणेते काटिया पाड़े ठाकुर लक्ष्मण
व्यर्थ गेल बाण-सब, चिन्तित रावण ❋ लक्ष्मण-उपरे करे बाण-वरिषण
तिनशत बाण मारे जुड़िया धनुके ❋ फुटे तिनशत बाण लक्ष्मणेर बुके
बुके फुटि वाणेर ये बिन्धि रहे फला ❋ लक्ष्मणेर अंगे येन रक्तपद्म-माला
बाणे-बाणे लक्ष्मणेर नाहि चले दृष्टि ❋ खसि पड़े लक्ष्मणेर धनुकेर मुष्टि
संवरिया लक्ष्मण सुस्थिर कैल बुक ❋ काटिलेन रावणेर हातेर धनुक

लगा। मूत्र की धारा से रावण के अंग से आभरण कुंकुम आदि बह गये। यह देखकर देवता उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। लंका का अधिकारी रावण इस पर बड़ा क्रोधित हुआ—धनुष पर वाण तो लगाया हुआ है लेकिन निशाना किस पर साधे, वह तो दिखाई ही नहीं पड़ता, बाण कहाँ मारे। एक बार वह मुकुट पर चढ़ा, फिर कूद कर रथ पर चढ़ गया। मुकुट से रथ पर चढ़ते समय की उसकी छाया रावण ने देख ली और वाण चला दिया। नील की माया धरी रह गई और वाण खाकर वह धरती पर जा गिरा। पूर्व-पुण्य के कारण ही उसके प्राण बचे ॥ ३६ ॥

नीलवीर और हनुमान ने जब रण में नीचा देखा, तब लक्ष्मण धनुष उठाये रणक्षेत्र में आये। लक्ष्मण ने ललकारते हुए कहा, अरे रावण, तेरी वीरता तो देखूँ, मेरे साथ भी जरा लड़ कर देख ले। लक्ष्मण की बातें सुनकर रावण राजा हँसने लगा, बोला, अरे तपस्वी के बेटे ! प्राण लेकर अपने देश लौट जा। इतने गाली-गलौज के उपरान्त दोनों महावीरों में युद्ध छिड़ गया। राजा दशानन ने दो सौ बाण चलाये और लक्ष्मण ने वाणों से काटकर उनको नीचे गिराया। सारे वाण व्यर्थ गये देखकर रावण चिन्तित हुआ और लक्ष्मण पर वाण बरसाने लगा। धनुष पर तीन सौ वाण साध कर लक्ष्मण के सीने पर फेंके। सीने को छेद कर वाण के फल अटके रह गये और यों लगा कि लक्ष्मण के अंग पर रक्तकमल की माला पड़ी हुई है। वाणों की वर्षा में लक्ष्मण की दृष्टि धुँधली पड़ गई और धनुष से लक्ष्मण की मुट्ठी

काटा गेल धनुक, बानरगण हासे ※ आर धनु लय रावण चक्षुर निमिषे
लक्ष्मण-उपरे करे बाण-वरिषण ※ रावणेर बाणे आच्छादिल ये गगन
कोप करि लक्ष्मण धनुके दिला चाड़ा ※ काटिलेन रावण-रथेर अष्टघोड़ा
घोड़ा काटा गेल, रथ हइल अचल ※ सारथिर माथा काटि पाड़े भूमितल
पड़िल सारथि अश्व, देवगण हासे ※ आर रथ योगाइल चक्षुर निमिषे
लाफ दिया दशानन सेइ रथे चड़े ※ तिनशत बाण तबे एकेबारे जोड़े
देखिया गन्धर्व्व-बाण जुड़िल लक्ष्मण ※ रावणेर यत बाण कैल निवारण
लक्ष्मण-रावण करे बाण-वरिषण ※ दू'जनार बाणे ढाके रविर किरण
दुइजने बाण वर्षे नाहि लेखा जोखा ※ प्राणपणे मारे बाण, यार यत शिक्षा
अमर्त समर्थ बाण, बाण ब्रह्मजाल ※ चारिदिके पड़े येन अग्निर उथाल
अरुण वरुण वाण, बाण खरशाण ※ अग्निबाण यमवाण यमेर समान
सूचीमुख शिलीमुख बाण विरोचन ※ सिंहदन्त वज्रदन्त घोर-दरशन
कालदन्त ऐषिक ओ दीर्घ-कर्णिकार ※ क्षुरपार्श्व शेलान्तक अति तीक्ष्णधार
नील हरिताल बाण विकट-दर्शन ※ अर्द्धचन्द्र चक्रबाण साक्षात् शमन
एत बाण दुइजने करे अवतार ※ दशदिक् जल-स्थल हैल अन्धकार

ढीली पड़ गई। अपने को सँभाल कर लक्ष्मण ने हौसला किया और रावण के हाथ का धनुष काट डाला। धनुष कट गया और बन्दर हँसने लगे। रावण ने तुरन्त दूसरा धनुष हाथ में ले लिया। लक्ष्मण पर बाणों की वर्षा करने लगा—और आकाश बाणों से भर गया। लक्ष्मण ने क्रुद्ध होकर धनुष की प्रत्यंचा खींची और रावण के रथ के आठों घोड़ों को काट डाला। घोड़े कट गये, अतः रथ अचल हो गया। सारथी का सिर कटकर धरती पर जा गिरा। सारथी और अश्व के गिरने से देवगण हँसने लगे। पर तुरन्त ही दूसरा रथ आ गया और रावण कूद कर उस रथ पर जा सवार हुआ। फिर एक साथ उसने तीन सौ बाण चला दिये। यह देखकर लक्ष्मण ने गन्धर्व-बाण चला कर रावण के सारे बाणों को व्यर्थ कर दिया। रावण और लक्ष्मण में बाणों की वर्षा होने लगी—जिसकी कोई गिनती ही नहीं। जिसकी जितनी शिक्षा थी उसी के अनुसार वह बाण चलाता रहा। अमर्त्य, समर्थ नामक बाण, ब्रह्मजाल बाण—ये चारों ओर यों गिरने लगे मानों आग की लौ हो। अरुण, वरुण बाण, खरशान बाण, अग्नि बाण, यमबाण, कालान्तक बाण जैसे। सूचीमुख, शिलीमुख, विरोचन, सिंहदन्त, वज्रदन्त जैसे घोर-दर्शन बाण, कालदन्त, ऐषिक, दीर्घ-कर्णिकार, क्षुरपार्श्व, शेलान्तक जैसे अत्यधिक तीक्ष्णधार बाण, विकट दर्शन नील और हरिताल बाण, अर्धचन्द्र चक्रबाण मानों साक्षात् मृत्यु हो। इतने बाण दोनों ने मिलकर फेंके और जल-थल में दशों दिशाएँ अन्धकारमयी हो गईं। लक्ष्मण यों बाण फेंकते मानों कोई

लक्ष्मण वरिषे वाण, तारा येन छुटे ※ रावणेर हातेर धनकखान काटे
आर ये पञ्चाश-वाण पूरिल सन्धान ※ रावणेर बुके बाजे वज्रेर समान
खाइया पञ्चाश-बाण भावे मने-मने ※ ब्रह्मा दियाछेन शेल, ताहा पड़े मने
मंत्र पड़ि रावण से शेलपाट एड़े ※ यमेर दोसर शेल देखि प्राण उड़े
शेलपाट एड़िलेक दिया हुहुंकार ※ स्वर्ग-मर्त्य-पाताले लागिल चमत्कार
लक्ष्मण एड़ेन बाण शेल काटिवारे ※ ठेकिया शेलेर मुखे भस्म ह'ये उड़े
राखा नाहि जाय शेल ब्रह्मार येवरे ※ वायुवेगे पड़े शेल लक्ष्मण-उपरे
पड़िल लक्ष्मण-वीर शेलेर आघाते ※ पुनराय शेल जाय रावणेर हाते
लक्ष्मण पड़िल रणे ह'ये अचेतन ※ कुड़िहस्ते लक्ष्मणेरे धरिल रावण
रथे तुलि लंकार भितरे लइते चाय ※ शत-मेरु-भार हैल लक्ष्मणेर काय
कुड़िहाते टानिछे लंकार अधिपति ※ नाड़िते लक्ष्मण-वीरे नहिल शकति
हात दिया कटिते भाविछे दशानन ※ जटिल तपस्वी बेटा भारी कि एमन
तुलिलाम हिमालय पर्व्वत मन्दर ※ ता ह'ते अधिक कि मनुष्य बेटा भर
कैलास-पर्व्वत तुलिलाम बामहाते ※ कुड़िहस्ते लक्ष्मणेरे ना पारि नाड़िते ३७
लक्ष्मणे नाड़िते नारे, हैल अपमान ※ दूर हैते देखे ताहा वीर हनूमान

तारा लपक रहा हो और उसने जाकर रावण का धनुष काट डाला। और जो पचास बाण उन्होंने फेंके वे रावण की छाती पर वज्र के समान जा गिरे। पचास बाण खाने के बाद रावण मन ही मन सोचने लगा, ब्रह्मा ने शेल दिया है, यह भी उसे याद आ गया। मंत्र पढ़कर रावण ने वह शेल फेंका—मृत्यु के समान वह शेल देखकर भय से होश उड़ते हैं। हुँकारते हुए उसने वह शेल फेंका और स्वर्ग, मर्त्य, पाताल विस्मय करने लगे। शेल को काटने के लिए लक्ष्मण ने बाण फेंके लेकिन शेल से टकराकर वे बाण भस्म हो गये। ब्रह्मा के वरदान से वह शेल रोका नहीं जा सकता, वायुवेग से वह आकर लक्ष्मण के वक्ष पर गिरा। वीर लक्ष्मण भी शेल के आघात से धरती पर गिर पड़े। पुन: वह शेल रावण के हाथों में लौट गया। रणक्षेत्र में लक्ष्मण अचेतन होकर गिर पड़े। बीस हाथों से रावण ने लक्ष्मण को उठाना चाहा। चाहा कि उन्हें रथ पर उठाकर लंका में ले जाये। लेकिन लक्ष्मण का शरीर शत-मेरुपर्वतों से भी अधिक भारी हो गया। लंकाधिपति बीस हाथों से लक्ष्मण को उठाने की चेष्टा करने लगा लेकिन वीर लक्ष्मण को हिलाने की भी शक्ति उसमें नहीं रही। कमर पर हाथ रख कर दशानन सोचने लगा—यह जटाधारी तपस्वी कैसे इतना वजनी हो गया। मैंने हिमालय, मन्दर पर्वत तक को उठा लिया, उससे भी क्या यह मनुष्य का जामा ज्यादा भारी हो गया। बाएँ हाथ से मैंने कैलाश पर्वत उठा लिया और बीस हाथों से मैं लक्ष्मण को हिला नहीं पा रहा हूँ ! ॥ ३७ ॥

रावणेर गालेते मारिल एक चड़ ※ चड़ खेये दशानन उठि दिल रड़
चड़ खेये दशानन लागिल घुरिते ※ घुरिते घुरिते रावण पड़े गिया रथे
पलाइल रावण देखिया हनूमाने ※ करिया पाथालि-कोला तुलिल लक्ष्मणे
वैरि-स्पर्शे ह'येछिला पर्व्वतेर भार ※ सेवकेर हाते हैला तूलार आकार
लक्ष्मणे राखिल ल'ये श्रीरामेर पाशे ※ धेयाने जीयान राम चक्षुर निमिषे ३८

राम-रावणेर प्रथम युद्ध

रावण बसिया आछे आपनार रथे ※ संग्रामेते यान राम धनुर्व्वाण-हाते
रावणे मारिते यान पूरिया सन्धान ※ हेनकाले जोड़ हाते बले हनूमान
रथे चड़ि जुझे रावण, श्रम नाहि जाने ※ भूमिते थाकिया तुमि जुझिबे के मने
मोर पृष्ठे रघुनाथ, कर आरोहण ※ आमार पृष्ठेते चड़ि मारह रावण
हनूमान-पृष्ठेते चड़ेन रघुवर ※ ऐरावते वार येन दिला पुरन्दर
रावणे बलेन राम उपजिया क्रोध ※ यत दुःख दिलि, आजि लब तार शोध
दश मुख साजायेछ नाना-अलंकारे ※ दश मुंड काटिया बधिब आजि तोरे
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आर यत देवे ※ पड़ेछ आमार हाते, के आर राखिबे

लक्ष्मण को हिला न सकने से वह अपमानित बोध करने लगा। दूर से हनुमान ने यह देखा और दौड़कर उन्होंने रावण के गाल पर एक झाँपड़ जड़ दिया। झाँपड़ खाकर रावण भाग खड़ा हुआ, चक्कर खाते-खाते अपने रथ पर जा गिरा। रावण भागा, यह देखकर हनुमान ने अपनी बाहों में लक्ष्मण को उठा लिया। वैरी के स्पर्श से जिस शरीर का भार पर्वत के समान हो गया था, सेवक के निकट वह रुई के समान हो गया। लक्ष्मण को उन्होंने श्रीराम के बगल में ले जाकर रखा। राम ने ध्यान-शक्ति से उन्हें पल भर में जीवित कर दिया॥ ३८॥

राम-रावण का पहला युद्ध

रावण अपने रथ पर बैठा था कि राम धनुष-बाण हाथ में लिये युद्ध के लिए चल पड़े। रावण को मारने के लिए जो वे आगे बढ़े तो हनुमान ने हाथ जोड़ कर कहा, रावण रथ पर चढ़कर लड़ रहा है, उसको कोई परिश्रम से पाला नहीं पड़ रहा है, आप धरती पर खड़े कैसे युद्ध करेंगे। हे रघुनाथ! आप मेरी पीठ पर सवार हो जायें और रावण का वध करें। रघुवर हनुमान की पीठ पर इस प्रकार बैठ गये मानो पुरन्दर ऐरावत पर विराजमान हों। क्रुद्ध राम ने रावण से कहा, तूने आज तक जितना क्लेश पहुँचाया उसका बदला मैं आज चुकाऊँगा। तूने विभिन्न अलंकारों से अपना दशमुख सुसज्जित किया है, उन्हीं दशमुंडों को काट कर आज तेरा वध करूँगा। तू अब मेरे हाथ में पड़ गया है; ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर—कौन तेरी रक्षा करेगा। राम के

रामेरे वचने रावण ना करे उत्तर ※ हनूमाने देखिया कुपिल लंकेश्वर
मारे अक्ष-कुमारे पोड़ाय लंकापुरी ※ वद्ध आछे घरपोड़ा, एइ बेला मारि
बन्दी हइयाछे बेटा, पृष्ठे ल'ये राम ※ आजि दिब प्रतिफल करिया संग्राम
निज बुद्धे बाँधा गेछे आपना-आपनि ※ नड़िते पड़िते नारे एइबेला हानि
बाछिया बाछिया एड़े चोख-चोख शर ※ बाणे बिन्धि हनूमाने करिल जर्ज्जर
जुझिते ना पारे हनू, पृष्ठेते श्रीराम ※ बाण फुटि हनूर छुटिल काल-घाम
लक्ष-लक्ष बाण मारे हनूर बुकेते ※ क्रोधे हनूमान-वीर लागिल फुलिते
दश-योजन देह कैल आड़े परिसर ※ दीर्घे त्रिश-योजन हइल कलेवर
लेज कैल दीर्घाकार योजन पञ्चाश ※ हनूमानेर लेज गिया ठेकिल आकाश
हनूमानेर लेज देखि रावणेर भय ※ बालि-राजेर मत पाछे लेजे बाँधि लय ३९
श्रीराम एड़ेन बाण ज्वलन्त आगुनि ※ सब-बाण काटे रावण परम-सन्धानी
श्रीराम ऐषिक-बाण जुड़ेन धनुके ※ सन्धान पूरिया मारे रावणेर बुके
बाण खेये दशानन हैल अचेतन ※ क्षणेके संवित् पाय राजा से रावण
डाक दिया बले राम, शुन रे रावण ※ मोर बाण खेये तुइ- ह'लि अचेतन
आजि ना मारिया तोर छिन्न करि केश ※ लौकिकता ल'ये जाह, येमन सन्देश

वचन सुनकर, लंकेश्वर रावण की नजर हनुमान पर पड़ी। वह बेहद गुस्सा हो गया। इसी ने अक्ष-कुमार को मारा, इसी ने लंका-दहन किया, यह मुँहजला इस समय बंधन में है, इसको इस समय मार डाला जाय। पीठ पर राम को चढ़ाकर यह इस समय बन्धन में है, आज बदला चुकाऊँगा। अपनी बुद्धि के कारण ही इसने अपने आपको फँसा रखा है—इस वक्त वह हिलने-डुलने में अशक्त है, इसलिए अभी उस पर आक्रमण करूँ। चुन-चुन कर वह पैने-पैने वाण चलाने और वाणों से छेद-छेद कर हनुमान को बेहाल करने लगा। पीठ पर श्रीराम के होने के कारण हनुमान लड़ नहीं सकते थे। वाणों के चुभने से उनके पसीना निकल आया। हनुमान के सीने पर लाख-लाख वाण मारने लगा और गुस्से से हनुमान का बदन फूलने लगा। शरीर की चौड़ाई बढ़कर दश योजन की हो गयी और तीस योजन ऊँचा कलेवर बन गया। पूँछ को बढ़ाकर उन्होंने पचास योजन लम्बी कर दी, कि वह आकाश से बातें करने लगी। पूँछ देखकर रावण को डर लगने लगा, कहीं बालि राजा की तरह यह भी न पूँछ में उसे लपेट ले ॥ ३६ ॥

श्रीराम ज्वलन्त अग्नि के समान वाण फेंकने लगे और रावण उनको कुशलता से काटने लगा। श्रीराम ने धनुष पर ऐषिक वाण चढ़ाया और निशाना साध कर रावण के सीने पर मारा। वाण की चोट से दशानन अचेतन हो गया। फिर थोड़ी ही देर में वह अपने होश में आ गया। राम ने ललकार कर कहा, अरे रावण सुन, मेरे वाण के प्रहार से तू अचेतन हो

रघुवंशे जन्म मोर राम-नाम धरि ※ एकदिनेर रणे आमि बैरी नाहि मारि
आजि तोरे मारिले विवाद घुचे जाबे ※ ज्ञाति-बन्धु-आदि तोर अनेक बाँचिबे
एक लक्ष पुत्र तोर, सओया-लक्ष नाति ※ एक जन ना राखिब वंशे दिते बाति
शेषे तोरे बधिब करिया लंड-भंड ※ विभीषण-उपरे धराव छत्रदण्ड
सभाखंड सकले रामेर कथा शुने ※ अर्द्धचन्द्र-बाण राम पूरेन सन्धाने
बाणे दशदिक् आलो, उल्का-हेन छुटे ※ दश-माथार मुकुट एकइ बाण काटे
काटा गेल मुकुट, खसिल दश-पाग ※ भंगदिल दशानन, नाहि पाय लाग
सारथिरे आज्ञा दिल राजा दशानन ※ लंकाते चालाओ रथ त्वरित-गमन
रावणेर आज्ञा पेये सारथि सत्वर ※ शीघ्रगति निल रथ लंकार भितर
काटा गेल मुकुट, पलाय दशानन ※ धर धर डाक छाड़े यत कपिगण
कृत्तिवास-कवित्व शुनिते बड़ रंग ※ लंकाकाण्डे गान गीत रावणेर भंग ४०

अकाले कुम्भकर्णेर निद्राभंग ओ रावणेर सहित कथोपकथन

भंग दिया गेल रावण पेये अपमान ※ पात्र-मित्र ल'ये बैसे करिया देयान

गया। आज तेरा वध न कर तेरे बाल नोच लेता हूँ—लोकाचार के रूप में मेरा यही उपहार तू आज ले जा। मेरा नाम राम है और मैंने रघुवंश में जन्म लिया है। एक दिन के रण में मैं अपने शत्रु का वध नहीं करता हूँ। आज अगर तुझको मैं मार डालूँ तो झगड़ा ही खत्म हो जायगा और तेरे नाते-रिश्तेदार बहुत सारे जीवित रह जाएँगे। तेरे एक लाख पुत्र हैं और सवा लाख पौत्र हैं। मैं उनमें से एक को भी जिन्दा नहीं छोड़ जाऊँगा कि तेरे कुल के दीपक के रूप में जीवित रहें। पूरा हुड़दंग मचाने के उपरान्त ही तेरा वध करूँगा और विभीषण पर राजछत्र शोभा देगा। उपस्थित सारे लोगों ने राम की घोषणा सुनी। राम ने धनुष पर अर्ध-चन्द्र वाण साधा। वाण से दशों दिशाएँ प्रकाशमय हो गईं—उल्का सी वह लपकी। एक ही वाण से उन्होंने दस सिरों पर शोभायमान मुकुट काट डाले। मुकुट कट गये और दस पगड़ियाँ भी गिर गईं, यह देखकर दशानन भाग खड़ा हुआ। तब दशानन ने रथ चलाने के लिए सारथी को आज्ञा दी। रावण की आज्ञा पाकर सारथी द्रुतगति से रथ लेकर लंका की ओर चल पड़ा। दशानन के मुकुट गिर गये, और वह लंका की ओर भाग रहा है यह देखकर सारे कपि 'पकड़ो पकड़ो' का शब्द करने लगे। कृत्तिवास का कवित्व सुनने में बड़ा आनन्द आता है। लंकाकांड में उन्होंने रावण के पलायन का गीत गाया ॥ ४० ॥

असमय कुम्भकर्ण का निद्राभंग और रावण से वार्त्तालाप

अपमानित होकर रावण रणक्षेत्र से भाग खड़ा हुआ। सारे पात्र-मित्र सभासदों को लेकर वह सभा में बैठा। चारों ओर तीस-कोटि सेनापति घेरे

त्रिशकोटि सेनापति चौदिके वेष्टन ※ सभा मध्ये सिंहासने बसिल रावण
रावण बले, बुझिलाम देवतार फन्दि ※ एतदिने गड़ाइल, या बलिल नन्दी
कुबेरे जिनिया आसि कैलास-शिखरे ※ नन्दी दाँड़ाइया छिल शिवेर दुयारे
शिव-दुर्गा-दर्शने वासना आमार ※ विस्तर कहिनु, नन्दी ना छाड़िल द्वार
विकृत बानर-मुख नन्दी जे दुयारी ※ मुखपाने चाहि तार दिलु टिट्कारी
कोप करि नन्दी मोरे दिल अभिशाप ※ सेइ शापे पाइ आमि एत मनस्ताप
नन्दी कहिलेक, आमि शिवेर किंकर ※ मोरे उपहास कर दुष्ट निशाचर
कपिमुख देखि तुइ कैलि उपहास ※ एइ मुख हबे तोर सवंशे विनाश
फलिल नन्दीर शाप एतदिन परे ※ पराजय करिलेक वनेर बानरे
क'रेछि विस्तर तप हइते अमर ※ अमर हइते ब्रह्मा नाहि दिलवर
एइ वर दिला ब्रह्मा हइया सदय ※ यक्ष रक्ष देवता गन्धर्व्वे नाहि भय
सवारे जिनिब रणे, मागि निलाम वर ※ सबे मात्र वाकि छिल नर ओ बानर
भेवेछिनु भक्ष्य मध्ये एरा दुइजन ※ के जाने, बानर-नर दुर्जय एमन
पुनः ब्रह्मा वर दिला अनुकूल ह'ये ※ काटामुंड जोड़ा जाबे स्कन्धेते आसिये
देव-दानव-गंधर्वेते नाहि तोर डर ※ सवंशे मारिबे तोरे नर ओ बानर

हैं और बीच में रावण सिंहासन पर बैठा है। रावण ने कहा, देवताओं का छल अब समझ में आया। नन्दी ने जो कहा था वह इतने दिनों में फला। कुबेर पर विजय प्राप्त कर मैं कैलास पर्वत पर आया। शिव जी के दरवाजे पर नन्दी खड़ा था। शिव-दुर्गा के दर्शन के लिए मेरे मन में अभिलाषा थी। बहुत कहता रहा लेकिन नन्दी ने दरवाजा नहीं छोड़ा। बन्दर सरीखे विकृत मुखवाले नन्दी की मैंने बहुत खिल्ली उड़ाई। गुस्से में आकर नन्दी ने मुझे शाप दिया। उसी शाप से मेरे मन में इतना दुख है। नन्दी ने कहा, मैं शिव का किंकर हूँ। तू दुष्ट निशाचर मेरा कपिमुख देखकर उपहास कर रहा है। इसी मुखवालों द्वारा तेरे वंश का विनाश होगा। नन्दी का शाप इतने दिनों में फैला। मुझको वन के वानरों ने पराजित किया। अमर बनने के लिए मैंने कितनी ही तपस्या की है लेकिन फिर भी ब्रह्मा ने मुझे अमरत्व का वर नहीं दिया। ब्रह्मा ने सदय होकर यह वर दिया कि यक्षों, राक्षसों, देवताओं और गन्धर्वों से मुझको कोई भय नहीं रहेगा—सभी पर मुझको विजय प्राप्त होगी—यही वर मैंने उनसे माँग लिया। बाकी रह गये नर और बानर—ये तो मेरे भक्ष्य हैं ऐसा सोचा था मैंने। कौन जानता था कि नर और वानर इतने दुर्जय होते हैं। फिर ब्रह्मा ने मेरे प्रति सदय होकर वर दिया कि मेरे कटे मुंड फिर से स्कन्ध से जुड़ जायेंगे। देवों-दानवों-गन्धर्वों से तुझे कोई भय नहीं। नर और वानर ही तेरे सारे वंश को नष्ट करेंगे। ये ब्रह्मा के वाक्य थे, इसमें कोई बात अन्यथा नहीं हो सकती। इतने दिनों

ब्रह्मार वचन इहा, कभु नहे आन ❊ एतदिने पाइलाम बड़ अपमान
सर्वांग पुड़िछे मोर मनुष्येर वाणे ❊ राजा ह'ये हारिलाम, जिने कोन जने
निद्रा जाय कुम्भकर्ण, जागिवेक कबे ❊ विचार करिया देख सभाखंड सबे
जाय अर्द्ध लंकापुरी कुम्भकर्ण-भोगे ❊ छयमास निद्रा जाय, एक दिन जागे
पाँच मास गत, निद्रा एकमास आछे ❊ आजिलंका मजिले से कि करिबे पाछे
कुम्भकर्णे जागाइते करह जतन ❊ प्राणसत्वे मोर जेन हय सचेतन४१
एत यदि आज्ञा दिल राज लंकेश्वर ❊ तिन लक्ष रक्षः चले कुम्भकर्ण-घर
भक्ष्य-द्रव्य मद्य-मांस अनेक प्रकार ❊ सुगन्धि चन्दन-पुष्प आने भारे-भार
पाले-पाले महिष-हरिण आने कत ❊ छागल गाड़ल नाहि हय परिमित
सोनार निर्मित गृह अति मनोहर ❊ विश्वकर्मा-निर्मित विचित्र बहुतर
सारि-सारि सोनार कलस-सब साजे ❊ नेतेर पताका उड़े, जयघंटा बाजे
त्रिश-योजन घरखान दीर्घ-निरूपण ❊ आड़े दश-योजन देखिते सुगठन
चारिक्रोश जुड़े द्वार आड़ेते निर्णय ❊ दीर्घेते योजन-अष्ट, दृष्ट नाहि हय
चारिदिके एइरूप द्वार शोभे चारि ❊ मध्ये-मध्ये गवाक्ष शोभिछे सारि-सारि
रत्नखाटे कुम्भकर्ण घुमे अचेतन ❊ नाकेर निश्वास जेन प्रलय-पवन

में मुझको इतना बड़ा अपमान सहन करना पड़ा। मनुष्य का वाण खाकर मेरा सारा तन-बदन जला जा रहा है। राजा होकर भी मैं हार गया जिसको कोई हरा नहीं सकता था। कुम्भकर्ण निद्रा में मग्न है, जाने कब उसकी नींद टूटेगी। सारी सभा से मैं यह विचारने का अनुरोध करता हूँ कि आधी लंका-पुरी कुम्भकर्ण के भोग में स्वाहा हो जाती है। छह महीने सोता है तो एक दिन जागता है। पाँच महीने बीत चुके हैं और एक महीना शेष है। अगर आज ही लंका ध्वंस हो जाय तो बाद में जागकर वह क्या करेगा। इसलिए उसे जगाने का यत्न करें—कि वह जीवितावस्था में सचेतन हो जाय ॥ ४१ ॥

जब राजा लंकेश्वर ने यह आज्ञा दी तो तीन लाख राक्षस कुम्भकर्ण के गृह की ओर चल पड़े। तरह-तरह के भोजन-पदार्थ एवं मदिरा-मांस लेकर वे चले। सुगन्धि, चन्दन और ढेर के ढेर पुष्प भी लेकर वे चले। वे न जाने कितने भैंसे, हिरन और बकरे ले चले जिनकी कोई गिनती नहीं। विश्वकर्मा द्वारा निर्मित स्वर्ण का बना वह भवन बड़ा ही विचित्र और सुन्दर है। पंक्तियों में सोने के कलश सजे हुए और वस्त्र निर्मित पताकाएँ फहरा रही हैं और जयघंटे बज रहे हैं। भवन की लम्बाई तीस योजन है और चौड़ाई दस योजन। लम्बाई में दरवाजा चार कोस का है तो ऊँचाई में आठ योजन—आँखों से दिखाई नहीं पड़ता। भवन के चारों ओर इस प्रकार के चार दरवाजे शोभित हो रहे हैं और बीच-बीच में गवाक्षों (झरोखों) की

दूयारेर निकटेते जे राक्षस आसे ※ उड़ाइया फेले तारे नाकेर निश्वासे
टानिया प्रश्वास जबे लय निशाचर ※ राक्षस कतेक ढोके नाकेर भितर
ये-सब राक्षस जाने सन्धि उपदेश ※ अनेक शक्तिते घरे करिल प्रवेश
अंग-भंगे आलस्ये जखन तुले हाइ ※ मुखेर गह्वर येन बड़ गड़ खाइ
कि रूपेते कुम्भकर्णेर हबे निद्राभंग ※ कत-शत निशाचर करे कत रंग
बाजाइल लक्ष-डाक चारिदिके बेड़े ※ निद्रा जाय कुम्भकर्ण, कर्ण नाहि नड़े
घड़ा-घड़ा चन्दन डालिया दिल बुके ※ सुगन्ध-शीतले आरो निद्रा जाय सुखे
बाजाय कानेर काछे तिन-लक्ष शाँख ※ द्विगुण बाड़िल आरो नासिकार डाक
शाँख-नाक-गर्जने गभीर महाशब्द ※ शंकाय लंकार लोक ह'ये रहे स्तब्ध
पाले-पाले आनिल ये छागल गाड़र ※ प्रवेश कराय तार नाकेर भितर
तिलार्द्धओ नासारन्ध्रे रहिते ना पारे ※ निश्वासे पड़िल उड़े दिग्-दिगन्तरे
यतेक प्रबन्ध करे निशाचरगणे ※ ब्रह्मा-वरे निद्रा जाय, किछु नाहि जाने
रावण-गोचरे वार्ता कहिल सत्वरे ※ राजाज्ञाते राक्षसेरा चारिभिते मारे
राजभ्राता बलि केह नाहि करे डर ※ बुकेर उपरे मारे वृक्ष ओ प्रस्तर

पंक्तियाँ भी सुशोभित हैं। रत्ननिर्मित पलंग पर कुम्भकर्ण निद्रा में अचेतन है। नाक से जो श्वास छोड़ रहा है वह मानों प्रलय का पतन हो। दरवाजे के निकट जो भी राक्षस जा पहुँचता उसी को उसाँस दूर उड़ा ले जा रही है। जब वह साँस खींचता तो कितने ही राक्षस खिंच कर नाक के भीतर जा पहुँचते। जिन राक्षसों को कौशलों का पता है वे ही काफी शक्ति के साथ भवन में प्रवेश कर सके। आलस्य से जब भी वह जमुहाई लेने लगता तो उसका मुँह एक खाई की तरह लगने लगता। कुम्भकर्ण की निद्रा कैसे टूटे इस पर सैकड़ों निशाचर कितने ही प्रकार के तमाशे करने लगे। चारों ओर से घेर कर एक लाख धौंसे बजाये गये। कुम्भकर्ण सोता ही रहा उसके कानों में जूँ नहीं रेंगी। सीने पर घड़ों चन्दन उँडेला गया—सुगन्ध और शीतलता पाकर वह और भी सुख से सोने लगा। कानों के पास तीन लाख शंख बजने लगे। नाक का स्वर दुगुना हो गया। शंख और नाक के गर्जन से घोर नाद होने लगा और शंका से लंका के निवासी स्तब्ध रह गये। जो ढेर के ढेर भेड़ और बकरे लाये गये थे उनको उसकी नाक में प्रवेश करा दिया गया। क्षणभर के लिए भी वे नथुनों में टिक न सके, साँस से वे दिग्-दिगन्तरों की ओर उड़ गये। जितने ही प्रबन्ध निशाचर करने लगे, ब्रह्मा के वर से वह सोता ही रहा और कुछ भी न जान सका। तब तुरन्त ही सब लोगों ने जाकर रावण से यह वार्त्ता सुनाई। राजा की आज्ञा पाकर वे चारों तरफ से उसे पीटने लगे—राजा का भाई जानकर कोई भी डरा नहीं। उसके सीने पर पेड़ और पत्थर बरसाने लगे। कोई-कोई तो उस पर ताव

मुषल मुद्गर केह अंगे मारे तेड़े ❋ साँड़ासिते मांस टाने, शेल-शूल फोंड़े
केह कामड़ाय, केह चुले धरि टाने ❋ ब्रह्मा-वरे निद्रा जाय, किछुइ ना जाने
मार खेये कुम्भकर्ण हइल विवर्ण ❋ सकल राक्षस बले, मैल कुम्भकर्ण
महोदर बले, एक युक्तिमने गणि ❋ लंकार भितर हैते आनह कामिनी
शोयाओ से सबाकारे कुम्भकर्ण-पाशे ❋ आपनि जागिबे वीर नारीर परशे
एत शुनि सब वीर धाइल सत्वर ❋ विद्याधरी-तुल्या नारी आनिल विस्तर
शुइल ताहारा कुम्भकर्णेर आसने ❋ सर्व्वांग लेपन तार करिल चन्दने
तार पाशे कन्या-सब करे आलिंगन ❋ अति-सुशीतल लागे कन्या-परशन
एके कुम्भकर्ण, ताहे स्त्रीगण पाइया ❋ पाश फिर शोय वीर अंग मोड़ा दिया
नाकेर निश्वास येन प्रलयेर झड़ ❋ भय पेये कन्या-सब उठि दिल रड़
महोदर बले, एक युक्ति अनुमानि ❋ मदिरा-मांसेर देह खुलिया ढाकनि
जागाइते ना पारिबे ए-सब प्रबन्धे ❋ आपनि जागिबे वीर मद्य-मांस-गन्धे४२
अनन्त-बासुकि येन तुलिलेक हाइ ❋ चन्द्र-सूर्य दुइ चक्षु देखिया डराइ
घूर्णित-लोचन वीर उठि वैसे खाटे ❋ निद्राभंग ह'ये तबे कुम्भकर्ण उठे

में आकर मूसल और मुद्गर चलाने लग गया। कोई तो सँड़सी से मांस नोचने लग गया तो कोई शेल और शूल धँसा देने लगा। तो कोई उसके बाल नोचने लगा। पर वह ब्रह्मा के वरदान से निद्रामग्न रहा, कुछ भी न जान सका। मार खाकर कुम्भकर्ण के शरीर का रंग उड़ गया तो सभी राक्षसों ने कहा कुम्भकर्ण मर गया। महोदर ने कहा, मेरा एक परामर्श मानो। लंका के भीतर से कामिनियों को ले आओ और सबको कुम्भकर्ण के बगल में लिटा दो। नारी के स्पर्श से स्वयं वीर जाग जायगा। इतना सुनकर सभी वीर तुरन्त दौड़ पड़े और अनेक संख्या में विद्याधरी नारियों को ले आए। वे कुम्भकर्ण के बिस्तर पर लेट गयीं और उसका सारा अंग चन्दन से पोत दिया। बगल में लेट कर जब इन नारियों ने उसे आलिंगनबद्ध किया तो कुम्भकर्ण को इन नारियों का स्पर्श बड़ा सुखद लगा। एक तो कुम्भकर्ण है फिर नारी का स्पर्श। अंगड़ाई लेते हुए वीर ने करवट बदली। नाक से निकलने वाली निःश्वास मानों प्रलय की आँधी हो, डर कर सभी नारियाँ भाग खड़ी हुईं। महोदर ने कहा, एक युक्ति मेरी और सुन लो। मदिरा और मांस के पात्रों के ढक्कन खोल दो। इन सब तरकीबों से उसे नहीं जगा सकोगे। वह स्वयं मदिरा मांस की गन्ध से जाग जायगा ॥ ४२ ॥

मानों अनन्तनाग ने जमुहाई ली—चन्द्र-सूर्य जैसे धधकती दो आँखें देखकर डर लगता। नींद से जागकर कुम्भकर्ण उठ कर पलंग पर बैठ गया और उसके दोनों नेत्र उस समय घूर्णित हो रहे थे। बिस्तर पर बैठकर वीर निशाचर ने कहा, किस कारण तुम लोगों ने मुझको बेवक्त नींद से जगा दिया।

शय्याय बसिया वीर निशाचरे बले * कि लागिया निद्राभंग करिलि अकाले
अकाले जागालि मोरे, छोट नहे काज * कोनबेटा उल्लंघने रावणमहाराज १४३
धेये गिया रावणे बले निशाचर * कुम्भकर्ण जागिलेन, शुन लंकेश्वर
भाइके देखिते हैल रावणेर साध * कुम्भकर्णे जानाइल रावण-संवाद
शय्या हैते उठि वीर चक्षे दिल पानि * भक्षणेर द्रव्य दिल थरे थरे आनि
मद्यपान करिलेक साताश-कलसी * पर्व्वत-प्रमाण मांस खाय राशि-राशि
हरिण महिष वरा सापटिया धरे * बारो-तेर-शत पशु खाय एक बारे
कुम्भकर्ण बले, बुझिलाम अनुमाने * अकाले जागाय मोरे याहार कारणे
कोन लाजे इन्द्र बेटा दिते एलो हाना * वारे वारे हेरे जाय ना भावे भावना
आछुक इन्द्रेर काज, यम यदि आसे * यम ह'ये ताहारे गिलिब एकग्रासे १४४
विरूपाक्ष राक्षस से धर्म्म-अधिष्ठान * जोड़हाते कहे कुम्भकर्ण-विद्यमान
देवे कोप न कर, निर्दोष पुरन्दर * प्रमाद पाड़िल एत नर ओ वानर
शूर्पणखा गियाछिल पंचवटी-वने * अग्रे तार नाक-कान काटिल लक्ष्मणे
श्रीरामेर सीता राजा आने सेइ रोषे * सागर डिंगिया हनू लंकापुरे आसे
लंका दग्ध करिल वानर हनूमान * तुमि थाक्ते लंकार एतेक अपमान

असमय ही तुम लोगों ने मुझको जगा दिया है—यह कोई सामान्य काम नहीं। महाराजा रावण की आज्ञा का किसने उल्लंघन किया ? ॥ १४३ ॥

राक्षसों ने दौड़कर रावण से जाकर कहा, सुनो लंकेश्वर, कुम्भकर्ण जाग पड़ा है। रावण का जी चाहा कि भाई को देखें। रावण का सन्देश कुम्भकर्ण को भेजा गया। बिस्तर से उठकर वीर ने आँखों पर पानी का छींटा मारा। तरह-तरह की भोज्य-सामग्री लाकर सामने रख दी गई। उसने सत्ताईस घड़े मदिरा के पी डाले और पर्वत के ढेर के समान मांस खा गया। भैंसे, हिरन और वराह पकड़-पकड़ कर वह खाने लगा। एक-एक निवाले में वह बारह-तेरह सौ जानवर खाने लगा। कुम्भकर्ण ने कहा, मैंने अनुमान लगा लिया है कि मुझको किस कारण असमय जगा दिया गया है। यह इन्द्र भी कैसा निर्लज्ज है फिर धावा बोलने आ गया। बार-बार हार जाने पर भी उसको कोई चिन्ता नहीं। इन्द्र तो अलग रहा, अगर यम भी आ जाये तो उसका यम बनकर मैं उसको भी निगल जाऊँगा ॥ १४४ ॥

धर्म का पुजारी विरूपाक्ष नामक एक राक्षस था। उसने हाथ जोड़ कर कुम्भकर्ण से कहा, देवताओं पर नाराज मत हो, पुरन्दर निर्दोष है। नर और वानर यह प्रमाद ले आए हैं। पंचवटीवन में सूर्पनखा गयी थी, वहाँ लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट डाले। उसी क्रोध में राजा रावण जाकर श्रीराम की सीता को ले आया। सागर लाँघ कर हनुमान लंकापुरी आया और उस बन्दर हनुमान ने लंकापुरी जला डाली। तुम्हारे रहते हुए लंका का इतना बड़ा अपमान हो।

प्रमाद करिछे नर-वानर आसिये ❋ राजा-प्रजा र'येछे तोमार मुख चेये १४५
कुम्भकर्ण बले, आगे जिने आसि रण ❋ तबे त भेटिव गिया भाइ दशानन
एत बलि कुम्भकर्ण चले रणमुखे ❋ महोदर भाइ गिया कहिछे सन्मुखे
राजार नाहिक आज्ञा रणे दिते हाना ❋ केमने जाइबे युद्धे ना करि मन्त्रणा
यात्राकाले कुम्भकर्ण आरो खेते चाय ❋ राजभोग-द्रव्य आनि राक्षसे योगाय
बहुदिन अनाहारे खाय बाड़ाबाड़ि ❋ मद खेये उजाड़िल सातशत हाँड़ि
नहेसे सामान्य हाँड़ि, कि कब व्याख्यान ❋ पंचिशेर बन्द जेन घर एक खान
महारक्त कत खाइल, संख्या नाहि हय ❋ पाले पाले शूकर मनुष्य कुड़ि छय ४६
यात्रा करि चलिलेन कुम्भकर्ण-वीर ❋ मेघ हैते सूर्य येन हइल बाहिर
पर्व्वत-प्रमाण उच्च लंकार प्राचीर ❋ प्राचीर जिनिया कुम्भकर्णेर शरीर
चले जाय पथे, येन सुमेरु-समान ❋ देखिया त बानरेर उड़िल परान
दरशने भंग दिल यत कपिगण ❋ आश्वासिया राखिल राक्षस विभीषण ४७
विभीषण-आश्वासे रहिल कपिगणे ❋ रघुनाथ जिज्ञासा करेन विभीषणे
एतदिन कोथा छिल एइ महावीर ❋ त्रिभुवन जिनिया त दुर्ज्जय शरीर

नर और वानर आकर विपत्ति मचाये हुए हैं—राजा-प्रजा सभी तुम्हारा मुँह देख [अर्थात् आसरा कर] रहे हैं ॥ १४५ ॥

कुम्भकर्ण ने कहा, पहले जाकर मैं रण में जीत आऊँ, फिर भाई दशानन से भेंट करूँगा। इतना कह कर कुम्भकर्ण रणक्षेत्र की ओर चल पड़ा। भाई महोदर उसके सम्मुख पहुँचकर बोला, रण में धावा बोलने की आज्ञा राजा से नहीं मिली है, बिना परामर्श किये युद्ध में कैसे जाओगे? यात्रा के समय कुम्भकर्ण ने और भी खाना माँगा। राक्षसों ने राजभोग लाकर रख दिया। लम्बी अवधि तक निराहार रहने के कारण खाने में कुछ अधिकाई भी की। सात सौ हाँडी मदिरा पी डाली उसने। वे हाँडियाँ भी कोई ऐसी-वैसी नहीं थीं—उनका क्या बखान करूँ। एक-एक मानो विशाल कक्ष सा हो। कितना महारक्त वह पी गया इसका कोई हिसाब ही नहीं। सुअरों के कई जत्थे और छब्बीस मनुष्य भी ॥ ४६ ॥

वीर कुम्भकर्ण ने यात्रा की तो लगा मानों बादलों में से सूर्य निकल आया। लंका का प्राचीर पर्वत के समान ऊँचा है—और कुम्भकर्ण का शरीर उससे भी ऊँचा है। पथ पर चलते समय लगता कि सुमेरु पर्वत चला जा रहा है। उसको देखकर बन्दरों के प्राण सूख गये। देखते ही उनके पैर उखड़ गये। विभीषण ने उन लोगों को आश्वासन देकर किसी प्रकार से रोका ॥ ४७ ॥

विभीषण के आश्वासन पर कपि रुक गये। रघुनाथ ने विभीषण से पूछा, इतने दिनों तक यह वीर कहाँ रहा। इसका डील-डौल तो दुर्जय सा लगता है। सैन्य का अनुमान लगाये बिना ही मैं समुद्र पार कर चला आया।

ना बुझे कटक आमि करियाछि पार ❋ इहार संग्रामे कारो नाहिक निस्तार
विभीषण बले, शुन राम रघुवर ❋ कुम्भकर्ण नामे मम मध्यम सोदर
ब्रह्मार वरेते राजा दशानन युझे ❋ कुम्भकर्ण-वीर युद्धे आपनार तेजे
गदा हाते कुम्भकर्ण यदि करे रण ❋ एकदण्डे जिनिते पारये त्रिभुवन
कुम्भकर्ण भूमिष्ठ हइल जेइकाले ❋ सूतिका-घरेर नारीगणे धरि गिले
स्वर्ग-विद्याधरी-आदि विस्तर रूपसी ❋ ध'रे ध'रे खाइल अनेक मुनि-ऋषी
कोप करि पुरन्दर बज्र-अस्त्र हाने ❋ बज्र-अस्त्र गिलेछिल अमरेर रणे
ऐरावत-दन्त उपाड़िया एकटाने ❋ सेइ दन्त प्रहारिल सहस्रलोचने
मूर्च्छिया पड़िल इन्द्र धरणी-उपर ❋ अमर बलिया ताइ बाँचे पुरन्दर ४८
कुम्भकर्ण-कथा शुन राजीव-लोचन ❋ गोकर्ण-पुरेते तप करि तिनजन
ब्रह्मा वर दिला तबे भाइ तिनजने ❋ प्रथमे दिलेन वर ज्येष्ठ दशानने
ब्रह्मा बले, त्रिभुवन जिनिब रावण ❋ नर-वानरेर हाते सवंशे निधन
तुष्ट ह'ये आमारे विधाता दिला वर ❋ सेइ वरे देख आमि ह'येछि अमर
वर दिते गेल ब्रह्मा कुम्भकर्ण-स्थान ❋ इन्द्रआदि देवतार उड़िल पराण
बिना वरे कुम्भकर्णे देखि लागे डर ❋ सृष्टिनाश करिबे ब्रह्मार पेले वर

इसके साथ संग्राम में तो किसी की भी जान नहीं बचेगी। विभीषण ने कहा, हे राम रघुवर सुनो, यह मेरा मध्यम सहोदर कुम्भकर्ण है। राजा दशानन ब्रह्मा के वर की शक्ति से युद्ध करता है किन्तु कुम्भकर्ण अपनी ही शक्ति से जूझता है। हाथों में गदा लेकर यदि कुम्भकर्ण युद्ध में उतरे तो एक दंड में वह तीन लोक पर विजय पा सकता है। जिस समय कुम्भकर्ण ने जन्म लिया था उस समय सौरी में उपस्थित नारियों को पकड़-पकड़ कर लीलने लगा था। स्वर्ग की विद्याधरी आदि असंख्य रूपवतियों को और अनेक मुनि-ऋषियों को इसने पकड़-पकड़ कर खा डाला। गुस्से में आकर पुरन्दर (इन्द्र) ने इस पर वज्र फेका था सो इसने उस वज्र को भी लील लिया था। ऐरावत का दाँत उखाड़ कर उसी दाँत से उसने सहस्रलोचन पर प्रहार किया था। मूर्च्छित होकर सहस्रलोचन (इन्द्र) धरती पर गिरा पड़ा था। केवल अमर होने के कारण ही पुरन्दर का जीवन बच गया था ॥ ४८ ॥

हे राजीवलोचन राम! तुमको कुम्भकर्ण के सम्बन्ध में सुनाता हूँ। हम तीनों गोकर्णपुर में तपस्या कर रहे थे; प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने हम तीनों को वर दिया। आरम्भ में उन्होंने ज्येष्ठ दशानन को वर दिया कि रावण तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करेगा किन्तु नर और वानर के हाथों उसका सपरिवार निधन भी होगा। तुष्ट होकर विधाता ने मुझे भी वर दिया और उसी के कारण मैं अमर हो गया हूँ। जब ब्रह्मा कुम्भकर्ण को वर देने को चला तो इन्द्र आदि देवताओं के प्राण सूख गये। बिना वर पाये हुए कुम्भकर्ण को

यतेक देवतागण ह'ये एकमति ❊ युक्ति करि पाठाइला देवी सरस्वती
देवी गिया बसिलेन कण्ठेर उपर ❊ ब्रह्मा बले, कुम्भकर्ण, चाह कोन वर
कुम्भकर्ण बले, ब्रह्मा, नाहि चाहि आनि ❊ चिरकाल निद्रा जाइ, करह विधान
ब्रह्मा बले, दिनु वर, चाहिले येमन ❊ दिवानिशि निद्रा जाह ह'ये अचेतन
वर शुनि शोकाकुल हइल रावण ❊ कान्दिया धरिल गिया ब्रह्मार चरण
रावण बलिल, सृष्टि सृजिले आपनि ❊ आपनि विनाश केन कर पद्मयोनि
तोमार वचन कभु ना हइबे आन ❊ निद्रा-जागरण प्रभु, करह विधान
ब्रह्मा बले, दिनु वर, शुनह रावण ❊ छयमास निद्रा एक दिन जागरण
अद्भुत धरिबे बल, अद्भुत आहार ❊ काँचा-निद्रा भंग ह'ले से-दिन संहार
एत बलि चतुर्म्मुख करिल गमन ❊ कुम्भकर्ण हइल निद्राय अचेतन
स्कन्धे करि निवासे आइनु दुइ भाइ ❊ कुम्भकर्ण कथा एइ, शुनह गोसाँइ
काँचा-निद्रा भंग आजि ह'येछे उहार ❊ अवश्य तोमार हाते हइबे संहार ४९
शुनि हरषित हैल श्रीराम-लक्ष्मण ❊ कुम्भकर्ण गेल तबे भेटिते रावण
कुम्भकर्णे देखिया रावण कुतूहली ❊ सिंहासन हैते उठि करे कोलाकुलि
कुम्भकर्ण रावणेर बन्दिल चरण ❊ बसिते दिलेन राजा रत्न सिंहासन

देख कर ही डर लगता है, ब्रह्मा का वर मिलते ही यह सारी सृष्टि का नाश कर देगा। सभी देवताओं ने परामर्श के उपरान्त एकमत होकर देवी सरस्वती को भेज दिया। देवी सरस्वती जाकर उसकी जिह्वा पर बैठ गईं। ब्रह्मा ने पूछा, कुम्भकर्ण, कौन सा वर चाहते हो। कुम्भकर्ण ने कहा, ब्रह्मा, मैं और कुछ नहीं चाहता हूँ, सदा सो सकूँ इसका विधान दो। ब्रह्मा ने कहा, जैसा वर माँग रहे हो वैसा ही दे रहा हूँ। रातोंदिन तुम निद्रा में अचेतन रहा करो। वर सुनकर रावण बड़ा दुखी हुआ और जाकर उसने ब्रह्मा के चरण पकड़ लिये। रावण ने कहा, हे पद्मयोनि, तुमने स्वयं ही सर्जन किया तो स्वयं ही विनाश क्यों करने लग गये। तुम्हारा कहा हुआ कभी टल नहीं सकता, निद्रा और जागरण दोनों का विधान दो। ब्रह्मा ने कहा, सुनो रावण! मैंने वर दे दिया, छह महीने यह निद्रा में रहेगा और एक दिन जागेगा। अद्भुत बलशाली होगा और अद्भुत भोजन भी होगा। असमय नींद टूटने पर इसका विनाश होगा। इतना कहकर चतुरानन चल दिये और कुम्भकर्ण निद्रा में अचेतन हो गया। उसको कन्धे पर लाद कर हम दोनों भाई घर लौट आए। सुनो प्रभु, यही है कुम्भकर्ण की कथा। आज उसकी नींद असमय टूटी है, अतः तुम्हारे हाथ ही उसका निधन होगा॥ ४६॥

यह सुनकर राम-लक्ष्मण दोनों बड़े प्रसन्न हुए। तब कुम्भकर्ण रावण से भेंट करने गया। कुम्भकर्ण को देखकर रावण ने सिंहासन से उतर कर उसको बाहों में बाँध लिया। कुम्भकर्ण ने रावण के चरणों की वन्दना की

कुम्भकर्ण बले, तव कारे एत डर ※ आज्ञा कर, काहारे पाठाब यमघर
आमिह थाकिते तव कारे नाहि डर ※ कतबार जिनियाछि यम-पुरन्दर
सागर शुषिब आजि, खाइब आगुनि ※ शूले खान-खान करि काटिब मेदिनी
चन्द्र-सूर्य चिबाइया फेलाइब दाँते ※ पृथिवी उपाड़ि फेलाइब खरस्रोते
सप्तद्वीपा पृथिवी करिब खंड-खंड ※ त्रिभुवन-उपरे धराब छत्र-दंड
एतेक बलिया वीर जिज्ञासे तखन ※ नर-वानरेर संगे युद्ध कि कारण
रावण बले, निद्रा जाओ ह'ये अचेतन ※ किरूपेते जानिबे एतेक विवरण
तिन सहोदर मोरा, भग्नी मात्र एका ※ जननीर आदरेर कन्या शूर्पणखा
विधवा हइया भग्नी कान्दिल विस्तर ※ मने-मने वासना थाकिते स्वतन्तर
शिवेर साधना-हेतु रहे स्थानान्तरे ※ स्थान दिया राखिलाम सागरेर पारे
संगे दिनु दुइ भाइ खर ओ दूषण ※ चौद्द-हाजार निशाचर ताहार भिड़न
एइरूपे शूर्पणखा किछुदिन थाके ※ देवेर निर्बन्ध भाइ, कि कब तोमाके
राजा दशरथ छिल अयोध्यार धाम ※ चारि-पुत्र हय तार, ज्येष्ठ पुत्र राम
भरतेरे दिल राज्य, ना दिल ताहारे ※ दुर्भगार पुत्र बलि दिल दूर क'रे
वनेते आइल राम हइया संन्यासी ※ संगेते लक्ष्मण भाई, भार्या से रूपसी

और राजा ने उसको बैठने के लिए रत्न-सिंहासन दिया। कुम्भकर्ण ने कहा, तुमको किससे भय है मुझे बताओ, मैं उसको यम के घर भेज दूँ। मेरे रहते तुमको किसी का भी डर नहीं होना चाहिए—कितनी ही बार मैंने यम और पुरन्दर को हराया है। मैं सागर सोख डालूँ, आग खा डालूँ और भूमण्डल को शूल से खंड-खंड कर डालूँ। चन्द्र-सूर्य को दाँतों से चबाकर फेंक दूँ, पृथ्वी को उखाड़ कर समुद्र में फेंक दूँ। सप्तद्वीपवाली इस पृथ्वी को मैं खंड-खंड कर डालूँ और तीनों लोकों पर तुम्हारा प्रभुत्व हो जाय। इतना कह कर वीर ने पूछा, यह नर-वानर के साथ युद्ध किस कारण हुआ। रावण ने कहा, अचेतन हो तुम सोते रहते हो, इतना सारा विवरण तुमको कैसे मालूम हो सकेगा। हम तीन सहोदर हैं और बहन सिर्फ एक है। जननी की लाड़ली बेटी और हमारी बहिन सूर्पणखा। विधवा होकर बहुत रोती रही और मन ही मन स्वतंत्र रहने का विचार करने लगी। शिव जी की साधना के निमित्त वह अन्य स्थान पर रहना चाहती थी। मैंने उसे समुद्र के पार स्थान देकर रखा। खर और दूषण दोनों भाइयों को उसके साथ कर दिया जिनके साथ चौदह हजार राक्षसों की सेना भी थी। इस प्रकार सूर्पणखा कुछ दिनों तक रही। लेकिन दैव का फेर तुमको क्या बताऊँ भाई! अयोध्या में राजा दशरथ थे। उनके चार पुत्र हैं। ज्येष्ठपुत्र राम को राज्य न देकर उसने भरत को राज्य दिया और राम को घर से भगा दिया। राम संन्यासी बनकर वन में आया। उसके साथ उसका भाई लछमण और

कुंड़े बाँधि छिल बेटा पञ्चवटी-वने ✻ शूर्पणखा गियाछिल पुष्प-अन्वेषणे
शूर्पणखार नाक-कान काटिल लक्ष्मण ✻ परितापे युद्ध करे खर ओ दूषण
युद्ध करि रामचन्द्र मारे सर्व्वजने ✻ भग्नी आसि कान्दिलेक धरिया चरणे
शूर्पणखा-परिताप सहिते ना पारि ✻ आमि गिया हरिया एनेछि तार नारी
बुझिते ना पारि, बेटा फेरे कत रंगे ✻ मितालि करिल गिया वानरेर संगे
सुग्रीव बालिर भाइ, किष्किन्धाय थाके ✻ कटक सञ्चय कैल सेवा करि ताके
आज्ञाकारी करियाछे यत कपिगणे ✻ बुड़ा एक भल्लुक मिलेछे तार सने
सेइ बेटा कुमन्त्रणा देय निरन्तर ✻ वृक्ष-प्रस्तरेते बान्धे अलंघ्य सागर
सेइ बाँध व'ये कपि एसेछे अपार ✻ घिरेछे कनक-लंका चारिटा दुयार
ब'सेछे पश्चिम-द्वारे से राम-लक्ष्मण ✻ बड़-बड़ निशाचरे करिल निधन
बड़इ दुष्कर नर-वानरेर रण ✻ विपदे पड़िया तोमा क'रेछि चेतन५०
कुम्भकर्ण बले, शुन भाइ दशानन ✻ शुनाले आश्चर्य कथा, ए आर केमन
यदि राम-लक्ष्मण सामान्य हैत नर ✻ जलेर उपरे केन भासिबे पाथर
वनेर वानर बद्ध ये रामेर गुणे ✻ सामान्य मनुष्य ताँरे ना भाविह मने
कुम्भकर्ण बले, हेन लय मम मन ✻ मायाते मनुष्य-रूप देव-नारायण

रूपवती भार्या सीता भी आई। पंचवटी के वन में कुटिया बनाकर रहता था। एक दिन फूल तोड़ने सूर्पणखा वहाँ गई तो लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिये। खर और दूषण ने युद्ध किया। युद्ध में रामचन्द्र ने सबको मार डाला। बहन ने आकर चरण पकड़ लिया और रोने लगी। सूर्पणखा का क्लेश मुझसे सहा नहीं गया। मैं जाकर उसकी नारी को चुरा लाया। समझ में नहीं आता यह हीन कितना छल-छन्द जानता है। इसने जाकर वानरों के साथ मित्रता कर ली। बाली का भाई सुग्रीव किस्किन्ध्या में रहता है। उसकी सेवा कर इसने सेना का जुगाड़ कर लिया। सारे कपियों को इसने आज्ञाकारी बना लिया है। इसके साथ बूढ़ा एक भालू भी (जाम्बवान) आ जुटा है। वही धूर्त बैठे-बैठे परामर्श देता रहता है। पेड़ और पत्थरों से उसने अलंघ्य सागर को बाँध डाला है। उसी बाँध पर से होते हुए असंख्य वानर इधर आ गये हैं और उन्होंने स्वर्ण-लंका के चारों द्वारों को घेर रखा है। बड़े-बड़े निशाचरों को उसने मार गिराया। यह नर-वानर वाला युद्ध बड़ा ही कठिन लग रहा है। विपत्ति में पड़कर ही तुमको जगाया है॥ ५०॥

कुम्भकर्ण ने कहा, भाई दशानन, सुनो, यह तो तुमने आश्चर्यजनक बात बताई। अगर राम-लक्ष्मण सामान्य नर होते तो जल पर पत्थर कैसे तैराते। वन का वानर राम के गुण पर रीझ कर उसका सेवक बन गया है—उसको तुम सामान्य मनुष्य न सोचना। कुम्भकर्ण ने कहा, मुझको यों लग रहा है

रावण बले, राम यदि देव-नारायण ❋ संन्यासीर वेशे केन करिबे भ्रमण
कुम्भकर्ण बले, राम हइबे तपस्वी ❋ रावण बले, केन नाहि हय तीर्थवासी
कुम्भकर्ण बले, राम हबे राजार बेटा ❋ रावण बले, केन से माथाय धरे जटा
कुम्भकर्ण बले, राम व्याध हैते पारे ❋ रावण बले, केन तबे यज्ञसूत्र धरे
कुम्भकर्ण बले, राम हवे ब्रह्मचारी ❋ रावण बले, तबे केन संगे तार नारी ५१
रावण बलिछे, राम किसेर ब्रह्मचारी ❋ भक्तिते डाकिले जाय चण्डालेर बाड़ी
दिन-पाँच-छय छिल पञ्चवटी-मूले ❋ सेखाने पाकाल जटा आठा मेखे चूले
इन्द्र चन्द्र कुवेर वरुण पुरन्दर ❋ शंकाते आसिते नारे लंकार भितर
मनुष्य हइया बेटार एत अहंकार ❋ बानरेर सहाये सागर हैल पार
बलिते ना पारि, ए कि दैवेर घटना ❋ त्रिभुवनेर कपि ल'ये रामेर मन्त्रणा
आछिल सागर सेइ अगाध गभीर ❋ आपनार तेजेते आपनि नहे स्थिर
रत्नाकर भीत हैल मनुष्येर आगे ❋ जोड़हस्त करिया बन्धन निल मेगे
एतदिने अपयश हैल रत्नाकरे ❋ वृक्ष-प्रस्तरेते बान्धे नर- ओ वानरे
वीर नाहि लंकाते, भाण्डारे नाहि धन ❋ एतेक प्रमाद तव निद्रार कारण

कि मनुष्य के रूप में यह नारायण है। रावण ने कहा, राम यदि नारायण ही है तो संन्यासी के वेश में क्यों भटकता फिर रहा है। कुम्भकर्ण ने कहा, राम तपस्वी होगा। रावण ने पूछा, तो फिर वह तीर्थवासी क्यों नहीं बना? कुम्भकर्ण ने कहा, राम राजा का बेटा है। रावण ने कहा, तो फिर वह सिर पर जटा क्यों धरे है? कुम्भकर्ण ने कहा हो सकता है राम व्याध (शिकारी) हो। रावण ने कहा, फिर यज्ञोपवीत क्यों धारण किये हुए है। कुम्भकर्ण ने कहा, राम ब्रह्मचारी होगा। रावण ने कहा, तो उसके साथ नारी क्यों है? ॥ ५१ ॥

रावण ने कहा, यह राम कैसा ब्रह्मचारी है कि भक्ति से बुलाने पर चंडाल के घर भी चला जाता है। पाँच-छह दिन पंचवटी में था, वहीं इसने गोंद से बालों में जटा बना ली। इन्द्र, चन्द्र, वरुण, कुबेर पुरन्दर जैसे देवता भय से लंका में प्रवेश नहीं करते। लेकिन मनुष्य होकर भी इस व्यक्ति को इतना घमंड है। बन्दरों की सहायता से इसने समुद्र लाँघा, कुछ बता भी नहीं सकता कि यह नियति का कैसा खेल है कि त्रिभुवन के कपियों के साथ वह मंत्रणा करता रहता है। इतने दिनों से रत्नाकर समुद्र अथाह गहरा और चंचल था लेकिन वह भी मनुष्य से डर गया और हाथ जोड़ कर बन्धन स्वीकार कर लिया। रत्नाकर इतने दिनों में बदनाम हो गया—उसको नर और वानर ने पेड़ और पत्थरों से बाँध डाला। लंका में कोई वीर न रहा और न भंडार में कोई धन ही रहा और यह सारी विपत्तियाँ तुम्हारी निद्रा के कारण ही आईं। धर्म-धुरन्धर भाई विभीषण था, वह भी मुझसे लड़ कर राम

छिल भाइ विभीषण धर्म-अधिष्ठान ※ आमा-सने द्वन्द्व करि गेल राम-स्थान
बुद्धिहीन विभीषण कार लागि मरे ※ मनुष्येर हित चिन्ति ज्ञाति-हिंसा करे
अरुण-वरुण-यमे शंका नाहि करि ※ सीता फिरे दिले ये हासिबे सुरपुरी
अन्ये हासे हासुक, हासिबे पुरन्दर ※ सेइ बेटा बलिबेक हीन लंकेश्वर
बुझिया करह भाइ, जे हय विधान ※ तुमि-विना लंकार नाहिक परित्राण
त्रिभुवन जिनिलाम तव बाहुबले ※ वानरेर संगे रणे कि आछे कपाले
लंकापुरी राखह, आमार कर हित ※ भावह उपाय मने, जे हय विहित ५२

कुम्भकर्णेर युद्धयात्रा

कुम्भकर्ण बले, किवा क'रेछ मन्त्रणा ※ तोमार सभाते नाहि मन्त्री एक जना
समुद्रेर पारे केन नाहि दिले थाना ※ तवे आर सागर बान्धित कोन जना
घरेते बसिया बड़ देखह आपना ※ कोन छार मन्त्री ल'ये तोमार मन्त्रणा
आपनारे बड़ देख बसि लंकापुरे ※ बेड़िल ए स्वर्ण-लंका वनेर वानरे
बालि हैते सुग्रीव ये नहे पराक्रमे ※ प्रबन्ध करिया तबु जिनिल संग्रामे
पाइल अर्द्धेक राज्य, महाराणी तारा ※ तोमा हैते बुद्धिमान सुग्रीव वानरा ५३
एत यदि कुम्भकर्ण रावणेरे बले ※ शुनिया रावण-राजा अग्नि हेन ज्वले

से मिल गया। यह मूर्ख विभीषण जाने किसके लिए प्राण दे रहा है। मनुष्य की भलाई सोचता हुआ अपने सगे-सम्बन्धियों से झगड़ा मोल लिए है। अरुण, वरुण, यम से मैं नहीं डरता और सीता को लौटा दूँगा तो सारी सुरपुरी हँसेगी। दूसरा कोई हँसे तो कोई बात नहीं लेकिन पुरन्दर हँसेगा और कहेगा कि लंकेश्वर हीन है। भाई, समझ-बूझ कर जो जी में आवे करो, तुम्हारे बिना लंका का कोई निस्तार नहीं। तुम्हारे ही बाहुबल से मैंने त्रिभुवन पर विजय पाई। पता नहीं, बन्दरों के साथ इस युद्ध में भाग्य में क्या लिखा है। लंकापुरी की रक्षा करो और मेरा हित। जो कुछ भी तुमको उचित लगे वही करो ॥ ५२ ॥

कुम्भकर्ण की युद्ध-यात्रा

कुम्भकर्ण ने कहा, तुम्हारी सभा में एक भी मंत्री नहीं है, जाने क्या परामर्श मिला तुमको। तुमने समुद्र पार कर छावनी क्यों नहीं कायम की? फिर तो समुद्र बाँधने से ये रह गये होते। पता नहीं कैसे मंत्रियों से तुम मंत्रणा लेते हो? लंका में बैठे अपने को बहुत बड़ा मानते हो, अब देख लो जंगल के बन्दरों ने स्वर्णलंका को घेर लिया है। जो सुग्रीव बालि के मुकाबले पराक्रम में कुछ भी नहीं है उसने तरकीब भिड़ाकर संग्राम में विजय पाई, आधा राज्य और महारानी तारा उसे मिले। वह सुग्रीव बन्दर भी तुमसे अधिक बुद्धिमान है ॥ ५३ ॥

कुम्भकर्ण ने जब रावण से इतना कहा तो रावण गुस्से से तमतमा उठा।

कुड़िचक्षु रक्तवर्ण कहे लंकेश्वर ❊ सदा थाक निद्रागत घरेर भितर
स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिनु त्रिभुवन ❊ दैवेर निर्व्वन्ध याहा, ना हय खण्डन
कनिष्ठ नहिस्, येन ज्येष्ठ सहोदर ❊ राजनीति शिक्षा दिस् सभार भितर
कहिले ये भाल-मन्द अनेक काहिनी ❊ पश्चाते बुझिब सब, वैरी आगे जिनि ५४
कुम्भकर्ण बले, भाई ना बल विस्तर ❊ विपत्-समये नीति कहे सहोदर
आमि-हेन भाइ तव, कारे कर शंका ❊ वैरी मारि राखिब कनक-पुरी लंका
श्रीरामेर माथा काटि तोमा दिब डालि ❊ सीता ल'ये चिरदिन सुखे कर केलि
आगे लंका अ-रामा ओ अ-वानरा करि ❊ सुग्रीवेरे मारिया पाठाब यमपुरी
बधिब कुमुद-आदि यत कपिगण ❊ मारिब तोमार वैरी भाइ विभीषण
हनूमान मारि आजि लंकापुरी-वैरी ❊ मारिब ताहार परे वानर केशरी ५५
चलिल से कुम्भकर्ण जुझिवार साधे ❊ भाइ महोदर गिया सम्मुखे विरोधे
महोदर बले, भाइ, करि निवेदन ❊ बहुदिन निद्रागत छिले अचेतन
देखिते करये साध पुरवासी नारी ❊ एक बार देखा दिते चल अन्तःपुरी
कुम्भकर्ण बले' कि कहिस् महोदर ❊ सम्मुखे विपक्ष ब'से यमेर दोसर
चारि-द्वार मेरे आगे जिने आसि रण ❊ तबे अन्तःपुरे हबे आमार गमन ५६

बीस आँखें लाल-लाल करते हुए लंकेश्वर ने कहा, सदा निद्रा में मग्न कमरे के भीतर रहा करते हो। त्रिभुवन तो मैंने जीता लेकिन दैव की मार से कैसे बचूँ। तू छोटा नहीं, मानों बड़ा भाई हो इस तरह सभा में राजनीति सिखाने लग गया। जो भला-बुरा तूने कहा उससे तो पीछे निबट लूँगा, इस वक्त तो शत्रु को हराना है ॥ ५४ ॥

कुम्भकर्ण ने कहा, भाई ज्यादा कुछ मत कहो, विपत्ति के समय सहोदर भाई ही सलाह देता है। मुझ जैसे भाई के होते तुमको कौन सा डर है, बैरी मारकर मैं कनक-पुरी लंका बचा लूँगा। श्रीराम का सिर काटकर तुमको भेंट चढ़ाऊँगा, सीता को लेकर सदा के लिए आनन्द से केलि करो। पहले लंका को रामशून्य और वानरशून्य बना डालूँ। सुग्रीव, कुमुद आदि कपियों को यमपुरी भेज दूँगा। हनुमान जैसे लंका के बैरी को मार गिराऊँगा। तुम्हारे शत्रु भाई बिभीषण को भी मार डालूँगा। सबके अन्त में वानर-केशरी को मारूँगा ॥ ५५ ॥

जब जूझने के लिए कुम्भकर्ण चल पड़ा तो भाई महोदर सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, बहुत दिनों से तुम निद्रा में अचेतन थे इसलिए पुरवासिनी नारियाँ तुमको देखने के लिए उत्सुक हैं। कुम्भकर्ण ने कहा, अरे महोदर, तू क्या कह रहा है। सामने यम सा शत्रु-पक्ष खड़ा है। पहले चारों द्वारों को जीत कर लौट आऊँ, फिर अन्तःपुर में जाऊँगा ॥ ५६ ॥

महोदर-कुम्भकर्ण कथा दुइजने ❋ सिंहासन छाड़ि तबे उठिल रावणे
संग्रामेर साजे राजा साजाय आपनि ❋ पराय मतिर पाग, थरे-थरे मणि
कुम्भकर्ण साजिछे, राक्षस पुलकित ❋ चारि दिके निशाचर साजये त्वरित
कुमारेर चाक येन, माणिक-अंगुरी ❋ कुम्भकर्ण-अंगुले पराय यत्नकरि
कतमत यतने पराय तोड़ताड़ ❋ माथार मुकुट येन मैनाक-पाहाड़
स्थाने-स्थाने मरकत-शोभा कत तार ❋ गलाय तुलिया दिल मणिमय हार
रत्नेते निर्म्मित दिल श्रवणे कुण्डल ❋ रवि-शशि जिनि ज्योति करे झलमल
मुकुटेर चूड़ा गिया आकाशेते जोड़े ❋ राजारे प्रणाम करि जुझिवारे नड़े५७
जुझिवारे कुम्भकर्ण चले एकेश्वर ❋ गगने मस्तक येन नव जलधर
आकाशेर चन्द्र खसे, वायु मन्दगति ❋ मेघे रक्त वरषय, काँपे वसुमती
आकाशे अमर काँपे, सागर उथले ❋ गड़ेर बाहिर ह'ये जुझिवारे चले
कुम्भकर्ण हैल यदि गड़ेर बाहिर ❋ वानर देखिया करे गर्ज्जन गभीर
बड़-बड़ वानरेर बड़-बड़ लम्फ ❋ कुम्भकर्णे देखिया सवार हैल कम्प
भये शुकाइल मुख, काँपिल अन्तर ❋ फेलिया पाथर-गाछ पलाय वानर
चूल नाहि बाँधे केह, ना परे कापड़ ❋ बड़-बड़ वानर उठिया दिल रड़
वानरेर भंग-रवे कर्णे लागे तालि ❋ शतकोटि वानरे पलाय शतबली
हिंगुलिया वानर हिंगुल जिनि अंग ❋ आशीकोटि वानरे पलाय शरभंग

महोदर-कुम्भकर्ण का सम्भाषण समाप्त हुआ तो रावण सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और अपने हाथों से युद्ध की सज्जा पहनाने लग गया। मोती-जड़ी पगड़ी, कुम्हार की चाक जैसी माणिक जड़ी अंगूठी, मणिमय हार, रत्नमय कुंडल आदि पहनाये गये। कुम्भकर्ण को सज्जित होते देख कर राक्षस पुलकित हुए और वे भी युद्ध के लिए सज्जित होने लग गये। कुम्भकर्ण के मुकुट की चूड़ा आकाश से जा टकराई। राजा को प्रणाम कर वह रण में चल पड़ा ॥ ५७ ॥

एकेश्वर कुम्भकर्ण जब लड़ने के लिए चला तो गगन में उसका मस्तक नव-जलधर सा दिखने लगा। आकाश से चन्द्र का स्खलन हुआ, पवन मन्दगति हो गया, मेघ से रक्तवर्षा होने लगी और वसुधा काँपने लगी। आकाश में अमरवृन्द काँपने लगे और समुद्र में उथल-पुथल मच गई। गढ़ से बाहर कुम्भकर्ण ने निकल कर बन्दरों को देख भीषण गर्जन किया। कुम्भकर्ण को देखकर बन्दरों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई, कूद-फाँद बन्द हो गया, चेहरे सूख गये, दिल धड़कने लगे, पेड़-पत्थर फेंक-फाँक कर सब भागने लग गये। बन्दरों की भगदड़ से कानों के परदे फटने लगे। शतबली अपने शतकोटि बन्दरों को लेकर भागा, हिंगुल जैसे अंग वाले अपने अस्सी करोड़ हिंगुलिया बन्दरों के साथ शरभंग भागा। मलय-गिरि वाले गेरू रंग के छत्तीस करोड़ बन्दरों के साथ केशरी भागा। गवाक्ष और गय दोनों

मलय-गिरिर कपि वर्ण येन गेरी ❋ छत्रिश-कोटि वानरेते पलाय केशरी
पलाल गवाक्ष गय भाइ दुइजन ❋ वानर पञ्चाश-कोटि दोंहार भिड़न
भल्लुक-कटके पलाय मन्त्री जाम्बवान ❋ आशीकोटि वानरे पलाय हनूमान
पलाय सुषेण-वेज राजार श्वशुर ❋ तिनकोटि-वृन्द ठाट याहार प्रचुर५८

कुम्भकर्णेर युद्ध

पलाय वानर-ठाट, केह नाहि तिष्ठे ❋ कोप करि अंगद चाहिछे एकदृष्टे
अंगद बले, कपिगण, भंग कि कारण ❋ एकचड़े राक्षसार बधिब जीवन
जीवन-मरण नाहि आपनार वशे ❋ युद्ध करि मरिले भुवन भरे यशे
यत युद्ध करिले, से-सब नाहि गणि ❋ आजि रण जिनिले पौरुष बलि मानि
देवतार पुत्र तोरा, देव-अवतार ❋ राक्षसेर रणे केन हासिब संसार
एत शुनि थरे-थरे फिरे कपिगण ❋ कटक फिराये आने बालिर नन्दन
लाफ दिया कपि सब उठिल आकाशे ❋ आकाशे उठिया गाछ-पाथर वरिषे
कुपिल से कुम्भकर्ण, हाते धरि शूल ❋ वानर-कटक विन्धि करिल निर्म्मूल
बड़-बड़ वीरगणे शूले बिन्धि पाड़े ❋ तृणगण येमन अनले पड़ि पुड़े
पर्वत तुलिया मारे वानर-कटके ❋ कुम्भकर्ण-अंगे येन तृण हेन ठेके

भाई अपनी पचास-करोड़ की सेना लेकर भाग खड़े हुए। मंत्री जाम्बवान अपने भालू-कटक के साथ भागे। अस्सी करोड़ बन्दर लेकर हनुमान भाग चले। राजा का श्वसुर सुषेण वैद्य अपने तीन करोड़ सेना के साथ भाग खड़ा हुआ॥ ५८॥

कुम्भकर्ण का युद्ध

वानर-सेना भागने लगी है और कोई भी ठहरता नहीं है यह देखकर अंगद बेहद बिगड़ा। उसने कहा, क्यों कपिगण! यह क्या बात है जो तुम लोग भाग रहे हो। मैं एक ही झाँपड़ से इस राक्षस को मार डालूँगा। जीवन और मृत्यु अपने वश में नहीं होते—युद्ध के उपरान्त मरने पर यश मिलता है। जितने युद्ध आज तक तुम लोगों ने जीते मैं उनकी गिनती नहीं करता, आज का युद्ध जीतो तो मैं पौरुष मानूँ। तुम सब देवता के अवतार हो—राक्षसों के साथ युद्ध में क्यों जगहँसाई करते हो। इतना सुनकर सारे कपि एक-एक कर वापस चले आए। वालिपुत्र ने सारी वानर-सेना को संगठित किया। सारे कपि आकाश पर चढ़ गये और पेड़-पत्थरों की वर्षा करने लगे। कुम्भकर्ण बिगड़ गया और हाथ में शूल लेकर वानर-सेना को छेद-छेद कर निर्मूल करने लगा। बड़े-बड़े वीरों को शूल से यों मार डाला जैसे आग में घास-फूस जल जाती हो। वानर-सेना ने जो पहाड़ फेंक-फेंक कर मारे वह कुम्भकर्ण के शरीर पर तृण के समान लगे। क्रोधित होकर कुम्भकर्ण बन्दरों को दोनों हाथों से पकड़-पकड़ कर निगलने लगा॥ ५९॥

कुपिल से कुम्भकर्ण अति भयंकर ※ दुइ हाते ध'रे ध'रे गिलिछे वानर ५९
भंग दिया वानर पलाय सब डरे ※ कुम्भकर्ण केह सहित ना पारे
कुपिल से नील वीर कटके प्रधान ※ शालगाछ आनिलेक गिया एकटान
शालगाछ आने येन पर्वतेर चूड़ा ※ कुम्भकर्ण-गाये ठेके ह'ये गेल गुँड़ा
कुम्भकर्ण-रण केह सहिते ना पारे ※ एकेश्वर नील रहे संग्राम-भितरे
साहस करिया युद्धे नील सेनापति ※ आर चारि वीर तार मिलिल संहति
शरभंग कुमुद नल से गन्धमादन ※ नीलेर संहति मिलि हैल पञ्चजन
पाँचवीर गाछ आर पर्व्वत उपाड़ि ※ कुम्भकर्ण-बुके मारे दु-हातिया बाड़ि
वानरेर गाछ-पाथर किछुइ ना गणे ※ हाते शूल कुम्भकर्ण चाहे पञ्चजने
रह रह बलि वीर वानरेर बले ※ दुइ हाते सापटिया धरि कोले फेले
कोलेर चापने कपि हैल अचेतन ※ मुखे रक्त उठे, श्वास बहे घने-घन
चापड़ेर घाये मूर्च्छे नील सेनापति ※ पदाघाते पड़िल गवाक्ष योद्धपति
शरभंग गन्धमादन पड़े दुइजन ※ पञ्चजना भूमे पड़ि हय अचेतन ६०
प्रथम समरे यदि पञ्चजन पड़े ※ अनेक बानर आसि कुम्भकर्णे बेड़े
मार मार शब्दे कपि धाय उभ रड़े ※ केह स्कन्धे चड़े, केह अंग चापि पड़े
केह पृष्ठे उठे, केह कील मारे घाड़े ※ कार साध्य कुम्भकर्णे रणमध्ये पाड़े
वानर धरिया वीर चिबाइछे दाँते ※ मुख संवरिते नारे, रक्त पड़े स्रोते

कुम्भकर्ण के आक्रमण को सह न सकने के कारण सारे बन्दर मैदान छोड़ कर भागने लगे। कटक के प्रधान वीर नील ने क्रोधित हो एक शालवृक्ष उखाड़ा, लेकिन कुम्भकर्ण के बदन से टकरा कर वह टुकड़ा-टुकड़ा हो गया। कुम्भकर्ण से लड़ने वाला सिवाय वीर नील के और कोई न रहा और चार वीर शरभंग, कुमुद, नल और गन्धमादन उनकी सहायता में रहे। पाँचों वीरों ने पेड़ों और पर्वतों को उखाड़-उखाड़ कर कुम्भकर्ण के सीने पर दोनों हाथों से दे मारा, लेकिन इसका कोई भी प्रभाव कुम्भकर्ण पर न पड़ा। उसने पाँचों को हाथों से समेट कर गोद में धर दबोचा। दबाव से कपि अचेतन हो गये, मुँह से खून निकल आया और साँस उखड़ने लगी। एक झाँपड़ की मार से नील सेनापति को मूर्च्छा आ गई, पदाघात से गवाक्ष सा रणपति भूमि पर लोटने लगा, शरभंग और गन्धमादन भी गिर गये—पाँचों के पाँचों बेहोश होकर धरती चूमने लगे ॥ ६० ॥

प्रथम संग्राम में ही जब पाँचों वानर गिर गये तो बहुत सारे वानरों ने आकर कुम्भकर्ण को घेर लिया। कोई तो उसके कंधे पर चढ़ गया तो कोई उसकी पीठ पर, कोई घूँसा मारने लगा तो कोई मुक्का। लेकिन कुम्भकर्ण को वश में करना किसी के बूते का नहीं था। वह बन्दरों को पकड़-पकड़ कर दाँतों से चबा रहा था और मुँह से निरन्तर खून की धारा बह रही थी।

सहस्र-सहस्र कपि सापटिया धरे ❊ पाताल-समान मुख ताहे ल'ये पूरे
नाक-कानेर पथ येन घरेर दूयार ❊ ताहा दिया कपि सब वेरय आपार ६१
लाफ दिया कुम्भकर्ण धरे अंगदेरे ❊ मूर्च्छित करिल तारे गदार प्रहारे
हाते गदा कुम्भकर्ण अति भयंकर ❊ गदार बाड़िते मारे अनेक वानर
शतबली भूमे पड़ि जाय गड़ागड़ि ❊ हनूमान-बुकेते मारिल गदाबाड़ि
गदा खेये हनूमान उठिल आकाशे ❊ आकाशे थाकिया गाछ पाथर-वरिषे
घने घने वर्षे येन महाशब्द शुनि ❊ कुम्भकर्ण-गदाभांगि कैलि खानि-खानि
गदा गेल, कुम्भकर्ण लागिल भाविते ❊ लाफ दिया हनूमाने धरिल त्वरिते
हनूमान-बुके मारे वज्रेर चापड़ ❊ चापड़ेर धाये हनूमान करे धड़फड़
भूमिते पड़िल यदि पवन-नन्दन ❊ रण छाड़ि पलाय यतेक कपिगण
बड़-बड़ वीर धाय भंग दिया रणे ❊ कुम्भकर्णे देखि केह स्थिर नहे मने ६२

सुग्रीव-कर्तृक कुम्भकर्णेर नासा-कर्ण-छेदन

बड़-बड़ वानर धरिया सब गिले ❊ आपनि सुग्रीव गेल संग्रामेर स्थले
शालवृक्ष उपाड़िलि पवनेर वेगे ❊ गाछ-हाते दाण्डाइल कुम्भकर्ण-आगे
बड़-बड़ वानर पाड़िलि वाछेर वाछ ❊ मोर घा सह रे बेटा, मारि शालगाछ
कुम्भकर्ण बले, आमि विधातार नाति ❊ एड़ देखि शालवृक्ष, बुझि रे शकति

हजारों कपियों को समेट कर वह अपने मुख-गह्वर में डाल लेता। नाक और कान के छिद्र मानों द्वार हों जिनमें से कपि निकल और घुस रहे थे ॥ ६१ ॥

कूद कर कुम्भकर्ण ने अंगद को पकड़ लिया और गदा के प्रहार से उसको मूर्च्छित कर डाला। हाथ में गदा पकड़े हुए कुम्भकर्ण का रूप बड़ा भयंकर है। गदा के प्रहार से उसने बहुत सारे बानरों को मार डाला। शतबली भी भूमि पर लोटने लगा। गदा का प्रहार खाकर हनुमान आकाश में उठ गया और वहाँ से पेड़-पत्थर बरसाने लगा। कुम्भकर्ण की गदा टूट गयी तो उसने उछल कर हनुमान को पकड़ लिया और उसके सीने पर वज्र सा एक मुक्का मारा। मुक्के की चोट से पवननन्दन छटपटा कर जमीन पर गिर पड़े। सारे बन्दर मैदान छोड़-छोड़ कर भागने लगे। कुम्भकर्ण के सम्मुख सभी के पैर उखड़ गये ॥ ६२ ॥

सुग्रीव द्वारा कुम्भकर्ण का नासा-कर्ण-छेदन

जब बड़े-बड़े बन्दरों को पकड़-पकड़ कर कुम्भकर्ण निगलने लगा तो समर-क्षेत्र में सुग्रीव स्वयं पहुँच गया। एक विशाल शाल-वृक्ष उखाड़ कर हाथ में लेकर वह कुम्भकर्ण के सम्मुख जाकर खड़ा हो गया और बोला, बड़े-बड़े बन्दरों को चुन-चुन कर तूने गिराया है, अब जरा मेरी चोट तो सँभाल। कुम्भकर्ण ने कहा, मैं ब्रह्मा का प्रपौत्र हूँ, तू शालवृक्ष मार तो जरा। पर्वत-समान

एड़िलेक शालवृक्ष पर्वत-प्रमाण ❋ कुम्भकर्ण-गाये ठेकि हैल खान-खान
छि छि बलि कुम्भकर्ण दिल टिट्कारी ❋ एइ मुखे खाबि बेटा किष्किन्ध्या नगरी
भाल छिल बालिराज, वीर मध्ये गणि ❋ कोन मुखे राखिबि ताहार राजधानी
दुइलक्ष राक्षसे ये जाठा-गाछ वय ❋ सेइ जाठा कुम्भकर्ण हाते तुलि लय
आशीकोटि मण लौह जाठार गठन ❋ दशहाजार हात जाठा दैर्घ्य निरूपण
कुम्भकर्ण एड़े जाठा दिया हुहुंकार ❋ स्वर्ग-मर्त्य-पाताले लागिल चमत्कार
देखिया सुग्रीव-वीर ना भावे मनेते ❋ सिंहनाद करि जाठा धरे वाम हाते
भांगिलेक जाठा, येन पड़िल झञ्झना ❋ त्रिभुवने यत लोक पासरे आपना
कुम्भकर्ण कोपेते पर्व्वते दिल टान ❋ एकटाने आनिल पर्व्वत एकखान
एड़िल पर्व्वतगोटा विपरीत-कोपे ❋ पड़िल सुग्रीव-राजा पर्व्वतेर चापे
घिरेछिल मेघ, येन उड़ाइल झड़े ❋ सुग्रीवे लइया वीर प्रवेशिल गड़े
लंकार भितरे शीघ्र जाय महाबली ❋ सुग्रीवेरे ल'ये दशानने दिते डालि
प्रथम वृहन्दे जाय क'रे ठेलाठेलि ❋ द्वितीय वृहन्दे, जाय पड़े हुलाहुलि
तृतीय वृहन्दे जाय परम हरिषे ❋ सुग्रीव राजारे देखि नारिगण हासे ६३
कुम्भकर्ण सुग्रीवेरे ल'ये जाय बेन्धे ❋ यतेक वानरगण माथे हात कान्दे
महावीर हनूमान कटकेर सार ❋ मने-मने भाविछे राजार प्रतिकार
कुम्भकर्णे संहारिब आजिकार रणे ❋ राजा उद्धारिले तवे प्रीति पाइ मने

शालवृक्ष कुम्भकर्ण के शरीर से टकराते ही खंड-खंड हो गया। कुम्भकर्ण ने सुग्रीव को धिक्कारा और कहा, इसी बूते पर तू किष्किन्धा-नगरी का भोग करेगा। बालिराजा को मैं वीर मानता हूँ, तू किस मुँह से उसकी राजधानी की रक्षा कर सकेगा। जिस लौह-दंड को दो लाख राक्षस ढोते हैं, अस्सी करोड़ मन वजन का और दश हजार हाथ लम्बा, वही लौह-दंड हाथ में लेकर कुम्भकर्ण ने हुंकार मारते हुए फेंका। सुग्रीव ने इसकी परवाह न करते हुए बाएँ हाथ से उस दंड को पकड़ा। लौहदंड झनझनाता हुआ टूट गया। कुम्भकर्ण ने गुस्से से एक पर्वत को उखाड़ कर सुग्रीव की ओर फेंका और सुग्रीव राजा उसके नीचे दब गया। सुग्रीव को लेकर कुम्भकर्ण दशानन को भेंट चढ़ाने गढ़ के भीतर चल पड़ा। प्रथम महल में प्रवेश करते ही धकमपेल शुरू हो गया, द्वितीय महल में हो-हल्ला मच गया, तृतीय महल में कुम्भकर्ण जब सहर्ष पहुँचा तो सुग्रीव राजा को देखकर नारियाँ हँसने लगीं ॥ ६३ ॥

कुम्भकर्ण सुग्रीव को बाँधकर ले चला तो सारे बन्दर सिर पर हाथ रख कर रोने लगे। महावीर हनुमान मन ही मन इसके प्रतिकार के बारे में सोचने लगा। आज के युद्ध में मैं कुम्भकर्ण का नाश करूँगा लेकिन उससे पूर्व यदि राजा सुग्रीव मुक्ति पा जाएँ तो मन प्रसन्न हो। इतना कहकर वीर जूझने को चल पड़ा तो जाम्बवान ने "लौट आओ, लौट आओ" कहकर पुकारा।

एतेक बलिया वीर जुझिवारे यान ※ 'वाहड़-वाहड़' बलि डाके जाम्बवान
यतदिन जीवे राजा क्षोभ रबे मने ※ भाल जाबे, मन्द रबे, कि काज ए रणे
सेवक हइते राजा पाबे अव्याहति ※ चिरकाल सुग्रीवेर घुषिबे अख्याति
राज-बुद्धि धरे राजा, बले विपरीत ※ कुम्भकर्ण-हस्त हैते आसिबे निश्चित
जाम्बवान-वाक्ये वीर नाहि दिल हाना ※ उलटिया रहे गिया आपनार थाना ६४
कुम्भकर्ण-कोले राजा पाइल संवित् ※ चारिदिके लंकार देखिछे नृत्य-गीत
चारिदिके निशाचर, ना देखे वानर ※ विचित्र-निर्म्माण देखे सुवर्णेर घर
महाबल सुग्रीव बुद्धिते बृहस्पति ※ मने-मने चिन्तेन आपन-अव्याहति
कर्ण-टाने दु'हाते, कामड़े छिँड़े नाक ※ भये कुम्भकर्ण डाके 'परित्राहि' डाक
दुइपार्श्व चिरे फेले दु'पायेर भरे ※ पञ्च-अंगे कुम्भकर्णेर रक्त पड़े धारे
मर्म्मव्यथा पेये वीर छाड़े सुग्रीवेरे ※ आछाड़िया फेलि दिल धरणी उपरे
दशने नासिका निल, कर्ण निल करे ※ लाफ दिया वीर गिया उठिल प्राचीरे
पुनः लाफ दिलेक विक्रमे करि भर ※ प्रवेश करिल गिया कटक-भितर
कटकेते पशिया सुग्रीव महाबली ※ कुम्भकर्ण-नाक-कान रामे दिल डालि
सेइ नाक कानेर कि कहिब व्याख्यान ※ पँचिशेर बन्द येन घर एकखान ६५

ऐसे रण से क्या लाभ जिसमें उत्तम तो चला जाय और अधम रह जाय। सेवक के प्रयास से राजा को मुक्ति मिली यह सदा के लिए सुग्रीव की बदनामी का कारण बना रहेगा। राजा राज-बुद्धि-सम्पन्न है और निश्चित रूप से वह कुम्भकर्ण के हाथों से मुक्त होकर चला आयगा। जाम्बवान के कहने पर वीर हनुमान ने आक्रमण नहीं किया और अपनी चौकी पर जाकर खड़ा हो गया ॥ ६४ ॥

कुम्भकर्ण की गोद में राजा होश में लौट आया। चारों ओर उसने लंका का नृत्यगीत देखा। चारों ओर निशाचर दीख रहे हैं—कोई भी वानर नहीं दिखाई पड़ रहा है। सुवर्ण निर्मित गृहों का विचित्र निर्माण-कार्य देखा। महाबली सुग्रीव बुद्धि में बृहस्पति के समान हैं। वे मन ही मन अपनी मुक्ति का उपाय सोचने लगे। दोनों हाथों से उन्होंने कुम्भकर्ण के दोनों कान खींच लिये और दाँतों से उसकी नाक काट ली। डर के मारे कुम्भकर्ण त्राहि-त्राहि चिल्लाने लगा। दोनों पैरों के भार से सुग्रीव ने कुम्भकर्ण के दोनों बगल चीर डाले और उसके सारे अंगों से खून की धारा बह निकली। असह्य पीड़ा से व्याकुल हो वीर कुम्भकर्ण ने सुग्रीव को छोड़ दिया और उसको जमीन पर पटक दिया। वीर सुग्रीव एक छलाँग में प्राचीर पर चढ़ गया, फिर दूसरी छलाँग में अपनी सेना के बीच आ गया। कटक में प्रवेश करने के बाद महाबली ने राम के सम्मुख कुम्भकर्ण के नाक और कान भेंट में चढ़ाये। उन नाक और कान का क्या बखान करूँ—मानों पच्चीस धन्नियों वाला एक-एक कमरा हो ॥ ६५ ॥

श्रीरामेर सहित कुम्भकर्णेर युद्ध ओ मृत्यु

नाक कान नाहि, कुम्भकर्ण पाय लाज ※ मने-मने भावे, आर जीवने कि काज
एत बल-बिक्रम सकल हैला मिछा ※ सुग्रीव-वानरा बेटा क'रे गेल बोंचा
नेउदिया रणे वीर आइल निमिषे ※ बोंचा नाक देखिया वानरगण हासे
ताहा देखि कुम्भकर्ण महाकोपे ज्वले ※ बड़-बड़ कपिगणे ध'रे ध'रे गिले
नासिका-कर्णेर पथ विषम-विस्तार ※ ताहा दिया कपिगण वेरय अपार
एके कुम्भकर्ण वीर अति भयंकर ※ कर्ण-नासा गेछे आरो ह'येछे दुष्कर
कोपदृष्टे कुम्भकर्ण जेइदिके चाय ※ बड़-बड़ वीर सब छुटिया पलाय
'बोंचा एलो' बलि छुटे सकल वानर ※ दाण्डाइल सबे गिया लक्ष्मण गोचर६६
हाते धनु लक्ष्मण हइल आगुसार ※ ताहा देखि कुम्भकर्ण हासे एकबार
कुम्भकर्ण बले, बेटा, तोरे चाहे के ※ तोर भाइ रामा बेटा, तारे डेके दे
हासिया बलेन राम कमललोचन ※ एतदिने यम बुझि क'रेछे स्मरण
एइ आमि आइलाम तोर विद्यमान ※ यत शक्ति आछे बेटा, तत शक्ति हान
तोरे मेरे काटि रावणेर दशमुंड ※ विभीषण-उपरे धराब छत्र-दण्ड
श्रीरामेर कथा शुनि कुम्भकर्ण हासे ※ मने कि क'रेछ बेटा, फिरे जाबे देशे
एत बलि कुम्भकर्ण ह'ये क्रोधमति ※ रामेरे गिलिते जाय अति शीघ्रगति

श्रीराम के साथ कुम्भकर्ण का युद्ध और उसकी मृत्यु

नाक और कान के न होने से कुम्भकर्ण बड़ा लज्जित हुआ। मेरा इतना पराक्रम सब व्यर्थ हुआ—बन्दर सुग्रीव ने आकर मुझको नकटा बना दिया। तुरन्त पलट कर वह रणक्षेत्र में आया और बन्दर उसको नकटा देखकर हँसने लगे। यह देखकर कुम्भकर्ण क्रोध से जलने लगा और बड़े-बड़े कपियों को पकड़कर निगलने लगा। नाक और कान के रास्ते अत्यन्त लम्बे चौड़े थे सो बन्दर उसमें से निकलने लगे। यों ही कुम्भकर्ण देखने में भयंकर है, अब नाक-कान के जाने से वह और भी विकट लगने लगा है। कुम्भकर्ण जिस ओर भी अपनी क्रुद्ध दृष्टि डालता बड़े-बड़े कपि 'नकटा आया' कहकर भागने लगते। भागकर वे लक्ष्मण के पास पहुँचे ॥ ६६ ॥

हाथ में धनुष लेकर लक्ष्मण जो आगे बढ़ा तो देखकर कुम्भकर्ण हँस पड़ा, बोला, अरे तुझसे क्या करना है, अपने भाई राम को बुलवा दे। कमलनयन राम ने हँस कर कहा, शायद इतने दिनों में यम ने तुझको याद किया है। यह ले, मैं तेरे समक्ष आ गया, अब जितनी भी शक्ति तेरे पास है उसे अजमा ले। तुझको मारने के बाद रावण के दश मुंड काटने हैं और विभीषण को सिंहासन पर बिठाना है। श्रीराम की बात सुनकर कुम्भकर्ण हँसने लगा, बोला, क्या तुमने सोच लिया है कि लौटकर अपने देश जा सकोगे ? इतना कहकर कुम्भकर्ण बड़े क्रोध से राम को निगलने के लिए बढ़ा। कुम्भकर्ण के

कुम्भकर्ण-भरे लंका करे टलमल ❋ स्वर्ग-मर्त्य काँपिल, काँपिल रसातल
आकाशे देउटि येन, दुइ चक्षु ज्वले ❋ मालसाट दिया वीर रघुनाथे बले
खर-दूषण नाहि आमि त्रिशिराकबन्ध ❋ मारीच राक्षस नाहि मायार प्रबन्ध
बालिराज नाहि आमि कोमल शरीर ❋ वज्रसम अंग, आमि कुम्भकर्ण वीर
सेइ सब वीर वध कैले येइ बाणे ❋ से सकल बाण एवे तुले राख तूणे
तोमार बाणेर मध्ये तीक्ष्ण ये सकल ❋ सेइसब बाण मार, बुझा थाक बल१६७
राम बले, कुम्भकर्ण, त्यज अहंकार ❋ मोर बाण सहे, हेन शक्ति आछे कार
तीक्ष्णबाण प्रहारिले हइबे प्रलय ❋ क्षुद्र एक बाणे तोरे दिब यमालय
श्रीरामेर कथा शुनि कुम्भकर्ण हासे ❋ मनेते वासना बुझि, जाबे यम-वासे
हेर देख देह मोर पर्व्वत-प्रमाण ❋ देवता गन्धर्व केह नाहि धरे टान
कत अस्त्र जान बेटा, कत जान शिक्षा ❋ इन्द्र-यम जाने आमा, आर जाने यक्षा
जे बाणे मारिला बालि दुर्ज्जय वानरे ❋ से बाण मारेन राम कुम्भकर्णोपरे
यत दिन जीवे राजा, क्षोभ र वे मने ❋ भाल जावे, मन्दर वे, कि काजए रणे
रामेर ऐषिक वाण तारा सम छुटे ❋ कण्टक समान येन कुम्भकर्णे फुटे
छि छि बलि कुम्भकर्ण दिल टिट्कारी ❋ बल बुझि मोर भाइ आने तोर नारी

भार से लंका नगरी डोलने लगी, स्वर्ग, मर्त्य रसातल तीनों लोक काँप उठे। उसकी दोनों आँखें मानों आकाश में प्रदीप जैसी धधकने लगीं। ताल ठोकते हुए उसने कहा, मैं न तो खर-दूषण हूँ और न त्रिशिरा-कबन्ध हूँ। माया का पुतला मारीच राक्षस भी नहीं हूँ। कोमलांग बालि राजा भी नहीं हूँ। मैं वीर कुम्भकर्ण हूँ और मेरे अंग वज्र के समान कठोर हैं। उन वीरों को जिन वाणों से तुमने वध किया है उनको तरकस में रख दो। अपने वाणों में जो सर्वाधिक पैने वाण हों, उन्हीं का अब प्रयोग करो और अपनी शक्ति का परीक्षण कर लो ॥ १६७ ॥

राम ने कहा, कुम्भकर्ण, अपना घमंड छोड़, मेरे वाणों को सह ले इतनी शक्ति किसमें है? तीक्ष्ण वाण चला दूँ तो प्रलय हो जाय, इसलिए एक क्षुद्र वाण से ही तुम्हारे प्राण ले लूँगा। श्रीराम की बात सुनकर कुम्भकर्ण हँसकर कहने लगा, क्या यमराज के घर जाने की इच्छा है? मेरे इस पर्वत सरीखे शरीर को देखो, कितने ही गन्धर्व देवता इससे हार मान चुके हैं। देखा जाय कि रण-विद्या में तुम कितने कुशल हो। मेरे बारे में भला तुम क्या जानोगे, वह तो इन्द्र, यम और यक्ष जानते हैं। जिस वाण से राम ने दुर्जय कपि बालि का वध किया था, उसी वाण को कुम्भकर्ण पर चलाया। राम का ऐषिक वाण तारा के समान लपका, लेकिन कुम्भकर्ण के शरीर में वह काँटे के समान जा चुभा। कुम्भकर्ण ने छी-छी करते हुए राम को धिक्कारा। कहा, तुम्हीं कहते हो न कि मेरा भाई तुम्हारी नारी को ले आया है।

लोहार मुषल वीर घन-घन नाड़े ※ श्रीरामेर यत वाण ताहे ठेकि पड़े
मुषल फिराये वीर मारिवारे आसे ※ ब्रह्म-अस्त्र रघुनाथ जुड़िलेन त्रासे
बिना-अस्त्रे युद्ध, येन मदमत्त हाती ※ कारे किल-चड़ मारे, कारे मारे लाथि
भूमे पड़े नीलवीर हइया कातर ※ मुषलेर घाये मारे अनेक वानर
मुषल करिया हाते छुटे उभराय ※ पलाय वानरगण, पिछु नाहि चाय १६८
डाक दिया कहिलेन ठाकुर लक्ष्मण ※ एक उपदेश शुन यत कपिगण
पागल ह'येछे बेटा रक्तेर दुर्गन्धे ※ जन कत वानर उठह ओर स्कन्धे
भर ना सहिबे बेटा, पड़िबे चापने ※ भूमिते पाड़िया मार पापिष्ठ दुर्जने
लक्ष्मणेर वाक्येते साहसे करि भर ※ स्कन्धे उठे बड़ बड़ अनेक वानर
कुम्भकर्ण-स्कन्धे चड़ि वीरगण नाचे ※ बादुड़ झुलिछे येन तेंतुलेर गाछे
शरभ गवाक्ष गय से गन्धमादन ※ महेन्द्र देवेन्द्र नल उठे सप्तजन
सप्तजन चड़िलेक कुम्भकर्ण-स्कन्धे ※ केशे धरि टाने केह, घाड़े नख विन्धे
सातवीर लाफ दिया घाड़े गिया चड़े ※ दुइ हाते कुम्भकर्ण वानरे आछाड़े
आछाड़े गवाक्ष-वीर हाराय संवित् ※ भूमिते पड़िल, मुखे उठिल शोणित
शरभ गवाक्ष गय ओ गन्धमादन ※ आछाड़ेर घाये सबे हैल अचेतन
देखिया अंगद हनूमाने लागे डर ※ उठिते उठिते घाड़े उठि दिल रड़ १६९

लोहे का मूसल लेकर वीर उसको बराबर घुमाता रहा और श्रीराम के फेंके हुए सारे बाण उससे टकरा कर नीचे गिर गये। मूसल घुमाते हुए जब वह मारने के लिए लपका तो त्रास में आकर रघुनाथ ने धनुष पर ब्रह्म-अस्त्र चढ़ाया। मदमत्त हाथी सा वह बिना अस्त्र के लड़ता रहा, मुक्का, घूँसा और लात मारते हुए वह वीर आगे बढ़ा। वीर नील घायल होकर जमीन पर गिर गया। मूसल के प्रहार से बहुत से बन्दरों को उसने मार डाला। हाथ में मूसल लेकर वह तेजी से घुमाने लगा और बन्दर सिर पर पैर रखकर भागने लगे॥ १६८॥

तब लक्ष्मण ने कपियों को सम्बोधित करते हुए कहा, सुनो, यह रक्त की दुर्गन्ध से पगला गया है। कुछ बन्दर इसके कंधे पर चढ़ जाओ, भार न संभाल सकने से यह गिर पड़ेगा तो इसको जमीन पर गिरा कर मारने लगना। लक्ष्मण के कहने से बन्दरों में साहस आया और कई बड़े-बड़े बन्दर कुम्भकर्ण के कन्धों पर चढ़कर नाचने लगे। लगा कि इमली के वृक्ष पर चमगादड़ लटक रहे हैं। शरभ, गवाक्ष, गय, गन्धमादन, महेन्द्र, देवेन्द्र और नल—ये सातों कुम्भकर्ण के कन्धों पर सवार हो गये। कोई तो उसके बाल पकड़ कर खींचने लगा तो कोई नाखून से गर्दन खरोंचने लगा। दोनों हाथों से इन बन्दरों को पकड़ कर कुम्भकर्ण ने पटक दिया। पटकनी खाकर वीर गवाक्ष ने होश गँवा दिया, उसके मुँह से खून बहने लगा। शरभ, गय और गन्धमादन भी पटकनी खाकर बेहोश हो गये। यह देखकर अंगद और हनुमान

कुम्भकर्णे पाड़िते नारिल कोनजने * आरवार अस्त्र राम जुड़िलेन गुणे
ब्रह्म-अस्त्र छाड़िलेन पूरिया सन्धान * कुम्भकर्णेर काटिलेन डान-हातखान
हातखान पड़े, जेन पर्व्वत-शिखर * हातेर चापने पड़े अनेक वानर
वामहाते शालगाछ उपाड़िया आने * हाते गाछ करि धाय श्रीरामेर पाने
ऐषिक-बाणेते राम पूरिया सन्धान * सेइबाणे काटिलेन बाम-हातखान
दुइहात काटागेल, तबु नाहि टुटे * श्री रामेर गिलिवारे द्रुतिगति छुटे
इन्द्र-अस्त्र रघुनाथ करिला सन्धान * एकबाणे काटिलेन पद दुइखान
हस्त गेल, पद गेल, तबु नाहि डरे * गड़ागड़ि दिया जाय रामे गिलिवारे
दन्ते धरि तुलि निल लोहार मुषल * मुषलेर घाये मारे वानरमण्डल
मुषल काटिते राम जुड़िलेन बाण * नय बाणे मुषल करिला खान-खान
काटा गेल मुषल, शमता नाहि ताते * गड़ागड़ि दिया जाय श्रीरामे गिलिते
येमन आइसे राहु चन्द्रे ग्रासिवारे * कुम्भकर्ण तेमते श्रीरामे गिलिवारे
कुम्भकर्ण-मुख बहि पड़िछे शोणित * बाणे मुख भेदिल, देखाय विपरीत
एतेक दुर्गति हैल, तबु नाहि मरे * आरबार ब्रह्म-अस्त्र मारिलेन तारे

को भी डर लगने लगा और उन्होंने कन्धों पर चढ़ने का विचार छोड़ दिया ॥ १६६ ॥

कुम्भकर्ण को जब कोई भी काबू में नहीं कर सका तो राम ने फिर प्रत्यंचा पर बाण रखा। निशाना साधकर उन्होंने ब्रह्मास्त्र फेंका और कुम्भकर्ण का दाहिना हाथ काट डाला। हाथ क्या गिरा मानों एक पहाड़ आ गिरा और उसके नीचे बहुत सारे बन्दर दब गये। अब उसने बाएँ हाथ से एक शालवृक्ष उखाड़ा और उसको लेकर राम की ओर लपका। राम ने निशाना साधकर ऐषिक बाण फेंका और उस बाण से उसका बायाँ हाथ काट डाला। दोनों हाथों के कट जाने से भी वह निस्तेज नहीं हुआ, श्रीराम को लीलने के लिए वह द्रुत गति से दौड़ने लगा। रघुनाथ ने इन्द्र-अस्त्र फेंका और एक ही बाण से उसके दोनों पैर काट डाले। हाथ कट गये, पैर कट गये, फिर भी उसको कोई डर नहीं, जमीन पर लुढ़कता हुआ वह, राम को निगलने के लिए चला। दाँतों से उसने मूसल पकड़ लिया और उसके प्रहार से बन्दरों को मारने लगा। राम ने नौ बाण चलाकर मूसल को खंड-खंड कर डाला। मूसल के खंड-खंड हो जाने पर भी वह शान्त नहीं हुआ और भूमि पर लुढ़कता हुआ वह राम को निगलने चला, मानो राहु चन्द्र को निगलने जा रहा है। कुम्भकर्ण के मुँह से रक्त की धारा बहने लगी। बाणों से मुँह छिद गया और वह अद्भुत सा दीखने लगा। इतनी दुर्दशा के उपरान्त भी उसके प्राण नहीं गये। तब राम ने दुबारा ब्रह्म-अस्त्र फेंका। चारों ओर उजियाला करता

यमदण्ड-सम वाण, येमन विजुलि * छुटिल रामेर वाण चौदिक उजलि
ब्रह्म-अस्त्र वाण आर नाहिक अन्यथा * सेइ वाणे कुम्भकर्णेर काटिलेन माथा
काटामुण्ड हनूमान सापटिया तोले * टेने फेले दिल ल'ये समुद्रेर जले
सागरेर जलजन्तु करे तोलपाड़ * मध्य-सागरेते येन पड़िल पाहाड़
दशलक्ष राक्षसेते कुम्भकर्ण पड़े * कानन भांगिल येन प्रलयेर झड़े
देवगण सुखी हैल रामेर विक्रमे * स्वर्ग हैते पुरन्दर पूजेन श्रीरामे
कपिगण बले, राम, करिला निस्तार * आर यत वीर आछे, मो-सवार भार
ना देखि एमन वीर ए तिन भुवने * जुझिवार काज थाक्, भंग दरशने
अकाले जागिया कुम्भकर्णेर विनाश * श्रीराम-चरण स्मरि गाय कृत्तिवास ७०

कुम्भकर्णेर मृत्युसंवाद-श्रवणे रावणेर विलाप

रणे भंग दिया यत निशाचरगण * रणस्थली छाड़ि कैल लंका-प्रवेशन
हेथा कुम्भकर्णे पाठाइया राम-रणे * दशानन करितेछे चिन्ता मने-मने
समरे गियाछे आजि कुम्भकर्ण भाइ * एखनि जिनिबे रण, किछु शंका नाइ
जयवार्त्ता दिबे दूत जेकाले आसिया * तुषिब ताहारे आमि बहुधन दिया
नगरे करिया नाना मंगल-आचार * भ्रातारे आनिते निजे हव आगुसार

वह वाण विजली के समान चला और उसने कुम्भकर्ण का सिर काट कर रख दिया। हनुमान ने उस कटे मुंड को दोनों हाथों से समेट कर समुद्र के जल में फेंक दिया। समुद्र के मध्य मानों कोई पहाड़ जा गिरा—सारे जल-जन्तुओं में कुहराम मच गया। दस लाख राक्षसों के समान कुम्भकर्ण गिरा, मानों प्रलय की आँधी में कोई वन भूमिसात् हो गया। राम के पराक्रम से देवता सुखी हुए। स्वर्ग से पुरन्दर ने राम की पूजा की। कपियों ने कहा, राम तुमने आज हम सबको बचा लिया। बाकी जितने वीर हैं उनसे निबटने का काम हमारा है। ऐसा वीर तो त्रिभुवन में नहीं देखा था जिससे लड़ना तो दूर की बात, देखने से ही भगदड़ मच जाती थी। इस प्रकार असमय नींद से जागकर कुम्भकर्ण का विनाश हुआ ॥ ७० ॥

कुम्भकर्ण की मृत्यु के समाचार से रावण का विलाप

सारे निशाचर रणक्षेत्र से भागकर लंका में प्रवेश कर गये। कुम्भकर्ण को राम के साथ लड़ने भेजकर दशानन मन ही मन सोचने लगा था, आज मेरा कुम्भकर्ण भाई रण में गया है, वह तुरन्त ही युद्ध में विजय प्राप्त कर लौटेगा, कोई शंका नहीं है। दूत जब विजय-वार्ता लेकर आएगा तो उसको पर्याप्त धन देकर तुष्ट करूँगा। नगर भर में विभिन्न मंगल-अनुष्ठान करूँगा। भाई की अगवानी करने खुद ही चला जाऊँगा और उसके झुक कर प्रणाम करने से पूर्व ही मैं उसको अपने अंक में बाँध लूँगा। उसके युद्ध की सज्जा

ना करिते ना करिते प्रणाम आमारे ❊ अग्रेइ ये आमि कोले करिब ताहारे
रणवेश घुचाइया दिव्यवेश करि ❊ दूभाइ बसिब एक आसन-उपरि
वन्धुजन सकले करिया आनयन ❊ नानामत उत्सव करिब आचरण
एत भावि किछुकाल परे दशानन ❊ उत्कण्ठित ह'ये पुनः करये चिन्तन
भ्राता मोर गियाछे, हइल वहुक्षण ❊ एखनो ना कैल केन दूत आगमन
बुझिते ना पारि किछु रणेर विषय ❊ हइल कि ना हइल शत्रु-पराजय
बुझि शत्रुजय नाहि हइया थाकिबे ❊ जय हैले केन मोर हृदय काँपिबे
एइरूप करिते करिते मनोरथे ❊ शुनिते पाइल कोलाहल व्योमपथे
ताहा शुनि हइया विस्मययुक्त-मन ❊ उद्विग्न हइया करे विविध चिन्तन
एकि एकि आजि देव-मुनि-यक्षगण ❊ करितेछे आकाशेते जय उच्चारण
बाँचिया थाकिते मोर कुम्भकर्ण भाइ ❊ उहादेर मुखे जय-शब्द सुनि नाइ
अतएव बड़ शंका हय मोर चिते ❊ना जानि ह'तेछे किवा संग्राम स्थलीते७१
एइरूप चिन्ता करे राजा दशानन ❊ हेनकाले भग्नदूत कैल आगमन
तारे देखि जिज्ञासे रावण सशङ्कित ❊ कह रे कह रे रण-मंगल त्वरित
भीतमन ह'ये दूत कहिते ना पारे ❊ आरबार राजा तारे कहे कहिवारे
तबे कान्दि भग्नदूत कहे सभास्थल ❊ कि कहिब महाराज, रणेर कुशल
तोमार अनुज गिया समर-भितर ❊ बधिलेन बहुतर भल्लुक-वानर
परे राम-बाणेते से त्यजिया पराण ❊ स्वर्गपुरे कुम्भकर्ण करिला प्रयाण

उतारकर दिव्यवेश पहना कर हम दोनों भाई एक ही आसन पर बैठेंगे। सारे इष्ट-मित्रों को बुलवाकर उत्सव का आयोजन करूँगा। इतना सोचने के कुछ देर के उपरान्त दशानन फिर उत्कण्ठा से चिन्ता करने लगा, मेरा भाई काफी देर हुए गया है, अभी तक दूत क्यों नहीं आया। समझ में नहीं आता कि रण में क्या हुआ—शत्रु पराजित हुआ भी या नहीं। शायद शत्रु विजित नहीं हुआ, नहीं तो विजय होने पर मेरा हृदय क्यों काँपता ? इस प्रकार चिन्तन करते समय उसने व्योमपथ से कोलाहल होते हुए सुना। सुनकर उसे विस्मय हुआ और वह तरह-तरह की चिन्ताएँ करने लगा। यह कैसी बात है कि देव, मुनि और यक्ष आकाश में जय-ध्वनि कर रहे हैं। मेरे भाई कुम्भकर्ण के जीवित रहते उनके मुँह से कभी जय-ध्वनि सुनने को नहीं मिली, इसलिए मेरे मन में शंका बढ़ रही है—न जाने युद्धक्षेत्र में क्या हो गया है ॥ ७१ ॥

इस प्रकार राजा दशानन चिन्ता कर रहे थे कि भग्नदूत आ पहुँचा। रावण ने सशंकित हो कर कहा, तुरन्त रण का सन्देश सुनाओ। भयभीत दूत कुछ बोल न सका। फिर राजा ने उससे कहा तो वह रोते हुए बोला, क्या बताऊँ महाराज, तुम्हारे अनुज ने रणक्षेत्र में जाकर असंख्य भालू और बन्दरों का विनाश किया लेकिन बाद में राम के बाण से प्राण त्याग कर स्वर्ग प्रयाण

जेइमात्र एइ कथा चरेते कहिल ❋ मूर्च्छा हेतु दशानन भूतले पड़िल
ताहा देखि महापार्श्व आर महोदर ❋ उठाइया बसाइल आसन-उपर
कुम्भकर्ण-मृत्युवार्त्ता करिया श्रवण ❋ क्रन्दन करये यत लङ्कावासी जन७२
मुहूर्त्तेक परे राजा चेतन पाइया ❋ विलाप करये शोके कातर हइया
भाइ नहि, आमि रे चण्डाल सहोदर ❋ काँचा घुमे जागाये पाठाइ यमघर
आजि हैल शून्याकार निद्रार चउरि ❋ वीरशून्या हइल कनक-लंकापुरी
आजि हैते राज्य मोर हइल विफल ❋ कुम्भकर्ण भाइ, तुमि छिले महाबल
चन्द्र सूर्य वायु यम देव-पुरन्दर ❋ महासुखे निद्रा जावे, घुचे गेल डर
कोथा गेले भाइ मोर, आइस सत्वर ❋ दुइ भाइ मिलि गिया करिब समर
डानिहस्त गेल मोर एतदिन परे ❋ लङ्कापुरे क्रन्दन उठिल घरे-घरे
विभीषण भाइ मोरे दिया गेल शाप ❋ धार्मिकेर शापे पाइ एत मनस्ताप७३
हाय हाय कि हइल, क्रूर विधि कि करिल, प्राणाधिक भाइ निल हरि।
कि करिब कोथा जाब, कोथा गेले तोरे पाब, ता'—बिने किरूपे प्राण धरि ॥
ओरे प्राणाधिक भ्राता, मोरे छाड़ि गेलि कोथा, देखिते ना पाइ आर तोरे।
धिक् धिक् प्राणे मोर, शुनिया मरण तोर, एखनो ना छाड़े ए-शरीरे ॥

कर गये। ज्योंही दूत ने यह वार्त्ता सुनाई दशानन मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा। यह देखकर महापार्श्व और महोदर ने उनको आसन पर बिठाया। कुम्भकर्ण की मृत्यु का समाचार पाकर सारे लंका-निवासी क्रन्दन करने लगे ॥ ७२ ॥

क्षणभर के बाद राजा सचेतन होकर शोक से कातर हो विलाप करने लगा। अरे मैं भाई नहीं चंडाल हूँ जो नींद से जगाकर अपने सहोदर को यम के घर भेज दिया। आज से निद्रा-भवन सूना हो गया और लंकपुरी वीर से सूनी हो गई। आज से मेरा राज्य करना विफल हो गया। ऐ मेरे कुम्भकर्ण भाई, तुम महाबली थे, आज से चन्द्र, सूर्य, वायु, यम और इन्द्र सुख से सोयेंगे क्योंकि अब उनको कोई डर न रहा। मेरे भाई, तुम कहाँ चले गये? झट आन मिलो, दोनों मिलकर अब युद्ध करेंगे। इतने दिनों बाद मेरा दाहिना हाथ चला गया। इस प्रकार लंका के घर-घर में क्रन्दन-रव उठा। धार्मिक भाई विभीषण के अभिशाप से आज मुझको इतना कष्ट मिल रहा है ॥ ७३ ॥

हाय हाय, यह क्या हो गया? क्रूर विधाता ने क्या किया? मेरे प्राणों से भी प्रिय भाई को मुझसे छीन लिया। क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? कहाँ जाने से वह मिल जायगा? उसके बिना मैं कैसे जीवित रहूँ? ओ मेरे प्राणप्यारे भाई, मुझको छोड़कर तुम कहाँ चले गये? मेरे प्राणों को धिक्कार है कि तेरी मृत्यु का समाचार सुनकर भी उसने इस शरीर को त्यागा नहीं। तुम मुझसे

कहि गेले तुमि मोरे, मारि आसि राघवेरे, आपनि बसिया थाक सुखे ।
ताहा ना करिते पारि, निजे गेले यमपुरी, फेलिले आमारे घोर दुःखे ॥
जिनिले असुर-सुर, गन्धर्व-भुजंग-पुर, यक्ष गुह्य सिद्ध विद्याधर ।
जय करि ए-संसारे, क्षुद्र मनुष्येर करे, प्राण हाराइले भ्रातृवर ॥
ये तोमार शरीरेते, नाहि पारि प्रवेशिते, वज्र भूमि तले प'ड़ेछिल ।
से तुमि रामेर शरे, बिद्ध हैले कि प्रकारे, आमार कपाले एकि छिल ॥
आर आमि कि प्रकारे, जिनिब से पुरन्दरे, शमन-वरुण-दैत्यगणे ।
उपस्थित शत्रुजने, किरूपे बधिब रणे, लंका-रक्षा करिब केमने ॥
ओरे ओरे भ्रातृवर तोमा-बिने मोरे डर, ना करिबे आर कोनजन ।
अपर कि कब आर, यावत् वानर छार, तारा कैल सशंकित-मन ॥
ना मरिते ना मरिते, आगे ऐ आकाशेते, कोलाहल करे देवगण ।
बुझि वा इहार परे, उपहास करे मोरे, करतालि दिया सर्व्वजन ॥
मारीच कहिला हित, सातिशय समुचित, कहिलेक भ्राता विभीषण ।
तुमिह कहिले पथ्य, सब कथा अति तथ्य, किछु नाहि करिनु श्रवण ॥
धार्मिक विशुद्ध-मन, सेइ भ्राता विभीषण, करिलाम तार अपमान ।
सेइ पापे बुझि मोरे, नर-वानरेर करे, पाइते हइल अपमान ॥

कह गये, मैं राघव को मार कर आता हूँ, तुम आनन्द से बैठो। सो तो तुम कर नहीं सके और खुद ही यमपुरी चले गये, मुझको घोर क्लेश में छोड़ गये। हे मेरे योग्य भ्राता, तुमने सुर-असुर, गन्धर्व, भुजंग, यक्ष, गुह्य, सिद्ध, विद्याधर आदि को पराजित कर सारे संसार पर विजय प्राप्त की, और आज क्षुद्र मनुष्य के हाथों प्राण गवाँया। तुम वह हो जिसके शरीर में प्रवेश करने में असमर्थ वज्र टकरा पर भूमि पर गिर पड़ा था और आज वही तुम राम के बाण से कैसे आहत हो गये ? मेरे भाग्य में यह क्या लिखा था ? फिर मैं किस तरह से पुरन्दर, यम, वरुण तथा दैत्यों पर विजय प्राप्त कर सकूँगा ? उपस्थित शत्रुओं का रण में किस प्रकार वध कर सकूँगा और लंका की रक्षा किस प्रकार कर सकूँगा ? अरे ! मेरे भाई, तुम्हारे न होने से, मुझसे अब कोई भी डरेगा नहीं। दूसरों की क्या कहूँ, इन क्षुद्र वानरों तक ने मेरे मन को सशंकित कर रखा है। तुम्हारे मरते न मरते ही आकाश में देवतागण कोलाहल करने लग गये। शायद इसके बाद वे सब के सब तालियाँ बजा कर मेरी हँसी उड़ायेंगे। मारीच ने मेरे हित में कहा था और भाई विभीषण ने अत्यन्त समुचित बात कही थी, तुमने भी हितकारी और सच्ची बातें बताईं, किन्तु मैंने किसी की एक बात भी न सुनी। विशुद्ध-चित्त और धार्मिक भाई विभीषण का मैंने अपमान किया। कदाचित् उसी पाप के कारण मुझको नर एवं वानरों के हाथ अपमानित होना पड़ा। मेरे भाई,

तुमि भ्राता यदि गेले, कि फल ऐश्वर्य-वले, कि कार्य सीताय आर प्राणे।
कि फल समर-जये, कि फल वान्धव-चये, प्राण दिव रघुपति-वाणे ।। ७४

नरान्तक, देवान्तक, महोदर, त्रिशिरा एवं महापाशेर युद्ध ओ मृत्यु

एइरूपे क्रन्दन करये दशानन ॠ अश्रुजले अभिशिक्त हइल वदन
पिताय कातर देखि पुत्रे जन्मे दुःख ॠ त्रिशिरा विक्रम करे रावण-सम्मुख
करिला तपस्या पिता, हइते अमर ॠ अमर हइते ब्रह्मा नाहि दिला वर
अमर हइल विभीषण निजगुणे ॠ ब्रह्मार कृपाय सेइ सर्व-शास्त्र जाने
शास्त्र-अनुरूप खुड़ा कहिलेक हित ॠ धार्मिक-चरित्र जिनि विचारे पण्डित
त्रिभुवन जिनि पिता, तोमार वाखान ॠ देवता-गन्धर्व्व-आदि नाहि धरे टान
ज्येष्ठ भाइ कुबेर धनेर अधिकारी ॠ तारे जिनि पुष्परथ निले लङ्कापुरी
मय-दानव महाराज सर्वलोक-माझे ॠ कन्यादान दिया से तोमारे देख पूजे
वासुकिर विषदाहे त्रिभुवन पुड़े ॠ तव शब्द पाइले पलाय उभरड़े
इन्द्र-यम-वरुणेर करिले वितथा ॠ मनुष्य-वेटारे जिना कत वड़ कथा

यदि तुम ही चले गये तो मुझको इस धन-सम्पदा की कौन सी आवश्यकता रही, अपने प्राण और सीता से भी मुझे क्या काम रहा, युद्ध-विजय से भी क्या फल होगा और इष्ट-मित्रों के ध्वंस से ही क्या फल निकलेगा ? इससे अच्छा है कि मैं रघुपति के बाणों से प्राण दे दूँ ।। ७४ ।।

नरान्तक, देवान्तक, महोदर, त्रिशिरा और महापाश का युद्ध और मृत्यु

दशानन इस प्रकार क्रन्दन करने लगा और उसका मुँह आँसुओं से भीग गया। पिता को दुखी देखकर उसका पुत्र त्रिशिरा भी दुखी हुआ और रावण के सम्मुख अपना पराक्रम प्रकट करने लगा। (उसने कहा) हे पिता, अमर बनने के लिए तपस्या की, लेकिन ब्रह्मा ने अमरत्व का वरदान नहीं दिया। विभीषण अपने गुणों के कारण अमर हो गये और ब्रह्मा की कृपा से सर्व-शास्त्र पारंगत हो गये। चाचा जी ने शास्त्र के अनुरूप कार्य किया, वे विद्वान और धार्मिक चरित्र के हैं। त्रिभुवन पर विजय प्राप्त कर आपको ख्याति मिली, देवता-गन्धर्व आदि आपका सामना न कर सके। आपके ज्येष्ठ-भ्राता कुबेर धन के अधिकारी हैं, उन पर विजय प्राप्त कर आप पुष्पक-विमान लंकापुरी ले आये। सारे लोकों में प्रख्यात महाराजा मयदानव ने अपनी कन्या दान कर आपकी पूजा की। वासुकी के विषदाह से त्रिभुवन भस्म हो जाता है किन्तु आपकी आहट पाते ही वह भाग जाता है। जिन्होंने इन्द्र-यम-वरुण की दुर्दशा कर दी उनके लिए मनुष्य पर विजय प्राप्त करना कौन सी बड़ी बात है। आज के युद्ध का सारा भार मुझपर है, मैं विभिन्न अस्त्रों से युद्ध करूँगा। गरुड़ के मुँह में जिस प्रकार सर्प जलकर खाक हो जाता

नाना-अस्त्र संग्रामे करिब अवतार ※ आजिकार यत युद्ध, से भार आमार
गरुड़ेर मुखे येन दग्ध हय साप ※श्रीराम-लक्ष्मणे मारि घुचाब सन्ताप७५
त्रिशिरा विक्रम करे, राजा हरषित ※ आर तिन भाइ तार रोषे आचम्बित
देवान्तक नरान्तक अतिकाय-वीर ※ संग्रामे जाइते चाहे, नाहि हय स्थिर
चारिजन महाबल चिरकाल जाने ※ चारिजने ऐक्य हैले त्रिभुवन जिने
राजार प्रसाद यत पाय चारिजन ※ सुगन्धि-कुसुम-माल्य कस्तूरी-चन्दन
वीर-धटी परे केह नामे गंगाजल ※ रत्न-विनिर्मित परे कर्णेते कुण्डल
परिल सोनार शाना, रत्नेर टोपर ※ माणिक्येर हार साजे गलार उपर
नाना-रत्न-अलङ्कार परिल शरीरे ※ कनक-कंकण बाला परे दुइ करे
चारि बेटा परिलेक चारि राजार धन ※ रावणेर चारि बेटा कामिनी-मोहन
महापाश-वीर आर भाइ महोदर ※ छयजन यात्रा करे संग्राम-भितर७६
छयवीर यात्रा करे संग्रामे प्रवीण ※ विदाय लइल करि पितृ-प्रदक्षिण
नीलवर्ण हस्ती एल नीलमेघ-ज्योति ※ ऐरावत-वंशे तार ह'येछे उत्पत्ति
बड़इ प्रबल सेइ मदमत्त हाती ※ ताहाते चड़िल महोदर योद्धपति
उच्चैःश्रवा अश्व येन पवनेर गति ※ सेइ अश्वे चड़े देवान्तक महामति

है उसी प्रकार मैं श्रीराम-लक्ष्मण को मारकर आपका सारा सन्ताप दूर करूँगा ॥ ७५ ॥

जब त्रिशिरा इस प्रकार अपना पराक्रम प्रकट करने लगा तो राजा हर्ष-मग्न हुआ। उसके तीन भाई देवान्तक, नरान्तक और अतिकाय रोष से अधीर होकर संग्राम में जाने के लिए आग्रह करने लगे। चारों भाई महाबली हैं, ये चारों जब एकत्र हो जायें तो त्रिभुवन जीत सकते हैं, यह सभी लोग जानते हैं। चारों को राजा का प्रसाद—सुगंन्धित पुष्पों की माला और कस्तूरी-चन्दन प्राप्त हुआ। उन्होंने गंगाजल के समान शुभ्र वीर परिधान धारण किया। रत्नों से बने कुंडल पहन लिये। रत्न-निर्मित मुकुट और सोने का कवच धारण किया। गले में माणिक्य का हार पहन लिया। शरीरपर विभिन्न रत्नालंकार और—हाथों में सोने के कंगन—इस प्रकार चारों बेटों ने चार राजाओं की सम्पदा के तुल्य आभूषण पहन लिये। रावण के चारों बेटे कामिनीमोहन हैं। उनके साथ रावण के दो वीर भाई महापाश, महोदर भी साथ हो लिये। इस प्रकार संग्राम लड़ने के लिये ये छह वीर चल पड़े ॥ ७६ ॥

संग्राम में निपुण छह वीरों ने रावण की प्रदक्षिणा कर विदा ली। नीले वर्ण का नील-मेघ-ज्योति नामक हाथी आया जिसका जन्म ऐरावत के वंश में हुआ था। वह मदमत्त हाथी बड़ा ही प्रबल था। उसपर समरपति महोदर ने सवारी की। पवन की गति वाले उच्चैःश्रवा अश्व पर महामति देवान्तक

आर अश्व भूमे पाद पड़े कि ना पड़े ॐ हाते शेल नरान्तक सेइ अश्व चड़े
साजाइल रथ, येन रविर प्रकाश ॐ हाते शेल चड़े ताहे वीर महापाश
आर रथ साजाय माणिक्य-मणि-हीरा ॐ हाते खाण्डा चड़े ताहे कुमार त्रिशिरा
सुवर्णेर रथ, शत घोड़ार साजनि ॐ सेइ रथे अतिकाय चड़िल आपनि ७७
पुत्रसब यात्रा करे, शुनि ए वचन ॐ सबार जननी आसि करिछे रोदन
कुम्भकर्ण-हेन वीर प'ड़े गेल रणे ॐ ना जाइओ व्यथा दिया जननीर प्राणे
धनुर्बाण छाड़ बाछा, प्राण बड़ धन ॐ कल्याणे थाकिबे, राख मायेर वचन
विभा कैले कत देव-दानव-नन्दिनी ॐ कोथा जाह ता'—सबारे करि अनाथिनी
सम्प्रति करिले विभा, नहे सहवास ॐ अग्नि दिया पोड़ाव लंकार गृहवास
चारि-भाइ चतुर्दोल लह स्कन्ध करि ॐ श्रीरामेरे देह ल'ये जानकी सुन्दरी
हेन कर्म करिले यद्यपि राजा रोषे ॐ पलाइया थाक गिया पर्व्वत-कैलासे
कुबेर तोमार पितृ-ज्येष्ठ-भ्रातृबर ॐ सेवि ताँके पुत्रसम थाक ताँर घर
मातृगण-वचनेते पुत्र सब कोपे ॐ पुत्रगण-क्रोध देखि भये तारा काँपे
कोपे पुत्रगण बले, दिताम प्रतिफल ॐ जननी वलिया एत सहि ये सकल

सवार हुआ। दूसरे एक अश्व पर नरान्तक बैठ गया जिसके पैर भूमि पर पड़ते थे या नहीं इसमें सन्देह है। सूर्य के प्रकाश के समान रथ सुसज्जित हुआ, जिस पर हाथ में शेल लेकर वीर महापाश आसीन हुआ। दूसरा एक रथ मणि-माणिक्य और हीरों से सुशोभित किया गया जिस पर कुमार त्रिशिरा हाथों में खड्ग लेकर बैठ गया। सौ घोड़ों से सुसज्जित स्वर्ण रथ पर अतिकाय जाकर स्वयं बैठ गया ॥ ७७ ॥

समस्त पुत्र यात्रा कर रहे हैं यह सुनकर उनकी माताएँ आकर रोने लगीं। युद्ध में जब कुम्भकर्ण जसे वीर का निधन हो गया, तो तुम बेटे रणक्षेत्र में मत जाना, जननी के हृदय को मत दुखाओ। धनुष-बाण त्याग दो बेटा, प्राण बहुत बड़ी सम्पदा है, माँ का कहना मान लो, कुशल से रहोगे। कितनी ही देव-दानव-नन्दिनियों से तुम लोगों ने विवाह किया है—उनको अनाथिन बना कर कहाँ जा रहे हो। हाल में तुमने विवाह किया है, सहवास भी नहीं हुआ, (अगर तुम लोग चले गये तो) अग्नि से लंका में निवास-गृह को जला दूँगी। चारों भाई अपने कंधों पर चतुर्दोल उठाकर उसमें जानकी सुन्दरी को बिठाकर श्रीराम के पास ले जाकर पहुँचा आओ। ऐसा काम करने से यदि पिता रुष्ट होते हैं तो भागकर कैलास पर्वत में जाकर छिप जाओ। कुबेर तुम्हारे पिता के बड़े भाई हैं—उनकी सेवा कर उनके घर में पुत्र के समान रहो। माताओं के वाक्य से सारे पुत्र क्रोधित हो उठे, पुत्रों का क्रोध देखकर माताएँ काँपने लगीं। कुपित पुत्रों ने कहा, अवश्य ही हम इसका बदला चुका देते लेकिन तुम लोग जननी हो इसलिए सहन कर रहे हैं।

जगतेर कर्त्ता मोरा, वीरवंशे जन्म ❋ मानुषेर डरे रब करि सेवाकर्म्म
आनिल पुष्पक-रथ पिता जारे जिने ❋ कि लाजे शरण लब ताहार चरणे
बाहुबले पिता मोर त्रिभुवन शासे ❋ लुकाये थाकिब केन डराये मानुषे
विपक्ष-सम्मुखे यदि संग्रामेते मरि ❋ दिव्य रथे चड़िया जाइब स्वर्गपुरी
आपन-मन्दरे जाह, ना कर विषाद ❋ श्रीराम-लक्ष्मणे मारि घुचाब विवाद
गरुड़ेर मुखे येन भस्म हय साप ❋ ग्रासिब वानर-सेना, देखाब प्रताप ७८
मातृगणे प्रबोधिया छयजन साजे ❋ रुषिया प्रवेश करे संग्रामेर माझे
छय-सेनापति-ठाट छय-अक्षौहिणी ❋ कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी
धूलाय दिवसे बाट हैल अन्धकार ❋ छय-वीर उत्तरिल करि मार-मार
दुइ सैन्य मिशामिशि वाजे महारण ❋ गाछ उपाड़िया आने यत कपिगण
वानरे पाथर-गाछ करे वरिषण ❋ बाणे काटि राक्षसेरा करे निवारण
राक्षसेरा बाण एड़े अनलेर शिखा ❋ वानर-कटक पड़े, नाहि लेखाजोखा
व्याघ्रेर झाँपानि येन वानरेर रंग ❋ मरणेर भय नाहि, रणे नाहि भंग
चड़-चापड़-मुष्ट्याघात वानरेर ताड़ा ❋ कतशत राक्षसेर माथा करे गुँड़ा ७९

हम लोग संसार के प्रभु हैं, हमारा जन्म वीरवंश में हुआ है सो हम मनुष्य के भय से सेवक का काम करने लग जाएँ। पिता जिनको हराकर पुष्पक रथ छीन लाये थे, किस मुँह से हम उनकी शरण में जा सकते हैं। मेरे पिता अपने बाहुबल से संसार पर शासन करते हैं और हम मनुष्य से डर कर छिप कर रहें। शत्रु के साथ सम्मुख-संग्राम में अगर हम मरेंगे तो दिव्यरथ पर बैठकर हम स्वर्ग चले जाएँगे। तुम लोग अपने-अपने मन्दिरों में चली जाओ, खेद मत करो, श्रीराम-लक्ष्मण का वध कर सारा झगड़ा ही निबटा देंगे। जिस प्रकार गरुड़ के मुँह में सर्प भस्म हो जाता है, अपने प्रताप से उसी प्रकार हम लोग वानर-सेना को ग्रसित कर लेंगे ॥ ७८ ॥

इस प्रकार माताओं को ढारस बँधाकर वे छहों पुत्र सज्जित हुए और क्रुद्ध होकर संग्राम में प्रवेश किया। छहों सेनापतियों के पास छह अक्षौहिणी सेना थी। उसकी पदचाप से धरती काँपने लगी। धूल के कारण दिन के समय भी पथ अन्धकारमय हो गया। छहों वीर मार-मार शब्द करते हुए रण में उतरे और दोनों सेनाएँ मिल जाने से घोर युद्ध ठन गया। सारे कपि वृक्ष उखाड़-उखाड़ कर लाने लगे और वृक्ष और शिला बरसाने लगे। राक्षसों ने बाण फेंककर उनको घायल कर दिया। राक्षस अनल-शिखा जैसे बाण चलाने लगे जिससे अनगिनत वानर-सेना गिरने लगी। वानर यों कूद-फाँद करने लगे मानों व्याघ्र हों, उनको मृत्यु का भय नहीं और वे रण से भी भागने वाले नहीं। वानरों ने झाँपड़-मुक्का मार-मार कर कितने ही राक्षसों का सिर चूर्ण-विचूर्ण कर दिया ॥ ७९ ॥

अनेक राक्षस पड़े, अत्यल्प वानर ※ कुपिल ये नरान्तक रावण कोङर
चतुर्दिक चापिया उठिल तार घोड़ा ※ चतुर्द्दिके अस्त्रवृष्टि करे जोड़ा-जोड़ा
वानरेर मारे वीर महा-शेलपाट ※ वानरेर रक्ते कादा ह'ये गेल बाट
नरान्तक-बाण केह सहिते ना पारे ※ भंग दिया वानर पलाये गेल डरे
डाकिया सुग्रीव कहे अंगदेरे आगे ※ देख देखि अंगद, कटक केन भागे
आपनि करिया युद्ध राख कपिगण ※ नरान्तक मारि तोष श्रीराम-लक्ष्मण ८०
सुग्रीवेर वचने अंगद पड़े लाजे ※ कटक साजाये गेल संग्रामेर माझे
रणेते प्रवेश करे अति क्रोध मुखे ※ दूर हैते नरान्तके बालि-सुत डाके
दुइ हात शून्य मोर, देख निशाचर ※ यत शक्ति आछे हान बुकेर उपर
देवता जिनिस् बेटा, शेलेर कारण ※ आजिकार युद्धे तोर बधिव जीवन
श्रीरामेर भृत्य आमि संसारे पुजित ※ तुइ अस्त्र पड़िले ना हव आमि भीत
पाइक मारिया बेटा, फिर कि कारण ※ तोमाते आमाते जुझि, जिने कोन जन
दुइ हात पसारिया येते दिल बुक ※ अंगद-विक्रम देखि सुग्रीवे कौतुक-
कोपे नरान्तक-वीर-अधरोष्ठ काँपे ※ एड़िलेक शेलपाट अतिशय कोपे
एड़िलेक शेलपाट दिया हुहुंकार ※ स्वर्ग-मर्त्य-पाताले लागिल चमत्कार

राक्षस अधिक गिर रहे हैं और गिरने वाले वानरों की संख्या बहुत कम है यह देखकर रावण-सुत नरान्तक अत्यन्त कुपित हुआ। घोड़े पर सवार वह चारों ओर धावा करने लगा तथा चारों ओर अस्त्रों की वर्षा करने लगा। महा-शेलपाट से उसने वानरों को मारा, वानरों के खून से पथ में कीचड़ हो गया। नरान्तक के बाणों का कोई सामना नहीं कर सका, डर के मारे वानरों के पैर उखड़ने लगे। तब सुग्रीव ने अंगद को बुलाकर कहा, अंगद, थोड़ा देखना तो, वानर-सेना भागने क्यों लग गई है? स्वयं युद्ध कर कपियों को ठहराये रखो और नरान्तक को मार कर श्रीराम-लक्ष्मण को प्रसन्न करो ॥ ८० ॥

सुग्रीव का वचन सुनकर अंगद को लाज आ गई—वह सेना को सुसज्जित कर रणक्षेत्र में जा पहुँचा। क्रोधित होकर वह रण में प्रवेश करने लगा तो दूर से नरान्तक को बालि-सुत ने ललकारा। अरे निशाचर, देख मेरे दोनों हाथों में कुछ भी नहीं है, तुझमें जितनी शक्ति है उससे मेरे सीने पर शेल मार। अरे तू देवताओं पर विजय पाता है तो शेल के कारण, लेकिन आज के युद्ध में मैं तेरे प्राण ले लूँगा। मैं संसार भर में पूज्य श्रीराम का सेवक हूँ, तू अस्त्र फेंकेगा तो मैं भयभीत नहीं हूँगा। छोटे योद्धाओं को क्यों मारते फिरते हो, आओ तुम-हम दोनों निबट लें, देखें कौन जीतता है। दोनों हाथ पसार कर उसने सीना तान दिया। अंगद का विक्रम देखकर सुग्रीव को बड़ा आनन्द आया। कोप से वीर नरान्तक के होंठ काँपने लगे। उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर हुंकार के साथ शेलपाट फेंका जिससे स्वर्ग-मर्त्य-पाताल,

अंगदेर बुक येन बज्रेर समान * बुकेते ठेकिया शेल हैल दुइखान
अंगद बले, तोर अस्त्र गेल रसातल * मोर घा संवर बेटा, तबे जानि बल
आपना पासरे कोपे बालिर नन्दन * नरान्तके मारिते भावये मने-मन
बज्रमुष्टि मारि घोड़ा करिलेक चूर * पड़िल दुर्ज्जय घोड़ा ऊर्ध्वे चारिखूर
दुइचक्षु ठिकरिल, जिह्वा बाहिराय * नरान्तक कुपिया अंगद-पाने चाय
वज्रमुष्टि मारिलेक अंगदेर बुके * मुखे रक्त उठे तार झलके झलके
शरीर व्यथित, तबु नहे त कातर * प्रबेश करिल गिया रणेर भितर
महाबल अंगद अत्यन्त क्रोधभरे * बुके हाँटु दिया तबे नरान्तक मारे ८१
नरान्तक पड़िल, देखिल देवान्तके * ससैन्येते अंगदे बेड़िल चारिदिके
हस्तीर उपरे चड़ि आइल महोदर * चालाइया दिल करी अंगद-उपर
अनुबल त्रिशिरा हइल ततक्षण * अंगदेरे बेड़े आसि वीर दुइजन
महोदर जाठा मारे अंगदेर बुके * मुखे रक्त उठे वीरेर झलके झलके
मुखे रक्त उठे, तबू ना हय कातर * अन्धकार करि फेले गाछ ओ पाथर
मध्येते अंगद चारिदिके निशाचर * देखि हनूमान-वीर धाइल सत्वर
महारणे मिशामिशि हैल छयजन * बाधिल तुमुल युद्ध, नहे निवारण

तीनों लोक चमत्कृत हो उठे। अंगद का वक्ष मानों वज्र का बना हुआ हो—जिससे टकराकर उस शेल के दो टुकड़े हो गये। अंगद ने कहा, तेरा अस्त्र तो व्यर्थ गया अब मेरा आघात सह ले तो जानूँ। अपने क्रोध को बालि-नन्दन ने संवरण किया और मन ही मन नरान्तक को मारने का उपाय सोचने लगा। वज्रमुष्टि के प्रहार से उसके घोड़े को मारा, उसका दुर्जेय घोड़ा जमीन पर जा गिरा और उसके चारों खुर आकाश की ओर उठ गये, उसकी आँखें और जीभ भी कोटरों से बाहर निकल आईं। नरान्तक ने क्रुद्ध हो अंगद की ओर देखा और अंगद के वक्ष पर वज्रमुष्टि मारी। उसके मुँह से भल-भल खून निकलने लगा किन्तु शरीर में दर्द होने पर भी वह कातर न हुआ, और रणक्षेत्र में डटा रहा। अत्यन्त क्रोध से महाबल अंगद ने नरान्तक के सीने पर घुटना दबाकर उसको मार डाला ॥ ८१ ॥

देवान्तक ने नरान्तक को गिरते हुए देखा और अपने सैन्य के साथ अंगद को चारों ओर से घेर लिया। अपने हाथी पर बैठा महोदर आया और अंगद के ऊपर हाथी चला दिया। इतनी ही देर में वहाँ अनुबल और त्रिशिरा आ पहुँचे और दोनों वीरों ने अंगद को घेर लिया। महोदर ने अंगद के वक्ष पर जाठा (लौहदंड) मारा, अंगद के मुँह से भल-भल खून निकलने लगा। मुँह से खून निकलने पर भी वीर जरा सा भी कातर न हुआ और घनघोर वृक्ष तथा प्रस्तर फेंकने लगा। बीच में अंगद हैं और चारों ओर से उनको निशाचर घेरे हुए हैं, यह देखकर वीर हनुमान शीघ्र ही दौड़े। घमासान युद्ध

देवान्तक-हस्ते छिल लोहार पावड़ि ❋ हनूमान-बुके मारे दुहातिया वाड़ि
कुपिल से हनूमान संग्रामेर शूर ❋ पदाघाते देवान्तके करिलेक चूर ८२
हस्तीर उपरे तबे आइल महोदर ❋ नील सेनापति विन्धि करिल जर्जर
वाण खेये नील वीर करिल उठानि ❋ एकटाने उपाड़े पर्व्वत एकखानि
एड़िल पर्व्वत-गोटा शब्द गेल दूर ❋ हस्ति-सह महोदरे करिलेक चूर ८३
तिन-वीर पड़े रणे, देखे अतिकाय ❋ हाते खाण्डा त्रिशिरा संग्राम-माझे जाय
हनूमान महावीरे देखिल सम्मुखे ❋ दुहातिया बाड़ि मारे हनूमान-बुके
प्रहारेते हनूमान आपना पासरे ❋ एकलाफे पड़े तार रथेर उपरे
त्रिशिरार हाते खाण्डा अति खरशान ❋से खाण्डाय त्रिशिराय करेखान-खान ८४
भाइ भाइपो पड़े रणे, देखे महापाश ❋ हाते गदा कपिगणे करिछे विनाश
नीलवर्ण गदाखान देखि चारिभिते ❋ अधिक हइल रांगा कपिर शोणिते
जयघण्टा बाजे से गदार चारिपाशे ❋ देवता-गन्धर्व-आदि सबे काँपे त्रासे
महापाश-गदा केह सहिते ना पारे ❋ भंग दिया पलाइल सकल वानरे
हेमकूट-कपि आइल वरुण-नन्दन ❋ पर्व्वत उपाड़े एक घोर-दरशन

में ये छः जने जुट गये और इसके शान्त होने के कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। देवान्तक के हाथों में लोहे का एक दण्ड था—दोनों हाथों से उसने हनुमान के वक्ष पर उसे दे मारा। संग्राम में शूर हनुमान फिर बिगड़ खड़ा हुआ और पदाघात से उसने देवान्तक को चूर्ण-विचूर्ण कर दिया ॥ ८२ ॥

फिर महोदर अपने हाथी पर सवार आया। उसने सेनापति नील को बाणों से विद्ध कर दिया। बाण खाकर नीलवीर उठे और एक समूचा पर्वत उखाड़ कर फेंका। पर्वत के फेंकने से दूर-दूर तक शब्द गया और हाथी सहित महोदर विनष्ट हो गया ॥ ८३ ॥

अतिकाय ने देखा कि तीन वीरों का पतन हो गया। त्रिशिरा हाथ में खड्ग लेकर संग्राम में कूद पड़ा। उसने सामने महावीर हनुमान को देखा और दोनों हाथों से खड्ग उठाकर हनुमान के वक्ष पर वार किया। हनुमान ने वार से अपने को बचा लिया और कूद कर उसके रथ पर जा गिरा। त्रिशिरा के हाथ का खड्ग बड़ा ही तेजधार वाला था—उसी खड्ग से उसने त्रिशिरा को खंड-खंड कर डाला ॥ ८४ ॥

महापाश ने देखा कि युद्ध में उसके भाई और भतीजे गिर गये। गदा लेकर वह कपियों का नाश करने लग गया। नीले रंग की वह गदा कपि के रक्त से लाल रंग की हो गई। उस गदा के चारों ओर जयघंटा बजता और देवता, गन्धर्व आदि सभी त्रास से काँपते। महापाश की गदा का प्रहार कोई सह न सका और सभी वानर भागने लगे। इतने में वरुण-नन्दन हेमकूट कपि आया और एक भयंकर दीखने वाला पहाड़ उखाड़ा। क्रोधित होकर

एड़िल पर्व्वतखान अति क्रोधमने ※ महापाश-वीर पड़े पर्व्वत-चापने
कृत्तिवास-पण्डित कवित्व विचक्षण ※ लंकाकाण्डे गाहिलेन गीत रामायण८५

अतिकायेर युद्धे प्रवेश

पड़े वीर पञ्चजना, देखिबारे पाय ※ हाते धनु संग्रामे प्रवेशे अतिकाय
चिन्ता करि मने-मने बलिछे तखन ※ श्रीचरणे स्थान देह कौशल्या-नन्दन
रावण-सन्तान बलि दया ना करिबे ※ दयामय-राम-नामे कलंक रहिबे
खुड़ा दुइजन पड़े, सहोदर आर ※ रुष्ट हैल अतिकाय रावण-कुमार
हीरा-मणि-माणिक्येते शोभे रथखान ※ एकशत अश्ववर रथेर योगान
माथाय मुकुट शोभे, कर्णेते कुण्डल ※ देवता गन्धर्व जिनि बाड़ियाछे बल
महाक्रोधे अतिकाय ह'ये आगुसार ※ दिलेन आपन दिव्य-चापेते टंकार
किवा घोरतर सेइ टंकार-नि:स्वन ※ ताहा शुनि मूर्च्छित हइल कपिगण
बड़-बड़ वीर यत भल्लुक वानर ※ ताहादेर वक्ष:स्थल काँपे थर-थर
तबे सेइ रथे थाकि गभीर-गर्ज्जने ※ कहितेछे सम्बोधिया प्लवंगमगणे
ओरे ओरे महामूर्ख मर्कट-सकल ※ पलाह पलाह तोरा छाड़ि रणस्थल
त्रिभुवने अति ख्याति अतिकाय नाम ※ आसियाछि आमि आजि करिते संग्राम

उसने उस पहाड़ को फेंका। उसी पहाड़ से दबकर वीर नागपाश गिरा। कवित्व में विचक्षण पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड में रामायण का गीत गाया ॥ ८५ ॥

अतिकाय का रण में प्रवेश

पाँचों वीर गिर गये यह अतिकाय ने देखा और हाथों में तीर-धनुष लेकर उसने संग्राम में प्रवेश किया। उस समय वह मन ही मन चिन्ता कर कहने लगा, हे कौशल्या-नन्दन तुम अपने श्रीचरणों में मुझे स्थान दो। रावण-पुत्र होने के कारण तुम मुझ पर अगर दया नहीं करोगे तो राम के दयामय नाम पर कलंक लगेगा। दो चाचा गिर गये और सहोदर भी। रावण-कुमार अतिकाय यह सोचकर क्रुद्ध हो गया। हीरा-मोतियों से जगमगाते रथ में सौ घोड़े जुते हुए थे। सिर पर मुकुट शोभायमान था और कानों में कुंडल। देवता और गन्धर्वों पर विजय प्राप्त करने के कारण इसकी शक्ति पर्याप्त बढ़ चुकी थी। अतिकाय महाक्रोध से आगे बढ़ा और अपने दिव्य धनुष पर उसने टंकार-ध्वनि भी कितनी घनघोर की कि उसे सुनकर कपि मूर्च्छित होने लगे। जितने बड़े-बड़े रीछ और वानर थे सभी के हृदय थर-थर काँपने लगे। उस रथ पर बैठकर गंभीर गरजते स्वर में उसने कपियों को सम्बोधित करते हुए कहा, अरे महामूर्ख मर्कट-मंडली! रणक्षेत्र छोड़कर तुम सब भाग जाओ। अतिकाय का नाम त्रिभुवन में प्रख्यात है, और आज मैं ही युद्ध करने आया हूँ। आज

आजि ना राखिब एइ भुवन-भितर ✻ आपन पितार रिपु कपि किंवा नर
तोरा केन मोर अग्रे मरिस् थाकिया ✻ हित कहि, प्राण ल'ये जाह पलाइया
एत बलि सिंहनाद करे घन-घन ✻ ताहे अति त्रासित हइल कपिगण
आर तार अतिशय भयंकर काय ✻ देखिया वानर सब भयेते पलाय
केह केह सेतु दिया जाय सिन्धुपारे ✻ केह प्रवेशये वने, केह बलि-द्वारे
केह केह सिन्धु-जले थाकये डुबिया ✻ केह लता-पत्रादिते देह आच्छादिया
केह केह प्रवेशये वृक्षेर कोटरे ✻ केह केह कुम्भकर्ण-वदन-विवरे
केह केह भये निजे मृत जानावारे ✻ शयन करिया रहे शवेर माझारे
केह केह श्रीरामेर निकटे जाइया ✻ कहितेछे अतिकाय-वीरे देखाइया
देख देख रघुवर, रणेर भितर ✻ आसियाछे अति वड़ एक निशाचर
उहारे देखिबामात्र यत कपिगण ✻ त्रासित हइया सबे कैल पलायन
कपिगण-कथा शुनि श्रीरघुनन्दन ✻ अतिकाये देखि हैल सविस्मय-मन
यद्यपि प्रथम-रणे देखेछिला तारे ✻ तथापि विस्मय हैल अन्तर-माझारे
अलौकिक पदार्थेर एइ धर्म्म हय ✻ देखिलेओ नव-नव-रूपे प्रकाशय
तबे रघुपति निज-मिता विभीषणे ✻ जिज्ञासा करने अति-मधुर-वचने ८६
देख मिता विभीषण, रणे एल कोन जन, पर्व्वत-प्रमाण रथे चापि ।
निजेओ भूधरे जिति, श्यामवर्ण शिलाकृति, अति भयंकर भूप्रतापी ॥

इस संसार में अपने पिता के शत्रु नर और वानर एक भी शेष न रखूंगा। क्यों तुम लोग मेरे सामने रहकर मरना चाहते हो, तुम्हारे हित की बात करता हूँ, अपने प्राण लेकर तुम भाग जाओ। इतना कहकर वह बार-बार सिंहनाद करने लगा, जिससे सारे कपि अत्यन्त आतंकित हो गये और उसकी भयंकर विशाल देह देखकर सारे वानर भय से भागने लगे। कोई कोई तो सेतु से सिन्धु लांघ कर दूसरी ओर चला गया, तो कोई जंगल में घुस गया, तो कोई बलि के द्वार, कोई-कोई समुद्र के जल में जाकर डूब कर खड़ा रहा। किसी ने वृक्षों के पत्ते और लताओं से अपने को ढँक लिया, तो कोई वृक्ष के कोटरों में छिप गया। कोई-कोई मृत कुम्भकर्ण के मुँह गह्वर में छिप गया तो कोई अपने को मृत जताने के लिए शवों के बीच जाकर लेट गया। कोई-कोई श्रीराम के निकट जाकर अतिकाय वीर को दिखाकर कहने लगा, देखो रघुवर, आज रणक्षेत्र में बहुत बड़ा एक निशाचर आया है, उसको देखते ही सारे कपि भय से भाग गये। कपियों की बात सुनकर श्रीरघुनन्दन ने अतिकाय को देखा और विस्मित हुए। यद्यपि प्रथम रण में उसको देखा था फिर भी उसको देखकर अन्तर विस्मय से भर गया। अलौकिक वस्तुओं का यही स्वभाव होता है, देखी हुई होने पर भी वे नये-नये रूप में प्रकट होती हैं। तब रघुपति ने अपने मित्र विभीषण से अत्यन्त मधुर वचन में पूछा ॥ ८६ ॥

सुनो मित्र बिभषण, जरा देखना, पर्वत-प्रमाण रथ पर बैठा रण में यह

मुकुट शोभये शिरे, येन नील-धराधरे, सुवर्णेर शृंग शोभा पाय।
पिंगल नयनद्वय, भुजेते अंगदचय, गले नाना-आभरण ताय॥
किवा देखि रथखान, दशशत परिमाण, घोटकेते बहितेछे जारे।
पञ्च सुसारथि जार, ध्वज नर-मुण्डाकार, पताका उड़िछे चारिधारे॥
देखि रथ-उपरेते, अस्त्र-शस्त्र नानामते, शेल शूल मुषल मुद्गर।
तीक्ष्ण-तीक्ष्ण भिन्दिपाल, शत-शत तरवाल, काठार कुठार बहुतर॥
अतिशय भयंकर, लौहमय बाण खर, अष्टत्रिंश तूण शोभा करे।
स्वर्णबद्ध सुशोभन, दिव्य-दिव्य शरासन, चारिदिके रहे थरे-थर॥
दशहस्त परिमाण, दुइपाशे दुइखान, खड्ग दुलितेछे भयंकर।
धरियाछे वामकरे, एकखान धनुकेरे, इन्द्रधनुः सम दीर्घतर॥
निरखिया एइजने, पलाइछे स्थाने-स्थाने, वानर-सकल भीतमने।
के बटे, काहार पौत्र, कि नाम, काहार पुत्र, कह मिता, मम विद्यमाने॥ १८७

अतिकायेर युद्ध ओ मृत्यु

श्रीराम-वदने शुनि एतेक वचन ※ विभीषण ताँहारे करेन निवेदन
विश्रवार पौत्र प्रभु, रावण-नन्दन ※ अतिकाय-नामधारी हय एइजन
जनम इहार धान्यमालिनी-उदरे ※ आपन पितार तुल्य ए हय समरे

कौन आया। स्वयं भी वह भूधराकार है, श्यामवर्ण प्रस्तर के समान है और भयंकर पराक्रमी प्रतीत होता है। जिस प्रकार नीले पर्वत की चोटी पर स्वर्ण-शिखर शोभा पाता है उसी प्रकार उसके मस्तक पर मुकुट शोभायमान है। वह रथ भी कैसा जिसको दश-शत घोड़े खींच रहे हैं। पाँच-पाँच सारथी जिस पर बैठे हैं और नर-मुंड के आकार के ध्वज जिस पर हैं, उसके चारों तरफ झंडियाँ फहरा रही हैं। देख रहा हूँ कि रथ के ऊपर शेल, शूल, मूसल, मुद्गर, तेज भिन्दिपाल, सैकड़ों तलवारें, अनेक प्रकार के फरसे और कुल्हाड़े रखे हैं। अतिशय भयंकर लोहे के खरधार (तेज धार वाले) बाणों से भरे अड़तीस तूण (तरकस) शोभायमान हैं। सोने से मढ़े हुए दिव्य आकार के कितने ही धनुष सुसज्जित रखे हैं। दो बाजुओं में दस-दस हाथ लम्बे भयंकर दो खड्ग लटक रहे हैं। बाएँ हाथ में उसने एक लम्बा सा धनुष थाम रक्खा है जो कि इन्द्रधनुष सा लम्बा है। इसको देखकर भयभीत हो स्थान-स्थान पर वानर भाग रहे हैं। यह कौन है, किसका पुत्र और किसका पौत्र है, हे मित्र मुझको बताना॥ १८७॥

अतिकाय का युद्ध और मृत्यु

श्रीराम के मुँह ऐसे वचन सुनकर विभीषण ने उससे निवेदन किया, हे प्रभु, यह विश्रवा का पौत्र है और रावण का पुत्र है, इसका नाम अतिकाय है।

ज्ञाति-जन-सेवनेते एह अनुरक्त ❋ एकबार श्रुतिमात्रे शास्त्राभ्यासे शक्त
साम दाम भेद दण्ड ए चारि उपाये ❋ अत्यन्त निपुण आर मन्त्रणा-निचये
धर्म्मशास्त्र अर्थशास्त्र कामशास्त्रे धीर ❋ अश्वपृष्ठे गजस्कन्धे रथे महास्थिर
धनुक-धारणे आर बाण-विमोचने ❋ इहार समान नाहि रावण-विहने
खड्ग-चर्म्म-युद्धे आर गदा-प्रहरणे ❋ इहार समान नाहि ए लंका-भुवने
इहारइ बाहुर बल करिया आश्रय ❋ निरवधि लंकापुरी आछये निर्भय
इहार प्रभाव प्रशंसये सर्व्वजन ❋ देवता - दानव - यक्ष - विद्याधरगण
एह घोर तप करि अनेक वरष ❋ विधातारे करियाछे आपनार वश
ताँर स्थाने पाइयाछे एइ दिव्ययान ❋ आर पाइयाछे नानाविध अस्त्र-वाण
पाइयाछे दिव्य एक कवच अभेद्य ❋ हइयाछे सुरासुर-निकटे अवध्य
एह जिनियाछे बहु देवता-दानवे ❋ यक्ष-विद्याधर-नाग-किन्नरादि सवे
करेछिल एह बाणे वज्रेर स्थम्भन ❋ वरुणेर पाश क'रेछिल निवारण
लंकामाझे एह सब वीरेर प्रधान ❋ देव-दैत्य-जयी शूर वीर बलवान
आदरेते अतिकाय-नाम राखे बाप ❋ कुमार-भागेते नाहि एमन प्रताप
एह रणे यावतीय कपि-भल्लगणे ❋ संहार करिबे शरजाले एइक्षणे
अतएव इहार करिते संहरण ❋ करिते हइबे अति शीघ्र आयोजन ८८

इसका जन्म धान्यमालिनी की कोख से हुआ है। यह युद्ध में अपने पिता के समान है। पात्र-मित्रों-सम्बन्धियों की सेवा में यह तत्पर है। एक बार सुन कर ही यह कठिन शास्त्रों में पारंगत हो गया। साम, दाम, दंड, भेद—इन चारों उपायों में यह बड़ा ही निपुण है। धर्मशास्त्र, और कामशास्त्र में यह निष्णात (चतुर) है। अश्वारोहण और गजारोहण में, धनुष पकड़ने और वाण चलाने में यह दक्ष है। खड्ग-चर्म युद्ध में और गदायुद्ध में लंका में इसकी कोई तुलना नहीं। इसी के बाहुबल के भरोसे लंकापुरी निर्भय बनी हुई है। देवता-दानव-यक्ष-विद्याधर सभी इसके प्रभाव की प्रशंसा करते हैं। इसने बहुत वर्षों तक घोर तपस्या करने के बाद विधाता को अपने वश में किया। उस तपस्या के कारण उसको यह दिव्य-ज्ञान और अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र मिले। इसको एक अभेद्य कवच मिला है जिस कारण यह सुरासुर के निकट अवध्य बन गया है। इसने बहुत सारे देवता-दानव-यक्ष-विद्याधर-नाग-किन्नरादि पर विजय प्राप्त की है। इसने वाण से वज्र का निवारण किया था, और वरुण के पाश को भी रोका था। लंका में यह सारे वीरों में श्रेष्ठ है—यह देव-दैत्य-विजयी, शूर-वीर और बलवान है। पिता ने दुलार से इसका नाम अतिकाय रखा, राजपुत्रों में इसके समान पराक्रमी दूसरा कोई भी नहीं है। यह रण में अपने वाणों से सारे कपि और रीछों का संहार कर डालेगा। अत: इसको रोकने केलिए शीघ्र व्यवस्था करनी पड़ेगी ॥ ८८ ॥

एइरूपे विभीषण कन रघुवरे ❋ अतिकाय प्रवेशिल समर-भितरे
सम्मुखेते विभीषण करि निरीक्षण ❋ प्रणाम करिया ताँरे कहिछे वचन
अतिकाय बले, खुड़ा, शुनह उत्तर ❋ रात्रिदिन सेव तुमि देव गदाधर
तोमार समान श्रेष्ठ हबे कोन जन ❋ तोमा-प्रति बड़ प्रीत देव नारायण
अतिकाय बले, खुड़ा, निवेदि तोमारे ❋ आमारे करुन दया देव-गदाधरे
एत कहि अतिकाय खुड़ा विभीषणे ❋ चालाइया दिल रथ राम-विद्यमाने
अतिकाय बले, शुन जगत्-गोसाँइ ❋ मम प्रति केन तव दया हय नाइ
अतिकाय बले, शुन देव-नारायण ❋ स्थान दिओ श्रीचरणे, एइ निवेदन८९
स्तव शुनि स्तब्ध हये कन गदाधर ❋ परम धार्मिक तुमि लंकार भितर
तुमि आर तोमार पितृव्य विभीषण ❋ दुइजने राज्य दिब मारिया रावण
अतिकाय बले, राज्ये नाहि प्रयोजन ❋ युद्ध करि कलेवर करिब पातन
एखन ओ-पदे करि एइ निवेदन ❋ आमार सहित युद्ध दिबे कोन जन
वानरेर संगे आमि ना करिब रण ❋ पशुजाति युद्धेर कि जाने कपिगण
वानरेर सम्भावना वृक्ष ओ प्रस्तर ❋ कटाक्षे मारिते पारि सकल वानर
सुग्रीव-राजारे देखि वकेर समान ❋ लक्ष्मण बालक, रणे कि जाने सन्धान
जोड़ हाते बले वीर, शुनह श्रीराम ❋ तोमार सहित आमि करिब संग्राम९०

जिस समय विभीषण ने रघुवर से ये सारी बातें बताईं उसी समय अतिकाय ने रणक्षेत्र में प्रवेश किया। सामने विभीषण को निरख कर उनको प्रणाम कर अतिकाय कहने लगा, चाचा रातोंदिन तुम देव गदाधर की सेवा करते हो, तुम्हारे समान बड़भागी दूसरा कौन होगा। नारायण तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं। अतिकाय ने कहा, चाचा, तुमसे निवेदन करता हूँ कि देव-गदाधर मुझ पर कृपा करें। अपने चाचा विभीषण से इतना कहकर अतिकाय अपना रथ राम के सम्मुख ले गया। अतिकाय ने कहा, संसार के स्वामी सुनो, मेरे प्रति तुम कृपा क्यों नहीं करते हो। हे देव-नारायण तुमसे इतना ही निवेदन है कि अपने श्रीचरणों में स्थान देना॥ ८९॥

स्तवन सुनकर गदाधर (राम) स्तब्ध हो गये, फिर बोले, लंका के भीतर तुम परम धार्मिक हो। तुम और तुम्हारे पितृव्य को मैं रावण का वध कर राज्य दूँगा। अतिकाय ने कहा, मुझको राज्य की आवश्यकता नहीं, मैं युद्ध कर अपने शरीर को विनष्ट करूँगा। अब इन चरणों में मेरा निवेदन है कि मेरे साथ किस व्यक्ति को युद्ध करने दोगे। वानरों के साथ मैं युद्ध नहीं करूँगा—ये कपि पशुओं की जाति के हैं, भला इनको युद्ध करना भी आता है। बन्दरों के एक मात्र पेड़ और पत्थर (ही अस्त्र-शस्त्र) हैं। मैं बहुत ही आसानी से सारे वानरों को मार सकता हूँ। राजा सुग्रीव को भी मैं बगुले के समान देखता हूँ। लक्ष्मण भी बालक ही है—रण कौशल क्या जानता होगा? हाथ

धनुक पातिया जान ठाकुर लक्ष्मण ※ हासिया जिज्ञासा करे रावण-नन्दन
कत युद्ध करियाछ, वयःक्रम कत ※ आमार सहित युद्ध ना हय उचित
इन्द्र चन्द्र कुबेर आमारे करे भय ※ आमार सहित युद्ध उचित ना हय
कोपेते लक्ष्मण दिल धनुके टंकार ※ देखि अतिकाय-वीर लागे चमत्कार
अतिकाय वले, शुन ठाकुर लक्ष्मण ※वयसे छाओयाल तुमि, किवा जान रण९१
लक्ष्मण बलेन, तुइ जाति निशाचर ※ भाल-मन्द ना जानिस्, करिस् उत्तर
के कोथा देखेछे हेन, शुनेछे श्रवणे ※ वयस अधिक जार, सेइ रण जिने
आमारे छाओयाल बल, प्रवीण आपनि ※ प्राणे प्राणे जाओ यदि, तवे वीर जानि
आजिकारि युद्धे यदि तोरे नाहि मारि ※ तवे त लक्ष्मण-नाम वृथा आमि धरि
एत यदि दु'जने वचने हैल कक्षा ※ दुइजने वाण मारे, जार यत शिक्षा
अतिकाय वले, शुन ठाकुर लक्ष्मण ※ तोमाते आमाते युद्ध करिव दु'जन
संग्रामेर दोष-गुण काहार केमन ※ रामचन्द्र साक्षी, आर खुड़ा विभीषण
मध्यस्थ हइया दोंहे करुन विचार ※ जय-पराजय रणे कि हय काहार९२
अतिकाय-वचने लक्ष्मण दिल साय ※ महायुद्ध वाधिल लक्ष्मण-अतिकाय

जोड़ते हुए वीर (अतिकाय) ने कहा, हे श्रीराम सुनो, मैं तुम्हारे साथ युद्ध करूँगा ।। ९० ।।

धनुष में प्रत्यंचा चढ़ाकर लक्ष्मण आगे बढ़ आए। रावण-नन्दन ने हँस कर पूछा, तुम्हारी अवस्था कितनी है, कितने युद्धों में तुमने भाग लिया है। तुमको मेरे साथ युद्ध नहीं करना चाहिए। इन्द्र, चन्द्र, कुबेर आदि मुझसे डरते हैं—मेरे साथ युद्ध करना तुम्हारे लिए उचित नहीं होगा। यह सुनकर क्रोधित होकर लक्ष्मण ने धनुष में टंकार किया, उसे सुनकर वीर अतिकाय आश्चर्य करने लगा। अतिकाय ने कहा, हे देव लक्ष्मण, अवस्था से तुम लड़के हो, रण के बारे में भला तुम क्या जानते हो ।। ९१ ।।

लक्ष्मण ने कहा, तुम निशाचर जाति के हो। भला-बुरा बिना जाने बातें करते हो। किसने कब ऐसा देखा या सुना है कि अवस्था में अधिक होने वाला ही रण को जीतता रहा है। मुझको तुम बच्चा कहते हो और अपने को प्रवीण, यदि प्राण लेकर लौट जाओ तभी मैं तुमको वीर मानूँ। आज के युद्ध में यदि मैं तुमको नहीं मार सका तो बेकार ही मैं लक्ष्मण नाम धरता हूँ। जब दोनों में इतना वचन-युद्ध हो गया तो अपनी-अपनी शिक्षा के अनुसार दोनों बाण चलाने लगे। अतिकाय ने कहा, हे देव लक्ष्मण, तुममें-हममें संग्राम हो और संग्राम के दोष-गुण के सम्बन्ध में चाचा विभीषण और श्रीरामचन्द्र साक्षी बनकर, मध्यस्थ हो न्याय करें कि रण में किसकी जय या पराजय होती है ।। ९२ ।।

अतिकाय के प्रस्ताव में लक्ष्मण ने सम्मति दी। फिर लक्ष्मण और

अग्निबाण अतिकाय करे अवतार ※ लक्ष्मण वरुण-बाणे करिल संहार
दुइशत बाण तबे अतिकाय एड़े ※ अविलम्बे लक्ष्मण बाणेते काटि पाड़े
हस्ति-बाण एड़े अतिकाय महाबल ※ सिंह-बाणे लक्ष्मण करिल रसातल
मारिल पर्व्वत-बाण अतिकाय रोषे ※ लक्ष्मण पवन-बाणे उड़ान वातासे
अमर्त्य समर्थ बाण विकट-दशन ※ इन्द्रजाल विष्णुजाल घोर-दरशन
एइसब बाण दोंहे करे अवतार ※ दशदिक् जल-स्थल बाणे अन्धकार
दुइजने बाण मारे अति परिपाटि ※ अन्तरीक्षे दुइ बाण करे काटाकाटि
लक्ष्मण मारेन बाण दिया बाहुनाड़ा ※ अतिकाय-रथेर काटेन शत-घोड़ा
आर बाण एड़ेन लक्ष्मण महावीर ※ काटिलेन तार पञ्च-सारथिर शिर
युद्ध करे अतिकाय हइया विरथी ※ चक्षुर निमिषे रथ योगाय सारथि
रथ पेये अतिकाय लाफ दिया चड़े ※ तिनकोटि बाण लक्ष्मणेर प्रति एड़े
से बाण लक्ष्मण सब काटे अवहेले ※ स्वर्गेते देवता सब साधु-साधु बले
लक्ष्मण एड़ेन बाण नामेते अक्षय ※ शानाते ठेकिया बाण पाइल पराजय९३
शानाय ठेकिया बाण ना करे प्रवेश ※ लक्ष्मणेर काने वायु कहे उपदेश
अक्षय कवच आछे अंगेते उहार ※ अंगे प्रहारिते बाण शक्ति आछे कार

अतिकाय में महायुद्ध छिड़ गया। अतिकाय ने अग्निबाण छोड़ा तो लक्ष्मण ने वरुण बाण से उसका सामना किया। तब अतिकाय ने दो सौ बाण फेंके और लक्ष्मण ने अपने बाणों से उनको काट गिराया। महाबली अतिकाय ने हस्ति-बाण फेंका तो लक्ष्मण ने सिंह बाण से उसे मार गिराया। अतिकाय ने रोष से पर्वत-बाण फेका तो लक्ष्मण का पवन-बाण उसको उड़ा ले गया। अमर्त्य, समर्थ नामक विकट-दर्शन बाण और घनघोर इन्द्रजाल और विष्णुजाल नामक बाण दोनों चलाने लगे। जल-स्थल सहित दशों दिशाएँ बाणों से ढककर अन्धकारमयी हो गयीं। दोनों चुन-चुन कर बाण फेंकने लगे और अन्तरिक्ष में दोनों के बाण एक दूसरे को काटने लगे। तब हाथ झटकारते हुए लक्ष्मण ने बाण फेंका और अतिकाय ने रथ के सौ घोड़ों को मार डाला। फिर महावीर लक्ष्मण ने दूसरा बाण फेंका और उसके पाँच सारथियों के सिर काट डाले। जब रथ शून्य होकर अतिकाय लड़ने लगा तो सारथी ने क्षण भर में रथ ला दिया। रथ पाते ही अतिकाय कूद कर रथ पर चढ़ गया और लक्ष्मण के ऊपर तीन करोड़ बाण फेंके। उन बाणों को लक्ष्मण ने सहज ही काटकर गिरा दिया तो स्वर्ग से सभी देवता साधु-साधु कहने लगे। लक्ष्मण ने अक्षय नामक बाण फेंका जो कि कवच से टकराकर व्यर्थ गया ॥ ९३ ॥

जब कवच से टकराकर बाण अन्दर प्रवेश नहीं कर सका तो पवन ने आकर लक्ष्मण के कानों में यह उपदेश किया कि उसके अंग पर अक्षय कवच

सहजेते ना मरिबे रावण-कुमार ※ ब्रह्म-अस्त्र मारि ओरे करह संहार
उपदेशे कहिया पवन-देव नड़े ※ मंत्र पड़ि लक्ष्मण-वीर ब्रह्म-अस्त्र जोड़े
लक्ष्मण एड़िल बाण पूरिया सन्धान ※ बाण देखि अतिकायेर उड़िल पराण
मारे जाठि झकड़ा से अस्त्र काटिवारे ※ तबु अतिकाय ताहा फिराइते नारे
अजय अक्षय बाण केवा धरे टान ※ अतिकाय-माथा काटि कैल दुइखान
अतिकाय पड़िल, राक्षस-भागे डरे ※ धाइया वानरगण राक्षसेरे मारे
पलाय राक्षसगण गणिया प्रमाद ※ 'राम-जय'-शब्दे कपि छाड़े सिंहनाद
समुकुट मुण्ड पड़े सहित-कुण्डले ※ अतिकाय-मुण्ड गड़ागड़ि भूमितले
भूमिते पड़िया मुण्ड 'राम राम' बले ※ प्रेमानन्दे विभीषण भासे अश्रुजले
धन्य धन्य पुत्र, तुमि निशाचर कुले ※ तिनकुल मुक्त हवे तव पुण्यफले
हेन भक्त ना देखि ना शुनि कोनकाले ※ काटामुण्ड एइरूपे 'राम राम' वले
बानरेते 'राम-जय' शब्द करे मुखे ※ वज्राघात पड़े येन रावणेर बुके
अतिकाय पड़े यदि संग्राम-भितरे ※ दूत जाय समाचार दिते लंकाश्वरे९४

अतिकायादि चारिपुत्रेर मृत्यु शुनिया रावणेर रोदन

भग्नदूत गिया तबे दशानन-पाशे ※ निवेदन करितेछे गदगद-भाषे

है—ऐसा कौन सा वाण है जिसमें उसका अंग-भेद करने की शक्ति है। रावण-कुमार आसानी से नहीं मरेगा। ब्रह्म-अस्त्र मारकर उसका संहार करो। यह उपदेश देकर पवन-देव वहाँ से खिसक गये। तब वीर लक्ष्मण ने मंत्र पढ़कर ब्रह्मास्त्र को धनुष पर रखा। बाण देखकर अतिकाय के प्राण सूख गये। उसने जाठि-झकड़ा आदि फेंककर उस अस्त्र को काटना चाहा लेकिन फिर भी उसका निवारण नहीं कर सका। अजेय अक्षय वाण का कौन रोध कर सका है, उसने अतिकाय के सिर को काट कर फेंक दिया। अतिकाय गिर गया यह देखकर राक्षस भागने लगे तो वानर दौड़-दौड़ कर उनको मारने लगे। विपत्ति जानकर राक्षस भागने लगे तो कपि 'राम-जय' कहकर सिंहनाद करने लगे। मुकुट और कुंडल के साथ जब अतिकाय का मुंड धरती पर गिरा तो वह गिरा हुआ मुंड 'राम-राम' शब्द करने लगा। प्रेमानन्द से विभीषण आँसुओं से भीग गया। कहने लगा, हे पुत्र ! तुम धन्य हो, निशाचर कुल में तुम धन्य हो। तुम्हारे पुण्य के कारण तुम्हारे तीन कुल तर जाएँगे। ऐसा भक्त आज तक न देखा है और न सुना ही है कि कटामुंड इस प्रकार 'राम-राम' का शब्द करता हो। वानर 'राम-जय' की ध्वनि करने लगे तो रावण के वक्ष पर मानों गाज गिरने लगी। संग्राम में अतिकाय गिरा तो दूत लंकेश्वर को समाचार देने चल पड़ा ॥ ९४ ॥

अतिकाय आदि चार पुत्रों की मृत्यु के समाचार पर रावण का रुदन

भग्नदूत दशानन के निकट पहुँचकर शोकाकुल स्वर में निवेदन करने

महाराज, चारिजन तनय तोमार ※ रणे गियाछिल दुइजन भ्राता आर
तार मध्ये पञ्चजने वानरे वधिल ※ अतिकाय लक्ष्मणेर बाणेते मरिल९५
दूतमुखे हेनवाणी करिया श्रवण ※ किछुकाल स्तब्ध ह'ये रहे दशानन
मुहूर्त्तेक परे पुनः पाइया चेतन ※ कि कहिले बलिया करये जिज्ञासन
पुनर्व्वार दूत कैल सब निवेदन ※ ताहा शुनि मूर्च्छित हइल दशानन
किछुकाल परे पुनः संवित् पाइया ※ सुदीर्घ निश्वास छाड़े हुंकार करिया
हइयाछे अतिशय शोकेते मगन ※ ना पारये करिवारे धैरय धारण
विंशति-नयने घन अश्रुधारा वय ※ मुक्तकण्ठ हय राजा क्रन्दन करय
कोथा गेल महोदर भाइ महापाश ※ कोथा गेल चारिपुत्र करिया उदास
पितृश्राद्ध करे पुत्र, सर्व्वकाले शुनि ※ पुत्रश्राद्ध करे पिता, ए अद्भुत गणि९६
कि हइल हाय हाय, दुःख नाहि सहा जाय, आर देहे प्राण नाहि रहे ।
शोकानल विपरीत, ह'ये अति प्रज्वलित, निरवधि प्राण-मन दहे ॥
पुड़ि मरितेछि एके, कुम्भकर्ण-भ्रातृशोके, क्षणकाल स्थिर नहे मन ।
तदुपरि आर बार, एइ वज्र सम्प्रहार, कि करिया धरिब जीवन ॥
ओरे अतिकाय पुत्र, सकल गुणेर पात्र, कोन स्थाने करिलि गमन ।
ना देखि तोमार मुख, विदरे आमार बुक, धैर्य्य नाहि धरे मोर मन ॥

लगा, महाराज, आपके चारों तनय और दो भ्राता युद्ध करने गये थे, उनमें से वानरों ने पाँच का वध किया और लक्ष्मण के बाणों से अतिकाय की मृत्यु हुई ॥ ९५ ॥

दूत के मुँह ऐसा सन्देश सुनकर कुछ देर के लिए दशानन स्तब्ध हो गया। क्षणभर के उपरान्त सचेतन होकर उसने पूछा, तुमने क्या कहा, फिर से बताओ। दूत ने फिर से सारी बातें बताईं, सुनते ही दशानन मूर्च्छित हो गया। कुछ देर के बाद होश में आकर उसने हुंकार करते हुए लम्बी-लम्बी साँस ली। वह इतना शोकमग्न हो गया था कि धैर्य धारण नहीं कर पा रहा था। उसकी बीसों आँखों से आँसू निकलने लगे और राजा खुल कर जोर-जोर से रोने लगा। हाय मेरे भाई महोदर और महापाश तुम कहाँ चले गये। मेरे चारों पुत्रों तुम मुझको उदास कर कहाँ चले गये। चिरकाल से सुना जाता है कि पुत्र ही पिता का श्राद्ध करता है, यह कैसी अद्भुत बात है कि मुझे पिता होकर पुत्र का श्राद्ध करना पड़ रहा है ॥ ९६ ॥

हाय हाय ! यह क्या हो गया, यह दुःख तो अब सहा नहीं जाता। इस शरीर में अब प्राण रहना ही नहीं चाहते। शोकानल प्रज्वलित होकर देह और मन को जला रहा है। एक तो भाई कुम्भकर्ण के शोक से जला जा रहा हूँ, मेरा मन क्षणभर के लिए भी स्थिर नहीं है, तिस पर बार-बार यह वज्र का प्रहार हो रहा है; यह जीवन मैं कब तक रख सकूँगा ? हे पुत्र अतिकाय,

तोमा-विना घर-द्वार, सब हैल अन्धकार, शून्य देखि ए तिन भुवन ।
अन्ध हैल सब नेत्र, ज्वलितेछे मोर गात्र, हृदय ह'तेछे उचाटन ।।
ओरे ओरे बाछा मोर, ना देखिब आर तोर, सुधांशु समान से बदन ।
आर तोरे निज क्रोड़े, ना बसाब धरि करे, ना शुनिब से मिष्ट-वचन ।।
के कहिबे मोरे आर, हितकथा शास्त्र-सार, के करिबे विपदे मोचन ।
के करिबे शत्रु-जय, के तुषिबे बन्धुचय, सम्मानिबे केबा मान्यजन ।।
औरे बाप देवान्तक, त्रिशिरा ओ नरान्तक, भ्राता महापाश महोदर ।
तोरा सबे छाड़ि मोरे, गेलि कोन देशान्तरे, ना देखिया पोड़ये अन्तर ।।
यदि गेलि तोरा सबे, जीवने कि कार्य तबे, मरिब डुबिया रत्नाकरे ।
एकमात्र रहि गेल, हृदयेते खेद-शेल, जिनिते नारिनु रघुवरे ।। ९७

इन्द्रजित्-कर्तृक रावणेर सान्त्वना

एइरूपे क्रन्दन करये दशानन ※ कोनमते स्थिर नाहि हय एकक्षण
राजार क्रन्दन शुनि, काँदे सर्व्वजना ※ केह ना करिते पारे काहारे सान्त्वना
तबे इन्द्रजित् निज क्रन्दन संवरि ※ कहितेछे दशानने अहंकार करि

तुम सारे गुणों के निधि थे, तुम कहाँ चले गये ? तुम्हारा मुख देखे विना मेरा हृदय खंड-खंड हो रहा है और मैं धीरज नहीं धर पा रहा हूँ। तुम्हारे बिना घर-द्वार सब कुछ अन्धकारमय हो गया—तीनों भुवनों को सूना देख रहा हूँ। मेरे सारे नेत्र अन्धे हो गये, मेरा वदन तप रहा है और दिल उदास हो रहा। अरे मेरे बेटे, तेरा चाँद सा मुखड़ा मैं फिर न देख सकूँगा, तुझको फिर कभी अपनी गोद में बिठाकर तेरी मीठी-मीठी बातें नहीं सुन सकूँगा। कौन मुझको फिर से शास्त्र-सम्मत हितकारी बातें सुनाया करेगा और विपत्तियों से मुक्त करेगा। अब कौन शत्रु-जय करेगा, मित्रों का तोषण करेगा और सम्मानित व्यक्तियों का सम्मान करेगा ? अरे बेटे देवान्तक, नरान्तक और त्रिशिरा, भाई महापाश और महोदर, तुम सब मुझको छोड़कर किस देश को प्रस्थान कर गये। तुमको बिना देखे मेरा अन्तर (हृदय) दग्ध होता जा रहा है। यदि तुम सबही चले गये तो मेरे जीवन से क्या लाभ, मैं सागर में डूब कर प्राण दे दूँगा पर इतना ही खेद रह जायगा कि रघुवर को मैं जीत नहीं सका ।। ९७ ।।

इन्द्रजीत द्वारा रावण को सान्त्वना

इस प्रकार दशानन निरन्तर क्रन्दन करने लगा और क्षणभर भी स्थिर न रह सका। राजा को रोते देखकर सभी रोने लगे और कोई किसी को ढारस न बँधा सका। तब इन्द्रजीत ने अपना रुदन रोककर अहंकार करते हुए दशानन से कहा, मेरे रहते हुए किसी दूसरे को क्यों भेज रहे हो। आज्ञा दो,

आमि विद्यमाने केन प्रेर अन्यजने ❋ आज्ञा कर, मेरे आसि श्रीराम-लक्ष्मणे
अनुग्रह करि मोरे देह पदधूलि ❋ रामसैन्य मारिवारे एइ आमि चलि
अंगद सुग्रीव आर वीर हनूमान ❋ बड़-बड़ वानरेर लइब पराण
नल-नील-सुषेणे मारिब अवहेले ❋ जाम्बवान डुबाइब सागरेर जले
सुग्रीवेर श्वशुर सुषेण बेटा बुड़ा ❋ गदाघाते करिब ताहार मुण्ड गुँड़ा
केशरी-वानर बेटा घरपोड़ार बाप ❋ यमालये पाठाइब करि वीरदाप
मारिब शरभ-आदि यत कपिगणे ❋ बधिब लंकार शत्रु खुड़ा विभीषणे
यत बेटा लंका आसि करेछे प्रवेश ❋ बाहुड़िया एकजन ना जाइबे देश१९८

इन्द्रजितेर द्वितीयबार युद्धे गमनोद्योग

मेघनाद-कथा शुनि रावण हर्षित ❋ कोले करि मेघनादे कहिछे त्वरित
लंका-अधिपति तुमि पुत्र मेघनाद ❋ मारिया वानर-नर घुचाओ प्रमाद
भुञ्जिते लंकार भोग आमि दशानन ❋ विपक्ष नाशिते पुत्र रयेछे एखन
चारिपुत्र-शोके हेरि रावणे चिन्तित ❋ जोड़हाते पितृ-आगे कहे इन्द्रजित्
लंका-अधिपति तुमि, भुवनेर राजा ❋ इन्द्र-आदि देवता तोमार करे पूजा
किसेर संग्राम नर-वानरेर सने ❋ एखनि बाँधिया आनि श्रीराम-लक्ष्मणे१९९

मैं श्रीराम और लक्ष्मण को मार आऊँ। कृपया अपने चरणों की धूल दो, मैं राम-सेना का संहार करने चलता हूँ। अंगद, सुग्रीव और वीर हनुमान जैसे बड़े-बड़े वानरों का प्राण मैं ले लूँगा। नल-नील-सुषेण को मैं अनायास ही मार डालूँगा। और जाम्बवान को समुद्र के पानी में डुबो मारूँगा। सुग्रीव के श्वसुर बूढ़े सुषेण का मुंड मैं गदा से चकनाचूर कर डालूँगा। केशरी वानर जो कि गृहदाह करने वाले वानर हनुमान का बाप है उसको मैं पदाघात से यमालय भेज दूँगा। शरभ आदि सारे कपियों को मैं मार डालूँगा और लंका के शत्रु चाचा विभीषण का भी मैं वध करूँगा। जितने नीच लंका में प्रवेश कर आए हैं, उनमें से एक भी लौट कर अपने देश नहीं जा सकेगा॥ १९८॥

इन्द्रजीत का दुबारा युद्ध में जाने का उद्योग

मेघनाद के वचन सुनकर रावण हर्षमग्न हुआ और उसको गोद में बिठा कर बोला, हे पुत्र मेघनाद तुम लंका के अधिपति हो। नर और वानरों को मार कर मेरा दुख दूर करो। लंका को भोगने के लिए मैं अकेला दशानन रहा। विपक्ष के नाश के लिए अब तुम रह गये। चार पुत्रों के शोक से रावण को व्याकुल देखकर इन्द्रजीत पिता के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और कहने लगा, तुम लंका के अधिपति हो और संसार के राजा हो। इन्द्र आदि देवता तुम्हारी पूजा करते रहते हैं। नर-वानर के साथ युद्ध भी

एतेक कहिल यदि रावण-नन्दन ※ युद्ध करिवारे आज्ञा दिल दशानन
राज-आभरण दिल देवेर वाञ्छित ※ संग्रामेते साजिल कुमार इन्द्रजित्
बापेर दुलाल सेइ पुत्र मेघनाद ※ सर्व्वांग भरिया परे राजार प्रसाद
अंगूले अंगुरी परे, बाहुते कंकण ※ सर्व्वांग भूषित करे राज-आभरण
वीर-परिधान परे नेतेर जे फालि ※ तिनशत फेर दिया बान्धिल काँकालि
सर्व्वांगे लेपन करे चन्दनेर सार ※ गलार उपरे तुलि दिल रत्नहार
स्वर्ण-नवगुण परे, परे स्वर्णपाटा ※ भुवन जिनिया छटा कपालेर फोंटा
सोनार दापनि परे अष्ट-अग वहि ※ एमन सुन्दर रूप त्रिभुवने नाहि
राज-आभरण परे देवेर वाञ्छित ※ संग्रामेते साजिल कुमार इन्द्रजित्
घन-घन सारथिरे करिछे मेलानि ※ शीघ्र कर रथसज्जा, डाकिछे आपनि
सारथि आनिल रथ संग्राम-कारण ※ मनोहर-वेशे रथ करिल साजन
करिलेक रथसज्जा रथेर सारथि ※ माणिक्य प्रवाल कत बसाइल तथि
कनक-रचित रथ मुक्तार सञ्चारे ※ चारिदिके स्वर्ण-वृक्ष फल-फूल धरे
चन्द्र-सूर्य-तेज जिनि रथेर किरण ※ प्रवाल-मुकुता कत रथेर साजन
पार्व्वतीय घोड़ा, गले रत्नेर बिम्बकि ※ तेइश अक्षौहिणी ठाट युद्धेर धानुकी

कौन सी बड़ी बात है, अभी जाकर श्रीराम और लक्ष्मण को बाँधकर लाता हूँ ॥ १६६ ॥

रावण-नन्दन मेघनाद ने जब इतना कहा तो राजा दशानन ने उसको युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी। देवताओं द्वारा वांछित राज-आभरण उसको दिया गया और कुमार इन्द्रजीत ने अपने को रण के लिए सुसज्जित किया। पिता के लाडले मेघनाद ने राजा से प्राप्त प्रसाद को धारण किया। अंगुलियों में अँगूठियाँ और बाहु में कंकण धारण कर राज-आभरण से सारे अंग को सजाया। उसने अपने शरीर पर वीरोचित नेत-वस्त्र धारण किया और कमर में तीन सौ लपेट (फेंट) बांधे। सारे शरीर पर चन्दन का प्रलेप चढ़ाकर गले में रत्नहार पहन लिया। नौ गुना स्वर्णालंकार पहनने के उपरान्त सुवर्ण-कवच भी पहन लिया। माथे पर तिलक की शोभा का क्या कहना है। आठों अंगों पर उसने सोने का दर्पण पहन लिया। ऐसा सुन्दर रूप त्रिभुवन में नहीं है। देव-वांछित आभरणों से सज्जित हो कुमार इन्द्रजीत रण के लिए तैयार हो गया। सारथी को बार-बार स्वयं बुला कर कहने लगा, तुरन्त रथसज्जा कर डालो। तब सारथी युद्ध के लिए मनोहर वेश में रथ को सुसज्जित कर आ पहुँचा। रथ पर कितने ही माणिक और मूंगे जड़े हुए थे। उस स्वर्ण-निर्मित रथ पर मोतियों की सजावट थी उसके चारों ओर फूल और फलों से सुशोभित स्वर्ण-वृक्ष थे। रथ में पार्वतीय घोड़ा जुता था जिसके गले में रत्न-निर्मित पदक लटक रहा था। युद्ध में तेईस अक्षौहिणी धनुषधारी सैनिक चले। उस सेना

कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी ❋ इन्द्रजितेर निज-वाद्य तिन-अक्षौहिणी
काड़ा पड़ा ढाक ढोल तबोल टिकारा ❋ तूरी भेरी जगझम्प वीणा सप्तस्वरा
काँशी बाँशी राक्षसी-ढाकेर परिपाटी ❋ दामामा-दगड़े पड़े लक्ष-लक्ष काठि
ढेमचा खेमचा बाजे, बाजे करताल ❋ ठमक खमक तासा शुनिते रसाल
बाजे शिङ्गा डमरु तम्बूरा जयढाक ❋ झाँझरि मोचङ्ग बाजे, मधुर पिनाक
शंख बाजे, घण्टा बाजे, मन्दिरा मृदंग ❋ रणशिङ्गा खञ्जनी ओ गभीर भोरंग
कोटि-कोटि जयढाक घोर-रवे बाजे ❋ कोटि-कोटि जगझम्प महाशब्दे गाजे
बेहाला मन्दिरा आर वीणा-आदि कत ❋ कहिते ना पारा जाय, तार संख्या यत
असंख्य सेतार बाजे, कोटि-कोटि डम्फ ❋ वाद्यभाण्ड-घोर-शब्दे त्रिभुवन-कम्प
तिनकोटि राक्षसेते बाजाय मादल ❋ प्रलयेर काले येन उठिल बादल२००
कटक साजाये वीर जुझिवारे नड़े ❋ मन्दोदरी जननी तखन मने पड़े
माये ना कहिया यदि युद्धे यात्रा करि ❋ अन्नजल त्यजिबेन माता मन्दोदरी
भक्तिभरे जननीरे प्रणाम करिये ❋ तबे जाब रणस्थले मातृ-आज्ञा लये
एत भावि इन्द्रजित् सभक्ति-अन्तरे ❋ मातार निकटे वीर चलिल सत्वरे
सैन्य-सेनापति यत द्वारेते राखिया ❋ जननीर अन्तःपुरे प्रवेशिल गिया

के पदचाप से पृथ्वी थर्राने लगी। इन्द्रजीत का निजी वाद्य-संभार (बाजों-गाजों का समूह) तीन अक्षौहिणी था। ढाक, ढोल, तबला, चिकारा, तुरही, सींगी, जगझम्प, सप्तस्वरा वीणा, झाँझ, बाँसुरी और धौंसा इन सबके समाहार का क्या कहना। नगाड़ों और डंकों पर लाख-लाख संटियाँ पड़ने लगीं। करताल और मंजीरे बजने लगे। ताशा की आवाज भी बड़ी मधुर लगने लगी। सींगी, डम्बरू, तम्बूरा और जयढाक; झाँझ, झाँझरी और मधुर तूती बजने लगे। शंख, घंटा, मन्दिरा, मृदंग, रणसींगी, खंजड़ी और गंभीर-नाद वाला भोरंग बजने लगा। करोड़ों जय-डंके महानाद से बजने लगे और करोड़ों जगझम्प महाशब्द से गरजने लगे। बेला, मन्दिरा, और वीणाओं की संख्या गिनती से परे है। असंख्य सितार और कोटि-कोटि डफ भी बजने लगे। वाद्यों के घनघोर शब्द से तीनों लोक थरथराने लगे। तीन करोड़ राक्षस इस प्रकार मादल बजाने लगे मानों प्रलय के समय बादल घिर आए हों ॥ २०० ॥

जब कटक सुसज्जित कर वीर मेघनाद युद्ध करने के लिए चल पड़ा तो उसे जननी मन्दोदरी याद आ गयी। उसने सोचा यदि मैं माँ से बिना कहे युद्ध के लिए प्रयाण करूँगा तो माता मन्दोदरी अन्नजल त्याग देंगी। मैं जननी को भक्ति से प्रणाम कर उनकी आज्ञा लेने के उपरान्त रणभूमि में जाऊँगा। इस प्रकार सोच कर वीर इन्द्रजीत भक्तिपूर्ण हृदय से माता के निकट गया। समस्त सेना और सेनापतियों को द्वार पर छोड़ कर वह

सुवर्णेर खाट-पाट, स्वर्णमयी पुरी ॐ से पुरीर तुल्य शोभा भुवने ना हेरि
दश-हाजार सतिनी-वेष्ठिता मन्दोदरी ॐ ताहार सुखेर सीमा कहिते ना पारि
नारायण-तैले ज्वले तिनलक्ष बाति ॐ मन्दोदरी पूजा करे महेश-पार्व्वती
झिउड़ी बहुड़ी आर कतशत नारी ॐ दश-हाजार सतिनी-सहित मन्दोदरी
न-हाजार नारी मेघनादेर गृहिणी ॐ दुइलक्ष आर यत पुत्रेर रमणी
आर यत रमणी लंकार एकत्तर ॐ शिव-दुर्गा पूजि मागे रण-जयवर२०१
हेनकाले इन्द्रजित् हलो उपनीत ॐ पूर्व्वाचल हैते येन आदित्य उदित
किरणे अरुण जेन, रूपे चन्द्रकला ॐ ताहारे देखिते यत स्त्रीलोकेर मेला
प्रणमिल मेघनाद मायेर चरणे ॐ मन्दोदरी पुलकित चाहि पुत्र पाने
आस्ते-व्यस्ते उठि राणी धरि दुइहाते ॐ लक्ष-लक्ष चुम्ब दिल मेघनाद-माथे
मन्दोदरी बले आमि, पूजि गंगाधरे ॐ सेइ पुण्यफले पुत्र, पेयेछि तोमारे
तोमा पुत्रे गर्भे धरि हइ पाटराणी ॐ चेड़ी ह'ये खाटे दस-हाजार सतिनी
श्रीराम मनुष्य नहे, बुझि अभिप्राय ॐ फिरे ना आइसे, रणे जेइ वीर जाय
परदार महापाप करे तोर बाप ॐ सेइ अपराधे पाइ एत मनस्ताप

जननी के अन्तःपुर में गया। सुवर्ण का बना अन्तःपुर जिसकी शोभा की तुलना संसार में नहीं है। वहाँ के पलंग आदि सभी वस्तुएँ स्वर्ण की बनी हुई हैं। दस हजार सौतों से घिरी मन्दोदरी के सुख की कोई सीमा नहीं। वहाँ तीन लाख बत्तियों में नारायण-तैल जल रहा है और मन्दोदरी महेश-पार्वती की पूजा कर रही है। दस हजार सौतों के अतिरिक्त सैकड़ों बहू-बेटियाँ और अन्य नारियाँ भी हैं। नौ हजार नारियाँ तो मेघनाद की गृहिणियाँ हैं और बाकी दो लाख नारियाँ अन्यान्य पुत्रों की पत्नियाँ हैं। लंका की और सारी रमणियाँ एकत्र होकर शिव-दुर्गा की पूजा कर युद्ध-विजय का वरदान माँग रही हैं ॥ २०१ ॥

ऐसे ही समय इन्द्रजीत वहाँ आ उपस्थित हुआ मानों पूर्वाचल से आदित्य का उदय हुआ। उसकी शोभा अरुण-किरण जैसी है और उसका चन्द्रकला जैसा सौन्दर्य निरखने के लिए नारियों का मेला लग गया। मेघनाद ने माता के चरणों में प्रणाम किया। मन्दोदरी ने पुलकित नेत्रों से पुत्र की ओर देखा। अस्त-व्यस्त हो रानी ने उसे बाहों में भर लिया और मेघनाद के माथे पर लाख-लाख चुम्बन किया। मन्दोदरी ने कहा, हे पुत्र मैं गंगाधर शंकर की पूजा करती हूँ और उसी पुण्य के कारण मुझे तुम जैसा पुत्र प्राप्त हुआ है। तुमको गर्भ में धारण करते ही मैं पटरानी बनी और दस हजार सौतें मेरी दासी बनकर सेवा करने लगीं। मैं यह समझती हूँ कि श्रीराम कोई मनुष्य नहीं हैं—जो भी युद्ध में जाता है लौट कर नहीं आता। तेरे बाप ने पराई स्त्री को ग्रहण कर महापाप किया है और उसी अपराध के कारण उसे इतना मनोकष्ट

रामेर सीता रामे देह, करह पिरीति ※ मजिल कनक-लंका नाहि अव्याहति
वानरे पोड़ाये लंका कैल छारखार ※ श्रीराम मनुष्य नहे, विष्णु-अवतार
विभीषण खुड़ा तव गुणेर सागर ※ तारे लाथि मारे राजा सभार भितर
आनिला रामेर सीता करिया हरण ※ अन्यके रणेते केन पाठाय एखन
तोमारे कपाट दिया राखिब गृहेते ※ नर-वानरेर युद्धे ना दिब जाइते
सीता फिरे दिन राजा, शुनून मन्त्रणा ※ आजि हैते युद्ध नाइ, करह घोषणा२
मन्दोदरी-कथा शुनि मेघनाद हासे ※ मायेरे प्रबोध देय अशेष-विशेषे
जगतेर कर्ता माता, हय मोर बाप ※ अष्टलोकपाले जिनि दुर्ज्जय-प्रताप
एतेक वैभव भोग कर कार तेजे ※ हेनजने निन्दा कर स्त्रीगण-समाजे
वामाजाति हओ तुमि, तेमति वचन ※ स्वामिनिन्दा महापाप कर कि कारण
अतुल ऐश्वर्य भोग करेन इन्द्राणी ※ शची जिने शत गुणे तुमि ठाकुराणी
स्वर्ग-मर्त्य-पातालेते यत देवगण ※ परदार नाहि करे कोन महाजन
सुरपति इन्द्र देख देवतार सार ※ गुरुपत्नी-हरणे कि हैल देख तार
गौतमेर शिष्य ह'ये इन्द्र देवराज ※ करिल कुत्सित कर्म, ना भाविल लाज

मिल रहा है। तुम राम की सीता को दे दो और उनसे मित्रता कर लो। कनक-लंका नष्ट-भ्रष्ट हो रही है, इसे बचाने का कोई उपाय नहीं। बन्दरों ने सोने की लंका को जलाकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। श्रीराम कोई मनुष्य नहीं है, वह विष्णु का अवतार हैं। तुम्हारे चाचा विभीषण गुणों की निधि हैं, उनको राजा ने भरी-सभा में पदाघात किया। स्वयं तो राम की सीता को हर लाया, अब दूसरों को क्यों रण में भेजने लगा। तुमको किवाड़ बन्द कर घर में रखूँगी—नर-वानर के युद्ध में नहीं जाने दूँगी। राजा सीता को लौटा दें—यह परामर्श सुनें। यह घोषणा कर दो कि आज से कोई युद्ध नहीं रहा ॥ २०२ ॥

मन्दोदरी के ये वचन सुनकर मेघनाद हँसने लगा और माता को विभिन्न प्रकार से समझाने-बुझाने लगा। हे मा, मेरे पिता संसार के प्रभु हैं, वे अष्ट-लोकपालों को हरा कर दुर्जय-प्रतापी बन गये हैं। किसके रोब-दाब के कारण तुम इतने वैभव को भोग रही हो। ऐसे व्यक्ति की निन्दा तुम नारियों के समाज में कर रही हो। तुम नारी जाति की हो इस कारण तुम्हारे वाक्य भी वैसे ही हैं। पतिनिन्दा महापाप है—क्यों ऐसा कर रही हो? इन्द्राणी अतुल ऐश्वर्य का भोग करती है। तुम उस शचीदेवी (इन्द्राणी) से सौ गुना अधिक अधिकार-सम्पन्न हो। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल में जितने देवता हैं उनमें कौन ऐसा है जिसने पराई स्त्री को न रखा हो। देवताओं में श्रेष्ठ सुरपति इन्द्र को ही देख लो न—उसने गुरुपत्नी का हरण क्यों कर किया? गौतम का शिष्य होकर भी देवराज इन्द्र को ऐसा कुत्सित कार्य करते लाज न आई।

सबे बले, देवराज देवेर उत्तम ※ जाहार कारणे नारी त्यजिला गौतम
ब्राह्मणेर राजा चन्द्र जगते बाखानि ※ चन्द्र केन हरिलेन गुरुर गृहिणी
पड़िवारे गेल बृहस्पतिर आलय ※ तथा हरे गुरुपत्नी, मिथ्या ताहा नय
तबु चन्द्र-रूपेते जगत् आलो करे ※ पुरुषे एमन पाप केवा नाहि करे
जगतेर श्रेष्ठ एक देवता पवन ※ सेओ करेछिल देख वानरी गमन
कोन जन नाहि करे हेन कदाचार ※ मिछे केन देह दोष पिताके आमार
राम से मनुष्यजाति, नहे त गर्व्वित ※ आनिल ताहार नारी, किवा अनुचित
खर-दूषण मारि राम हइयाछे बैरी ※ भाल करिलेन पिता आनि तार नारी३
एत कथा माये यदि दिल पातियान ※ दुइलक्ष राण्डी तवे दिलेक योगानि
कहिछे सकल राण्डी करि जोड़हात ※ निवेदन करि, शुन राक्षसेर नाथ
युद्ध करि मरिल मोदेर स्वामिगण ※ शोकेते आकुल मोरा तादेर कारण
गगने जखन हय द्विप्रहर बेला ※ पड़े जाय राण्डीदेर हविष्येर मेला
लंकापुरे घरे-घरे ज्वलये तियड़ि ※ कहिते विदरे बुक, नित्य फेलि हाँड़ि
न-हाजार नारी तव परम सुन्दरी ※ करुक तोमार सेवा यत वहुयारी
सकलेरे तुष्ट राखि जाह रणस्थले ※ नर ओ वानर जिनि आइस कुशले

सब लोग कहते हैं कि देवताओं में सर्वोत्तम देवराज इन्द्र हैं जिनके कारण गौतम को अपनी नारी को त्यागना पड़ा। संसार में प्रसिद्ध है कि चन्द्र ब्राह्मणों का राजा है—उसने क्यों अपने गुरु की पत्नी का हरण किया। बृहस्पति के घर वह पाठाभ्यास के निमित्त गया और अपनी गुरुपत्नी का हरण कर लाया—यह कोई झूठी बात नहीं। फिर भी वह चन्द्र के रूप में संसार भर को प्रकाश देता है। पुरुषों में कौन है जो ऐसा पाप नहीं करता। संसार में श्रेष्ठ माना जाने वाला पवन भी वानरी-गमन कर चुका है। कौन ऐसा है जो इस प्रकार का दुराचार नहीं करता? फिर नाहक क्यों मेरे पिता को दोषी बनाती हो। राम तो मनुष्य जाति का है कोई पूज्य भी नहीं, तो उसकी नारी लाकर पिता ने कौन सा अनुचित कार्य किया। खर-दूषण का वध कर राम हमारा वैरी बन गया। उनकी नारी लाकर पिता ने अच्छा ही काम किया है ॥ २०३ ॥

इतनी बातों से जब उसने माँ के मन को समझाया तो दो लाख विधवाओं ने कहना शुरु कर दिया। सभी विधवाओं ने हाथ जोड़ कर कहा, हे राक्षसों के नाथ, हम लोगों का निवेदन सुनो, हमारे पतियों ने युद्ध कर प्राण दिये, उनके कारण हम शोकाकुल हैं। जब दिन में दोपहर हो जाता है तो सारी विधवाएँ हविष्य-अन्न पकाने बैठ जाती हैं। लंकानगरी के घर-घर में चूल्हा जलने लगता है—कहने में दिल फटा जाता है कि हम लोग नित-प्रतिदिन अपनी हाँड़ी फेंक देती हैं। तुम्हारी नौ हजार सुन्दरी नारियाँ हैं वे तुम्हारी जी भर कर सेवा करें। सभी को सन्तुष्ट कर तुम रणभूमि में जाओ और

शुभयोगे याता कैले नाहि पराजय ※ संसारेते केह येन राण्डी नाहि हय
राण्डीर असाध्य कर्म्म नाहि त्रिभुवने ※ आकाशे पातये फाँद स्वभावेर गुणे
बुझिया देखह मने राक्षसेर पति ※ एक राँड़े मजाइल लंकार बसति
शूर्पणखा राण्डी देख हय तव पिसी ※ राक्षसी हइया से मानुषे अभिलाषी
वयसेर संख्या नाहि, पाकाइल केश ※ रामेरे भुलाते धरे मनोहर वेश
राण्डीर असाध्य कर्म्म नाहिक संसारे ※ संग्रामेते जाह बाछा, शुभयात्रा क'रे
पड़िल रामेर युद्धे बड़-बड़ वीर ※ बन्धु-बान्धवेर शोके दहिछे शरीर
हर-पार्व्वतीर प्रियभक्त दशानन ※ केन आसि रक्षा नाहि करे दुइजन
उपकार कि करिल शंकर-पार्व्वती ※ शूर्पणखा मजाइल लंकार बसति
विलाप करिया कान्दे लक्ष-लक्ष नारी ※ श्रावणेर धारा-सम चक्षे बहे वारि४
राण्डीर रोदने इन्द्रजितेर विषाद ※ सबारे प्रबोध-वाक्ये कहे मेघनाद
ना कान्द ना कान्द सबे, परिहर शोक ※ तोमादेर पति सब गेछे स्वर्गलोक
श्रीराम-लक्षमणे रणे मारिया एखनि ※ निवाइब सकलेर मनेर आगुनि
एत बलि सकलेरे दिल पातियान ※ मन्दोदरी कहे तबे पुत्र-विद्यमान

नर-वानर पर विजय प्राप्त कर सकुशल लौट आओ। शुभ घड़ी में यात्रा करने पर पराजय नहीं होती। संसार में कोई कभी विधवा न हो। त्रिभुवन में विधवाओं द्वारा असाध्य कार्य कोई भी नहीं है, अपने स्वभाव के कारण वे आकाश में भी जाल बिछा देती हैं। हे राक्षसों के पति, तनिक मन में विचार कर देखो, एक विधवा ने ही लंका की सारी बस्ती को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। तुम्हारी बुआ शूर्पणखा विधवा थी—राक्षसी होकर भी उसने मनुष्य की कामना की। उसकी आयु का कोई ओर-छोर नहीं, केश पक चुके हैं फिर भी मनोहर वेश लेकर वह राम को फुसलाने गई थी। विधवाओं के लिए संसार में कोई भी कार्य असाध्य नहीं। जाओ बेटा, शुभयात्रा कर संग्राम में जाओ। राम के युद्ध में बड़े-बड़े वीर काम आ गये, उन इष्ट-मित्रों के शोक से सारा शरीर तप रहा है। दशानन शंकर-पार्वती का प्रिय भक्त है। वे दोनों आकर रक्षा क्यों नहीं करते? शंकर-पार्वती ने क्या भला किया? सूर्पणखा ने लंका की सारी आबादी को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इस प्रकार लाख-लाख नारियाँ विलाप करती हुई रोने लगीं। उनकी आँखों से सावन की वर्षा के समान आँसू झरने लगे॥ २०४॥

उन विधवाओं के रोने से इन्द्रजीत बड़ा विषादमग्न हो गया और सभी को प्रबोध-वाक्य से समझाने लगा। वह कहने लगा तुम लोग मत रोओ, मत रोओ, शोक मत करो, तुम लोगों के पति स्वर्गलोक गये हैं। श्रीराम-लक्ष्मण को मारकर अभी सभी लोगों के मन की आग शान्त करूँगा। इतना कहकर उसने सबके मन को ढाँढ़स बँधाया। तब मन्दोदरी ने पुत्र से कहा,

रूपे-गुणे वीर तुमि परम-सुन्दर ※ देव-दानवेर कन्या विवाह विस्तर
न-हाजार नारी तव परम-सुन्दरी ※ आजि सेवा करुक यतेक वहुयारी
राखह मायेर वाक्य हइया सुमति ※ अन्त:पुरे थाक बाछा, आजिकार राति
मन्दोदरी कथा कहे सकरुण-भाषे ※ वदन झाँपिया वस्त्रे इन्द्रजित् हासे
जुझिवारे पिता मोरे दिलेन आरति ※ केमने थाकिब गृहे, ना हय युकति
ससैन्येते आसियाछि जुझिवार मने ※ कोन लाजे गृहमाझे थाकिब एक्षणे
करिब कठिन यज्ञ नामे निकुम्भिला ※ इष्टदेव-अर्च्चने हइल एत वेला
यज्ञेते आहुति दिब गिया ये एखनि ※ छोँबार थाकुक काज, ना हेरि रमणी
यात्राकाले छुँले नारी पड़िबे प्रमाद ※ एत बलि बिदाय हइल मेघनाथ
भक्तिभरे जननीर चरण बन्दिया ※ यज्ञतरे इन्द्रजित् चलिल साजिया
कृत्तिवास-पण्डितेर मधुर वचन ※ लंकाकाण्डे गाहिलेन गीत रामायण५

इन्द्रजितेर निकुम्भिला-यज्ञानुष्ठान

बैसे गिया इन्द्रजित् यज्ञ करिवारे ※ योगाय यज्ञेर द्रव्य लक्ष-निशाचरे
रक्तवस्त्र भारे-भारे आनिछे तखन ※ रक्तवर्ण पुष्पमाल्य, सुरक्त-चन्दन
शरपत्र बोझा-बोझा, घृतेर कलस ※ कालोछाग पाले-पाले बहिछे राक्षस

तुम रूप-गुण में परम-सुन्दर और वीर हो, तुमने देव-दानवों की असंख्य कन्याओं से विवाह किया है। तुम्हारी नौ हजार परम सुन्दरी नारियाँ हैं—वे सब बहुएँ आज तुम्हारी सेवा करें, आज की रात तुम अन्त:पुर में रह जाओ। मन्दोदरी करुण भाषा में कहती रही और कपड़े से मुँह ढाँप कर इन्द्रजीत हँसता रहा। युद्ध करने के लिये पिता ने मेरी आरती उतारी है अब मैं किस युक्ति पर घर में रह सकता हूँ। अपनी सेना सहित युद्ध करने को निश्चय कर आया हूँ अब किस मुँह से गृह में रह सकता हूँ। अब मैं निकुम्भिला नामक कठिन यज्ञ करूँगा—इष्टदेव की अर्चना में इतना विलम्ब हो गया। अभी जाकर मैं यज्ञ में आहुति चढ़ाऊँगा, रमणी को छूना तो दरकिनार, दर्शन तक नहीं करूँगा। यात्रा के समय नारी को छूने से विपत्ति आ जायगी। इतना कहकर मेघनाद ने बिदा ली। भक्ति से जननी के चरणों की वन्दना कर इन्द्रजीत सुसज्जित हो यज्ञ के लिए चल पड़ा। पंडित कृत्तिवास के वचन बड़े मधुर हैं उन्होंने युद्धकांड में रामायण का गीत गाया ॥ ५ ॥

इन्द्रजीत का निकुम्भिला यज्ञानुष्ठान

इन्द्रजीत जाकर यज्ञ करने बैठा। एक लाख निशाचर यज्ञ के उपकरण जुटाने लग गये। उस समय तरह-तरह के रक्तवस्त्र, लाल पुष्पों की मालाएँ और रक्त चन्दन लाये जाने लगे। ढेर से सरकंडे के पत्ते और घी के घड़े

यज्ञशाले शरपत्र बिछाय सकल ❋ मन्त्र पड़ि यज्ञकुण्डे ज्वलिल अनल
तीक्ष्ण-अस्त्रे छागल छेदिल कोटि-कोटि❋ यज्ञेते आहुति देय अति परिपाटी
आतप-तण्डुल जब पाटि-पाटि आने ❋ हविते मिलित करि दितेछे आगुने
रक्तवस्त्र-माल्य देय जोबड़ाये घृते ❋ दश-हाजार ब्राह्मण बसेछे चारिभिते
अग्निर दुर्जय शब्द मेघेर गर्ज्जन ❋ विंशति-योजन शिखा उठिल गगन
तप्त-काञ्चनेर मत विपरीत शिखा ❋ मूर्त्तिमान हये अग्नि आसि दिल देखा
साक्षाते आसिया अग्नि हैल अधिष्ठान ❋ यवधान्य दुग्ध दधि मधु कैल पान
जे वर चाहिल इन्द्रजित्, पाइल सुखे ❋ मनेर आनन्दे कहे सैन्यगणे डेके २०६

इन्द्रजितेर द्वितीय बार युद्धे गमन

रथेर साजन वीर कैल दुइ-हाते ❋ लाफ दिया उठे गिया संग्रामेर रथे
चण्ड-मुण्ड छत्रदण्ड धरियाछे शिरे ❋ पूर्व्वद्वारे उपनीत मार-मार करे
पूर्व्वद्वार आगुलिया छिल नील-सेना ❋ भंग दिया पलाय वानर अगणना
उठे पड़े पलाय पाइया सबे डर ❋ मेघनाद हासे बसि रथेर उपर
वानरेर भंग देखि नीलवीर रोखे ❋ लाफ दिया गेल मेघनादेर सम्मुखे

लाये जाने लगे। राक्षस काले रंग के बकरे भी ढो ढो कर लाने लगे। यज्ञशाला में तृण के पत्ते बिछा दिये गये और मंत्र पढ़ कर यज्ञकुंड में आग जलाई गई। पैने अस्त्रों से करोड़ों बकरे काटे गये और यज्ञ में होम किये गये। पर्याप्त मात्रा में आतप-तंडुल लाकर घृत से मिश्रित कर आग में डाला जाने लगा। रक्तवस्त्र और माला घी में चुपड़ कर डाला जाने लगा। चारों ओर दश हजार ब्राह्मण बैठे। अग्नि का शब्द मेघ-गर्जन सा सुन पड़ने लगा और उसकी शिखा गगन में बीस योजन तक उठने लगी। तप्त-काँचन जैसी विपरीत शिखा दिखाई पड़ी और अग्नि ने साकार रूप धर कर दर्शन किया। अग्नि साक्षात् उपस्थित होकर अधिष्ठित हुए और जौ, धान, दूध, दही और मधु का पान करने लगे। इन्द्रजीत ने जो वर माँगा वह अनायास मिला। उसने यह समाचार सारी सेना को बुलाकर आनन्द से सुनाया॥ २०६ ॥

इन्द्रजीत का द्वितीय बार युद्ध-गमन

वीर मेघनाद ने दोनों हाथों से रथ को सुसज्जित किया और छलाँग मार कर युद्ध-रथ पर बैठ गया। सिर पर चंड-मुंड छत्र थामे हुए थे। मार-मार शब्द करते हुए वह पूर्वी द्वार पर जा धमका। नील की सेना पूर्वी द्वार को संभाले हुए थी। वहाँ से अनगिनत वानर डर के मारे भागने लग गये। यह देखकर मेघनाद रथ पर बैठा हँसने लगा। वानरों की भगदड़ देखकर नीलवीर क्रोधित हुआ और कूदकर मेघनाद के सम्मुख जाकर खड़ा हो गया। नीलवीर ने कहा, अरे मेघनाद, अब तू जीवित लौट जाने की अभिलाषा त्याग दे।

नीलवीर बले, ओरे बेटा मेघनाद ※ जीयन्ते फिरिया जावे, ना करह साध
सुग्रीव पाइल राज्य श्रीरामेर गुणे ※ रावणे वधिया राज्य दिव विभीषणे
अजेय सुग्रीव-राजा अतुलन-बल ※ गाछ-पाथरेते वान्धे सागरेर जल
दुकूल समुद्र बाँधि कैल एक कूल ※ राक्षस-कटक मारि करिल निर्म्मूल
जीवनेर बांछा यदि करिस् इन्द्रजित् ※ सबान्धवे लंका छाड़ि पला रे त्वरित
ये बेटा थाकिबे एइ लंकार भितर ※ पाठाइबे यमालये सुग्रीव-वानर२०७
इन्द्रजित् बले, बेटा, भ्रमितिस् वने ※ केन प्राण दिते एलि राक्षसेर बाणे
ना जान धरिते अस्त्र, कथार आँटुनि ※ एकबाणे यमालये पाठाब एखनि
सुग्रीव वानरा, तार किसेर बाखान ※ मानुष लक्ष्मण बेटा, जाने कत बाण
गोटा-कत राक्षस मारिया तोर राम ※ मनेते क'रेछे बुझि, जिनेछि संग्राम
सेइ दिन म'रे बेटा जेतो नागपाशे ※ भाग्यबले बेचे गेल गरुड़-निःश्वासे
पक्षी बेटा आसिया दिलेक प्राणदान ※धिक् रे वानरा,तार करिस् बाखान२०८
एत यदि कहिलेक रावणेर बेटा ※ नील-वानरेर बुके लागे येन जाठा
कहितेछे नीलवीर कोपेते विवर्ण ※ तुइ ना म'रे मरे तोर खुड़ा कुम्भकर्ण

श्रीराम के गुणों के कारण सुग्रीव को राज्य मिला। रावण का वध कर अब विभीषण को राज्य दूँगा। सुग्रीव राजा अजेय और अतुल बलशाली है, उसने वृक्ष और पत्थरों से समुद्र के दोनों तटों को बाँधकर एक कर दिया है—राक्षस-कटक का संहार कर उसको समूल समाप्त कर दिया है। अरे इन्द्रजीत, यदि तुझे जीवन की अभिलाषा है तो तू अपने इष्ट-मित्रों सहित झटपट लंका छोड़ कर भाग जा। इस लंका में जो कोई भी रह जायगा उसको वानर-राज सुग्रीव यमालय भिजवा देगा॥ २०७॥

इन्द्रजीत ने कहा, अरे अभागे, तू वन-वन में विचरा करता था, नाहक राक्षस के बाण से प्राण देने क्यों चला आया। हथियार पकड़ना तो आता नहीं बस बड़े बोल में कुशल है, मैं एक ही बाण से अभी तुझे यमालय भिजवा दूँगा। वानर सुग्रीव के गुणों को तू क्या बखान कर रहा है। भला उस मानव लक्ष्मण को भी कितने बाणों का पता है। चन्द राक्षसों को मार कर तेरे राम ने क्या समझ लिया है कि वह युद्ध जीत गया है। उस दिन वह तुच्छ राम नाग-पाश से अवश्य मर गया होता—भाग्य से गरुड के निश्वास के कारण जी गया। पक्षी ने आकर उसे प्राणदान दिया। अरे वानरा, तुझे धिक्कार है जो तू उसकी प्रशंसा कर रहा है॥ २०८॥

जब रावण के बेटे ने यह कहा तो नील-वानर के हृदय पर मानों शेल का आघात पहुँचा। क्रोध से विवर्ण होकर नीलवीर ने कहा, तू तो नहीं मरा लेकिन तेरा चाचा कुम्भकर्ण मर गया। जाति से तू निशाचर है अत: आगा-पीछा का तुझे कोई ज्ञान नहीं, तेरे रहते हुए तेरे सहोदर क्यों मर गये। जितने

आगु-पाछु ना जानिस, जाति निशाचर ※ तुइ थाकिते मरे केन तोर सहोदर
यतेक राक्षसगण आइल निकटे ※ ना जानि धरिते अस्त्र, हाते नाहि आँटे
नाहिक आहार-निद्रा, जागि सारारात ※ यावत् ना मारिब लंकार अधिपति
आजि तोरे मारिया मारिब तोर पिता ※ विभीषण-उपरे धराब दण्ड-छाता२०९

इन्द्रजितेरे युद्धे विभीषण ओ हनुमान व्यतीत सैन्यसह श्रीराम ओ लक्ष्मणेर मूर्च्छा

कुपिल से इन्द्रजित् नीलेर वचने ※ कोपे गालि पाड़े वीर, यत आसे मने
आजि यदि रहे बेटा, तोमार जीवन ※ तबे राजा करिस् राक्षस विभीषण
एत बलि मेघनाद मेघे हय लुकि ※ मेघ-आड़े थाकि युद्धे रावणि धानुकी
आकाशे थाकिया करे बाण-वरिषण ※ जर्ज्जर करिया बिन्धे यत कपिगण
खाण्डा ओ डांगस टाँगी छुरी एकधारा※ चारिभिते पड़े, येन आकाशेर तारा
नाना-अस्त्र कपिगणे करये प्रहार ※ सर्व्वांग बहिया पड़े रुधिरेर धार
हस्त-पद काटे, कपि पड़े कोटि-कोटि ※ गड़ागड़ि जाय भूमे कामड़ाय माटि
पलाइया जाय केह मने भावि अन्त ※ छुता करि पड़े केह सिट किया दन्त
केह पड़े सेतुबन्धे गाये माखि बालि ※ दूरे गिया केह वा राजारे पाड़े गालि
भाल छिल बालिराज गुणेर सागर ※ आपनार पुत्र-सम पालिल वानर

राक्षस निकट आए, अस्त्र न पकड़ते हुए भी हाथों से उनका विनाश किया। जब तक हमलोग लंका के अधिपति को मार नहीं गिरायेंगे तब तक के लिए हमलोगों ने आहार निद्रा छोड़ रखा है। आज तुझको मार कर फिर तेरे पिता को मारूँगा और विभीषण पर राजछत्र सुशोभित करूँगा ॥ २०९ ॥

इन्द्रजीत के युद्ध में विभीषण और हनुमान के सिवा सारी सेना-
सहित श्रीराम और लक्ष्मण की मूर्च्छा

नील के वचन से इन्द्रजीत क्रुद्ध हुआ और उसके मन में जो अपशब्द आये सुनाने लगा। आज अगर तेरी जान बच जाये तो राक्षस विभीषण को राजा बनाना। इतना कहकर मेघनाद मेघ में छिप गया और बादलों की आड़ में रहकर रावण-पुत्र धनुर्धारी-युद्ध करने लगा। आकाश में रहकर वह बाण बरसाने लगा और सारे कपियों के शरीर को छलनी बनाने लगा। चारों ओर खाँड़ा, फरसा, छुरा यों गिरने लगे मानों आकाश से तारे टूट रहे हों। विभिन्न अस्त्रों से कपि आहत होने लगे और उनके सारे अंगों से रक्त की धारा बहने लगी। हाथ-पैर कट कर कोटि-कोटि कपि गिरे और भूमि पर लुढ़क कर वे धरती चूमने लगे। कोई तो अन्त समय आया समझ-कर भाग खड़ा हुआ तो कोई आ कर दाँत निपोर कर भूमि पर पड़ गया। कोई सेतुबन्ध पर जाकर बदन पर बालू मलने लगा तो कोई राजा (सुग्रीव) को गाली देने लगा। (वे कहने लगे—) बाली राजा बहुत नेक थे; वे अपने पुत्र के समान

बालि-राजेर खाइया परिया गेल काल ❋ एतदिन नाहि छिल एमन जञ्जाल
आड़ाइ दिनेर मध्ये पेये छत्र-दण्ड ❋ लङ्काते वानर आनि कैल लण्ड-भण्ड
राम-सुग्रीवेर आर केन उपरोध ❋ इन्द्रजित्-संगे नाहि करिव विरोध
कपिर क्रन्दन शुनि इन्द्रजित् हासे ❋ प्रहारे असंख्य वाण थाकिया आकाशे
वरिषे असंख्य वाण आगुनेर कणा ❋ पड़िल ये नीलवीर सह-निज सेना
रक्ते नदी वहिछे, देखिते भय करे ❋ वानर सहस्र-कोटि पड़े पूर्व्वद्वारे १०
पूर्व्वद्वार जिनिया कुमार मेघनाद ❋ दक्षिण-द्वारेते गिया करे सिंहनाद
दक्षिण-दुयारे कोन कपि-वीर जागे ❋ परिचय दाओ, युद्ध देह मोर आगे
महेन्द्र देवेन्द्र जागे अंगद प्रभृति ❋ मरिते आइलि वेटा निशाभाग-राति
नाहिक आहार-निद्रा, नाहि सुख-आश ❋ यावत् रावण-वंश ना हय विनाश
आजि तोरे मारिया मारिव तोर पिता ❋ विभीषण-उपरे धराव दण्ड-छाता
छारखार करिव लुठिया लङ्कपुरी ❋ विभीषण-कोले दिव राणी मन्दोदरी ११
कोपे इन्द्रजित् शरभेर वाक्य शुने ❋ गालि पाड़े मेघनाद, यत आसे मने
आजिकार युद्धे यदि रहे त जीवन ❋ तवे राजा करिस् राक्षस विभीषण

वानरों का पालन करते थे। बाली राजा का खा-पीकर इतने दिन बीत गये—कभी ऐसा बवाल नहीं आ पड़ा। ढाई दिन में राजदंड और छत्र पाकर सारे वानरों को लंका में लाकर ऐसी धमाचौकड़ी मचा दी। अब राम-सुग्रीव का कहना क्यों मानें—इन्द्रजीत के साथ अब कोई विरोध नहीं करेंगे। कपियों का क्रन्दन सुनकर इन्द्रजीत हँसने लगा और आकाश में रहकर ही असंख्य वाणों से प्रहार करने लगा। जब आग के समान असंख्य वाण बरसने लगे तो नीलवीर अपनी सेना सहित गिर पड़ा। खून की नदी बहने लगी जिसे देखते हुए भी डर लगता था। पूर्वीद्वार पर सहस्र-कोटि वानर धराशायी हुए॥ १०॥

पूर्वीद्वार पर विजय पाकर कुमार मेघनाद दक्षिणद्वार पर जाकर सिंहनाद करने लगा। (मेघनाद बोला—) दक्षिण-द्वार पर कौन सा कपि-वीर जागता है—अपने-अपने परिचय दो और मेरे साथ युद्ध करो। महेन्द्र, देवेन्द्र, अंगद आदि जाग रहे थे। (वे कहने लगे—) रात को विचरने वाले अभागे तू यहाँ मरने आ गया! न भोजन है और न निद्रा और न सुख की आशा है, जब तक कि रावण के वंश का विनाश नहीं होता। आज तुझको मारकर तेरे पिता को मारूँगा और विभीषण के सर पर छत्र धराऊँगा। सारी लंकापुरी को लूट कर नष्ट-भ्रष्ट कर दूँगा और विभीषण की गोद में रानी मन्दोदरी को ला बिठाऊँगा॥ ११॥

शरभ के ये वाक्य सुनकर इन्द्रजीत कुपित हुआ और मन में जो बुरा-भला आया वही बकने लगा। आज के युद्ध में यदि तुम लोगों के प्राण बच गये

एत बलि मेघनाद मेघेते लुकाये ❋ वरिषे असंख्य वाण विक्रम करिये
आकाशे थाकिया करे वाण-वरिषण ❋ जर्ज्जर करिया बिन्धे यत कपिगण
ब्रह्म-अस्त्र प्रहारे ब्रह्मार पेये वर ❋ वाण फुटि मूर्च्छागत असंख्य वानर
बड़-बड़ वानर हइल अचेतन ❋ महेन्द्र देवेन्द्र पड़े बालिर नन्दन
आशीकोटि कपि पड़े दक्षिण-द्वारेते ❋ वानरेर रक्ते नदी बहे खरस्रोते १२
जिनिया दक्षिण द्वार चले मेघनाद ❋ उत्तर-द्वारेते गिया करे सिंहनाद
उत्तर-द्वारेते कोन कोन बेटा जागे ❋ परिचय देह त दारुण निशाभागे
धूम्राक्ष वानर छिल रात्रि-जागरणे ❋ डाकिया उत्तर करे मेघनाद-सने
असंख्य वानर आछे तोर पथ चेये ❋ आपनि सुग्रीव-राजा र'येछे जागिये
अन्नजल नाखाइ, नाजाइ निद्रा रेते ❋ यावत् राक्षस-वंश ना पारि मारिते
आजि तोरे मारिया मारिब तोर पिता ❋ विभीषण-उपरे धराब दण्ड-छाता
कोपे ज्वले इन्द्रजित् वानर-वचने ❋ गालि पाड़े मेघनाद, यत आसे मने
आजिकार युद्धे आगे बाँचुक् जीवन ❋ तबे राजा करिस् राक्षस विभीषण
एत बलि मेघनाद मेघेते लुकाये ❋ वानर-कटक बिन्धे सन्धान पूरिये
आकाशे थाकिया करे वाण-वरिषण ❋ जर्ज्जर करिया विन्धे यत कपिगण

तो विभीषण को राजा बनाना। इतना कहकर मेघनाद मेघ में छिप गया और असंख्य वाण बरसाने लगा। आकाश में रहकर वह बाण बरसाने लगा और कपियों को जर्जरित करने लगा। ब्रह्मा का वर मिलने के कारण वह ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करने लगा। उसके वाणों से बिंध कर असंख्य वानर मूर्च्छित हो गये। बड़े-बड़े वानर अचेतन हो गये। बाली-नन्दन अंगद, महेन्द्र और देवेन्द्र वानर भी गिरे। दक्षिण-द्वार पर अस्सी करोड़ कपि गिरे। वानरों के रक्त से तेज बहाव वाली नदी बहने लगी॥ १२॥

दक्षिणद्वार पर विजय प्राप्त कर मेघनाद उत्तरद्वार पर गया और वहाँ सिंहनाद करने लगा। (वह बोला—) उत्तरद्वार पर कौन जाग रहा है। इस रात्रि के समय अपना परिचय दो। रात्रि-जागरण पर धूम्राक्ष वानर नियुक्त था; उसने मेघनाद को ललकार कर जवाब दिया। तेरा पथ जोहते हुए असंख्य वानर जाग रहे हैं—स्वयं राजा सुग्रीव भी जाग रहे हैं। हम न अन्नजल ग्रहण करते हैं और न रात को सोते हैं जब तक राक्षस-वंश सम्पूर्ण रूप से मर न जाय। आज तुझको मार कर फिर तेरे बाप को मारूँगा और विभीषण के सर पर राजछत्र धराऊँगा। वानर के इन वाक्यों से मेघनाद क्रोधित हुआ और उसके मन में जो कुवाक्य आये वह बकने लगा। वह बोला आज के युद्ध में अपने प्राण बचा ले, फिर राक्षस विभीषण को राजा बनाना। इतना कहकर मेघनाद मेघ में छिप गया और निशाना साध-साध कर वानर-कटक पर बाण चलाने लगा। आकाश से रह-रहकर बाण बरसाने लगा

मारे काटे इन्द्रजित् केह नाहि देखे ❋ उत्तर-द्वारेते कपि पड़े लाखे-लाखे
वानर-कटक पड़े, वीर-चूड़ामणि ❋ आछुक अन्येर काज सुग्रीव आपनि
रक्ते नदी बहे, ठाट पड़िल विस्तर ❋ असंख्य-वानरे पड़े सुग्रीव-वानर १३
मेघेर आड़ेते चले वीर मेघनाद ❋ पश्चिम-दूयारे गिया करे सिंहनाद
पश्चिम-दूयारे कोन-कोन वीर जागे ❋ त्वरिते आसिया युद्ध देह निशाभागे
हनुमान वीर छिल रात्रि-जागरणे ❋ डाकिया उत्तर करे मेघनाद-सने
सेनापतिगण जागे, नाहि परिमाण ❋ बड़-बड़ वीर जागे पर्व्वत-प्रमाण
जागिछे सुषेण-वेज राजार श्वशुर ❋ जागितेछे कोटि-कोटि वानर प्रचुर
श्रीराम-लक्ष्मण जागे संसार-पूजित् ❋ आमि हनुमान जागि, शुन इन्द्रजित्
नाहिक आहार-निद्रा, जागि दिवानिसि❋यावत् ना मारिब लंकार अधीस
तोरे बध करिया बधिव तोर पिता ❋ विभीषण-उपरे धराव दण्ड-छाता
विभीषणे सर्मपित स्वर्ण-लंकपुरी ❋ केलि करिवारे दिव राणी मन्दोदरी१४
एत शुनि मेघनाद महाकोप मने ❋ हनूमाने गालि पाड़े, यत आसे मने
श्रीरामेरे डाक दिया, बले मेघनाद ❋ देशेते जीयन्ते जावे, ना करिह साध

और कपियों को बाँधता रहा। इन्द्रजीत मारकाट मचाये हुए है लेकिन कोई भी उसको आँखों से नहीं देख पा रहा है और उत्तरद्वार पर लाख-लाख कपि गिर रहे हैं। वानर कटक नष्ट-भ्रष्ट हो गया; दूसरों की क्या कहें, स्वयं वीर-चूड़ामणि सुग्रीव भी गिरे। खून की नदियाँ वह निकलीं और बहुत सारी सेना भी सुग्रीव के साथ घायल हो भूमि पर गिर पड़ी ॥ १३ ॥

बादलों की आड़ में रहकर मेघनाद चला और पश्चिमद्वार पर आकर उसने सिंहनाद किया। (वह बोला,) पश्चिमद्वार पर कौन-कौन वीर जाग रहा है—रात्रि के समय आकर तुरन्त मेरे साथ युद्ध करो। उस समय रात्रि-जागरण पर वीर हनुमान था। उसने डपट कर मेघनाद को जवाब दिया। सारे सेनापति जाग रहे हैं जो संख्या में अगणित हैं। पर्वत-प्रमाण बड़े-बड़े वीर जाग रहे हैं। राजा के श्वसुर सुषेण वैद्य जाग रहे हैं—और कोटि-कोटि वानर भी जाग रहे हैं। संसार के पूज्य श्रीराम और लक्ष्मण भी जाग रहे हैं। सुनो इन्द्रजीत, मैं हनुमान जाग रहा हूँ। जब तक लंका के अधिपति की मृत्यु नहीं होती तब तक खाना-पीना-सोना वर्जित है—मैं रातोंदिन जागता रहता हूँ। तेरा वध करूँगा और विभीषण के हाथों में राजदंड देकर उसके ऊपर राजछत्र को सुशोभित करूँगा। स्वर्णमयी लंकापुरी विभीषण को सौंप दूँगा और केलि करने के निमित्त रानी मन्दोदरी को अर्पित कर दूँगा ॥ १४ ॥

इतना सुनकर मेघनाद महा क्रोधित हुआ। उसके मन में जो अपशब्द आये, वह हनुमान को कहने लगा। मेघनाद ने श्रीराम को पुकार कर कहा,

इन्द्रजित् नाम मोर त्रिभुवन जाने ❊ कोन बेटा निस्तार पाइबे मोर वाणे
एत बलि लुकाइल मेघेर आड़ाले ❊ आकाशे थाकिया वाण झाँके झाँके फेले
आकाशे थाकिया करे वाण-वरिषण ❊ जर्ज्जर करिया विन्धे श्रीराम-लक्ष्मण
शेल शूल मुषल मुद्‌गर एकधारा ❊ चारिदिके पड़े, येन आकाशेर तारा
जाठा जाठि झकड़ा कणिक एकधार ❊ वरिषण करे, आर बले मार-मार
श्रीरामे यतेक विन्धे, ताहा नाहि माने ❊ सह सह बलि तबे डाकये लक्ष्मणे
वज्रेर समान वाण असंख्य वरिषे ❊ पड़िल लक्ष्मण-वीर श्रीरामेर पाशे
क्षुरपार्श्व अर्द्धचन्द्र दु' वाणेर नाम ❊ सेइ दुइ बाण फुटि पड़िल श्रीराम १५
चारिद्वारे पड़े ठाट लक्ष्मण-श्रीराम ❊ राजार प्रसाद लैते चले पितृ स्थान
आगुवाड़ि पथे पड़े चन्दनेर छड़ा ❊ ताहार उपरे पाते नेतेर पाछड़ा
हस्तेक प्रमाण पाड़े पुष्प-पारिजात ❊ आज्ञा पेये पवन सुगन्ध बहे वात
दाण्डाय बापेर आगे वीर-अवतार ❊ बापेर चरणेमाथा नोङाय तिनबार
कहिल सकल, यत करिल संग्राम ❊ पड़िल सकल-सैन्य-सहित श्रीराम
पड़िल लक्ष्मण आर वीर हनूमान ❊ वानर-कटक पड़े, नाहि परिमाण

देश को जीवित लौट सकोगे ऐसी साध मन में मत रखो। मेरा नाम इन्द्रजीत है, मुझको सारा संसार जानता है, मेरे बाणों से किसको निस्तार मिल सकता है। इतना कहकर वह बादलों की ओट में छिप गया। आकाश में रहकर वह अनगिनत बाण बरसाने लगा। आकाश में रहकर वाण बरसाते हुए वह श्रीराम-लक्ष्मण को बींधने लगा। चारों ओर धारा-प्रवाह शेल, शूल, मूसल और मुद्‌गर इस प्रकार गिरने लगे मानों आकाश से तारे गिर रहे हों। विभिन्न शस्त्र बरसाते हुए वह मार-मार शब्द करने लगा। श्रीराम को जितने अस्त्र वह मारता उनकी गणना न कर वह लक्ष्मण को सम्बोधित करता, जरा झेल कर तो देखो। जब वज्र के समान असंख्य वाण बरसने लगे तो वीर लक्ष्मण रामचन्द्र के बगल में ही गिर पड़े। क्षुरपार्श्व और अर्धचन्द्र नामक दो बाणों से आहत हो श्रीराम भी गिर गये ॥ १५ ॥

चारों द्वारों पर श्रीराम-लक्ष्मण सहित जब सारा वानर-कटक गिरा तो राजा का प्रसाद प्राप्त करने के लिए (इन्द्रजीत) पिता के निकट चल पड़ा। उसके चलने के पथ पर चन्दन का छिड़काव हुआ, फिर मूल्यवान वस्त्र बिछाया गया। हाथ-भर ऊँचा पारिजात-पुष्प उस पर बिछ गया। आज्ञा पाकर पवन सुगन्ध का संचार करने लग गया। वीरता का अवतार इन्द्रजीत जाकर पिता के सम्मुख खड़ा हो गया और पिता के चरणों में तीन बार नमन किया। उसने युद्ध के सम्बन्ध में सभी कुछ बताया कि

सुग्रीव अंगद पड़े, नील सेनापति ❊ पड़िल से जाम्बवान भल्लूक प्रभृति
शरभ सुषेण गन्धमादनादि वीर ❊ समुद्रेर कूले सब लोटाय शरीर
चारिद्वारे पड़ियाछे वानरेर थाना ❊ आजि रणे जीयन्त नाहिक एकजना
सुग्रीव-वानरे आर नाहि तव डर ❊ घरपोड़ा वानर गियाछे यमघर १६
हरिषे युद्धेर कथा कहे मेघनाद ❊ चुम्ब दिया रावण करिल आशीर्व्वाद
राजप्रसाद मेघनाद पाइल विस्तर ❊ विचित्र निर्म्माण दिल रत्नेर टोपर
वलय कंकण दिल, माणिक रतन ❊ पञ्चशब्दे वाद्य बाजे, ना जाय गणन
नाना-रत्न-धन दिल, मस्तकेर मणि ❊ इन्द्र-विद्याधरी दिल सहस्र कामिनी
राज प्रसाद दिल राज्य क' रे लण्ड-भण्ड ❊ सबेमात्र नाहि दिल नव-छत्र-दण्ड
राज प्रसाद पाइया प्रवेशे अन्त:पुरी ❊ नारिभाग ल'ये गृहे खेले पाशासारि १७

ससैन्य श्रीराम-लक्ष्मणेर उज्जीवनार्थ विभीषण, हनूमान, ओ जाम्ववानेर मन्त्रणा

चारि-द्वारे पड़े सैन्य श्रीराम-लक्ष्मण ❊ रक्षा पाय विभीषण पवन-नन्दन
दुइजने अमर ब्रह्मार पेये वर ❊ ना मरिल दुइजन वानर-भितर

श्रीराम सहित सारी सेना पराजित हुई है। लक्ष्मण और वीर हनुमान भी गिरे हैं। असंख्य वानरी-सेना विनष्ट हो गई है जिसका कोई लेखा-जोखा नहीं है। सुग्रीव, अंगद और नील सेनापति भी गिरे हैं। जाम्बवान अपने भालुओं के साथ गिरा है। शरभ, सुषेण, गन्धमादन आदि वीरों के शरीर समुद्र-तट पर पड़े हैं। चारों द्वारों पर वानरी-सेना गिरी है। आज के युद्ध में एक भी जीवित नहीं रहा। अब तुमको सुग्रीव-वानर से कोई डर नहीं। घर जलाने वाला वानर भी यमालय चला गया है ॥ १६ ॥

मेघनाद ने हर्ष से युद्ध की बातें सुनाईं। रावण ने उसका चुम्बन कर आशीर्वाद किया। मेघनाद को पर्याप्त राजप्रसाद प्राप्त हुआ, विचित्र रूप से निर्मित रत्नमुकुट मिला, वलय कंगन माणिक्य और रत्न मिले। पंचशब्द से असंख्य वाद्य बजने लगे। अपने मस्तक से मणि उतार कर तरह-तरह का धन-रत्न दिया। सहस्रों इन्द्र-विद्याधरी कामिनियाँ भी मिलीं। राज्य को खाली कर राजप्रसाद दिया गया—केवल नया छत्र और दंड ही नहीं मिला। राजप्रसाद प्राप्त करने के बाद उसने अन्त:पुर में प्रवेश किया और नारीमंडली लेकर पाँसा खेलने बैठ गया ॥ १७ ॥

सारी सेना-सहित श्रीराम-लक्ष्मण को उज्जीवित करने के निमित्त विभीषण,
हनुमान और जाम्बवान की मंत्रणा

चारों द्वारों पर श्रीराम-लक्ष्मण सहित सारी सेना गिरी। केवल विभीषण और पवननन्दन बचे रहे। ब्रह्मा का वरदान पाकर दोनों अमर हैं। वानरों में

चिन्तिया गणिया दोंहे युक्ति कैल सार ❋ राम-लक्ष्मण जीयाइते कैल प्रतिकार
हाते करि देउटि फिरिछे दुइ वीर ❋ वानर देखिया बेड़ाय, गति अति धीर
प'ड़ेछे सुग्रीव-राजा ल'ये राज्यखंड ❋ छत्रिश-कोटि सेनापतिर लोटाइछे मुण्ड
पूर्व्वद्वारे शतकोटि वानर-संहति ❋ हाते गाछ पड़ियाछे नील सेनापति
प'ड़ेछे अंगद वीर दक्षिण-दूयारे ❋ वाणेते अवश अंग, मूर्च्छित शरीरे
पड़िया पश्चिम-द्वारे श्रीराम-लक्ष्मण ❋ देखिया माथाय हात कान्दे दुइजन
शब्द नाहि, स्तब्ध अंग, दु'जने मूर्च्छित ❋ नाड़िया चाड़िया देखे, नाहिक संवित्
बाण फुटि पड़ियाछे मन्त्री जाम्बवान ❋ ना पारे मेलिते चक्षु, बुके पड़े टान
विभीषण बले, तुमि बले महाबली ❋ उठिया मन्त्रणा कर, आर कारे बलि
जाम्बवान बले, मम अंगे लक्षबाण ❋ ना पारि मेलिते चक्षु, बुके पड़े टान
अनुमाने जानिलाम कथार आभासे ❋ विभीषण आसियाछ आमार सम्भाषे
जाम्बवान बले तुमि धार्मिक सुजन ❋ तत्त्व करि देख, कोथा पवन-नन्दन
दु'जने मन्त्रणा करि भावह उपाय ❋ इन्द्रजित-बाणे सबे रक्षा किसे पाय
विभीषण बले, तुमि बुद्धे बृहस्पति ❋ इन्द्रजित-बाणे तव छिन्न हैल मति
श्रीराम-लक्ष्मण पड़े जगत्-पूजित ❋ ए-समये केन नाहि चिन्ता करहित

केवल यही दोनों नहीं मरे। दोनों ने चिन्तन-मनन कर यह निश्चय किया कि श्रीराम लक्ष्मण को जिलाने के लिए प्रबन्ध करना है। हाथ में दीवट लेकर दोनों वीर मंथर-गति से वानरों को देखते फिरने लगे। अपना सारा कटक लेकर राजा सुग्रीव गिरे हैं। छत्तीस करोड़ सेनापतियों के मुंड लुढ़क रहे हैं। पूर्वीद्वार पर सौ करोड़ वानरों की सेना गिरी है। नील सेनापति हाथ में वृक्ष लेकर गिरा है। दक्षिण द्वार पर अंगद वीर गिरा है। उसका शरीर वाणों से निश्चेष्ट पड़ गया है और वह मूर्छित पड़ा है। पश्चिमद्वार पर श्रीराम और लक्ष्मण गिरे हैं। उनको देखकर सिर पर हाथ रख दोनों रोने लगे। दोनों ने हिलाडुला कर देखा कि दोनों मूर्छित पड़े हैं, कोई आहट नहीं और सारा शरीर भी निश्चल है। मंत्री जाम्बवान भी बाण खाकर गिरा था। उससे आँखें नहीं खोली जातीं थी, सीने में दर्द होता था। विभीषण ने कहा, तुम तो महाबली हो, उठकर जरा मंत्रणा करो, भला और किसी से क्या बताऊँ। जाम्बवान ने कहा, मेरे शरीर में लाखों बाण चुभे हैं, मैं आँखें नहीं खोल पा रहा हूँ, सीने में दर्द होता है। बातों के आभास से अनुमान लगाता हूँ कि तुम विभीषण हो और मुझसे बातें करने आए हो। जाम्बवान ने कहा, तुमतो धार्मिक और सुजन हो, जरा पता लगाओ पवननन्दन कहाँ हैं। फिर दोनों परामर्श कर कोई उपाय सोचो कि इन्द्रजीत के वाणों से सबकी किस प्रकार रक्षा हो सकती है। विभीषण ने कहा, तुम तो बुद्धि में बृहस्पति के समान हो—इन्द्रजीत के वाणों से तुम्हारी भी मति मारी गई है।

प'ड़ेछे सुग्रीव-राजा वानरेर पति ❊ कि हबे उपाय, किछु कर तार गति
एबे से जानिनु आमि तोमार चरित्र ❊ पवन-नन्दन-बिना नाहि तव मित्र
जाम्बवान बले, मोर बुद्धि नाहि घटे ❊ हनूमाने डाकि देह आमार निकटे
अन्य अन्य अन्वेषणे, नाहि प्रयोजन ❊ देख आगे, कोथा आछे पवन-नन्दन
चेतना थाकये यदि ताहार शरीरे ❊ प्राणदान दिबेक सकल महावीरे
विभीषणे बले, देख मेलिया नयान ❊तोमा सम्भाषिते आसियाछे हनूमान१८
चरण बन्दिल जाम्बवानेर हनूमान ❊ मृदुभाषे तखन बलिछे जाम्बवान
प'ड़ेछेन श्रीराम-लक्ष्मण कपिगण ❊ औषध आनिले तुमि जीये सर्व्वजन
अन्तरीक्षे जाइबे पवन करि भर ❊ अति-उच्च हिमालय-पर्व्वत-शिखर
ऋष्यमूक-पर्व्वत से हिमालय-पार ❊ धवल-पर्व्वत श्वेत-धवल-आकार
ताहार दक्षिण-पूर्व्वे पर्व्वत-कैलास ❊ ऋष्यमूके-महौषध आछये निर्य्यास
चारि-वृक्ष आछये औषध चारि-जाति❊ अन्धकारे आलोकरे औषधेर ज्योति
'विशल्य-करणी' एक सर्व्वलोके जानि❊ द्वितीय-औषध-नाम 'मृत-संजीवनी'
तृतीय औषध आछे 'अस्थि-सञ्चारिणी'❊ चतुर्थ औषध-नाम 'सुवर्ण-करणी'
आनिते औषध यदि पार राताराति ❊चारियुगे थाकिबेक तोमार सुख्याति१९

संसार के पूज्य श्रीराम-लक्ष्मण भी गिरे हैं। इस समय उनके हित की कोई चिन्ता करो। वानरों के पति राजा सुग्रीव भी गिरे हैं। कोई उपाय निकालो—रास्ता बतलाओ। अब मैंने तुम्हारा चरित्र जान लिया कि पवन-नन्दन के बिना तुम्हारा कोई मित्र नहीं। जाम्बवान ने कहा, इस समय मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है, मेरे पास हनुमान को बुला दो। और कुछ तुमको खोजने-तलाशने की जरूरत नहीं। पहले देखो कि पवननन्दन कहाँ है। उसके शरीर में यदि चेतना है तो सारे महावीरों को वह प्राणदान कर सकेगा। विभीषण ने कहा, आँखें खोलकर देखो, तुमसे संभाषण करने के लिए हनुमान प्रस्तुत हैं ॥ १८ ॥

हनुमान ने जाम्बवान के चरणों की वन्दना की। तब जाम्बवान ने धीमे स्वर में कहा, श्रीराम-लक्ष्मण और सारे कपि गिरे हैं। तुम दवा ले आओ तो सारे लोग जी जाय। पवन पर चढ़कर अन्तरिक्ष में जाओगे। अति-उच्च हिमालय पर्वत मिलेगा। उसको लाँघ जाओगे तो ऋष्यमूक पर्वत मिलेगा। वह धवल वर्ण का पर्वत है। उसके दक्षिण-पूर्व में कैलास-पर्वत है। ऋष्यमूक पर्वत पर निश्चित रूप से महौषध है। चार प्रकार के वृक्ष हैं जिनमें चार प्रकार के औषध हैं। औषध की ज्योति अँधेरे में उजाला करती है। एक तो 'विशल्यकरणी' है जिसको सारा संसार जानता है। दूसरी औषध का नाम है 'मृत-संजीवनी'। तीसरी औषध है 'अस्थि-संचारिणी' तो चौथी का नाम है 'सुवर्णकरणी'। अगर रातोंरात ये औषधियाँ ले आओ तो चारों युग में तुम्हारा सुयश सदा फैला रहेगा ॥ १९ ॥

नाहिक एसब कथा बाल्मीकी-रचने ※ विस्तारिया लिखित 'अद्भुत-रामायणे'
एक रामायण शत-सहस्र प्रकार ※ के जाने प्रभुर लीला, कत अवतार
कृत्तिवास-पण्डितेर जन्म शुभक्षणे ※ लङ्का-काण्ड गाहिलेन गीत-रामायणे२०

औषध आनिते हनूमानेर ऋष्यमूक-पर्व्वते यात्रा

जाम्बवान हनूमाने दिलेन विदाय ※ औषध आनिते वीर हनूमान जाय
उभलेज करिया सारिला दुइ कान ※ एकलाफे आकाशे उठिल हनूमान
महाशब्दे चलिल पवने करि भार ※ लेजेर सापटे उड़े पर्व्वत-पाथर
दश-योजन हैल वीर आड़े परिसर ※ दीर्घेते योजन त्रिश, चमके अमर
लाङ्गुल बाड़ाये कैल योजन पञ्चाश※ सारिया तुलिल लेज, ठेकिल आकाश
सागर हइया निमिषेते गेल पार ※ शरा-गोटा ज्ञान करे सकल संसार
नद-नदी एड़ाइल पर्व्वत-कान्तार ※ कत वन-उपवन ह'ये गेल पार
नाना-तीर्थ-क्षेत्र, कत मुनिर वसति ※ वारो-वत्सरेर पथ जाय एकराति
हिमालय-पर्व्वत छाड़ाये शीघ्रगति ※ कैलास-पर्व्वत देखे धवल-आकृति

बाल्मीकी की रचना में ये सब बातें नहीं हैं। ये सब 'अद्भुत रामायण' में विस्तार से लिखी हुई हैं। एक ही रामायण है लेकिन वह शत-सहस्र प्रकार की है। प्रभु की लीला कौन जान सकता है। उनके कितने ही अवतार हैं। कृत्तिवास पंडित का जन्म अवश्य ही शुभ-घड़ी में हुआ था। उन्होंने रामायण का गीत लंका-कॉंड में गाया ॥ २० ॥

औषधि लाने के लिए हनुमान की ऋण्यमूकपर्वत-यात्रा

जाम्बवान ने हनुमान को बिदा दी। वीर हनुमान औषधि लाने के लिए चल पड़ा। पूँछ को ऊपर की ओर कर और दोनों कानों को खड़े कर एक छलाँग में हनुमान आकाश में उड़ गया। भीषण शब्द करता हुआ वह पवन के सहारे चल पड़ा। उसकी पूँछ की चपेट में पड़कर पहाड़-पत्थर उड़ने लगे। वीर ने चौड़ाई में अपने शरीर को दस-योजन का बनाया और लम्बाई में तीस योजन का। पूँछ बढ़कर पचास योजन लम्बी बना डाली जिसके उठाते ही आकाश छू गया। पल भर में वह समुद्र लाँघ गया। सारे संसार को उसने सकोरा-मात्र समझा। कितनी ही नद-नदियाँ और पर्वत, जंगल वह पार कर गया। कितने ही वन-उपवन, विभिन्न तीर्थ-क्षेत्र, ऋषियों के निवास स्थान वह पार कर गया। एक रात में वह बारह वर्षों का पथ पार कर गया। तेज गति से वह हिमालय-पर्वत भी लाँघ गया। कैलास पर्वत में उसने धवलाकार पहाड़ देखा। इस प्रकार हनुमान ऋष्यमूक पर्वत पर चढ़ा। औषधि की गन्ध पाकर वहीं ठहर गया। औषधि की गन्ध से

ऋष्यमूक-पर्व्वत उठिल हनूमान ❊ औषधेर गन्ध पेये रहे सेइस्थान
औषधेर गन्धेते सुगन्ध वात वहे ❊ सन्धान पाइया वीर सेइखाने रहे
शिखरे-शिखरे फिरे पवन-नन्दन ❊ चारिजाति औषध ना पाय दरशन
देवमूर्ति औषध, किदिव तार लेखा ❊ कारे हय अदर्शन, कारे देय देखा २१
औषध ना पाय वीर, रजनी विस्तार ❊ मने-मने चिन्ता तवे करे वीरवर
मने-मने हनू तवे करे अनुमान ❊ वाण खेये बुद्धि गेछे बुड़ा जाम्बवान
तल्लासिनु पर्व्वत करिया पाति पाति ❊ चारिजाति औषध, ना पाइ एक जाति
अकारणे आइलाम भल्लूकेर वोले ❊ एत दुःख विधाता कि लिखिल कपाले
बुद्धिमान हनुमान विचारे पण्डित ❊ सात-पाँच भावि मने स्थिर करे चित
ब्रह्मार नन्दन वीर, आछे बहुज्ञान ❊ सर्व्वलोके वले, महामन्त्री जाम्बवान
तार वाक्य मिथ्या ना हइवे कोनकाले ❊ पर्व्वत चातुरी क'रे औषध लुकाले
साधे कि तोमार पाखा काटे पुरन्दर ❊ आमारे भाविले तुमि वनेर वानर
परिहास कर तुमि विपत्तिर काले ❊ उपाड़िया फेले दिव सागरेर जले
सुग्रीवेर चर आमि, श्रीरामेर दास ❊ आमार संगेते तुमि कर परिहास
कृत्तिवास-पण्डितेर मधुर भारती ❊ याँर कण्ठे विराजेन देवी सरस्वती २२

सुगन्धित पवन चल रहा था—टोह पाकर वह वीर वहीं ठहर गया। पवन-नन्दन शिखर-शिखर पर भटकता रहा लेकिन उसको चार प्रकार की औषधियों का दर्शन नहीं मिला। औषधि भी देवमूर्त्ति के समान है—किसी को वह दर्शन देती है और किसी को नहीं देती ॥ २१ ॥

रात बहुत बीत गई लेकिन वीर को औषधि नहीं मिली। तब वीरवर ने मन ही मन चिन्तन किया—उसने अनुमान किया कि वाण खाकर वृद्ध जाम्बवान की बुद्धि कुंठित हो गई है। सारा पर्वत छान डाला—चार जाति की औषधि है और एक भी नहीं मिल रही है। भालू के कहने से नाहक मैं चला आया, विधाता ने मेरे भाग्य में इतना क्लेश लिख रखा था। बुद्धिमान हनुमान पंडित-प्रवर भी था—आगा-पीछा सोचकर उसने अपने चित्त को शान्त किया। ब्रह्मा का सुवन वीर जाम्बवान श्रेष्ठ ज्ञान का अधिकारी है, सभी लोग उसको महामंत्री जाम्बवान कहते हैं। उसके वाक्य कभी झूठे नहीं हो सकते। पर्वत ने चालाकी कर औषधि छिपा ली है। यों ही इन्द्र ने तुम लोगों का पंख नहीं काटा था। मुझको तुमने वन का वानर समझ रखा है। विपत्ति के समय तुम मुझसे परिहास कर रहे हो। मैं तुम्हें उखाड़ कर समुद्र के जल में फेंक दूँगा। मैं सुग्रीव का दूत हूँ और श्रीराम का दास हूँ, तुम मेरे साथ परिहास कर रहे हो। जिनके कँठ में सरस्वती विराजमान हैं उन कृत्तिवास पंडित की यह मधुर रचना है ॥ २२ ॥

हनूमान-कर्त्तृक पर्व्वतेर स्तव

हनूमान जोड़करे, पर्व्वतेरे स्तव करे, बले, शुन शुन गिरिवर।
पाब ब'ले महौषधि, लंघिया पर्व्वत-नदी, दुःख पेये एसेछि विस्तर ॥
मेरुगण यत आछे, तुल्य नहे तव काछे, तुमि मेरु सुमेरु-समान।
श्रीराम-लक्ष्मण रणे, प'ड़े छेन दुइजने, कृपाय औषध कर दान ॥
सुग्रीव-अंगद-नल, आर यत महाबल, प'ड़े आछे मृतदेह-प्राय।
तुमि ह'ये दयावान, महौषधि कर दान, बाँचे सबे तोमार कृपाय ॥
शुन हित-उपदेश, रजनी हइल शेष, येते हबे सागरेर पार।
शुन मेरु गुणनिधि, देखाइया महौषधि, करह रामेर उपकार ॥
एरूप अञ्जना-सुत, स्तव करे शत-शत, पर्व्वत ना माने उपरोध।
राम-पद-अभिलाषे, विरचिल कृत्तिवासे, हनूमाने उपजिल क्रोध २३ ॥

हनूमान-कर्त्तृक औषध-आनयन एवं राम, लक्ष्मण ओ वानर गणेर चैतन्य-लाभ

एत परिश्रमे हनू औषध ना पाय ※ कोपे कड़मड़ दन्त कटमट चाय
हनूमान बले, आमि श्रीरामेर दास ※ ना दिल औषध बेटा, करे उपहास
क्षुद्र तुइ प्रस्तर, पर्व्वत केटा बले ※ तोर मत कत-शत डुबायेछि जले

हनुमान द्वारा पर्वत की स्तुति

फिर हनुमान हाथ जोड़कर पर्वत का स्तव करने लग गये। बोले, हे गिरिवर, कृपया सुनो। महौषधि प्राप्त करने के लिए कितने ही पर्वत और नदियों को लाँघ कर अशेष क्लेश झेलते हुए यहाँ आया हूँ। जितने भी मेरु हैं वे तुम्हारी तुलना में कुछ भी नहीं—तुम तो सुमेरु के समान हो। युद्धक्षेत्र में श्रीराम और लक्ष्मण गिरे हैं, कृपया औषधि प्रदान करो। सुग्रीव, अंगद, नल एवं अन्य-अन्य महाबली भी मृत के समान पड़े हैं। तुम दयालु बनकर महौषधि का दान करो तो तुम्हारी कृपा से सबके प्राण बचें। मेरा कहना मानो, रात समाप्त हो रही है और मुझको समुद्र लाँघ कर जाना है। हे गुणनिधि मेरु, सुनो, महौषधि दिखाकर राम का उपकार करो। इस प्रकार अंजना-सुत हनुमान ने तरह-तरह से स्तव किया, किन्तु पर्वत ने उनका अनुरोध न माना। इस पर हनुमान को क्रोध आ गया। श्रीरामचन्द्र के चरणों के अभिलाषी कृत्तिवास ने यह रचना की ॥ २३ ॥

हनुमान द्वारा औषधि का लाना एवं राम, लक्ष्मण और कपियों का चैतन्य-लाभ

इतने परिश्रम के उपरान्त भी जब हनुमान को औषधि नहीं मिली तो क्रोध से उसके दाँत किटकिटाने लगे और वह आँखें लाल-लाल कर देखने लगा। हनुमान ने कहा, मैं राम का दास हूँ, तूने औषधि नहीं दी और उलटे मेरा उपहास करता है। तुझको पर्वत कौन कहता है, तू तो छोटा सा पत्थर

एत बलि धरि टाने पवन-नन्दन ❋ चड़-चड़ शव्दे छिंड़े लतार बन्धन
बड़-वड़ वृक्ष सव उपाड़िया पड़े ❋ पाले-पाले वन-जन्तु धाय उभरड़े
कत-शत मुनि-ऋषिर हैल तपोभंग ❋ सिंहेर उपरे चापि पड़िछे मातंग
शार्दूल-उपरे पड़े कुक्कुर श्रृगाल ❋ नेउल मूषिक साप एकत्र मिशाल
भूत प्रेत पिशाच पलाय ल'ये प्राण ❋ आतङ्केते यक्ष वले, रक्ष भगवान
प्रलय पाड़िल, पलावार नाहि पथ ❋ मूर्त्तिमान ह'ये देखा दिलेन पर्व्वत २४
ऋषिरूपे आसि हनूमानेर साक्षाते ❋ जिज्ञासिल हनूमाने मधुर वाक्येते
के तुमि, कोथाय थाक, वीर-चूड़ामणि ❋ पर्व्वत धरिया केन कर टानाटानि
हनूमान बले, आमि पवनेर सुत ❋ सुग्रीवेर अनुचर, श्रीरामेर दूत
ह'रेछे रामेर सीता दुष्ट दशानन ❋ रघुनाथ करे छेन सागर-वन्धन
लङ्काते ह'तेछे युद्ध श्रीराम-रावणे ❋ प'ड़छेन रघुनाथ इन्द्रजित्-वाणे
रघुनाथ मूर्च्छागत, ठाकुर लक्ष्मण ❋ सुग्रीव-अंगद-आदि यत कपिगण
अचैतन्य ह'ये सबे आछे लङ्कापुरे ❋ जाम्ववान पाठाइल औषधेर तरे
महौषधि आछे एइ पर्व्वत-उपरे ❋ ना दिल औषध मेरु कोन अहंकारे
प्राणपणे करिब रामेर उपकार ❋ पर्व्वत लइया जाव सागरेर पार २५

है, तुझ जैसे सैकड़ों को मैंने पानी में डुबो दिया है। इतना कहकर पवन-नन्दन पर्वत को पकड़ कर खींचने लगा—तो लताओं के सारे वन्धन चट-चट और बड़े-बड़े पेड़ भी उखड़-उखड़ कर गिरने लगे। झुंड के झुंड जंगली जानवर भागने लग गये। कितने ही ऋषि-मुनियों की तपस्या-भंग हो गई। कहीं तो सिंह पर हाथी जा गिरता तो कहीं शार्दूल पर कुत्ते सियार जा गिरते। नेवला, चूहा और साँप एक ही जगह एकत्र हो गये। भूत-प्रेत-पिशाच अपने-अपने प्राण लेकर भाग खड़े हुए। आतंक से यक्ष कहने लगे, हे ईश्वर रक्षा करो, प्रलय आ गया, भागने का रास्ता नहीं। इतने में ऋषि की मूर्त्ति धरकर पर्वत ने दर्शन दिया ॥ २४ ॥

ऋषि का रूप लेकर वह हनुमान के सम्मुख आया और मधुर वचन से हनुमान से पूछा, हे वीर चूड़ामणि, तुम कौन हो, कहाँ रहते हो, पर्वत पकड़ कर क्यों खींचातानी कर रहे हो। हनुमान ने कहा, मैं पवनसुत हूँ, सुग्रीव का अनुचर और श्रीराम का दूत हूँ। श्रीराम की सीता का दुष्ट दशानन ने हरण किया है। रघुनाथ ने सागर बाँध डाला है और लंका में राम और रावण में युद्ध हो रहा है। इन्द्रजीत के बाण से घायल हो रघुनाथ गिरे हैं। रघुनाथ मूर्च्छित हैं, लक्ष्मण तथा सुग्रीव, अंगद आदि सारे कपि लंका में अचेतन पड़े हैं। जाम्बवान ने मुझको औषधि के लिए भेजा है। वह महौषधि इसी पर्वत पर है। इस मेरु ने जाने किस अहंकार से औषधि नहीं

ऋषि बले, शान्त हओ पवन-नन्दन ❋ आमि देखाइया दिब औषधेर वन
एत बलि संगे करि ल'ये सेइखाने ❋ देखाइया दिल गिया औषध जेखाने
चारिजात औषध लइया हनूमान ❋ उभलेज करिया सारिल दुइ कान
लाफ दिया वीर गिया उठिल आकाशे❋ लङ्कापुरे उपनीत चक्षुर निमिषे
विशल्य-करणी आर सुवर्ण-करणी ❋ अस्थि-सञ्चारिणी आर मृत-सञ्जीवनी
एइ चारि औषध लइया हनूमान ❋ चारि द्वारे भ्रमण करये स्थाने-स्थान
चारि-औषधेर घ्राण यतदूर जाय ❋ वानर-कटक सब उठिया दाण्डाय
निद्राभंगे उठे येन मेलिया नयन ❋ सेइरूपे उठिलेन श्रीराम-लक्ष्मण
सुग्रीव उठिल वानरेर अधिपति ❋ द्विविद कुमुद उठे सैन्येर संहति
नल नील उठिल अंगद युवराज ❋ गय ओ गवाक्ष उठे कटक-समाज
जार नाके लागे अस्थि-सञ्चारिणी गुँड़ा❋ कटकेर शत-पा आसिया लागे जोड़ा
अस्थि-सञ्चारिणी-गन्ध प्रवेशये नाके❋ चारि द्वारे वानर उठिल झाँके-झाँके
सुवर्ण-करणी-गन्ध सुकोमल अति ❋ सुन्दर शरीर हैल पूर्व्वेर आकृति २६
सकल वानर उठे दिया अंग-झाड़ा ❋ हनूमाने कहे सबे हात करि जोड़ा

दी। मैं प्राणों की बाजी लगाकर भी राम का उपकार करूँगा—मैं इस पर्वत को समुद्र पार ले जाऊँगा ॥ २५ ॥

ऋषि ने कहा, पवन-नन्दन, शान्त हो जाओ। मैं तुमको औषधि वाला वन दिखा दूँगा। इतना कहकर वह उसको साथ ले गया और उस स्थान पर ले गया जहाँ औषधि के पौधे थे। चारों प्रकार की औषधि लेकर हनुमान ने पूँछ ऊपर की ओर की और कान समेट लिये और कूद कर आकाश में उड़ गये। आँखों के पलक गिरते-गिरते ही वह लंकापुरी जा पहुँचे। विशल्य-करणी, सुवर्ण-करणी, अस्थि-संचारिणी और मृत-संजीवनी ये चारों औषध लेकर हनुमान चारों द्वार पर जगह-जगह घूमने लगे। चारों औषधों की गन्ध जहाँ-जहाँ तक पहुँचती उतनी दूर तक सारा वानर कटक उठ उठ कर खड़ा हो जाता। जिस प्रकार नींद टूटने पर कोई आँखें खोलकर बठ जाता है उसी प्रकार श्रीराम और लक्ष्मण उठ कर बैठ गये। वानरों के अधिपति सुग्रीव उठे। द्विविद, कुमुद और सेना का सारा समूह उठकर बैठ गया। नल, नील, युवराज अंगद, गय, गवाक्ष आदि वानर-कटक के सदस्य उठ कर खड़े हो गये। जिसकी नाक में अस्थि-संचारिणी का चूर्ण जा पहुँचता उसी के टूटे हाथ-पैर आदि अंग जुड़ जाते। चारों द्वारों पर झुंड के झुंड वानर उठ कर खड़े हो गये। सुवर्ण-करणी की गन्ध बड़ी कोमल है, उससे सारा शरीर सुन्दर रूप ले लेता था और अपने स्वरूप पर लौट आता था ॥ २६ ॥

सभी वानर बदन झाड़ कर उठ खड़े हुए। सभी ने हाथ जोड़कर हनुमान से कहा, तुम्हारे समान वीर तीनों लोकों में नहीं है। तुम्हारे ही

तोमार समान वीर त्रिभुवने नाइ ※ तोमार प्रसादे सब मैले प्राण पाइ
राम बले, हनूमान, ये गुण तोमार ※ शतयुगे शुधिते नारिव तव धार
कि दिव प्रसाद बल, आछे किवा धन ※ हनूमाने कोल दिला श्रीराम-लक्ष्मण
राम बले, हनूमान, तुमि भक्तवीर ※ तोमाते आमाते हय अभेद-शरीर
सर्व्वजन करे हनूमानेर वाखान ※ हनूमान हैते सबे पाइल पराण
मिथ्या हैल, यत युद्ध कैल इन्द्रजित् ※ कृत्तिवास गाहिलेक लङ्काकाण्ड-गीत २७

रावण-कर्त्तृक लंकार चारि-द्वार-अवरोध

'राम-जय' शब्दे कपि छाड़े सिंहनाद ※ लंकाते रावण-राजा गणिल प्रमाद
रावण बले, दैवगति के पारे रोधिते ※ लङ्कापुरी विनाशिबे नर-वानरेते
श्रीराम-लक्ष्मण मैल यत सेनापति ※ एखनि उठिल बेंचे ना पोहाते राति
मोर सेना मरिले ना बाँचे एकजन ※ वारे-वारे मरे-बाँचे श्रीराम-लक्ष्मण
हेन वीर नाहि मोर लङ्कार भितर ※ मारे राम-लक्ष्मण ओ सुग्रीव-वानर
मरिया ना मरे राम, ए केमन वैरी ※ वीर शून्या हइल कनक-लङ्कापुरी
हेन छार युद्धे आर नाहि प्रयोजन ※ थाकिव कपाट दिया, प्राण बड़ धन

कारण हम सभी मरे हुओं को प्राण मिले। श्रीराम ने कहा, हनुमान! तुममें अपार गुण हैं। मैं तुम्हारा ऋण कभी न चुका सकूँगा। बताओ तुमको कौन सा प्रसाद दूँ, मेरे पास भला धन भी कौन सा है। इतना कहकर श्रीराम-लक्ष्मण ने हनुमान को अंक में बाँध लिया। राम ने कहा, हनुमान तुम भक्तवीर हो, तुम्हारा और मेरा शरीर अभिन्न है। सभी लोग हनुमान की प्रशंसा करने लगे कि हनुमान के कारण ही सबको प्राण मिले। इन्द्रजीत ने जितना भी युद्ध किया था सब व्यर्थ हो गया। कृत्तिवास ने लंकाकांड का गीत गाया ॥ २७ ॥

रावण द्वारा लंका के चारों द्वारों का अवरोध

तब कपियों ने 'राम की जय हो' यह ध्वनि कर सिंहनाद किया। उसे सुनकर लंका में राजा रावण ने अपनी विपत्ति जान ली। रावण ने कहा, दैव की गति को कौन रोक सकता है—इस लंकापुरी को नर और वानर मिलकर विनष्ट करेंगे। सारे सेनापतिओं के साथ श्री-राम और लक्ष्मण मर गये और इधर सबेरा होते न होते ही वे सब जी उठे। मेरी सेना में एक भी सैनिक मरने पर जीता नहीं है और यह राम और लक्ष्मण बार-बार मरते और जीते रहते हैं। मेरी लंकानगरी में ऐसा कोई भी वीर नहीं है जो राम-लक्ष्मण और वानर सुग्रीव का वध कर सके। यह राम मर कर भी नहीं मरता—यह कैसा वैरी है। कनकमयी लंकापुरी वीरों से शून्य हो गई।

प्रवेशिते लङ्कापुरे नाहि दिब बाट ❋ लङ्कापुरे चारि द्वारे देह त कपाट २८
राजार आदेश पेये यत निशाचरे ❋ लंकापुरे कपाट दिलेक चारि द्वारे
सोनार कपाट, छिल भयंकर अति ❋ नाहि ताहे चन्द्र-सूर्य पवनेर गति २९
पाँचदिन द्वारेर कपाट नाहि खुले ❋ हासिया सुग्रीव-राजा सबाकारे बले
दुयारे कपाट दिया रहिल रावण ❋ मने कि भेवेछे बेटा, जिनियाछे रण
एतेक भाविया मने वानरेर पति ❋ पश्चिम-दुयारे गेल मन्द-मन्द गति
बसे छेन रघुनाथ समुद्रेर तटे ❋ चौदिके वानरगण, लक्ष्मण निकटे
हनूमान जाम्बवान आर विभीषण ❋ कृताञ्जलि हइया आछेन तिनजन
उपनीत हैल आसि सुग्रीव-राजन ❋ सम्भ्रमे बन्दिला आसि रामेर चरण
लक्ष्मणेर पादपद्म बन्दिलेन शिरे ❋ जिज्ञासेन श्रीराम सुग्रीव महावीरे
कि मन्त्रणा करिछे लङ्कार अधिकारी ❋ चारि द्वारे कपाट रेखेछे बन्ध करि
पाँचदिन हैल, केन नाहि देय रण ❋ कह ना सुग्रीब मिता, इहार कारण
सुग्रीव बलेन, प्रभु, ना जानि संवाद ❋ क'रेछे कपाट बन्द गणिया प्रमाद २३०

ऐसे अधम युद्ध की अब और आवश्यकता नहीं। मैं किवाड़ बन्द कर पड़ा रहूँगा, प्राण बहुत बड़ी संपत्ति है। मैं उन्हें लंका में प्रवेश करने का रास्ता नहीं दूँगा। जाओ लंका के चारों द्वारों के किवाड़ बन्द कर दो ॥ २८ ॥

इस प्रकार राजा का आदेश पाकर सारे निशाचरों ने लंका के चारों द्वारों के किवाड़ बन्द कर दिये। सोने के बने हुए इन किवाड़ों में बड़ी भयंकर कुण्डी लगी थी, जिनमें से चन्द्र-सूर्य की किरणें और पवन भी नहीं जा सकते थे ॥ २६ ॥

जब पाँचदिन तक इन द्वारों के किवाड़ नहीं खुले तो राजा सुग्रीव ने हँसकर सबसे कहा, रावण किवाड़ बन्द करके बैठा है। क्या उसने सोच रखा है कि उसने युद्ध जीत लिया है। वानर-पति इतना सोचकर पश्चिमद्वार की ओर मन्दगति से चल पड़े। समुद्र तट पर रघुनाथ बैठे थे, उनके पास ही लक्ष्मण और उनके चारों ओर सारे वानर बैठे थे। हनुमान, जाम्बवान और विभीषण, तीनों हाथ जोड़े प्रस्तुत थे। तब राजा सुग्रीव वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने आदर के साथ श्रीराम के चरणों की वन्दना की। लक्ष्मण के चरण-कमलों को भी प्रणाम किया। तब श्रीराम ने महावीर सुग्रीव से पूछा, लंका के अधिकारी क्या मंत्रणा कर रहे हैं। उन्होंने चारों द्वारों के किवाड़ बन्द कर रखे हैं। आज पाँच दिन हो गये, वे लड़ने नहीं आ रहे हैं। मित्र सुग्रीव इसका कारण बताओ। सुग्रीव ने कहा, प्रभु, कुछ पता तो चलता नहीं, लेकिन लगता है कि विपत्ति समझ कर ही उन्होंने किवाड़ बन्द कर लिये हैं ॥ २३० ॥

वानरगण-कर्त्तृक द्वितीयवार लंका-दाह

श्रीराम बलेन, शुन मन्त्री जाम्बवान ❊ चिन्तिया मन्त्रणा कर, ये हय विधान
जाम्बवान बले, प्रभु पाठाये वानरे ❊ लङ्काय आगुन देह प्रति-घरे-घरे२३१
एतेक शुनिया तबे सुग्रीव-राजन ❊ बड़-बड़ वानरे पाठाय ततक्षण
सुग्रीवेर आज्ञा पेये असंख्य-वानर ❊ लाफे-लाफे पड़े गिया लङ्कार भितर
एके लङ्कापुरी, ताहे वानरेर जाति ❊ आँचड़-कामड़ मारे धरिया युवती
अन्तःपुर-नारी देखि वानरेर रंग ❊ कापड़ काड़िया लय करिया उलंग
अञ्चल धरिया दन्त खिचाइया उठे ❊ वस्त्र फेलि युवती पलाय सबे छुटे
दन्त किच्किच् करे, खिलखिल हासि ❊ भाण्डार हइते आने घृतेर कलसी
कारे मारे लाथि-कील, कारे मारे चड़ ❊ नारायण-तैलेर कलसी ल'ये रड़
बाहिर आओयासे दिते गेल समाचार ❊ तिनलाफे प्राचीर हइया आसे पार
नारायण-तैल घृत कलसी कलसी ❊ पर्व्वत-प्रमाण वस्त्र आने राशि-राशि२३२
एइरूपे दुर्ज्जय वानर कोटि-कोटि ❊ सन्ध्याकाले लक्ष-लक्ष ज्वलिल देउटि
एके चाय, ताहे आज्ञा पाइल वानर ❊ लाफे-लाफे प्रवेशिल लङ्कार भितर

वानरों द्वारा दूसरी बार लंका-दहन

श्रीराम ने कहा, हे मंत्री जाम्बवान, सोच विचार कर कोई रास्ता निकालो कि क्या किया जाये। जाम्बवान ने कहा, प्रभु, वानर भेजकर लंका के प्रत्येक गृह में आग लगवा दो॥ २३१॥

इतना सुनकर राजा सुग्रीव ने बड़े-बड़े वानरों को भेज दिया। सुग्रीव की आज्ञा पाकर असंख्य वानर लंका के भीतर कूद पड़े। एक तो लंकापुरी, फिर बन्दरों की जाति—युवतियों को पकड़-पकड़ कर उन पर नख-दन्त का प्रहार करने लगे। अन्तःपुर की नारियाँ बन्दरों का राग-रंग देखने लगीं। कोई बन्दर उनका वस्त्र खींचकर उनको नग्न कर देता तो कोई आँचल पकड़ कर दाँत दिखाने लगता। तब कपड़े फेंक-फाँक कर युवतियाँ सब भाग खड़ी हुईं। तब वे वानर दाँत किटकिटाकर और खिलखिलाकर हँसने लगे और भंडार से घी के मटके उठा लाए। किसी को वे लात-घूँसा मारते तो किसी को झापड़। वे नारायण-तैल का घड़ा लेकर दौड़ने लगे। बाहरी-आवास में कोई समाचार देने दौड़ी तो वे तीन छलाँग में प्राचीर लाँघ गये। नारायण-तैल और घी के मटके इकट्ठे हुए और पर्वत-प्रमाण वस्त्रों का ढेर जमा हो गया॥ २३२॥

इस प्रकार करोड़ों अजेय वानरों ने सन्ध्या के समय लाख-लाख दीपक जला दिये। एक तो उनकी मनचाही बात थी, तिसपर उनको आज्ञा मिली हुई थी—कूद-कूद कर वे सभी लंका में प्रवेश कर गये। एक-एक कपि ने

एक-एक कपि लय दु-दुटि मशाल ※ अग्नि दिया पोड़ाय लङ्कार प्रतिचाल
अग्निते पुड़िया पड़े बड़-बड़ घर ※ परित्राहि रव उठे लङ्कार भितर
उलङ्ग हइया केह पलाइल डरे ※ लाफ दिया पड़े केह जलेर भितरे
अनेक पुड़िल घर आगुनेते ज्वले ※ केह वा पलाये जाय बाप बाप ब'ले
लङ्कार भितर यत छिल विद्याधरी ※ जलेते प्रवेश करे, बले मरि मरि
अंग डुबाइया मुख भासाइला जले ※ सरोवर शोभे येन शत-शतदले
दुयारे थाकिया देखे हनू महाबल ※ देउटिर अग्नि दिया पोड़ाय कुशल
जलेते डुबाये अंग जागाइछे मुख ※ मुखे अग्नि दिया हनू देखिछे कौतुक
डुबिया थाकिल त्रासे जलेर भितरे ※ जल खेये तारा सब पेट फुले मरे
त्रिशकोटि रमणीर पोड़ाय वदन ※ लाफ दिया उठे चाले पवन-नन्दन
आगे-पाछे अग्नि देय, करे ताड़ाताड़ि ※ बालक-युवक पुड़े, कत बुड़ा-बुड़ी
सैन्य-सामन्तेर घर पोड़े सारि-सारि ※ पात्रमित्र गणेर पुड़िल कत पुरी
मणिरत्न-निर्म्मित सुन्दर सब घर ※ लेखाजोखा नाहि तार, पुड़िल विस्तर
खाट पाट पालङ्क पुड़िल रत्न-धन ※ मणि-रत्न निर्म्मित असंख्य आभरण
बहुदूर हइते अग्निर शब्द शुनि ※ वानर-कटक घरे दितेछे आगुनि
पर्व्वत-प्रमाण अग्नि भयंकर देखि ※ पिञ्जर-सहित पोड़े यत पोषा-पाखी

दो-दो मशाल लिये और इस प्रकार वे आग से लंका के प्रत्येक छाजन को जलाने लगे। आग में जल कर बड़े-बड़े मकान गिरने लगे और लंका में त्राहि-त्राहि का रव सुनाई पड़ने लगा। कोई तो विवस्त्र होकर भाग खड़ा हुआ तो कोई जल में कूद पड़ा। बहुत सारे मकान के भीतर ही आग में जलकर मर गये तो कोई बाप-बाप कहते हुए भागा। लंका में जितनी विद्याधरियाँ थीं वे पानी में प्रवेश कर कहने लगीं, हाय मरीं। सरोवर में शरीर डुबो कर जल के ऊपर मुँह किये वे खड़ी रहीं और यों लगा कि सरोवर सैकड़ों शतदलों (कमलों) से सुशोभित है। महाबली हनुमान ने द्वार पर खड़े होकर यह देखा तो दीपक की अग्नि से उनके केश जलाने लगा। पानी में डूब कर मुँह ऊपर किये हुए हैं, यह देखकर उनके मुख को आग से जला कर वह कौतुक देखने लगा। जब भय से वे जल में डुबकी लगा गईं तो उनके पेट पानी से भर गये। तीस करोड़ औरतों का मुँह जलाकर पवन-नन्दन कूद कर छत पर चढ़े। फुर्ती से वे आगे-पीछे सभी जगह आग लगाने लगे जिससे कितने ही बालक-युवक और बुढ़िया-बूढ़े जल कर मर गये। सैनिकों, सेनापतियों और पात्र-मित्रों के घर जलकर खाक हो गये। मणि-रत्नों से बने कितने ही सुन्दर घर जिनकी कोई गिनती नहीं जलकर भस्म हो गये। खाट-पलंग, धन-रत्न, मणि-माणिक्य से बने आभरण सभी जल गये। बहुत दूर से आग का शब्द सुनाई पड़ता। वानर-कटक में घर-घर आग लगाने

शारी शुक काकातुया सारस सारसी॥ नानाजाति विहंग पुड़िल राशि-राशि
हाती घोड़ा गेल पोड़ा कत लाखे-लाख॥ पलाते ना पारे, डाके विपरीत डाक
कतशत मयूर पुड़िल झाँके-झाँक ॥ कुक्कुट-आकृति हैल, पोड़ा गेल पाख
नाना जाति पोषा-जन्तु पालेपाले पोड़े॥ प्राणभये केह वा पलाय उभरड़े
वानरेते पर्व्वत वरिषे झाँके-झाँके ॥ श्रवण वधिर हैल आगुनेर डाके ३३
अगंद बलेन, शुन पवन-कुमार ॥ चारिजन राखह लङ्कार चारिद्वार
ब'से थाक चारिद्वारे देउटि ज्वलिया ॥ राक्षस आइले देह मुख पोड़ाइया
भितरेते आगुन बाहिरे जेते चाय ॥ पलाइते नारे, मुख वानरे पोड़ाय
राक्षस-अवस्था देखि वानरेर हास ॥ लङ्काकाण्ड गाहिल पण्डित कृत्तिवास ३४

कुम्भ ओ निकुम्भेर युद्ध ओ पतन

रावण बले, नाहि सहे प्राणे अपमान ॥ थाकिले कपाट दिया नाहिक एड़ान
कपाट दिले पोड़ाय घर, युद्ध हैल सार॥ युद्ध-बिना निस्तार नाहिक देखि आर
कुम्भ ओ निकुम्भ कुम्भकर्णेर नन्दन॥ डाक दिया आनाइल राजा दशानन
दुइभाइ आसिया राजाकेनोङायमाथा॥ रावण बले, देख वापू, लङ्कार वितथा

लगा। पर्वत की तरह वह भयंकर आग की लौ ऊपर उठी। कितने ही पालतू पक्षी पिंजड़ों में जलकर मर गये। तोता, मैना, काकातुआ, सारस आदि विभिन्न जाति के असंख्य विहंग भी जल मरे। लाखों हाथी-घोड़े जल कर मर गये। भाग न सकने के कारण वे चीख-चिंघार मचाने लगे। कितने ही मोर जल गये—पंख जल जाने से वे कुक्कुट (मुर्गे) जैसे नजर आने लगे। विभिन्न जाति के पालतू पशु झुण्ड के झुण्ड जलने लगे। कितने ही प्राणों के भय से बेतहाशा भागने लगे। वानर पत्थर बरसाने लगे। इस प्रकार आग के कोलाहल से सबके कान बहरे होने लगे॥ ३३॥

तब अंगद ने कहा, हे पवनकुमार हनुमान, लंका के चारों द्वारों पर चार व्यक्तियों को नियुक्त करो। चारों दरवाजों पर मशाल जलाकर बैठे रहो और राक्षसों के निकलते ही उनका मुख जला दो। भीतर की आग से घबड़ा कर राक्षस बाहर निकलना चाहते थे किन्तु भाग नहीं पाते थे, उनका मुख वानर जला देते थे। राक्षसों की दशा देखकर वानर हँसने लगे। लंकाकांड में पंडित कृत्तिवास ने यह गीत गाया॥ ३४॥

कुम्भ और निकुम्भ का युद्ध और पतन

रावण ने कहा अब तो यह अपमान सहन नहीं होता। किवाड़ बन्द करके रहने से भी छुटकारा नहीं। किवाड़ बन्द करने पर ये घर में आग लगाने लगते हैं। अब तो युद्ध करना ही पड़ेगा। युद्ध के बिना अब कोई निस्तार नहीं। कुम्भकर्ण के दो पुत्र थे कुम्भ और निकुम्भ। उनको राजा

विक्रमेते अतुल तोमारा दु'टि भाइ ※ त्रिभुवन पराभूत तोमा-दोंहा-ठाँइ
आमि जयी तोमार पितार बाहुबले ※ कुम्भकर्ण-शोके आमि भासि अश्रुजले
कुम्भकर्ण-बिना लङ्कापुरी शून्याकार ※ नर-वानरेर हाते नाहिक निस्तार
इन्द्र-युद्धे उद्धारिल तोमादेर पिते ※ तोमरा राखह नर-वानरेर हाते
सेइ पुत्र जन्मये कुलेर अलंकार ※ पितृशत्रु मारि ये शोधये पितृ-धार ३५
राजाज्ञा पाइया दोंहे रथे गिया चड़े ※ हस्ती घोड़ा ठाट सैन्य नड़े मुड़े-मुड़े
सैन्येर पायेर भरे कम्पिता मेदिनी ※ दु'भायेर संगे ठाट आट-अक्षौहिणी
संग्राम करिते यात्रा करे दुइ वीर ※ देखादेखि हैल गिया गड़ेर बाहिर
दुर्ज्जय-शरीर-दोंहे पर्व्वत-आकार ※ पश्चिम-दुयारे गेल करि मार-मार
राक्षस-वानर ठाट मिशामिशि हैल ※ गाछ-पाथर ल'ये कपि जुझिते आइल ३६

तबे दुइ दल, कोपेते पागल, परस्परे हारा हारि।
अनल-निकरे, विरल-तिमिरे, करितेछे मारामारि ॥
शत निशाचर, धरि धनुःशर, कठोर कुठार धरि।
वानर उपरे, सम्प्रहार करे, चक्र गदा असि मारि ॥

दशानन ने बुलवा भेजा। दोनों भाइयों ने आकर सिर नवाया। रावण ने कहा, देखो बेटे, लंका का हाल देखो। तुम दोनों भाई बड़े पराक्रमी हो—तुम दोनों भाइयों के पराक्रम से त्रिभुवन पराभूत है। तुम्हारे पिता के बाहुबल के कारण ही मैं विजयी बना रहा। आज मैं कुम्भकर्ण के शोक से आँसुओं में डूबा हुआ हूँ। कुम्भकर्ण के बिना लंकापुरी सूनी है। मुझको लगता है कि इस नर-वानर के युद्ध में मेरा निस्तार नहीं। इन्द्र के साथ युद्ध में तुम लोगों के पिता ने मुझे उबारा था। अब तुम लोग मुझको नर-वानरों के हाथ से बचाओ। वही पुत्र कुल का अलंकार माना जाता है जो पिता के शत्रुओं का हनन कर पितृ-ऋण चुका देता है ॥ ३५ ॥

राजा का आदेश पाकर दोनों राक्षस जाकर रथ पर सवार हो गये। हाथी-घोड़े सहित सारी सेना आन्दोलित होने लगी। सेना की पदचाप से पृथ्वी थरथराने लगी। दोनों भाइयों के साथ आठ अक्षौहिणी सेना चली। दोनों वीर संग्राम करने चल पड़े, गढ़ से बाहर निकलने पर दोनों का सामना हुआ। दोनों के ही शरीर पर्वत-समान दुर्जय थे। वे मार-काट मचाते हुए पश्चिमद्वार पर जा धमके। राक्षसों और वानरों की सेनाएँ आपस में गुथ गयीं। पेड़-पत्थर लेकर वानर लड़ने के लिए आ गये ॥ ३६ ॥

तब दोनों दल क्रोध से उन्मत्त हो एक दूसरे को हराने के लिए यों मार करने लगे मानों अनल और अन्धकार में संग्राम छिड़ा हो। सैकड़ों निशाचर धनुष-वाण और कठोर कुठार लेकर वानरों पर प्रहार करने लगे। वे चक्र, गदा और तलवार का भी प्रयोग करने लगे। इससे किसी का मुंड

ताहे कारो मुण्ड, कारो भुजदण्ड, कारो बुक फाटे बले ।
कारो उरु-मूल, काहारो लाङ्गूल, कारो हस्त-पद-गले ।।
कोनजने शर, बिन्धिया जर्ज्जर, करितेछे कोनजन ।
कारो गदाघाते, भङ्गे बुक-हाते, खड्गे करे विदारण ।।
ताहे कपि सब, करि घोर-रव, गिरि-तरु-शिलागण ।
फेलि फेलि मारे, राक्षस-उपरे, करे उल्का-निक्षेपण ।।
ताहे चूर्ण करे, कत रात्रिचरे, कारो भाङ्गे शिर-बुक ।
कारो उल्कानले, दहे मुण्ड-गले, कारो मुख सकौतुक ।।
केह मुष्ट्याघाते, भांगे कारो माथे, बुक भांगे पदाघाते ।
दशन-नखरे, विदारण करे, बुक पाश पेट माथे ।।
काहारो घोड़ारे, आछाड़िया मारे, कोन कपि कारो गजे ।
केह मारि लाथे, भांगे कारो रथे, ससारथि-हय-ध्वजे ।।
कत निशाचर, त्यजि असि-शर, हाताहाति रण करे ।
केह मारे चड़, केह वा चापड़, केह मुटकी प्रहारे ।।
पाँच-सात-जन, राक्षस मिलन, धरि एक कपिवरे ।
अस्त्रादि-प्रहारे, छिन्न-भिन्न क'रे, काहारो पराण हरे ।।
सेइ-अनुसारे, एक निशाचरे, अनेक वानर धरि ।
मारे चड़-कील, बहुतर शिल, विदारये नखे करि ।।

कटा तो किसी का भुजदंड और किसी का वक्ष विदीर्ण हुआ, किसी की जाँघ कट गई तो किसी की पूँछ, कोई हाथ-पैरों से विहीन हो गया, किसी के गदाघात से किसी का सीना या हाथ टूटा तो कोई खड्ग से अंग-प्रत्यंग काटने लगा। इधर सारे कपि घोर नाद करते हुए राक्षसों पर इस प्रकार पेड़ और पत्थर बरसाने लगे मानों उल्कापात हो रहा हो। इससे कितने ही निशाचरों के सिर और शरीर टूटे। उल्का की आग से कितने ही निशाचर मर गये। कोई घूँसा मारकर सिर तोड़ने लगा तो कोई पदाघात से वक्ष। दाँत और नाखूनों से कोई सीना, पेट, सिर चीरने लगा। कोई कपि किसी के घोड़े को उठाकर जमीन पर पटक देता तो कोई कपि किसी हाथी को। कोई तो लात जमाकर सारथी, अश्व और ध्वजा समेत रथ को तोड़ देता। कितने ही निशाचर धनुष-बाण और असि छोड़कर हाथापाई का युद्ध करने लगे। कोई चपेटाघात करता तो कोई झाँपड़ मारता और कोई मुक्का। पाँच-सात राक्षस मिलकर एक वानर को धर दबाते। अस्त्र आदि के प्रहार से उसका अंग छिन्न-भिन्न कर उसके प्राण हर लेते। इसी प्रकार कई कपि एक निशाचर को पकड़कर घूँसा-मुक्का मारते और नाखून से उसको चीर डालते। ऐसे तुमुल समर से घबड़ा कर कपि जाम्बवान रोने लग गये। हाय-हाय अब तो

एरूप तुमुल, समरे व्याकुल, कान्दे कपि जाम्बवान।
म'ल रे म'ल रे, गेल रे गेल रे, आर ना रहिल प्राण ।।
बड़ वीरसब, करि घोर-रव, कहितेछे बार-बार।
धर धर धर, मार मार मार, पुना राखिब रि आर ।।
एइ त प्रकारे, तुमुल समरे, मातिया कोपेर मरे।
कृत्तिवास भणे, राम-दशानने, सेना हानाहानि करे ३७।

तार मध्ये वज्रकण्ठे-नामे निशाचर ※ मारिलेक गाढ़ गदा अंगद-उपर
किछुकाल काँपि ताहे कपीन्द्र-कुमार ※ सुस्थ हये शीघ्र पुनः कैल आगुसार
करे धरि एकखान शिखरि-शिखर ※ मारिलेक वज्रकण्ठ-मस्तक-उपर
ताहार प्रहारे प्राण परित्याग करि ※ वज्रकण्ठ-वीर पड़े वसुधा-उपरि
ताहा देखि कोपेते कम्पित संकम्पन ※ रणे प्रवेशिल करि रथे आरोहण
सेह वेगे वृष्टि करि बाण बहुतर ※ अंगदेर अंगगणे करिल जर्ज्जर
शत्रुसुत-सुत सहि से-सकल शरे ※ लाफ दिया उठे तार रथेर उपरे
तार कर हइते कोदण्ड काड़ि लैया ※ चरण-चापने तारे फेलिल भांगिया
पदाघाते रथखान करि प्रमथन ※ नाशिला नखरे करि तुरंगमगण
स्यन्दन छाड़िया तबे सेइ संकम्पन ※ आकाशे उठिल खड्ग करिया धारण
ताहादेखि महाबल बालिर नन्दन ※ लम्फ दिया तार पिछे करिल धावन
किञ्चित् दूरेते तारे बले करे धरि ※ काड़िया लइल तार खड्ग आर फरी

प्राण बचने वाले नहीं। बड़े-बड़े वीर घोर-नाद करते हुए बार-बार कहने लगे—पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो, शत्रु एक भी न बच सके। कृत्तिवास कहते हैं कि इसी प्रकार घोर समर में प्रचंड क्रोध में उन्मत्त हो राम और दशानन की सेना एक दूसरे पर प्रहार करने लगी ।। ३७ ।।

उनमें एक वज्रकंठ नाम का निशाचर था जिसने अंगद के शरीर पर गदा का पूर्ण प्रहार किया। इससे कपीन्द्रकुमार कुछ देर के लिए लड़खड़ा गये किन्तु शीघ्र ही स्वस्थ होकर आगे बढ़े। एक पर्वत को चोटी समेत उखाड़ कर उन्होंने वज्रकंठ के सिर पर दे मारा। उस प्रहार से वीर वज्रकंठ ने प्राण त्याग दिया और धरती पर जा गिरा। यह देखकर क्रोध से काँपते हुए संकम्पन ने रथ में सवार हो रणक्षेत्र में प्रवेश किया। उसने वेग से बाण बरसाते हुए अंगद के अंग-अंग को छलनी बना दिया। शक्र-सुत (बालि) के पुत्र ने इन बाणों को सहन किया, फिर उछलकर वह उस रथ पर चढ़ गया। उसके हाथों से धनुष छीन कर पैरों से दबाकर तोड़ डाला। पदाघात से रथ को चूर्ण-विचूर्णकर नखों से उसने अश्वों को मार डाला। तब रथ छोड़ कर संकम्पन ने खड्ग ले लिया और आकाश में चढ़ गया। यह देखकर महाबली बालीनन्दन (अंगद) भी कूद कर उसके पीछे दौड़ा। कुछ ही दूर

तबे सिंहनाद करि अति कुतूहले ❊ सेइ खड्ग धरि कोप दिला तार गले
ताहे छिन्न ह'ये सेह येन उपवीत ❊ आकाशे हइते हैल भूतले पतित
तबे सिंहनाद करि बालिर कुमार ❊ भूतले नामिल शब्द करि मार मार
तबे शोणिताक्ष-वीर लौह-गदा धरि ❊ उपस्थित हइल अंगद-बराबरि
प्रजंघ यूपाक्ष नामे आर दुइजन ❊ रथे चड़ि तार काछे करिल धावन
श्रीमैन्द द्विविद दुइ वीर ता' देखिया ❊ अंगदेर दुइ पाशे दाँड़ाल आसिया
तबे सेइ निशाचर-तिनजन-संगे ❊ तिन कपि-वीर युद्ध आरम्भिल रंगे
नानावृक्ष उपाड़िया कपि तिनजन ❊ करितेछे तिन निशाचरे निक्षेपण
ताहा देखि खड्ग धरि राक्षस प्रजंघ ❊ खण्ड-खण्ड करि काटे सेइ वृक्षसंघ
तबे सेइ तिनजन शाखामृगवर ❊ निक्षेप करिला रथ-तुरंग-कुञ्जर
निरीक्षण करिया यूपाक्ष रणे दक्ष ❊ काटिल से-सब एड़ि शर लक्ष-लक्ष
तबे पुनः श्रीमैन्द द्विविद बालिसुत ❊ वर्षण करये वृक्ष बहुत-बहुत
शोणिताक्ष से-सकल सत्वर हइया ❊ चूर्ण करि दिल गुरु गदा घुराइया
परेते प्रजंघ खरशान खड्ग धरि ❊ बालिपुत्रे बधिवारे आसे त्वरा करि
निकटे निरखि तारे तारार तनय ❊ सन्धान करिल शालशाखी अतिशय
सेइ त तरुते तारे ताड़न करिला ❊ आर तार बाहुमूले मुटकि मारिला
प्रजंघेर बाहु ताहे विभिन्न हइल ❊ हस्त हैते खड्गखान खसिया पड़िल

पर उसने उसको पकड़ लिया और अपनी शक्ति से उसके खड्ग और ढाल छीन लिये। फिर सिंहनाद करते हुए उसी खड्ग से उसने उसके गले पर वार किया, जिससे उसका गला जनेऊ की तरह कट कर गिरा और वह आकाश से धरती पर आ गिरा। फिर सिंहनाद करते हुए बालीनन्दन धरती पर मार-मार करते हुए उतरे। फिर वीर शोणिताक्ष लौहगदा लेकर अंगद के सामने उपस्थित हुआ। तब प्रजंघ और यूपाक्ष नामक और दो राक्षस रथ पर सवार हो उनकी ओर लपके। यह देखकर श्रीमैन्द और द्विविद नामक दो वीर, अंगद के दोनों ओर आकर खड़े हो गये। फिर उन तीनों निशाचरों के साथ तीन कपि-वीर युद्ध करने लग गये। तीनों कपि तरह-तरह के वृक्ष उखाड़ कर तीन निशाचरों पर फेंकने लगे। यह देखकर राक्षस प्रजंघ ने खड्ग लेकर उन वृक्षों को खंड-खंड कर दिया। तब उन तीनों शाखा-मृगों (वानरों) ने रथ, तुरंग और कुंजर फेंकना आरम्भ कर दिया। रण में दक्ष यूपाक्ष ने लाख-लाख बाण फेंककर उनको नष्ट किया। तो फिर श्रीमैन्द, द्विविद और अंगद अनेक वृक्ष फेंकने लग गये। शोणिताक्ष ने उन सभी को भारी गदा घुमाते हुए चूर्ण कर डाला। बाद में प्रजंघ तेज खड्ग लेकर बालीपुत्र का वध करने के लिए दौड़ा। तारा के तनय (अंगद) ने उनको निकट देख एक शाल वृक्ष उखाड़ कर उन पर दे मारा। उस वृक्ष की चोट के अतिरिक्त उसकी बाँह पर उसने एक मुक्का भी जमा दिया जिससे

स्थिर ह'ये प्रजंघ परेते किछुकाले ※ मारिल प्रबल मुष्ठि अंगद-कपाले
ताहे दुइ-दण्ड-काल रहि अचेतन ※ चेतन पाइल पुनः बालिर नन्दन
सुगभीर सिंहनाद करि कोपभरे ※ प्रजंघ-उपरे मुष्ठि मारिल निर्भरे
ताहाते विदीर्ण हैल महामुण्ड तार ※ पड़िल से, येन वज्राहत शैलसार ३८
क्षीणशर हइया यूपाक्ष खड्‌ग धरि ※ मारिवारे जाय तथा रथ परिहरि
तबे से यूपाक्ष वीरे मुटकि मारिया ※ धरिल श्रीमैन्द तारे बाहुते बेड़िया
एहेन समये शोणिताक्ष महासार ※ द्विविदेर वक्षे कैल गदार प्रहार
ताहे हत हैया सेइ अश्वीर नन्दन ※ किछुकाल रहिला कातर अचेतन
पुनः शोणिताक्ष जबे घुराय गदारे ※ सेइकाले धरि काड़ि लइल ताहारे
तबे त यूपाक्ष शोणिताक्ष दुइजन ※ श्रीमैन्द-द्विविद-संगे करे बहु-रण
केह कोनजने कभु करे आकर्षण ※ केह कोनजने करे दृढ़ आलिंगन
केह कोनजने कभु ठेलि ल'ये जाय ※ केह कोनजने कभु बलेते घुराय
केह कोनजने कभु तुले उपरेते ※ केह कोनजने कभु फेले धरणीते
मध्ये मध्ये मुष्ट्याघात-कराघात करे ※ कभु विदारण करे दशन-नखरे
एइरूपे किछुकाल तुल्य हैल रण ※ परे अति कुपिल कपीन्द्र दुइजन २३९

प्रजंघ की बाँह टूट गई और हाथ से खड्ग नीचे गिर गया। कुछ देर में प्रजंघ स्थिर हुआ तो अंगद के माथे पर उसने एक घूँसा जमा दिया। इससे दो दंड अचेतन रहने के बाद बालीनन्दन होश में आए। क्रोध से सिंहनाद करते हुए उन्होंने प्रजंघ पर घूँसा जमाया। इससे उसका महामुंड टूट गया और वह वज्र के आघात से विदीर्ण पर्वत की भाँति गिर पड़ा ॥ ३८ ॥

तब धनुष-बाण से रहित होकर यूपाक्ष ने खड्ग थाम लिया और रथ का परित्याग कर उसको मारने के लिए चल पड़ा। तब श्रीमैन्द ने वीर यूपाक्ष को मुक्का मार उसे बाँहों से जकड़ लिया। ऐसे ही समय बलवान शोणिताक्ष ने द्विविद के वक्ष पर गदा का प्रहार किया। उससे घायल होकर अश्विनी-कुमार का नन्दन द्विविद कुछ देर तक अचेतन पड़ा रहा। जब शोणिताक्ष ने फिर गदा घुमाई तो उसने उसको पकड़ कर छीन लिया। फिर तो यूपाक्ष और शोणिताक्ष दोनों मिलकर श्रीमैन्द और द्विविद के साथ मल्लयुद्ध करने लगे। कोई किसी को कभी खींचता तो कोई किसी को बाहुपाश में कस कर बाँध लेता। कोई किसी को धकेलता हुआ ले जाता तो कोई किसी को बल से घुमाने लग जाता। कोई किसी को ऊपर उठा लेता तो कोई किसी को धरती पर पटक देता। कभी-कभी वे झाँपड़ और चाँटा जमाते तो कभी दाँत और नाखून से घायल करने लगते। इस प्रकार कुछ देर तक बराबर लड़ाई चलती रही, यहाँ तक कि दोनों कपीन्द्र अत्यन्त क्रोधित हो उठे ॥ २३९ ॥

तार मध्ये शोणिताक्षे द्विविद-वानर ※ नखे विदारण करि करिला जर्ज्जर
आर तार दुइ भुज धरि घुराइया ※मारिलेक ताहारे भूतले आछाड़िया२४०
श्रीमैन्द यूपाक्ष-सने करि बाहु-रण ※ परे तार भुजे धरि करिल चापन
ताहाते यूपाक्ष करि शव्द घोरतर ※ चलि गेल देखिवारे प्रेत-पुरीश्वर ४१
तबे विरूपाक्ष-नामे एक निशाचर ※ कपि-सैन्य-उपरे वर्षन करे शर
सहिते ना पारि तार शरेर प्रहार ※ समर त्यजिया कपि पलाय अपार
ताहा देखि मैन्द एक महीधर धरि ※ निक्षेपिल विरूपाक्ष-मस्तक-उपरि
ताहे हत ह'ये विरूपाक्ष निशाचर ※ भूतले पड़िल, येन छिन्न धराधर ४२
तबे मैन्द महाघोर सिंहनाद करि ※ वधिते लागिला मुष्टि मारि सब अरि
ताहा देखि विद्युन्माली-नामे जातुधान※ रथे थाकि वृष्टि करे वहुतर बाण
दशदिक् आच्छादन करि सेह शरे ※ बिन्धिते लागिल यत भल्लूक-वानरे
तार शराघाते केह स्थिर हैते नारे ※ वासना करये रण छाड़ि पलावारे
ताहा निरखिया नल ल'ये तरु-शिला ※ विद्युन्माली बधिवारे वर्षिते लागिला
सेह शत-शत शर करिया वर्णन ※ सेइसब शाखी शिला करिला कर्त्तन
पुनश्च नलेर प्राण विनाश करिते ※ कोदण्ड कर्षिया काण्ड लागिल एड़िते

तब द्विविद वानर ने शोणिताक्ष को नखों के आघात से लहूलुहान कर दिया। फिर उसके दोनों हाथों को पकड़ कर उसको घुमाया और धरती पर पटक कर मार डाला ॥ २४० ॥

श्रीमैन्द ने यूपाक्ष के साथ कुछ देर मल्लयुद्ध किया। फिर उसको बाहों से बाँध कर दबाने लग गया। इससे यूपाक्ष ने घोर चीत्कार कर प्रेतपुरी के प्रभु (यम) को देखने के लिए प्रस्थान किया ॥ ४१ ॥

फिर विरूपाक्ष नामक एक निशाचर वानरों पर वाण बरसाने लगा। उसके बाणों का प्रहार सह न सकने के कारण बहुत सारे कपि समरभूमि त्याग कर भागने लग गये। यह देखकर मैन्द ने एक पहाड़ पकड़ कर विरूपाक्ष के सिर पर फेंका। इससे घायल होकर निशाचर विरूपाक्ष यों भूमि पर जा गिरा मानों पहाड़ टूट पड़ा हो ॥ ४२ ॥

तब मैन्द घोर सिंहनाद करते हुए घूँसा मार-मार कर सारे शत्रुओं का वध करने लगा। यह देखकर विद्युन्माली नामक राक्षस रथ पर चढ़ कर अनेक वाण बरसाने लगा। उन बाणों से दशों दिशाएँ छा गईं, भालू और बानरों के शरीर में वे वाण जाकर चुभने लगे। उसके शराघात के सामने कोई टिक नहीं पाता और सभी का जी करने लगता कि रण छोड़कर भाग जायँ। यह देखकर नल वृक्ष और शिला लेकर विद्युन्माली का वध करने के लिए उस पर बरसाने लगा। वह विद्युन्माली भी शत-शत बाणों की वर्षा करते हुए उन वृक्ष और शिलाओं को काटता रहा। फिर नल के प्राण लेने

से-सकल शरे विश्वकर्म्मार नन्दन ※ शाल-शिला फेलाइया करिल वारण
एइरूपे नल वृष्टि करे वृक्षगण ※ विद्युन्माली करे ताहा वाणेते छेदन
विद्युन्माली यावतीय शर-वृष्टि करे ※ नल ताहा निवारये पादप-प्रस्तरे
एइरूपे किछुकाल सेइ दुइजन ※ करिलेक समभावे घोरतर रण
तबे सेइ निशाचर निःशर हइया ※ कहितेछे नल-प्रति चातुरी करिया
विश्वकर्मा-पुत्र, आजि तोमा-सह रणे ※ बड़इ आनन्द आमि पाइलाम मने
देखिया तोमार बल-विक्रम अपार ※ इच्छा हय बाहुयुद्ध करिते आमार
बलये विश्वकर्म्मार नन्दन ताहारे ※ आमारो वासना एइ अन्तर-माझारे
ताहा शुनि रथ हैते राक्षस नामिल ※ तबे दुइ वीरे बाहुयुद्ध आरम्भिल
हाते-हाते भुजे-भुजे कपाले-कपाले ※ बुके-बुके प्रहार करये दुइ शाले
उन्मत्त मातङ्ग येन दशने-दशने ※ युद्ध करे हेन शब्द हय घने-घने
वज्रेर समान अंग उभयेर हय ※ काहारो प्रहारे कोनजन व्यग्र नय
कभु बाहु-प्रहार करये कोनजन ※ वज्रेते करये येन विकट निःस्वन
कभु नले ठेलि ल'ये जाय विद्युन्माली ※ कभु विद्युन्मालीरे से नल बलशाली
कभु आकर्षये, कभु करे उत्तोलन ※ कभु चापि धरे, कभु करये पातन
मुष्टि-दन्त-नखे कभु करये प्रहार ※ दुइ सिंहे करे येन युद्ध अनिवार

के लिए वह धनुष खींच कर शर-वर्षा करता रहा। विश्वकर्मा-नन्दन नल ने उन वाणों का निवारण पादप-प्रस्तर फेंक कर किया। इस प्रकार नल ने जितने वृक्ष फेंके विद्युन्माली ने उनको वाणों से काट डाला। और विद्युन्माली ने जितने वाण बरसाये नल ने उनका निवारण पादपों और प्रस्तरों से किया। इस प्रकार कुछ समय तक ये दोनों समान रूप से घोरतर युद्ध करते रहे। फिर जब उस राक्षस के पास सारे वाण चुक गये तो उसने चतुराई से नल से कहा, हे विश्वकर्मा-नन्दन, आज तुम्हारे साथ युद्ध करते हुए मुझको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। तुम्हारा बल-विक्रम देखकर तुम्हारे साथ बाहुयुद्ध करने की इच्छा हो रही है। विश्वकर्मा के पुत्र ने भी जवाब दिया, मेरी भी आन्तरिक अभिलाषा ऐसी ही है। यह सुनकर राक्षस रथ से उतर आया और दोनों में बाहु-युद्ध छिड़ गया। हाथ हाथ पर, और बाँह बाँह पर, माथा माथे पर और वक्ष वक्ष पर, मानों दो शालवृक्ष एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। मानों दो मत्त-मातंग हों, यों दाँत किटकिटा कर युद्ध करने का शब्द होने लगा। दोनों के अंग ही वज्र के समान हैं। किसी के भी प्रहार से कोई व्याकुल नहीं होता। कभी कोई हाथों से ऐसा प्रहार करता मानों वज्रपात का घोर नाद हुआ। कभी नल को धकेलता हुआ विद्युन्माली ले जाता, तो कभी बलशाली नल विद्युन्माली को। कभी घसीटते तो कभी ऊपर उठा लेते, कभी धर दबाते तो कभी पटक देते। कभी नख, दन्त और मुष्टि से प्रहार करते। दो

एइरूपे दुइ-दण्डकाल दुइजन ※ करिलेक न्यूनाधिक्य-शून्य बाहु-रण
तबे त नलेर बल ना पारि सहिते ※ विद्युम्माली हस्त तार छाड़िल श्रान्तिते
पुनर्व्वार रथे शीघ्र करि आरोहण ※ अति-घोर शक्ति एक करिल क्षेपण
ताहा देखि नल एक गिरिशृंग धरि ※ विद्युम्माली-उपरे छाड़िल क्रोध करि
सेइ शृंगे पाड़े रथ सारथि-सहित ※ विद्युम्माली त्यजे प्राण हइया चूर्णित ४३
तबे भीत ह'ये यत निशाचर गण ※ कुम्भकर्ण-पुत्र-काछे करे पलायन
ताहा देखि रणमत्त वानर-निकर ※ घन-घन सिंहनाद करे घोरतर
ताहा देखि कुम्भ-वीर अधिक कुपिल ※ स्वसैन्ये सान्त्वना करि समरे साजिल
कुम्भ-वीरे देखिया पलाय कपिगण ※ महेन्द्र देवेन्द्र आर वालिर नन्दन
साहसे करिया भर गेल तिनजन ※ कुम्भेर सहित गिया आरम्भिल रण
महेन्द्र देवेन्द्र तबे दुइ वीरवर ※ गाछ-पाथर ल'ये फेले कुम्भेर उपर
गाछ-पाथर काटि पाड़े चोख-चोख शरे ※ विन्धिया जर्ज्जर कैल महेन्द्र-वानरे
महेन्द्र कातर देखि देवेन्द्र चिन्तित ※ त्रिश-योजन गिरि एक आनिल त्वरित
त्रिश-योजन पर्व्वत एड़िल दिया टान ※ कुम्भ-वीर-बाणेते हइल खान-खान
बाणेते पर्व्वत काटि खान-खान करे ※ विन्धिया जर्ज्जर करे देवेन्द्र-वानरे
महेन्द्र देवेन्द्र दोंहे हैल अचेतन ※ कोपेते पर्व्वत एड़े वालिर नन्दन

सिंह मानों लगातार लड़ते जा रहे हैं, इस प्रकार वे दोनों दो दंड से अधिक समय तक बराबरी का बाहु-युद्ध करते रहे। फिर नल का बल सहन न कर सकने से विद्युन्माली ने थक कर अपने हाथ लटका लिये। फिर फुरती से रथ पर सवार होकर उसने एक शक्ति फेंक कर मारी। यह देखकर नल ने पर्वत की एक चोटी उखाड़ कर विद्युन्माली के ऊपर दे मारी। उस चोटी के प्रहार से रथ और सारथी के सहित विद्युन्माली ने चूर्ण-विचूर्ण होते हुए प्राण त्याग किया ॥ ४३ ॥

तब भयभीत होकर सारे राक्षस कुम्भकर्ण-पुत्र की ओर भागे। यह देख कर सारा वानर-समुदाय जोर से सिंहनाद करने लग गया। यह देखकर वीर कुम्भ अत्यन्त क्रोधित हुआ और अपनी सेना को सँजो कर रण के लिए तैयार हुआ। वीर कुम्भ को देखकर सारे कपि भागने लग गये। यह देखकर महेन्द्र, देवेन्द्र और बालीनन्दन साहस करते हुए आगे बढ़े। आगे बढ़कर वे कुम्भ के साथ युद्ध करने लग गये। दोनों वीर महेन्द्र और देवेन्द्र पेड़-पत्थर लाकर कुम्भ पर फेंकने लगे। पैने-पैने बाणों से पेड़-पत्थर को काट कर (कुम्भ ने) महेन्द्र वानर को बाणों से छेद दिया। महेन्द्र को कातर देखकर देवेन्द्र चिन्तित हुआ और तीस योजन वाला एक पर्वत झटपट उठा लाया। तीस योजन वाला वह पर्वत जब उसने फेंक कर मारा तो कुम्भ-वीर के बाणों से वह खंड-खंड हो गया। बाणों से पर्वत को खंड-खंड काट डालने के बाद

अंगदेर पर्व्वत बाणेते फेले केटे ❀ शतबाण अंगदेर मारिल ललाटे
बाणेते अङ्गद-वीर डाके परित्राहि ❀ सकल वानर गेल रघुनाथ ठाँहि
तिनवीर अचेतन शुनि एइ कथा ❀ मनेते श्रीरामचन्द्र पाइलेन व्यथा ४४
ऋषभ कुमुद आर सुषेण सेनापति ❀ तिनवीरे रघुनाथ करिला आरति
श्रीरामेर आज्ञा पेये चले तिनजन ❀ आकाश छाइया करे वृक्ष-वरिषण
कुपिल से कुम्भ-वीर पूरिया सन्धान ❀ तिनवीरेर गाछ-पाथर करे खान-खान
जर्ज्जर हइल तारा कुम्भ-वीर-बाणे ❀ भय पेये तिनजन भंग दिल रणे ४५
तिनवीर पलाइया सुग्रीवेरे कय ❀ रुषिल सुग्रीव-राजा संग्रामे दुर्ज्जय
कुपिया सुग्रीव-वीर एकलाफे जाय ❀ पाकल करिया आँखि कुम्भ-वीरे चाय
कुम्भ बले, वानरा रे, बेड़ास डाले डाले ❀ तोर एत विक्रम ना छिल कोनकाले
सुग्रीव बलिछे, द्वन्द्व नाहि कारो सने ❀ ना जान विक्रम तुमि एइ से कारणे
तोर सने रणे करि विक्रम-परीक्षा ❀ पड़िलि आमार हाते, नाहि तोर रक्षा
यमराज जेगे ब'से, आछे तोर तरे ❀ देखाब विक्रम आजि, जावि यमघरे
तोर पिता कुम्भकर्ण, से जाने विक्रम ❀ क्षणेक विलम्ब कर, देखाइब यम

देवेन्द्र वानर को उसने बाणों से बिंध डाला। महेन्द्र और देवेन्द्र दोनों जब अचेतन हो गये तो बाली के नन्दन ने क्रोध से एक पर्वत फेंका। बाणों से अंगद के फेंके हुए पर्वत को खंड-खंड करने के बाद उसने अंगद के ललाट पर सौ बाण मारे। बाणों के मारे जब अंगद त्राहि-त्राहि मचाने लगा तो सारे वानर रघुनाथ के पास गये। यह सुनकर कि तीनों वीर अचेतन हो गये हैं श्रीरामचन्द्र व्यथित हुए॥ ४४॥

तब रघुनाथ ने ऋषभ, कुमुद और सुषेण सेनापति को आदेश दिया। श्रीरामचन्द्र की आज्ञा पाकर तीनों वीर चल पड़े। उन्होंने इस प्रकार वृक्ष बरसाना शुरू किया कि आकाश छा गया। इससे कुम्भवीर अत्यन्त क्रोधित हो बाण चलाने और तीनों वीरों द्वारा फेंके पेड़-पत्थरों को खंड-खंड करने लगा। कुम्भवीर के साथ युद्ध में घायल हो वे तीनों ही डर कर भाग खड़े हुए॥ ४५॥

तीनों वीर भाग कर राजा सुग्रीव के पास गये और सारा व्योरा सुनाया। संग्राम में दुर्जय राजा सुग्रीव यह सुनकर अत्यन्त रुष्ट हुए। रोष से एक-छलाँग में राजा सुग्रीव वहाँ पहुँचे और आँखें तरेर कर कुम्भवीर को देखने लगे। कुम्भ कहता, अरे वानर, तू डाली-डाली पर विचरता रहता है, तुझमें इतना पराक्रम तो कभी नहीं था। सुग्रीव ने कहा, किसी के साथ हम लोगों का झगड़ा नहीं था इसीलिए तुझको हमारे पराक्रम का पता नहीं चला। तेरे साथ युद्ध में पराक्रम की परीक्षा हो रही है, तू, मेरे हाथों में आ गया है अब तेरी रक्षा नहीं। तेरे लिए यमराज प्रतीक्षा में जागते हुए बैठे हैं, आज मैं

कुपिया से कुम्भ-वीर तीक्ष्ण वाण जोड़े ※ तिनशत वाण राजा सुग्रीवेरे एड़े
वाण खेये सुग्रीव ये चिन्तित अन्तर ※ लाफ दिया पड़े तार रथेर उपर
धनुक धरिया टाने, केड़े निते नारे ※ रथ हैते कुम्भ-वीर फेले सुग्रीवेरे
आछाड़ खाइया राजा हैल अचेतन ※ चेतन पाइया पुनः वले ततक्षण
तोर बापेर जाठा ये निलाम एकहाते ※ तोर हातेर धनुखान नारिनु छाड़ाते
बापेर समान तुइ वीर-चूड़ामणि ※ इन्द्रजितार सम तोर धनुक वाखानि
कुम्भ-वीर बले, धनु दूरे परिहरि ※ रिक्तहस्ते आइस दु'जने युद्ध करि
अस्त्र फेलि दुइजने करे हुड़ाहुड़ि ※ हुड़ाहुड़ि घुचिले लागिल जड़ाजड़ि
कुम्भ-वीर चापड़ मारिल बाहुवले ※ पड़िल सुग्रीव-राजा समुद्रेर जले
रामेर किङ्कर देखि सागर गभीर ※ मध्ये चड़ा पड़िल, हइल अल्प नीर
माटीते दाण्डाये फिरे आइल एकलाफे ※ कुम्भ-वीर विक्रमे सुग्रीव-राजा काँपे
पुनः कोपे कुम्भ-वीर मुष्ट्याघातमारे ※ पड़िल सुग्रीव-राजा दुर्ज्जय-प्रहारे
चैतन्य हाराय, मुखे उठे रक्त-फेना ※ सुमेरु-पर्व्वते येन पड़िल झञ्झना
संवित् पाइया उठि वानरेर नाथ ※ कुम्भ-वीर उपरे करिल पदाघात

अपना पराक्रम दिखाऊँगा और तू यमसदन जायेगा। तेरा पिता कुम्भकर्ण मेरा पराक्रम जानता था, थोड़ा सा ठहर जा, तेरी यम से भेंट करा दूँ। तब कुपित होकर कुम्भवीर ने पैने वाण चलाये और तीन सौ वाण सुग्रीव को आ लगे। वाण के आघात से सुग्रीव चिन्तित हुआ और कूद कर उसके रथ पर चढ़ गया। रथ पर चढ़कर वह उसका धनुष पकड़ कर खींचने लगा, लेकिन छीन न सका। रथ से कुम्भवीर ने सुग्रीव को नीचे गिरा दिया, नीचे गिर कर सुग्रीव अचेतन हो गया। चेतना पाकर फिर उसने कहा, तेरे बाप के हाथ से मैंने शेल एक हाथ से छीन लिया था और तेरे हाथ का धनुष मैं दोनों हाथों से न छीन सका। तू अपने बाप के समान ही वीर-चूड़ामणि है और इन्द्रजीत जैसा ही तेरे धनुष की ख्याति है। तब वीर कुम्भ ने कहा, आओ धनुष को फेंककर हमलोग खुले हाथ लड़ें। तब अस्त्र फेंक कर दोनों दाँव-पेच करने लगे। हाथापाई करते-करते दोनों में गुत्थम-गुत्था शुरू हो गया। कुम्भवीर ने एक चपेट मारा तो राजा सुग्रीव समुद्र के जल में जा गिरे। राम के किंकर को देखकर गहरा समुद्र उस स्थान पर छिछला हो गया। जमीन पर खड़े होने के बाद सुग्रीव फिर एक छलाँग में वहाँ लौट आया। कुम्भ-वीर के पराक्रम से राजा सुग्रीव काँपने लगे। फिर क्रुद्ध होकर कुम्भवीर ने सुग्रीव पर मुष्टि-प्रहार किया, मार खाकर राजा सुग्रीव फिर भूमि पर गिर पड़े। उनके मुँह से खून और भाग निकलने लगा। चेतना खोकर वे यों गिरे मानो सुमेरु पर्वत गिर पड़ा हो। जब वानरों के पति सुग्रीव फिर होश में आए तो उठ खड़े हुए और कुम्भवीर पर पदाघात किया। गुस्से में आकर

महाकोपे कुम्भ-वीर धरे सुग्रीवेरे ※ दुइजने मल्लयुद्ध, केह नाहि हारे
दुइसिंह युद्धे येन छाड़े सिंहनाद ※ दुइ वीरे महायुद्ध, नाहि अवसाद
लाफ दिया सुग्रीव ताहार रथे च'ड़े ※ दुइ मातंगेर दन्त दु-हाते उपाड़े
लइया हस्तीर दन्त कुम्भ-वीरे हानि ※ दन्ताघाते कुम्भेर जर्ज्जर हैल प्राणी
ऊर्द्धते कुम्भेरे तुलि मारिल आछाड़ ※ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़ ४६
देखिया निकुम्भ-वीर भ्रातार निधन ※ सुग्रीवे रुषिया जाय करिया तर्ज्जन
निकुम्भेर मुषल से पर्व्वत-सोसर ※ मुषल मारिते जाय सुग्रीव-उपर
दम्भ करि मुषलेते घन देय पाक ※ घुराय मुषल येन कुलालेर चाक
विक्रम करिया छुटे संग्रामेर स्थले ※ प्रबल आगुन येन घृत पेले ज्वले
निकुम्भेर विक्रम देखिया लागे डर ※ भये पलाइया गेल सुग्रीव-वानर ४७
भयेते सुग्रीव-राजा नहे आगुयान ※ सुग्रीवेर भंग देखि रोषे हनूमान
सेवक थाकिते तोर राजा-सने रण ※ तोते मोते जुझि, देखि मरे कोनजन
निकुम्भ कहिछे, बेटा घरपोड़ा शोन ※ तोरे पेले आर नाहि चाहि अन्यजन
एत यदि दुइजने हैल गालागालि ※ दुइजने युद्ध बाजे, दोंहे महाबली
लोहार मुषल छिल निकुम्भेर हाते ※ रुषिया मारिल वीर हनूमान-माथे
हनूमानेर माथा येन वज्रेर समान ※ माथाय मुषल-गोटा हैल खान-खान

कुम्भवीर सुग्रीव से लिपट गया और दोनों में मल्लयुद्ध होने लगा; उनमें कोई भी हार नहीं मानता था। मानों दोनों ही युद्ध में रत दो सिंह हों, वे बार बार सिंहनाद करने लगे। दोनों वीरों में महायुद्ध होने लगा, उन दोनों में कोई भी थकने वाला नहीं था। मातंग के दो दाँतों को दोनों हाथों से उखाड़ कर सुग्रीव कुंभ के रथ पर चढ़ गया। हाथी के दाँत से उसने कुम्भवीर पर प्रहार किया तो कुम्भवीर की जान साँसत में पड़ गई। कुम्भ को ऊपर उठा कर उसने जमीन पर दे मारा। उसका खोपड़ा टूट गया और हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं॥ ४६॥

भाई का निधन देखकर वीर निकुम्भ परम क्रोध से सुग्रीव की ओर लपका। निकुम्भ के हाथ का मूसल पर्वत के समान है, उसी मूसल से वह सुग्रीव पर प्रहार करने लगा। दंभ से वह मूसल को बार-बार यों घुमाने लगा मानों कुम्हार का चाक हो। संग्राम-भूमि पर वह इस प्रकार पराक्रम के साथ दौड़ा जिस प्रकार प्रबल अग्नि में घी पड़ने पर वह भभक उठता है। निकुम्भ का पराक्रम देखकर भयभीत राजा सुग्रीव वहाँ से भाग गया॥ ४७॥

भय के मारे राजा सुग्रीव आगे बढ़े। सुग्रीव को इस प्रकार हिम्मत हारते देखकर हनुमान क्रोधित हुए। वह कुंभ से बोले सेवक के रहते हुए तू राजा से क्या लड़ेगा। आ जा हम और तू निबट लें, देखा जाय कौन मरता है। निकुम्भ ने कहा, अरे घर जलाने वाले सुन, तू मिल जाय तो मुझे और किसी

हनूमान वले,तोर मुषल गेल तल * मोर घा सह रे बेटा, तवे जानि वल
आपना पासरे कोपे वीर हनूमान * निकुम्भे मारिल चड़ वज्रेर समान
चापड़ खाइया वीर काँपे थरहरि * भंग नाहि देय रणे विक्रमे केशरी
हनूमान-पाने वीर चाहे एक दृष्टि * कोपे हनूमान-वुके मारे वज्रमुष्टि
मुष्ट्याघाते हनूमान हैल अचेतन * हनू कोले करि जाय भेटिते रावण
प्रथम बृहन्दे जाय कोपे करि भर * द्वितीय वृहन्दे परे चले निशाचर
चलि जाय निकुम्भ जे परम-हरिषे * हनूमाने देखिते रमणी सब आसे
निकुम्भेरे नारीगण धन्य धन्य वले * भाल कैले, घरपोड़ा धरिया आनिले
सुग्रीवेरे बन्दी क'रेछिल तव वापे * घरपोड़ा हैल वन्दी तोमार प्रतापे
घरपोड़ा बेटा घर पोड़ाइते मन * समुद्र लङ्घिया आसे, दुर्ज्जय एमन ४८
निकुम्भेर कोले हनू पाइल चेतन * कि वुझि करिवे हनू, भाविछे तखन
सर्व्व-अंग विदारिल आँचड़-कामड़े * दुइ-कान छिंड़िनिल हातेर मोचड़े
परित्राहि डाके वीर, छाड़ छाड़ वले * भय पेये छुँड़े फेले गगन-मण्डले

की आवश्यकता भी नहीं। दोनों में जव इस प्रकार गाली-गलौज हो चुका तो दोनों महावलियों में युद्ध ठन गया। निकुम्भ के हाथों में लोहे का मूसल था—रोष में आकर उसने हनुमान के सिर पर उसका प्रहार किया। हनुमान का सिर मानों वज्र के समान हो, जिससे टकराकर मूसल टुकड़ा-टुकड़ा हो गया। हनुमान ने कहा, तेरा मूसल तो वेकार हो गया, अव मेरी चोट सह ले तो समझूँ कि तुझमें वल है। अपने क्रोध को सँभालते हुए वीर हनुमान ने निकुम्भ पर वज्र सा एक झाँपड़ जमाया। झाँपड़ खाकर वह वीर थर-थर काँपने लगा लेकिन पराक्रम में सिंह के समान वह वीर रणक्षेत्र से भागा नहीं। वह वीर हनुमान की ओर एकटक देखता रहा फिर क्रोध से उसने हनुमान के वक्ष पर एक मुक्का मारा। मुष्टि के आघात से हनुमान अचेतन हो गया तो उसको गोद में उठाकर निकुम्भ रावण को भेंट देने चल पड़ा। पहली ड्योढ़ी निकुम्भ ने सक्रोध पार की, दूसरी ड्योढ़ी में वह सहर्ष चलने लगा। हनुमान को देखने के लिए सारी रमणियाँ दौड़ पड़ीं। निकुम्भ को सारी नारियाँ धन्य-धन्य कहने लगीं। वे कहने लगीं अच्छा ही किया कि इस घर जलाने वाले को तुम पकड़ लाए। तुम्हारे वाप ने सुग्रीव को वन्दी वनाया था और तुमने अपने प्रताप से घर जलाने वाले को वन्दी वनाया। यह मुँहजला घर जलाने में ही दक्ष है, ऐसा दुर्जय है कि समुद्र लाँघ आता है ॥ ४८ ॥

निकुम्भ की गोद में ही हनुमान की चेतना लौट आई। तव हनुमान सोचने लगे कि कौन सी बुद्धि लड़ाई जाय। उन्होंने नोच-खसोट कर निकुम्भ का सारा अंग चीर फाड़ डाला। हाथ के मरोड़ से दोनों कान उचार लिये। तव त्राहि-त्राहि मचाता हुआ वीर निकुम्भ चिल्लाने लगा, छोड़ो-छोड़ो। डर

अन्तरीक्षे लाफ दिल, हाते दुइ-कान * निकुम्भेर स्कन्धे चड़े वीर हनूमान
हाते चूल जड़ाये मस्तक छिड़े फेले * मुण्ड ल'ये जाय हनूमान महाबले
सिंहनाद करि चले पवनेर वेगे * एकलाफे उपनीत श्रीरामेर आगे
निकुम्भेर मुण्ड देखि श्रीरामेर हास *निकुम्भेर विनाश गाहिल कृत्तिवास२४९

मकराक्षेर युद्ध ओ पतन

भग्न-पाइक कहे गिया रावण-गोचर * पड़िल निकुम्भ-कुम्भ, शुन लङ्केश्वर
कुम्भ-निकुम्भेर मृत्यु शुनिया तखन * सिंहासन हैते पड़े राजा दशानन
देव-दानव-गन्धर्व्व करित रणे शंका * कुम्भ ओ निकुम्भ पड़े, शून्य हैल लंका
कुड़ि'च'क्षे बहे धारा राजा लङ्केश्वर * मकराक्ष-महावीरे आनिल सत्वर
प्रणमिल मकराक्ष रावणेर पाय * देहे तार कुड़ि-हस्त रावण बुलाय
रावण बले, मकराक्ष, तुमि योद्धृपति * नर-वानर मारि राख लंकार बसति
सेइ पुत्र सुजन, कुलेर अलंकार * पितृशत्रु बधि ये शोधये पितृधार
रात्रि-दिन कान्दे शोके तोमार जननी * से रागे रामेर सीता आमि ह'रे आनि
ताहार कारण हैल एत विसंवाद * राम-लक्ष्मणेरे मारि घुचाओ विषाद

कर उसने उसको गगन की ओर फेंका। हाथ में दोनों कान लेकर हनुमान ने अन्तरिक्ष में छलाँग मारी। फिर निकुम्भ के कन्धे पर सवार होकर वीर हनुमान ने निकुम्भ का सिर झोंटों के बल पकड़ा और मस्तक को उचार लिया। मुंड लेकर हनुमान पवन-वेग से सिंहनाद करते हुए चले और एक ही छलाँग में श्रीराम के सम्मुख आ पहुँचे। निकुम्भ का मुंड देखकर श्रीराम प्रसन्न हुए। कृत्तिवास ने निकुम्भ के विनाश का ब्योरा गाया ॥ २४६ ॥

मकराक्ष का युद्ध और पतन

भग्नदूत ने जाकर रावण से कहा, हे लंकेश्वर सुनो, कुंभ और निकुंभ का (रणक्षेत्र में) पतन हुआ। कुंभ-निकुंभ की मृत्यु का समाचार सुनते ही राजा दशानन सिंहासन से गिर पड़े। देव-दानव-गन्धर्व भी जिनसे रण में शंकित रहा करते थे वही कुंभ और निकुंभ नहीं रहे, लंका सूनी हो गई। राजा लंकेश्वर की बीस आँखों से आँसू गिरने लगे। उसने झट महावीर मकराक्ष को बुलवाया। जब मकराक्ष ने आकर रावण के चरणों में प्रणाम किया तो रावण अपने बीस हाथों से उसका बदन सहलाता रहा। रावण ने कहा, मकराक्ष! तुम अब युद्ध के संचालक हो। नर-वानरों को मार कर लंका की जनता को बचाओ। वही पुत्र सुजन है और वंश की शोभा है जो पिता के शत्रु का वध कर पितृ-ऋण से उऋण होता है। रातों दिन तुम्हारी जननी शोक से रोती थी यह देखकर मारे गुस्से के मैं सीता का हरण कर लाया। इसी के कारण इतना सारा झगड़ा हुआ। अब राम-लक्ष्मण को मार कर इस विषाद को दूर करो।

मकराक्ष बले, चिन्ता नाकर राजन ❊ एखनि मारिव शत्रु श्रीराम-लक्ष्मण
रावण बले, बड़ वीर तुमि मकराक्ष ❊बड़ प्रीति पाइलाम शुनि तव वाक्य २५०
एत बलि मकराक्षे पाठाय जुझिते ❊ रण सज्जा करि देय आपनार हाते
मस्तके मुकुट दिल, अंगे दिल साना ❊ काड़ा पड़ा ढाक ढोल बाजाय बाजना
मकराक्ष बले, शुन प्रतिज्ञा राजन ❊ युद्धे नर-वानर एड़ाबे कोन जन
राम-लक्ष्मण सुग्रीव राक्षस विभीषण ❊ चारिजना-रक्ते पितार करिव तर्पण
एत शुनि हरषित यतेक राक्षस ❊ सबे बले, मकराक्षेर बड़इ साहस
मन्त्रणाते मन्त्री ये बलेते बलवान ❊ लङ्कापुरे वीर नाहि तोमार समान ५१
मने-मने मकराक्ष भाविछे तखन ❊ नर-वानरेर युद्धे संशय जीवन
कुम्भकर्ण अतिकाय हइल विनाश ❊ श्रीरामेर संगे युद्ध छाड़ि प्राण-आस
किन्तु एक सुमन्त्रणा आछये इहार ❊ शुनियाछि रघुनाथ विष्णु-अवतार
बड़इ धार्मिक राम, धर्म्मेते तत्पर ❊ अस्त्राघात ना करेन गरुर उपर
एतेक भाविया मकराक्ष निशाचर ❊ युक्ति करि धेनु-वत्स आनाय विस्तर
नव-नव वत्स सब रथे ल'ये तुले ❊ रथेर चौदिके धेनु-बान्धे पाले-पाले
मनोरम हय हस्ती दूर करि सब ❊ रथेर योगान दिल चारिटा वृषभ

तब मकराक्ष ने कहा, राजन, चिन्ता न करो मैं अभी जाकर शत्रु राम-लक्ष्मण को मारे डालता हूँ। रावण ने कहा, हे वीर मकराक्ष, तुम्हारी बातें सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई ॥ २५० ॥

इतना कहकर मकराक्ष को उसने युद्ध करने के लिए भेज दिया। अपने हाथों से उसने उसकी रणसज्जा की। सिर पर मुकुट पहनाया और शरीर पर कवच। तब ढाक ढोल नगाड़े बजने लगे। मकराक्ष ने कहा, हे राजन मेरी प्रतिज्ञा सुनो, युद्ध में नर-वानर कौन ऐसा है जो मुझसे बच कर निकल जायगा। राम-लक्ष्मण-सुग्रीव और राक्षस विभीषण के रक्त से मैं पिता का तर्पण करूँगा। इतना सुन कर सारे राक्षस बहुत हर्षित हुए, सभी कहने लगे, मकराक्ष बड़ा साहसी है। मंत्रणा देने में मंत्री और बल में बलवान उसकी समता का लंका में कोई दूसरा नहीं है ॥ ५१ ॥

तब मकराक्ष मन ही मन सोचने लगा, नर-वानर के युद्ध में प्राणों का संशय है। अतिकाय कुम्भकर्ण का विनाश करनेवाले श्रीराम से युद्ध छेड़ प्राणों की आशा त्यागता हूँ। लेकिन इसमें भी एक कौशल भिड़ाया जा सकता है। सुना है कि रघुनाथ विष्णु का अवतार हैं, बड़े ही धार्मिक हैं, और धर्म में तत्पर भी। अवश्य ही गौवों पर अस्त्र का आघात नहीं करेंगे। इतना सोचकर मकराक्ष ने पर्याप्त संख्या में गायें और बछियाँ मँगवाईं। नई-नई बछियों को रथ पर बैठा दिया और रथ के चारों ओर गौवों को बाँध दिया। सुन्दर हाथी और घोड़ों को भगा कर चार बैलों से रथ हँकाने लगे। आपस

गोचर्म्मेते ढाके रथ करिया मन्त्रणा ※ सर्व्व-अंगे ढाका दिल गोचर्म्मेर साना
गोचर्म्मेते साना ढाके सारथिर अंगे ※ ढाक ढोल दामामा दगड़ बाजे रंगे
पाखोयाज सेतारा वाँशी बाजे जगझम्प ※ भयंकर शब्द शुनि सुरपुरे कम्प
मकराक्ष महावीर करिल साजनि ※ संगेते कटक चले तिन-अक्षौहिणी
केह अश्वे, केह गजे, केह चड़े रथे ※ त्रिभुवन-विजयी धनुक-बाण हाते
एइरूपे यतेक प्रधान सेनापति ※ साजिया चलिल मकराक्षेर संहति
हाते धनु मकराक्ष रथे गिया चड़े ※ राक्षसेर कोलाहले महाशब्द पड़े
घन-घन सिंहनाद धनुक-टंकार ※ पश्चिम-द्वारेते गेल करि मार मार ५२
मकराक्ष एल रणे, प'ड़े गेल साड़ा ※ असंख्य वानर उठे दिया गात्र-झाड़ा
'रामजय' शब्द करि धाइल वानर ※ वानर देखिया रोषे यत निशाचर
केह बले, काट काट, केह बले, मार ※ रुषिया आइल रणे खरेर कुमार
मकराक्ष-सम्मुखे दाण्डाय हनूमान ※ गोचर्म्मेते ढाका रथ देखे विद्यमान
धेनु-वत्स पाले-पाले रोधकैल पथ ※ भावे मने, कि हबे, वृषभे टाने रथ
राक्षसे मारितेगेले धनु-वत्स मरे ※ गोहत्यार भये कपि जुझिते ना पारे

में सलाह कर उन्होंने सारे रथ को गौ के चाम से मढ़ लिया और सारे अंग पर गोचर्म का कवच पहन लिया। सारथि के अंग पर भी गोचर्म का कवच। ढोल, नगाड़े और दमामा जोर-शोर से बजने लगे। पखावज, सितार और बाँसरी के साथ जगझम्प भी बजने लगे। इनका भयंकर शब्द सुनकर सुर-पुर में सभी कम्पित हुए। इस प्रकार जब महावीर मकराक्ष सुसज्जित होकर चला तो उसके साथ तीन अक्षौहिणी सेना भी सुसज्जित चल पड़ी। कोई-कोई घोड़े पर, तो कोई हाथी पर, तो कोई रथ पर सवार; त्रिभुवन-विजयी धनुष-बाण हाथों में लेकर। इस प्रकार सारे सेनापति सज्जित होकर मकराक्ष की सेना में चले। हाथों में धनुष लेकर मकराक्ष रथ पर जा सवार हुआ। राक्षसों के कोलाहल से चारों ओर महानाद होने लगा। बार-बार सिंहनाद करते हुए धनुष पर टंकार कर मार-मार शब्द करते हुए वह पश्चिम द्वार पर गया ॥ ५२ ॥

रणक्षेत्र में मकराक्ष आया है यह सुनकर चारों ओर चहल-पहल मच गई। असंख्य वानर बदन झाड़ कर उठ खड़े हुए और 'रामजय' का घोष कर दौड़ पड़े। वानरों को देखकर क्रोध से सारे निशाचर मार-मार, काट-काट पुकारने लगे। खर का पुत्र रोष से आगे बढ़ आया। हनुमान जाकर मकराक्ष के सम्मुख खड़े हो गये। उन्होंने देखा कि रथ गौ के चमड़े से मढ़ा हुआ है और असंख्य बछड़ों ने उनका रास्ता रोक रखा है। उन्होंने मन ही मन सोचा कि बैल इनका रथ खींच रहे हैं। राक्षसों को मारने जाओ तो गो-वत्सों की हत्या होती है। गोहत्या के भय से वानर युद्ध नहीं कर पाते।

मकराक्ष मारे वाण वानर-उपर ※ असंख्य वानर पड़े संग्राम-भितर
वानर-कटक भये पलाय अपार ※ पश्चाते राक्षस धाय करि मार मार
नल नील सुषेण अंगद महाबल ※ भये भंग दिया जाय छाड़ि रणस्थल
महेन्द्र-देवेन्द्र-आदि वीर हनूमान ※ हात हैते फेले वृक्ष पर्व्वत पाषाण
भयेते पलाये जाय, पश्चाते ना चाय ※ रण छाड़ि सुग्रीव पलाय उभराय ५३
भंग दिल कपिगण, मकराक्ष देखे ※ चालाइया दिल रथ रामेर सम्मुखे
सन्धान पूरिया वीर श्रीरामेरे डाके ※ आसिया करह युद्ध आमार सम्मुखे
दण्डक-वनेते बेटा, मारिलि मोर वाप ※ भुञ्जिबि ताहार फल, देखाव प्रताप
पितृशत्रु पाइलाम बहुदिन परे ※ आमार पितार काछे पाठाव तोमारे
पाड़िब तोमार मुण्ड कटि चोखा शरे ※ खाइबे तोमार मांस शृगाल-कुक्कुरे
एत बलि धनुके जुड़िल तीक्ष्ण शर ※ विन्धिया कोमल-अंग करिल जर्ज्जर ५४
मने-मने रघुनाथ भावेन ए भय ※ मकराक्ष मारिते गो-हत्या पाछे हय
यतयत वीर सने करिला संग्राम ※ प्रति युद्धे तिनपद आगु हैला राम
पूर्णब्रह्म नारायण भय पेये मने ※ हइला त्रिपद-भंग मकराक्ष-रणे
तिनपद पश्चात् हइला रघुवर ※ मकराक्ष-वाणे राम अतीव कातर

मकराक्ष वानरों पर वाण चलाने लगा और संग्राम में असंख्य वानर गिरे। भय के मारे वानर-सेना भागने लगी—पीछे-पीछे राक्षस मार-मार शब्द करते दौड़ने लगे। नल, नील, सुषेण, अंगद जैसे महावली रणभूमि त्याग कर भागने लगे। महेन्द्र, देवेन्द्र, वीर हनुमान आदि भी हाथों से पेड़-पत्थर आदि फेंक कर भागने लगे—पीछे पलट कर भी नहीं देखा। रण छोड़कर सुग्रीव भी भाग खड़े हुए ॥ ५३ ॥

मकराक्ष ने देखा कि सारे वानर रणक्षेत्र से भागे जा रहे हैं तो उसने राम के सम्मुख रथ चला दिया। धनुष पर बाण चढ़ाकर वीर ने श्रीराम को ललकारा, आओ मेरे साथ युद्ध करो। अरे तूने दंडक-वन में मेरे बाप की हत्या की, मैं उसका बदला लूंगा और अपना पराक्रम दिखाऊँगा। बहुत दिनों के बाद पिता का शत्रु मिला है, आज तुझको मैं अपने पिता के पास भेजूँगा, पैने वाणों से तेरा सिर काट कर गिराऊँगा। तेरा मांस सियार और कुत्ते खाएंगे। इतना कहकर उसने धनुष पर पैने-पैने वाण चढ़ाये और राम के कोमल अंगों को बेध-बेध कर छलनी कर दिया ॥ ५४ ॥

मन ही मन रघुनाथ को यह डर लगा कि मकराक्ष को मारने में कहीं गो-हत्या न हो जाय। जितने भी वीरों के साथ आज तक उनका युद्ध हो चुका है, प्रत्येक युद्ध में राम तीन पग आगे बढ़े। किन्तु पूर्णब्रह्म नारायण भय पाकर मकराक्ष के साथ रण में तीन पैर पीछे हट गये। मकराक्ष के वाणों से अत्यन्त दुखी होकर रघुवर तीन पैर पीछे हट गये। मन ही मन

केमने जिनिब रण, भाविलेन मने ❋ जुड़िला पवन-बाण धनुकेर गुणे
पवन-बाणेर तेजे त्रिभुवन नड़े ❋ पर्व्वत कन्दर वृक्ष उड़ाइल झड़े
ब्रह्मरूपी बाणेते पवन आविर्भूत ❋ उड़ाइल धेनु-वत्स-वृषभादि यत
गोचर्म्म यतेक छिल उड़ाइल झड़े ❋ यतेक वानर आसि मकराक्षे बेड़े
'रामजय' शब्द करे यतेक वानर ❋ अन्धकार करि फेले वृक्ष ओ पाथर
मकराक्ष महावीर पूरिल सन्धान ❋ गाछ-पाथर काटिया करिल खान-खान
गाछ-पाथर काटिते एड़िल पञ्च-शर ❋ दशबाणे नीलवीरे करिल जर्ज्जर
सुग्रीव-सुषेण-आदि बड़-बड़ वीर ❋ दश-दश बाणे बिन्धे सबार शरीर
विंशति बाणेते बिन्धे अंगदेर अंग ❋ पलाय अंगद-वीर रणे दिया भंग
धेनु-वत्स-बृष-सब उड़िल झड़ेते ❋ चारि अश्ववर आनि जुड़िलेक रथे
देवांशी रथेर तेजे, चले वायुवेगे ❋ विक्रम करिया आसे श्रीरामेर आगे
गालि पाड़े रघुनाथे, यत आसे मने ❋ दशदिक् अन्धकार करिलेक बाणे ५५
राम बले, मकराक्ष ना कर विलाप ❋ आजि घुचाइब तव मनेर सन्ताप
एखनि पाठाब तोरे यमेर सदन ❋ चिर दिन पिता-पुत्रे हबे दरशन
एत बलि खुरपार्श्व बाणे दिला टान ❋ मकराक्ष मारे बाण पूरिया सन्धान

सोचने लगे कि इस रण को कैसे जीता जाय। उन्होंने धनुष की प्रत्यंचा पर पवन-बाण साधा। पवन-बाण के ओज से त्रिभुवन हिल गया। पर्वत-कन्दर-वृक्ष आँधी में उड़ गये। ब्रह्मरूपी बाण में पवन आविर्भूत हुए और गाय-बछड़े-बैल सब के सब उड़ गये। आँधी में गौ के सारे चमड़े उड़ गये। अब सारे वानरों ने आकर मकराक्ष को घेर लिया और दिशाओं को अन्धकार करते हुए पेड़ और पत्थर बरसाने लगे। महावीर मकराक्ष ने भी निशाना साध-साध कर पेड़ और पत्थर काट-काट कर खंड-खंड कर डाले। पेड़ और पत्थर से बचने के लिए उसने पंचशर चलाया। और दश बाणों से उसने नीलवीर को जर्जर कर डाला। सुग्रीव, सुषेण आदि बड़े-बड़े वीरों को उसने दस-दस बाण मारकर छेद दिया। बीस बाणों से उसने अंगद का शरीर छेद डाला तो वीर अंगद रण छोड़ भाग खड़े हुए। गाय-बछड़े और बैल जब आँधी में उड़ गये तो चार-घोड़े लाकर रथ में जोते गये। देवांशी रथ की शक्ति ही भिन्न है; वह पवनवेग से चलने लगा और प्रबल पराक्रम से राम के सम्मुख आ खड़ा हुआ। जितना भी उसके जी में आया रघुनाथ को वह उतनी ही गालियाँ देने लगा और बाणों से दशों दिशाओं को अन्धकारमय कर दिया ॥ ५५ ॥

तब राम कहने लगे, मकराक्ष, खेद न करो। आज तुम्हारे मन का सारा सन्ताप दूर कर दूँगा। अभी तुमको यम-सदन भेज दूँगा, निरन्तर पिता-पुत्र में भेंट होती रहेगी। इतना कहकर उन्होंने खुरपार्श्व बाण फेंका।

आकाशे उठिल गिया दुर्जनार वाण ※ श्रीरामेर वाण काटि कैल खान-खान
मकराक्ष वाण एड़े, तारा येन छुटे ※ शत-शत वाण मारे रामेर ललाटे
ललाटे लागिला वाण विन्धि रहे फला ※ रामेर शरीरे येन रक्तपद्म-माला
अन्धकार हैल वाणे, नाहि चले दृष्टि ※ खसिया पड़िल रामेर धनुकेर मुष्टि
आपना सारिया राम दृढ़ कैला बुक ※ काटिलेन मकराक्ष-हातेर धनुक
आर धनु ल'ये करे वाण-वरिषण ※ वाणे-वाणे मकराक्ष ढाकिल गगन
खरेर कुमार वीर नाना शिक्षा जाने ※ दशदिक् अन्धकार करिलेक वाणे
वाणे अन्धकार, वाण फेले निरन्तर ※ वाण फुटि रघुनाथ हइला कातर
श्रीरामे कातर देखि दुष्ट निशाचर ※ रामेर सर्व्वाङ्ग विन्धि करिल जर्ज्जर
कत वाण मारे रामे, नाहि अवकाश ※ श्रीरामे जिनिनु बलि मनेते उल्लास
सर्व्वांगे विन्धिया रामे करिल अस्थिर ※ श्रीराम बलेन, वेटा वाप हैते वीर
खरेरे मारियाछिनु दण्डकेर रणे ※ दुइ प्रहर हैल, वेटा युद्धे मोर सने
सन्धान पूरिया राम चाहे चारिभिते ※ वाणे अन्धकार, कारे ना पान देखिते
वाणेते पण्डित राम विष्णु-अवतार ※ चिकुर-वाणेते लुप्त करे अन्धकार

मकराक्ष ने भी निशाना साध कर वाण चलाया। दोनों के वाण आकाश में चढ़ गये और श्रीराम के वाण कट कर खंड-खंड हो गये। मकराक्ष यों वाण चलाने लगा मानों नक्षत्र लपक रहे हों—और सैकड़ों वाण आकर राम के ललाट में चुभ गये। राम के ललाट से टकराकर वाण का फल चुभा रह जाता और यों लगने लगता मानों राम के शरीर पर रक्त-पद्म की माला पड़ी है। वाणों से चारों ओर अंधेरा छा गया था, दृष्टि काम नहीं करती थी, राम की मुट्ठी धनुष पर ढीली पड़ गई। तब अपने को संयत कर राम ने मन को दृढ़ किया और मकराक्ष के हाथ का धनुष काट डाला। मकराक्ष दूसरा धनुष लेकर फिर वाण बरसाने लगा और वाणों से मकराक्ष ने गगन छा दिया। खर का पुत्र वीर मकराक्ष अनेक विद्याओं में दक्ष था, उसने वाणों से चारों ओर अन्धकार कर दिया। वाणों से अन्धकार कर वह निरन्तर वाण फेंकता ही रहा और वाणों के चुभने से रघुनाथ काफी क्लेश पाने लगे। श्रीराम को क्लेश में देखकर दुष्ट निशाचर ने राम के सारे अंगों को छेद कर जर्जर कर डाला। विना विराम लिये ही वह राम को कितने ही वाण मारता रहा। श्रीराम पर विजय पा ली, यह सोचकर वह मन ही मन उल्लसित हो उठा। सारे अंगों को छेद कर उसने राम को अस्थिर कर दिया, तब श्रीराम ने कहा, वेटा वाप से भी वड़ा वीर है। मैंने दंडकवन के रण में खर का वध किया था, दो पहर बीत गये, उसका वेटा मेरे साथ जूझता चला जा रहा है। वाण को धनुप पर लगाकर राम चारों ओर देखने लगे किन्तु वाणों से छाये अंधेरे में किसी को नहीं देख सके।

एड़ेन ऐषिक बाण, तारा येन छुटे ❋ हातेर धनुक तार पाड़िलेन केटे
मकराक्ष महावीर जाठा लय हाते ❋ से जाठा काटेन राम देखिते देखिते
जाठा यदि काटा गेल, शेलमात्र ताड़ा ❋ एड़िलेक शेलपाट दिया अंग-नाड़ा
सूर्य्येर किरण येन, आसे शेल-वाण ❋ ऐषिक बाणेते राम कैला खान-खान
सर्व्व-अस्त्र काटागेल, मकराक्ष रोषे ❋ बज्रमुष्टि मारिते पवन-वेगे आसे
देखिया श्रीरघुनाथ पूरिला सन्धान ❋ अर्द्धचन्द्र-बाणे काटे हस्त दुइखान
हस्त काटा गेल, बेटा दन्त कड़मड़े ❋ धेये जाय श्री रामेरे खाइते कामड़े
वदन विस्तारि जाय अतिकाय कोपे ❋ अग्नि-अस्त्र रघुनाथ बसाइला चापे
अग्नि बाण जुड़िया धनुके दिला टान ❋ अग्नि बाणे मकराक्षेर बाहिराय प्राण
तिन प्रहर युद्ध कैल श्रीरामेर सने ❋ सन्ध्याकाले मकराक्ष पड़े अग्निबाणे
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर-वचन ❋ लंका-काण्डे मकराक्षेर हइल पतन५६

तरणीसेनेर युद्ध ओ पतन

भग्न-पाइक कहे गिया रावण-गोचर ❋ मकराक्ष पड़े रणे, शुन लङ्केश्वर
शोकेर उपरे शोक हैल विपरीत ❋ सिंहासन हैते पड़े हइया मूर्च्छित

स्वयं विष्णु के अवतार राम बाण-विद्या में निष्णात हैं। उन्होंने चिकुर-बाण चलाकर अन्धकार को दूर किया। उन्होंने ऐषिक बाण इस प्रकार फेंका मानों तारा लपक रहा हो और उसके हाथ का धनुष काट डाला। महावीर मकराक्ष ने फिर अपने हाथों में जाठा ले लिया। देखते ही देखते राम ने वह जाठा भी काट गिराया। जाठा कट गया तो उसने शेल उठा लिया और सारे अंगों को संचालित कर उसने शेल फेंका। ऐषिक बाण से राम ने उसको भी खंड-खंड कर डाला। सारे अस्त्र कट गये तो मकराक्ष रोष से वज्रमुष्टि मारने के लिये पवन-वेग से लपका। यह देखकर श्री रघुनाथ ने निशाना साध कर अर्धचन्द्र बाण फेंका और उसके दोनों हाथ काट डाले। हाथ कट गये तो वह दाँत किटकिटाने लगा और राम को काट खाने के लिये दौड़ा। जब अत्यन्त कोप से मुँह फाड़ कर वह दौड़ा तो रघुनाथ ने धनुष पर अग्नि-अस्त्र को चढ़ाया। अग्नि-बाण को धनुष पर चढ़ाकर उन्होंने प्रत्यंचा खींची। उस अग्नि बाण से ही मकराक्ष के प्राण निकल गये। श्रीराम के साथ तीन पहर युद्ध करने के बाद सन्ध्या के समय मकराक्ष अग्निबाण से गिरा। पंडित कृत्तिवास के वचन मधुर हैं, लंका-कांड में मकराक्ष का पतन हो गया॥ ५६॥

तरणीसेन का युद्ध और पतन

भग्न-दूत ने जाकर रावण से कहा, हे लंकेश्वर सुनो, मकराक्ष युद्ध में काम आ गया। इस प्रकार शोक पर शोक के प्रहार से रावण की हालत

पात्र-मित्र आसिया बुझाय बहुतर ❋ धरासने वसि राजा कान्दिल विस्तर
मरिया ना मरे राम, विपरीत वैरी ❋ वीर शून्या हइल कनक-लंकापुरी
कुम्भकर्ण अतिकाय वीर अकम्पन ❋ नर-वानरेर युद्धे हइल निधन
के आछे एमन वीर, पाठाइब कारे ❋ श्रीराम-लक्ष्मणे मारे सुग्रीव-वानरे
मन्त्रणा करये राजा ल'ये मन्त्रिगण ❋ तरणीसेनेर नाम हइला स्मरण ५७
राजार आदेशे वीर आइल तरणी ❋ प्रणमिल दशानने लोटाये धरणी
आलिंगन करे राजा, बाड़ाय सम्मान ❋ जुझिते आरति कैल दिया पुष्प-पान
रावण बले, लंकापुरी राखह तरणी ❋ एतेक प्रमाद हवे, आगे नाहि जानि
तव पिता विभीषण धर्म्मेते तत्पर ❋ हित-उपदेश भाइ बुझाले विस्तर
अहंकारे मत्त आमि, छिन्न हैल मति ❋ विना-अपराधे तारे मारिलाम लाथि
आमारे छाड़िया गेल भाइ विभीषण ❋ अनुरागे लइयाछे रामेर शरण
सन्धि-उपदेश-कथा सेइ देय क'ये ❋ श्रीराम आछेन व'से कालरूपी ह'ये
शत्रुर सपक्ष हइयाछे तव पिते ❋ मजिल कनक-लंका तार मन्त्रणाते
तुमि तार पुत्र वट, नह तार मत ❋ चिरदिन जानि, तुमि मम अनुगत

खराब हो गई और वह सिंहासन से गिर कर मूर्छित हो गया। सारे पात्र-मित्रों ने आकर बहुत समझाया बुझाया, राजा धरती पर बैठ बहुत रोता रहा। यह कैसा विपरीत वैरी है, यह राम मर कर भी नहीं मरता। स्वर्ण-लंकापुरी धीरे-धीरे वीरों से शून्य हो रही है। कुम्भकर्ण, अतिकाय और वीर अकम्पन का वध नर-वानर के युद्ध में हो गया। ऐसा कौन सा वीर रह गया, किसको युद्ध में भेज दूँ जो श्रीराम, लक्ष्मण और सुग्रीव वानर का वध कर डाले। अपने मंत्रियों के साथ राजा मंत्रणा करने बैठे तो उनको तरणीसेन याद आ गया ॥ ५७ ॥

राजा का आदेश पाकर वीर तरणीसेन आया और भूमि पर लोट कर उसने दशानन को प्रणाम किया। राजा ने उसको बाँहों में बाँधकर उसका सम्मान बढ़ाया और पुष्प-पान देकर उसकी युद्ध करने के लिए आरती उतारी। रावण ने कहा, तरणी ! अब लंकापुरी की रक्षा करो, इतनी बड़ी विपत्ति आ जायगी, यह मुझको पहले नहीं मालूम था। तुम्हारे पिता विभीषण धर्म के अनुगत रहे, उन्होंने बहुत सारे हित-उपदेश दिये और मुझको समझाया भी। लेकिन मैं अहंकार में मत्त था, मेरी मति भ्रष्ट हो चुकी थी, मैंने विना-अपराध के ही उन पर लात जमा दी। भाई विभीषण मुझको त्याग कर चले गये और मुझ पर क्रोधित होने के कारण उन्होंने राम की शरण ले ली। वही सारे सन्धान का उपदेश देते रहते हैं और श्रीराम यम जैसा बैठा हुआ है। तुम्हारे पिता शत्रु के पक्ष में हो गये हैं और उन्हीं की मंत्रणा से कनक-लंका ध्वंस हो रही है। तुम उनके पुत्र हो लेकिन उन जैसे नहीं हो, सदा से जानता

राज्य-धन लह बापु, स्वर्ण-लंकापुरी ✻ राखह राक्षसकुल वैरिगणे मारि ५८
कहिछे तरणीसेन करि जोड़हात ✻ त्रैलोक्य-विजयी तुमि राक्षसेर नाथ
महागुरु पिता-माता, सर्व्वशास्त्रे कय ✻ कहिते पितार कथा उचित ना हय
दशानन बले, तुमि कुले सुसन्तान ✻ नर-वानरेर हाते कर परित्राण
संग्रामे जिनिबे तुमि, हेन लय मने ✻ तोमार समान वीर नाहि त्रिभुवने
युद्धे योद्धपति तुमि, बुद्धे विचक्षण ✻ हाते गले बान्धि आन श्रीराम-लक्ष्मण
एत शुनि कहे विभीषणेर कुमार ✻ यथाशक्ति संग्रामे करिब महामार
कुलक्षय करिवार मूलाधार पिते ✻ उपरोध ना करिब उपस्थितमते
नाना-जाति पुराण-शास्त्रेते इहा कय ✻ श्रेष्ठ-ज्येष्ठ-विवेचना युद्धकाले नय २५९
बड़ प्रीति पाय राजा तरणीर बोले ✻ शिरे चुम्ब दिया राजा करिलेक कोले
रत्नमय हार आर वलय कङ्कण ✻ आपनार हाते तारे पराय रावण
रणसाजे साजाइया दिल दशानन ✻ सारथि आनिल रथ संग्रामे गमन
साजन करिल रथ मनेर हरिषे ✻ सारि-सारि कत रत्न शोभे चारिपाशे

हूँ कि तुम मेरे अनुगत हो। बेटा, यह स्वर्ण-लंकापुरी और सारा राज-पाट तुम ले लो और राक्षसों के शत्रुओं को मारकर राक्षसवंश की रक्षा करो॥ ५८ ॥

तरणीसेन ने हाथ जोड़ कर कहा, हे राक्षसों के नाथ, तुम त्रैलोक्यविजयी हो। सभी शास्त्रों में कहा गया है कि माता-पिता महागुरु हैं, इसलिए पिता के सम्बन्ध में कुछ भी कहना उचित नहीं होगा। दशानन ने कहा, तुम हमारे वंश के सुसन्तान हो, नर और वानर के हाथों से हमारी रक्षा करो। मुझको लगता है कि तुम संग्राम में विजयी होगे। तुम सा वीर तीनों भुवनों में नहीं है। तुम बुद्धि से विचक्षण हो और युद्ध में कुशल योद्धा हो। तुम श्रीराम-लक्ष्मण को हाथ-पैरों से बाँधकर ले आओ। इतना सुनकर विभीषण के पुत्र ने कहा, संग्राम में अपनी शक्तिभर मारकाट मचाऊँगा। वंश के नाश में मूल आधार पिता हैं—इस समय उनसे मैं कोई भी अनुरोध नहीं करूँगा। विभिन्न प्रकार के पुराण और शास्त्रों में यह कहा गया है कि युद्ध के समय श्रेष्ठ और ज्येष्ठ की विवेचना नहीं करनी चाहिए॥ २५९ ॥

राजा को तरणी के बचन से बड़ा आनन्द पहुँचा। उन्होंने उसका सिर चूम कर उसे गोद में ले लिया। रावण ने उसको अपने हाथों से रणसज्जा पहनाई। सारथी संग्राम में जाने के निमित्त रथ ले आया। उसने जी भर कर अपने रथ को सजाया। कितने ही रत्न चारों ओर शोभित होने लगे। रथ के ऊपर कितने ही विचित्र चित्र लगाये गये। सफेद और नीले कपड़े की कितनी ही झंडियाँ फहराने लगीं।

अनेक विचित्र चित्र रथेर उपरि ॐ श्वेत नील नेतेर पताका सारि-सारि
विचित्र धनुक तोले तूण पूर्णवाण ॐ जाठा-जाठिशेल-शूल खाण्डा खरशाण २६०
सैन्येरे साजिते आज्ञा दिलेक तरणी ॐ तखन पड़िल मने सरमा जननी
शीघ्रगति गेल वीर मायेर निकटे ॐ दाण्डाइल प्रणाम करिया करपुटे
तरणी बलेन, माता, निवेदि चरणे ॐ ह'येछे रामेर आज्ञा, जाव आमि रणे
पूर्णब्रह्म नारायणे देखिव नयने ॐ पवित्र हइवे देह राम-दरशने
निरखिब जनकेर चरण कमल ॐ देह अनुमति माता, जाव रणस्थल ६१
संग्रामे जाइबे पुत्र, शुनि ए वचन ॐ सरमा चमकि उठि करिला रोदन
कि कथा कहिलि वापू, प्राण काँपे शुने ॐ जाइते ना दिव नर-वानरेर रणे
लंका छाड़ि तोमा ल'ये जाव स्थानान्तर ॐ थाकुक राजत्व ल'ये राजा लङ्केश्वर
धार्म्मिक तोमार पिता, जाने सर्व्वजन ॐ पाप-संग छाड़ि लय रामेर शरण
तुमि गिया रामेर चरणे कर स्तुति ॐ श्रीराम मनुष्य नाहे, गोलोकेर पति
दुरात्मा राक्षसकुल करिते संहार ॐ दशरथ-गृहे विष्णु राम-अवतार
एकलक्ष पुत्र जार, सओया लक्ष नाति ॐ एकजन ना थाकिवे वंशे दिते वाति
विषम बुझिया तव पिता विभीषण ॐ पलाइया निल गिया रामेर शरण

अनोखा धनुष और बाणों से भरा तूण रथ पर रखा गया; जाठा-जाठी, शेल, शूल, खड्ग, असि आदि भी रथ पर रखे गये ॥ २६० ॥

तब तरणी ने सेना को सुसज्जित होने का आदेश दिया। तभी उसकी अपनी माँ सरमा याद आ गई। शीघ्रगति से वीर अपनी जननी के पास पहुँचा। प्रणाम कर हाथ जोड़ वह खड़ा हो गया। तरणी ने कहा, माता, तुम्हारे चरणों में निवेदन करता हूँ कि राजा का आदेश मिला है और मैं रण में जा रहा हूँ। पूर्णब्रह्म नारायण को अपनी आँखों से देखूँगा। राम के दर्शन से यह शरीर पवित्र हो जायगा। अपने पिता के चरण-कमल भी देख सकूँगा। माँ, मुझको अनुमति दो, मैं रणस्थल में जाऊँगा ॥ ६१ ॥

पुत्र संग्राम पर जायगा, यह सुनकर सरमा चौंक कर रो पड़ी। हाय बेटा, तूने यह क्या सुनाया, मैं तुझको नर-वानर के रण में नहीं जाने दूँगी। लंका छोड़कर तुझको लेकर कहीं और चली जाऊँगी। राजा लंकेश्वर अपना राज्य लेकर रहें। सभी लोग जानते हैं कि तुम्हारे पिता धार्मिक हैं, पाप-संगति त्याग कर उन्होंने राम की शरण ली है। तुम जाकर राम के चरणों में स्तुति करो। श्रीराम मनुष्य नहीं हैं, वे गोलोक के पति हैं। दुष्ट राक्षसकुल का ध्वंस करने के लिए विष्णु ने दशरथ के घर पर राम-अवतार के रूप में जन्म लिया है। जिसके एक लाख पुत्र हों और सवा लाख पोते हों, उनके वंश में एक भी दीपक जलाने को नहीं बचेगा। तुम्हारे पिता विभीषण ने

तुमि त सुबुद्ध बट, अति विचक्षण ※ ए-सब शुनिया युद्धे जाह कि कारण ६२
मायेर वचने शुनि कहिछे तरणी ※ विष्णु अवतार राम आमि भाल जानि
तथापि करिब युद्ध, भेवेछि निर्यास ※ मरिले रामेर हाते गोलोके निवास
शुनि याछि सर्व्व-शास्त्रे वेदेर लिखन ※ तुमि माता, विषाद भाविछ कि कारण
के कारे मारिते पारे, केवा कार रिपु ※ एक बिष्णु विश्वमय, भिन्न भिन्न बपु
कालेते करिया हय उत्पत्ति प्रलय ※ मिथ्या केन भाव माता, मरणेर भय
शुनेछि पितार मुखे महा-योगतन्त्र ※ अनित्य शरीर एइ, मिछे माया जन्त्र
दासेर सन्तान बलि ना मारेन राम ※ आसिया करिब पुनः श्रीपदे प्रणाम
कालेर विभक्त काल पूर्ण हैले परे ※ त्रिभुवने कार साध्य, के राखिते पारे ६३
महाज्ञानवती सती सरमा सुन्दरी ※ वसिलेन संवरिया नयनेर वारि
चले वीर प्रणमिया सरमा-जननी ※ साज साज बलि सबे डाकिछे तरणी
साज साज बलि सैन्ये प'ड़े गेल साड़ा ※ असंख्य सानाइ बाजे दुइ लक्ष काड़ा
करताल बाँशी काँसी डम्फ कोटि-कोटि ※ तिनलक्ष दगड़े सघने पड़े काठि
सेतारा चौतारा बाजे मधुर मृदङ्ग ※ बाजे वीणा सप्तस्वरा भेउरि भोरंग

अटपटा देखा तो भागकर राम की शरण में पहुँच गये। तुम तो बुद्धिमान हो और विचक्षण भी, फिर यह सब जान-बूझ कर भी तुम किस कारण युद्ध में जा रहे हो॥ ६२॥

माँ की बातें सुनकर तरणी कहने लगा, मैं भली-भाँति जानता हूँ कि राम विष्णु-अवतार हैं, फिर भी मैंने निश्चय कर लिया है कि युद्ध करूँगा। सर्व-शास्त्रों में और वेदों में लिखा है कि राम के हाथों मरने पर स्वर्ग में आवास मिलेगा। माँ, तुम किस कारण दुखी हो रही हो। कौन किसको मार सकता है और भला कौन किसका शत्रु है। एक ही विष्णु सारे विश्व-भर में फैले हैं—उनके भिन्न-भिन्न शरीर हैं। समय के बीतने पर प्रलय होता है। हे माता, फिर मृत्यु के भय से तुम नाहक क्यों चिन्ता करती हो। पिता के मुँह मैंने महायोग-तंत्र सुना है कि यह शरीर अनित्य है, माया-यंत्र मात्र है। यदि दास का पुत्र समझ कर राम मेरा वध न करें तो लौटकर तुम्हारे चरणों में फिर प्रणाम करूँगा। नियत समय पूर्ण होने पर त्रिभुवन में किसकी शक्ति है कि किसी को रोक रखे॥ ६३॥

महाज्ञानवती एवं सती सुन्दरी सरमा आँसू रोक कर बैठ गई। वीर तरणीसेन सरमा-जननी के चरणों का नमन कर चल पड़ा। तरणी ने सबको 'सजो-सजो' यह कहकर पुकारा। सारी सेना में सुसज्जित होने के लिए गुहार मच गई। अनगिनत शहनाइयाँ और दो लाख नगाड़े भी बजने लगे। करोड़ों करताल, बाँसुरी, घड़ियाल और डफ भी बजने लगे। तीन लाख धौंसों पर चोट पड़ी। सितार, चौतार और साथ में मृदंग भी मधुर स्वर

शंख बाजे, घन्टा बाजे, बाजे जयढोल ❋ प्रलयेर काले येन उठे गण्डगोल
ढेमचा खेमचा बाजे पाखोज पिनाक ❋ सहस्त्र-सहस्त्र बाजे निशाचर-ढाक
उरमाल ढिकारा बाजे कोटि-कोटिडम्फ ❋ रणशिंगा-शब्द शुनि त्रिभुवने कम्प
साजिल तरणीसेन करिते संग्राम ❋ आनन्दे सकल-अंगे लिखे राम-नाम
असंख्य कटक-ठाट साजिल विस्तर ❋ केह रथे, केह गजे, केह अश्वोपर
केह धरे शेल शूल, केह धनुर्व्वाण ❋ कारो हाते जाठा-जाठि खड्ग खरशान
आकाशेर तारा पारि करिते गणना ❋ ना पारि करिते संख्या तरणीर सेना
लक्ष-लक्ष अश्वगज, लक्ष-लक्ष रथ ❋ ढाकिल गगन-आदि, आच्छादिल पथ
लक्ष-लक्ष राम-नाम गंगा-मृत्तिकाते ❋ लिखिलेक रथे आर ध्वज-पताकाते ६४
हाते धनु रथे उठे वीर-अवतार ❋ पश्चिम-द्वारेते चले करि मार मार
गड़ेर बाहिर ह'ये दिलेक घोषणा ❋ रामजय रामजय बाजाओ बाजना
केह बले मार मार, केह बले धर ❋ वानर धाइल ल'ये वृक्ष ओ प्रस्तर
धनुक पातिया युद्धे तरणीर सेना ❋ वानर-कटके येन पड़िछे झन्झना
राक्षस-वानरे युद्ध हइल महामार ❋ सहिते ना पारे कपि, पलाय अपार ६५

में बजने लगे। सप्तस्वरा वीणा, भेउरी और मोरंग भी बजने लगे। शंख-नाद होने लगा, घंटे घनघनाने लगे और जयढोल बजने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा मानों प्रलय के समय का कोलाहल हो रहा हो। पखावज, पिनाक और हजारों निशाचरी डंके भी बजने लगे। करोड़ों डफ और झाँझ बजने लगे। रण-दुंदुभियों के शब्द से त्रिभुवन काँपने लगा। सारे अंगों पर सानन्द राम-नाम लिखकर तरणीसेन संग्राम के लिए सुसज्जित हुआ। असंख्य कटक सुसज्जित हुआ, कोई रथ पर, कोई हाथी पर तो कोई घोड़े पर। किसी ने शेल-शूल लिया तो किसी ने धनुष-बाण। किसी ने जाठा-जाठी ली तो किसी ने धारदार खड्ग। आसमान के तारे भी गिन सकता हूँ लेकिन तरणी की सेना की संख्या नहीं गिन सकता। लाख-लाख अश्व और गज और लाख-लाख रथों ने गगन ढक लिया और पथ को छेंक लिया। उसने गंगा की मृत्तिका से लाख-लाख राम-नाम रथ पर और ध्वज-पताका पर लिख डाला॥ ६४॥

हाथ में धनुष लेकर वीरता का अवतार (तरणीसेन) रथ पर सवार हुआ और मार-मार शब्द करता पश्चिमी द्वार पर चल पड़ा। गढ़ से बाहर निकल कर उसने घोषणा की—बाजे पर रामजय-रामजय की धुन बजाओ। कोई कहता मारो-मारो तो कोई कहता पकड़ लो। वानर वृक्ष और पत्थर लेकर पिल पड़े। तरणी की सेना धनुष तान कर लड़ने लगी। वानरों की सेना में मानों आँधी चलने लगी। राक्षसों और वानरों में महारण हुआ। वानर प्रहार को सहने में असमर्थ हो भाग खड़े हुए॥ ६५॥

श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ❊ देखि देखि संग्रामे आइल कोन जन
विभीषण बले, शुन राजीव-लोचन ❊ रावणेर अन्नेते पालित एकजन
सम्बन्धेते भ्रातुष्पुत्र, परिचये ज्ञाति ❊ धर्म्मेते धार्मिक पुत्र, बड़ योद्धपति
प्रकारेते दिलेन प्रकृत परिचय ❊ तरणी भाविछे, कोथा राम-दयामय६६
कटके-कटके युद्ध हइल विस्तर ❊ भंग दिया पलाइल यतेक वानर
चारिदिके नेहारिया देखिछे तरणी ❊ कतक्षणे देखा पाइ राम रघुमणि
कतक्षणे पितार पाइब दरशन ❊ जनम सफल हबे, जुड़ाइबे जीवन
मनें भावे, कत पूरे देव-नारायण ❊ चालाइया दिल रथ त्वरित-गमन
रघुनाथ-पाने यदि चालाइल रथ ❊ धेये गिया नीलवीर आगुलिल पथ
नीलवीर बले, बेटा आर जाबि कोथा ❊ एकचड़े राक्षसा, छिंड़िब तोर माथा
जोड़हाते बले, विभीषणेर नन्दन ❊ पथ छाड़, देखि गिया श्रीराम-लक्ष्मण
नील बले, प्राण लब पर्व्वत-चापने ❊ केमने देखिबि बेटा, श्रीराम-लक्ष्मणे
अङ्गे लेखा राम-नाम रथ-चारिपाशे ❊ तरणीर भक्ति देखि कपिगण हांसे
दुष्ट निशाचर-जाति कत माया जाने ❊ हइया धार्म्मिक वक आसियाछे रणे
मकराक्ष एसेछिल, बुद्धि बड़ सरु ❊ युद्ध जिन्ते एसेछिल रथे बेंधे गरु
वृषभेते टाने रथ गो-चर्म्मेते ढाका ❊ वायुबाणे धेनु उड़े, बेटा हैल भेका

श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण, तनिक देखना तो कौन युद्ध करने आ गया। विभीषण ने कहा, हे राजीवलोचन, यह तो रावण के अन्न से पला कोई है। रिश्ते में वह उसका भतीजा लगता है और परिचय से उसके गोत्र का है। धर्म से धार्मिक यह पुत्र काफी बड़ा योद्धा है। संकेत से उन्होंने उसका प्रकृत परिचय दिया। तरणी सोच रहा है, दयामय राम कहाँ हैं ॥ ६६ ॥

दोनों सेनाओं में काफी युद्ध होता रहा। जितने बानर थे सब भाग खड़े हुए। तरणी चारों ओर निहार रहा है कि कब राम रघुमणि का दर्शन मिलता है। कितनी देर में पिता का दर्शन होगा और जन्म सफल और जीवन धन्य होगा। मन ही मन सोचता, देव-नारायण जाने कितनी दूर पर हैं। उसने झटपट रथ को तेज दौड़ाया। उसने रघुनाथ की ओर रथ भगाया तो रास्ता रोककर नीलवीर खड़े हो गये। वीरवर नील ने कहा, अरे राक्षस कहाँ जा रहा है, एक ही चाँटे में तेरा सिर तोड़ दूँगा। विभीषण-नन्दन ने हाथ जोड़ कर कहा, रास्ता छोड़ो, चलकर श्रीराम-लक्ष्मण को देखूँ। नील ने कहा, पहाड़ के नीचे कुचल कर तुझे मार डालूँगा, कैसे तू श्रीराम-लक्ष्मण को देख सकेगा। सारे अंग पर तथा रथ के चारों ओर राम-नाम लिखा है—तरणी की भक्ति देखकर बानर हँसने लगे। दुष्ट निशाचर कितने ही प्रकार के ढोंग जानते हैं। बगुला-भगत बनकर युद्ध करने आया है। मकराक्ष की बड़ी नुकीली बुद्धि थी—वह रथ में बैल जोतकर लड़ने आया था।

गोवत्स गोचर्म्म धेनु बाणे गेल उड़े ※ चेये देख से-राक्षसार मुण्ड आछे प'ड़े
तुइ बेटा महादुष्ट, ता' ह'ते मायावी ※ भण्ड तपस्याते तुइ काहारे भुलावि
एत बलि नीलवीर कोपे करि भर ※ उपाड़िया आने एक दीर्घ तरुवर
बाहुबले हाने वृक्ष तरणीर माथे ※ हासिया तरणीसेन धरे बामहाते
वृक्ष यदि व्यर्थ गेल, नीलवीर रोषे ※ आनिल पर्व्वत एक चक्षुर निमिषे
हानिल पर्व्वत-गोटा दिया हुहुङ्कार ※ तरणीर गदा ठेकि हैल चूरमार
पर्व्वत हइल गुँड़ा गदार प्रहारे ※ तरणी हानिल बाण नीलेर उपरे
मुखे रक्त उठे, वीर हइल अज्ञान ※ नीलवीर-भंग देखि रोषे हनूमान ६७
लाफ़ दिया हनूमान तार रथे चड़े ※ सारथिर हातेर प्रबोध निल केड़े
रुषिया तरणीसेन मारे एक चड़ ※ रथ हैते पड़ि हनू करे धड़फड़
संवित् पाइया हनू करे महामार ※ लाफ़ दिया रथे गिया पड़े आर वार
दुइजने महायुद्ध रथेरे उपरे ※ कोपेते तरणीसेन हनूमाने धरे
आछाड़िया फेले दिल धरणी-उपर ※ पाछु हैल हनूमान पाइया त डर
हनूमाने विमुख देखिया लागे भय ※ आतंके वानर केह आगु नाहि हय ६८

गाय के चमड़े से ढका हुआ रथ बैल खींच रहा था। पवन-बाण से जब उसके बैल उड़ गये तो वह हक्का-बक्का रह गया था। बछिया और गाय के चमड़े बाण से हवा में उड़ गये थे। आँखें खोलकर देख ले, उस राक्षस का मुंड यहीं पड़ा है। तू बड़ा दुष्ट और मायावी भी है। इस ढोंग-भरी तपस्या से तू किसको भुलावा दे रहा है। इतना कहकर नीलवीर क्रोधित हो एक लम्बा सा पेड़ उखाड़ कर ले आया, उसने बाँहों की पूरी शक्ति से उस पेड़ को तरणी के सिर पर दे मारा। हँसकर तरणीसेन ने उसको बाएँ हाथ से पकड़ लिया। वृक्ष व्यर्थ गया देखकर नीलवीर रोष से क्षणभर में एक पर्वत ले आया। उसने समूचा पर्वत हुंकार के साथ फेंका, तरणी की गदा से टकराकर वह पर्वत भी चकनाचूर हो गया। जब गदा के प्रहार से पर्वत चूर-चूर हो गया तब तरणी ने नील पर बाण छोड़ा। नीलवीर के मुँह से खून निकल आया और वह बेहोश हो गया। नीलवीर की पराजय देखकर हनुमान को बड़ा क्रोध आया ॥ ६७ ॥

छलांग मार हनुमान उसके रथ पर चढ़ गया और सारथी के हाथ से चाबुक छीन लिया। गुस्से में आकर तरणीसेन ने एक चपत मारा। रथ से गिरकर हनुमान तड़फड़ाने लगा। होश में आकर हनुमान फिर मार-मार कर उठा और फिर कूद कर रथ पर जा चढ़ा। रथ के ऊपर ही दोनों में महायुद्ध छिड़ गया। कुपित होकर तरणीसेन ने हनुमान को पकड़ लिया और जमीन पर उसको पटक दिया। डर कर हनुमान पीछे हट गया। हनुमान को पीछे हटते देख सारे वानर डर गये, आतंक से कोई भी बन्दर आगे नहीं बढ़ा ॥६८॥

महाकोपे पश्चात् करिया हनूमाने ❋ बालिर तनय वीर प्रवेशिल रणे
हानिल पर्व्वत एक तरणी-उपर ❋ देखिया तरणीसेन हइल फाँफर
भयेते तरणी एड़े चोखा-चोखा वाण ❋ बाणे काटि पर्व्वत करिल खान-खान
काटा गेल पर्व्वत, अङ्गदे लागे भय ❋ मुष्ट्याघाते मारिल रथेर चारि हय
सारथि तत्पर बड़, त्वरान्वित ह'ये ❋ पुनः अश्व जुड़ि रथ दिल चालाइये
रुषिल तरणीसेन अङ्गद-उपर ❋ अङ्गदेर बुके मारे लोहार मुद्गर
मुद्गर-आघाते पड़े बालिर नन्दन ❋ महेन्द्र देवेन्द्र आइल करिया गर्ज्जन
आर यत वानर मिलिल एक बारे ❋ वरिषे पर्व्वत-वृक्ष तरणी-उपरे
गिरि येन वृष्टिधारा माथा पाति धरे ❋ तेमनि तरणीसेन संग्राम-भितरे
नाना-शिक्षा जाने वीर परम-सन्धानी ❋ क्षणेके पर्व्वत-वृक्ष काटिल तरणी
आगुनेर शिखा येन तरणीर बाण ❋ लक्ष-लक्ष वानरेर लइल पराण
चड़-लाथि-मुष्ट्याघात वानरेर ताड़ा ❋ लक्ष-लक्ष राक्षसेर माथा करे गुँड़ा
बानरे राक्षस मारे, राक्षसे वानर ❋ हस्ती अश्व रथ रथी पड़िल विस्तर
स्थाने-स्थाने पर्व्वत-प्रमाण गादि-गादि ❋ संग्रामेर स्थलेते बहिल रक्त नदी
वानरेर घोरनाद, गजेर गर्ज्जन ❋ रथेर घर्घर-शब्द, शुनिते भीषण

भीषण क्रोध से हनुमान को पीछे कर बाली का वीर बेटा रण में आ गया। तरणी पर उसने एक पर्वत फेंका। यह देख कर तरणीसेन घबड़ा गया। घबड़ा कर उसने तीखे-तीखे बाण चलाये और बाणों से उसने पर्वत को खंड-खंड कर डाला। पर्वत खंड-खंड हो गया, देखकर अंगद को डर लगा। उसने मुक्का मार कर रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। सारथी बड़ा ही चुस्त था, उसने तुरन्त घोड़े जोतकर रथ चला दिया। तरणीसेन अंगद पर गुस्सा गया और अंगद के सीने पर उसने लोहे का मुद्गर दे मारा। मुद्गर के प्रहार से बाली का बेटा गिर पड़ा तो महेन्द्र और देवेन्द्र गरजते हुए आ पहुँचे। और भी सारे बन्दर एक साथ इकट्ठे हो गये और तरणी पर पेड़-पत्थर की वर्षा करने लगे। जिस प्रकार पर्वत अपने सिर पर वर्षा की झड़ी को सहता है उसी प्रकार तरणीसेन संग्राम में खड़ा रहा। परम-कुशल वीर तरणीसेन विभिन्न विद्याओं में निष्णात था, उसने क्षण भर में सारे पेड़-पर्वतों को काट-काट कर गिरा दिया। तरणी के बाण मानों आग की शिखा हों, उन्होंने लाखों बानरों के प्राण ले लिये। बानर चाँटा, घूँसा और लात से हमला करते और लाखों राक्षसों के सिर चूर-चूर करते। वानर राक्षसों को मारते और राक्षस वानरों को। पर्याप्त संख्या में हाथी, घोड़े, रथ और रथी ढेर हो गये। स्थान-स्थान पर पर्वत के समान ढेर जमा हो गया। रण-भूमि में खून की नदी बह निकली। बानरों का घोरनाद, हाथियों का चिंघाड़ना, रथों का घरघराना—यह सब अत्यन्त घोर शब्द उत्पन्न

जाठा-जाठि-गदा-शेल-शब्द ठन ठन ❋ केह वा पलाये जाय लइया जीवन
कारो गेल हस्त-पद, कारो चक्षु-कर्ण ❋ मुषल-आघाते केह हइल विवर्ण
तुलना नाहिक दिते, युद्ध हैल वड़ ❋ चारि-द्वारेर वानर पश्चिम-द्वारे जड़ ६९
सहिते ना पारे केह तरणीर वाण ❋ रुषिया सुषेण बुड़ा हैल आगुयान
सुषेणेर प्रतापे राक्षसगण काँपे ❋ तरणीर रथे गिया पड़े एकलाफे
तरणीर हातेर धनुक निल केड़े ❋ विदारिल सर्व्व-अंग आँचड़-कामड़े
तरणीर अंगे तबे रक्तधारा वय ❋ पदाघाते मारिल रथेर चारि हय
सारथिर मुण्ड छिड़ि करे वीर-दाप ❋ आपन कटके पड़े दिया एकलाफ
तरणीर दशा देखि कपिगण हासे ❋ आनिल सारथि हय चक्षुर निमिषे
करिछे तरणीसेन बाण-अवतार ❋ सम्मुख-संग्रामे रहे, हेन साध्यकार ७०
बड़-बड़ वानर पलाये गेल दूरे ❋ चोखा-चोखा बाण विन्धे सुग्रीव-वानरे
बाणाघाते सुग्रीव-भूपति कोपे ज्वले ❋ गर्ज्जिया पर्व्वत वीर हाने बाहुबले
तरणी मारिल गदा क्रोधे कम्पमान ❋ प्रहारे पर्व्वत गेल ह'ये शतखान
हानिल दुर्ज्जय जाठा सुग्रीवेर बुके ❋ पड़िल सुग्रीव-राजा, रक्त उठे मुखे

करने लगा। गदा, शेल, शूल जैसे अस्त्रों के टकराव से ठन्-ठन् का शब्द होने लगा। किसी के हाथ-पैर कट गये तो किसी के आँख और कान। मूसल के प्रहार से किसी का अंग उड़ गया। यह युद्ध बड़ा भयंकर हुआ, इसकी तुलना नहीं की जा सकती। चारों द्वारों के वानर पश्चिमद्वार पर इकट्ठे हो गये॥ ६९॥

तरणी के बाणों को कोई भी सह नहीं सका। बूढ़ा सुषेण बिगड़कर आगे बढ़ आया। सुषेण के प्रताप से राक्षस काँपने लगे। वह एक छलांग में तरणी के रथ पर जा चढ़ा। उसने तरणी के हाथों का धनुष छीन लिया और सभी अंगों को नाखून और दाँतों से नोच-खसोट डाला। तरणी के शरीर से रक्त की धारा बह निकली। लात मारकर उसने रथ के चारों घोड़ों को मार डाला और सारथी का मुंड भी नोच डाला। फिर एक छलांग में अपनी सेना के बीच आ गया। तरणी की दुर्दशा देखकर वानर हँसने लगे। तरणी ने तुरन्त घोड़े और सारथी मंगवाये। फिर बाणों की वर्षा करने लगा। सम्मुख संग्राम में उसके सामने टिके रहा ऐसी शक्ति किसमें है॥ ७०॥

बड़े-बड़े वानर दूर भाग गये। तीखे-तीखे बाण आकर सुग्रीव को लगने लगे। बाणों की चोट से सुग्रीव-राजा क्रोध से जलने लगे। वीर ने गरज कर एक पर्वत फेंका। तरणी ने क्रोध से काँपते हुए उसपर गदा की चोट की जिससे पहाड़ के सैकड़ों टुकड़े हो गये। सुग्रीव के सीने पर उसने घनघोर जाठा फेंककर मारा—सुग्रीव राजा गिर पड़े और उनके मुख से खून निकलने लगा। राजा सुग्रीव ज्योंही युद्धस्थल पर गिरे तो दुम उठाकर

संग्रामे पड़िल यदि सुग्रीव-राजन * उपलेज करिया पलाय कपिगण
पलाय वानरगण, फिरिया ना चाय * धर धर बलिया राक्षस पिछे धाय
प्राणभये पलाइल बड़-बड़ वीर * तरणीसेनेर बाणे केह नहे स्थिर
महेन्द्र देवेन्द्र पलाय द्विविद कुमुद * रहिलेन हनूमान सुषेण अङ्गद
सुग्रीवेर चैतन्य कराय तिनजन * चालाइल रथ विभीषणेर नन्दन२७१
हाते धनु दाण्डाइया श्रीराम-लक्ष्मण * दक्षिणेते जाम्बवान, बामे विभीषण
सम्मुखेते उपनीत तरणीर रथ * रथ हैते नामिल थाकिते कत पथ
सङ्केते प्रणाम करे पितार चरणे * करपुटे प्रणमिल श्रीराम-लक्ष्मणे
विभीषण बले, राम, देखह सत्वर * तोमा-दोंहे प्रणाम करये निशाचर
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण * आसियाछे निशाचर करिबारे रण
विपक्षेर पक्ष ह'ये आसियाछे रणे * आमा-दोंहे प्रणाम करिबे कि कारणे
विभीषण बले, प्रभु, ना जान कारण * लङ्कापुरे ओ तोमार भक्त एकजन
तोमार चरण-बिना अन्य नाहि जाने * आसियाछे संग्रामेते राजार शासने
राम बले, भक्त यदि जानह निश्चय * आशीर्व्वाद करि, येन वाञ्छा पूर्ण हय
लक्ष्मण बलेन, कि कहिले महाशय * राक्षसेर अभिलाष रावणेर जय

सारे वानर भागने लग गये। वानर भागने लगे तो पीछे पलटकर भी नहीं देखा। पकड़ो-पकड़ो, कह कर राक्षस उनके पीछे पड़ गये। बड़े-बड़े वीर प्राणों के भय से भागे। तरणीसेन के बाणों से कोई भी स्थिर नहीं रह सका। महेन्द्र, देवेन्द्र, द्विविद और कुमुद भागने लगे। हनुमान, सुषेण और अंगद रह गये। तीनों मिलकर सुग्रीव को होश में करने लग गये। विभीषण-नन्दन ने रथ चला दिया ॥ २७१ ॥

हाथ में धनुष लिये श्रीराम-लक्ष्मण खड़े हैं। उनके दक्षिण में जाम्बवान खड़ा है तो बाएँ विभीषण। सामने तरणी का रथ जा पहुँचा। कुछ रास्ता शेष रहते वह रथ से उतर पड़ा। पिता के चरणों पर उसने संकेत से प्रणाम किया। हाथ जोड़कर उसने श्रीराम-लक्ष्मण को प्रणाम किया। विभीषण ने कहा, हे राम, शीघ्र देखो तुम दोनों को निशाचर प्रणाम कर रहा है। श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण सुनो, यह निशाचर विपक्ष की ओर से युद्ध करने रणभूमि में आया है, वह किस कारण हम दोनों को प्रणाम करेगा ? विभीषण बोले, प्रभु आप इसका कारण नहीं जानते। लंका नगरी में यह आपका एक भक्त है। आपके चरणों के अतिरिक्त यह और कुछ भी नहीं जानता है। राजा के आदेश से यह युद्ध करने आया है। राम ने कहा, अगर निश्चित रूप से जानते हो कि यह मेरा भक्त है तो आशीर्वाद करता हूँ कि इसकी मनोकामना पूर्ण हो। लक्ष्मण ने कहा, हाय, यह आपने क्या किया। राक्षस की अभिलाषा है रावण की विजय। श्रीराम ने कहा, तुम नहीं जानते लक्ष्मण, भक्त कभी भौतिक इच्छाएँ नहीं करता ॥ २७२ ॥

श्रीराम बलेन, तुमि ना जान लक्ष्मण ※ भक्तेर विषय-वाञ्छा नहे कदाचन२७२
कहिते कहिते कथा राम रघुमणि ※ धनुके टङ्कार दिया आइल तरणी
गभीर-गर्ज्जने बले छाड़ि सिंहनाद ※ देशे फिरे जाबे बेटा, करियाछ साध
महाकोपे लक्ष्मणेर ओष्ठाधर काँपे ※ शमन-समान बाण बसाइल चापे
प्रहारिल तरणीरे पञ्चशत बाण ※ काटिया तरणीसेन करे खान-खान
बाण यदि व्यर्थ गेल, रुषिल लक्ष्मण ※ तरणी-उपरे करे बाण-वरिषण
यत बाण लक्ष्मण मारिला तरणीके ※ श्रीराम-स्मरणे वीर काटे एके-एके
अमर्त्य समर्थ बाण, बाण कर्णरेखा ※ दुइजने बाण मारे, जार यत शिक्षा
लक्ष्मण पड़िल बाण अग्नि-अवतार ※ तरणी बरुण-बाणे करिल संहार
पाशुपत-बाण मारे ठाकुर लक्ष्मण ※ वैष्णव-बाणेते वीर करे निवारण
हानिल पर्व्वत-बाण अति-भयङ्कर ※ पवन-बाणेते निवारिल निशाचर
सर्प-बाण मारिलेन ठाकुर लक्ष्मण ※ लक्ष-लक्ष अजगरे छाइल गगन
विकट-दशन, तुण्ड अति-भयङ्कर ※ गरुड़-बाणेते निवारिल निशाचर
कुह-शरे लक्ष्मण करिल मायामय ※ दशदिक् अन्धकार, दृष्टि नाहि हय
अन्धकारे देखिते ना पाय निशाचर ※ आपना-आपनि काटाकाटि परस्पर

राम रघुमणि यह सब कह ही रहे थे कि धनुष पर टंकार मारते तरणी आ गया। गम्भीर गर्जन से उसने सिंहनाद किया, कहा कि क्या अपने देश सकुशल लौट जाने की साध है तुमको। यह सुनकर प्रचंड क्रोध से लक्ष्मण के होंठ काँपने लगे। उन्होंने धनुष पर यमराज के समान बाण चढ़ाया। उन्होंने तरणी पर पाँच सौ बाण फेंके जिनको तरणीसेन ने काट कर खंड-खंड कर दिया। बाण व्यर्थ गये देख लक्ष्मण अत्यन्त कुपित हुए और तरणी पर फिर बाण बरसाने लगे। जितने बाण लक्ष्मण तरणी पर निशाना साधकर फेंकते, श्रीराम का स्मरण कर वीर तरणी उनको काट कर गिरा देता। अमर्त्य, समर्थ, कर्णरेखा आदि कितने ही बाण उसने काट डाले। दोनों ही अपनी-अपनी शिक्षा के अनुसार बाण चलाते रहे। लक्ष्मण ने अग्नि-अवतार बाण चलाया तो तरणी ने वरुण-बाण से उसका संहार किया। लक्ष्मण ने पाशुपत-बाण मारा तो वीर तरणी ने वैष्णव-बाण से उसका निवारण किया। लक्ष्मण ने भयंकर पर्वत-बाण फेंका तो निशाचर ने पवन-बाण से उसका निवारण किया। लक्ष्मण ने सर्प-बाण फेंका, भयानक फन और विकट दाँत वाले लाख-लाख अजगरों से गगन छा गया, निशाचर तरणीसेन ने गरुड़-बाण से उसका प्रतिरोध किया। लक्ष्मण ने कुहरा-बाण फेंका तो चारों ओर अंधेरा छा गया, कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता था, निशाचर आपस में मारकाट कर ध्वंस होने लगे, तरणी की सेना में खलबली मच गई। तरणी ने चिकुर-बाण से अन्धकार का नाश किया। गुस्से में आकर लक्ष्मण ने गन्धर्व-बाण

तरणीर सैन्येते हइल महामार ❋ चिकुर-बाणेते विनाशिल अन्धकार
कोपेते गन्धर्व्व-बाण मारिल लक्ष्मण ❋ तिनकोटि गन्धर्व्व जन्मिल ततक्षण
गन्धर्व्व-राक्षसे तबे हैल महामार ❋ तरणीर सैन्य सब हइल संहार
पड़िल सकल ठाट, नाहि एकजन ❋ राखिते नारिल विभीषणेर नन्दन
कोपेते तरणीसेन जाठा निल हाते ❋ गर्ज्जिया मारिल जाठा लक्ष्मणेर माथे
पड़िल लक्ष्मण-वीर हइया अज्ञान ❋ लक्ष्मणेरे लइया पलाय हनूमान ७३
डाकिछे तरणीसेन जिनिया संग्राम ❋ कोथाय तपस्वी भक्त जटाधारी राम
राम बले, अधिक विलम्ब नाहि आर ❋ एखनि पाठाव तोरे यमेर दुयार
लक्ष्मण पड़िल यदि, आइल रघुनाथे ❋ त्रिभुवन-विजयी धनुक-बाण हाते
दाण्डाइल रघुनाथ तरणी-सम्मुखे ❋ रामेर सर्व्वाङ्ग वीर नेहालिया देखे
विश्वरूप रामेर देखिल निशाचर ❋ ब्रह्माण्ड एकैक लोमकूपेर भितर
पर्व्वत-कान्तार देखे कत नद-नदी ❋ मर्त्यलोक - तपोलोक - ब्रह्मलोक-आदि
मायाते मनुष्य-लीला गोलोकेर पति ❋ चरणे तरङ्गमयी गंगा भागीरथी
यक्ष रक्ष देवता किन्नर लाखे-लाखे ❋ विस्मय हइल मने विश्वरूप देखे
अष्टांग लोटाये भूमे प्रणाम करिल ❋ धनुर्व्वाण फेलि स्तव करिते लागिल७४

फेंका। उतनी देर में तीन करोड़ गन्धर्वों का जन्म हो गया। गन्धर्वों और राक्षसों में घनघोर मारकाट शुरू हो गई और तरणी की सारी सेना मर-खप गई, सारा कटक गिर गया, एक भी सैनिक नहीं बचा, बिभीषण का नन्दन उनकी रक्षा न कर सका। क्रोधित हो तरणीसेन ने हाथ में जाठा उठा लिया और गरज कर लक्ष्मण के सिर पर दे मारा। तब बेहोश होकर लक्ष्मण-वीर गिर पड़े और लक्ष्मण को लेकर हनुमान भाग खड़े हुये ॥ ७३ ॥

संग्राम जीतकर तरणीसेन ने पुकारा, कहाँ है वह कपटी तपस्वी जटाधारी राम ? राम ने कहा, अब और कोई विलम्ब नहीं, तुझे जल्द ही यम के घर भेज रहा हूँ। लक्ष्मण के गिरने पर अपने हाथों में त्रिभुवन-विजयी धनुष-बाण लेकर रघुनाथ आगे बढ़ आए। रघुनाथ तरणी के सम्मुख आकर खड़े हो गये। वीर तरणी राम का सर्वांग निहारने लगा। निशाचर ने राम का विश्वरूप देखा। उनके एक-एक रोम-कूप में एक-एक ब्रह्मांड समाया हुआ था। उसी में उसने कितने ही नद-नदी पर्वत-कान्तार (वन) आदि देखे। मर्त्यलोक, तपोलोक, ब्रह्मलोक देखे। माया से गोलोक के स्वामी मनुष्यरूप धर कर लीला कर रहे हैं, उनके चरणों पर गंगा-भागीरथी प्रवाहमान है। लाख-लाख यक्ष, रक्ष, देवता, किन्नर विचर रहे हैं। यह विश्वरूप देखकर वह मन ही मन विस्मित हुआ। भूमि पर साष्टांग लोट कर उसने प्रणाम किया। फिर धनुष-बाण फेंककर वह स्तुति करने लगा ॥ ७४ ॥

कहिछे तरणीसेन करि जोड़ हात ❊ देवेर देवता तुमि, जगतेर नाथ
तुमि ब्रह्मा, तुमि विष्णु, तुमि महेश्वर ❊ कुवेर वरुण तुमि यम पुरन्दर
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य, तुमि दिवाराति ❊ अनाथेर नाथ तुमि, अगतिर गति
तुमि सृष्टि, तुमि स्थिति, तोमाते प्रलय ❊ सत्वरजस्तमोगुणे, तुमि विश्वमय
मत्स्य-कूर्म्म-वराह - नृसिंह - रूपधारी ❊ हिरण्यकशिपु-रिपु गोलोक-विहारी
गभीर-महिमा वीर मिहिर-वंशज ❊ अन्तिमे आश्रय देह ओ पद-पंकज
विकार-विहीन दीन-दयामय नाम ❊ रघुकुलोद्भव नव-दूर्व्वादिल-श्याम
कि जानि भकति-स्तुति, आमि अतिमूढ़ ❊ चिन्तिया ना पाय चराचर चन्द्रचूड़
रक्ष हे पूण्डरीकाक्ष, राक्षसेर रिपु ❊ स्तवेते अशक्त आमि, निशाचर-वपु
बहु-युग-युगान्तरे मानिया असाध्य ❊ जन्मेछि राक्षसकुले हये तव वध्य
कि छार मिछार गर्व्व, स्वर्ग नाहि चाइ ❊ मुण्ड काट तीक्ष्णखड्गे, मोक्षधामे जाइ
पद्महस्ते छिन्न यदि कर एइ देह ❊ पुलके गोलोके जाव, नाहिक सन्देह ७५
तरणी करिल स्तव, शुने रघुवर ❊ अश्रुजले भासिल कोमल-कलेवर
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ❊ लङ्काते एमन भक्त, जानिनु एखन

तब हाथ जोड़ कर तरणीसेन कहने लगा, तुम देवताओं के देवता हो, जगत् के नाथ हो। तुम्हीं ब्रह्मा हो, तुम्हीं विष्णु हो और तुम्हीं महेश्वर हो। तुम्हीं कुबेर, वरुण, यम तथा पुरन्दर हो। तुम्हीं चन्द्र हो, तुम्हीं सूर्य हो, तुम्हीं रात हो, तुम्हीं दिन हो। तुम्हीं अनाथों के नाथ हो, तुम्हीं निराश्रयों के आश्रय हो। तुम्हीं सृष्टि हो, तुम्हीं स्थिति हो और तुम्हीं प्रलय हो। तुम्हीं सत्व, रज और तम गुण से परिपूर्ण विश्व हो। तुम्हीं मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह-रूपधारी हो। हे गोलोक-विहारी, तुम्हीं हिरण्यकशिपु के रिपु हो। हे सूर्य-वंश से उद्भूत महान-महिमा-सम्पन्न वीर, तुम अपने उन पद-पंकजों में मुझको शरण दो। हे विकार-शून्य दीनों के प्रति दयामय, तुम रघुकुल में जन्मे सुन्दर सलोने साँवले राम हो। मैं अत्यन्त मूढ़ हूँ, मुझको भक्ति स्तुति नहीं आती। हे चन्द्रचूड़, सारा चराचर मनन करके भी तुमको नहीं जान पाता। हे पुंडरीकाक्ष, हे राक्षसों के रिपु, मैं स्तुति करने में असमर्थ हूँ। मैंने राक्षसों का शरीर पाया है। युग-युगान्तरों से मुक्ति को असाध्य मानने के उपरान्त अब मैंने तुम्हारा वध्य बनकर राक्षस-कुल में जन्म लिया है। झूठे गर्व से क्या लाभ, मुझको स्वर्ग नहीं चाहिए, तेज खड्ग से मेरा मुंड काट डालो, मैं मोक्षधाम को चला जाऊँ। यदि आप अपने कमल-करों से मेरा सिर काट डालो तो मैं प्रसन्नतापूर्वक गोलोक चला जाऊँगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है ।। ७५ ।।

जब तरणी ने इस प्रकार स्तुति की और रघुवर ने सुना तो उनका कोमल शरीर आँसुओं से भीग गया। श्रीराम ने कहा, हे मित्र विभीषण, सुनो, अब

केमने मारिब अस्त्र इहार उपर ❋ एतबलि त्यजिला हातेर धनु:शर
राम बले, विभीषण, बलि हे तोमारे ❋ केमने धरिब प्राण ए-भक्तेरे मेरे
अकारणे करिलाम सागर-बन्धन ❋ त्यजिया लङ्कार युद्ध पुन: जाइ वन
यत युद्ध करिलाम, श्रम हैल सार ❋ बुझिलाम, ना हइल सीतार उद्धार
नाहिक सीताय कार्य, ना जाब राज्येते ❋ केमने मारिब बाण भक्तेर अंगेते
कण्टक फुटिले मम भक्तेर शरीरे ❋ शेलेर समान बाजे आमार अन्तरे
भक्त मोर पिता-माता, भक्त मोर प्राण ❋ केमने एमन भक्ते प्रहारिब बाण
एतेक भाविया युद्धे हइया विरत ❋ बसिलेन रघुनाथ अन्तरे चिन्तित ७६
सदय-हृदय देखि राजीव-लोचने ❋ तरणी विचार करे आपनार मने
आमार स्तवेते तुष्ट ह'ये रघुवर ❋ बुझि अस्त्र ना मारेन आमार उपर
केमने राक्षस-देह हइबे उद्धार ❋ युद्ध-बिना परित्राण नाहि देखि आर
एतेक भाविया तुलि निल धनुर्ब्बाण ❋ कहिछे कर्कश-वाक्य पूरिया सन्धान
तरणी कहिछे, राम, शोन बलि तोरे ❋ कहिलाम प्रियवाक्य बुझिवार तरे
केमने बुझिलि, आमि ना करिब रण ❋ एखनि पाठाब तोरे यमेर सदन

मुझको विदित हुआ कि लंका में मेरा ऐसा भी भक्त है। इस पर मैं अस्त्र कैसे चला सकता हूँ—यह कहकर उन्होंने अपने हाथ के धनुष-बाण रख दिये। राम ने कहा, विभीषण तुम से बताऊँ, ऐसे भक्त को मार कर मैं कैसे रह सकूँगा। व्यर्थ ही मैंने सागर बांधा, लंका का युद्ध त्याग कर फिर वन चला जाऊँ। मैंने कितने ही युद्ध किये, किन्तु अब सारी मेहनत बेकार गई। मैंने अब समझ लिया कि सीता का उद्धार न हो सकेगा। न सीता का उद्धार होगा और न मैं लौट कर अपने राज्य में जाऊँगा। भला मैं भक्त के अंगों पर बाण कैसे चलाऊँ। मेरे भक्त के अंग में काँटा भी चुभ जाय तो मेरे हृदय पर शेल की चोट सी लगती है। भक्त ही मेरे पिता-माता हैं, भक्त ही मेरे प्राणों के समान हैं, मैं ऐसे भक्त के शरीर पर बाणों का प्रहार कैसे कर सकूँगा। इतना सोचकर रघुनाथ युद्ध से हाथ खींचकर चिन्तित हो अलग बैठ गये ॥ ७६ ॥

राजीव लोचन राम को सदय-हृदय देखकर तरणी अपने मन ही मन विचारने लगा। कदाचित् मेरी स्तुति से तुष्ट होकर रघुवर मुझ पर अस्त्र नहीं चला रहे हैं। इस राक्षस-देह से कैसे मुक्ति मिलेगी, युद्ध के बिना मुक्ति का कोई उपाय नहीं। इतना सोचकर उसने धनुष-बाण उठा लिया। धनुष पर बाण चढ़ा कर उसने कठोर वाक्य कहना शुरू कर दिया। तरणी ने कहा, सुन राम, मैं तेरे को बताता हूँ कि मैंने ये प्यारे-प्यारे शब्द तुझे परखने के लिए कहे थे। तूने यह कैसे समझ लिया कि मैं युद्ध नहीं करूँगा, मैं अभी तुझे यमालय भेजता हूँ। तेरी जो वीरता है उसके बारे में चराचर में

तोर ये वीरत्व, ताहा जाने चराचरे ॥ भरत लइल राज्य दूर करि तोरे
तोरे मारि लक्ष्मणेरे मारिब संग्रामे ॥ सीतारे बसाब ल'ये रावणेर वामे ७७
एत यदि कहिल तरणी महावीर ॥ कोपे लक्ष्मणेर हैल कम्पित शरीर
लक्ष्मण बलेन, दुष्ट निशाचर जाति ॥ प्राणेर भयेते बेटा करिल मिनति
कोथाकार भक्त बेटा, पापिष्ठ दुर्ज्जन ॥ एत बलि शतबाण जुड़िल लक्ष्मण
देखिया तरणीसेन भाविल मनेते ॥ मरिते वासना मम श्रीरामेर हाते
एतेक भाविया हैल विषण-वदन ॥ तरणीर अभिलाष बुझे विभीषण ७८
जोड़ हाते विभीषण कहे रघुनाथे ॥ ए बेटा दुर्ज्जय वीर लङ्कार मध्येते
एक बार लक्ष्मण मूर्च्छित हैल रणे ॥ आर बार युद्धे केन पाठाओ लक्ष्मणे
आपनि मारह रणे दुष्ट निशाचर ॥ एत शुनि धनुक धरिला रघुवर
चोख-चोख बाण मारे पूरिया सन्धान ॥ अर्द्धपथे तरणी करिल खान-खान
यत बाण मारिलेन राम रघुमणि ॥ बाणेते रामेर बाण काटिल तरणी
तरणी बाछिया मारे खरतर-शर ॥ विन्धिया कोमल-अंग करिल जर्ज्जर
दुइजने युद्ध बाजे, दु'जने समान ॥ कोपे राम जुड़िलेन अर्द्धचन्द्र-बाण
बाण देखि तरणीर मने हैल भय ॥ सेइ बाणे काटिला रथेर चारि हय

विदित है। भरत ने तुझे भगाकर राज्य छीन लिया। तुझको मारने के बाद मैं युद्ध में लक्ष्मण का भी वध करूँगा और सीता को लेकर रावण के बाएँ बिठाऊँगा ॥ ७७ ॥

महावीर तरणी का इतना कहना था कि लक्ष्मण का शरीर क्रोध से काँपने लगा। लक्ष्मण ने कहा, यह दुष्ट निशाचर जाति का है, प्राणों के भय से इसने विनती की। यह कहाँ भक्त ठहरा, यह तो पापिष्ठ दुर्जन है। इतना कहकर लक्ष्मण ने सौ बाण धनुष पर चढ़ाये। यह देखकर तरणीसेन ने मन ही मन सोचा—मुझको तो राम के हाथों मरने की अभिलाषा है। यह सोचते ही उसका चेहरा विषाद से भर गया। विभीषण ने तरणी की अभिलाषा भाँप ली ॥ ७८ ॥

हाथ जोड़ कर विभीषण ने रघुनाथ से कहा, लंका में यह छोकरा दुर्जय वीर है। एकबार इससे लड़ते हुए लक्ष्मण मूर्च्छित हो चुके हैं, फिर क्यों दुबारा लक्ष्मण को युद्ध में भेज रहे हैं। स्वयं ही इस निशाचर को आप मारें। इतना सुनकर रघुवर ने धनुष उठा लिया और निशाना साध-साध कर तीखे-तीखे बाण फेंकने लगे। उन बाणों को तरणी ने आधे ही रास्ते में टुकड़े-टुकड़े कर दिये। जितने बाण राम रघुमणि ने फेंके, तरणी ने अपने बाणों के द्वारा उनको काट गिराया। तरणी ने चुन-चुन कर पैने-पैने बाण फेंके और राम के कोमल अंगों को छेद-छेद कर जर्जर कर डाला। दोनों में युद्ध ठन गया, दोनों ही बराबरी के थे। क्रोध में आकर राम ने धनुष पर अर्धचन्द्र

अश्व काटा गेल, रथ हइल अचल ❋ लाफ दिया पड़िल तरणी महीतल
पर्व्वत पाषाण वृक्ष जा देखे सम्मुखे ❋ तर्ज्जन करिया हाने श्रीरामेर बुके
अन्धकार करि फेले वृक्ष ओ प्रस्तर ❋ प्रहारेते कातर हइला रघुवर
शुकाइल मुखचन्द्र, नाहि चले बाहु ❋ पूर्णिमार चन्द्र येन ग्रासिलेक राहु
अस्थिर हइला रणे राम रघुमणि ❋ श्रीरामे कातर देखि भाविछे तरणी
श्रीरामेर परिश्रम ह'येछें अधिक ❋ दारा-सुत मिछा माया, सकलि अलीक
युगे-युगे कामना करिया बहुतर ❋ पेयेछि परम-रिपु परम-ईश्वर
राज्य-धन-परिजन किछु नाहि चाइ ❋ मरिया रामेर हाते गोलोकेते जाइ७९
एत यदि तरणी भाविल मने-मने ❋ विभीषण कहिलेन श्रीरामेर काने
शुन प्रभु रघुनाथ, करि निवेदन ❋ ब्रह्म-अस्त्रे हइबेक इहार मरण
अन्य-अस्त्रे ना मरिबे एइ निशाचर ❋ सदय हइया ब्रह्मा दियाछेन वर
एतेक शुनिया राम कमल-लोचन ❋ धनुकेते ब्रह्म-अस्त्र जुड़िला तखन
रविर किरण जिनि खरतर बाण ❋ सेइ बाणे रघुनाथ पूरिला सन्धान
बाणेर गर्ज्जन, येन वारिद गरजे ❋ विमानेते आसे बाण, जयघण्टा बा जे
स्वर्गेते देवता करे सुमंगल-ध्वनि ❋ जोड़ हाते श्रीरामेरे कहिछे तरणी

बाण चढ़ाया। वह बाण देखकर तरणी के मन में भय समा गया। उस बाण से रथ के चारों घोड़े कट गये। घोड़े कट गये तो रथ अचल हो गया। तरणी कूद कर भूमि पर खड़ा हो गया। सामने पर्वत, पत्थर, पेड़ जो भी दिखता उसे उठाकर गरजते हुए श्रीराम के वक्ष पर फेंकने लगा। चारों ओर अँधियारा कर वह पेड़ और पत्थर फेंकने लगा, इस प्रहार से रघुवर बड़े कातर हुए। उनका चाँद सा मुखड़ा सूख गया और हाथ भी जवाब देने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा मानों पूर्णमासी के चन्द्रमा को राहु ग्रसने लगा हो। श्रीराम को कातर देखकर तरणी सोच रहा है कि राम अत्यन्त परिश्रम से श्रान्त हो गये हैं। पुत्र-कलत्र सभी कुछ मिथ्या है, माया है, अलीक है। युग-युग से कामना करने के उपरान्त परम-शत्रु के रूप में परम-ईश्वर को पाया है। मुझको राज्य-धन-सम्पत्ति कुछ भी नहीं चाहिए। केवल राम के हाथों मर कर गोलोकधाम जाना चाहता हूँ ॥ ७९ ॥

तरणी ने जब मन ही मन इतना सोचा तो विभीषण ने राम के कानों में कहा, प्रभु रघुनाथ सुनो, निवेदन है कि इसकी मृत्यु केवल ब्रह्मास्त्र से ही होगी। अन्य किसी अस्त्र से इस निशाचर की मृत्यु नहीं होगी। ब्रह्मा ने सदय होकर उसको यह वरदान दिया है। इतना सुनकर कमललोचन राम ने धनुष पर ब्रह्म-अस्त्र चढ़ाया। रवि के किरण सा प्रखर वह बाण धनुष पर चढ़ाकर राम ने निशाना साधा। बाण का गर्जन भी ऐसा था मानों बादल गरज रहा हो। विमान से बाण आने लगा और विजय-घंट बजने

तोमार चरण हेरि परि हरि प्राण ※ परलोके दिओ प्रभु, श्रीचरणे स्थान
एतेक भाविते अंगे आसि पड़े वाण ※ तरणीर मुण्ड काटि करे खान-खान
दुइ खण्ड ह'ये वीर पड़े भूमितले ※ तरणीर काटा-मुण्ड "राम राम" वले
'राम-जय' शुभ-ध्वनि करे कपिगण ※ हाहाकार-शव्दे भूमे पड़े विभीषण
अंगेर दुकूल भासे नयनेर जले ※ धेये गिया विभीषणे राम कैला कोले
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ※ केन हे अधैर्य ह'ये करिछ रोदन
इतिमध्ये कि दुःख उठिल तव मने ※ कान्दिया आकुल हैले किसेर कारणे
विभीषण बले, प्रभु करि निवेदन ※ मरिल तरणीसेन आमार नन्दन
एत शुनि रघुनाथ कान्दिते लागिला ※ तोमार सन्तान, केन आगे न वलिला
तोमार नन्दन, यदि कहिते आगेते ※ युद्ध नाहि करिताम तरणी-संगेते
शोकाकुल हइया कान्देन दुइजन ※ श्रीराम-लक्ष्मण कान्दे यत कपिगण
सुग्रीव-अङ्गद कान्दे वीर हनूमान ※ कान्देन-सुषेण-आदि मन्त्री जाम्बवान
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ※ ना जानि, हृदय तव कठिन केमन
ब्रह्म-अस्त्र मारिते मन्त्रणादिल काने ※ आपनि करिले वध आपन-सन्ताने

लगा। स्वर्ग से देवता सुमंगल-ध्वनि करने लगे। तरणी हाथ जोड़ कर श्रीराम से कहने लगा, तुम्हारे चरणों को निहार कर मैं अपने प्राण त्यागता हूँ। हे प्रभु, परलोक में भी अपने श्रीचरणों में स्थान देना। तरणी ने अपने मन में इतना सोचा भर होगा कि वाण आकर उसके लगा और उसका मुंड कटकर अलग जा गिरा। दो खंड होकर वह वीर भूमि पर गिरा। तरणी का कटा मुंड 'राम-राम' उच्चारने लगा। सारे वानर 'राम जय' की शुभ ध्वनि करने लगे। तब हाय-हाय करता हुआ विभीषण जमीन पर गिर पड़ा, उसके अंग तथा वस्त्र आँसुओं से भीग गये। तब दौड़कर राम ने विभीषण को गोद में उठा लिया। श्री राम ने कहा, मित्र विभीषण, तुम ऐसा अधीर होकर क्यों रो रहे हो। इस बीच तुम्हारे मन में कौन सा दुःख उपजा जो तुम रोकर ऐसा व्याकुल होने लगे। विभीषण ने कहा, प्रभु निवेदन करता हूँ, यह मेरा पुत्र तरणीसेन मरा। इतना सुनकर रघुनाथ भी रोने लगे। तुमने पहले क्यों नहीं बताया कि यह तुम्हारा पुत्र है। अगर तुम पहले कह दिये होते कि यह तुम्हारा पुत्र है तो मैं तरणी के साथ युद्ध नहीं करता। इस प्रकार शोकाकुल होकर दोनों रोने लगे। श्रीराम-लक्ष्मण और सारे वानर भी रोने लगे। सुग्रीव, अंगद और वीर हनुमान भी रोने लगे, सुषेण आदि वानर और मंत्री जाम्बवान रोने लगे। श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण, पता नहीं तुम्हारा हृदय कितना कठोर है, तुम्हीं ने मुझे ब्रह्म-अस्त्र से मारने की मंत्रणा दी। स्वयं तुमने अपनी सन्तान का वध कराया। पहले तुमने इस बारे में क्यों नहीं सोचा और अब किस कारण तुम रो रहे हो। हे मित्र !

आगे केन विवेचना ना करिले मने * एक्षणे कान्दह मित्र, किसेर कारणे
शोक परिहर मित्र, स्थिर कर मन * अनित्य देहेर तरे कान्द कि कारण२८०
विभीषण बले, प्रभु, निवेदि चरणे * पुत्र-शोके कान्दि, हेन ना भाविह मने
धन्य आमि, पुण्यवान आमार सन्तान * मरिया तोमार हस्ते पाइल निर्व्वाण
हय से बैकुण्ठे गेल अथवा गोलोके * त्यजिल राक्षस-देह, मुक्त कैले ताके
कुम्भकर्ण-अतिकाय-आदि यत वीर * पुलके गोलोके गेल त्यजिया शरीर
शत्रुभाव करि सबे पाइल उद्धार * श्रीचरण-सेवा करि कि लाभ आमार
यदि पारिताम देह करिते पातन * बैकुण्ठ-नगरे मम हइत गमन
मृत्यु नाहि हबे, ब्रह्मादियाछेन वर * अनेक यन्त्रणा पाब अवनी-भितर
विषाद भाविया कान्दि इहार कारण * श्रीराम बलेन, दुःख त्यज विभीषण
येइ तुमि, सेइ आमि, इथे नाहि आन * साधुर जीवन-मृत्यु एकइ समान
यतदिन रबे तुमि अवनी-भितरे * आमार समान दया तोमार उपरे
एत शुनि विभीषण क्रन्दन संवरे * भग्न-दूत कहे गिया रावण-गोचरे२८१
दूत कहे, लङ्केश्वर, निवेदि चरणे * पड़िल तरणीसेन आजिकार रणे
तरणीसेनेर मृत्यु शुनि लङ्केश्वर * सिंहासन हैते पड़े धरणी-उपर

शोक मत करो, मन को स्थिर करो, यह शरीर नश्वर है, इसके लिए क्यों रोते हो॥ २८०॥

विभीषण ने कहा, प्रभु! तुम्हारे चरणों में निवेदन करता हूँ तुम ऐसा न सोचना कि मैं पुत्र-शोक से रो रहा हूँ। मैं धन्य हूँ और मेरा पुत्र भी पुण्यात्मा है जिसने तुम्हारे हाथों मर कर निर्वाण प्राप्त किया है। शायद वह बैकुंठ गया या गोलोक, उसने अपना राक्षस-शरीर त्यागा और तुमने उसको मुक्त किया। कुम्भकर्ण, अतिकाय आदि वीरों ने भी शरीर त्याग कर आनन्द से गोलोक के लिए प्रस्थान किया। ये लोग शत्रु बन कर मुक्ति पा गये। तुम्हारे चरण-कमलों की सेवा कर मुझको क्या लाभ हुआ। यदि मैं इस शरीर को छोड़ सकता तो मैं भी बैकुंठ जा सकता था। लेकिन ब्रह्मा ने वर दिया है कि मेरी मृत्यु नहीं होगी, और पृथ्वी पर मुझको बहुत दुःख सहना पड़ेगा। इसी कारण विषाद से भर कर मैं रो रहा हूँ। श्रीराम ने कहा, हे विभीषण, दुःख मत करो, जो तुम हो वही मैं हूँ, इसमें कोई झूठ नहीं। साधु के लिये जीवन-मृत्यु दोनों बराबर हैं। जितने दिन तुम संसार में रहोगे सदा तुम पर मेरी कृपा बनी रहेगी। इतना सुनकर विभीषण ने अपना क्रन्दन रोका। भग्न-दूत ने जाकर रावण के निकट निवेदन किया॥ २८१॥

दूत ने कहा, हे लंकेश्वर, तुम्हारे चरणों पर निवेदन करता हूँ कि आज के युद्ध में तरणीसेन वीरगति को पा गये। तरणीसेन की मृत्यु की वार्त्ता सुनकर लंकेश्वर सिंहासन से जमीन पर गिर पड़ा।

चैतन्य पाइया राजा करये क्रन्दन ❋ राजारे प्रबोध देय पात्र-मित्रगण
मृत्तिकाते बसि भावे लङ्का-अधिकारी ❋ घरे-घरे कान्दे यत सब वीर-नारी
पुत्रशोके अनिवार कान्दिल सरमा ❋ बुझिया अनित्य देह, मने दिल क्षमा
अश्रुजले सरमार कलेवर भासे ❋ जानकी प्रबोध देन अशेष-विशेषे
एइरूपे नारिगण कान्दे लङ्कापुरे ❋ रावण मन्त्रणा करे, पाठाइब कारे
कृत्तिवास-पण्डितेर मधुर-वचन ❋ लङ्का-काण्डे गाहिलेन तरणी-निधन २८२

वीरबाहु, धूम्राक्ष ओ भस्मलोचनेर युद्धे गमन ओ पतन

ये वीर पाठाइ नर-वानरेर रणे ❋ सबे मरे, फिरे नाहि आसे एकजने
दिने दिने टुटे बल, मने पाइ शंका ❋ नर-वानर मारि केवा राखे पुरी-लंका ८३
स्वर्गेते गन्धर्व्व एक चित्रसेन नाम ❋ चित्राङ्गदा कन्या तार, रूपेते सुठाम
रावण हरिया तारे आने लङ्कापुरी ❋ परम-सुन्दरी कन्या जिनि विद्याधरी
विष्णुर वरेते एक सन्तान प्रसवे ❋ ताहार गुणेर कथा कहि, शुन सबे
राक्षस-औरसे जन्म वीरबाहु नाम ❋ देव-गुरु-भक्त बड़, सदा जपे राम

चेतना लौट आने पर राजा क्रन्दन करने लगा। राजा को सारे पात्र-मित्र दिलासा देने लगे। इस प्रकार लंका का अधिकारी रावण भूमि पर बैठा हुआ सोचने लगा और घर-घर में वीर-नारियाँ रोने लगीं। पुत्रशोक से सरमा निरन्तर रोती रही। यह सोचकर कि यह शरीर नश्वर है, उसने मन को समझाया। सरमा के सारे अंग आँसुओं से भीग गये। जानकी उनको तरह-तरह से ढाढ़स बँधाने लगीं। इस प्रकार नारियाँ लंकापुर में रोती रहीं। रावण मंत्रणा करने लगा कि अब किसको भेजा जाय। पंडित कृत्तिवास के वचन बड़े मधुर हैं—उन्होंने लंका-कांड में तरणी-वध का प्रसंग गाया ॥ २८२ ॥

वीरबाहु, धूम्राक्ष और भस्मलोचन का युद्ध में गमन और पतन

जिस वीर को भी मैं नर-वानरों के रण में भेजता हूँ वे सभी मर जाते हैं, एक भी लौटकर नहीं आता। दिनोंदिन मेरी सारी शक्ति समाप्त होती जा रही है, मन में यह शंका उपजती है कि नर-वानरों को मार कर कौन लंका की रक्षा करेगा ॥ ८३ ॥

स्वर्ग में चित्रसेन नाम का एक गन्धर्व था जिसकी कन्या चित्रांगदा रूप-सौन्दर्य में अनुपम थी। रावण उस परम-सुन्दरी कन्या को, जो कि विद्याधरियों से भी अधिक रूपवती थी, हर कर ले आया। विष्णु के वर से उसने एक बेटे को जन्म दिया। उसके गुणों को बखानता हूँ, सब लोग सुनो। राक्षस के औरस रूप में उत्पन्न बालक का नाम वीरबाहु है। वह देव, गुरु आदि में बहुत भक्ति रखता है, सदा राम का नाम जपता रहता है। जन्म

जन्मिया ब्रह्मार सेवा करे निरन्तर ✻ कतदिने ब्रह्मा तबे तारे दिला वर
ब्रह्मा बले, वीरबाहु, जाह निजस्थान ✻ एइ हस्ती लह ऐरावतेर समान
एइ हस्ति-सहाये जिनिबे त्रिभुवन ✻ हस्तीर निधने हबे तोमार पतन
विष्णुभक्त हबे तुमि विष्णु-परायण ✻ विष्णुसेवा जतने करिबे सर्व्वक्षण
तोमा-प्रति तुष्ट आमि, जाओ तुमि घरे ✻ मम वरे अन्ते जाबे बैकुण्ठ-नगरे
धर्म्मशील हबे सर्व्व-शास्त्रेते पण्डित ✻ वर पेये पितार निकटे उपनीत ८४
रावण जिज्ञासे, तुमि हओ कोन जन ✻ कोथाय बसति कर, काहार नन्दन
वीरबाहु बले, पिता, हैले विस्मरण ✻ चित्राङ्गदा-गर्भे जन्म, तोमार नन्दन
तपे तुष्ट ह'ये ब्रह्मा दियाछेन वर ✻ पाइयाछि हस्ती ऐरावतेर सोसर
हस्ति-आरोहणे आमि यदि करि मने ✻ त्रैलोक्य जिनिति पारि दिनेकेर रणे
एत शुनि दशानन पुत्रे कैल कोले ✻ शिरे चुम्ब दिया बले सकरुण-बोले
रावण बले, वीरबाहु, थाक एइखाने ✻ लङ्का-राज्य भोग कर मेघनाद-सने
वीरबाहु बले, पिता, करि निवेदन ✻ मातामह-राज्ये आमि थाकिब एखन
तव प्रयोजन-काले आसिब हेथाय ✻ एत बलि वीरबाहु हइल विदाय ८५

लेने के बाद ही वह निरन्तर ब्रह्मा की सेवा करने लगा। कितने ही दिनों के उपरान्त ब्रह्मा ने उसे वर दिया। ब्रह्मा ने कहा, वीरबाहु तुम अपने घर लौट जाओ, यह ऐरावत सा हाथी तुम अपने साथ ले जाओ, इस हाथी की सहायता से तुम त्रिभुवन पर विजय प्राप्त करोगे। हाथी की मृत्यु होते ही तुम्हारा पतन होगा। तुम विष्णुभक्त हो, विष्णु में तुम्हारी भक्ति बनी रहे, तुम सदा-सर्वदा यत्न से विष्णु की सेवा करते रहना। तुम पर मैं प्रसन्न हूँ, तुम अपने घर जाओ। मेरे वर से अन्त में तुम बैकुंठधाम जाओगे। तुम धर्मपरायण और सर्वशास्त्रों में विज्ञ होगे। इस प्रकार वर पाकर वह अपने पिता के निकट पहुँचा ॥ ८४ ॥

रावण ने पूछा, तुम कौन हो, तुम्हारा कहाँ घर है और तुम किसके पुत्र हो। वीरबाहु ने कहा, पिता, आप भूल गये, मैं आपका पुत्र हूँ, चित्रांगदा के गर्भ से मेरा जन्म हुआ है। मेरी तपस्या से तुष्ट होकर ब्रह्मा ने वर और ऐरावत सरीखा हाथी दिया है। अगर मैं चाहूँ तो इस हाथी पर सवार होकर एक दिन के युद्ध में तीनों लोकों को जीत लूँ। इतना सुनकर दशानन ने पुत्र को गोद में उठा लिया और उसका माथा चूम कर करुण भाषा में कहा, वीरबाहु तुम यहीं रहो, मेघनाद के साथ लंका के राज्य का भोग करो। वीरबाहु ने कहा, पिता, मेरा निवेदन यह है कि मैं अभी मातामह के राज्य में ही रहूँगा, तुम्हारी आवश्यकता पड़ने पर यहाँ आऊँगा, इतना कहकर वीरबाहु ने विदा ले ली ॥ ८५ ॥

मातामह-राज्ये छिल गन्धर्व्व-लोकेते ※ युद्धेर वारता शुनि आइल लङ्काते
मने जाने नररूपी देव-नारायण ※ सफल हइबे देह करि दरशन
उद्देशे ब्रह्मार पदे नमस्कार करि ※ हस्ति पृष्ठे वीरबाहु गेल लङ्कापुरी
निरवधि विष्णु-विना अन्ये नाहि मन ※ परम-धार्म्मिक वीर रावण-नन्दन
लङ्काय आसिया देखे छिन्न-भिन्न सब ※ नाहिक से नृत्य-गीत वाद्यभाण्ड-रव
महाशब्दे कलरव करिछे वानर ※ केह बले मार मार, केह बले धर
मृतदेह राशि-राशि राक्षस-वानरे ※ समुद्र गियाछे बाँधा गाछ ओ पाथरे
दग्ध बड़-बड़ घर लङ्कार भितर ※ देखिया से वीरबाहु समय-अन्तर
कुम्भकर्ण-आदि यत राक्षस प्रचण्ड ※ एकठाँइ स्कन्ध पड़े, आर ठाँइ मुण्ड
शकुनि गृधिनी आर कुक्कुर शृगाल ※ महानन्दे कलरव करे पाले-पाल
लक्ष-लक्ष रमणीर रोदनेर शब्द ※ भयङ्कर कर्म्म देखि भये हैल स्तब्ध
अन्तरीक्षे फिरे वीर हस्तीर उपरे ※ तिनद्वार फिरि गेल पश्चिमेर द्वारे
देखिल आछेन वसि श्रीराम-लक्ष्मण ※ जोड़हाते रहियाछे खुड़ा विभीषण
भल्लूक-वानर कत बड़-बड़ वीर ※ निरखिया वीरबाहु कम्पित-शरीर

गन्धर्वलोक में वीरबाहु के मातामह का राज्य था। युद्ध की वार्त्ता सुनकर वीरबाहु लंका चला आया। मन ही मन वह जानता था कि स्वयं नारायण नर का रूप लेकर आए हैं, जिनके दर्शन से सारा तन-मन सफल हो जायगा। ब्रह्मा के चरणों में प्रणाम कर हाथी की पीठ पर बैठकर वीरबाहु लंकापुरी गया। सिवाय विष्णु के अन्य किसी में उसका कोई ध्यान नहीं था। रावण-नन्दन वीर भी था और परम धार्मिक भी। लंका में आकर उसने देखा कि सब कुछ तीन-तेरह हो गया है। न तो वह नाच-गाना रहा और ना गाजा-बाजा ही। चारों ओर वानरों का कलरव हो रहा था, कोई कहता था मारो-मारो, तो कोई कहता था पकड़ो-पकड़ो। चारों ओर राक्षसों और वानरों के मृतदेह बिखरे पड़े थे, समुद्र पेड़ और पत्थरों से बाँध डाला गया था। लंका के भीतर बड़े-बड़े मकान जल गये थे। यह देखकर वीरबाहु का मन भय से भर गया। कुम्भकर्ण आदि बड़े-बड़े राक्षसों का कहीं मुंड पड़ा है तो कहीं धड़। गिद्ध, कुत्ते, स्यार और गीदड़ झुंड के झुंड आनन्द से शोर मचा रहे थे। लाखों निशाचर-रमणियों के रुदन का शब्द सुनाई पड़ रहा था। यह भयानक दृश्य देखकर वह वीर स्तब्ध रह गया। हाथी पर सवार वह वीर अन्तरिक्ष में फिरता रहा। तीनों द्वारों का चक्कर लगाकर वह पश्चिमद्वार पर गया। वहाँ उसने देखा कि श्रीराम-लक्ष्मण बैठे हैं और उनके सम्मुख हाथ जोड़े चाचा विभीषण बैठे हैं। भालू और वानरों में कितने ही बड़े-बड़े वीर बैठे हैं। यह देखकर वीरबाहु का शरीर काँपने लगा। श्रीराम-लक्ष्मण को देखकर रावण-नन्दन ने उनके दोनों चरणों

श्रीराम-लक्ष्मणे देखि रावण-नन्दन ❋ उद्देशेते बन्दिलेन दोंहार चरण
विभीषण-खुड़ाके प्रणाम कैल मने ❋ प्रणमिल भक्तवृन्द यत कपिगणे
विष्णु-अवतार राम देखिल नयने ❋ जानिल राक्षस-वंश-ध्वंस एतदिने ८६
एतेक भाविया गेल पुरीर भितर ❋ सिंहासन त्यजि भूमे ब'से लङ्केश्वर
कान्दिछे तरणी-शोके हइया कातर ❋ कुड़िच'क्षे वारिधारा बहे निरन्तर
दाण्डायेछे पात्र-मित्र चतुर्द्दिके घिरे ❋ दशानन बले, युद्धे पाठाइब कारे
वीर नाहि लङ्काते, भाण्डारे नाहि धन ❋ कुम्भकर्ण मरिल, ना मरे विभीषण
मारिल आपन-पुत्रे आपन-साक्षाते ❋ मजाले कनक-लङ्का नर-वानरेते
जिनिबे वानर-नरे, के आछे एमन ❋ लङ्काते आइल राम हइया शमन
कारे पाठाइब रणे, भावे दशानन ❋ हेनकाले वीरबाहु बन्दिल चरण
वीरबाहु देखिया उठिल दशानन ❋ आलिंगन करि दिल रत्न-सिंहासन
रावण बले, वीरबाहु, करि अवगति ❋ देखिला आपन च'क्षे लङ्कार दुर्गति
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल जिनिनु त्रिभुवन ❋ नर-वानरेर हाते संशय जीवन
वीरबाहु बले, पिता, कह त संवाद ❋ नर, वानरेर सने किसेर विवाद
रावण बले, शुन पुत्र, कहि ये तोमारे ❋ दशरथ राजा छिल अयोध्या-नगरे

में नमन किया। मन ही मन विभीषण-चाचा को प्रणाम किया। सारे भक्त कपियों को उसने प्रणाम किया। अपनी आँखों से उसने विष्णु-अवतार श्रीराम को देखा। उसने यह जान लिया कि इतने दिनों में अब राक्षस-वंश के ध्वंस होने के दिन आ गये ॥ ८६ ॥

इतना सोचकर वह पुरी के भीतर गया। सिंहासन छोड़कर लंकेश्वर जमीन पर बैठा है और तरणी के शोक में अधीर है। उसके बीस नयनों से निरन्तर आँसू गिर रहे हैं। चारों ओर उसे घेर कर पार्षद लोग खड़े हैं। दशानन कह रहा है, कि अब मैं किसको युद्ध करने भेजूँ। लंका में वीर नहीं रहा और भंडार में अब धन नहीं रहा। कुम्भकर्ण मर गया किन्तु विभीषण नहीं मरा। अपने ही पुत्र का उसने अपने सम्मुख वध कराया। नर-वानरों ने मिलकर सोने की लंका का ध्वंस कर दिया। वानरों तथा नर को हरावे, ऐसा कौन है। राम यमराज बन कर लंका में आ गया। दशानन सोचने लगा कि अब मैं किसको रण में भेजूँ। ऐसे ही समय वीरबाहु ने आकर चरण-वन्दना की। वीरबाहु को देखकर दशानन उठ कर खड़ा हो गया और उसका आलिंगन कर बैठने के लिए रत्न-जटित सिंहासन दिया। रावण ने कहा, वीरबाहु, तुमने अपनी आँखों से लंका की दुर्दशा देख ली। मैंने स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की, पर आज नर-वानरों के हाथों मेरा जीवन विपत्ति में पड़ा है। वीरबाहु ने कहा, पिता जी मुझको सारा समाचार तो बताओ, नर-वानर के साथ यह

तार बेटा राम लोकमुखे शुन्ते पाइ ❋ राज्य केड़े ल'ये दूर करे दिल भाइ
दुइ भाइ बनवासी संगे ल'ये नारी ❋ पञ्चवटी-वने छिल ह'ये जटाधारी
शूर्पणखा गियाछिल पुष्प-अन्वेषणे ❋ नाक-कान काटे तार अनुज-लक्ष्मणे
आमि ह'रे आनिलाम ताहार सुन्दरी ❋ वानर लइया राम एल लङ्कापुरी
कुम्भकर्ण-आदि वीर पड़ियाछे रणे ❋ के आर जुझिबे नर-वानरेर सने ८७
वीरबाहु बले, शंका ना कर राजन ❋ इंगिते मारिया दिब श्रीराम-लक्ष्मण
एत बलि वीरबाहु भावे मने-मन ❋ विष्णु हस्ते मरि जाब वैकुण्ठ-भुवन
वीरबाहु बले, पिता तुमि जान भाले ❋ इन्द्र-आदि देव काँपे आमारे देखिले
बिदाय करह, जाब रणेर भितर ❋ एत बलि वीरबाहु चलिल सत्वर
नाना-रत्न-दान राजा दिल पुत्र-तरे ❋ हार ओ नूपुर ताड़ नाना-अलङ्कारे
प्रतापे प्रचण्ड वीर, संग्रामे सुधीर ❋ बापेर आज्ञाय साजि चले महावीर८८
हेनकाले माता तार दूत मुखे शुने ❋ धेये आसे द्रुतगति पुत्र-दरशने
कार बोले जाह पुत्र, करिवारे रण ❋ बड़-बड़ वीर सब हइल निधन
वीरशून्य हइल कनक-लङ्कापुरी ❋ तुमि युद्धे गेले आमि प्राण परिहरि

कैसा विवाद है। रावण ने कहा, सुनो बेटा, तुमसे बताता हूँ। अयोध्या नगर में एक राजा दशरथ था। उसका बेटा राम है। लोगों के मुँह सुना है कि उसके भाई ने राज्य छीन कर उसको भगा दिया। दोनों भाई जटाधारी बन कर साथ में नारी लेकर वनवास करने पंचवटी में रहने लगे। शूर्पणखा वहाँ फूल तोड़ने गई थी। उसके छोटे भाई लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिये। मैं उसकी सुन्दरी स्त्री को चुरा लाया। राम वानरों को लेकर लंका में आ धमका। कुम्भकर्ण आदि वीर युद्ध में मारे गये, अब नर-वानरों के साथ कौन जूझेगा ॥ ८७ ॥

वीरबाहु ने कहा, राजन, कोई शंका मत करो। मैं देखते ही देखते श्रीराम-लक्ष्मण को मार डालूँगा। इतना कहकर वीरबाहु मन ही मन सोचने लगा, विष्णु के हाथों मर कर वैकुंठ जाऊँगा। वीरबाहु ने कहा, पिता, तुम भली-भाँति जानते हो कि मुझको देखते ही इन्द्र आदि देवता काँपने लगते हैं। मुझको विदा कर दो, मैं रणक्षेत्र में जाऊँगा। इतना कहकर वीरबाहु शीघ्र चल पड़ा। राजा ने अपने पुत्र के लिए विभिन्न रत्न दान दिये। रत्नहार, नूपुर और विभिन्न अलंकारों से उसको सुसज्जित किया। प्रताप से प्रचंड वीर, संग्राम में सुधीर, महावीर वीरबाहु पिता की आज्ञा से सुसज्जित हो चल पड़ा ॥ ८८ ॥

दूत के मुँह से यह वृत्तान्त सुनकर उसकी माँ पुत्र को देखने दौड़ आई और बोली, हे पुत्र, किसके कहने पर तुम युद्ध करने जा रहे हो, बड़े-बड़े वीरों का निधन हो गया, सोने की लंका वीरों से शून्य हो गयी। तुम युद्ध में

कुम्भकर्ण-हेन वीर रणे गिया मरे ❋ अतिकाये मारियाछे नर ओ वानरे
मायेर वचन शुनि वीरबाहु हासे ❋ मधुर-वचन कहि जननीरे तोषे
चरणेर धूलि लय माथार उपर ❋ हासिते हासिते करे मायेरे उत्तर
अबोध अबला-जाति, नाहि बुझ कार्य्य ❋ आमि युद्ध ना करिले के राखिबे राज्य
आशीर्व्वाद कर माता, तुमि एक चिते ❋ तोमार प्रसादे रण जिनिब इंगिते
संग्रामे रामेर हाते हइले निधन ❋ रथे चड़ि जाब आमि बैकुण्ठे-भुवन
मायेरे प्रबोध दिया हस्ति-स्कन्धे चड़े ❋ विदाय लइया वीर जुझिवारे नड़े२८९
वीरबाहु रणे चले ह'ये सेनापति ❋ हस्ती अश्व बहुठाट चलिल संहति
चलिल धूम्राक्ष-वीर रथेते चड़िये ❋ मार-मार-शब्दे धाय नाना अस्त्र ल'ये
सवार पश्चाते चले भस्माक्ष दुर्ज्जय ❋ चर्म्मे ढाकि रथखान सबामध्ये रय
जार मुख देखे, सेइ हय भस्ममय ❋ संसारे काहारो मुख नाहि निरीक्षय
हेन महावीर नड़े रण करिवारे ❋ सम्मुख-संग्रामे केवा जिनिबे ताहारे
ताहार सहित एल कतशत वीर ❋ हस्ति-' परे वीरबाहु सुन्दर-शरीर
मने-मने वीरबाहु चिन्ते अनुक्षण ❋ केमने पाइब आमि राम-दरशन२९०

जाओगे तो मैं प्राण त्याग दूँगी। कुम्भकर्ण जैसे वीर ने रण में प्राण दिये। नर और वानरों ने मिलकर अतिकाय को मार डाला। माँ के वचन सुनकर वीरबाहु हँसने लगा और मधुर वचन कहकर जननी को प्रसन्न करने लगा। माँ के चरणों की धूलि सिर से छुवाकर हँसते-हँसते उसने माँ के प्रश्नों का उत्तर दिया। वह बोला, तुम लोग अबोध अबला जाति की हो, व्यावहारिक बातों में अनभिज्ञ हो, मैं युद्ध न करूँ तो राज्य की कौन रक्षा करेगा। हे जननी, तुम एकचित्त होकर आशीर्वाद दो, तुम्हारे प्रसाद से मैं सहज में ही रण जीत लूँगा। संग्राम में यदि राम के हाथ मेरा निधन हो जाय तो रथ पर सवार होकर बैकुंठ-धाम की यात्रा करूँगा। माँ को प्रबोध देकर वह हाथी की पीठ पर सवार हो गया और विदा लेकर लड़ने के लिए चल पड़ा ॥ २८९ ॥

वीरबाहु सेनापति बन कर रण में चल पड़ा। हाथी घोड़ा आदि कई प्रकार की सेना चल पड़ी। धूम्राक्ष वीर रथ पर सवार होकर विभिन्न अस्त्रों से सुसज्जित हो मार-मार शब्द करता चला। सबके पीछे भस्माक्ष तथा दुर्जय चले। अपने रथ को चमड़े से लपेट कर वह बीच में रहा। जिसके मुख की ओर वह दृष्टि डालता वही भस्म हो जाता। संसार में वह किसी का भी मुँह नहीं देखता था। ऐसा महावीर भस्माक्ष रण करने के लिए चल पड़ा। उसके साथ सम्मुख-संग्राम में कौन जीत सकता था? उसके साथ सैकड़ों वीर चले। सुन्दर शरीर धारी वीरबाहु हाथी पर सवार होकर चला। मन ही मन वीरबाहु निरन्तर चिन्तन करता रहा कि कैसे राम का दर्शन हो ॥ २९० ॥

प्रथमेते उत्तरिल वानर-गोचर ❊ मार-मार-शब्द करि धाइल वानर
भस्मलोचनेरे तबे डाकिल तखन ❊ जुझिते दिलेक आज्ञा रावण-नन्दन
वीरबाहु आज्ञा यदि दिलेक ताहाके ❊ से भस्मलोचन जाय रामेर सम्मुखे
चर्म्मे ढाकियाछे रथ, च'क्षे चर्म्म-ठुलि ❊ राम-आगे चलिल भस्माक्ष महाबली
जेखानेते श्रीराम सुग्रीव विभीषण ❊ सेइखाने जाय ठुलि खुलिबारे मन
जोड़ करे श्रीरामे कहये विभीषण ❊ घटिल प्रमाद बड़, रक्ष नारायण
देखह भस्माक्ष-वीर उपनीत आसि ❊ जाहारे देखिबे, सेइ हबे भस्मराशि
चर्म्मे आच्छादित रथ, देख विद्यमान ❊ इहार भितरे आछे शमन-समान
भस्माक्ष इहार नाम, बड़इ दुर्द्धर ❊ करिल कठोर तप सहस्र-वत्सर
तपे तुष्ट ब्रह्मा जबे दिते एल वर ❊ राक्षस बलिल, मोरे करह अमर
ब्रह्मा बले, अन्य वर चाह निशाचर ❊ सृष्टिनाश हबे तुमि हइले अमर
निशाचर बले, तबे करि निवेदन ❊ सेइ भस्म हबे, जार हेरिब वदन
ब्रह्मा बले, दिनु, जाहा एल तव मुखे ❊ घरे गिया ब'से थाक ठुलि दिया चोखे
वर पेये राक्षस हइल आनन्दित ❊ सत्य-मिथ्या केमनेते जाइब प्रतीत

पहले वह वानरों के निकट जा पहुँचा तो वानर मार-मार शब्द करते हुए उसकी ओर लपके। तब भस्मलोचन को बुलाकर रावणनन्दन वीरबाहु ने लड़ने का आदेश दिया। जब वीरबाहु ने आज्ञा दी तो भस्मलोचन राम के सम्मुख चल पड़ा। चमड़े से उसका रथ ढका हुआ था और आँखों पर भी चमड़े की अँधेरियाँ पड़ी हुई थीं। महाबली भस्माक्ष राम के सम्मुख उस ओर चला जहाँ श्रीराम के साथ सुग्रीव और विभीषण बैठे थे। उसका उद्देश्य था कि वहीं जाकर वह अपनी आँखों से अँधेरियाँ हटा लेगा। विभीषण ने श्रीराम से हाथ जोड़ कर कहा, हे नारायण रक्षा करो, बहुत बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। देखो वीर भस्माक्ष आ पहुँचा है। जिसको भी वह देख लेगा वही भस्म के रूप में परिणत हो जायगा। सामने चमड़े से ढका हुआ रथ है, इसके भीतर साक्षात् यम बैठा है। इसका नाम है भस्माक्ष, यह बड़ा ही दुर्द्धर्ष है। इसने हजार वर्ष तक कठोर तपस्या की। तपस्या से तुष्ट होकर ब्रह्मा वर देने आए, तब इस राक्षस ने कहा कि मुझको अमर बना दो। ब्रह्मा ने कहा, हे निशाचर तुझको अमर बना देने से सृष्टि का ध्वंस हो जायगा। तब निशाचर ने कहा, मेरा निवेदन है कि मैं जिसकी ओर भी देखूँ वही भस्म हो जाय। ब्रह्मा ने कहा, जो तुमने माँगा मैंने तुमको वही वर दिया। अब घर जाकर आँखों पर अँधेरियाँ चढ़ाकर बैठ जाओ। वर पाकर राक्षस बड़ा खुश हुआ। कैसे पता चले कि यह वर सच है या झूठ, यह जानने के लिए उसने अपने गुट में जितने राक्षस थे उनकी ओर देखा। उनके मुख की ओर देखते ही वे सब के सब भस्म हो गये।

संहति इहार छिल रक्ष: यतजन ※ मुख निरखिते भस्म हइल तखन
वर पेये निशाचर हरिष-अन्तर ※ स्त्री-पुत्र ना रहे ऐ पापिष्ठ-गोचर
एहेन पापिष्ठ रणे हैल आगुयान ※ इहार संग्रामे प्रभु, हओ सावधान२९१
बिभीषण-बचने बिस्मय हय मने ※ पुनरपि श्रीराम कहेन विभीषणे
रणे भंग नाहि दिब, जुझिब अवश्य ※ आमि भस्म हइ, किंवा ऐ हबे भस्म
बिभीषण बले, प्रभु, ना करिह भय ※ करह उपाय-चिन्ता, मरिबे निश्चय
आछये मन्त्रणा एक, शुन नारायण ※ इहार सम्मुखे देह धरिया दर्पण
जखनि आसिबे बेटा मुख देखिवारे ※ दर्पणे आपन-मुख पाबे देखिवारे
दर्पणे आपन-मुख देखि निशाचर ※ आपनि हइबे भस्म, ना करिह डर
हेन उपदेश यदि कहे विभीषण ※ मित्र मित्र बलि राम दिला आलिंगन
श्रीराम बलेन, सैन्य हओ एकपाश ※ यावत् राक्षस दुष्ट ना हय विनाश
श्रीराम दर्पण-अस्त्र जुड़िल धनुके ※ छुटिया रामेर बाण रहिल सम्मुखे
आछिल रामेर संगे यत कपिगण ※ बाणेते सवार मुख हइल दर्पण२९२
हेनकाले सेइ दुष्ट संग्रामे पशिल ※ राम-अग्रे दु'चक्षेर ठुलि खसाइल
दर्पणास्त्रे रघुनाथ कैला आच्छादन ※ यत बानरेर मुख हइल दर्पण
देखिल भस्माक्ष-वीर जाहार बदन ※ मुख देखा नाहि गेल, देखिल दर्पण

वर पाकर निशाचर तो बड़ा खुश हुआ लेकिन उस पापी के पास उसके स्त्री पुत्र नहीं रहे। ऐसा पापी आज रण में आया हुआ है। हे प्रभु, इसके साथ युद्ध करते हुए सावधान रहना ॥ २९१ ॥

विभीषण के वचन से यद्यपि श्रीराम विस्मित हुए, तथापि उन्होंने विभीषण से कहा, रण से भागूँगा नहीं, अवश्य ही इससे लड़ूँगा; चाहे मैं भस्म हो जाऊँ और चाहे वह। विभीषण ने कहा, प्रभु भयभीत न हों, उपाय की चिन्ता की जाय, यह अवश्य ही मरेगा। हे नारायण सुनो, मेरी एक मंत्रणा है। उसके सामने दर्पण धर दो। जैसे ही वह मुख देखने के लिए आयेगा दर्पण में अपना मुख देख पायेगा। दर्पण में अपना मुख देखकर निशाचर स्वयं भस्म हो जायगा, आपको कोई भय नहीं होगा। विभीषण ने जब ऐसा परामर्श दिया तो राम ने मित्र-मित्र कहकर उसे गले से लगा लिया। श्रीराम ने कहा, सारी सेना एक बगल हो जाओ जब तक कि इस राक्षस का विनाश न हो जाय। श्रीराम ने धनुष पर दर्पण अस्त्र लगाया। बाण छूटकर राम के सम्मुख बना रहा। राम के साथ जितने भी कपि थे, बाण के कारण सभी के मुख दर्पण बन गये ॥ २९२ ॥

ऐसे ही समय दुष्ट संग्राम में पिल पड़ा। राम के सम्मुख आ उसने दोनों आँखों से अँधेरियाँ हटा लीं। दर्पणास्त्र से रघुनाथ ने पहले ही सभी को ढक दिया था, सारे वानरों के मुख दर्पण बन गये थे।

मुख नाहि देखिया कुपिल निशाचर ※ श्रीरामे डाकिया तवे वलिछे उत्तर
राक्षस वलिछे, तुमि प्राणेते कातर ※ भय यदि कर, पलाइया जाह घर
राम वले, राक्षसा, कि इच्छिलि मरण ※ एखनि पाठाव तोरे शमन-सदन
रामेर वचन शुनि कोपे निशाचर ※ रथ चालाइया दिल रामेर गोचर
रामे देखिवारे वीर मेलिल लोचन ※ राक्षस-सम्मुखे राम धरिला दर्पण
दर्पण-भितरे देखि आपनार आस्य ※ निज-मुख देखिया आपनि हैल भस्म
भस्म ह'ये पड़े वेटा रथेर उपरे ※ भस्माक्षेर पतने राक्षस धाय डरे
भस्माक्ष पड़िल यदि, राक्षसेर भङ्ग ※ राक्षसेर भङ्ग देखि वानरेर रंग९३
भस्माक्षेर मृत्यु देखि राक्षस पलाय ※ दूर हैते वीरवाहु देखिवारे पाय
कुपित हइया वीर चाहे घन-घन ※ हाते धनु कहितेछे रावण-नन्दन
राक्षेसेर भंग देख बानर हर्षित ※ हस्तिपृष्ठे वीरवाहु चलिल त्वरित
श्वेतवर्ण हस्ती, जेन पर्व्वत-प्रमाण ※ दुर्ज्जय दशन ऐरावतेर समान
हस्ति पृष्ठे नाना-अस्त्र मुषल-मुद्गर ※ ऐरावत-'परे येन एल पुरन्दर
राक्षसेर भंग देखि रावण-नन्दन ※ आश्वास-वचने सवे कहिछे तखन

भस्माक्ष-वीर ने जिसके मुख की ओर भी देखा उसका मुख नहीं दिखाई पड़ा, केवल दर्पण दिखाई पड़े। मुख न देख सकने से राक्षस बिगड़ खड़ा हुआ। श्रीराम को पुकार कर उसने कहा, तुम प्राणों के भय से कातर हो। यदि भयभीत हो तो भाग कर घर चले जाओ। राम ने कहा, हे राक्षस तुझे क्या मृत्यु की इच्छा है, अभी तुझे यम के घर भेज देता हूँ। राम के वाक्य सुनकर क्रोध से निशाचर ने राम के निकट रथ चला दिया। राम को देखने के लिए वीर ने आँखें खोल दी। राक्षस के सम्मुख राम ने दर्पण रख दिया। दर्पण के भीतर अपना मुख देखकर वह स्वयं भस्म हो गया। भस्म होकर वह अभागा अपने ही रथ पर गिरा। भस्माक्ष के पतन से राक्षस डर कर भागने लगे। इस प्रकार भस्माक्ष के पतन से राक्षसों में भगदड़ मच गई। राक्षसों की भगदड़ देखकर बन्दरों को आनन्द आ गया ॥ २९३ ॥

भस्माक्ष की मृत्यु देखकर जब राक्षस भागने लगे तो उन्हें दूर से वीरबाहु ने देखा। क्रोध में आकर वीर उन्हें बार-बार देखने लगा। रावण-नन्दन वीरबाहु हाथ में धनुष लेकर कहने लगा। राक्षसों की भगदड़ देखकर वानर हर्षमग्न हैं। वीरबाहु हाथी की पीठ पर सवार हो तुरन्त चल पड़ा। श्वेतवर्ण का हाथी ऐसा था मानों पर्वत हो या अजेय दाँतों वाला ऐरावत हो। हाथी की पीठ पर मूसल, मुद्गर आदि विभिन्न अस्त्र लदे थे; ऐसा प्रतीत हुआ मानों ऐरावत पर सवार होकर स्वयं पुरन्दर आ गये हों। रावण-नन्दन ने राक्षसों की भगदड़ देखकर सभी को ढाढ़स बँधाया और कहा, हे राक्षसो,

ना पलाय राक्षस, संग्रामे एस फिरे ※ एखनि मारिब रणे नर ओ बानरे
वीरबाहु-वाक्ये फिरे निशाचरगण ※ पुनरपि एल रणे करिया तर्ज्जन
देखिया बानरगणे वीरबाहु बले ※ हस्ती चालाइया बीर दिल रणस्थले९४
वीरबाहु बले, कपि, दण्ड-दुइ थाक ※ बानर-कटके रणे देखाब बिपाक
चालाइया दिल हस्ती संग्राम-भितर ※ देखिया रुषिल रणे यतेक बानर
कोपेते अङ्गद-बीर बालिर नन्दन ※ घोर सिंहनाद करि करिछे तर्ज्जन
रुषिल राजार-बेटा, कार साध्य थाके ※ कपिगण संग्रामे चलिल एके-एके
नल-नील-कुमुद-सम्पाति-आदि करि ※ महेन्द्र देवेन्द्र आर सुषेण केसरी
गवाक्ष-शरभ-गय-द्विविद बानर ※ दीर्घाकार पर्व्वत-प्रमाण कलेवर
सुग्रीवेर सैन्य नड़े देखिते अपार ※ विंशति बानरे अङ्गदेर आगुसार
आगुदले अङ्गदेर हैल आगमन ※ राक्षसेर सने जाय करिवारे रण
योजन पर्व्वत दश निल से उपाड़ि ※ राक्षस-उपरे फेले अति ताड़ाताड़ि
सन्धान पूरिया वीरबाहु एड़े बाण ※ पर्व्वत काटिया बीर करे खान-खान
पाँचबाण हानिलेक अङ्गदेर बुके ※ पड़िल अंगद-बीर, रक्त उठे मुखे९५

भागो मत, संग्राम में लौट आओ। मैं अभी युद्ध में नर और वानरों का संहार करूँगा। वीरबाहु के कहने पर राक्षस फिर लौट कर आ गये और रणक्षेत्र में गरजने लगे। वानरों को देखकर वीर बीरबाहु ने रणभूमि में अपना हाथी आगे चला दिया ॥ २६४ ॥

वीरबाहु ने कहा, अरे दो घड़ी तो ठहर जाओ, आज मैं वानरों की सेना में विपत्ति ढा दूँगा। यह कहकर उसने रण-भूमि के भीतर अपना हाथी चला दिया। यह देखकर सारे वानर क्रोधित हो गये। क्रोध में आकर बाली का नन्दन वीर अँगद गर्जन-तर्जन करते हुए घोर सिंहनाद करने लगा। जब राजा बालि का बेटा अंगद रोष में आया तो फिर कौन ठहर सकता था। सभी वानर एक-एक कर युद्ध में आगे-आगे चलने लगे। नल, नील, कुमुद, सम्पाति, महेन्द्र, देवेन्द्र, और सुषेण, गवाक्ष, शरभ, गय, द्विविद नामक सभी प्रमुख वानर चल पड़े। पर्वत के समान वृहदाकार शरीर लिये हुए वे सब वानर चल पड़े। सुग्रीव की सेना देखने में अत्यन्त अपार लगती थी। अंगद का हरावल (अगला) दस्ता बीस वानरों का था। अग्रवर्त्ती दल के साथ अंगद का आगमन हुआ। राक्षस के साथ युद्ध करने के लिए अंगद चल पड़ा। उसने योजन भर लम्बे दस पर्वत उखाड़ लिये और उनको राक्षस पर फेंका। वीरबाहु ने निशाना साधकर बाण चलाया और पर्वतों को काट कर उसने खंड-खंड कर डाला। अंगद के सीने पर भी उसने पाँच बाण चला दिये। अंगद वीर गिर पड़ा और उसके मुख से खून निकलने लगा ॥ २६५ ॥

राजपुत्र रणे पड़े, देखे हनूमान् ※ शालगाछ उपाड़िल दिया एकटान
हस्तीर माथाते मारे दुहातिया बाड़ि ※ हस्तीर माथाय ठेके वृक्ष हैल गुँड़ि
बृक्ष-गोटा व्यर्थ गेल, कोपे हनूमान ※ आर वृक्ष उपाड़िल दिया एकटान
उपाड़िया आने वृक्ष पञ्चाश-योजन ※ वृक्षेर छायाते ढाके रविर किरण
एड़िलेक वृक्ष-गोटा धरि वाहुवले ※ करिया विषम शव्द वृक्ष-गोटा चले
हस्तीर माथाय वृक्ष गुँड़ा ह'ये जाय ※ रुषिया दारुण हस्ती क्रोधभरे धाय
क्रोधभरे वीरवाहु एड़े दशवाण ※ वाण फुटि भूमिते पड़िल हनूमान२९६
शराघाते हनूमान अचेतन हैल ※ नल-नील-कुमुदादि रणे प्रवेशिल
महेन्द्र देवेन्द्र आर सुषेण केशरी ※ नय-वीर जुझिवारे एल आगुसरि
नय-वीरे देखि तबे एड़े नय-शर ※ विन्धिया वानरगणे करिल जर्ज्जर
दश-दश बाणे प्रति वानरेरे विन्धे ※ विन्धिल वानरगणे वसि गजस्कन्धे
गवाक्ष-शरभ-गय ओ गन्धमादन ※ बाणे अचेतन ह'ये पड़े पञ्चजन
बानर-कटक बिन्धे करि खान-खान ※ पलाय वानरगण लइया पराण२९७
धाइया बानर कहे श्रीरामेर ठाँइ ※ वीरवाहु-वाणे प्रभु, कारो रक्षा नाइ

हनुमान ने देखा, राजपुत्र युद्ध में गिर पड़ा। उसने झटके से एक शाल वृक्ष उखाड़ लिया। दोनों हाथों से उसने उसको पकड़कर हाथी के सिर पर दे मारा। हाथी के सिर से टकराकर वृक्ष खंड खंड हो गया। एक समूचा वृक्ष व्यर्थ गया तो कोप से हनुमान ने खींचकर एक दूसरा पेड़ उखाड़ लिया। वह वृक्ष इतना बड़ा था कि उसके पचास-योजन के घेरे में सूर्य की किरणें भी छिप गईं थीं। बीहड़ शब्द करते हुए उसने समूचा वृक्ष हाथी के सिर पर दे मारा लेकिन वह भी हाथी के सिर से टकराकर सौ टुकड़े हो गया। तब गुस्से में बावला होकर हाथी दौड़ने लगा। क्रोध में आकर वीरबाहु ने दस बाण चला दिये तो बाणों से छिदकर हनुमान भूमि पर गिर पड़े ॥ २९६ ॥

जब बाणों के आघात से हनुमान अचेतन हो गया तब नल, नील, कुमुद आदि ने रण में प्रवेश किया। महेन्द्र, देवेन्द्र, सिंह सदृश सुषेण आदि नौ वीर युद्ध करने के लिए आगे बढ़ आए। नौ वीरों को देखकर उसने नौ बाण चलाये। उसने बाणों से छेद-छेद कर वानरों को व्याकुल कर डाला। हाथी के कन्धे पर बैठे वीरबाहु ने दस-दस बाण एक-एक बन्दर को मारे। गवाक्ष, शरभ, गय और गन्धमादन आदि पाँच वानर बाण की मार से अचेतन हो गिर गये। साध-साध कर एक-एक वानर को वह बाणों से मारने लगा और वानर अपने प्राण लेकर भागने लगे ॥ २९७ ॥

वानरों ने दौड़ कर श्रीराम से जाकर कहा, हे प्रभो, वीरबाहु के बाणों से किसी की भी रक्षा नहीं हो रही है। कालान्तक यम सा वह रणक्षेत्र में

कालान्तक यम जेन आसि करे रण ※ पड़ियाछे हनूमान-आदि कपिगण
कुम्भकर्ण-हाते सबे पेयेछे निस्तार ※ आजिकार रणे बुझि सबार संहार
एतेक रणेर कथा शुनि दाशरथि ※ चलिलेन रघुनाथ लक्ष्मण-संहति
राम पाछे चलिल सुग्रीव-बिभीषण ※ गाछ-पाथर हाते करि धाय कपिगण २९८
हस्तीर स्कन्धेते थाकि करिछे संग्राम ※ बिभीषणे जिज्ञासा करेन प्रभु राम
श्रीराम बलेन, शुन मित्र बिभीषण ※ कोन् वीर आसियाछे हस्ति-आरोहण
ऐरावत-सम गज अति-भयङ्कर ※ नाना-अस्त्र तुलियाछे गजेर उपर
प्रचण्ड धनुक-बाण, खरतर जाठा ※ पुरन्दर-सम गज-स्कन्धे एल केटा २९९
विभीषण बले, राम, कर अवधान ※ वीरबाहु-नाम धरे रावण-सन्तान
चित्राङ्गदा-नामे एक गन्धर्व्व-कुमारी ※ युद्ध जिनि रावण आनिल तारे हरि
ताहार गर्भेते जन्म, सुन्दर सुठाम ※ देव-द्विज-गुरु-भक्त, वीरबाहु नाम
चित्राङ्गदा जननी, रावण ओर बाप ※ नाम धरे वीरबाहु, दुर्ज्जय-प्रताप
कठोर तपस्या बीर करिल बिस्तार ※ तपेर कारण ब्रह्मा दिते एल वर
ब्रह्मा बले, हबे तोर संग्रामे बिजय ※ दिला एक हस्ती ऐरावतेर तनय
गजराज दिया ब्रह्मा बलिला बचन ※ ए-गजेर जीवनेते तोमार जीवन

आया है, हनुमान आदि कपि गिर गये हैं। कुम्भकर्ण के साथ युद्ध में तो हमलोग बच गये किन्तु लगता है आज के युद्ध में सभी का संहार हो जायगा। रण के सम्बन्ध में यह सारी बातें सुनने के बाद दशरथ-तनय श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण के साथ चल पड़े। श्रीराम के पीछे-पीछे सुग्रीव और विभीषण भी चले तथा पेड़-पत्थर हाथ में लिये वानर भी दौड़ पड़े ॥ २९८ ॥

वीरबाहु हाथी के कन्धे पर बैठा युद्ध कर रहा है यह देखकर प्रभु राम ने विभीषण से पूछा, क्यों मित्र विभीषण, आज हाथी के कन्धों पर सवार यह कौन सा वीर आ गया है। यह गज ऐरावत सा अति-भयंकर है और गज पर विभिन्न अस्त्र-शस्त्र भी लदे हुए हैं। प्रचंड धनुष-बाण और खरधार वाला जाठा भी है। यह पुरन्दर के समान हाथी पर सवार होकर कौन आ गया ॥ २९९ ॥

विभीषण ने कहा, हे राम ध्यान से सुनें। यह रावण की सन्तान है, इसका नाम वीरबाहु है। चित्रांगदा नामक एक गन्धर्व-कुमारी थी जिसका हरण रावण ने युद्ध जीतकर किया था। उसी के गर्भ से इस सुन्दर सुडौल पुरुष का जन्म हुआ है—, यह देव-द्विज-गुरु का भक्त है, इसका नाम है वीरबाहु। चित्रांगदा इसकी जननी है और रावण इसका जनक है। महा-प्रतापी इस वीर का नाम वीरबाहु है। इस वीर ने बड़ी कठोर तपस्या की। तपस्या के कारण ब्रह्मा इसको वर देने आए। ब्रह्मा ने कहा, संग्राम में तेरी-विजय होगी और यह कहकर ऐरावत के तनय के समान एक गज इसे दे

शुनि वीरबाहु बले, निश्चय मरण ※ युद्धे मरि पाइ येन देव-नारायण
ब्रह्मा बले, नररूपी हबे नारायण ※ इच्छासुखे ताँर हस्ते लभिबे मरण
सेइ वीरबाहु एइ दुर्ज्जय-शरीर ※ वीरबाहु-तेजे रणे केह नहे स्थिर
वीरबाहु जिनिले रावण-राजे जिनि ※ समुद्र तरिले येन गोष्पदेर पानि
वीरबाहु इन्द्रजित् बिना नाहि आर ※ इहारा मरिले हबे रावण-संहार
श्रीराम बलेन, मित्र, भरसा तोमार ※ तव उपदेशे हैल सबार संहार३००
राम-बिभीषणे एइ कथोपकथन ※ डाक दिया कहितेछे रावण-नन्दन
वीरबाहु बले, शुन श्रीराम-लक्ष्मण ※ आमा-सने तोमरा जुझिबे कोन जन
राम बले, तोमाते आमाते आजि रण ※ आजिकार युद्धे तव बधिब जीवन
बानर-कटक सब हओ एकभित ※ दुजने करिब युद्ध जेमन प्रमित
एत शुनि वीरबाहु करिछे समर ※ माथाय टोपर वीर हाते धनुःशर
गजस्कन्धे थाकि वीर नेहाले श्रीराम ※ कपटे मनुष्य-देह दूर्व्वादल श्याम
चाँचर-चिकुर शोभे चौरस कपाल ※ प्रसन्न-शरीर वीर परम-दयाल
ध्वज-वज्रांकुश चिह्न अति मनोहर ※ भुवन-मोहन रूप श्यामल-सुन्दर

दिया। गजराज देकर ब्रह्मा ने कहा, इसी गज के प्राणों में तुम्हारा प्राण छिपा है। यह सुनकर वीरबाहु ने कहा, मृत्यु तो निश्चय ही होगी। ऐसा करें कि युद्ध में मर कर मैं देव-नारायण को प्राप्त कर सकूँ। ब्रह्मा ने कहा, नारायण नर का रूप लेकर आएँगे, तब तुम अपनी खुशी से उन्हीं के हाथों अपनी मृत्यु प्राप्त कर लेना। यह वही दुर्जय-शरीर वाला वीरबाहु है। वीरबाहु के प्रताप से कोई भी रण में स्थिर नहीं है। वीरबाहु को जीत लो तो रावण को जीतना मानों समुद्र को तरने के बाद गड़ही-गुच्चे में भरे पानी को पार करना है। वीरबाहु और इन्द्रजीत के अतिरिक्त अब और कोई न रहा। इसके मरने के बाद ही रावण का संहार होगा। श्रीराम ने कहा, मित्र अब तुम्हारा ही भरोसा है, तुम्हारे परामर्श से ही सभी का संहार हुआ है ॥ ३०० ॥

राम और विभीषण में ऐसा सम्भाषण चल रहा था कि रावण-नन्दन वीरबाहु ने पुकार कर कहा, हे श्रीराम लक्ष्मण! तुम दोनों में कौन मेरे साथ लड़ेगा। राम ने कहा, आज तुम्हारी हमारी लड़ाई है। आज के युद्ध में मैं तुम्हारा प्राण-संहार करूँगा। सारी बानर-सेना एक ओर हो जाय। जैसी प्रथा है हम दोनो अकेले युद्ध करेंगे। इतना सुनकर सिर पर मुकुट पहने और हाथों में धनुष-बाण लिये वीरबाहु युद्ध करने लगा। गज के कंधों पर बैठे उस वीर ने श्रीराम को निहारा। छल से मनुष्य का शरीर धारण किये वे दूर्वा-दल सरीखे साँवले हैं, सिर पर काले-काले केश शोभायमान हैं और माथा चौड़ा है। वे परम-दयालु, वीर शरीर, परम-प्रसन्न हैं। जिनके

रामेर हातेर धनु विचित्र-गठन ❋ सकल शरीरे देखे विष्णुर लक्षण
नारायण-रूप देखे रावण-कुमार ❋ निश्चय जानिल राम विष्णु-अवतार
हातेर धनुक-खान भूमिते फेलाये ❋ गज हैते नामि कहे विनय करिये
धरणी लोटाये रहे जुड़ि दुइ कर ❋ अकिञ्चन कर दया राम-रघुवर
प्रणमामि रामचन्द्र संसारेर सार ❋ सत्यवादी जितेन्द्रिय विष्णु-अवतार
अनादि-अनन्त तुमि पुरुष-प्रधान ❋ नाशिते अजेय अरि शमन-समान
पुरुष-प्रकृति तुमि, तुमि चराचर ❋ तोमार एकांश ब्रह्मा विष्णु महेश्वर
अनाथेर नाथ तुमि संसार-तारण ❋ सुरासुर तुमि सृष्टि-संहार-कारण
बहु स्तुति करि बले रावण-नन्दन ❋ अनुक्षण जपे ध्याने देव-त्रिलोचन
साम-ऋक्-यजु ओ अथर्व्व तोमा हैते ❋ असीम महिमा-गुण नारि सीमा दिते
हेन पादपद्म देखिलाम अनायासे ❋ परिपूर्ण हैल एवे मम अभिलाषे
तव पादपद्मे जेवा नाहि मागे वर ❋ बृथाय जीवन तार अवनी-भितर
आपनि क'रेछ बिधि, ना हय खण्डन ❋ ओ पद-स्मरणे हय पाप-विमोचन
ए भव-संसार देखि अकुल पाथार ❋ राम-नाम-तरणी करिये हब पार

चरणों पर ध्वज-वज्रांकुश के चिह्न सुशोभित हो रहे हैं। साँवले-सलोने राम का रूप भुवन-मोहक है। राम के हाथ के धनुष का गठन भी विचित्र है। वीरबाहु ने राम के सारे अंगों पर विष्णु के लक्षण देखे। रावण-कुमार वीरबाहु ने नारायण रूप देखकर निश्चय रूप से जान लिया कि राम विष्णु के अवतार हैं। तब हाथ का धनुष धरती पर फेंक कर वह बिनय-पूर्वक गज से उतरा। धरती पर लोटकर उसने दोनों हाथ जोड़ लिये और कहने लगा हे राम रघुवर, इस तुच्छ व्यक्ति पर दया करो। हे रामचन्द्र, तुम संसार के सार हो, जितेन्द्रिय हो, तुम विष्णु के अवतार हो, तुब अनादि-अनन्त हो, तुम प्रधान पुरुष हो। अजेय शत्रु के विनाश में तुम यमराज के समान हो। तुम्हीं पुरुष व प्रकृति हो, तुम्हीं चराचर हो। तुम्हारा ही एकांश ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर हैं। तुम अनाथों के नाथ हो, तुम्हीं संसार के त्राता हो। तुम्हीं सृष्टि और संहार के निमित्त सुरासुर हो। इस प्रकार रावण-नन्दन भूरि-भूरि स्तुति करता हुआ बोला, देव-त्रिलोचन तुम्हारा ध्यान अनुक्षण करते रहते हैं। तुम्हीं से साम, ऋक्, यजु और अथर्व वेदों का जन्म हुआ है। तुम्हारे असीम गुणों की महिमा का मैं वर्णन नहीं कर सकता। ऐसे भगवान् राम के चरण-कमल मैंने अनायास देख लिये, अब मेरी अभिलाषा पूर्ण हुई। तुम्हारे चरण-कमलों से जो वर नहीं माँगता उसका जन्म इस संसार में व्यर्थ ही है। तुमने स्वयं यह विधि बनाई है, अब यह खंडित नहीं हो सकती। इन चरणों के ध्यान मात्र से सारे पाप धुल जाते हैं। यह संसार अकूल समुद्र सा है, राम-नाम की नाव लेकर मैं

तुमि नारायण-धर्म्म ब्रह्म-सनातन ※ राक्षस-विनाशकारी भुवन-मोहन
उत्पत्ति प्रलय तुमि अचिन्त्य-रतन ※ तोमारे चिनिते प्रभु पारे कोन् जन
अधम राक्षस आमि, बड़इ पापिष्ठ ※ ए दुःखे तारिते प्रभु, तुमि महा इष्ट
चिरदिन महापाप क'रेछि अपार ※ वैष्णव-अस्त्रेते मोरे कर हे संहार३०१
एतेक बलिया यदि रावण-नन्दन ※ रण त्यजि रघुनाथ बसिला तखन
राम बले, देखिलाम तव व्यवहार ※ तोमा बध करा नहे उचित आमार
जाउक जानकी, मोर राज्य जाक् ब'ये ※ पुनः बने जाइ आमि तोरे लङ्का दिये
वीरबाहु बले हे गोंसाइ परिहार ※ तुमि जारे दया कर, लङ्का तार छार
अनन्त-ब्रह्माण्ड प्रभु तोमार शरीरे ※ क्षुद्र लंकापुरी दिया भाण्डिबे आमारे
लंका दिया रघुनाथ भाण्डिते आमारे ※ ना पारिबे कदाचन एइ दुराचारे३०२
एतेक बलिल जदि रावण-नन्दन ※ मने मने भावे निज मरण तखन
तुमि ना मारिले मोर ना हबे उद्धार ※ दया क'रे करह आमार प्रतिकार
रण क'रे पड़ि यदि प्रभु तव बाणे ※ विष्णुदूते ल'ये जाबे वैकुण्ठे-भुवने
जाहा लागि मुनि ऋषि नाना तीर्थे फिरे※ जाहा लागि साधु-जन नाना यज्ञ करे
अनायासे पाब आमि सेइ गुणनिधि ※बिना जाति-व्यवहारे नहे कार्य सिद्धि३०३

इसको पार करूँगा। तुम नारायण हो, ब्रह्मा हो, सनातन धर्म हो। तुम्हीं राक्षस-विनाशकारी भुवन-मोहन हो। तुम्हीं उत्पत्ति हो और तुम्हीं प्रलय हो। तुम जैसे अचिंत्य रत्न को कौन पहचान सकता है। मैं अधम राक्षस हूँ, महापापी हूँ, मेरा दुख दूर करने में तुम्हीं सहायक हो। चिरकाल से मैं महापाप करता आया हूँ तुम मेरा वध वष्णव-अस्त्र से करो ॥ ३०१ ॥

जब रावण-नन्दन ने यह सब कह डाला तो रघुनाथ रण त्याग कर अलग बैठ गये। राम ने कहा, मैंने तुम्हारा आचरण देख लिया, तुम्हारा वध करना मेरे लिए उचित नहीं होगा। जानकी गई तो गई, राज्य भी मेरा गया तो जाने दो, तुझको लंका प्रदान कर फिर मैं वन में लौट जाऊँगा। वीरबाहु ने कहा, हे स्वामी छोड़ो भी, तुम जिस पर दया करते हो उसके लिए लंका बहुत ही तुच्छ है। हे प्रभु, तुम्हारे शरीर में अनन्त ब्रह्मांड हैं, क्षुद्र लंकापुरी देकर तुम मुझको बहकाओगे। हे रघुनाथ, इस दुराचारी को तुम लंका देकर कभी बहका नहीं सकोगे ॥ ३०२ ॥

रावण-नन्दन यह कह कर मन ही मन सोचने लगा कि मेरी मृत्यु कैसे होगी। वह राम से बोला तुम अगर मुझे नहीं मारते तो मेरा उद्धार नहीं होगा। कृपया मेरा उपकार करो। युद्ध करते हुए अगर तुम्हारे बाणों से मैं गिरा तो विष्णुदूत मुझको वैकुंठ-भुवन में ले जायँगे। जिसके निमित्त ऋषि-मुनि तीर्थों में भ्रमण करते रहते हैं, जिसके निमित्त साधु-संन्यासी विभिन्न यज्ञ करते रहते हैं, हे गुणनिधि, मुझको वही परम पद अनायास प्राप्त हो जायगा। बिना जाति-व्यवहार के काम बनता दिखाई नहीं देता ॥ ३०३ ॥

एतेक भाविया मने रावण-कुमार ❋ एक लाफ दिया उठे गजे आपनार
प्रचण्ड धनुक छिल गजेर उपरे ❋ दृढ़मुष्टि अस्त्र ल'ये बिन्धे रघुवीरे
हेदे रे तपस्वी बेटा, भण्ड वनचारी ❋ मरण एड़ाते चाह क'रे भारिभूरि
कालसर्प-सम अस्त्र देखह सर्व्वथा ❋ लब शोध, यत दुःख पाय मम पिता
मम इष्टदेवे आमि करि जे स्तवन ❋ तुमि मने करेछ आपनि नारायण ३०४
कैल वीरबाहु यदि दुरक्षर बाणी ❋ क्रोधेते हइला राम ज्वलन्त आगुनि
सत्त्वगुणे तमोगुण बड़इ बिषम ❋ क्रोधेते हइला राम कालान्तक यम
मार मार बलि राम जुड़िलेन बाण ❋ हासिया धनुक धरे रावण-सन्तान
दुइ जने लागिल बाणेर हानाहानि ❋ उठिल आकाशे बाण शब्द-ठनठनि
बाणे बाणे काटाकाटि उठिल आगुनि ❋ स्वर्गेते देवता काँपे असम्भव गणि'
दूरे थाकि देखे कपि उभयेर रण ❋ बाणेर विषम शब्द उठिल गगन
दुइ जने काटाकाटि हैल बाणे बाणे ❋ दु'जनार उपरेते दुइ जने हाने
अग्निबाण वीरबाहु जुड़िल धनुके ❋ वज्रसम आसे बाण रामेर सम्मुखे
अग्निबाण करे वीर अग्नि-अवतार ❋ बरुण-बाणेते राम करेन संहार
महाकोपे वीरबाहु एड़े दश-बाण ❋ श्रीरामेर बुके फुटे वज्रेर समान

ऐसा सोचकर रावण-कुमार एक छलांग में उचक कर अपने गज पर बैठ गया। उसके गज पर प्रचंड धनुष रखा था। उसको अपनी दृढ़ मुट्ठियों में लेकर वह रघुनाथ को बींधने लगा। क्यों रे अभागे तपस्वी, कपटी वनवासी, तू बात बनाकर अपनी मृत्यु से बच जाना चाहता है। यह काल-सर्प जैसा मेरा अस्त्र देखो। मेरे पिता जितना क्लेश भोग रहे हैं मैं उसका सब बदला लूँगा। मैं अपने इष्टदेव की स्तुति कर रहा हूँ और तुम सोच रहे हो कि तुम खुद ही नारायण बन गये ॥ ३०४ ॥

वीरबाहु ने जब ये कुबोल बोले तो क्रोध से राम आग की भाँति तमतमा उठे। सत्वगुण वाले व्यक्ति में तमोगुण का प्रवेश बड़ा ही भयंकर होता है। क्रोध से राम कालान्तक यम के समान बन गये। मार-मार शब्द करते हुए राम ने बाण साधा तो रावण-सन्तान ने हँसकर धनुष उठा लिया। दोनों के बाणों की मुठभेड़ हुई, आकाश मार्ग पर बाण ठनाठन शब्द करने लगे। बाणों से बाण टकराकर चिनगारियाँ निकलने लगीं। स्वर्ग के देवता इसको असम्भव युद्ध मान कर काँप उठे। दूर रहकर कपियों ने दोनों का रण देखा। बाणों का भीषण शब्द गगन में गूँजने लगा। दोनों के बाण एक दूसरे की काट करने लगे। वीरबाहु ने अपने धनुष पर अग्निबाण चढ़ाया जो कि वज्र के समान राम के सम्मुख आ पहुँचा। अग्निबाण से वीरों ने चारों ओर आग ही आग फैला दी। राम ने वरुण बाण से उसका संहार किया। तब कुपित होकर वीरबाहु ने दस बाण चला दिये।

शराघाते शोणिते भासिला रघुनाथे ※ जेन सूर्यपात हये पड़िल भूमिते
पड़िलेन रामचन्द्र, सर्व्वजन देखे ※ मुखेते उठिल रक्त झलके झलके
व्यथा संवरिया राम जुड़िलेन वाण ※ वीरवाहुर काटिते चाहेन धनुखान
तीक्ष्ण वाण मारे राम धनुक काटिते ※ धनुके ठेकिया बाण पड़े एक भिते
वीरबाहु बले, अवधान रघुनाथ ※ आमार धनुके मिथ्या करिछ आघात
धनुक काटिते ना पारिबे रघुनाथ ※ वीरवाहु कहितेछे करि जोड़हात
अक्षय धनुक आमि करियाछि हाते ※ त्रिभुवने कार साध्य, के पारे काटिते
धनुः काटा नाहि गेल, श्रीराम लज्जित ※ अर्द्धचन्द्र-वाण राम जुड़ेन त्वरित
एड़िलेन बाण राम तारा जेन छुटे ※ सेइ बाणे वीरवाहुर धनुर्व्वाण टुटे
धनुर्ब्बाण गेल, वीरबाहुर उल्लास ※ एत दिने बुझि वा पूरिल मनो-आश
मने जानिलाम, आज नाहि अव्याहति ※ श्रीरामेर वाणे पड़े पाइब निष्कृति
एकमने वीरबाहु करिछे स्तवन ※ धनुर्व्वाण काटा गेल, अवश्य मरण
धनुः काटा गेल, वीर आर धनु लय ※ शरजाल-वाण एड़े रावण-तनय
वाणे आच्छादिल रघुनाथ-कलेवर ※ बाण खेये रघुनाथ हइल फाँफर
मने मने रघुनाथ करि अनुमान ※ ऐषिक वाणेते राम पूरिला सन्धान

श्रीराम के वक्ष में वज्र के समान वे दसों वाण विंध गये। बाणों के आघात से रघुनाथ रक्त से सराबोर हो गये। ऐसा लगा मानों सूर्य का पतन हो गया है और वह भूमि पर गिर पड़ा है। सभी लोगों ने देखा कि रामचन्द्र गिर पड़े और उनके मुँह से भल-भल खून निकलने लगा। पीड़ा को सहकर राम ने एक बाण साधा। उन्होंने वीरबाहु का धनुष काटना चाहा। धनुष से टकरा कर बाण एक ओर गिर पड़ा। वीरबाहु ने कहा, रघुनाथ सुनो, तुम नाहक मेरे धनुष पर चोट कर रहे हो, मेरे धनुष को तुम नहीं काट सकते। वीरबाहु ने हाथ जोड़ कर कहा, मैंने हाथों में अक्षय धनुष ले लिया है। त्रिभुवन में कौन है जो उसको काट सके। जब धनुष नहीं काटा जा सका तो श्रीराम अत्यन्त लज्जित हुए। राम ने तुरन्त ही अर्धचन्द्र बाण साधा। जब राम ने बाण फेंका तो वह नक्षत्र सा लपका। उसी बाण से वीरबाहु के धनुष-बाण कट गये। जब धनुष-बाण गिर गये तो वीरबाहु उल्लसित हो उठा। उसने सोचा शायद इतने दिनों में मेरे मन की अभिलाषा अब पूरी होगी। मन ही मन मैंने यह जान लिया कि आज मेरा कोई बचाव नहीं, श्रीराम के बाणों से मर कर मुक्ति मिलेगी। एकाग्र मन होकर वीरबाहु स्तुति करने लगा, और कहा कि धनुष टूट गया तो अब मृत्यु अवश्यम्भावी है। जब धनुष टूट गया तो वीर ने दूसरा धनुष ले लिया। रावण-तनय के फेंके हुए बाणों के समूहों से रघुनाथ का सारा शरीर ढक गया। बाणों से घायल होकर रघुनाथ जरा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। मन ही मन अनुमान लगाकर

श्रीराम ऐषिक बाण बसाइल चापे ※ राक्षसेर बाण काटिलेन वीर-दापे
श्रीराम काटेन बाण मनेर कौतुके ※ दाण्डाय बानर-गण दूर हैते देखे
राम बले, वीरबाहु, तुमि बड़ वीर ※ तव बाणे मम सैन्य ना हय सुस्थिर
वीरबाहु बले, राम, क्षणेक थाकह ※ यत दुःख दिले, तार प्रतिफल लह ३०५
राक्षसेर वाक्य शुनि कुपिया लक्ष्मण ※ राक्षस उपरे करे बाण-बरिषण
लक्ष्मणेर बाणे वीरबाहु क्रोधान्वित ※ एड़िल दुर्ज्जय बाण, अग्नि प्रज्वलित
चलिल लक्ष्मण-बाण तारा हेन छुटे ※ सेइ बाणे राक्षसेर अग्निबाण काटे
पञ्चबाण लक्ष्मण जे जुड़िला धनुके ※ सन्धान पूरिया मारे वीरबाहु-बुके
बाणाघाते वीरबाहु हइल कम्पित ※ लक्ष्मण उपरे मारे बाण आचम्बित
अष्टबाण वीरबाहु जुड़िल धनुके ※ सन्धान पूरिया मारे लक्ष्मणेर बुके
वीरबाहु-बाण लक्ष्मणेर फुटे बुके ※ घुरिया पड़िल बीर, रक्त उठे मुखे
कतक्षणे लक्ष्मण हइल सचेतन ※ पुनरपि दुइजने हैल महारण
लक्ष्मणे मारिते वीरबाहु करे मति ※ वायुवेगे चालाइया हस्ती शीघ्रगति
आइसे दुर्ज्जय हस्ती त्वरित-गमन ※ लक्ष्मणे मारिल जाठा रावण-नन्दन
अति बेगे एड़े जाठा, चले शीघ्रगति ※ देखिया चिन्तित बड़ हैला दाशरथि

रघुनाथ ने धनुष पर ऐषीक बाण साधा। श्रीराम ने धनुष पर ऐषीक बाण चढ़ाया और राक्षस के बाण काट डाले। हँसीखेल में राम ने राक्षस के बाण काट डाले, दूर खड़े हुए बन्दरों ने यह सब देखा। राम ने कहा, वीरबाहु तुम बड़े वीर हो, तुम्हारे बाणों से हमारी सेना स्थिर नहीं रह पाती। वीरबाहु ने कहा, राम तनिक देर ठहरो, जितना दुख दिया है उसका बदला तो ले लो ॥ ३०५ ॥

राक्षस की बात सुनकर लक्ष्मण को क्रोध आ गया। वह राक्षस पर बाण बरसाने लगे। लक्ष्मण के बाणों से वीरबाहु क्रोधित हो उठा और उसने प्रज्वलन्त अग्नि वाला दुर्जय बाण फेंका। लक्ष्मण का बाण भी नक्षत्र सा लपका—उसी बाण से राक्षस का अग्निबाण कट गया। लक्ष्मण ने धनुष पर पंचबाण साधा और वीरबाहु के वक्षस्थल का निशाना साध कर फेंका। बाण के आघात से वीरबाहु काँपने लगा। उसने भी तुरन्त लक्ष्मण पर बाण फेंका। वीरबाहु ने धनुष पर अष्टबाण चढ़ाया और लक्ष्मण के वक्षस्थल को लक्ष्य कर फेंका। वीरबाहु का बाण लक्ष्मण के सीने में चुभ गया। वीर चक्कर खाकर गिर पड़े और उनके मुँह से खून निकलने लगा। थोडी ही देर में लक्ष्मण होश में आये तो फिर दोनों में महारण छिड़ गया। वीरबाहु ने लक्ष्मण को मारने का निश्चय कर लिया—उसने हाथी को पवन-वेग से दौड़ाया। दुर्जय हाथी तेज चाल से आ पहुँचा और रावण-नन्दन ने लक्ष्मण पर जाठा फेंका। यह देखकर दाशरथि राम बड़े चिन्तित हो गये। राम

जाठार उद्देशे राम एड़िलेन वाण ※ तिन बाणे जाठार करिला खान खान
जाठारे काटिया राम राखिल लक्ष्मण ※ डाक दिया बले तबे रावण-नन्दन
साक्षी हओ जाम्ववान्, खुड़ा विभीषण ※ साक्षी हओ कपिगण पवन-नन्दन
क्षत्रियेरे धर्म्म एइ युद्धे आछे पण ※ जार संगे युद्ध करे, मारे सेइ जन
आमि जाठा मारिलाम लक्ष्मण-उपरे ※ तुमि केन से जाठा काटिले अविचारे
एकेर संगेते युद्धे अन्ये देन हाना ※ धर्म्मशास्त्रे तारे नाहि बले वीरपणा ३०६
श्रीराम बलेन, शुन रावण-नन्दन ※ लक्ष्मणे आमाते भिन्न बले कोन् जन
वीरबाहु बले, राम, आमि ताहा जानि ※ ब्रह्माण्डे तोमाते भिन्न आछे कोन प्राण
वीरबाहु-वाक्य शुनि, लज्जित श्रीराम ※ पुनरपि दुइजने बाधिल संग्राम
गगन छाइया दोंहे बाण-वरिषण ※ बाणे बाणे काटाकाटि, उठे हुताशन
दशबाण रघुनाथ जुड़िला धनुके ※ वज्रसम बाजे बाण वीरबाहु-बुके
बुके बाण बाजे, रक्त उठे अनिवार ※ अचैतन्य ह'ये पड़े रावण-कुमार
रक्तधारे, वीरबाहुर भासे कलेवर ※ गड़ागाड़ि जाय वीर गजेर उपर
वीरबाहु ल'ये गज उठिल गगन ※ जोड़ हाते श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण
लक्ष्मण बलेन, प्रभु, करि निवेदन ※ ब्रह्म-अस्त्र मेरे ओर बधह जीवन

ने जाठा के काटने के उद्देश्य से बाण फेंके और तीन बाणों से जाठा को खंड-खंड कर डाला। जाठा काटकर राम ने लक्ष्मण को बचा लिया। तब रावण-नन्दन ने गुहार कर कहा, हे जाम्बवान, हे चाचा विभीषण, तुम लोग सब गवाह हो। हे पवन-नन्दन और दूसरे कपि, तुमलोग भी साक्षी हो। क्षात्र-धर्म में युद्ध की शर्त्त यह है कि जिसके साथ युद्ध होता है वही मारता है। मैंने लक्ष्मण पर जाठा मारा, तुमने क्यों अन्याय पूर्ण ढंग से उस जाठा को काट डाला। एक के साथ लड़ाई छिड़ी हुई हो और दूसरा आकर उसमें हमला बोल दे तो यह कोई दिलेरी नहीं है ॥ ३०६ ॥

श्रीराम ने कहा, हे रावण-नन्दन सुनो, मुझमें और लक्ष्मण में भेद है यह कौन बताता है। वीरबाहु ने कहा, राम, यह मुझको भलीभाँति मालूम है कि इस ब्रह्मांड में कौन सा प्राणी तुमसे भिन्न है। वीरबाहु के वाक्य सुन कर श्रीराम लज्जित हो गये। फिर दोनों में संग्राम छिड़ गया। दोनों की बाण-वर्षा से आकाश छा गया। बाण से बाण टकरा कर चिनगारियाँ निकलने लगीं। रघुनाथ ने धनुष पर दस बाण चढ़ाये, वीरबाहु के वक्ष पर वे वज्र के समान जा लगे। सीने पर बाण लगे और मुँह से निरन्तर खून निकलने लगा। रावणकुमार वीरबाहु अचेतन हो गया, उसका सारा शरीर खून से लथपथ हो गया और हाथी पर लोट-पोट खाने लगा। तब वीरबाहु को लेकर गज गगन पर चढ़ गया। लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर श्रीराम से कहा, प्रभो, मेरा निवेदन है कि ब्रह्म-अस्त्र मार कर इसके प्राण ले लो। राम ने

राम बले, ए बेटा राक्षस-महावीर ※ धर्म्मेते धार्म्मिक बड़ सुबुद्धि-सुधीर
करिया अन्याय युद्ध ना मारि उहारे ※ मारिब धर्म्मतः जुद्धे वीरबाहु-वीरे७
कतक्षणे राक्षस हइल अचेतन ※ हरिष हइया वीर कहिछे तखन
आरबार एस देखि रणेर भितर ※ जानिलाम वीर बट तुमि रघुवर८
एत बलि धनुक धरिल बाम करे ※ देखिया रुषिल तबे सुग्रीव-वानरे
सुग्रीव बलेन, शुन जगत्-गोसाँइ ※ शुनियाछि हस्ति-संगे, इहार प्रमाइ
हस्ती मैले वीरबाहु मरिबे निश्चय ※ हस्तीरे मारिया कर राक्षसेर क्षय
एत बलि सुग्रीव पवन-गति धाय ※ दूरे थाकि पाथर से देखिबारे पाय
दश योजन पाथर तुलिया निल हाते ※ दानवे रुषिला जेन देव जगन्नाथे
वीरदर्प करि वीर हानिल पाथर ※ दन्त दिया पाथर धरिल गजवर
खान खान करिलेक दन्तेर ताड़ने ※ शालगाछ सुग्रीव उपाड़े एकटाने
दुर्ज्जय से शालवृक्ष विंशति योजन ※ बृक्षेर छायाते ढाके सूर्य्येर किरण
पाथर हइल व्यर्थ, सुग्रीव लज्जित ※ हानिलेक शालगाछ हइया कुपित
गजेर माथाय मारे दुहातिया बाड़ि ※ हस्तीर माथाय गाछ ह'ये गेल गुँड़ि

कहा, यह राक्षस महान् वीर, धार्मिक, बुद्धिमान् और सुधीर भी है। अन्यायपूर्ण युद्ध कर मैं इसको नहीं मारूँगा। वीर वीरबाहु को मैं धर्मयुद्ध में ही वध करूँगा ॥ ३०७ ॥

जब कुछ देर में राक्षस सचेतन हुआ तो उसने हर्ष से राम को ललकारा, हे रघुवर, यह मालूम हो गया कि तुम वीर हो, आओ फिर रण में आओ ॥ ३०८ ॥

इतना कहकर उसने बाएँ हाथ में धनुष ले लिया। यह देखकर वानर सुग्रीव को क्रोध आ गया। सुग्रीव ने कहा, हे जगत् के स्वामी सुनो, मैंने सुना है कि इस हाथी के साथ इसकी आयु बँधी है। हाथी के मरने पर ही वीरबाहु मरेगा। हाथी को मार कर राक्षस का निधन करो। यह कहकर सुग्रीव पवन-गति से दौड़ पड़ा। दूर रहकर ही उसने एक पत्थर देख लिया। दस योजन वाला वह पत्थर उसने हाथों में उठा लिया। मानों देव जगन्नाथ दानवों पर रुष्ट हो गये हों, इस प्रकार वीर सुग्रीव ने बड़े ही वीरदर्प के साथ पत्थर फेंका। गजराज ने उस पत्थर को अपने दाँतों से पकड़ लिया और दाँतों के प्रहार से ही उसको चूर-चूर कर डाला। फिर सुग्रीव ने एक साखू का वृक्ष खींच कर जमीन से उखाड़ लिया। बीस योजन लम्बा वह साखू का वृक्ष अपनी छाया से सूर्य की किरणें ढके हुए था। पत्थर जब व्यर्थ गया तो लज्जित होकर सुग्रीव ने वह साखू दोनों हाथों से पकड़कर उसने गज के माथे पर दे मारा; किन्तु गज के माथे से टकराकर पेड़ खंड-खंड हो गया। हाथी ने सुग्रीव को अपनी सूँड़ में लपेट लिया और उठाकर जमीन

शुण्डे जड़ाइया हस्ती सुग्रीवेरे धरे ❋ आछाड़ मारिया तार अस्थि चूर्ण करे
भूमेते पड़िया राजा करे धड़फड़ ❋ देखिया वानर-गण उठे दिल रड़
मुखे रक्त उठे राजार झलके-झलके ❋ सुग्रीव मरिल बलि कपिगण डाके९
अनेक यतने राजा पाइल चेतन ❋ रामेरे डाकिया बले रावण-नन्दन
एकजन उपरेते दुइजन रोषे ❋ धर्म्म नाहि सहे ताहा, मरे निज दोषे
तुमि आमि युद्ध करितेछे दुइ जना ❋ बानरा आसिया केन माझे दिल हाना
बनपशु, युद्धे किन्तु आम्बा देखि बाड़ा ❋ सेइ पापे हस्तीते आछाड़े करे गुँड़ा१०
वीरबाहु-वाक्येते लज्जित रघुवर ❋ ईषत् हासिया राम करेन उत्तर
बनेते लक्ष्मण छिल ह'ये ब्रह्मचारी ❋ शूर्पणखा राँड़ि गेल वर-वाञ्छा करि
सेइ दोषे नाक कान काटिल लक्ष्मण ❋ विधवार धर्म्म भाल करिल पालन
तोर पिता रावणेर एक लक्ष बेटा ❋ चौद्द हाजार नारी तार, विभा कैल कटा
परम पातकी बेटा लङ्का-अधिकारी ❋ जन्मावधि चुरि क'रे आने पर-नारी
ज्येष्ठ भाइ कुबेर धनेर अधिपति ❋ तार वधु हरिया आनिल पापमति
ब्रह्म-अंशे जन्म देख यत निशाचर ❋ खाइया मानुष पशु पूरये उदर

पर पटक दिया। सुग्रीव की हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं और जमीन पर पड़ा-पड़ा राजा सुग्रीव छटपटाने लगा। राजा सुग्रीव के मुँह से भल-भल खून निकलने लगा, यह देखकर सारे वानर भाग खड़े हुए। सारे कपि यह कहकर चिल्लाने लगे कि सुग्रीव मर गया॥ ३०९॥

बहुत काफी यत्न करने के उपरान्त राजा (सुग्रीव) होश में आया। रावण-नन्दन ने राम को पुकार कर कहा, एक व्यक्ति पर दो जने मिलकर हमला करते हो, धर्म इस बात को सहन नहीं कर सकता, यह अपने दोष से ही मर रहा है। तुम और मैं युद्ध कर रहा हूँ इसके बीच में यह वानर आकर क्यों टूट पड़ा। यह जंगल का जानवर है किन्तु युद्ध करने में बड़ी स्पर्धा रखता है—इसी पाप के कारण हाथी ने उसको पटक कर चूर-चूर कर डाला है॥ ३१०॥

वीरबाहु के वाक्य से रघुवर लज्जित हुए और मुस्कराकर उत्तर दिया, वन में लक्ष्मण ब्रह्मचारी बना रह रहा था, विधवा सूर्पनखा उसके पास पति की अभिलाषा लिए गई। उसी दोष से लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिये। विधवा का धर्म सूर्पणखा ने खूब पालन किया। तेरे पिता रावण के एक लाख बेटे हैं। चौदह हजार उसकी नारियाँ हैं—इसमें कितनी नारियों से उसने विवाह किया है। यह लंका का अधिकारी परम पापी है, आरम्भ से ही यह पर-नारियों को चुरा-चुरा कर लाने लगा। इसका बड़ा भाई कुबेर धन का अधिपति है उसी की पत्नी को यह पापिष्ठ पकड़कर ले आया। ब्रह्म-अंश से जन्म लेकर भी ये सारे निशाचर, मनुष्य और पशुओं

एत दिने लङ्कापुर पापे हैल पूर्ण ❋ पाठाइब यमालये, हबे दर्प चूर्ण ११
एतेक बलिया राम पूरये सन्धान ❋ मारिला राक्षस-गणे शत शत बाण
मारिया रामेर बाण वीरबाहु वीर ❋ शत शत बाणे बिन्धे रामेर शरीर
बाणे बाणे काटाकाटि करे दुइ जन ❋ अग्निमय बाण मारे रावण-नन्दन
बाणेर मुखेते अग्नि पर्व्वत-प्रमाण ❋ वीरबाहु-बाणे राम हइला अज्ञान
सम्मुख-युद्धेते राम हइल मूर्च्छित ❋ देखिया बानर-गण हइल चिन्तित १२
शीघ्रगति आसिया राक्षस विभीषण ❋ श्रीरामेर धनुर्ब्बाण ल'ये करे रण
पञ्च-बाण विभीषण जुड़िल धनुके ❋ सन्धान पूरिया मारे वीरबाहु-बुके
बाणेर उपरे बाण एड़े विभीषण ❋ फाँफर हइल डरे रावण-नन्दन
बाणे भीत वीरबाहु चाहे चारि भिते ❋ राम-मूर्च्छा, केवा बाण मारे आचम्बिते १३
हेनकाले देखे वीर खुड़ा विभीषण ❋ वीरबाहु बले, खुड़ा, सार्थक जीवन
वंश-चूड़ामणि तुमि आछ एकजन ❋ देव-द्विज-गुरु-भक्त बुद्धे विचक्षण
कुले एकजन ह'ले विष्णुते भकति ❋ सकल पुरुष तार पाय दिव्य गति
परम-पुरुष राम ब्रह्म सनातन ❋ सकलि त्यजिला तुमि रामेर कारण
तोमार चरणे खुड़ा करि दण्डवत् ❋ आशीर्व्वाद कर, येन पूरे मनोरथ

का भक्षण कर पेट भरते हैं। इतने दिनों में लंका पाप से भर गई, अब रावण को यमालय भेजकर उसके दर्प को चूर-चूर करूँगा ॥ ३११ ॥

इतना कहकर राम ने धनुष-बाण साधा और राक्षसों पर सैकड़ों बाण फेंके। राम के बाणों से निबटकर वीरबाहु ने सौ-सौ बाणों से राम का शरीर छेद दिया। दोनों जने एक दूसरे के बाणों को बाणों से काटने लगे। रावण-नन्दन ने एक अग्निमय बाण फेंका। उस बाण के मुख पर पर्वत के समान आग थी। वीरबाहु के बाण से राम अचेतन हो गये। सम्मुख-युद्ध में राम अचेतन हो गये यह देखकर सारे वानर बड़े चिन्तित हुए ॥ ३१२ ॥

तब फौरन राक्षस विभीषण ने आकर श्रीराम का धनुष-बाण ले लिया और युद्ध करने लग गया। धनुष पर विभीषण ने पंचबाण चढ़ाया और निशाना साध वीरबाहु के वक्ष पर मारा। विभीषण बाण पर बाण चलाने लगा तो रावण-नन्दन घबरा गया। बाणों से डर कर वह चारों तरफ देखने लगा कि राम तो अचेतन हो गया है अब यह अचानक बाण कौन चलाने लग गया ॥ ३१३ ॥

इतने में ही उस वीर ने देखा कि यह तो चाचा विभीषण हैं। वीरबाहु ने कहा, चाचा, मेरा जीवन आज सार्थक हो गया। तुम ही एक वंश के चूड़ामणि हो, देव-द्विज-गुरु के भक्त हो और बुद्धि में भी विचक्षण हो। सारे वंश में यदि एक भी व्यक्ति विष्णु-भक्त हो जाय तो सारी पीढ़ी को दिव्य-गति प्राप्त हो जाती है। राम परम पुरुष हैं और सनातन ब्रह्म हैं। उन्हीं

विभीषण बले, बाछा, तुमि भाग्यवान् ※ तोमार चरित्र बाछा ना हय बाखान १४
एइरूपे दुइजने कथोपकथन ※ हेनकाले रघुनाथ पाइला चेतन
पुनरपि संग्राम बाजिल दुइजने ※ बाणे बाणे काटाकाटि उठिल गगने
दुइजने बाण मारे, जार जत शिक्षा ※ प्राणपणे एड़े बाण नाहि लेखा-जोखा
अमर्त्य समर्थ बाण, बाण-महाबल ※ विष्णुजाल अग्निजाल बाण-कालानल
वरुणमुख उल्कामुख अति शरखान ※ ग्रहादि नक्षत्र रुद्र ज्योतिर्मय बाण
शिलीमुख सूचीमुख घोर-दरशन ※ सिंहदन्त वज्रदन्त बाण-विरोचन
रिपुहन्ता बिश्वहन्ता बिपक्ष-संहार ※ चन्द्रमुख सूर्यमुख बाण-सप्तसार
कालदण्ड यमदण्ड बाण-कर्णिकार ※ इन्द्रजाल ब्रह्मजाल बाण-शतधार
गरुड़ असुर-मुख हंस-मुख बाण ※ धूम्रमुख कूर्म्मसुख शमन-समान
नील हरिताल बाण बिकट-दशन ※ बिलाप प्रलाप बाण महा-पद्मासन
भयंकर दुष्कर कामिनी-मनोहर ※ पाशुपत हयग्रीव देखिते सुन्दर
कुबेर पवन अस्त्र अति खरशाण ※ नवघन उल्का-बाण के करे बाखान
शोषक-पोषक बाण अंग जे बिभंग ※ त्रिशूल-अंकुश बाण विह्वल मातंग
विकट-संकट बाण सार्थक पथिक ※ माल्यवान् हीरावन्त शारंग ऐषीक

के कारण तुमने सब कुछ त्याग दिया। चचा! मैं तुम्हारे चरणों में प्रणाम करता हूँ। यह आशीर्वाद दो कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो जाय। विभीषण ने कहा, बेटा तुम भाग्यवान् हो, तुम्हारा चरित्र बखाना नहीं जा सकता ॥ ३१४ ॥

इस प्रकार दोनों में बातचीत हो ही रही थी कि रघुनाथ होश में आ गये। फिर दोनों में संग्राम ठन गया। गगन में दोनों के वाण एक दूसरे से टकराने लगे। अपनी-अपनी शिक्षा के अनुसार दोनों वाण फेंकने लगे। प्राणपण से दोनों अनगिनती वाण चलाने लग गये। अमर्त्य, समर्थ वाण, महाबल वाण, विष्णुजाल, अग्निजाल, कालानल वाण, वरुणमुख और उल्कामुख जैसे तीखे वाण, ग्रहादि, नक्षत्र, रुद्र नामक ज्योति से पूर्ण वाण, विकट दिखने वाले शिलीमुख, सूचीमुख वाण और सिंहदन्त, वज्रदन्त और विरोचन वाण, रिपुहन्ता, विश्वहन्ता, विपक्ष-संहार, चन्द्रमुख, सूर्यमुख, सप्तसार नामक बाण, कालदंड, यमदंड, कर्णिकार, इन्द्रजाल, ब्रह्मजाल, शतधार नामक वाण, गरुड़ वाण, असुर-मुख, हंस-मुख नामक वाण, धूम्रमुख, कूर्ममुख जैसे यम के समान बाण, विलाप, प्रलाप, महापद्मासन, भयंकर, दुष्कर, कामिनी-मनोहर पाशुपत, देखने में सुन्दर हयग्रीव वाण, कुवेर, पवनास्त्र आदि वड़े ही खरधार बाण थे। नवघन उल्का-वाण को कौन बखान सकता है। शोषक-पोषक वाण के अंग-विभंग थे। त्रिशूल-अंकुश वाण से मातंग विह्वल हो जाते थे। विकट और संकट बाण अपने पथ के सार्थक पथिक वाण थे। माल्यवान, हीरावन्त, शारंग और ऐषीक वाण भी थे। गजांकुश, शिलाचर्ण

गजाङ्कुश शिलाचूर्ण गभीर गरजे ※ जाइते बाणेर मुखे जयघण्टा बाजे
एत बाण दुइजने करे अवतार ※ सब लङ्कापुरी हैल बाणे अन्धकार
जिनिते ना पारे केह, समान दु-जन ※ दुइजने महायुद्ध, ना जाय लिखन
ब्रह्मार निकटे पेयेछिल पूर्व्वे बाण ※ सेइ बाणे वीरबाहु पूरिल सन्धान
मन्त्रेते हइल बाण अति भयंकर ※ महातेजे आसे बाण रामेर उपर
विपरीत ब्रह्म-अस्त्र देखिया सम्मुखे ※ तीक्ष्ण अस्त्र रघुनाथ जुड़िला धनुके
श्रीरामेर बाण व्यर्थ राक्षसेर शरे ※ देखिया त रघुनाथ भाविला अन्तरे१५
राक्षसेर बाणेर मुखेते अग्नि ज्वले ※ देखिया त पुरन्दर पवनेरे बले
शरभंग-मुनि-स्थाने पाइला ये शर ※ सेइ बाण राक्षसे मारह रघुवर१६
एत यदि पुरन्दर कहे पवनेरे ※ पवन गोपने गिया कन रघुवरे
जे बाण पाइला राम शरभंग-स्थाने ※ वीरबाहु ब्रह्म-अस्त्र काट सेइ बाणे
एत बलि पवन पलाय उभरड़े ※ सेइ बाण तखन रामेर मने पड़े
तूण हैते सेइ अस्त्र ल'ये शीघ्रगति ※ मन्त्र पड़ि' धनुके जुड़िला रघुपति
आकर्ण पूरिया बाण जुड़िल धनुके ※ ब्रह्म-अग्नि प्रज्वलित हैल अस्त्र-मुखे
कोपे कम्पमान् छाड़े बाण दाशरथि ※ बाणेर प्रतापे घन काँपे बसुमती

बाणों का गर्जन गंभीर था। चलते समय बाण के मुख से जयघंटा बजता रहता था। इस प्रकार दोनों ने मिलकर इतने बाणों का प्रयोग किया कि सारी लंकापुरी बाणों से अन्धकारमय हो गई। दोनों में कोई भी जीत नहीं पा रहा है, दोनों ही समान योग्यता के हैं। दोनों में महायुद्ध होने लगा, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। ब्रह्मा से वीरबाहु को पहले ही एक बाण मिला था, वीरबाहु ने उस बाण को धनुष पर चढ़ाया। मंत्र से वह बाण महा भयंकर बन गया, तेजोदीप्त होकर वह बाण राम पर आने लगा। विपरीत दिशा से आते हुए ब्रह्म-अस्त्र को सम्मुख देखकर राम ने धनुष पर तीक्ष्ण अस्त्र चढ़ाया। श्रीराम का बाण राक्षस के शर से व्यर्थ हो गया यह देखकर रघुनाथ ने अपने मन में सोचा ॥ ३१५ ॥

राक्षस के बाण के मुख पर जलते हुए अग्नि को देखकर पुरन्दर ने पवन से कहा, शरभंग मुनि के स्थान पर जो बाण मिला था, वह बाण रघुवर चला कर राक्षस को मारें ॥ ३१६ ॥

पुरन्दर ने जब पवन से इतना कहा तो पवन चुपके से जाकर रघुवर से कह आया कि हे राम, जो बाण शरभंग के स्थान पर मिला था, वीरबाहु का ब्रह्म-अस्त्र उसी बाण से काटो। इतना कहकर पवन भाग खड़ा हुआ। तब राम को वह बाण याद आया। तूण से वह अस्त्र झटपट निकालकर मंत्र पढ़कर धनुष पर लगाया और कान तक खींच कर राम ने बाण को धनुष पर चढ़ाया। उस अस्त्र के मुख पर ब्रह्म-अग्नि प्रज्वलित हो उठी।

श्रीराम एड़िला वाण वायु-वेगे चले ❋ राक्षसेर ब्रह्म-अस्त्र काटे अवहेले
पुनः श्रीरामेर वाण गर्ज्जिया उठिल ❋ काटिया गजेन्द्र-मुण्ड भूतले पाड़िल
गजवर पड़िल देखिते भयङ्कर ❋ पर्व्वत पड़िल येन धरणी-उपर
एक ठाँइ स्कन्ध पड़े, मुण्ड आर मिते ❋ लाफ़ दिया वीरवाहु दाण्डाय भूमिते
कोप-मने श्रीराम मारेन पञ्च वाण ❋ वीरवाहुर धनुक करेन खान खान
ब्रह्म-अस्त्रे धनुक काटेन रघुनाथ ❋ कहितेछे वीरवाहु करि जोड़-हात
जानिलाम, राम तुमि विष्णु-अवतार ❋ अगतिर गति तुमि, संसारेर सार
श्रीचरणे अधीनेर एइ निवेदन ❋ वैष्णव-अस्त्रेते मोरे करह निधन
वीरबाहु कहिलेक करुण-वचन ❋ मने विषादित हैला कमल-लोचन
वीरवाहु ना मरिले, ना मरे-रावण ❋ एतेक भाविया राम विषण्ण-वदन
दुर्ज्जय वैष्णव-अस्त्र धनुकेते जुड़ि ❋ आकर्ण पूरिया गुण देन वाण छाड़ि
महावेगे जाय अस्त्र, शब्द विपर्यय ❋ देव-दानव-गन्धर्व्व-लोकेते लागे भय
चलिल वैष्णव-अस्त्र विष्णु-अवतार ❋ रामेर वाणेते दीप्त हइल संसार
अव्यर्थ वैष्णव-वाण, कि कहिव कथा ❋ मुकुट-सहित काटे वीरवाहु-माथा
भूमिते पड़िया मुण्ड "राम राम" वले ❋ विभीषण दिल मुण्ड राम-पद-तले

दाशरथि राम ने क्रोध से काँपते हुए वह वाण छोड़ा। वाण के प्रताप से वसुमती काँपने लगी। जब श्रीराम ने वाण फेंका तो उसने जाकर अनायास राक्षस के ब्रह्म-अस्त्र को काट गिराया। फिर राम का वाण गरज उठा और उसने गजेन्द्र का मुंड काटकर जमीन पर गिरा दिया। गजवर जमीन पर गिरा तो ऐसा लगा मानों धरती पर पर्वत गिर पड़ा हो। एक ओर उसका मुंड जा गिरा तो दूसरी ओर उसका धड़। तब कूद कर वीरवाहु भूमि पर खड़ा हो गया। क्रोधित मन से श्रीराम ने पंच-वाण फेंका तो वीरवाहु का धनुष खंड-खंड हो गया। ब्रह्म-अस्त्र से रघुनाथ ने वीरवाहु का धनुष काट डाला तो हाथ जोड़ कर वीरवाहु कहने लगा, हे राम मैंने जान लिया कि तुम विष्णु के अवतार हो, असहायों के सहारे हो और संसार के सार हो। तुम्हारे श्रीचरणों में इस अधीन का यह निवेदन है कि वैष्णव-अस्त्र से मेरा निधन कर डालो। जब वीरवाहु ने ये करुण वचन सुनाये तो कमल-लोचन राम मन ही मन विषादमग्न हो गये। उन्होंने दुर्जय वैष्णव अस्त्र को धनुष पर चढ़ाकर कान तक प्रत्यंचा खींच छोड़ दिया। महावेग से जब वह अस्त्र चलने लगा तो भीषण शब्द होने लगा जिससे देव-दानव-गन्धर्व लोक में सभी को डर लगने लगा। विष्णु के अवतार स्वरूप वैष्णव अस्त्र चल पड़ा। राम के वाण से सारा संसार प्रकाशमय हो गया। वैष्णव-वाण अचूक होता है। अधिक क्या कहना है, उसने जाकर मुकुट सहित वीरवाहु के सिर को काट डाला। भूमि पर गिरकर उसका मुंड 'राम-राम' रटने लगा।

विष्णु-अस्त्रे पड़ि' वीरबाहु मुक्त हय ※ रामेर चरणे लागे ह'ये ज्योतिर्म्मय
श्रीराम - लक्ष्मण - हनूमान् - विभीषण ※ चारिजन देखिल, ना देखे अन्यजन
रण जिनि श्रीराम-लक्ष्मणे कोलाकुलि ※ उच्चैःस्वरे डाके कपि "राम जय" बलि
वानर-कटक बले, करिला निस्तार ※ आर जत वीर हासे मो-सबार भार
हासिया चाहेन राम-विभीषण-पाने ※ एइ मत वीर आर आछे कतजने
विभीषण बले, प्रभु, वीर नाहि आर ※ रावण ओ इन्द्रजित् रावण-कुमार
कृत्तिवास-पण्डितेर मधुर भारती ※ लंका-काण्डे पड़े वीरबाहु योद्धृपति ३१७

इन्द्रजितेर तृतीय बार युद्धयात्रा

भग्नदूत कहे गिया रावण-गोचर ※ वीरबाहु पड़े, वार्त्ता शुन लंकेश्वर
शोकेर उपरे शोक हइला तखन ※ सिंहासन हैते पड़े राजा दशानन
चैतन्य पाइया राजा कान्दिल बिस्तर ※ लङ्काते हइल काल नर ओ बानर
कुम्भकर्ण आदि करि बड़ बड़ वीर ※ नर-बानरेर रणे त्यजिल शरीर
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल जिनिनु त्रिभुवन ※ नर-वानरेर हाते संशय जीवन
एके एके पाठाइनु जत जत वीरे ※ संग्रामेते गेल, आर ना आसिल फिरे

तब विभीषण ने मुंड लाकर श्रीराम के चरणों के नीचे रख दिया। इस प्रकार विष्णु अस्त्र से मर कर वीरबाहु मुक्त हो गया। श्रीराम के चरणों से लगते ही वह ज्योतिर्मय हो गया। यह दृश्य श्रीराम, लक्ष्मण, हनुमान और विभीषण इन चारों ने ही देखा, इसके अतिरिक्त किसी और ने नहीं देखा। रण के उपरान्त श्रीराम और लक्ष्मण दोनों आपस में गले मिले और सारे वानर 'राम जय' की ध्वनि करने लगे। वानर-कटक ने कहा, प्रभु आपने हमलोगों का निस्तार किया, बाकी जो वीर आते हैं उनकी हमें परवाह नहीं। तब हँस कर राम ने विभीषण की ओर देखा और पूछा, इस प्रकार के वीर और कितने हैं? विभीषण ने कहा, प्रभु, अब और कोई वीर नहीं रहा। केवल रावण और रावण-कुमार इन्द्रजीत रह गये हैं। पंडित कृत्तिवास के मधुर वाक्य सुनो, लंका काण्ड में योद्धा-श्रेष्ठ वीरबाहु का पतन हुआ ॥ ३१७ ॥

इन्द्रजीत की तीसरी-बार की युद्धयात्रा

भग्नदूत ने रावण के निकट जाकर कहा, हे लंकेश्वर वार्त्ता सुनो, वीरबाहु खेत रहे। इस प्रकार जब शोक पर शोक का प्रहार हुआ तो राजा दशानन सिंहासन से गिर पड़ा। होश में आने के बाद राजा बहुत रोता रहा। हाय! लंका में नर और वानर यम के समान हो गये, कुम्भकर्ण आदि बड़े-बड़े वीर इस नर-वानर के युद्ध में शरीर त्याग कर चले गये, मैंने स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तीनों लोक को जीता पर आज नर-वानर के युद्ध में मेरे

मकराक्ष अतिकाय वीर अकम्पन ※ महोदर महापाश जत जत जन
त्रिभुवन जिनियाछि जे सब सहाये ※ कोथा गेल वीरगण आमारे त्यजिये
इन्द्र - चन्द्र - कुबेर - वरुण आदि आर ※ आशंकाते ना आसित लंकाते आमार
एखन बानर-नरे दर्प करे चूर्ण ※ कोथा महोदर, कोथा भाइ कुम्भकर्ण
भाविते भाविते राजा हइल मूर्च्छित ※ हेनकाले आइल कुमार इन्द्रजित्
बापेर अवस्था देखे हइल अस्थिर ※ वयान वहिया पड़े नयनेर नीर१८
मेघनाद वले, पिता, भावि ताइ मने ※ निस्तार ना देखि नर-वानरेर रणे
लुकाइया थाकिले आगुन देय घरे ※ मरि वाँचि वारेक देखिव युद्ध क'रे
रावण बले, युद्धे जाओया तोमार उचित ※ एकवार जाह पुनः पुत्र-इन्द्रजित्
बड़ बड़ वीर पाठाइ, बड़ भावि मने ※ फिरिया ना आसे केह राम-दरशने
जत बार तुमि जाओ जुझिवार तरे ※ करिया संग्राम जय एस वारे वारे
श्रीराम-लक्ष्मणे बेन्धेछिले नागपाशे ※ मरिया जीयन्त हैल गरुड़-निःश्वासे
दशदिक् चापि कैले वाण-वरिषण ※ वानर-कटक मरे श्रीराम-लक्ष्मण
भाग्ये भृत्य छिल तार कपि हनूमान ※ औषध आनिया सबे दिल प्राणदान

प्राण संशय में पड़े हैं। मैंने एक-एक कर बड़े-बड़े वीरों को युद्ध में भेजा पर उनमें से एक भी घर लौट कर नहीं आया। मकराक्ष, अतिकाय, अकम्पन, महोदर, महापाश आदि जिन-जिन वीरों की सहायता से मैंने त्रिभुवन पर विजय प्राप्त की थी, वे सब वीर मुझको त्याग कर कहाँ चले गये? इन्द्र, चन्द्र, कुबेर, वरुण आदि तक भी मारे भय के मेरी लंका में कभी नहीं आते थे, पर अब नर और वानर मिलकर मेरा दर्प चूर-चूर कर रहे हैं। हाय वह महोदर कहाँ है, मेरा भाई कुम्भकर्ण कहाँ है? यह सोचते-सोचते राजा रावण को मूर्च्छा आ गई। ऐसे ही समय वहाँ कुमार इन्द्रजीत आ पहुँचा। बाप की ऐसी दशा देखकर वह बड़ा चिन्तित हुआ। उसके चेहरे पर आँसू ढरकने लगे॥ ३१८॥

मेघनाद ने कहा, पिता, मैं यही मन ही मन सोच रहा हूँ कि इस नर-वानर के रण में निस्तार नहीं। छिपकर रहने पर ये घरों में आग लगा देते हैं। चाहे मरूँ या जीता रहूँ पर अब फिर से एकबार युद्ध कर देख लेना चाहिए। रावण ने कहा, हाँ युद्ध में जाना तुम्हारे लिए उचित है। हे पुत्र इन्द्रजीत, तुम एक बार फिर जाओ। बड़े-बड़े वीरों को युद्ध में भेजता हूँ और मन में बड़ी-बड़ी आशाएँ सँजोता हूँ, लेकिन राम के दर्शन के बाद कोई भी लौट कर नहीं आता। तुम जितनी ही बार जूझने गये हो, संग्राम में विजयी होकर लौट आये हो, श्रीराम-लक्ष्मण को तुमने नागपाश में बाँधा था, गरुड़ की साँस से वे मर कर भी जी गये। दशों दिशाओं में तुमने वाण बरसाये तो श्रीराम-लक्ष्मण के साथ वानर-कटक मर गया। भाग्य से कपि

तोमार संग्रामे कारो नाहिक निस्तार ❋ एबारे मारिले तारे के बचावे आर
आर बार गिया आजि रणे देह हाना ❋ बाहुड़िया जेन नाहि फिरे एकजना१९
बापेर वचने मेघनाद सुचिन्तित ❋ जोड़हात करिया बलिछे इन्द्रजित्
बार बार मारिलाम श्रीराम-लक्ष्मण ❋ कोथा शुनियाछ मरा पे'येछे जीवन
मरिया ना मरे राम एकि चमत्कार ❋ केमन एमन रिपु करिब संहार
मेघनाद-कथा शुनि, कहिछे रावण ❋ आगेते मारह पुत्र पवन-नन्दन
सेइ बेटा सबाकार देय प्राणदान ❋ आर के बाँचाबे बल म'ले हनूमान
आगे यदि तुमि तारे करिते निधन ❋ तबे आर औषध आनित कोन जन२०
पितृ-आज्ञा मेघनाद लंघिते ना पारे ❋ कटक लइया तबे नड़े जुझिवारे
संग्रामेते साजिल कुमार इद्रजित् ❋ असंख्य राक्षस-ठाट चलिल त्वरित
यात्रा करि मेघनाद रथे गिया चड़े ❋ मन्दोदरी मायेरे तखन मने पड़े
माता सम्भाषिते गेले हइबे विरोध ❋ जुझिवारे जाब आमि पितृ-अनुरोध
संग्राम जिनिया आमि यदि आसि घरे ❋ कहिब सकल कथा मायेर गोचरे
उद्देशे मायेर पदे करि नमस्कार ❋ फिरे यदि आसि, देखा करिब आबार२१

हनुमान उनका भृत्य था जिसने औषध लाकर सबके प्राण बचाये। तुम्हारे संग्राम में किसी का भी निस्तार नहीं, इसबार मरेगा तो उसको कौन बचायेगा। फिर आज रण में हमला बोल दो कि कोई भाग कर भी लौट न सके ॥ ३१९ ॥

पिता के ये वचन सुनकर मेघनाद चिन्ता करने लगा, फिर हाथ जोड़ कर कहने लगा। मैंने बार-बार श्रीराम-लक्ष्मण को मारा, तुमने यह कहाँ सुना होगा कि मरा आदमी भी फिर जी जाता है। यह कैसा चमत्कार है कि मर कर भी राम नहीं मरता है। मैं ऐसे शत्रु का संहार कैसे कर सकूँगा? मेघनाद की बात सुनकर रावण कहने लगा, हे पुत्र, पहले पवन-नन्दन को मारो। वही अभागा है जो कि सबको प्राणदान करता है। अगर हनुमान मर जाय तो फिर कौन बचायेगा। तुम यदि पहले उसका बध कर दिये होते तो औषध कौन ले आता ॥ ३२० ॥

पिता की आज्ञा का उल्लंघन मेघनाद नहीं कर सकता था इसलिए, सेना लेकर वह लड़ने के लिए वहाँ से चला। कुमार इन्द्रजीत संग्राम के लिए सुसज्जित हुआ। असंख्य राक्षस-सेना उनके साथ तुरन्त चल पड़ी। जब मेघनाद रथ पर सवार हो गया। तभी उसको माता मन्दोदरी याद आ गई। माता से सम्भाषण करने जाने पर अभी इसका विरोध होगा। मैं पिता के अनुरोध पर युद्ध करने जा रहा हूँ। युद्ध जीत कर अगर लौट आऊँगा तो माँ से जाकर सारी बातें करूँगा। माँ के चरणों के उद्देश्य से प्रणाम करके वह चल पड़ा और मन में सोचा कि यदि लौट कर आऊँगा तो फिर भेंट करूँगा ॥ ३२१ ॥

यज्ञस्थाने चलिल कुमार इन्द्रजित् ❋ यज्ञेर सामग्री सव आनिल त्वरित
रक्तपाट भारे भारे, सुरक्त चन्दन ❋ रक्तेर कुसुम-माल्य रक्तेर वसन
शरपत्र बोझा बोझा, घृतेर कलस ❋ काल छाग पाले पाले वहिछे राक्षस
शरपत्र विधिमते, करिल बिछानि ❋ मन्त्र पड़ि' यज्ञस्थले ज्वालिल आगुनि
शरखान खड्गे छाग काटि शीघ्रगति ❋ अग्नि समर्पण करि दितेछे आहुति
आतप-तण्डुल यव राशि राशि आने ❋ घृतेर आहुति सह दितेछे आगुने
रक्तवर्ण पुष्पमाल्य डुवाइया घृते ❋ दश हाजार विप्र वेद पड़े चारिभिते
अग्निर विषम शव्द मेघेर गर्ज्जन ❋ से अग्निर शिखा गिया ठेकिल गगन
दक्षिणदिकेते गेल आगुनेर शिखा ❋ मूर्त्तिमान ह'ये अग्नि आसि दिल देखा
साक्षात् हइया अग्नि रहे विद्यमान ❋ रुष्ट ह'ये अग्नि नाहि लय तार दान ३२
अग्नि बले, नित्य पूजा कर कि कारणे ❋ कत वर आमि तोरे दिव रात्रिदिने
इन्द्रजित् बले, मोरे देह एइ वर ❋ राम-सैन्य मारिया पाठाइ यमघर
अग्नि वले, हेन वर चास् अकारण ❋ केमने मारिवि रामे, तिनि नारायण
स्वयं विष्णु जन्मिलेन राम-अवतार ❋ रावणेरे सवंशेते करिते संहार
मनुष्य नहेन राम, स्वयं नारायण ❋ अनुक्षण चिन्ति आमि ताँहार चरण

कुमार इन्द्रजीत अपने यज्ञ-स्थल की ओर चला। झटपट यज्ञ के सारे सामान ले आया, जैसे लाल रंग के वस्त्र और लाल रंग का चन्दन, रक्तवर्ण फूलों की माला और रक्तवर्ण वसन, आदि। राक्षस सरकंडों का ढेर, घी के घड़े और झुंड के झुंड काले वकरे लाद-लाद कर लाने लगे। विधि के अनुसार उसने सरपत बिछाया और मंत्र पढ़कर यज्ञकुंड में आग जलाई। तेज खड्ग से वकरे के अंगों को काट कर कर वह शीघ्रातिशीघ्र अग्नि में हवन करने लगा। चावल और जौ पर्याप्त परिमाण में लाकर वह घी के साथ आग में आहुति डालने लगा। लाल रंग के पुष्प घी में भिगोकर हवन करते हुए दस हजार विप्र चारों ओर वेदपाठ करने लगे। अग्नि का भयंकर शब्द इस प्रकार होने लगा मानों मेघगर्जन हो। अग्नि की वह शिखा गगन को छूने लगी। अग्निशिखा दक्षिण की ओर लपकी तो अग्निदेव ने स्वयं मूर्त्तिमान होकर दर्शन दिये। साक्षात् रूप में अग्नि विद्यमान हुए किन्तु रुष्ट होकर उन्होंने उसका दान नहीं स्वीकारा ॥ ३२ ॥

अग्नि ने कहा, नित्यप्रति मेरी पूजा तुम किस कारण करते हो। तुमको रातोंदिन में कितने वर दूँ? इन्द्रजीत ने कहा, मुझको यह वर दो कि मैं राम की सेना का वध कर उनको यमालय भेज दूँ। अग्नि ने कहा, क्यों अकारण ऐसा वर तुम माँग रहे हो, राम को तुम कैसे मार सकते हो, वे तो स्वयं नारायण हैं। रावण का सवंश संहार करने के निमित्त स्वयं विष्णु ने राम का अवतार लेकर जन्म लिया है। राम मनुष्य नहीं, स्वयं नारायण

रामेरे मारिते वर केवा पारे दिते ※ आर यज्ञे आमारे ना पाइबि देखिते
यखन मारिस् ताँरे, बाँचेन तखन ※ एत देखि तथापि प्रतीत नहे मन२३
शुनिया अग्निर कथा पाय बेटा त्रास ※ रथे चड़ि इन्द्रजित् उठिल आकाश
अग्निदेव चलिलेन आपनार देश ※ इन्द्रजित् रणे गिया करिल प्रवेश२४
रथ सञ्चारिया जाय उपर गगन ※ पश्चिम-द्वारेते यथा श्रीराम-लक्ष्मण
एकेवारे जुड़िल साताश-लक्ष शर ※ बिन्धिया जर्ज्जर कैल यतेक बानर
झञ्झनार शब्दवत् बाण शब्द शुनि ※ इन्द्रजित् बलि सबे करे कानाकानि
बानर-कटक बले, शुन रघुनाथ ※ एड़ान ना जाबे आजि इन्द्रजित्-हात
राक्षसेर बाणेते कातर कपिगण ※ हेनकाले श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण
ब्रह्म-अस्त्र छाड़, कर राक्षस-संहार ※ पृथिवीते नाहि थाके राक्षस-संचार
श्रीराम बलेन, भाइ निर्ब्बोध लक्ष्मण ※ कोन अपराधे बधि सबार जीवन
कोन दोष करिल लङ्कार यत नारी ※ अपराध एकेर, अन्येरे केन मारि
शुन भाइ, आमार अस्त्रेर एइ पण ※ मारिबे राक्षसगणे बिना विभीषण
मेघेर उपरे येन विद्युत् झलके ※ शोभिछे मुकुट इन्द्रजितेर मस्तके

हैं, और मैं प्रतिक्षण उन्हीं के चरणों का मनन किया करता हूँ। राम को मारने का वर कौन दे सकता है। आगे से तुम कभी मेरा दर्शन नहीं पाओगे। जब भी तुम उनको मारते हो देखते हो कि वे जी जाते हैं, इतना देखने के उपरान्त भी तुमको यह विश्वास क्यों नहीं होता कि तुम राम को मार नहीं सकते ॥ ३२३ ॥

अग्नि की बातें सुनकर अभागे इन्द्रजीत को बड़ा डर लगा। तब इन्द्रजीत रथ पर सवार होकर आकाश में चढ़ गया और अग्निदेव अपने देश को प्रस्थान कर गये। इसके बाद इन्द्रजीत ने रणक्षेत्र में प्रवेश किया ॥ ३२४ ॥

ऊपर गगन में रथ चलाता हुआ वह पश्चिम द्वार पर गया जहाँ श्रीराम और लक्ष्मण थे। एक ही बार में उसने सत्ताइस लाख बाण छोड़े और बाणों से सारे बानरों को छेद दिया। बाणों के शब्द झंझा की ध्वनि जैसे सुनाई पड़ने लगे। सभी लोग कानाफूसी करने लगे कि इन्द्रजीत आ गया है। वानर-कटक ने कहा, हे रघुनाथ, सुनो आज इन्द्रजीत के हाथों से बचा नहीं जा सकता। राक्षस के बाणों से कपि बड़े कातर हो गये हैं। ऐसे ही समय श्रीराम से लक्ष्मण ने कहा, आप ब्रह्म-अस्त्र छोड़ें और राक्षसों का ऐसा संहार करें कि पृथ्वी पर एक भी राक्षस न रहे। श्रीराम ने कहा, भाई लक्ष्मण, तुम बड़े निर्बोध हो। किस अपराध पर मैं सबके प्राण ले लूँ। लंका की सारी नारियों ने कौन सा अपराध किया है। किसी का अपराध हो और किसी दूसरे को क्यों मार डालूँ। सुनो भाई लक्ष्मण, मेरे अस्त्र का पण है है कि विभीषण के सिवा सारे राक्षसों को मारेगा। जिस प्रकार बादलों पर

लक्ष्मण बलेन, मेघे जुझे इन्द्रजित् ❊ मेघ-सने बेटारे विन्धह अलक्षित
श्रीराम बलेन, युद्ध देखे देवगण ❊ कि जानि संहारि पाछे देवेर जीवन
उभयेर युक्ति बेटा शुनिल आकाशे ❊ लङ्कामध्ये यज्ञस्थाने प्रवेशिल त्रासे२५

मायान्सीता-वध

पशिया लङ्कार मध्ये युक्ति करि सार ❊ विद्युज्जिह्व निशाचरे कहे बार बार
शुन बलि विद्युज्जिह्व नाना-मायाधारि ❊ मन्त्रेते गड़िया देह रामेर सुन्दरी
जनक-नन्दिनी जे प्रकार रूप धरे ❊ सेइरूप सीता निर्म्माइया देह मोरे
माया-सीता काटि आजि रामेर गोचर ❊ पत्नीशोके मरिवेक राम-धनुर्द्धर
अनायासे हइबेक रामेर मरण ❊ रामेर मरणे मरिवेक से लक्ष्मण
पलाइबे सुग्रीव से गणिया प्रमाद ❊ विना-युद्धे राम-संगे घुचिबे विवाद२६
अनुज्ञा पाइबा मात्र प्रफुल्ल-हृदय ❊ माया-सीता निर्म्माइते करिल निश्चय
सीतार येमन रूप, येमन आकार ❊ विद्युज्जिह्व सेइमत रचिल ताहार
माया-सीता गड़िलेक मायार आकार ❊ मन्त्र पड़ि करे तार जीवन-सञ्चार

बिजली चमकती है उसी प्रकार इन्द्रजीत के सिर पर मुकुट शोभा पायेगा। लक्ष्मण ने कहा, यह इन्द्रजीत मेघ में रहकर जूझ रहा है, इसको अनदेखे मेघ के साथ बेध डालो। श्रीराम ने कहा, इस समय देवता भी युद्ध देख रहे हैं। क्या मालूम इस प्रकार मैं किसी देवता के ही प्राण ले डालूँ। आकाश में रहकर दुष्ट इन्द्रजीत ने दोनों की बातचीत सुन ली और त्रस्त होकर लंका में अपने यज्ञस्थल पर पहुँचा ॥ ३२५ ॥

माया-सीता-वध

लंका में प्रवेश कर वह मन ही मन युक्ति लड़ाने लगा। फिर विद्युज्जिह्व निशाचर से उसने कहा। सुनो विद्युज्जिह्व, तुम विभिन्न प्रकार की मायाओं के ज्ञाता हो, तुम मंत्र द्वारा राम की पत्नी सीता को गढ़ दो। जनक-नन्दिनी का जैसा रूप-रंग है उसी प्रकार की सीता का निर्माण मेरे लिए कर दो। आज राम के समक्ष मैं माया की सीता को काटकर धनुर्धर राम को पत्नीशोक से दुखी करके मार डालूँगा। इस प्रकार अनायास ही राम की मृत्यु हो जायगी और राम की मृत्यु से लक्ष्मण भी मरेगा। यह विपत्ति देखकर सुग्रीव भी भाग खड़ा होगा। बिना युद्ध के ही राम के साथ सारे विवाद का अन्त हो जायगा ॥ ३२६ ॥

आज्ञा पाते ही प्रसन्न मन हो उसने माया की सीता का निर्माण करने का निश्चय कर लिया। जैसा सीता का रूप-रंग और आकार-प्रकार था विद्युज्जिह्व ने उसी प्रकार की माया की सीता गढ़ डाली। मंत्र पढ़ कर उसने उसमें प्राणों का संचार किया। तब विद्युज्जिह्व ने उस सीता को पढ़ाया

विद्युज्जिह्व से सीतारे पड़ाय तखन ❋ श्रीराम तोमार स्वामी, देवर लक्ष्मण
दशरथ श्वशुर, जनक तोर बाप ❋ रावण आनिल तोमा पेये बड़ ताप
इन्द्रजित् रथे तोमा तुलिबे यखन ❋ "राम-राम" शब्दे तुमि करिह रोदन
माया-सीता दिल इन्द्रजितेर गोचर ❋ शिरोपा से विद्युज्जिह्व पाइल विस्तर
ताड़-बाला पाइल कत माणिक्य-रतन ❋ पञ्चशब्द वाद्य पाइल अनेक बाजन २७
माया-सीता तुलिया रथेर एकभिते ❋ पश्चिम-द्वारेते उपनीत इन्द्रजिते
अश्वबाड़ि मारे माया-सीतार शरीरे ❋ अंगे फुटि सीतार ये रक्त पड़े धारे
"मरि मरि" बलि सीता कान्दे उभरोले ❋ हाते खाण्डा इन्द्रजित् धरे सीतार चूले २८
देखि हनूमान वीर धाय उभरड़े ❋ दुइच'क्षे मारुतिर वारिधारा पड़े
इन्द्रजित्-रथे सीता हनूमान देखे ❋ वृक्ष हाते रहे तार, वाक्य नाहि मुखे
एकहस्ते धरियाछे वृक्ष ओ पाथर ❋ आर हाते आँखि-जल संवरे बानर
डाक दिया कहे हनू मेघनाद-तरे ❋ पापेते डुबिलि बेटा, नरक-भितरे
स्त्रीबध दुष्कर बड़ परम-पातक ❋ अनेक दिवस बेटा, भुञ्जिबि नरक
अंगेमांस नाहि सीतार, अस्थिचर्म्म-सार ❋ ए नारी काटिले तोर नाहिक निस्तार २९

कि श्रीराम तुम्हारा पति है और लक्ष्मण देवर हैं, दशरथ तुम्हारे श्वसुर हैं और जनक बाप हैं। रावण तुमको बड़ा दुख पाकर उठा लाया। जब इन्द्रजीत तुमको रथ पर चढ़ा लेगा तब तुम 'राम-राम' शब्द करते हुए रोदन करना। उसने माया की सीता लाकर इन्द्रजीत को दे दी। विद्युज्जिह्व को इसके लिए शरोभूषण मिला, वलय-कंगन और कितने ही हीरे-जवाहरात मिले, तथा पंचशब्द करने वाले कितने ही वाद्ययंत्र भी प्राप्त हुए॥ ३२७॥

माया की सीता को रथ के एक कोने में बिठाकर इन्द्रजीत पश्चिम द्वार पर जा पहुँचा। वह सीता के शरीर पर चाबुक चलाने लगा जिससे सीता के अंग फट गये, और उनसे खून निकलने लगा। तब 'मरी मरी' कहकर सीता दहाड़ मार रोने लगी। तब इसके बाद इन्द्रजीत ने हाथ में खड्ग लेकर सीता के बालों के झोंटे को पकड़ा॥ ३२८॥

यह देखकर वीर हनुमान तेज गति से दौड़ पड़े। उनकी दोनों आँखों से आँसू गिरने लगे। हनुमान ने इन्द्रजीत के रथ पर सीता को देखा, उसके हाथों में पकड़ा हुआ वृक्ष हाथों में रह गया और मुँह से कोई शब्द नहीं निकला। एक हाथ से वृक्ष और पत्थर पकड़े हनुमान दूसरे हाथ से अपने आँसू पोंछने लगे। तब मेघनाद को पुकार कर हनुमान ने कहा, अरे तू तो नरक के पापों में डूब गया। स्त्री की हत्या परम पाप है—तू तो लम्बी अवधि तक नरक-वास करेगा। सीता के शरीर पर मांस भी नहीं रह गया, वह हड्डियों का ढाँचा भर रह गई है, इस नारी को मारने पर तेरा निस्तार नहीं होगा॥ ३२९॥

इन्द्रजित् वले, तुइ पशु-दुराचार ✻ केमने जानिवि वेटा, धर्म्मेर विचार
स्त्री काटिले शोके पुड़े मरे यदि वैरी ✻ शास्त्रमत हेन स्त्रीके काटिवारे पारि
आगे सीता काटि, पाछे श्रीराम-लक्ष्मण ✻ सुग्रीवे काटिव आर यत कपिगण
इन्द्रजिते घेरिते धाइल कपिगणे ✻ आगु हैते नाहि पारे इन्द्रजित्-बाणे
इन्द्रजिते मारि सीता काड़ि लैते चाहे ✻ यम सम इन्द्रजित्, सामान्य त नहे ३३०
आगु हैते नाहि पारे पवन-नन्दन ✻ माया करि माया-सीता जुड़िल क्रन्दन
हा हा प्रभु रघुनाथ, देवर-लक्ष्मण ✻ ए समये एकवार देह दरशन
राजार नन्दिनी आमि, रामेर वनिते ✻ विपाके हारानु प्राण राक्षसेर हाते
कोथाय जनक-ऋषि जनक आमार ✻ विपाके मरिनु आसि समुद्रेर पार
कौशल्या शाशुड़ी शोके भासे अश्रुजले ✻ ना करिनु सेवा ताँर आसिवार काले
सेइ अपराधे बुझि ह'लो ए दुर्गति ✻ राक्षसेते वधे प्राण, राख रघुपति
रक्षा कर हनूमान पवन-नन्दन ✻ एत वलि माया-सीता करेन क्रन्दन ३३१
क्रोधकरि इन्द्रजित् खड्ग ल'ये हाते ✻ तुलिया मारिल माया-सीतार अंगेते
ब्राह्मणेर गलेते येमन थाके पैता ✻ सेइमत करिया काटिल माया-सीता

इन्द्रजीत ने कहा, अरे तू तो दुराचारी पशु है, धर्म के बारे में तुमको भला क्या ज्ञान होगा। स्त्री के काट डालने पर अगर शोक की आग से जलकर शत्रु मर जाय तो शास्त्र के अनुसार ऐसी स्त्री को मैं काट सकता हूँ। पहले सीता को काट डालूँ फिर श्रीराम-लक्ष्मण को काटूँगा, और इसके उपरान्त सुग्रीव तथा अन्य कपियों को काट डालूँगा। तब इन्द्रजीत को घेरने के लिए सारे कपि दौड़ पड़े, किन्तु इन्द्रजीत के बाणों के कारण वे आगे न बढ़ सके। इन्द्रजीत को मारकर उन लोगों ने सीता को छीन लेना चाहा, लेकिन इन्द्रजीत भी कोई मामूली वीर नहीं था; वह यम के समान भयंकर था ॥ ३३० ॥

पवन-नन्दन आगे बढ़ने में असमर्थ रहे। तब माया-सीता रोने लगी। हाय प्रभु रघुनाथ, हाय देवर लक्ष्मण, इस समय तुम एक बार दर्शन दे दो। मैं राजा जनक की नन्दिनी हूँ और राम की पत्नी हूँ, आज दुर्दैव से राक्षस के हाथ प्राण गवाँ रही हूँ। हाय मेरे पिता जनक ऋषि कहाँ हैं? मैं समुद्र पार आकर विपत्ति में पड़ कर मर रही हूँ। मेरी सास कौशल्या शोक से आँसुओं से डूबी थीं, आते समय मैं उनकी सेवा भी न कर सकी। शायद उसी अपराध के कारण मेरी यह दुर्गति हो रही है, यह राक्षस मेरे प्राण ले रहा है। हे रघुपति तुम मेरी रक्षा करो। हे पवन-नन्दन हनुमान तुम मेरी रक्षा करो, इतना कहकर माया की सीता क्रन्दन करने लगी ॥ ३३१ ॥

तब क्रोधित होकर इन्द्रजीत ने हाथ में खड्ग लिया और उसे उठाकर सीता के अंग पर प्रहार किया। ब्राह्मण के गले में जिस ढंग से जनेऊ पड़ा

दुईखान ह'ये सीता भूमितले पड़े ※ पलाय बानरगण हा-हुताश क'रे
हनूमान बले, कपि, रणे हओ स्थिर ※ भूमिते लोटाय जेन इन्द्रजित्-शिर
सीतारे काटिया हर्षे इन्द्रजित् नाचे ※ इन्द्रजित् मरिले सकल दु:ख घुचे
हनूमान-वाक्ये फिरे सकल बानर ※ लाफे लाफे प्रवेशिल रणेर भितर
असंख्य बानरे मारे कोटि-कोटि गाछ ※ बड़-बड़ राक्षस पड़िल ब्राछेर बाछ
बानरेर युद्धे त्रास पेये इन्द्रजित् ※ लंकार भितरे गिया उतरे त्वरित ३३२
हनूमान कहितेछे सकल बानरे ※ सीतादेवी काटा गेल, जुझि कार तरे
श्रीरामेर स्थाने मोरा कहि गिया सबे ※ श्रीरामेर जे आदेश, सेइमत हबे
श्रीरामेर स्थाने चले यत कपिगण ※ जाम्बवाने कहिछेन राजीवलोचन
युद्ध करे हनूमान, महाशब्द शुनि ※ रणे भाल-मन्द किवा, किछुइ ना जानि
तुमि जाह आपनार सैन्यगण ल'ये ※ हनूर सैन्येते थाक अनुबल ह'ये
तव विद्यमाने यदि हनू-सैन्य भागे ※ तार भाल-मन्द-दाय तोमाते से लागे
आज्ञामात्र जाम्बवान् चले ततक्षण ※ पथे हनूमान-संगे हैल दरशन
हनूमान बले, केन जुझिते गमन ※ सीतादेवी काटागेल, कि करिबे रण
आगे गिया कहि रघुनाथेर गोचर ※ सीतार बिहने राम कि देन उत्तर ३३३

रहता है, उसी ढंग से माया की सीता को इन्द्रजीत ने काट डाला। दो खंड होकर सीता भूमि पर गिर गई, यह देखकर सारे बानर हाय-हाय करते हुए भागने लगे। हनुमान ने कहा, ऐ बानरो! रण में स्थिर हो जाओ। अब ऐसा करना है जिससे कि इन्द्रजीत का सिर भूमि पर लोटे। सीता को काट-कर इन्द्रजीत हर्ष से नाच रहा है, ऐसे इन्द्रजीत के मरने से सब दुःखों का अन्त होगा। हनुमान के कथन पर सारे बानर लौट आए और उछल-उछल कर रणक्षेत्र में टूट पड़े। अनगिनत बन्दरों ने करोड़ों पेड़ उखाड़-उखाड़ कर मारे, जिससे बड़े-बड़े राक्षस ढेर हो गये। बानरों के युद्ध से त्रस्त होकर इन्द्रजीत तुरन्त लंका के भीतर भाग गया ॥ ३३२ ॥

हनुमान ने सारे बानरों से कहा, सीतादेवी को तो इसने काट डाला अब किसके निमित्त युद्ध करूँ। हम सब चलकर श्रीराम से सारी बातें कहें, फिर जैसी श्रीराम की आज्ञा होगी वैसा करेंगे। ऐसा कहकर सारे कपि श्रीराम के स्थान पर चल दिये। राजीवलोचन (राम) जाम्बवान से कह रहे हैं, हनुमान युद्ध कर रहा है, मैं घोर शब्द सुन रहा हूँ, लेकिन युद्ध के भले-बुरे के बारे में कुछ भी मालूम नहीं। तुम अपनी सेना लेकर जाओ और हनुमान की सेना की सहायक-सेना बनकर रहो। तुम्हारे रहते हुए यदि हनुमान का सैन्य भागता है तो उसकी जिम्मेवारी तुम पर है। राम की आज्ञा पाते ही जाम्बवान तुरन्त चल पड़ा, रास्ते में हनुमान से उसकी भेंट हो गई। हनुमान ने कहा, अब युद्ध करने क्या जा रहे हो, सीतादेवी

सैन्यसह दुइजना गेल रामस्थान ※ कान्दिते कान्दिते कहे वीर हनूमान
हनूमान वले, प्रभु, कर अवधान ※ इन्द्रजित् काटे सीता सबा-विद्यमान
शुनि ताहा रघुनाथ हइला मूर्च्छित ※ जलेर कलस कपि योगाय त्वरित
निर्म्मल उत्पल-जल गन्धे सुवासित ※ श्रीरामेर मस्तके ढालिल यथोचित
स्पन्दहीन विषण्ण श्रीराम अचेतन ※ विलाप करेन, आर कहेन लक्ष्मण
त्रिलोकेर नाथ तुमि धर्म्म-निकेतन ※ धर्म्म-लागि राज्य त्यागी, बाकल-वसन
फलमूलाहारी, शिरे जटाजूट धारी ※ स्त्री लागिया दुःख पाओ, जेमन संसारी
राजभोगे थाकिते जे दिव्य-सिंहासने ※ दुष्ट दशानन सीता देखित केमने
आपनार दोषेते हइला देशान्तरी ※ हाराले जन्मेर मत सीता-हेन नारी
पिता-माता-बन्धु-आदि सकलि अलीक ※ वृक्षमूले जेन मिले क्षणेक पथिक
स्त्री-पुत्र सकलि मिथ्या, केह कारो नय ※ पथिके-पथिके जेन पथे परिचय
संसार असार भाइ, कपटेर मेला ※ सूता सञ्चारिया जेन नाचाय पुतुला
विविध उत्पात पड़े, विविध प्रमाद ※ ज्ञानी लोक ताहे किछु ना करे विषाद

कट गईं, अब क्या युद्ध करोगे। पहले जाकर रघुनाथ के समक्ष सारी बात बताऊँ, सीता के न रहने पर अब श्रीराम क्या उत्तर देते हैं, सुना जाय ॥ ३३३ ॥

सैन्य के साथ दोनों राम के पास गये। रोते-रोते वीर हनुमान ने कहा, हे प्रभु सुनो, इन्द्रजीत ने सबके सम्मुख सीता जी को काट डाला। यह सुनते ही रघुनाथ मूर्छित हो गये। सारे बानर तुरन्त पानी के कलश ले आए और निर्मल कमल की सुगन्ध से बसा जल श्रीराम के सिर पर डालने लगे। स्पन्दनशून्य, विषण्ण राम अचेतन पड़े थे, तब लक्ष्मण विलाप करते हुए कहने लगे। तुम त्रिलोक के नाथ हो, धर्म-निकेतन हो, धर्म के कारण तुमने राज्य छोड़ा, वल्कल का वस्त्र धारण किया, फल-मूल का भोजन किया और सिर पर जटाएँ धारण कीं। स्त्री के कारण तुम ऐसा क्लेश पा रहे हो जैसे गृहस्थ लोग पाते हैं। अगर राज्य भोगते हुए दिव्य-सिंहासन पर बैठे रहते तो दुष्ट दशानन सीता को कैसे देख पाता। अपने ही दोष से तुम प्रवासी बने और सीता जैसी नारी को जन्म भर के लिए खो दिया। पिता, माता, बन्धु आदि सभी कुछ इस प्रकार मिथ्या है, मानों पेड़ तले मिलने वाले क्षणभर के बटोही हों। स्त्री-पुत्र सभी कुछ मिथ्या है, कोई भी किसी का नहीं होता, मानों पथ में पथिक-पथिक में परिचय मात्र हुआ। यह संसार असार है, कपटों का मेला है। डोरा हिलाकर मानों कठपुतलियों का नाच हो रहा है। विभिन्न प्रकार की विपत्तियाँ और तरह-तरह के उपद्रव भी आते हैं किन्तु ज्ञानी लोग इनके कारण शोकमग्न नहीं हो जाते। हे प्रभु! स्त्री के शोक से तुम ऐसा व्याकुल क्यों हो रहे हो। जो महाजन होता है वही विपत्तियों के समुद्र को पार कर जाता है। तुम्हारी भार्या भी क्या है? और तुम्हारा

स्त्रीर शोके प्रभु, केन ह'येछ कातर ※ महाजन संवरे से विपत्-सागर
तोमार किसेर भार्या, केवा बाप-भाइ ※ तोमार समान नाइ जगते गोसाँइ
सकलेर प्राण तुमि, सब तव छाया ※ तोमा छाड़ा नहे केह, सब तव माया
जीये कि ना जीये सीता, करह विचार ※ स्त्री लागिया अचेतन, एकि व्यवहार
महामुनि वशिष्ट जे कुल-पुरोहित ※ स्वर्गवासे गेला तिनि शरीर-सहित
स्वर्गे गिया ताँहारो जे दारा-पुत्र-शोक ※ स्वर्गभ्रष्ट हइया आइला मर्त्यलोक
तपस्या करिया इन्द्र हैल देवराज ※ शोकेते कातर हओ, नहे किछु काज३४
श्रीराम बलेन, किवा बुझाओ लक्ष्मण ※ भार्या-शोक भाइ, कभु नहे विस्मरण
स्त्री-पुरुषे दोंहे जन्मे ए छार संसारे ※ स्त्री हइते पुत्र हय, बाड़े परिवारे
इष्ट बन्धु कुटुम्ब घरेर यत लोक ※ सबा हैते भाइ रे, भार्यार बड़ शोक
देशे देशे पाइ भाइ, कामिनी अशेष ※ गुणवती स्त्री मरिले मरण-विशेष
स्त्री-विना पुरुष सुखी, कोथाओ नाशुनि ※ स्त्री-शोक एड़ाय जेइ, से परम-ज्ञानी
राज्यहीन पितृहीन से सब पासरि ※ हाराइया नारी भाइ, पासरिते नारि
सीता ना देखिले आमि ना पारि रहिते ※ सीतार मरणे क्षमा दिब किसे चिते३५
कान्दिया हइला राम शोके अचेतन ※ रामेर क्रन्दन शुनि एल विभीषण

बाप-भाई भी कौन है ? भला तुम तो जगत् के प्रभु हो, असामान्य हो। तुम्हीं सबके प्राण हो और बाकी लोग तुम्हारी छाया मात्र हैं। तुम्हारे बिना कोई कुछ नहीं है, सब माया है। पहले यह विचार कर लो कि सीता जीवित है या नहीं, तुम स्त्री के कारण अचेतन हो गये, यह तुम्हारा कैसा आचरण है। कुल-पुरोहित वशिष्ठ महामुनि थे और वे सदेह स्वर्ग गये, किन्तु स्वर्ग जाकर भी उनको दारा-पुत्र के शोक ने व्याकुल किया तभी वे स्वर्ग से भ्रष्ट होकर मृत्युलोक में आ गये। तपस्या करके इन्द्र देवराज बन गया। शोक से तुम व्याकुल हो रहे हो, यह कोई अच्छी बात नहीं है ॥ ३४ ॥

तब श्रीराम ने कहा, हे लक्ष्मण ! तुम मुझको क्या समझा रहे हो, भार्या का शोक भुलाने वाला नहीं होता। इस मिथ्या संसार में स्त्री और पुरुष दोनों जन्म लेते हैं। स्त्री से पुत्र प्राप्त होता है, परिवार बढ़ता है। हे भाई ! इष्ट-मित्र कुटुम्ब और घर के सारे लोगों से भी भार्या का शोक अधिक होता है। सुनो भाई ! देश विदेश में कितनी ही कामिनियाँ मिलेंगी किन्तु गुणवती पत्नी की मृत्यु अपनी मृत्यु के समान है। ऐसा कभी नहीं सुना कि स्त्री के बिना पुरुष सुखी है। जो पत्नी-शोक पर विजय पा सकता है वह परम ज्ञानी है। राज्य नहीं रहा, पिता नहीं रहे, यह सब मैं भूल सकता हूँ किन्तु पत्नी गँवाने के बाद मैं उसको भुला नहीं सकता। सीता को बिना देखे मैं रह नहीं सकता। सीता की मृत्यु पर मैं मन को किस प्रकार दिलासा दूँ ॥ ३५ ॥

इस प्रकार रोते-रोते राम शोक से अचेतन हो गये। राम का क्रन्दन

सकलेते शोकाकुल देखि उड़े प्राण ※ विभीषण कहे, वार्त्ता कह हनुमान
केन रामेर कोमलाङ्ग धूलाय धूसर ※ कातर हइया केन कान्दिछे वानर
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ※ सीतारे केटेछे आजि रावण-नन्दन
यत परिश्रम, सब हैल अकारण ※ वृथा केन करिलाम सागर-वन्धन
बिमाता हइया बैरी पाठाइला वने ※ हाराइनु प्राणेर जानकी एतदिने
कानने चलिया जेतो जानकी आमार ※ फिरे चेये देखिताम तिले शतबार
ननीर पुत्तली सीता आतपे मिलाय ※ च'ले जेते कुशांकुर फोटे पाय-पाय
चम्पक-वरणी सीता राजार दुहिते ※ स्वामी ह'ये सँपिलाम राक्षसेर हाते
मायामृग धरिवारे केन गेनु वने ※ कारे विलाइया दिनु सीता-हेन धने
दुष्ट इन्द्रजित् जबे काटिल जानकी ※ ना जानि कान्दिल कत सीता शशिमुखी
सीतार विहने प्राण त्यजिव एखन ※ अयोध्यार फिरे जाह प्राणेर लक्ष्मण ३६
विभीषण बले, राम, ना कर क्रन्दन ※ सीतारे काटिते देखियाछे कोन् जन
राम बले, देखियाछे पवन-नन्दन ※ विभीषण बले, हनू पशुते गणन
वनजन्तु वानर से, बुद्धि नाहि घटे ※ महालक्ष्मी मा जानकी, कार साध्य काटे
आर एक कथा कहि, शुन रघुमणि ※ परमा-सुन्दरी सीता भुवन-मोहिनी

सुनकर विभीषण आया। सभी को शोकमग्न देखकर उसके प्राण उड़ गये। विभीषण ने कहा, हनुमान, समाचार सुनाओ, राम के कोमल अंग धूल से क्यों सने हैं। सारे बानर व्याकुल होकर रो क्यों रहे हैं। श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण सुनो, आज रावण-नन्दन (इन्द्रजीत) ने सीता को काट डाला है। मेरा सारा परिश्रम व्यर्थ गया, नाहक मैंने सागर को बाँधा। वैरिन बनकर विमाता ने मुझे वन भेज दिया, इतने दिनों में प्राणों के समान जानकी को मैंने खो दिया। मेरी जानकी जब कानन में चलती थी तो मैं सौ-सौ बार उसको निहारता रहता था। माखन की गुड़िया सी सीता धूप में घुल जाती थी, चलते समय कुश के अंकुर उसके पैरों में चुभ जाते थे। राजा की कन्या सीता चम्पक वर्ण की थी मैंने पति होकर उसको राक्षसों के हाथ सौंप दिया। मायामृग पकड़ने के लिए मैं क्यों जंगल गया। सीता जैसे धन को मैंने किनको लुटा दिया। दुष्ट इन्द्रजीत ने जब चन्द्रमुखी सीता को काटा होगा उस समय जानकी न जाने कितना रोती होगी। सीता के बिरह में मैं अभी प्राण त्याग दूँगा। हे प्यारे लक्ष्मण तुम अयोध्या लौट जाओ ॥ ३३६ ॥

तब विभीषण ने कहा, हे राम रोओ मत। सीता को काटते हुए किन लोगों ने देखा है। राम ने कहा, पवन-नन्दन ने देखा है। विभीषण ने कहा, हनुमान की गिनती पशुओं में है। वह वन का पशु है, उसके मस्तिष्क में बुद्धि नहीं है। माता जानकी महालक्ष्मी हैं, किसकी मजाल है कि उनको

मजाइल लंकापुरी जानकीर तरे ※ तबु से तोमार सीता ना दिल तोमारे
सीतारे रेखेछे ल'ये अशोकेर बने ※ साध्य कि जे, इन्द्रजित् सीतादेवी आने
दश-हाजार किङ्करी सीतारे आछे घेरे ※ अन्य पुरुषेते सेथा जाइते कि पारे
सीतादेवी रावणेर लेगेछे नयने ※ इन्द्रजित् हेन सीता पाइबे केमने
माया-सीता काटि बेटा कैल दुइखान ※ से मायाते भुलेछे बानर हनूमान
प्रत्यय ना कर यदि आमार कथाय ※ हनूमान गिया देखि आसुक् सीताय ३७
एतेक शुनिया सबे हैल हरषित ※ अशोकेर वने हनूमान उपनीत
देखिल, बसिया आछे रामेर महिषी ※ रघुनाथे समाचार दिल हनू आसि
कुशले आछेन सीता अशोकेर बने ※ इन्द्रजित् माया-सीता काटिलेक एने
बिभीषणे कोल दिला राम-रघुबर ※ 'राम-जय' ध्वनि करे सकल बानर ३३८

विभीषण-कर्त्तृक इन्द्रजितेर मरणोपाय-कथन

श्रीराम बलेन, शुन मित्र बिभीषण ※ किरूपे हइबे इन्द्रजितेर पतन
बिभीषण बले, शुन राजीवलोचन ※ सामान्येते इन्द्रजितेर ना हबे पतन
निकुम्भिला-यज्ञ करे दुष्ट निशाचर ※ करियाछे यज्ञकुण्ड लंकार भितर

काट डाले। हे रघुमणि ! एक बात और सुन लो, सीता परमसुन्दरी भुवन-मोहिनी है। रावण ने सीता के लिए अपनी लंकापुरी को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला फिर भी तुमको वापस नहीं दे गया। सीता को उसने अशोक-कानन में रखा है, इन्द्रजीत की क्या सामर्थ्य है कि सीतादेवी को ले आवे। सीता को घेरे दस हजार दासियाँ बैठी हैं. वहाँ अन्य पुरुष कैसे जा सकता है। सीतादेवी रावण की आँखों में चढ़ गई हैं, ऐसी सीता इन्द्रजीत को कहाँ से मिल जाती। उस दुष्ट ने माया की सीता को काटकर दो टुकड़े किये हैं। उसी माया से हनुमान भुलावे में आ गया है। अगर मेरी बातों पर विश्वास न हो तो हनुमान जाकर सीता को देख आवे ।। ३३७ ।।

इतना सुनकर सभी लोग हर्ष-मग्न हो गये। हनुमान अशोक-वन जा पहुँचा। वहाँ उसने देखा की राम की महिषी बैठी हुई है। हनुमान ने आकर राम को समाचार दिया कि सीता अशोक-वन में कुशल से हैं और इन्द्रजीत ने माया-सीता को लाकर काटा है। राम रघुवर ने विभीषण को अँक में भर लिया और सब वानरों ने जय-राम की ध्वनि की ।। ३३८ ।।

विभीषण द्वारा इन्द्रजीत का मरणोपाय कथन

श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण, यह बताओ कि इन्द्रजीत का पतन कैसे होगा। विभीषण ने कहा, हे राजीवलोचन सुनो, सामान्य रूप से इन्द्रजीत का पतन नहीं होगा। दुष्ट निशाचर निकुम्भिला यज्ञ करता है। लंका

यज्ञे पूर्णाहुति दिया यदि जाय रणे ※ स्वर्ग-मर्त्य-पातालेते कार साध्यजिने
ब्रह्मा दियाछेन शाप, शुन नारायण ※ इन्द्रजित्-यज्ञ-भंग करिबे जे जन
संग्रामे मरिबे इन्द्रजित् तार हाते ※ लक्ष्मणे पाठाये देह आमार संगेते
आहुति ढालिया यज्ञ करितेछे सांग ※ ए-समये गिया तार यज्ञ करि भंग
राम बलेन, बिभीषण, धर्म्मे तव मति ※ कि कथा कहिले, नाहि करि अवगति
बुझाइया कह देखि मित्र बिभीषण ※ केमने हइबे इन्द्रजितेर मरण ३३९
बिभीषण बले, मित्र करह श्रवण ※ मेघनादे ब्रह्म बर दिलेन जखन
मेघनाद, आमि आर राजा दशानन ※ तिनजन छिलाम, ना छिल अन्यजन
ब्रह्मा बलिलेन, मेघनाद, माग वर ※ मेघनाद बले, चाहि हइते अमर
विधि कन, मेघनाद, से बड़ प्रमाद ※ वाञ्छामत अन्य वर माग मेघनाद
मेघनाद बले, यदि हइले सदय ※ मनोमत वर तबे देह महाशय
यज्ञ करि येइदिन जाइबे युद्धेते ※ हइबे संग्राम-जयी तोमार वरेते
शत्रुके मारिब वाण मेघ-आड़े थेके ※ आमि जारे मारिब, से मोरे नाहि देखे
ब्रह्मा बले, जे चाहिले, दिनु सेइ वर ※ जुझिबे लुकाये थाकि मेघेर भितर
यज्ञ करि जेदिन जाइबे जुझिवारे ※ सेदिन नारिबे केह जिनिते तोमारे

के भीतर उसका यज्ञकुंड है। यदि यज्ञ में पूर्णाहुति चढ़ा कर वह रण में जाय तो स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में किसी की भी शक्ति नहीं कि उसको हरा सके। सुनो नारायण, ब्रह्मा ने शाप दिया है कि जो इन्द्रजीत का यज्ञ भंग करेगा उसी के हाथों रण में इन्द्रजीत की मृत्यु होगी। लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दो। जिस समय यज्ञ में आहुति डालकर वह यज्ञ समाप्त करने वाला हो उसी समय जाकर उसका यज्ञ भंग करो। श्रीराम ने कहा, विभीषण तुम्हारी मति धर्म से युक्त है। तुमने क्या कहा यह मेरी समझ में नहीं आया। हे मित्र विभीषण तुम मुझको जरा समझा कर बताओ कि इन्द्रजीत की मृत्यु कैसे होगी॥ ३३९ ॥

विभीषण ने कहा, मित्र सुनो। ब्रह्मा ने जब मेघनाद को वर दिया तो वहाँ पर मेघनाद, मैं और रावण इन तीनों के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं था। ब्रह्मा ने कहा, हे मेघनाद, वर माँगो। मेघनाद ने कहा, मैं अमर होना चाहता हूँ। ब्रह्मा ने कहा, मेघनाद, यह उन्माद तो असाध्य है, तुम अपनी इच्छा के अनुसार दूसरा कोई वर माँगो। मेघनाद ने कहा, प्रभो, अगर आप सदय हुए हैं तो मुझको मनमाना वर दीजिए कि जिस दिन यज्ञ कर मैं संग्राम में जाऊँ उस दिन तुम्हारे वर से रण में विजयी होऊँ। बादलों की आड़ में रहकर मैं शत्रु को मारूँ, मैं जिसको मारूँ वह मुझको नहीं देख सके किन्तु मैं उसको देख सकूँ। ब्रह्मा ने कहा, जैसा वर तुमने माँगा है मैं दे रहा हूँ; बादलों में छिपकर तुम युद्ध करोगे। जिस दिन तुम यज्ञ पूर्ण कर युद्ध

एइ यज्ञ भंग तव करिबे जेजन ❋ मरिबे ताहार हाते, ना जाय खण्डन
मेघनादे मारिवार सन्धि आमि जानि ❋ लक्ष्मणे आमार संगे देह रघुमणि
माया-सीता काटिया दुरन्त निशाचर ❋ यज्ञे पूर्णा दिते गेल लंकार भितर
बानर-कटक ल'ये यज्ञ भंग क'रे ❋ एखनि मारिब गिया रावण-कुमारे
लक्ष्मणे आमार संगे पाठाओ त्वरित ❋ यज्ञभंग करिया मारिब इन्द्रजित् ३४०

वानरगन-कर्त्तृक इन्द्रजितेर निकुम्भिला-यज्ञ-भंग

श्रीराम बलेन, शुन मित्र-विभीषण ❋ केमने संकटे आमि पाठाब लक्ष्मण
एके इन्द्रजित् सेइ दुष्ट निशाचर ❋ ताहाते संकट-पुरी लंकार भितर
बालक लक्ष्मण हय सहजे कातर ❋ मनोदुःखे फलाहारे शीर्ण-कलेवर
कष्ट पेये बलहीन, भावि ताइ मने ❋ किरूपे करिबे युद्ध इन्द्रजित्-सने
बिभीषण बले, प्रभु, भाव कि करण ❋ शत-इन्द्रजित्-बल धरेन लक्ष्मण
ताहाते सहाय आछे यत कपिगण ❋ मुहूर्त्तेके इन्द्रजित् हइवे निधन
लक्ष्मणेर शक्ति आमि जानि भालमते ❋ जखन रावण शेल मारिल बुकेते
रणस्थले पड़िलेन ठाकुर लक्ष्मण ❋ कुड़िहाते ना पारिल नाड़िते रावण

में जाओगे उस दिन कोई भी तुमको हरा नहीं सकेगा। [किन्तु] इस यज्ञ को जो व्यक्ति भंग कर देगा उसी के हाथ तुम्हारी मृत्यु होगी—इसका कोई उल्लंघन नहीं होगा। इन्द्रजीत को मारने का उपाय मैं जानता हूँ, हे रघुमणि तुम मेरे साथ लक्ष्मण को दे दो। माया-सीता को काटकर तुरन्त निशाचर लंका के भीतर यज्ञ में पूर्णाहुति देने गया है। मैं वानर-कटक लेकर वहाँ जाऊँगा, उसका यज्ञ भंग करूँगा और रावणकुमार को अभी मार डालूँगा। लक्ष्मण को मेरे साथ झटपट भेजो—यज्ञ भंग कर इन्द्रजीत को मारूँगा ॥ ३४० ॥

वानरों द्वारा इन्द्रजीत का निकुम्भिला-यज्ञ भंग

श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण सुनो, इस संकट में मैं लक्ष्मण को कैसे भेज दूँ। एक तो इन्द्रजीत जैसा दुष्ट निशाचर, फिर संकटों से पूर्ण लंकापुरी के भीतर! बालक लक्ष्मण थोड़े में ही व्याकुल हो जाता है, फलाहार और मनःक्लेश के कारण शीर्ण-कलेवर हो गया है। मैं मन ही मन सोचता हूँ कि योंही वह शक्तिशून्य है, फिर वह इन्द्रजीत के साथ कैसे लड़ेगा। विभीषण ने कहा, प्रभु किस कारण तुम सोच करते हो—लक्ष्मण के शरीर में सौ इन्द्रजीत की शक्ति भरी है। तिसपर सारे कपि भी सहायक हैं—क्षणभर में इन्द्रजीत का निधन हो जायगा। मैं भलीभाँति लक्ष्मण की शक्ति से परिचित हूँ। जिस समय रावण ने लक्ष्मण के हृदय पर शेल मारा था और लक्ष्मण रणक्षेत्र में गिर पड़े तो रावण बीस हाथों से भी लक्ष्मण को हिला न सका। लक्ष्मण में कितनी शक्ति है, मैं भली प्रकार जानता हूँ।

लक्ष्मणेर जत शक्ति, ताहा आमि जानि ✽ जुद्धेते लक्ष्मण-वीरे पाठाओ आपनि
मरेछे सकल वीर, ओइ वेटा आछे ✽ इन्द्रजिते मारिया रावणे मारि पिछे
एकजनेर दुइजने मारा हवे भार ✽ दुजने दुजन मार, एइ युक्ति सार
इन्द्रजिते मारिले रावण-राजे जिनि ✽ सागर तरिले जेन गोष्पदेर पानि
अष्टकपि संगे देह, बले बिभीषण ✽ हनुमान गवाक्ष आर से गन्धमादन
महेन्द्र-देवेन्द्र आर वानर सम्पाति ✽ नल-नील चलिल प्रधान सेनापति
गड़मध्ये पाठाइते शंका हय मने ✽ विभीषण-हाते समर्पिलेन लक्ष्मणे
बिभीषण बले, प्रभु, शुन दिया मन ✽ लक्ष्मणेर भार मम लागे अनुक्षण
श्रीराम बलेन, भाइ, दाण्डाओ मम आगे ✽ विभीषणेर भाल-मन्द तोमारे जे लागे ४१
रामेर चरण बन्दि ठाकुर लक्ष्मण ✽ विभीषण-सह चले, संगे कपिगण
गड़ेर निकटे उपनीत महावल ✽ भांगिया गड़ेर द्वार प्रवेशे सकल
राक्षसेते द्वार राखे धनुके दिया चड़ा ✽ हनू दाण्डाइल लये पर्व्वतेर चूड़ा
घरपोड़ा देखिया राक्षसे भंग पड़े ✽ धाइया वानर सब राक्षसेरे बेड़े
पलाय राक्षसगण हइया फाँफर ✽ लक्ष्मणेर सैन्य ढोके गड़ेर भितर
बाण-वरिषण करे ठाकुर लक्ष्मण ✽ वानरेते गाछ-पाथर करे वरिषण

आप वीर लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दो। सारे वीर मर चुके, बस यही एक रह गया है, इन्द्रजीत को मारने के बाद रावण को मारेंगे। एक ही व्यक्ति दोनों को मारे तो उस पर ज्यादा भार आ पड़ेगा। दो जने दो जनों का वध करो, यही युक्तिपूर्ण बात है। इन्द्रजीत को मारने के बाद राजा रावण को जीतना वैसा ही होगा जैसा कि समुद्र पार कर लेने के बाद गढ़ैया का जल। विभीषण ने कहा, मेरे साथ हनुमान, गवाक्ष, गन्धमादन, महेन्द्र, देवेन्द्र, सम्पाति और प्रधान सेनापति नल और नील इन अष्ट कपिओं को कर दो। गढ़ के भीतर भेजने में मन में शंका होने पर भी लक्ष्मण को विभीषण के हाथों में उन्होंने सौंप दिया। विभीषण ने कहा, प्रभु ध्यान लगाकर सुन लो, लक्ष्मण का भार मुझपर प्रतिक्षण के लिए रहा। श्रीराम ने कहा, भाई, मेरे सामने खड़े हो जाओ। विभीषण का भला-बुरा तुम पर निर्भर है॥ ३४१॥

राम के चरणों की वन्दना कर लक्ष्मण विभीषण के साथ चल दिये—उनके साथ में कपि भी चल पड़े। गढ़ के निकट पहुँचकर सब लोगों ने गढ़ का द्वार तोड़ा और अन्दर प्रवेश किया। धनुष तान कर राक्षस द्वार की रक्षा कर रहे थे, वहाँ पर्वत का शिखर लेकर हनुमान पहुँच गये। घर जलाने वाले को देखकर राक्षसों में भगदड़ मच गई। दौड़कर राक्षसों को वानरों ने घेर लिया। घबड़ा कर सारे राक्षस गढ़ के भीतर भागने लगे और लक्ष्मण की सेना गढ़ के भीतर प्रवेश कर गई। लक्ष्मण बाण और वानर पेड़-पत्थर बरसाने लगे। वानरों के खदेड़ने पर राक्षस भाग खड़े हुए और हनुमान

बानरेर ताड़ने राक्षसगणे भागे ❋ हनूमान उत्तरिल इन्द्रजित्-आगे
इन्द्रजिते देखिया हनूर कोप बाड़े ❋ एकलाफे पड़े गिया यज्ञकुण्ड-पाड़े
सम्मुखे दाण्डाय वीर परम-सन्धानी ❋ पदाघाते निवाय से यज्ञेर आगुनि
हनूमान वीर, जेन सिंहेर प्रताप ❋ यज्ञकुण्ड भरि तार करिल प्रस्राव
यज्ञकुण्ड-उपरेते हनूमान मुते ❋ फल-फूल यज्ञेर भासिया जाय स्रोते
यज्ञद्रव्य छड़ाइया फेले चारिभित ❋ देखि क्रोधे संग्रामे साजिल इन्द्रजित्
मेघवर्ण अंग, ताम्रवर्ण द्विलोचन ❋ हनूर उपरे करे बाण-बरिषण
जाठि ओ झकड़ा शेल फेले महाकोपे ❋ लाफे-लाफे हनूमान सब अस्त्र लोफे
हनूमान बले, बेटा, तोर रण चुरि ❋ देखादेखि तोरे आजि दिब यमपुरी
ना जानि धरिते अस्त्र बानरेर जाति ❋ एकारणे एतदिन तोर अव्याहति
मल्लयुद्ध करि बेटा, फेल् धनुर्ब्बाण ❋ एकइ चापड़े तोर बधिब पराण४२
बिभीषण कहिलेन, ठाकुर लक्ष्मणे ❋ ऐ देख इन्द्रजित् बिन्धे हनूमाने
मेघवर्ण ब'से आछे बटवृक्ष-तले ❋ यज्ञ करे इन्द्रजित् नाम निकुम्भिले
यज्ञ-सांगे अग्निर निकटे पाबे वर ❋ आछुक अन्येर काज, जिने पुरन्दर
र'येछे आश्रय करि बटवृक्ष-तला ❋ यज्ञ-सह उहारे मारह एइ बेला३४३

इन्द्रजीत के सम्मुख जा पहुँचे। इन्द्रजीत को देखकर हनुमान का क्रोध बढ़ गया, एक छलाँग में वह यज्ञकुंड के किनारे जा पहुँचे। परम-सन्धानी वीर सम्मुख खड़ा हो गया और लात मार कर यज्ञ की आग बुझा दी। वीर हनुमान में मानों सिंह का प्रताप हो, उन्होंने यज्ञकुंड में लघुशंका कर दी। यज्ञकुंड पर हनुमान लघुशंका करने लगे जिससे यज्ञ के फल-फूल उसके बहाव में बहने लगे। चारों ओर उन्होंने यज्ञ के सामान बिखेर कर फेंक दिये। यह देखकर इन्द्रजीत क्रोधित होकर युद्ध की सज्जा में सज्जित होने लगा। बादलों के रंग का शरीर और ताम्बे जैसी आँखें लिये वह हनुमान पर बाण बरसाने लगा। भयानक क्रोध में वह जाठि, झकड़ा और शेल जैसे अस्त्र फेंकने लगा और उछल-उछल कर हनुमान उन अस्त्रों को रोकने लगे। हनुमान ने कहा, अरे दुष्ट तू तो चोर सा युद्ध करता है, आज देख लेना मैं तुझको यमालय भेज दूँगा। मैं वानर जाति का होने के कारण अस्त्र चलाना नहीं जानता और इसी कारण तू आज तक बचा रहा। धनुष-बाण फेंक कर आ जा, मल्लयुद्ध कर, देख एक ही झाँपड़ में मैं तेरा प्राण ले लूँगा ॥ ३४२॥

विभीषण ने लक्ष्मण से कहा, वह देखो इन्द्रजीत हनुमान को (बाणों से) बींध रहा है। वटवृक्ष के नीचे मेघवर्ण बना बैठा यह इन्द्रजीत निकुम्भिला नामक यज्ञ कर रहा है। यज्ञ समाप्त करने के बाद वह अग्नि से वर प्राप्त करेगा। दूसरों की बात छोड़ दो, इसने पुरन्दर पर विजय प्राप्त कर ली है। बरगद के नीचे इसने आश्रय लिया है। इसको इसी दम यज्ञ करते हुए मार डालो ॥ ३४३ ॥

लक्ष्मण-कर्त्तृक इन्द्रजित्-वध

इन्द्रजित् लक्ष्मण दु'जने दरशन ※ सन्धान पूरिया वाण मारेन लक्ष्मण
लक्ष्मण बलेन, शुन बेटा इन्द्रजित् ※ आजि तोरे देखाइब शमन निश्चित ३४४
लक्ष्मणेर वाक्य इन्द्रजित् नाहि शुने ※ लक्ष्मणे एड़िया तबे बले विभीषणे
एकवीर्य्ये जन्म खुड़ा, राक्षसेर कुले ※ धार्म्मिक बलिया तोमा सर्व्वलोके बले
पितार समान तुमि पितृ-सहोदर ※ पितार समान सेवा क'रेछि विस्तर
बन्धुगण छाड़ि खुड़ा, आश्रय मानुषे ※ बाति दिते ना राखिले राक्षसेर वंशे
एत सब मारियाछ, क्षमा नाहि मने ※ दियाछ सन्धान बलि आमार मरणे
खाइले राक्षसकुल हइया निष्ठुर ※ तोमारे देखिले पाप बाड़ये प्रचुर
निगुण-सगुण हय, तबु बले ज्ञाति ※ ज्ञाति-बन्धु मिले लोक करये बसति
परकोले देखि खुड़ा परमा-सुन्दरी ※ आपनार भाग्ये नाइ कर धड़फड़ि
एत भ्रातु पुत्र मारि क्षमा नाहि ताते ※ कोन लाजे आसियाछ आमारे मारिते
बानर-कटक खुड़ा, करह अन्तर ※ यज्ञे पूर्णाहुति दिया मेगे लइ वर
एत बलि इन्द्रजित् करिछे आँटुनि ※ आजि तोमा काटि खुड़ा, घुचाइब शनि ४५

लक्ष्मण द्वारा इन्द्रजीत-वध

इन्द्रजीत और लक्ष्मण ने एक दूसरे को देख लिया। निशाना साधकर लक्ष्मण ने वाण मारा और कहा, सुन रे दुष्ट इन्द्रजीत, मैं आज तुझको यम से मिला दूँगा, यह निश्चित है ॥ ३४४ ॥

लक्ष्मण के वाक्य इन्द्रजीत ने नहीं सुने। लक्ष्मण को छोड़ उसने विभीषण से कहा, हे चाचा! राक्षस-वंश में तुम्हारा और मेरे पिता का एक वीर्य से जन्म हुआ। तुमको सभी लोग धार्मिक कहते हैं। तुम पिता के सहोदर हो इसलिए पिता के समान हो। पिता जैसा ही मान कर मैंने तुम्हारी बहुत सेवा की है। चाचा तुमने इष्ट-मित्रों को त्याग कर मनुष्य की शरण क्यों ले ली, राक्षस-वंश में दीया जलाने के लिए भी किसी को नहीं छोड़ा। तुमने सबको मरवा डाला है, तुम्हारे मन में जरा भी क्षमाभाव नहीं है, तुमने मेरी मृत्यु का सन्धान भी इनको बतला दिया है। निर्दय होकर तुमने राक्षस-कुल का ध्वंस किया, तुमको देखने से ही पाप लगता है। गुणवान् हो अथवा गुणहीन, फिर भी लोग उसको कुटुम्बी कहते हैं। कुटुम्ब-बन्धु मिलकर साथ-साथ निवास करते हैं। चाचा, तुम दूसरे की गोद में परमा-सुन्दरी देखकर व्याकुल हो रहे हो यदि वह तुम्हारे भाग्य में नहीं तो क्या करोगे। इतने सारे भतीजों को मार कर तुम्हारा जी नहीं भरा, किस मुँह से तुम मुझको मारने आ गये। चाचा, वानर-सेना को दूर ले जाओ, यज्ञ में पूर्णाहुति डाल कर वर माँग लूँ। इतना कहकर इन्द्रजीत मन ही मन मनसूबे

बिभीषण बले, बेटा, बलिस् विपरीत ❋ भालमते जाने सबे आमार चरित
राक्षस-कुलेते जन्म, नाहि कदाचार ❋ परद्रव्य नालइ, ना करि परदार
चौद्दहाजार देवकन्या तोर बापेर घरे ❋ एत स्त्री थाकिते तबु परदार करे
हरि आने परनारी तपे तपस्विनी ❋ शाप-गालि पाड़े, तबू ना छाड़े कामिनी
कत-शत मुनि-ऋषि मारि कैल पाप ❋ अन्त नाहि, जत पाप करे तोर बाप
त्रिभुवन-सने तोर बापेर बिबाद ❋ कतकाल सबे पाप, पड़िल प्रमाद
सर्ब्बदा ना फले वृक्ष, समयेते फले ❋ तोर बापेर पाप-फल फले एतकाले
निकट मरण तोर, ओरे इन्द्रजित् ❋ सबान्धवे लंका छाड़ि जा रे एकभित
अग्निर वरेते बेटा, जिनिस बारे-बार ❋ अग्निर निकटे वर पाबे नाक आर
यज्ञे पूर्णा दिते चाह मरणेर बेला ❋ एखनि लक्ष्मण तोर काटिबेन गला४६
एत यदि दुइ जने हैल गालागालि ❋ हाते धनु आइल लक्ष्मण महाबली
लक्ष्मण बलेन, बेटा दुष्ट-निशाचर ❋ देख देखि एखनि पाठाब यमघर
मारिते एलाम तोरे लंकार भितरे ❋ सर्ब्बदुःख घुचाइब काटि आज तोरे

बाँधने लगा, कि चाचा आज तुमको काटकर अपने सिर से सनीचर दूर करूँगा ॥ ३४५ ॥

विभीषण ने कहा, बेटा तू तो उल्टा गाने लग गया है। सभी लोग भलीभाँति मेरे चरित्र से अवगत हैं। राक्षस-कुल में जन्म लेकर मैंने कभी बुरे आचरण नहीं किये। मैं न दूसरों की वस्तु हड़पता हूँ और न दूसरों की औरतें। तेरे बाप के घर में चौदह हजार देव-कन्याएँ हैं। इतनी स्त्रियों के होते हुए भी तेरा बाप परदारा की कामना करता है। वह एक तपस्विनी पर-नारी का हरण कर लाया है, वह इतना सरापती तथा कुवचन कहती रही फिर भी उसने उस कामिनी को नहीं छोड़ा। सैकड़ों मुनि-ऋषियों को मार कर उसने महान् पाप अर्जित किया है। जितना पाप तेरे पिता ने किया है उसका कोई अन्त नहीं। तीनों लोकों से तेरे बाप का विरोध है। पाप कितने दिनों तक सहा जा सकता है—अब विपत्ति आ पड़ी है। वृक्ष में सदा फल नहीं फलता, समय पर ही फलता है—तेरे बाप के पापों का फल इतने दिनों में फला। अरे इन्द्रजीत, तेरी मृत्यु निकट है, भला हो कि तू अपने कुटुम्ब के साथ लंका छोड़ कर एक ओर चला जा। अरे दुष्ट, अग्नि के वर से तू बार-बार जीत जाता है लेकिन अब अग्नि से तुझको वर नहीं मिलेगा। मृत्यु के समय तू यज्ञ में पूर्णाहुति देना चाहता है—अभी लक्ष्मण तेरा गला काट डालेंगे ॥ ३४६ ॥

जब दोनों में इस प्रकार गाली-गलौज हो चुका तो महाबली लक्ष्मण हाथ में धनुष लेकर वहाँ आया। लक्ष्मण ने कहा, अरे दुष्ट निशाचर, मैं अभी तुझको यमालय भेजता हूँ। तुझको मारने के लिए मैं लंका के भीतर आ

पितृ-आगे कह गिया संग्रामेर कथा ❊ आजिकार रणे यदि थाके तोर माथा ४७
एत जदि लक्ष्मण तर्ज्जन करि बले ❊ कुपिल से मेघनाद, अग्निहेन ज्वले
अष्ट बीर बानर उठिल तार रथे ❊ दुर्ज्जय बानर सब लागिल गर्ज्जिते
सारथि-सहित रथ उलटिया फेले ❊ लाफ दिया इन्द्रजित् पड़े भूमितले
बिरथ हइल यदि रावण-नन्दन ❊ हरषित ह'ये बाण जोड़ेन लक्ष्मण
दु'जनार उपरे दु'जने बिन्धे बाण ❊ केह कारे नाहि पारे, दु'जने समान
भय पेये इन्द्रजित् भावे मने-मन ❊ आपन कटके बीर डाकिल तखन
इन्द्रजित् बले, शुन यत निशाचर ❊ रथसज्जा क'रे आमि आसिब सत्वर
आजि नर-बानरे पाठाब यमालय ❊ क्षणेक थाकह सबे, ना करिह भय
एत बलि गोपनेते करिल गमन ❊ अन्येते कि जानिबे, ना जाने बिभीषण
मायाते से रथखान करिल निर्म्माण ❊ वायुवेग अष्टघोड़ा रथेर योगान
गायेते विचित्र शाना, माथाय टोपर ❊ हस्ते धनुः प्रवेशिल रणेर भितर
लक्ष्मण बलेन, बेटा मायार निदान ❊ देखेछिनु एक मूर्त्ति, एवे देखि आन
मेघनाद-माया देखि चिन्तित लक्ष्मण ❊ हेनकाले लक्ष्मणेरे कहे बिभीषण
बिभीषण बले, तुमि ना हओ चिन्तित ❊ एखनि मरिबे बेटा दुष्ट इन्द्रजित्

गया हूँ, आज तुझको मार कर सारा दुख दूर करूँगा। अगर आज तेरे प्राण बच पाये तो फिर जाकर संग्राम की कथा अपने बाप से कहनां ॥ ३४७ ॥

जब लक्ष्मण ने इतनी सारी बातें गरजते हुए कहीं तो मेघनाद क्रोध से आग की तरह जल उठा। अष्ट वीर वानर उसके रथ पर चढ़ गये और ये सभी अजेय वानर गरजने लगे। सारथि के साथ उन्होंने रथ को उलट दिया। तब कूद कर इन्द्रजीत भूमि पर आ गया। रावण-नन्दन जब बिना रथ के हो गया तो हर्षित होकर लक्ष्मण ने धनुष पर वाण साधा। दोनों एक दूसरे को बाणों से बींधने लगे। कोई भी किसी से कम नहीं था। दोनों बराबरी के थे। तब डर कर इन्द्रजीत ने मन ही मन सोचा और अपनी सेना को पुकार कर कहा, सारे निशाचारो सुनो, अभी रथ साज कर मैं झटपट लौट आऊँगा। आज मैं नर-वानरों को यमालय भेज दूँगा। तुम लोग थोड़ी देर रुके रहो, डरो मत। इतना कहकर वह चुपके से चला गया। दूसरों की क्या कहें विभीषण को भी इसका पता न लगा। उसने माया से रथ का निर्माण किया, जिसमें पवन-गति वाले आठ घोड़े जोते। शरीर पर कवच और सिर पर शिरस्त्राण लगाये और हाथ में धनुष लिये उसने रणक्षेत्र में प्रवेश किया। लक्ष्मण ने कहा, देख रहा हूँ कि यह दुष्ट तो माया का निधान है, इसकी एक मूर्त्ति देखी थी अब दूसरी मूर्त्ति देख रहा हूँ। मेघनाद की माया देखकर लक्ष्मण चिन्तित हो गये। ऐसे समय लक्ष्मण से विभीषण ने कहा, तुम चिन्ता न करो, अभी यह दुष्ट इन्द्रजीत मरेगा। मेघनाद अगर मेघों की आड़ में छिप जाता है तो इन्द्र अपनी हजार आँखों से भी उसको नहीं देख

मेघनाद लुकाय यदि मेघेर आड़ेते ※ सहस्र-च'क्षेते इन्द्र ना पान देखिते
इन्द्रे बेंधे एनेछिल लंकार भितरे ※ ब्रह्मा आसि मागिया लइल पुरन्दरे
मायारूपे गिया छिल लंकार भितर ※ मायाते साजाये रथ आनिल सत्वर
रणेते प्रवेश आगे करुक इन्द्रजित् ※ मारिब इहारे बन्दी करि चारिभित
उपरेते उठे यदि पाइया तरास ※ हनूमान गिया रक्षा करये आकाश
अग्निर कुमार नील नाना-माया धरे ※ सूक्ष्मरूपे जाइया पाताल रक्षा करे
लंकार जतेक सन्धि बिभीषण जाने ※ जुड़िया लंकार पथ रहे बिभीषण
गगने पर्ब्बत-हाते रहे हनूमान ※ सम्मुखे लक्ष्मण-बीर पूरिल सन्धान
बिभीषण-जुक्ति ना बुझिल इन्द्रजित् ※ मेघनादे बेड़ि कपि मारे चारिभित
सम्मुखेते बाणवृष्टि करेन लक्ष्मण ※ लक्ष्मणेर बाण गिया छाइल गगन४८
अस्त्रदेखि इन्द्रजित् पलाय तरासे ※ रथेर सहित जाय उठिते आकाशे
सारथि देखिते पाय वीर हनूमाने ※ पवन-बेगेते रथ चालाय दक्षिणे
लाफ दिया हनूमान पड़े तार रथे ※ चूर्ण कैल रथखान एक पदाघाते
भांगिया रथेर ध्वज फेले चारिभित ※ अन्तरीक्षे पलाइते चाहे इन्द्रजित्
शून्ये धाय इन्द्रजित्, देखे हनूमान ※ दुइ पाये धरि तार दिल एक टान

पाता। वह इन्द्र को बाँधकर लंका के भीतर ले आया था और तब ब्रह्मा ने आकर इन्द्र को माँग लिया था। वह मायारूप धर कर लंका में गया था और माया से रथ सुसज्जित कर तुरन्त लौट आया है। पहले इन्द्रजीत रण में प्रवेश करे फिर उसको चारों ओर से बन्दी बनाकर मारूँगा। त्रस्त होकर यदि वह आकाश में शरण ले तो हनुमान आकाश में जाकर रक्षा करे। अग्नि के कुमार नील विभिन्न प्रकार की माया का अधिकारी है—वह सूक्ष्म रूप धर कर पाताल की रक्षा करे। लंका के बहुतेरे भेदों की जानकारी विभीषण को थी, वह लंका के पथ पर अड़ कर खड़ा रहा। गगन में हाथों में पर्वत लिये हनुमान प्रस्तुत हो गये और सामने वीर लक्ष्मण धनुष पर बाण चढ़ा कर डट गये। इन्द्रजीत को विभीषण की युक्ति समझ में नहीं आई। मेघनाद को घेर कर कपि चारों ओर से प्रहार करने लगे। सामने से लक्ष्मण बाण बरसाने लगे। लक्ष्मण के बाणों से आकाश छा गया ॥ ३४८ ॥

अस्त्र देखकर इन्द्रजीत भयभीत होकर भागने लगा। रथ सहित उसने आकाश पर चढ़ना चाहा। सारथि ने वीर हनुमान को देख लिया और पवन-वेग से दक्षिण की दिशा में रथ चला दिया। हनुमान उसके रथ पर कूद पड़ा और एक ही लात में रथ को चूर-चूर कर दिया। रथ का ध्वज तोड़कर चारों ओर बिखेर दिया। इन्द्रजीत ने अन्तरिक्ष में भाग जाना चाहा। इन्द्रजीत शून्य में भाग रहा है यह देख कर हनुमान ने उसके दोनों पैरों को पकड़ कर घसीटा। दोनों अन्तरिक्ष में एक दूसरे से भिड़ गये और

अन्तरीक्षे दुइजने लागे हुड़ाहुड़ि ※ भूमितले पड़े दोंहे करि जड़ाजड़ि
हेंटे इन्द्रजित् पड़े, हनू से उपरे ※ बुके हाँटु दिया तार गला चापि धरे
शीघ्र एस कपिगण, डाके हनूमान ※ सबे मिलि इन्द्रजितेर बधह पराण
हनूमान-बाक्ये कपि जाय ताड़ाताड़ि ※ सकल बानर मिलि आसे रड़ारड़ि४९
कुपिल से इन्द्रजित् बले महाबली ※ बानर गणेरे देखि उठे ठेलाठेलि
बानर-उपरे करे बाण-वरिषण ※ कपिगण पलाय, सहिते नारे रण
इन्द्रजित् पलाये लंकाय जेते चाहे ※ चापिया लंकार द्वार बिभीषण रहे५०
बिभीषण वले, बाछा, जावि आज कोथा※ एखनि लक्ष्मण तोर काटिबेन माथा
शीघ्र एस लक्ष्मण, डाकेन बिभीषण ※ त्वरा करि दुष्ट बेटार बधह जीवन५१
बिभीषण-बचने लक्ष्मण आगुयान ※ इन्द्रजित्-काछे गेल पूरिया सन्धान
दु'जने देखिया बाण जोड़े दुइजने ※ दु'जने पड़िल ढाका दु'जनार बाणे
चारिदिके पड़े बाण, नाहि लेखा-जोखा※ दुइजने बाण फेले, जार जत शिक्षा
अमर्त्त समर्थ बाण बाण पद्मासन ※ विष्णुजाल इन्द्रजाल काल हुताशन
उल्काबाण बरुण विद्युत् खरशाण ※ गजेन्द्र नक्षत्र-जोग ज्योतिर्म्मय बाण
सूचीमुख शिलीमुख घोर-दरशन ※ सिंहदन्त बज्रदन्त बाण विरोचन

जमीन पर गिर कर गुत्थम-गुत्था करने लगे। इन्द्रजीत नीचे गिरा और उसके ऊपर हनुमान। उसके सीने पर घुटना टेक कर उसने उसका गला धर दबोचा। हनुमान ने पुकारा, अरे वानरो, जल्दी आओ, सब लोग मिलकर इन्द्रजीत के प्राण ले लो। हनुमान के वाक्य सुनकर सारे वानर जल्दी-जल्दी दौड़ पड़े॥ ३४९॥

असामान्य बल वाला इन्द्रजीत क्रोधित हो गया। वानरों को देखकर उसने उनको एक ओर धकेल दिया और उन पर बाण बरसाने लगा। कपि भाग खड़े हुए, युद्ध का प्रचंड प्रहार वे सहन न कर सके। इन्द्रजीत ने भाग कर लंका में प्रवेश करना चाहा किन्तु विभीषण लंका का द्वार छेंके खड़ा रहा॥ ३५०॥

विभीषण बोले, बच्चा, आज कहाँ जाओगे, अभी लक्ष्मण तुम्हारा सिर काट गिराएँगे। विभीषण पुकारने लगे, लक्ष्मण जल्दी आओ, झटपट इस दुष्ट का वध करो॥ ३५१॥

विभीषण का वचन सुनकर लक्ष्मण आगे बढ़े और धनुष पर बाण साध कर इन्द्रजीत के पास गये। दोनों ने ही एक दूसरे को देखकर बाण साधे। दोनों ही एक दूसरे के बाणों से ढक गये। चारों ओर अनगिनत बाण गिरने लगे। दोनों ही अपनी-अपनी शिक्षा के अनुसार बाण फेंकने लगे। दोनों वीर मिलकर अमर्त्त, समर्थ, पद्मासन, विष्णुजाल, इन्द्रजाल, कालान्तक, यम, उल्का, वरुण, विद्युत, खरशाण, गजेन्द्र, नक्षत्र-योग, ज्योतिर्मय, सूचीमुख,

दण्ड-ऐषिकादि बाण, बाण कर्णिकार ❊ चन्द्रमुख सूर्यमुख बाण सप्तसार
नील-हरिताल-बाण विकट शंकर ❊ अर्द्धचन्द्र क्षुरपार्श्व बाण मनोहर
एत बाण दुइ वीरे करे अवतार ❊ दशदिक् लंकापुरी बाणे अन्धकार
दु'जने बरिषे बाण दु'जने प्रवीण ❊ बाणेर कुहके नाहि जानि रात्रि-दिन
लक्ष्मण अशक्त हैल प्रहारेर घाय ❊ ब्रह्मा बले पुरन्दर करह उपाय
ब्रह्म-अस्त्र पुरन्दर करिलेन दान ❊ लक्ष्मण से ब्रह्म-अस्त्रे पूरिला सन्धान
बाणेरे बुझाये कन ठाकुर लक्ष्मण ❊ ब्रह्म भावि ब्रह्मा तोया करिला सृजन
जदि रघुनाथ हन बिष्णु-अवतार ❊ तबे तुमि इन्द्रजिते करिबे संहार
इन्द्रजित्-माथा काटि पाड़ भूमितले ❊ निर्भये जाउक् निद्रा देवता-सकले
एत बलि ब्रह्म-अस्त्रे पूरिला सन्धान ❊ अस्त्रे देखि इन्द्रजितेर उड़िल पराण
जाठा-जाठि कत एड़े अस्त्र काटिवारे ❊ लोहार पावड़ा मारे, अस्त्र नाहि फिरे
अब्यर्थ ब्रह्मार बाण, केवा धरे टान ❊ इन्द्रजितेर माथा काटि करे दुइखान ५२
पड़िल जे इन्द्रजित् संग्राम-भितरे ❊ धाइया बानरगण राक्षसेरे मारे
पलाय राक्षसगण गणिया प्रमाद ❊ "रामजय" बलि कपि छाड़े सिंहनाद
पड़िल मस्तक-सह मुकुट-कुण्डल ❊ गड़ागड़ि जाय मुण्ड पड़ि भूमितल

शिलीमुख, भयानक-दर्शन, सिंहदन्त, वज्रदन्त, विरोचन, दंड, ऐषिकादि, कर्णिकार, चन्द्रमुख, सूर्यमुख, सप्तसार, नील, हरिताल, विकट शंकर, अर्धचन्द्र तथा क्षुरपार्श्व आदि अनेकों बाण चलाने लगे जिससे लंकानगरी की दसों दिशाएँ अंधकारमय हो गईं। दोनों ही प्रवीण बाण बरसाने लगे। बाणों के कुहरे में पता नहीं चलता था कि रात है या दिन। बाणों के प्रहार से लक्ष्मण शक्तिहीन होने लगे तब ब्रह्मा ने कहा, इन्द्र, कोई उपाय करो। तब इन्द्र ने लक्ष्मण को ब्रह्म-अस्त्र दिया। लक्ष्मण ने उस ब्रह्म-अस्त्र से निशाना साधा। लक्ष्मण ने बाण को समझाते हुए कहा, ब्रह्मा ने ब्रह्म समझकर तुम्हारा निर्माण किया। यदि रघुनाथ विष्णु के अवतार हैं तो तुम इन्द्रजीत का संहार करोगे। इन्द्रजीत का सिर काटकर भूमि पर गिराओ जिससे सारे देवता रात्रि को निर्भय सो सकें। इतना कहकर उन्होंने ब्रह्म-अस्त्र का निशाना साधा। अस्त्र देखकर इन्द्रजीत के होश उड़ गये। अस्त्र से बचने के लिए उसने कितने ही जाठा-जाठी और लोहे के फावड़े आदि फेंके किन्तु वह अस्त्र रोका नहीं जा सका। ब्रह्मा का बाण अचूक होता है, उसको कौन रोक सकता है। उस बाण ने इन्द्रजीत का सिर काटकर फेंक दिया॥ ३५२॥

संग्राम में इन्द्रजीत का पतन होते ही सारे वानर दौड़-दौड़ कर राक्षसों को मारने लगे। विपत्ति-मारे राक्षस भागने लगे और 'रामजय' की हाँक लगाकर कपि सिंहनाद करने लगे। इन्द्रजीत के सिर के साथ-साथ उसके मुकुट-कुंडल भी गिरे और सिर भूमि पर लोटने लगा।

इन्द्रजितेर काटामुण्ड-उपरेते चड़ि ❋ कोन कपि लाथि मारे, केह मारे बाड़ि
कील-लाथि मारिया मस्तक करे गुँड़ा ❋जीयन्ते ना पारे कपि,मड़ार उपर खाँड़ा
कृत्तिवास-पण्डित कवित्व विचक्षण ❋ इन्द्रजित्-वध-गीत गान रामायण ३५३

इन्द्रजितेर मरणे देवगणेर आनन्द

जे धरिले धनुर्व्वाण, इन्द्र सदा कम्पमान, वीरदापे वसुमती फाटे ।
त्रिभुवने जत वीर, जार वाणे नहे स्थिर, यक्ष-रक्ष ना जाय निकटे ।।
हेन बीर मैल रणे, जय जय त्रिभुवने, मुनिगण करे वेदध्वनि ।
पुलकित चराचर, गन्धर्व्व किन्नर नर, जय जय शव्दमात्र शुनि ।।
रणे मैल इन्द्रजित्, सकलेते आनन्दित, धन्य वीर ठाकुर लक्ष्मण ।
सुरासुर ऋषि यति, लक्ष्मणेर करे स्तुति, सबे कैला पुष्प-वरिषण ।।
इन्द्रजितेर मरणे, हरषित देवगणे, बाल-वृद्ध आनन्दित हय ।
कहेन लक्ष्मण-प्रति, करिले ये अव्याहति, त्रिलोकेर घुचाइले भय ।।
हइल अपार सुख, खण्डिल मनेर दुख, कुतूहले निश्चिन्त सकल ।
जत स्वर्ग-विद्याधरी, पाद्य-अर्घ्य हाते करि, सुरपुरे करे सुमंगल ।।

इन्द्रजीत के कटे मुंड पर चढ़ कर कोई वानर लात जमाता तो कोई उस पर प्रहार करता। लात और मुक्का मारकर वानरों ने उसका मुंड चूर-चूर कर दिया। जब वह जिन्दा था तो वे कुछ न कर सके, किन्तु मुर्दे पर प्रहार करने लगे। कवित्व में विचक्षण पण्डित कृत्तिवास ने रामायण में इन्द्रजीत-वध की कथा का गान किया है ।। ३५३ ।।

इन्द्रजीत की मृत्यु से देवताओं में आनन्द

जिसके धनुष-बाण हाथ में लेने पर इन्द्र भी काँपने लगता है और जिसके पदचाप से भूमंडल फटने लगता है, तीनों लोकों के सारे वीर जिसके बाणों के सम्मुख ठहर नहीं सकते और यक्ष-रक्ष भी जिसके निकट नहीं फटकते, वही वीर युद्ध में खेत रहा। तीनों लोकों में जयध्वनि हुई, मुनिगण वेदध्वनि करने लगे। चराचर संसार में गन्धर्व, किन्नर, नर, यह सभी जयध्वनि सुनकर पुलकित हो गये। समर में इन्द्रजीत मरा, यह सुनकर सभी हर्षमग्न हुए। लक्ष्मण जी भी अनुपम वीर हैं। सुरासुर, ऋषि, यति लक्ष्मण की स्तुति करने लगे और सभी लोगों ने फूल बरसाये। इन्द्रजीत की मृत्यु से सारे देवता प्रसन्न हुए, बच्चे-बूढ़े आनन्दमग्न हो गये। वे लक्ष्मण से कहने लगे, तुमने बहुत बड़ी रक्षा की तीनों लोकों का भय तुमने दूर किया। दुःख जाता रहा, अपार सुख की प्राप्ति हुई और सारी जनता का भय मिट गया। वह निश्चिन्त हो गई। स्वर्ग की सारी विद्याधरियाँ पाद्य-अर्घ्य हाथों में लिये

जतेक अमर-सती, ज्वालिला घृतेर बाति, सुखे क्रीड़ा करे सुरपति।
बेद पड़े बृहस्पति, सकलेर अब्याहति, नाचे गाय हरषित अति॥
त्रिभुवन-पराजय, जार अस्त्र नाहि सय, नाना शिक्षा जाहार धनुके।
रथखान सुशोभन, विपक्षे जेन शमन, भये केह ना रहे सम्मुखे॥
करि रथ आरोहण, आइलेन देवगण, लक्ष्मणेरे कहे जोड़ हात।
बिनाशिया लंकेश्वर, घुचाओ देवेर डर, उद्धार करह रघुनाथ॥
रावण जाउक क्षय, रामेर हउक् जय, दूरे जाक देवेर तरास।
दीनजने कर दया, देह राम, पदछाया, नाचाड़ी गाहिल कृत्तिवास ३५४

इन्द्रजित्के वध करिया लक्ष्मणेर प्रत्यागमन

बाणे बाणे ह'येछेन लक्ष्मण पीड़ित ॐ हनूमान बिभीषण उभय-सहित
दुइ हात तुलि दिया उभयेर स्कन्धे ॐ बहिर्गत हइलेन लंकार बृहन्दे
पाठाइया लक्ष्मणेरे श्रीराम चिन्तित ॐ मायायुद्धे तारे पाछे मारे इन्द्रजित्
मायावीर इन्द्रजित् मायार निधान ॐ पाछे वा से लक्ष्मणेर करे अकल्याण

सुरपुर में सुमंगल कृत्य करने लगीं। जितनी भी सतियाँ अमर हो गई हैं उन्होंने घी के दिए जलाये। सुरपति आनन्द से क्रीड़ा करने लगे। बृहस्पति वेदपाठ करने लगे, सभी लोगों को अव्याहति मिली और वे हर्ष से नृत्य-गीत करने लगे। तीनों लोकों को जिसने हराया, जिसके अस्त्र सहन योग्य नहीं थे, जिसको विभिन्न प्रकार की धनुर्विद्या प्राप्त थी, जिसका शोभन रथ सामने खड़ा हो तो ऐसा लगता था मानों विपक्ष में यम खड़ा है, जिससे कोई भी भय के मारे सम्मुख नहीं ठहरता था, आज वही इन्द्रजीत नहीं रहा। रथ पर सवार देवतागण आए और हाथ जोड़कर लक्ष्मण से कहने लगे। लंकेश्वर का विनाश कर देवताओं का भय दूर करो। हे रघुनाथ! उद्धार करो। रावण का क्षय हो, राम की जय हो और देवताओं का त्रास दूर हो। कृत्तिवास ने त्रिपदी छन्द में यह गान किया। हे राम अपने चरणों की छाया में स्थान दो और दीन जनों पर दया करो॥ ३५४॥

इन्द्रजीत-वध के बाद लक्ष्मण की वापसी

बाणों से लक्ष्मण घायल हो गये थे। हनुमान और विभीषण दोनों के साथ वे चल पड़े। दोनों के कन्धों पर दो हाथ रखकर वे लंका की चौहद्दी से निकल पड़े। लक्ष्मण को भेजकर श्रीराम चिन्तित थे कि कहीं मायायुद्ध में इन्द्रजीत उसको मार न डाले। मायावीर इन्द्रजीत माया में कुशल है, कहीं वह लक्ष्मण का कोई अकल्याण न कर डाले। इतना सोचकर वे बार-बार पथ की ओर देखने लगे। ऐसे ही समय लक्ष्मण वहाँ जा पहुँचे। लक्ष्मण

एतभावि पथपाने चाहेन सघने ※ हेनकाले उपनीत लक्ष्मण से-स्थाने
बहिछे शोणित धार लक्ष्मणेर गाय ※ देखिया श्रीराम मने विद्यमान ताय
विभीषण बले, प्रभु, करि निवेदन ※ आइलेन इन्द्रजिते बधिया लक्ष्मण ३५५

इन्द्रजितेर मृत्यु-श्रवणे श्रीरामचन्द्रेर आनन्द

जिनिया प्रचण्ड रिपु, लक्ष्मण सरक्त-वपु, उपनीत रामेर गोचर।
वामकरे शरासन, भयंकर से गठन, दक्षिण करेते एक शर॥
रिपुजय करि रंगे, संग्रामेर वेशे संगे, आइल सकल महावीर।
आनन्दे प्रफुल्ल-काय, रक्तधारा वहे गाय, रणश्रमे हइया अस्थिर॥
शुनिया संग्राम-जय, श्रीराम आनन्दमय, भावेन, मरिल इन्द्रजिता।
सागर तरिनु हेले, कि आर गोखुर-जले, रावणे बधिले पाव सीता॥
यत सेनापति-संगे, सुग्रीव नाचेन रंगे, संगेते सकल अधिकारी।
नल नील बालि-सुत, सकले आनन्द-युत, कपिगण नाचे सारि-सारि॥
बैरिकुल करि नाश, आइलाम तव पाश, कहे विभीषण गुणधाम।
लक्ष्मण नोङाये माथा, कहेन सकल कथा, शुनिया कौतुकी अति राम॥

के शरीर से रक्त की धारा वह रही है, यह देखकर श्रीराम मन ही मन बड़े खिन्न हुए। विभीषण ने कहा, हे प्रभु! निवेदन है कि लक्ष्मण इन्द्रजीत का वध करके आ रहे हैं॥ ३५५॥

इन्द्रजीत की मृत्यु की वार्त्ता सुनकर श्रीरामचन्द्र का हर्ष

प्रचंड शत्रु पर विजय प्राप्त कर, खून से लथपथ शरीर लिये लक्ष्मण राम के समक्ष उपस्थित हुए। उनके बाएँ हाथ में भयंकर दीखने वाला एक धनुष और दाहिने हाथ में एक वाण था। शत्रु पर अनायास विजय प्राप्त कर रणवेश में सभी महावीर आ पहुँचे। हर्ष से उनका शरीर रोमांचित है और तन से रक्तधारा बह रही है। सभी रण के परिश्रम से थके हैं। संग्राम में विजय हुई, सुनकर श्रीराम आनन्दमग्न हो गये और सोचने लगे, इन्द्रजीत तो मरा, जब अनायास सागर लाँघ लिया तो गड़ही-गड्ढों की क्या परवाह। रावण का वध करते ही सीता मिल जायगी। सारे सेनापतियों के साथ उल्लास से सुग्रीव और उनके साथ-साथ सारे अधिकारी भी नाचने लगे। नल, नील, अंगद, सभी हर्षमग्न हो गये। सारे वानर नाचने लगे। गुणधाम विभीषण ने कहा, मैं शत्रुओं का नाश कर तुम्हारे पास आया हूँ। लक्ष्मण सिर झुका कर सारी बातें कहने लगे। सुनकर राम को बड़ा आनन्द आया। लक्ष्मण की बातें सुनकर श्रीराम ने उनको अंक में भर लिया और माथा चूम कर मुँह की ओर देखा। मस्तक सूँघ कर उन्होंने धनुष वाण को

शुनि लक्ष्मणेर बोल, श्रीराम दिलेन कोल, ललाट चुम्बिया मुख चाइ।
लइया मस्तक-घ्राण, चुम्बिला धनुक-बाण, तोमा बइ नाहि आर भाइ ॥
लक्ष्मण करेन स्तुति, तुमि त्रिदशेर पति, क्षितितले बिष्णु अबतार।
जारे तव आशीर्ब्बाद, जिने कोटि मेघनाद, तारे जिने, हेन शक्ति कार ॥
पशुपति बृहस्पति, शचीपति करे स्तुति, ताहार नाहिक यम-त्रास।
लक्ष्मण करिल स्तुति, आनन्दित रघुपति, नाचाड़ी रचिल कृत्तिवास ३५६

इन्द्रजितेर बाणाघाते क्षतांग लक्ष्मणेर आरोग्य-लाभ

श्रीराम बलेन, हे सुषेण बैद्यवर ※ फुटियाछे लक्ष्मणेर सर्ब्बांगेते शर
बाणफला रहियाछे शरीर-भितर ※ केमने सहिल ए कोमल कलेवर
मेघनादे मारिया राखिल देवगण ※ सीता-उद्धारेर मूल हइल लक्ष्मण
लक्ष्मणेर अंगे अस्त्र र'येछे फुटिया ※ महौषध देह सब बाण उपाड़िया ३५७
एतेक बलेन जदि कमल-लोचन ※ औषध बाहिर करे सुषेण तखन
एके-एके बाहिर करिल जत शर ※ औषध लेपिया दिल अंगेर उपर
अंगेते प्रवेश कैल औषधेर घ्राण ※ सुन्दर शरीर हैल पूर्ब्बेर समान
मिलाये बाणेर चिह्न हइल सुन्दर ※ पूर्ब्बमत लक्ष्मणेर हैल कलेवर
आनन्द-अवधि नाइ, प्रभु रघुनाथ ※ सुषेणेर अंगेते बुलान पद्महात

चूमा और कहा तुम्हारे जैसा कोई भाई नहीं। लक्ष्मण स्तुति करने लगे, तुम देवताओं के अधिपति हो और भूमंडल पर विष्णु के अवतार हो। जिसको तुम्हारा आशीर्वाद प्राप्त है, वह करोड़ों मेघनादों पर विजय प्राप्त कर सकता है। उसको हराने की शक्ति किसमें है? पशुपति, बृहस्पति और शचीपति (इन्द्र) जिसकी स्तुति करते हैं, उसको यम का त्रास नहीं है। लक्ष्मण की स्तुति से रघुनाथ प्रसन्न हुए, कृत्तिबास ने त्रिपद छन्द की रचना की ॥ ३५६ ॥

इन्द्रजीत के बाणों से घायल लक्ष्मण का आरोग्य-लाभ

श्रीराम ने कहा, हे वैद्यवर सुषेण, लक्ष्मण के सारे अंगों में बाण चुभे हैं। बाणों के फल भी शरीर के अन्दर रह गये हैं। ऐसा कोमल शरीर कैसे यह सब सह सका। लक्ष्मण ने मेघनाद को मारकर देवताओं की रक्षा की और सीता-उद्धार का मूल कारण बन गये। लक्ष्मण के अंग में अस्त्र चुभे हुए हैं, तुम सारे बाण निकाल कर उन्हें महौषध दो ॥ ३५७ ॥

कमल-लोचन राम ने जब इतना कहा तो सुषेण ने औषध निकाली। एक-एक कर शरीर से सारे बाण उसने निकाले और अंग पर औषध लेप दी। औषध की गन्ध शरीर में प्रवेश कर गई और लक्ष्मण का शरीर पहले जैसा ही सुन्दर हो गया। प्रभु रघुनाथ यह देखकर आनन्द से विभोर हो उठे और सुषेण के बदन पर अपना कमल-हस्त रखा। श्रीराम कहा, सुषेण,

श्रीराम बलेन, सुषेण, कि कव तोमारे ✱ तोमार समान वैद्य नाहिक संसारे
बारे-बारे प्राणदान दिले सबाकार ✱ त्रिभुवने एइ कीर्त्ति रहिल तोमार
बन्दिल सुषेण-वेज रामेर चरण ✱कृत्तिवास-पण्डित रचिल रामायण३५८

इन्द्रजितेर मृत्यु-श्रवणे रावणेर विलाप

मेघनाद पड़े रणे प्रभात-समय ✱ भये रावणेर आगे केह नाहि कय
गगने हइल बेला द्वितीय प्रहर ✱ बसिया मन्त्रणा करे जत निशाचर
स्थाने-स्थाने बसि युक्ति करिछे राक्षस✱ कहिते रावण-आगे ना करे साहस
पात्र-मित्र सकलेते मन्त्रणा करिया ✱ भग्नदूत एकजन दिल पाठाइया
रावण सम्मुखे कहे करि जोड़हात ✱ रणेर संवाद शुन राक्षसेर नाथ
लंकापुरी वीरशून्या हैला एतदिने ✱ मेघनाद पड़े आजि लक्ष्मणेर बाणे३५९
दूतमुखे शुनि मेघनादेर मरण ✱ सिंहासन हैते पड़े राजा दशानन
उच्चैःस्वरे डाकि बले कोथा इन्द्रजित् ✱ आछाड़ खाइया पड़े हइया मूर्च्छित
धरिया तुलिल जत पात्र-मित्र आसि ✱ दशमुण्डे ढाले जल कलसी-कलसी
अनेक कष्टेते राजा पाइल चेतन ✱ चेतन पाइया राजा करये क्रन्दन
राक्षसकुलेर चूड़ा पुत्र इन्द्रजिते ✱ प्राण हाराइले नर-वानरेर हाते

तुमसे क्या बताऊँ, तुम जैसा वैद्य इस संसार में नहीं है। बार-बार सभी लोगों को तुमने प्राणदान दिया। तुम्हारी यह कीर्त्ति त्रिभुवन में बनी रहेगी। सुषेण वैद्य ने राम का चरण वन्दन किया और कृत्तिवास पंडित ने रामायण की रचना की ॥ ३५८ ॥

इन्द्रजीत की मृत्यु सुनकर रावण का विलाप

सवेरे मेघनाद युद्ध में खेत रहा। मारे भय के कोई भी रावण के सम्मुख जाकर यह कह न सका। जब दोपहर दिन चढ़ गया तब निशाचर मिलकर सलाह करने लगे। जगह-जगह पर बैठकर राक्षस परामर्श कर रहे हैं, लेकिन किसी में भी रावण के सम्मुख जाकर कहने का साहस नहीं। सारे पात्र-मित्रों ने परामर्श के उपरान्त एक भग्नदूत को भेज दिया। रावण के सामने हाथ जोड़ कर वह कहने लगा, हे राक्षसों के नाथ! रण का समाचार सुनो। इतने दिनों बाद लंकानगरी वीर-शून्या हुई—लक्ष्मण के बाणों से आज मेघनाद खेत रहा ॥ ३५९ ॥

दूत के मुँह मेघनाद की मृत्यु सुनते ही दशानन सिंहासन से गिर पड़ा। ऊँची आवाज में उसने पुकारा 'इन्द्रजीत कहाँ!' फिर चक्कर खा कर भूमि पर गिर पड़ा और मूर्छित हो गया। सारे पारिषदों ने आकर उसको उठाया और उसके दसों सिरों पर जल के घड़े उंडेलने लगे। बड़ी मुश्किल से राजा

आमार सर्ब्बस्व तुमि लंका-अधिकारी ※ पिता दशानन तोर, माता मन्दोदरी
पर्ब्बत-काण्डार काँपे देखि तोर बाण ※ एकबाणे इन्द्रबेटा ना सहित टान
त्रिभुवने जोद्धा नाहि तोमार समान ※ मनुष्येर बाणे पुत्र, हाराइले प्राण
कुम्भकर्ण-भ्रातृशोक रहियाछे बुके ※ लंकार रावण मरि तोमा-पुत्र-शोके
भाइ नहे, चण्डाल पापिष्ठ बिभीषण ※ यज्ञभंग करि तव बधिल जीवन
जदि प्राण बाँचे राम-तपस्वीर रणे ※ आगे आमि काटिब चण्डाल बिभीषणे
हा हा पुत्र इन्द्रजित्, गेलि कोथाकारे ※ सम्मुख-संग्रामे आमि पाठाइब कारे
पुत्रशोके कान्दि राजा गड़ागड़ि जाय ※ दशमुण्ड-कलेवर धूलाते लोटाय
क्षणे अचेतन हय, क्षणेक चेतन ※ कि हैल कि हैल बलि कान्दिछे रावण ३६०

मन्दोदरीर-विलाप

कुड़िच'क्षे बारि-धारा लंका-अधिकारी ※ इन्द्रजित् मैल, वार्त्ता पाय मन्दोदरी
आछाड़ खाइया पड़े मन्दोदरी राणी ※ उच्चैःस्वरे कान्दे दश-हाजार सतिनी

रावण होश में आया। होश में आते ही रावण रोने लगा। हे इन्द्रजीत, तुम राक्षस कुल की चोटी के समान थे। हाय, तुमने नर-वानरों के हाथों प्राण खो दिये। हे लंका के अधिकारी, तुम मेरे सर्वस्व थे। तेरा पिता दशानन है और माँ मन्दोदरी है। तेरे बाण देखकर वन-जंगल-पहाड़ सभी काँप उठते थे। तुम्हारे एक बाण में बेचारा इन्द्र भाग खड़ा होता था। तीनों लोक में तुम सा कोई योद्धा नहीं था। हे पुत्र, तूने मनुष्य के बाण से प्राण गवाँ दिया। मेरे दिल पर भाई कुम्भकर्ण का शोक अभी ताजा है। मैं लंका का रावण आज तुम जैसे पुत्र के शोक से मर रहा हूँ। मेरा भाई विभीषण तो चंडाल और पापी है। यज्ञभंग कर उसने तेरा वध कराया। अगर तपस्वी राम के साथ युद्ध में मेरे प्राण बच गये तो सबसे पहले मैं उस चंडाल विभीषण को काट डालूँगा। हाय बेटा इन्द्रजीत, तू कहाँ चला गया? आज मैं सम्मुख संग्राम में किसको भेजूँगा? पुत्रशोक से राजा रोता हुआ लोट-पोट होने लगा। दसों मुंड सहित सारा शरीर धूल में लोटने लगा। क्षणभर में होश में आता तो क्षणभर में बेहोश हो जाता। क्या हो गया, क्या हो गया, कहकर रावण रोने लगा ॥ ३६० ॥

मन्दोदरी का विलाप

लंका के अधिकारी रावण की बीसों आँखों से आँसुओं का धारा बह निकली। इन्द्रजीत मर गया, यह सूचना मन्दोदरी को मिली। रानी मन्दोदरी यह सुनकर जमीन पर गिर पड़ी और उसकी दस हजार सौतें जोर-जोर से रोने लगीं। भूमि पर गिर कर मन्दोदरी निष्पन्द सी हो गयी। कोई उसके

स्पन्दहीन मन्दोदरी धरातले पड़े ❋ शिरे जल ढाले केह, देखे नेड़े-चेड़े
नासिकाते हस्त दिया देखिछे सबाइ ❋ केह बले बेंचे आछे, केह बले नाइ
एलोथेलो कवरी-वन्धन केशपाश ❋ चक्षे वहे बारिधारा, घन बहे श्वास
चैतन्य पाइया बले, कोथा इन्द्रजित् ❋ देखा दिया प्राण राख मायेर त्वरित ६१
आमि नाना-उपहारे, पूजिया जे महेश्वरे, तोमापुत्र पाइलाम कोले।
किछुदिन छिल सुख, एखन घटिल दुख, हेन पुत्र पड़े रणस्थले॥
कि मोर बसति-बास, जीवने कि छार आश, कि करिबे नव-छत्रदण्ड।
कि आर पुष्पक-रथ, वीरभाग आछे यत, तोमा-विना सब लण्डभण्ड॥
भूमितले लोटाइया, पुत्रशोके विनाइया, क्रन्दन करिछे मन्दोदरी।
हाय पुत्र मेघनाद, केन एत परमाद, आजि से मजिल लंकापुरी॥
शची-सह शचीपति, सुखेते करुन स्थिति, सच्छन्दे भुन्जुक दिनपति।
ब्रह्मा-बिष्णु-महेश्वर, हरषित सुरवर, देखिया ए लंकार दुर्गति॥
इन्द्र-आदि देवगणे, जिनियाछ तुमि रणे, तव डरे केह नहे स्थिर।
कि कहिब विभीषणे, शत्रु आने यज्ञस्थाने, तेंइ से वधिल रघुवीर॥

सिर पर पानी डालती तो कोई हिला-डुला कर देखती। सभी उसकी नाक पर हाथ रख कर देखतीं। कोई कहती कि जिन्दा है, कोई कहती कि नहीं है। उसके जूड़े के बन्धन खुल गये और बाल बिखर गये। दोनों आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली और साँस उखड़ी-उखड़ी चलने लगी। सुधि आते ही मन्दोदरी बोल पड़ी, हे इन्द्रजीत तुम कहाँ हो, दर्शन देकर माँ के प्राणों की तुरन्त रक्षा करो॥ ३६१॥

नाना प्रकार की भेंट चढ़ाकर महेश्वर का पूजन कर मुझको गोद में तुम जैसा पुत्र प्राप्त हुआ। कुछ ही दिनों के लिए यह सुख रहा, अब दुख का प्रहार हुआ। मेरा ऐसा पुत्र रणभूमि में जाता रहा। मेरे लिए अब यह घर-द्वार भला क्या है, जीवन में मेरे लिए अब कौन सी आशा रह गई। नये राजछत्र और राजदंड का अब क्या मूल्य है। पुष्पक रथ भी भला क्या है। वीर के योग्य जो कुछ भी है वह अब सब व्यर्थ ही है। इस प्रकार भूमि पर लोटकर पुत्रशोक से मन्दोदरी जोर-जोर रोदन करने लगी। हाय पुत्र मेघनाद, ऐसी विपत्ति क्यों आन पड़ी, आज यह लंकापुरी ध्वंस के मुख पर है। शची (इन्द्राणी) के साथ शचीपति (इन्द्र) सुख से रहें, दिनपति सूर्य स्वच्छन्द विचरण करें। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा अन्य देवता लंका की यह दुर्दशा देखकर हर्षमग्न हैं। इन्द्र आदि देवताओं पर युद्ध में तुमने विजय प्राप्त की थी, तुम्हारे भय से कोई भी स्थिर नहीं था। विभीषण की क्या कहूँ, वही तो यज्ञस्थान पर शत्रु को ले आया। तभी तो रघुवीर ने उसका वध किया। विभिन्न रूप-गुण-सम्पन्ना यक्ष और विद्याधरों की कन्याओं के साथ

नाना-गुणे-रूपे धन्या, जक्ष-विद्याधर-कन्या, बिवाह दिलाम तोमा सह।
तारा ना पाइल सुख, भुञ्जिबे कतेक दुख, कत सबे पतिर बिरह ॥
अजोनि-सम्भवा कन्या, रामेर सुन्दरी धन्या, हरिया आनिल तोर बापे।
सती पतिव्रता राणी, व्यर्थ नहे ताँर बाणी, ए लंका मजिल ताँर शापे ॥
पुत्र जबे यज्ञ करे, देवगण काँपे डरे, कोन लोक ना जाय सेखाने।
हेन पुत्र मरे जार, सकलि असार तार, हाय पुत्र कि मोर जीबने ॥
श्रीरामेर रूप धरि, संसारे आइला हरि, करिते राक्षसकुल-नाश।
नर नय सीतापति, हेन लय मोर मति, पाँचालि रचिल कृत्तिवास ३६२

रावणेर सीतावधे उद्यम ओ मन्दोदरी कर्त्तृक सान्त्वना

पुत्रशोके मन्दोदरी करिछे रोदन ※ मन्दोदरी-क्रन्दनेते रुषिल रावण
सीता लागि मजिल कनक-लंकापुरी ※ आजि सीता काटिया घुचाब सब बैरी
मायासीता केटेछिल पुत्र इन्द्रजित् ※ काटिया साक्षात् सीता घुचाइब भीत
रावण लइल करे खड्ग एकधारा ※ कुड़ि चक्षु हैल जेन आकाशेर तारा

तुम्हारा विवाह कराया। उनको कोई सुख प्राप्त न हो सका और वे अब पति के विरह में दुख भोगेंगी। अयोनिसंभवा (सीता) कन्या जो कि राम की सुन्दरी भार्या है उसको तेरा बाप हर लाया। वह सती और पतिव्रता रानी है, उसके वाक्य झूठे नहीं हो सकते। यह लंका उसी के अभिशाप से ध्वंस हो रही है। मेरा पुत्र जब यज्ञ करता था तब सारे देवता भय से काँपते रहते थे, कोई भी व्यक्ति उसके निकट नहीं फटकता था। ऐसा पुत्र जिसका मर जाय उसका जीवन सार-शून्य हो जाता है। हाय पुत्र, अब मेरे जीवन में भला क्या रह गया। श्रीराम का रूप धारण कर संसार में भगवान् राक्षस-कुल का विनाश करने आए हैं। यह सीतापति केवल मनुष्य ही नहीं हैं यही मेरा मन कहता है। कृत्तिवास ने गीत की रचना की ॥ ३६२ ॥

सीतावध के लिए रावण का तुल जाना और मन्दोदरी द्वारा सान्त्वना

पुत्रशोक से मन्दोदरी रो रही है। मन्दोदरी को रोते देखकर रावण क्रोध में भर गया। सीता के कारण ही स्वर्ण-लंका चौपट हुई, आज सीता को काटकर सारी शत्रुता का अन्त करूँगा। पुत्र इन्द्रजीत ने मायासीता को काटा था, मैं सदेह सीता को काटकर सारे भय का निवारण करूँगा। रावण ने एक तरफ धार वाला खड्ग अपने हाथों में उठा लिया। उसकी बीसों आँखें मानों गगन के तारे बन गईं। उसके अंग-अंग से दोपहर के सूर्य के समान ज्योति निकलने लगी। रावण कालान्तक यम के समान क्रोधित हो उठा और पवन-गति से सीता को काटने के लिए दौड़ पड़ा।

दुइ प्रहरेर रवि अंगेर किरण * कालान्तक यम जेन रुषिल रावण
सीतारे काटिते जाय पवनेर वेगे * रावणेर पात्र-मित्र पिछे गिया लागे
खड्गहाते धाय राजा अशोकेर वने * कार साध्य प्रबोधिया फिराय रावणे
प्रवेश करिल गिया अशोकेर वन * रावणे देखिया सीता करेन क्रन्दन६३
मनेते विचार करे राणी मन्दोदरी * सर्व्वनाश ह'येछे, म'जेछे लंकापुरी
ताहाते रावण केन स्त्रीवध करिवे * रमणी-वधेर पापे परकाल जावे
एत भावि मन्दोदरी संवरे क्रन्दन * धूलाय धूसर अंग, लोहित लोचन
पागलिनी-प्राय राणी छुटे ऊर्द्ध्वमुखे * उपनीत दशानन सीतार सम्मुखे
एके त रावण, ताहे क्रोधे कम्पमान * घुरितेछे रक्तवर्ण विंशति नयान६४
आतंके अस्थिरा सीता देखिया रावणे * काटिबे रावण आजि, भाविलेन मने
पुत्रशोके आसितेछे, करिबे छेदन * कोथा प्रभु रघुनाथ देवर लक्ष्मण
आभागीरे देखा दाओ अशोकेर वने * रामेर महिषी आमि, काटिबे रावणे
उच्चैःस्वरे सीता देवी करेन क्रन्दन * सीतारे काटिते खड्ग तुलिल रावण
पिछे थाकि सापटिया धरे मन्दोदरी *छि छि महाराज, वध क'रो ना हे नारी६५

उसके पीछे-पीछे उसके पारिषद भी दौड़ पड़े। हाथ में खड्ग लिये रावण जब अशोक-वन की ओर दौड़ा, तो कोई भी रावण को समझा-बुझा न सका। जब रावण अशोक-वन में पहुँचा तो सीता उसको देखकर क्रन्दन करने लगी ॥ ३६३ ॥

रानी मन्दोदरी ने मन ही मन विचार किया कि सर्वनाश तो हो ही गया है, लंकापुरी तो चौपट हो ही चुकी है, अब रावण नारी-वध क्यों करे। नारी-वध के कारण उसका परलोक भी बिगड़ेगा। इतना सोचकर मन्दोदरी ने रोना बन्द किया। धूल से धूसरित अंग और लाल-लाल आँखें लिए मन्दोदरी पागल जैसी दौड़ कर वहाँ जा पहुँची जहाँ दशानन सीता के सम्मुख खड़ा था। एक तो रावण क्रोध से काँप रहा था फिर उसके लाल-लाल बीस नयन घूम रहे थे ॥ ३६४ ॥

रावण को देखकर सीता आतंक से चंचल हो उठी। उसने मन ही मन सोचा, आज तो रावण मुझे काट ही डालेगा। यह पुत्रशोक में आ रहा है अतः अवश्य ही काट डालेगा। हे प्रभु रघुनाथ और देवर लक्ष्मण, तुमलोग कहाँ हो? इस अभागिन को अशोक-कानन में दर्शन दो। मैं राम की महिषी हूँ और मुझको रावण काट डाले (यह आश्चर्यजनक है), ऐसा कहकर सीता देवी ऊच्चस्तर में क्रन्दन करने लगीं। जब रावण ने सीता को काटने के लिए दोनों हाथों खड्ग को उठाया तो पीछे से मन्दोदरी ने उसको बाँहों से जकड़ लिया। छी छी महाराज, नारी का वध मत करो ॥ ३६५ ॥

रावण बले, मायासीता काटे इन्द्रजिते ※ मरे पुत्र इन्द्रजित् सीतार जन्येते
सीता आनि सर्ब्बनाश हैल लंकापुरे ※ घुचाब सकल शोक काटिया सीतारे
मन्दोदरी कहितेछे करि जोड़हात ※ परम पण्डित तुमि राक्षसेर नाथ
विश्वश्रवा पिता तब संसारे पूजित ※ तोमार ए नारीवध ना हय उचित
एके देख म'जेछे कनक-लंकापुरी ※ पापेते म'ज ना ताहे बध करे नारी६६
करे धरि मन्दोदरी फिराय रावणे ※ भये सीता चाहिलेन रावणेर पाने
रावण देखिल, सीता फिराइल आँखि ※ दशानन भाबे, सीता दिलेक कटाक्षि
भरसा पाइया गेल लंकार भितरे ※ सिंहासन त्यजि बैसे भूमिर उपरे
अभिमान-भरे भावे लंका-अधिकारी ※ घरे-घरे कान्दे जत वीरभाग-नारी३६७

रावणेर द्वितीय-बार युद्धे गमन

शोकेर उपरे शोक पाइल रावण ※ बसिले सोयास्ति नाइ, करये शयन
इन्द्रजित्-शोक तबु नहे पासरण ※ आपनि साजिल राजा करिवारे रण
स्त्रीलोकेर क्रन्दन शुनिया घरे-घर ※ अभिमाने परिपूर्ण राजा लंकेश्वर

रावण ने कहा इन्द्रजीत ने मायासीता को काटा था और इस सीता के लिए ही मेरा पुत्र इन्द्रजीत मरा। सीता लाकर ही लंका का सर्वनाश हो गया। सीता को काटकर ही सारा शोक दूर करूँगा। तब हाथ जोड़कर मन्दोदरी कहने लगी, हे राक्षसों के नाथ, तुम परमपंडित हो। तुम्हारे पिता विश्वश्रवा विश्व भर में पूजित हैं। तुम्हारे द्वारा यह नारीवध उचित नहीं। एक तो स्वर्ण-लंका चौपट हो ही गयी है फिर नारी का वध कर और पाप में मत डूबो ॥ ३६६ ॥

मन्दोदरी ने हाथों से पकड़कर रावण को लौटाया। भय से सीता ने रावण की ओर देखा। रावण ने देखा कि सीता ने उसकी ओर आँखें उठाईं। दशानन ने सोचा कि सीता ने कटाक्ष किया। दिलासा पाकर वह लंका में गया। वहाँ सिंहासन छोड़कर वह जमीन पर बैठ गया। रूठ कर लंका-नरेश ने सोचा कि घर-घर में वीरभोग्या नारियाँ रो रही हैं ॥ ३६७ ॥

रावण का दूसरी बार युद्ध में जाना

रावण को शोक पर शोक मिलने लगा। जब उसे बैठने से शान्ति नहीं मिली तो वह लेट गया। फिर भी इन्द्रजीत का शोक भुलाये न भूला। युद्ध करने के लिए राजा ने अपने को सुसज्जित किया। घर-घर में नारियों का क्रन्दन सुनकर राजा क्षोभ से भर गया। वह अमूल्य-रत्नों से पूर्ण विचित्र सज्जा पहनने लगा। उसने सारे अंगों पर राजकीय आभूषण पहन लिये।

अमूल्य-रतने करे विचित्र साजन ❋ सर्व्वांग भरिया परे राज-आभरण
मेघेर वरण अंगे धवल उत्तरी ❋ परिलेक मृगमद सुगन्धि कस्तूरी
दशभाले दश मणि करे झलमल ❋ कुड़ि-कर्ण चन्द्रसम कुड़िटा कुण्डल
नाना-अस्त्रे साजिलेक मनोहर बेशे ❋ चौद्द-हाजार नारी आसि घेरे आशे-पाशे
इन्द्रजित्-शोके राजा ह'येछे कातर ❋ चक्षेर कोणेते नाहि चाहे लंकेश्वर ३६८
धनुर्ब्बाण ल'ये रावण जाय महाक्रोधे ❋ राणी मन्दोदरी आसि पश्चाते विरोधे
आपनार दोषे राजा, कैले वंशनाश ❋ रामेर सीता रामे देह, थाक गृहवास
मन्दोदरी-पाने राजा फिरिया ना चाय ❋ मृत्युकाले रोगी जेन औषध ना खाय
निकट-मरण जार, कि करे औषधे ❋ ना रहे रावण मन्दोदरीर प्रबोधे
स्वामि-प्रदक्षिण करि पड़िल मंगल ❋ मन्दोदरी-चक्षे जल करे छलछल
अन्तरे बुझिया राणी कान्दिल प्रचुर ❋ दश-हाजार सतिनीते निल अन्त:पुर ३६९
बृहन्देर बहिर्गत हइल राजन् ❋ रथ ल'ये सारथि जोगाय ततक्षण
कनक-रचित रथ सुवर्णेर चाका ❋ रथेर उपरे शोभे नेतेर पताका
बिचित्र-निर्म्माण रथ अष्टघोड़ा बहे ❋ रथेर उपरे उठि दशानन कहे

मेघवर्ण शरीर पर सफेद रंग का उत्तरीय पहन लिया, मृगमद (कस्तूरी-सुगन्धि) का प्रयोग किया। दस मस्तकों पर दस मणियाँ झलमलाने लगीं, बीस कानों में चन्द्र के समान बीस कुंडल शोभा देने लगे। मनोहर वेश-भूषा धारण कर वह विभिन्न अस्त्रों से सज्जित हुआ। चौदह हजार नारियाँ आकर अगल-वगल खड़ी हो गईं। इन्द्रजीत के शोक से राजा अत्यन्त दुखी था, उसने आँखों की कोर से भी ताक कर उनकी ओर नहीं देखा ॥ ३६८ ॥

जब रावण महाक्रोध में धनुष-बाण लेकर चल पड़ा तो रानी मन्दोदरी ने आकर पीछे से विरोध किया। हे राजा, तुमने अपने दोष से ही अपने वंश का नाश किया। राम की सीता राम ही को दे दो और अपने घर ही में रहो। जिस प्रकार मृत्यु के समय रोगी दवा का सेवन नहीं करता उसी प्रकार मन्दोदरी की तरफ राजा ने पलट कर भी नहीं देखा। जिसकी मृत्यु निकट है उसको दवा क्या लाभ पहुँचा सकती है। रावण मन्दोदरी के परामर्श पर ठहरा नहीं। पति की प्रदक्षिणा कर उसने मंगल-वचन पढ़े। मन्दोदरी की आँखों में आँसू छलकने लगे। मन ही मन समझ कर रानी बहुत रोई, फिर दश हजार सौतों को साथ लेकर अन्त:पुर चली गई ॥ ३६९ ॥

राजा रावण चहारदिवारी से वाहर निकला। तब तक सारथी रथ लेकर आ पहुँचा। कनकरचित रथ में स्वर्ण के बने पहिए थे और रथ पर रेशमी झंडियाँ लगीं थीं। ऐसे रथ पर सवार होकर दशानन ने कहा, जो-जो वीर धनुष पकड़ना जानते हों वे छोटे-वड़े सभी वीर सुसज्जित हो मेरे साथ आ जायें। वीर-चूड़ामणि इन्द्रजीत युद्ध में काम आ गये अब किसको भेजूँ,

धनुक धरिते करे जे जे बीर जाने ❋ छोट-बड़ साजिया आसुक मोर सने
इन्द्रजित् पड़े रणे वीर-चूड़ामणि ❋ आर कारे पाठाइब, जाइब आपनि
पद्मकोटि ठाट छिल लंकार भितर ❋ साजिल रावण-संगे करिते समर
पश्चिम-दुयारे आछे श्रीराम-लक्ष्मण ❋ जुझिवारे सेइ द्वारे गेल से रावण
दाण्डाइल रावण धनुके दिया चाड़ा ❋ वायुबेगे सारथि चालाये दिल घोड़ा७०
सिंहासन छाड़ि रणे प्रबेशे रावण ❋ भंग दिया पलाय जतेक कपिगण
गन्धमादन सेनापति हैल आगुयान ❋ विमुख करिल तारे मारि पञ्चबाण
नीलबीरे दशानन देखिया सम्मुखे ❋ त्रिशबाण बिन्धिलेक नीलबीर-बुके
त्रिशबाणे पड़िल कुमुद महाबीर ❋ नयबाणे बिन्धे जाम्बवानेर शरीर
गज ओ गवाक्ष बिन्धे दश-दश बाणे ❋ दुइशत बाणे बिन्धे वीर हनूमाने
आशीगोटा बाण खेये अंगद पड़िल ❋ पञ्चदश बाणे बीर सुषेणे बिन्धिल
बानर-कटक पड़े, नाहि लेखाजोखा ❋ पड़िल बानर जत, नाहि तार संख्या७१
सारथिरे आज्ञा दिल राजा दशानन ❋ पशुर सहित युद्धे नाहि प्रयोजन
रथ लह राम आर लक्ष्मणेर काछे ❋ से-उभये मारिया बानरे मारि पिछे
रावणेर आज्ञा पेये सारथि सत्वर ❋ चालाइया दिल रथ श्रीराम-गोचर

स्वयं चलता हूँ। लंका के भीतर पद्मकोटि सेना थी, रावण के सहित युद्ध में जाने के लिए वह सभी सेना तैयार हो गयी। पश्चिम द्वार पर श्रीराम और लक्ष्मण थे, लड़ने के लिए रावण उसी द्वार पर गया। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर रावण खड़ा हो गया और सारथी ने वायु की गति से घोड़ा भगा दिया ॥ ३७० ॥

जब सिंहासन छोड़ कर रावण ने रण में प्रवेश किया तो डर से सारे वानर मैदान छोड़कर भागने लगे। सेनापति गन्धमादन आगे बढ़े तो उनको पंचवाण मारकर भगा दिया। रावण ने सामने नीलवीर को देखा तो तीस बाण नीलबीर के सीने पर मारे। तीस बाणों से महावीर कुमुद गिरा। नौ बाणों से जाम्बवान का शरीर उसने छेद दिया। दस-दस बाणों से गय और गवाक्ष को उसने बींध डाला। दो सौ बाणों से उसने हनुमान को घायल किया। अस्सी बाण खाकर अंगद गिरा। वीर सुषेण को पन्द्रह बाणों से उसने बींधा। वानर सेना में कितने खेत रहे इसका कोई हिसाब-किताब नहीं। कितने वानर गिरे इसकी कोई संख्या नहीं ॥ ३७१ ॥

राजा दशानन ने सारथी को आज्ञा दी कि पशुओं के साथ लड़ने की अब कोई आवश्यकता नहीं, रथ को राम और लक्ष्मण के निकट ले चलो। उन दोनों को मार कर फिर पीछे वानरों को मारूँगा। रावण की आज्ञा पाकर सारथी ने झटपट श्रीराम के निकट रथ चला दिया। बिजली की तड़प जैसे रथ लपकता हुआ बढ़ा, चारों ओर लाख लाख सोने की घंटियाँ बजने लगीं।

रथखान आसे, जेन विद्युत् चमके ❋ लक्ष-लक्ष स्वर्ण-घण्टा बाजे चारदिके
रथचक्र-शब्दे कपि भागे लाखे-लाखे ❋ पार्व्वतीय पाखी जेन उड़े झाँके-झाँके७२
हाते धनु करि गेल श्रीराम-सम्मुखे ❋ वैकुण्ठेर नाथ रामे दशानन देखे
दक्षिणे अक्षय तूण, बामेते कोदण्ड ❋ बिष्णु-अवतार राम सुबाहु प्रचण्ड
सुन्दर नासिका किवा चौरस कपाल ❋ फल-मूल खान, तबु बिक्रमे विशाल
सुन्दर धनुक-बाण विचित्र-गठन ❋ रावण रामेर देहे देखे त्रिभुवन
श्रीरामेर सर्ब्ब-अंग निरखिया देखे ❋ पर्व्वत समुद्र सर्प देखे लाखे-लाखे
मने-मने चिन्ता करे राजा दशानन ❋ प्रकाण्ड जानिनु, राम देव-नारायण
जद्यपि रामेर हाते हय त मरण ❋ एकान्त बैकुण्ठे जाव, नाहय खण्डन
बिरस हइया केन हइव बिमुख ❋ रामेर सम्मुखे गेल पातिया धनुक३७३

रावणेर द्वितीय-बार युद्ध

दैवेर लिखन कभु ना हय खण्डन ❋ श्रीराम-रावणे दोंहे बाजे महारण
शतबाण जोड़े बीर धनुकेर गुणे ❋ काटिला विंशति-बाणे राजीव-लोचने
बाछिया रावण बरिषये चोखा-शर ❋ बिन्धिया कोमल-अंग करिल जर्ज्जर३७४

रथ के पहियों की आवाज से ही लाख-लाख कपि भागने लगे। ऐसा प्रतीत होता था मानों पहाड़ पर रहने वाले पक्षी कतारों में उड़ रहे हों ॥ ३७२ ॥

तब हाथ में धनुष लेकर श्रीराम उसके सामने आ गये। वैकुंठ के नाथ राम को दशानन देखने लगा। राम के दक्षिण में अक्षय तरकस और बाईं तरफ कोदंड है। विष्णु के अवतार राम सुन्दर बाहु वाले तथा अत्यन्त प्रचंड हैं। सुन्दर नाक और चौरस माथा है। फल-मूल खाते हैं लेकिन पराक्रम में विशाल हैं। विचित्र बनावट के धनुष-बाण अति सुन्दर हैं। रावण राम के शरीर में तीनों लोकों का दर्शन करने लगा। श्रीराम के सारे शरीर को वह निरख-निरख कर देखने लगा। उसने वहाँ पर्वत देखा, समुद्र देखा, लाख-लाख साँप देखे। राजा दशानन ने मन ही मन सोचा कि अब मैं निश्चित रूप से जान गया कि राम श्रीनारायण हैं। यदि राम के हाथ मृत्यु भी हुई तो मैं सीधे बैकुंठ जाऊँगा, इसके विपरीत नहीं। मन को छोटा कर क्यों उनसे दूर भाग जाऊ। ऐसा सोचकर धनुष लेकर वह राम के सम्मुख जा खड़ा हो गया ॥ ३७३ ॥

रावण का दूसरी बार का युद्ध

दैव का लिखा हुआ कभी मिटता नहीं। श्रीराम और रावण दोनों में महायुद्ध छिड़ गया। बीर ने धनुष पर सौ बाण लगाये, राजीवलोचन राम ने बीस बाणों से उसे काट गिराया। चुन-चुन कर रावण पैने-पैने बाण चलाने लगा और उनके कोमल अंग को छेद कर जर्जर कर डाला ॥ ३७४ ॥

बाणाघाते रघुनाथ हैला अचेतन ※ रामे पाछु करि आगे दाँड़ाल लक्ष्मण
रावण-उपरे बीर शीघ्र एड़े बाण ※ दिव्यबाण मारिलेन पूरिया सन्धान
लक्ष्मण जे बाण मारे बले महाबल ※ सारथिर मुण्ड काटि पाड़े भूमितल७५
लक्ष्मणेर बाणेते से रथ हैल मुड़ा ※ गदाघाते बिभीषण मारे अष्टघोड़ा
कोपे दशानन बिभीषण-पाने चाय ※ तुलिया निलेक शेल, देखे भय पाय
बंशनाश करिलि पापिष्ठ बिभीषण ※ मारिया पाड़िब आजि, राखे कोन जन
रथ ना संवरे, राजा गर्ज्जिया कोपेते ※ बिभीषणे मारिवारे शेल लय हाते
शेलपाट एड़िलेक दिया हुहुँकार ※ स्वर्ग-मर्त्त्य-पाताले लागिल चमत्कार
शेलपाट देखि चमकित बिभीषण ※ डाकि बले, प्राण राख ठाकुर लक्ष्मण
से शेलेर उद्देशे लक्ष्मण एड़े बाण ※ तिनबाणे शेल काटि कैल चारिखान
शेल काटा गेल, कपि दिल टिट्कारी ※ कुपिल रावण-राजा लंका-अधिकारी
कुड़िचक्षु घोरे तार, देखि भयंकर ※ आर शेल हाते निल यमेर दोसर
बज्रसम शेलपाट देखि लागे भय ※ जारे मारे शेल, तार जीवन-संशय

जब बाणों के आघात से रघुनाथ अचेतन हो गये तो उनको पीछे कर लक्ष्मण सामने आकर खड़े हो गये। रावण पर वह वीर लक्ष्मण तेज बाण चलाने लगे। निशाना साधकर उन्होंने दिव्य बाण फेंके। महाबल नामक जो बाण लक्ष्मण ने फेंका उससे सारथी का मुंड कटकर धरती पर जा गिरा ॥ ३७५ ॥

जब लक्ष्मण के बाणों से रथ सारथी-शून्य हो गया तो विभीषण ने गदा के प्रहार से उसके आठों घोड़े मार डाले। क्रुद्ध होकर दशानन ने बिभीषण की ओर देखा। उसने शेल उठा लिया जिसको देखते ही डर लगने लगता है। वह बोला, अरे पापी विभीषण, तूने वंशनाश किया, आज तुझको मैं मार गिराऊँगा, देखूँ कि कौन तुझको बचाता है। रथ संभले न संभले, राजा क्रोध से गरजते हुए, विभीषण को मारने के लिए, हाथों में शेल उठा लेता है। हुंकार करते हुए उसने शेल फेंका, यह देखकर स्वर्ग-मर्त्य-पातालवासी आश्चर्य करने लगे। शेल देखकर विभीषण चौंक पड़ा। उसने पुकार कर कहा, हे देव लक्ष्मण, मेरे प्राण बचाओ। उस शेल का निशाना साध लक्ष्मण ने बाण फेंके। तीन बाणों से शेल को काटकर चार टुकड़े कर दिये। शेल कट गया तो वानरों ने हर्षध्वनि की, जिसे सुनकर लंका का अधिकारी राजा रावण बहुत क्रोधित हुआ। उसकी बीसों आँखें लाल हो गईं, जो कि देखने में बहुत भयंकर लगती थीं। उसने एक दूसरा शेल हाथ में लिया जो यम के सदृश भयानक था। उस वज्र जैसे शेल को देखकर डर लगता था; जिसको उस शेल से मारा जायगा उसी का प्राण संशय में होगा। राम को मारने की इच्छा से वह उस शेल को लाया था, क्रुद्ध होकर उसने उसे विभीषण पर

एनेछिल शेल रामे मारिवार मने ※ कोपकरि सेइ शेल हाने विभीषणे
विभीषण फाँफर हइल शेल देखि ※ सेइ शेल काटिलेन लक्ष्मण धानुकि ३७६

लक्ष्मणेर शक्ति-शेल

कोपेते रावण चाहे लक्ष्मणेर पाने ※ मय-दानवेर शेल प'ड़े गेल मने
रावण कहिछे चक्षु करिया पाकल ※ देखिब, मानुष बेटा, धर कत बल
बिभीषणे बाँचाइलि करि बीरपना ※ मारि शेल, राख देखि बाँचाये आपना
तोर बाणे बिभीषण पेले प्रतिकार ※ मारि शेल तोरे, देखि के राखे एबार
एखनि मरिबि भण्ड लक्ष्मण तपस्वी ※ मृत्युकाले मने कर जानकी रूपसी
मा-बापेरे मने कर, बन्धु यतजन ※ मैले संगे आर नाहि हबे दरशन
राम-सुग्रीवेर ठाँइ मागह मेलानि ※ दियाछे अनेक युक्ति करि कानाकानि
गर्ज्जिया रावण-राजा शेलपाट झाँके ※ प्राण उड़े देवतार शक्ति शेल देखे
यक्ष-रक्ष काँपे आर गन्धर्ब्ब-किन्नर ※ काँपे अष्ट-लोकपाल देव-पुरन्दर
शमनेर भग्नी शेल शक्ति-नाम धरे ※ जारे मारे शक्तिशेल, सेइजन मरे
एकजने मारिले ना मरे अन्यजन ※ जारे शेल मारे, तार अवश्य मरण ३७७

दे मारा। शेल देखकर विभीषण के प्राण उड़ गये। धनुर्धारी लक्ष्मण ने उस शेल को काट डाला ॥ ३७६ ॥

लक्ष्मण का शक्तिशेल

कुपित होकर रावण ने लक्ष्मण की ओर देखा। उसको मयदानव का शेल याद आ गया। रावण ने आँखें लाल-लाल करते हुए कहा, अरे मनुष्य के पुत्र, मैं देखता हूँ कि तुम कितनी शक्ति रखते हो। बहादुरी दिखा कर तूने विभीषण को बचा दिया, अब मैं शेल मारता हूँ। तू अपने को बचा। तेरे बाण से विभीषण तो बच गया, तुझ पर शेल फेंकता हूँ, देखूँ तुझे कौन बचाता है। ऐ ढोंगी तपस्वी लक्ष्मण, अभी तू मरेगा। मरते वक्त रूपवती जानकी का स्मरण कर ले। अपने माँ-बाप को याद कर ले, जितने इष्ट-मित्र हैं सबको याद कर ले, क्योंकि मृत्यु के बाद किसी का दर्शन नहीं होगा। राम और सुग्रीव से विदा ले ले, कानाफूसी करके काफी परामर्श देते रहे हैं ये। ऐसा कहकर जब गरज कर राजा रावण शेल को घुमाने लगा तो उस शक्ति-शेल को देखकर देवताओं के प्राण उड़ गये। यक्ष, रक्ष, किन्नर, गन्धर्व, सभी काँप उठे। इन्द्र आदि आठों लोकपाल काँप उठे। यमराज की बहिन के सदृश शक्ति नामक यह शेल जिस पर फेंका जाता है वह अवश्य मरता है। एक को मारने पर दूसरा नहीं मरता। जिस पर शेल मारा जाता है उसकी मृत्यु अवश्यमेव हो जाती है ॥ ३७७ ॥

सूर्य्येर किरण जेन शेलपाट जाय ※ भाविया त रघुनाथ ना पान उपाय
चिन्ता करे रघुनाथ भायेर कुशल ※ शेलेरे करेन स्तुति, च'क्षे पड़े जल
देवमूर्त्ति शेल तुमि, देव-अधिष्ठान ※ एबार लक्ष्मणे तुमि देह प्राणदान
फिरे जाओ शेलपाट रावणेर हाते ※ भ्रातृदान मागि आमि तोमार साक्षाते
आपनि शमन मूर्त्तिमान् शेलमुखे ※ लक्ष्मणे छाड़िया शेल, पड़ मोर बुके
मृत्यु निजे अधिष्ठित शेलेर उपर ※ डाकिया श्रीरामे तबे करिछे उत्तर
आमारे करिछ केन एतेक स्तवन ※ लक्ष्मणे छाड़िया नाहि मारि अन्यजन
थाकि आमि जार काछे, तार आज्ञाकारी ※ जार काछे थाकि आमि, तार हित करि
श्रीरामे कातर देखि शेल नाहि थाके ※ महाबेगे पड़े शेल लक्ष्मणेर बुके
पड़िल लक्ष्मण-बीर रघुवंश-चूड़ा ※ प्रवेशे सकल शेल, बाहिरेते गोड़ा
भूमिते पतित बीर, ना नाड़ेन पाश ※ शेल बिन्धि लक्ष्मणेर घन बहे श्वास ७८
लक्ष्मणे एड़िया सब पलाय बानर ※ देखिया त रघुनाथ हइला फाँफर
लक्ष्मणे राखिबे, ना कि राखिबे आपना ※ तिनठाँइ श्रीरामेर पड़िल भावना
बाहिर करिते शेल टानये बानरे ※ आपनि सुग्रीव टाने, शेल नाहि नड़े
सुग्रीव टानिछे शेल, कपिगण चाहे ※ एत टान देय, शेल नड़िवार नहे
शरभ-कुमुद-नल-नील-आदि बीर ※ शेल धरि टाने, तबु नाहय बाहिर

जब सूर्य की किरणों के समान शेल लपका तो रघुनाथ को कोई भी उपाय न सूझ पड़ा। वे भाई की कुशलता की चिन्ता करने लगे। रघुनाथ शेल की स्तुति करने लगे और आँखों से आँसू बहाने लगे। हे शेल, तुम देव-मूर्त्ति हो, देव-अधिष्ठान हो, इस बार तुम लक्ष्मण को प्राणदान दो, रावण के हाथों में लौट जाओ। मैं तुमसे अपने भाई की भिक्षा माँगता हूँ। हे शेल, तुम स्वयं यमराज हो, लक्ष्मण को त्याग कर मेरे वक्ष पर आ गिरो। शेल पर स्वयं मृत्यु अधिष्ठित थी। उसने श्रीराम को बुलाकर कर कहा, तुम मेरा स्तव इतना क्यों कर रहे हो, लक्ष्मण को छोड़कर मैं किसी अन्य को नहीं मारूँगा। मैं जिसके पास रहता हूँ उसी का आज्ञाकारी हूँ। जिसके पास मैं रहता हूँ उसी का हित करता हूँ। श्रीराम को दुखी देखकर भी शेल रुका नहीं, जाकर लक्ष्मण के वक्ष पर गिरा। रघुवंश के शिखरवीर लक्ष्मण गिरे। सारा शेल अन्दर प्रवेश कर गया, केवल उसकी मूँठ बाहर रह गई। धरती पर पड़ा वीर करवट भी न ले सका। शेल से विंधा लक्ष्मण जोर-जोर से साँस लेने लगा॥ ७८॥

लक्ष्मण से क[illegible]रा कर सब वानर भागने लगे। यह देखकर रघुनाथ असमंजस में पड़ ग[illegible] कि लक्ष्मण की रक्षा करें या अपनी। श्रीराम की चिन्ता तीनों दिशाओं में [illegible]ी। शेल निकालने के लिए वानर खींचातानी करने लगे। स्वयं सुग्री[illegible]ी खींचने लगा लेकिन शेल टस से मस नहीं हुआ।

बानरेर मध्ये हनूमानेरे वाखानि ❋ से हनू धरिया शेल करे टानाटानि
साहस करिया केह नाहि मारे टान ❋ पाछे टाने लक्ष्मणेर बाहिराय प्राण
टानिते बानरगण ना करे साहस ❋ जार टाने मरिबेन, तार अपजश
दिलेन धनुक-बाण सुग्रीवेर हाते ❋ शेल धरि टानिलेन प्रभु रघुनाथे
बिश्वम्भर-मूर्त्ति धरि शेले दिला टान ❋ उपाड़िया शेल-पाट कैला खान-खान७९
लक्ष्मणे बेड़िया रहे जत कपिगण ❋ कोपेते रावण करे बाण-वरिषण
भंग दिया पलाय जतेक कपिवीर ❋ प्रबोध-वचने राम करिलेन स्थिर
लक्ष्मणे जिनिलि बलि ना भाविस मने ❋ मारिया पाड़िव बेटा, आजिकार रणे
जार लागि बन्धिलाम अलंघ्य सागरे ❋ जार लागि एत दुःख पेयेछि अन्तरे
जार लागि दुःखे दग्ध-हृदय तोमरा ❋ मारिया पाड़िव आजि परनारी-चोरा
पाइलाम जत दुःख सीतार हरणे ❋ मारिया घुचाव दुःख आजिकार रणे
पर्ब्बत-उपरे बसि देख सबे सुखे ❋ मारिव रावणे आजि, कार बापे राखे
रघुनाथ-वाक्ये करि साहसेते भर ❋ लक्ष्मणेरे रक्षा कर जतेक वानर८०

सुग्रीव शेल खींच रहा है और वानर देख रहे हैं—इतनी खींचातानी पर भी शेल हिलता भर नहीं। शरभ, कुमुद, नल, नील आदि सभी वीर शेल पकड़कर खींचने लगे किन्तु वह नहीं निकला। वानरों में हनुमान की बड़ी प्रशंसा है, वही हनुमान शेल पकड़ कर खींचने लगा। कोई भी साहस कर झटके से शेल नहीं खींचता कि कहीं झटके से लक्ष्मण के प्राण न निकल जाँय। वानरों को खींचने की हिम्मत नहीं पड़ी। जिसके झटके से लक्ष्मण के प्राण चले जाएँगे उसी की बदनामी होगी। धनुष-बाण सुग्रीव के हाथों में देकर प्रभु रघुनाथ ने शेल पकड़ कर खींचा। विश्वम्भर-मूर्त्ति अपना कर उन्होंने शेल को खींचा और उसको निकालकर खंड-खंड कर डाला ॥ ३७९ ॥

जितने सारे वानर थे वे लक्ष्मण को घेर कर खड़े रहे। कुपित होकर रावण ने बाण बरसाना शुरू कर दिया। मैदान छोड़कर जितने कपि-वीर थे, सब भागने को हुए। रामचन्द्र ने ढाढ़स बँधाकर उनका हौसला बढ़ाया। वे रावण से बोले, लक्ष्मण को गिरा लिया इसलिए मन में कुछ मिथ्या धारणा मत बना। मैं आज के युद्ध में ही तुझको मार गिराऊँगा। फिर वानरों से बोले, हे वानरो! जिसके लिए अलंघनीय सागर को बाँधा, जिसके लिए इतना दुख सहते रहे, जिसके कारण क्लेश से तुम लोग भी पीड़ित हो, उस पर-नारी चोर को आज मार गिराऊँगा। सीता-हरण से जितनी पीड़ा मिली, आज के युद्ध में इसको मार कर सारी पीड़ा दूर करूँगा। पर्वत के ऊपर बैठकर तुमलोग आनन्द से देखते रहो, मैं आज रावण का वध करूँगा। किसका बाप इसे रोक सकता है। रघुनाथ के वचनों से साहस पाकर सारे वानर लक्ष्मण की रक्षा करने लगे ॥ ३८० ॥

भ्रातृशोके जुझे राम बिक्रमे अपार ※ श्रीराम-रावणे युद्ध बाजिल आबार
बाछिया बाछिया राम प्रहारेन बाण ※ राक्षस-कटक काटि कैला खान-खान
श्रीरामेर बाणे राजा करे धड़फड़ ※ सहिते ना पारि राजा उठि दिल रड़
सारथिरे आज्ञा दिल राजा दशानन ※ लंकाते चालाओ रथ त्वरित-गमन
लंकाते पलाये गेल राजा लंकेश्वर ※ पश्चाते बानर धाय ब'ले धर धर
रघुनाथ बाक्य कभु खण्डन ना जाय ※ सेइदिन मारितेन रावण-राजाय
लक्ष्मण पड़िया आछे शक्तिशेल-बाणे ※ रण छाड़ि आइलेन बाँचाते लक्ष्मणे ३८१

लक्ष्मणेर शक्तिशेले श्रीरामचन्द्रेर विलाप

रण जिनि रघुनाथ पेये अवसर ※ लक्ष्मणेरे कोले करि कान्देन विस्तर
कि कुक्षणे छाड़िलाम अयोध्यार-नगरी ※ मैल पिता दशरथ राज्य-अधिकारी
जनक-नन्दिनी सीता प्राणेर सुन्दरी ※ दिन-दुइ-प्रहरे रावण कैल चुरि
हारानु प्राणेर भाइ अनुज लक्ष्मण ※ कि करिबे राज्यभोगे, पुनः जाइ वन
लक्ष्मण सुमित्रा-मार प्राणेर नन्दन ※ कि बलिया निवारिब ताँहार क्रन्दन
एनेछि सुमित्रा-मार अञ्चलेर निधि ※ आसिया सागर-पारे काल हैल विधि

भाई के शोक के कारण राम अपार पराक्रम से लड़ने लगे। फिर राम-रावण में युद्ध छिड़ गया। राम चुन-चुन कर बाण बरसाने लगे और राक्षस सेना को काट कर खंड-खंड करने लगे। श्रीराम के बाणों से राजा विचलित हो उठा, सह न सकने से वह भाग खड़ा हुआ। राजा दशानन ने सारथी को आज्ञा दी—झटपट तेज रफ्तार से रथ को लंका की ओर भगाओ।

राजा लंकेश्वर लंका को भाग गया। पीछे से सारे वानर पकड़ो-पकड़ो कह कर दौड़ने लगे। रघुनाथ का वाक्य कभी झूठा नहीं जाता। उसी दिन वे राजा रावण को मार डालते। लक्ष्मण शक्तिशेल से घायल पड़े हैं, युद्ध छोड़कर वे लक्ष्मण को बचाने के लिए चले आये ॥ ३८१ ॥

लक्ष्मण के शक्तिशेल लगने से राम का विलाप

युद्ध में विजय प्राप्त करने के उपरान्त अवकाश पाकर रामचन्द्र लक्ष्मण को गोद में लेकर बहुत रोने लगे। हाय! कैसे बुरे क्षणों में मैंने अयोध्या-नगरी छोड़ी कि राज्य के अधिकारी पिता दशरथ मर गये। प्राणप्यारी सुन्दरी जनकनन्दिनी सीता को दिन-दुपहरिया में रावण चुरा कर ले गया। प्राणों से अधिक अनुज लक्ष्मण को खो दिया। राज्य भोग कर क्या होगा, फिर वन की ओर चल दें। लक्ष्मण माता सुमित्रा को प्राणों से भी प्यारा है, मैं उनके रुदन को क्या कहकर रोक सकूँगा। माँ सुमित्रा के अंचलों की

मोर दुःखे लक्ष्मण ये दुःखी निरन्तर ※ केन रे निष्ठुर हलि, ना देह उत्तर
सबाइ सुधावे वार्त्ता आमि गेले देशे ※ कहिव तोमार मृत्यु केमन साहसे
आमार लागिया भाइ, कर प्राणरक्षा ※ तोमा ल'ये विदेशे मागिया खाव भिक्षा
राज्यधने कार्य नाइ, नाहि चाइ सीते ※ सागरे त्यजिव प्राण, तोमार शोकेते
उदयास्त यतदूर पृथिवी-सञ्चार ※ तोमार मरणे ख्याति रहिल आमार
उठ रे लक्ष्मण भाइ, रक्ते डुवे पाश ※ केन वा आमार संगे एलि वनवास
सीतार लागिया तुमि हाराइले प्राण ※ तुमि जे लक्ष्मण, मम प्राणेर समान
सुवर्णेर बाणिज्ये माणिक्ये दिनु डालि ※ तोमा वधि रघुकुले राखिलाम कालि
केन वा रावण-संगे करिलाम रण ※ आमार प्राणेर निधि निल कोन जन
कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन-राजा सहस्रबाहु-धर ※ ताहा हैते लक्ष्मण जे गुणेर सागर
एमन लक्ष्मणे मोर मारिल राक्षसे ※ आर ना जाइव आमि अजोध्यार देशे
पितृ-आज्ञा हैल मोरे दिते छत्रदण्ड ※ कैकेयी सताइ ताहे हइल पाषण्ड
पितृसत्य पालिते आइनु वनवास ※ विधि वादी हैल, ताहे एइ सर्व्वनाश

निधि लेकर आया हूँ। सागर पार कर विधि मेरे विपरीत हो गया। मेरे दुख से लक्ष्मण सदा दुखी होता रहा, आज वह क्यों इतना निर्दय हो गया कि मुझको कुछ उत्तर नहीं दे रहा है। देश में लौटने पर सभी लोग मुझसे कुशल-क्षेम पूछने आएँगे, तब मैं किस मुँह से तुम्हारी मृत्यु का समाचार दे सकूँगा। हे भाई, मेरे कारण तुम जी उठो, मैं तुमको लेकर परदेस चला जाऊँगा और भीख माँगकर खाऊँगा। मुझको राज्य-धन की कोई आवश्यकता नहीं और न मुझको सीता ही चाहिए। मैं तुम्हारे शोक के सागर में डूब कर अपने प्राण दे दूँगा। उदयाचल से अस्ताचल तक, जहाँ तक पृथ्वी का विस्तार है वहाँ तक मेरा अपयश तुम्हारी मृत्यु के कारण फैलेगा। अरे भाई लक्ष्मण तुम उठो, खून से तुम्हारा शरीर भीगा जा रहा है, क्यों मेरे साथ तुम वनवास चले आए। सीता के कारण ही तुमने प्राण गँवाये। हे लक्ष्मण, तुम मेरे प्राणों के समान हो। सोने का व्यापार करने आकर मैंने लाल गँवा दिये, तुम्हारे वध से मैंने रघुवंश में कलंक की कालिख पोत दी। रावण के साथ युद्ध भी क्यों किया। मेरे प्राणों की निधि को किसने हर लिया। राजा कार्त्तवीर्यार्जुन जो कि सहस्रबाहु वाले हैं उनसे भी अधिक लक्ष्मण गुणों का सागर है। मेरे ऐसे लक्ष्मण को राक्षसों ने मार डाला। अब मैं अयोध्या लौट कर नहीं जाऊँगा। पिता की आज्ञा मिली कि मुझको राज-छत्र और राज-दंड अर्पित किया जाय, सौतेली माँ कैकेयी इसमें निर्दय बन गई। पिता का सत्य पालन करने मैं वनवास चला आया, भाग्य मेरे विपरीत हो गया, तभी ऐसा सर्वनाश हुआ। अन्तरिक्ष से सारे देवता पुकार-पुकार कर

अन्तरीक्षे डाकि बले जत देबगण ❋ ना कान्द, ना कान्द राम, पाइबे लक्ष्मण
भाइ भाइ बलि राम छाड़ेन निःश्वास ❋ श्रीरामेर क्रन्दन रचिल कृत्तिवास ३८२

लक्ष्मणेर जीवन-रक्षार्थ हनूमानेर गन्धमादन पर्व्वते औषध आनिते गमन

श्रीराम सुषेणे कन जोड़हात करि ❋ लक्ष्मणे बाँचाओ आगे शोक परिहरि
आमार लक्ष्मण-बिना आर नाहि गति ❋ जीयाओ लक्ष्मणे यदि, तबे अव्याहति
सुषेण बलेन, प्रभु, ना हओ कातर ❋ बाँचिबेन अवश्य लक्ष्मण धनुर्द्धर
हस्ते-पदे आछे रक्त, प्रसन्न बदन ❋ नासिकाय बहे श्वास, प्रफुल्ल लोचन
हेनजन नाहि मरे सबाकार ज्ञाने ❋ आनिवारे औषध पाठाओ हनूमाने
श्रीराम बलेन, शोके हिया मम शोषे ❋ आपनि पाठाह तारे औषध-उद्देशे ८३
सुषेण बलेन, शुन पवन-नन्दन ❋ औषध आनिते जाह से गन्धमादन
गिरि गन्धमादन से सर्व्वलोके जानि ❋ ताहाते औषध आछे बिशल्यकरणी
छय-शृंग धरे सेइ अद्भुत-निर्म्माण ❋ प्रथम संगेते तार महेशेर स्थान
आर शृंगे उदय करये शशधर ❋ आर शृंगे तिनकोटि गन्धर्ब्बेर घर
आर शृंगे बृक्ष आछे शाल ओ पियाल ❋ आर शृंगे सिंह-व्याघ्र चरे पाले-पाल

कहने लगे, हे राम, मत रोओ, मत रोओ, तुमको लक्ष्मण फिर से मिल जायगा। भाई-भाई गुहारते हुए राम उसाँस लेने लगे। कृत्तिवास ने श्रीरामचन्द्र के क्रन्दन का वर्णन किया ॥ ३८२ ॥

लक्ष्मण की प्राण-रक्षा-हेतु हनुमान का गन्धमादन पर्वत पर औषध लेने जाना

श्रीराम ने हाथ जोड़कर सुषेण से कहा, शोक त्याग कर पहले लक्ष्मण को बचाओ। लक्ष्मण के बिना मेरी कोई गति नहीं। यदि लक्ष्मण को बचा लिया तभी मेरा बचाव है। सुषेण ने कहा, प्रभु आप कातर न होवें, धनुर्धारी लक्ष्मण अवश्य बच जाएँगे। हाथ-पैरों में ही खून है और चेहरा भी ताजा है, नाकों से साँस चल रही है, आँखें भी मलिन नहीं हैं। सभी लोगों को विदित है कि ऐसा व्यक्ति मरता नहीं। हनुमान को औषध लाने भेज दो। श्रीराम ने कहा, शोक से मेरा हृदय बिल्कुल सूख गया है, स्वयं ही उसको औषध लाने के लिए भेज दो ॥ ३८३ ॥

सुषेण ने कहा, हे पवननन्दन सुनो। औषध लाने के लिए गन्धमादन पर्वत पर चले जाओ। गन्धमादन पर्वत को सभी लोग जानते हैं, उसमें विशल्यकरणी नामक औषध है। यह पर्वत अद्भुत ढंग से बना हुआ है, उसमें छह चोटियाँ हैं। उसकी पहली चोटी पर महेश का निवास है। दूसरी चोटी पर चन्द्रमा का उदय होता है। तीसरी चोटी पर तीनकोटि गन्धर्वों का निवास है। चौथी चोटी पर साखू और चीड़ के वृक्ष हैं। पाँचवीं चोटी पर सिंह और बाघ घूमते रहते हैं। छठी चोटी पर बहुत ही वेगवती एक

आर शृंगे आछे तार खरतरा नदी ❋ नदीर दु'कूले आछे विस्तर औषधि
नील वर्ण फल-फूल, पिंगवर्ण पाता ❋ रक्तवर्ण डाँटा तार, स्वर्णवर्ण लता
आनह औषध हेन विशल्यकरणी ❋ रात्रिमध्ये आनह जावत् आछे प्राणी
रात्रिते औषध आन, बाँचाब सहजे ❋ रजनी-प्रभाते प्राण जाबे सूर्यतेजे
बिलम्ब ना कर वीर, जाह एइक्षण ❋ तोमार प्रसादे जीबे ठाकुर लक्ष्मण
आछये गन्धर्ब्ब सब मायार निधान ❋ समयेते हनूमान, ह'यो सावधान
त्रिशकोटि गन्धर्ब्ब जे हाहा-हूहू आछे ❋ बाद-विसंबाद तार संगे कर पाछे८४
श्रीराम बलेन, पथ आठार-वत्सर ❋ केमने आसिबे फिरे रात्रिर भितर
एतदूर पथ जाबे, आसिबेक राति ❋ लक्ष्मणेर एबार ना देखि अव्याहति
केन वा सुषेण-बैद्य आमारे प्रबोधे ❋ लक्ष्मण मरिले आजि कि हबे औषधे८५
हासिया बलेन तबे पवन-नन्दन ❋ ए रात्रे औषध आनि जीयाब लक्ष्मण
मने किछु रघुनाथ, ना कर बिस्मय ❋ औषध आनिया दिब रात्रे महाशय
श्रीराम-सुग्रीव-काछे मागिया मेलानि ❋ औषध आनिते बीर करिल उठानि
उभलेज करिया सारिल दुइकान ❋ एकलम्फे आकाशे उठिल हनूमान्
महाशब्दे चलिल शून्येते करि भर ❋ लाँगूलेर टाने उड़े वृक्ष ओ पाथर

नदी है। इस नदी के दोनों तटों पर पर्याप्त परिमाण में यह औषधि है। नीले वर्ण के उसके फल-फूल होते हैं और पिंगल वर्ण की पत्तियाँ। लाल रंग का डंठल होता है और सोने के रंग की लता। ऐसी विशल्यकरणी औषध लक्ष्मण के प्राण रहते तुम लेकर आओ। रातों रात औषध ले आओ तो आसानी से जिला लूँगा। रात के बीतने पर सूर्य के तेज से प्राण चले जाएँगे। हे वीर, अब देर न करो, इसी क्षण चले जाओ। तुम्हारे प्रसाद से देव लक्ष्मण जी जायगा। वहाँ मायाधारी बहुत सारे गन्धर्व हैं, हे हनुमान समय देखकर सावधान रहना। तीस करोड़ गन्धर्वों में जो हाहा-हूहू हैं उनसे कहीं झगड़ा-फसाद न छेड़ देना ॥ ३८४ ॥

श्रीराम ने कहा, रास्ता तो अट्ठारह वर्ष का है, इतना रास्ता रात में जाकर रात ही में कैसे लौट आएगा। अब लक्ष्मण के बचने का कोई रास्ता नहीं। सुषेण वैद्य क्यों नाहक मुझको ढाढ़स देता है। लक्ष्मण आज मर गया तो दवा से क्या होगा ॥ ३८५ ॥

तब हँस कर पवननन्दन ने कहा, इसी रात को दवा लाकर मैं लक्ष्मण को जिलाऊँगा। हे रघुनाथ, तुम कुछ भी सोच और आश्चर्य मत करो, मैं रात भर में ही दवा लाकर दे दूँगा। श्रीराम और सुग्रीव से विदा माँग कर दवा लाने के लिए वह वीर उठ खड़ा हुआ। पूँछ को ऊपर उठाकर दोनों कानों को दबा कर हनुमान एक ही उछाल में आकाश पर तड़क गये। शून्य में महाशब्द करते हुए वह चले। उनकी पूँछ की चपेट से पेड़ और पत्थर

दश-जोजन हइल वीर आड़े परिसर ❋ बिसजोजन दीर्घेते हइल कलेवर
लेज कैल दीर्घाकार जोजन पञ्चाश ❋ उठिवा-मात्रेते लेज ठेकिल आकाश
महाशब्द करि जाय, शुनिते गभीर ❋ देखिया मनेते प्रीति पान रघुबीर३८६

हनुमान-कर्त्तृक गन्धकाली-अप्सरार उद्धार ओ कालनेमि-वध

दुर्ज्जय-शरीर वीर चले अन्तरीक्षे ❋ लंकार भितरे थाकि दशानन देखे
रावण विस्मित ह'ये भाविल मनेते ❋ घरपोड़ा बेटा कोथा जाय एतरेते
दशानन बुझिया करिल अनुमान ❋ औषध आनिते जाय वीर हनूमान
विशल्य-करणी आछे गन्धमादनेते ❋ कोनमते नाहि दिब लक्ष्मणे बाँचाते३८७
ऐतेक भाविया तबे राजा दशानन ❋ कालनेमि-निशाचरे डाके ततक्षण
रावण बले, शुन हे मातुल कालनेमि ❋ लंकाते आमार बड़ हितकारी तुमि
चिरदिन करि आमि भरसा तोमार ❋ आजि मामा, तुमि एक कर उपकार
आजि रणे लक्ष्मण प'ड़ेछे शक्तिशेले ❋ मरिबे तपस्वी बेटा रात्रि पोहाइले
विशल्य-करणी आछे गन्धमादनेते ❋ घरपोड़ा गेल सेइ औषध आनिते
गन्धमादनेते गिया करह उपाय ❋ जयेते बानर बेटा औषध ना पाय

उड़ने लगे। चौड़ाई में वह वीर दस योजन का और लम्बाई में उसका शरीर बीस योजन का हो गया। उसने पूँछ पचास योजन लम्बी कर दी। उठते ही पूँछ आकाश को छूने लगी। महाशब्द करता हुआ वह उड़ चला और गंभीर शब्द सुन पड़ने लगा। यह देख कर रघुवीर का मन प्रसन्न हो गया ॥ ३८६ ॥

हनुमान द्वारा गन्धकाली अप्सरा का उद्धार और कालनेमि-वध

अजेय शरीर धारी वह वीर हनुमान अन्तरिक्ष में चला। लंका के भीतर रहकर दशानन ने देखा। रावण ने विस्मित होकर सोचा कि इतनी रात गये यह घर जलाने वाला अभागा कहाँ जा रहा है। दशानन ने अनुमान लगाया कि वीर हनुमान दवा लाने जा रहा है। गन्धमादन में विशल्य-करणी है। मैं किसी प्रकार से भी लक्ष्मण को जी उठने नहीं दूँगा ॥ ३८७ ॥

इतना सोचकर राजा दशानन ने निशाचर कालनेमि को बुलवाया। रावण ने कहा, मामा कालनेमि सुनो, लंका में तुम मेरे बड़े शुभचिन्तक रहे। तुम पर मैं सदा से बड़ा भरोसा करता रहा हूँ। आज मामा तुम मेरी एक भलाई करो। आज युद्ध में लक्ष्मण शक्तिशेल से घायल होकर गिरा है। रात समाप्त होते ही वह अभागा तपस्वी मर जायगा। घर जलाने वाला (हनुमान) गन्धमादन पर्वत पर विशल्यकरणी औषधी लाने के लिए गया है, इसलिए तुम गन्धमादन पर जाकर ऐसा कोई उपाय करो कि अभागे बानर

बुद्धे बृहस्पति तुमि, वृद्ध निशाचर ※ राक्षसेर मध्ये तुमि मायार सागर
मायार प्रबन्धे एस हनूमाने मेरे ※ लंकार अर्द्धेक राज्य दिलाम तोमारे८८
कालनेमि बले, मने करि बड़ भय ※ दुष्ट बड़ से बानरा, कि जाने कि हय
मायारूपे जाइ, जदि चिने हनूमान ※ एकइ आछाड़े मोर बधिबे पराण
बानर-प्रधान बेटा, बुद्धे बड़ शठ ※ केमने जाइते बल ताहार निकट
दशानन बले, एत भय केन तारे ※ जुक्ति करि जाह, जाहे चिनिते ना पारे
कालनेमि बले, बापु, जत बल मिछे ※कारो जुक्ति ना खाटिबे घरपोड़ार काछे८९
रावण बले, कालनेमि, ना हओ चिन्तित ※ हेन जुक्ति आछे, बेटा मरिबे निश्चित
गन्धमादनेर सब सन्धि आमि जानि ※ गन्धकाली-नामे एक आछे कुम्भीरिणी
सरोवरे प'ड़े थाके गन्धमादनेते ※ प्रकाण्ड शरीर तार, मुख विपरीते
सुरासुर शंका करे देखि कुम्भीरिणी ※ सेइ डरे केह नाहि छाँय तार पानि
केह नाहि जाय सरोवरेर निकटे ※ लक्ष-लक्ष प्राणिबध हैल तार पेटे
सहजे बानरजाति वीर हनूमान ※ गन्धमादनेर एत ना जाने सन्धान
तार आगे जाह तुमि तपस्वीर वेशे ※ आदर गौरव करि तुषिवे हरिषे

को औषधि न मिल सके। तुम बुद्धि में बृहस्पति के समान हो और राक्षसों में वृद्ध हो। तुम राक्षसों में माया के सागर हो। माया के प्रयोग से हनुमान को मार कर आओ। लंका का आधा राज्य मैं तुमको दिये देता हूँ ॥ ३८८ ॥

कालनेमि ने कहा, मुझे बड़ा डर लगता है। वह वानर बड़ा ही दुष्ट है, जाने क्या होगा। यदि मायारूप धर कर जाता हूँ और हनुमान पहचान ले तो एक ही पछाड़ में मेरे प्राण ले लेगा। वह वानरों में प्रधान है और बुद्धि से बड़ा शठ है, तुम कैसे मुझको उसके पास जाने को कह रहे हो। दशानन ने कहा, उससे इतना डरते भी क्यों हो। ऐसी व्यवस्था करके जाओ कि तुमको पहचान न सके। कालनेमि ने कहा, बेटा जो कुछ भी कहो सब बेकार है, उस घर जलाने वाले (हनुमान) के सामने सारी व्यवस्था धरी रह जायगी ॥ ३८९ ॥

रावण ने कहा, कालनेमि चिन्ता मत करो। ऐसी तरकीब है कि वह अभागा निश्चित रूप से मरेगा। गन्धमादन के सारे भेद मुझको मालूम हैं। वहाँ गन्धकाली नाम की एक मादा-मगर है। वह गन्धमादन के एक सरोवर में रहती है। उसका शरीर विशाल है और मुख विपरीत दिशा में है। उस मादा-मगर को देखकर सुर-असुर सभी डरते हैं। उसके डर से कोई उस सरोवर के निकट नहीं जाता और न उसका पानी छूता है। लाख-लाख प्राणियों की मृत्यु उसके पेट में हुई है। वीर हनुमान है तो वानर जाति का ही, उसको गन्धमादन का यह रहस्य मालूम नहीं है। उससे पूर्व तुम वहाँ

मायाते आश्रय करि रेखो फूल-फल ※ कलसी भरिया रेखो सुबासित जल
नानामते हनूमाने करिबे आदर ※ स्नानहेतु पाठाइबे सेइ सरोवर
अल्पबुद्धि हनूमान, पशुमध्ये गणि ※ सरोवरे गेले धरि खाबे कुम्भीरिणी
कुम्भीरिणी धरि खाबे पवन-नन्दने ※ हनू मैले औषध आनिबे कोन जने
राम मरिबेक तबे लक्ष्मणेर शोके ※ पलाबे सुग्रीव बेटा पड़िया बिपाके
मायाते बधिया तारे एस मम आगे ※ लंकापुरी ल'ब दोंहे अर्द्ध-अर्द्ध-भागे९०
कालनेमि बले, ए कि बलिस् रावण ※ घरपोड़ार काछे गेले हाराब जीवन
पूर्ब्बे घरपोड़ा तोरे मारिल चापड़ ※ रथ हैते पड़िया करिलि धरफड़
आमि ह'ले सेदिन जेताय जमघर ※ भाग्ये बेंचे एसे छिलि लंकार भितर
हनूमाल-काछे कारो नाहिक निस्तार ※ देखिले तखनि मोरे करिबे संहार
पाठाओ हाराते प्राण हनूमान-आगे ※ आमि मैले लंका केवा लबे अर्द्धभागे९१
एत यदि कालनेमि रावणेरे बले ※ शुनिया रावण-राजा अग्निहेन ज्वले
कालनेमि बले, क्रोध संवर रावण ※ तुमि मार, से मारुक, अवश्य मरण
कालनेमि निशाचर घोर-दरशन ※ अष्टबाहु, चारिमुण्ड, अष्ट जे लोचन

तपस्वी का वेश धरकर पहुँच जाओ। काफी आदर-सत्कार से तुम उसको प्रसन्न करना। माया से आश्रम का निर्माण कर उसमें फल-फूल का प्रबन्ध कर डालना। घड़े में सुगन्धित जल भर कर रखना। हर तरह से हनुमान की आवभगत करना और स्नान करने के लिए उस सरोवर में भेज देना। हनुमान की मैं पशुओं में गिनती करता हूँ, अस्तु है तो वह अल्पबुद्धि ही। सरोवर जाते ही मादा-मगर उसको पकड़ कर खा जायगी। जब मादा-मगर पवननन्दन को पकड़ कर खा जायगी तो हनुमान के मर जाने पर दवा कौन लाएगा। लक्ष्मण के शोक से राम प्राण दे देगा और सुग्रीव विपत्ति में पड़कर भाग खड़ा होगा। उसको माया के द्वारा वध कर मेरे सम्मुख आ जाओ, फिर हम लंकापुरी का आधा-आधा बँटवारा कर लेंगे ॥ ३९० ॥

कालनेमि ने कहा, अरे रावण, यह तू क्या कहता है; घरजलौवा के पास जाने पर मुझको प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा। पहले एकबार घरजलौवा ने तुझे एक झापड़ मारा, तब तू रथ से गिरकर तड़फड़ाने लगा था। मैं होता तो उसी दिन यमघर चला गया होता। तेरा ही भाग्य था कि तू प्राण लेकर लंका के भीतर आ गया था। हनुमान से किसी का बचाव नहीं, मुझको देखते ही वह मेरा वध कर डालेगा। मुझको हनुमान के पास प्राण गँवाने भेज रहे हो, मेरे मरने पर लंका का आधा हिस्सा कौन लेगा ॥ ३९१ ॥

कालनेमि ने जब रावण से यह कहा तो राजा रावण क्रोध से आग की तरह भभक उठा। कालनेमि ने कहा, रावण अपना क्रोध संवरण करो। तुम मारो चाहे वह मारे, निशाचर कालनेमि के लिए भयंकर मृत्यु लिखी है।

चलिल से कालनेमि रावण-आदेशे ❋ गन्धमादनेते आसे तपस्वीर वेशे
पवन-गमने जाय वीर हनुमान ❋ कालनेमि उपनीत तार आगुयान
मायास्थान सृजिल मधुर फूल-फल ❋ कलसी भरिया राखे सुवासित जल
जटाभार शिरेते, वाकल परिधान ❋ हाते धरि जपमाला करितेछे ध्यान९२
हेनकाले उपनीत पवन-नन्दन ❋ तपस्वी देखिया करे चरण-वन्दन
गैरिक-वसन परा, दीर्घ गोंप-दाड़ि ❋ हनुमाने देखिया दिलेन जल-पिंड़ि
एसेछ अतिथि, आजि बड़इ मंगल ❋ स्नान करि एस, किछु खाओ फूल-फल
हनूमान बले, गोसांइ, ना जान कारण ❋ कोन सुखे खाब आमि, नहि लय मन
दशरथ-नामे राजा जन्म सूर्यवंशे ❋ सत्यहेतु दुइ पुत्रे दिला वनवासे
ज्येष्ठपुत्र रामचन्द्र, अनुज लक्ष्मण ❋ पालिते पितार सत्य एसेछेन वन
संगेते आसिला पत्नी जानकी सुन्दरी ❋ शून्यघर पेये रावण सीता कैल चुरि
बानर-सहाये राम बान्धिला सागर ❋ कटक-समेत गेला लंकार भितर
सीता लागि श्रीराम-रावणे बाजे रण ❋ रावणेर शेले पड़े आछेन लक्ष्मण
ठाकुर लक्ष्मण पड़े रावणेर शेले ❋ प्राणदान पावेन औषध लये गेले
फूल-फल शिरे राखि, क्षमह आपनि ❋ औषध चिनाये देह विशल्य-करणी

ऐसा कहकर भीषण रूप वाला कालनेमि जिसके आठ हाथ, चार मुंड और आठ आँखें हैं, रावण के आदेश से चल पड़ा। तपस्वी के वेश में वह गन्धमादन पर पहुँचा। वीर हनुमान पवन की गति से गया, किन्तु कालनेमि उससे भी पूर्व पहुँच गया। उसने मधुर फल-फूलों से भरे मायामय स्थान का निर्माण किया। सुगन्धित जल से भरे घड़े रख दिये। सिर पर जटाएँ और बदन पर वल्कल धारण कर हाथों में जपमाला लेकर वह ध्यान का ढोंग रचाने लगा ॥ ३९२ ॥

ऐसे ही समय वहाँ पवननन्दन जा पहुँचा। तपस्वी देखकर उसने उसके चरणों की वन्दना की। गेरुआ कपड़े पहने लम्बी मूँछ-दाढ़ी वाले उस कालनेमि ने हनुमान को देखकर जल और पीढ़ा दिया और कहा, आज तुम अतिथि आए हो यह बड़ा ही मंगलसूचक है। जाओ स्नान करके आओ, कुछ फल-मूल खाओ। हनुमान ने कहा, हे प्रभु तुमको मालूम नहीं। किस सुख से मैं खाऊँ, मेरा मन नहीं करता। सूर्यवंश में जन्म लेकर दशरथ नामक राजा ने सत्यपालन के हेतु अपने दोनों पुत्रों को वनवास भेज दिया है। बड़ा बेटा रामचन्द्र और उसका छोटा भाई लक्ष्मण पिता का सत्य पालन करने वन चले आए हैं। उनके साथ राम की सुन्दरी पत्नी जानकी भी आई। सूनी कुटी पाकर रावण ने उसको चुरा लिया। राम ने वानरों की सहायता से समुद्र को बाँधा और सेना सहित लंका में प्रवेश किया। सीता के कारण राम-रावण में युद्ध छिड़ गया। रावण के शेल से घायल

तपस्वी बलेन, तोर छावालिया मति ※ भोके शोके केमने ए कुलावे आरति
मम स्थाने अतिथि थाकिले उपवासी ※ सब तप नष्ट हय, किसेर तपस्वी
ये बाड़ी अतिथि आसि करे उपवास ※ अतिथिर उपवासे तार सर्ब्बनाश
अतिथि देखिया येवा ना करे आश्वास ※ सर्ब्बनाश हय तार, नरके निवास
एइ देख सरोवर तपेर प्रसाद ※ उलिया करह स्नान, घुचुक विषाद
पान यदि कर ओर एकाञ्जलि पानि ※ एकवर्ष क्षुधा-तृष्णा किछुइ ना जानि ९३
राक्षसेर मायाते पण्डितजन भुले ※ स्नानहेतु हनूमान चलिलेन जले
झाँप दिया हनू जले पड़िल जखनि ※ हनूर से शब्द पेये धाय कुम्भीरिणी
कुम्भीरिषी-शब्द पेये पलाय यत माछ ※ योजन शरीर तार जिनि तालगाछ
हस्त-पद-नख जेन चोख-चोख छुरि ※ शमनेर दण्ड येन दन्त सारि-सारि
जलमध्ये कुम्भीरिणी हनू नाहि देखे ※ हात-पा पसारि आसि धरे हाते-नखे
कि कि बलि हनूमान धरिलेन तारे ※ एकलाफे उठे बीर पाड़ेर उपरे
कुम्भीरिणी तुलिलेन पवन-नन्दन ※ शरीर ताहार उच्च एकइ योजन

होकर लक्ष्मण पड़ा है, दवा ले जाने से उनको प्राण मिल जायगा। यह फल-मूल अपने पास रखो; मुझको क्षमा कर दो और मुझको विशल्य-करणी औषधि पहचनवा दो। तपस्वी ने कहा, तेरी भी बुद्धि बिल्कुल बच्चों जैसी है। भूखा रहकर और शोक में तू कैसे अपना मनोरथ पूर्ण कर सकेगा। मेरे स्थान पर यदि अतिथि उपवासी रह जाय तो मेरा सारा तप ही व्यर्थ हो जाता है। वह भी भला कैसा तपस्वी है; जिसके घर में अतिथि आकर उपवास करता है उसके उपवास के कारण उस घर का सर्वनाश हो जाता है। अतिथि को देखकर जो उसकी आवभगत नहीं करता उसका सर्वनाश हो जाता है और वह नरक में वास करने लगता है। यह देखो तप के प्रसाद से बना यह सरोवर है। डुबकी लगाकर इसमें नहा लो, सारा दुख दूर हो जायगा। यदि उसका अँजुरी भर पानी पी लो तो एकवर्ष तक भूख-प्यास नहीं रह जायगी ॥ ३९३ ॥

राक्षस की माया में पड़कर पंडित भी भुलावे में आ जाते हैं। हनुमान भी नहाने के लिए जल की ओर चल पड़े। हनुमान उछल कर जल में कूद पड़े। हनुमान की आवाज़ सुनकर वह मादा-मगर भी लपकी। मगर की आहट पाकर सारी मछलियाँ भागने लगीं। ताड़ का पेड़ सा उसका शरीर योजन भर का था। उसके हाथ-पैर और नाख़ून मानों पैने-पैने छूरे थे और दाँतों की पंक्तियाँ मानों यमराज के दंड की कतार के समान थीं। वह मादा-मगर पानी में थी, हनुमान उसको नहीं देख सका। उसने आकर पंजों से हनुमान को पकड़ा। क्या है ? क्या है ? कहकर हनुमान ने उसको पकड़ लिया और एक ही छलाँग में वह कगार पर आ खड़ा हुआ। पवन-नन्दन

फेलिलेन कुम्भीरिणी पर्व्वत-प्रमाण * नखे चिरि हनूमान करे खान-खान ३९४
देवकन्या कुम्भीरिणी उठिल आकाशे * आकाशे उठिया हनूमानेरे सम्भाषे
देवकन्या छिनु आमि, नामे गन्धकाली * देवतार बाड़ी-बाड़ी करि नृत्य-केलि
कुबेर-निवासे जाइ नृत्य गीत-रंगे * ठेकिल आमार अंग दक्ष-मुनि-अंगे
पथे मुनि तप करे, तार नाम दक्ष * कोपे मुनि शाप दिल बड़इ अशक्य
ना जाय खण्डन, एक शाप दिल मुनि * थाक गन्दमादनेते ह'ये कुम्भीरिणी
लक्ष-लक्ष प्राणी मारि बाड़िवेक पाप * हनूमान-हस्ते तोर मुक्त हबे शाप
हइबेन नारायण राम-अवतार * ताँर सेवकेर हाते तोमार निस्तार
चिरजीवी ह'येथाक, साध राम-काज * तोमार प्रसादे जाइ देवेर समाज
आर एककथा बलि, शुन हनूमान * भण्ड-तपस्वीर हाते ह'यो सावधान
एत बलि आकाशे चलिल गन्धकाली * रूपे आलो करे येन चमके बिजली ३९५
हेथा पथ-पाने चाहे तपस्वी सघने * हनूर विलम्ब देखि हरषित मने
मने-मने तपस्वी करिछे अनुमान * कुम्भीरिणी धरिया खेयेछे हनूमान
अतः पर जाइ आमि रावण-गोचर * अर्द्ध-लंका भाग करि लइब सत्वर

ने मादा-मगर को ऊपर उठा लिया, उसका शरीर एक योजन लम्बा था। उसने मादा-मगर को दे पटका और नाख़ून से चीर कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले ॥ ३९४ ॥

मादा-मगर जो कि एक देवकन्या थी आकाश में उड़ गई। आकाश में उड़कर उसने हनुमान से कहा, मैं गन्धकाली नामक देवकन्या थी, देवताओं के घरों में नाच-गाना करती फिरती थी। नृत्य-गीत के रंग में मैं कुबेर के भवन में गई, वहाँ दक्ष-मुनि के शरीर से मेरा अंग छू गया। दक्ष नामक वह मुनि उस समय पथ पर तपस्या कर रहे थे, कोप में आकर उन्होंने मुझको अचूक शाप दिया। मुनि ने शाप दिया कि गन्धमादन में जाकर मादा-मगर बन कर रहो और लाख-लाख प्राणियों को मार कर अपना पाप बढ़ाओ। हनुमान के हाथों ही तू शापमुक्त होगी। नारायण राम का अवतार लेंगे, उन्हीं के सेवक के हाथ तुम्हारा उद्धार होगा। चिरंजीव होकर राम का कार्य साधित करो, तुम्हारी ही कृपा से फिर से देव-समाज में जा रही हूँ; और हनुमान, तुमसे एक बात बताये जाती हूँ, उस ढोंगी तपस्वी से सावधान रहना। इतना कहकर गन्धकाली आकाश में चली गई। वह अपने सौन्दर्य से आकाश-मार्ग को यों प्रकाशित कर गई मानों बिजली हो ॥ ३९५ ॥

इधर तपस्वी बार-बार रास्ते की ओर देख रहा था। हनुमान के लौटने में देर हो रही है यह देखकर वह मन ही मन बड़ा खुश हो रहा था। उसने सोचा मगर ने हनुमान को खा डाला होगा अतः मैं अब रावण के पास चलूँ। आधी लंका का झटपट बँटवारा कर लूँ। उत्तर-दक्षिण रस्सी

दड़ि ध'रे ल'ब भाग उत्तर-दक्षिणे ✽ पूर्ब्बदिक लब आमि, नाजाव पश्चिमे
पश्चिम-सागरे यदि बाँध भेंगे जाय ✽ पश्चिम रावणे दिब, भाग यत हय
अश्व हस्ती सैन्य रथ भाण्डारेर धन ✽ सकल अर्द्धेक बुझे लइव एखन
राणीगण आछे यत स्वर्ग-विद्याधरी ✽ तार अर्द्ध ल'व जेइ भागे मन्दोदरी
मन्दोदरी रूपे जिने स्वर्ग-विद्याधरी ✽ तार सह क्रीड़ा करि दिवाविभावरी९६
स्नान करि गेल हनू तपस्वी-गोचर ✽ हनूमाने देखिया काँपिछे निशाचर
हाते फूल-फल-डालि धीरे-धीरे नाड़े ✽ खाओ-खाओवलि हनूमान-प्रति एड़े
एकदृष्टे हनूमान तपस्वी नेहाले ✽ तपस्वी भाविछे हनू ना जानि कि बले९७
हनूमान बले, तुइ भण्ड ये तपस्वी ✽ स्वरूपे अतिथि हैले अतिथिरे हिंसि
रावणेर कार्य्य साध तपस्वीर वेशे ✽ मोर हाते पड़ि आजि जावि यम-पाशे
तोर फल-फूल बेटा, टेने फेल दूर ✽ मोर ठाँइ आजि तोर माया हवे चूर९८
तपस्वी भाविल, माया हइल विदित ✽ धरि राक्षस-मूर्त्ति अति-विपरीत
अष्टबाहु चारि मुण्ड अष्टटा लोचन ✽ बले, हनूमान तोरे बधिब एखन
प्रथमे गौरव, द्वितीयेते गालागालि ✽ तृतीयेते ठेलाठेलि परे चूलाचुलि

खींच नापकर अपना हिस्सा लूँगा, मैं पूरब का भाग लूँगा, पश्चिम का नहीं। पश्चिम सागर का अगर बन्धा टूट गया तो क्या होगा? इसलिए पश्चिम का भाग रावण को ही दूँगा। घोड़ा, हाथी, सेना, रथ, भंडार का धन, सभी का आधा-आधा समझ कर बँटवारा कर लूँगा। स्वर्ग की विद्याधरियाँ जो कि रानी बनी हुई हैं उनमें भी आधे का हिस्सा मैं लूँगा जिसमें कि मन्दोदरी भी होगी। मन्दोदरी रूप में स्वर्ग की विद्याधरियों को भी नीचा दिखाती है। उसी के साथ रातों-दिन क्रीड़ा किया करूँगा ॥ ३९६ ॥

नहाने के उपरान्त हनुमान तपस्वी के पास पहुँचा। हनुमान को देख कर राक्षस काँपने लगा। हाथ में फल-मूल की टोकरी लेकर, 'खाओ-खाओ' कहकर हनुमान से अनुरोध करने लगा। हनुमान टकटकी लगाये तपस्वी को देखता रहा। तपस्वी सोचने लगा, हनुमान जाने क्या कहने वाला है॥ ३९७॥

हनुमान ने कहा, तू ढोंगी तपस्वी है। अगर तू सचमुच तपस्वी होता तो अपने अतिथि का वध क्यों कराता? तू तपस्वी का वेष अपना कर रावण का कार्य करने आया है। आज मेरे हाथों पड़कर तू यमालय जायगा। अभागे, अपना फल-मूल तू दूर फेंक दे, आज तेरी माया मैं अपने हाथों चूर-चूर करूँगा ॥ ३९८ ॥

तपस्वी ने सोचा, माया तो मेरी प्रकट हो गई। उसने अपनी राक्षस-मूर्त्ति अपना ली। आठ हाथ, चार सिर और आठ आँखों वाली विपरीत मूर्त्ति बना ली। हनुमान ने कहा, अब मैं तेरा वध करूँगा। पहले तो गौरव-बखान, फिर गाली-गलौज, फिर आपस में ठेलमठेल हुई; फिर

दुइजने मल्लयुद्ध, दु,जने सोसर ॐ दुइजने महायुद्ध' पर्व्वत-उपर
क्षणे नीचे हनूमान, क्षणेके उपरे ॐ टलमल करेगिरि दु'जनार भरे
लाफ दिया हनूमान कालनेमि धरे ॐ बुके हाँटु दिया हनु कालनेमि मारे
लेजे जड़ाइया तारे घुराय आकाशे ॐ लंकाते फेलिया दिल रावणेर पाशे
गन्धमादन-लंका-पथ आठार वत्सर ॐ एतदूरे टेने फेले रावण-गोचर
ब'सेछे रावण-राजा पात्रमित्र सने ॐ अन्धकारे कालनेमि पड़े मध्यस्थाने
कि पड़िल बलि सबे चमकिया उठे ॐ नेड़ चेड़े देखि बले, 'कालनेमि' बटे
कालनेमि देखि रावणेर उड़े प्राण ॐसर्व्वमाया कैल चूर्ण वीर हनूमान९९

रावणादेशे अर्द्धरात्रे सूर्य्योदय ओ हनूमान-कर्त्तृक सूर्य्यके कक्षतले धारण

लक्ष्मणे मरिया शेल भाविछे रावण ॐ डाक दिया आनिल यतेक देवगण
आपनि आइल ब्रह्मा चड़ि राजहंसे ॐ आइलेन विश्वनाथ चड़ि वृद्ध-वृषे
इन्द्र-यम कुबेरादि आइल पवन ॐ चन्द्र-सूर्य्य दु'जने आइल ततक्षण४००
रावण बले, शुन बलि यत देवगण ॐ मयदानवेर शेले पड़ेछे लक्ष्मण
आमार बचन शुनु, बलि हे भास्कर ॐ उदित हओ हे गिया गिरिर उपर

एक दूसरे का झोंटा पकड़े गुँथ गये। दोनों में कुश्ती होने लगी, दोनों ही बराबरी के थे। पर्वत के ऊपर दोनों में महायुद्ध होने लगा। कभी हनुमान नीचे तो कभी ऊपर, दोनों के भार से पर्वत हिलने लगा। फिर उछल कर हनुमान ने कालनेमि को पकड़ लिया और उसके सीने को घुटने के नीचे दबा कर उसे मार डाला। फिर पूँछ में लपेट कर हनुमान उसे आसमान में घुमाने लगे और लंका में रावण के पास फेंक दिया। गन्धमादन से लंका अठारह वर्ष का रास्ता है, इतनी दूर हनुमान ने कालनेमि को रावण के पास फेंका। राजा रावण अपने सभासद आदि के साथ बैठा था कि अंधेरे में, बीच में आकर कालनेमि गिरा। क्या गिरा ? क्या गिरा ? कहकर सभी लोग चौंक पड़े। हिलाडुला कर देखने के बाद बोले 'कालनेमि ही है'। कालनेमि को देखकर रावण के प्राण उड़ गये। हाय ! वीर हनुमान ने सारी माया ही चूर-चूर कर दी ।। ३९९ ।।

रावण के आदेश से आधीरात को सूर्योदय और हनुमान द्वारा सूर्य को काँख में दबा लेना

लक्ष्मण को शेल मारने के बाद रावण सोचने लगा। सारे देवताओं को उसने बुलवाया। स्वयं ब्रह्मा राजहंस पर बैठे आ पहुँचे। बूढ़े साँड़ पर सवार विश्वनाथ भी आये। इन्द्र, यम, कुबेर, पवन आदि आए। चन्द्र और सूर्य भी तब तक आ गये ।। ४०० ।।

रावण ने कहा, हे देवगण सुनो। मयदानव के बने शेल से घायल होकर

तोमार उदय हैले मरिबे लक्ष्मण ※ लक्ष्मण-मरणे राम त्यजिबे जीवन
तुमि गिया उठ, चन्द्र थाक् एइ ठाँइ ※ तोमार उदये लक्ष्गण बाँचिबेक नाइ ४०१
ए कथा शुनिया तबे बले दिवाकर ※ आमार बचन शुन लंकार ईश्वर
द्वितीय-प्रहर रात्रि हइल गगने ※ एखन उदित बल हइब केमने
रावण बले, हैल रात्रि, कि क्षति तोमार ※ बुझि, मने अमंगल चिन्तह आमार
रावणेर कथा शुनि भास्करेर त्रास ※ भयेते चलिल सूर्य्य हइते प्रकाश
सप्तघोड़ा योगान सूर्य्येर रथ बहे ※ कनक-रचित रथ त्रिभुवन मोहे
नाना-रत्न शोभा करे रथेर उपर ※ उदितहइते जान देव-दिवाकर ४०२
दिवाकर पूर्ब्बदिक प्रकाश करिल ※ ताहा देखि हनूमान् तरास पाइल
नेउटि उदयगिरि करिल गमन ※ दिवाकर-सन्निकटे दिल दरशन
रथ आगुलिया वीर दाण्डाय सत्वर ※ अचल हइल रथ सारथि फाँपर
पूर्ब्बदिक आगुलिल हनूमान-वीरे ※ पश्चिमे चालाय रथ सारथि सत्वरे
घोड़ारे प्रबोध-बाड़ि मारये सघने ※ पश्चिमे चलिल रथ पवन-गमने
कुपिल से हनूमान अति भयंकर ※ लाफ दिया अश्वगणे धरिल सत्वर

लक्ष्मण गिरा है। मेरा कहना सुनो, हे सूर्य जाकर उदय-गिरि पर उदित हो जाओ। तुम्हारे उदय से लक्ष्मण मरेगा और लक्ष्मण के मरते ही राम प्राण त्याग देगा। तुम जाकर उदित हो जाओ, चन्द्र इसी ठौर रहे। तुम्हारे उदय से लक्ष्मण फिर जिन्दा नहीं रह सकेगा ॥ ४०१ ॥

यह बात सुनकर दिवाकर ने कहा, हे लंका के ईश्वर मेरी बात सुनो। इस समय गगन में रात का द्वितीय प्रहर लगा है, इस समय मैं कैसे उदित हो सकता हूँ। रावण ने कहा, रात है तो तुमको क्या नुकसान है। मेरा ख्याल है तुम मन ही मन मेरा अमंगल सोचा करते हो। रावण का कहना सुनकर भास्कर को भय लगा और डर के मारे सूर्य प्रकट होने चल पड़ा। सूर्य के रथ पर सात घोड़े जोते गये। तीनों लोकों को मुग्ध करने वाला वह रथ कनक से बना था। उस रथ के ऊपर नाना प्रकार के रत्न शोभा पा रहे थे। देव-दिवाकर उदित होने के लिए चल पड़े ॥ ४०२ ॥

पूर्व-दिशा को दिवाकर प्रकाशित करने लगा तो हनुमान के मन में त्रास उपजा। लौटकर वह उदयगिरि जा पहुँचा और दिवाकर के सम्मुख जा खड़ा हो गया। रथ के सम्मुख पहुँचकर वीर हनुमान खड़ा हो गया, रथ अचल हो गया और सारथि हक्का-बक्का। हनुमान ने पूरब की दिशा अगोर ली तो सारथि ने पश्चिम की दिशा में रथ चला दिया। घोड़े को बार-बार चाबुक मारने लगा और रथ पवन-गति से पश्चिम की ओर चल पड़ा। हनुमान इससे भीषण क्रोधित हुआ और छलाँग मार कर उसने घोड़ों को जा पकड़ा। रथ पकड़कर हनुमान उसको घुमाने लगा—हवा में रथ यों घूमने

रथ धरि हनूमान घन देय पाक ❊ वायुभरे घोरे, येन कुमारेर चाक्
छाड़ छाड़ बलि सूर्य्य घन-डाक छाड़े ❊ सूर्य्य यदि कोप करे, त्रिभुवन पोड़े ४०३
बुझिया रामेर कार्य्य सूर्य्य कृपामय ❊ सारथिरे जिज्ञासिल केबा एइ हय
सारथि कहिछे तबे सूर्य्येर गोचर ❊ रथ घुराइया राखे एकटा बानर
पर्ब्बति-प्रमाण अंग विकृत-आकार ❊ अचल हइच रथ, नाहि चले आर
सूर्य्य बले, रथ, राख गगन-मण्डले ❊ पोड़ाइया बानरे पाड़िब भूमितले
एत शुनि दाण्डाइल पवन-नन्दन ❊ विनय करिया बले मधुर बचन
कोन महाशय तुति, कोन मायाधर ❊ स्वरूप करिया कह आमार गोचर
सूर्य्य कहे, आमि सूर्य्य, छाड़ि देह पथ ❊ उदित हइते जाब उदय-पर्ब्बत
यत देवगण रावणेर द्वारेखाटि ❊ पुराण पड़ेन ब्रह्मा आर मुनि कोटि
बड़ युद्ध हइयाछे आजिकार रणे ❊ प'ड़ेछे लक्ष्मण-वीर शक्तिशेल-बाणे
रजनी प्रभात ह'ले मरिबे लक्ष्मण ❊ उदित हइते मोरे पाठाय रावण
रावणेर उपद्रव सहिते ना पारि ❊ उदित हइते जाइ थाकिते शर्ब्बरी
आमार उदय हैले मरिबे लक्ष्मण ❊ लक्ष्मणेर शोके राम त्यजिबे जीवन
औषधि आनिते गेछे पवन-कुमारे ❊ लक्ष्मणे मरिब वीर ना आसिते फिरे ४०४
हनूमान बले, देव, कर अवधान ❊ पवनेर पुत्र आमि, नाम हनूमान

लगा मानों कुम्हार की चाक हो। छोड़ो-छोड़ो, कहकर सूर्य पुकारने लगा गया। सूर्य अगर नाराज़ हो गया तो त्रिभुवन जला डालेगा ॥ ४०३ ॥

कृपामय सूर्य ने राम का कार्य मन ही मन समझकर सारथि से पूछा कि यह कौन है। तब सारथि ने सूर्य से कहा, एक वानर रथ को घुमा रहा है। देखने में पर्वत के आकार का और भद्दी सूरत का है। रथ अचल हो गया है और आगे नहीं बढ़ रहा। सूर्य ने कहा, रथ को गगन-मंडल में रखो आज इस वानर को जलाकर पृथ्वी पर फेंकता हूँ। इतना सुनकर पवन-नन्दन खड़ा हो गया और विनय से मीठी-मीठी बातें करने लग गया। हे महाशय तुम कौन हो, कौन मायाधर हो मेरे सम्मुख अपना असली परिचय दो। सूर्य ने कहा, मैं सूर्य हूँ, मेरा रास्ता छोड़ दो, मैं उदय-पर्वत पर उदित होने जा रहा हूँ। हम सारे देवता रावण के द्वार पर नौकरी बजाते हैं। ब्रह्मा के साथ एक करोड़ मुनि वेदपाठ किया करते हैं। आज के युद्ध में बड़ी घनघोर लड़ाई हुई है। लक्ष्मण वीर शक्तिशेल से घायल होकर गिरे हैं। रात समाप्त होते ही लक्ष्मण मर जायगा। रावण ने मुझको उदित होने के लिए भेजा है। रावण का अत्याचार अब सहा नहीं जाता, रात रहते ही उदित होने जा रहा हूँ। मेरे उदय के साथ-साथ लक्ष्मण मर जायगा और लक्ष्मण के शोक से राम प्राण त्याग देगा। पवनकुमार औषध लाने के लिए गया है उसके लौटने से पूर्व लक्ष्मण को मारना है ॥ ४०४ ॥

हनुमान ने कहा, हे देव, मेरा कहना सुनो। मैं पवन का पुत्र हूँ, मेरा

औषधि आनिते आमि आइनु शिखरे ※ एइ निवेदन करि तोमार गोचरे
प्राणदान लक्ष्मण ना पान यतक्षण ※ तावत् उदय-गिरि ना कर गमन
सूर्य्य बले, केवा शुने तोमार वचन ※ ना पारि रावण-आज्ञा करिते लंघन
हनूमान बले, तुमि देवेर प्रधान ※ सदय हइया राख लक्ष्मणेर प्राण
रावणेर अनुरोधे जावे यदि बले ※ रथ-सह डुबाइब सागरेर जले४०५
हासिया बलेन सूर्य्य, शुन हनूमान ※ यत देवगण भावे रामेर कल्याण
साधे कि उदय-गिरि जाइ उदयेते ※ देवेर निस्तार नाइ रावणेर हाते
कि जानि कि करे रावण, भावि एइ भय ※ निशिते एलाम भये हइते उदय
रावणेर आज्ञा यदि ना करि पालन ※ कोपेते विषम शास्ति दिवेक रावण
श्रीरामेर अनुरोधे फिरे यदि जाइ ※ रावणेर कोपे बल रक्षा किसे पाइ४०६
हनूमान बले, आछे उपाय उहार ※ निकटे आइस, बलि कर्णेते तोमार
तव नाम भानु, आर हनू मम नाम ※ नामे नामे मिलियाछे दु'जने समान
खण्डिबे तोमार दोष रावणेर काछे ※ साधिव रामेर कार्य्य, युक्ति हेन आछे
दुइदिक रक्षा पावे, सुमन्त्रणा बलि ※ हनू भानु दुइजने करिब मितालि

नाम हनुमान है। औषध लाने के लिए मैं इस पर्वत की चोटी पर आया हूँ। तुमसे मैं यह निवेदन करता हूँ कि जब तक लक्ष्मण को प्राण न मिल जाय तब तक तुम उदय-गिरि पर मत जाओ। सूर्य ने कहा, तुम्हारी बात कौन सुनेगा, मैं रावण की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता। हनुमान ने कहा, तुम देवताओं में प्रधान हो, सदय होकर लक्ष्मण की प्राण-रक्षा करो। अगर तुम यह कहोगे कि रावण के आदेश से तुम जाकर रहोगे ही तो मैं तुमको रथ सहित समुद्र के जल में डूबो दूँगा ॥ ४०५ ॥

सूर्य ने हँसकर कहा, हनुमान सुनो, सारे देवता राम के कल्याण की कामना करते हैं। क्या मैं अपनी इच्छा से उदय-गिरि में उदित होने जा रहा हूँ, रावण के हाथों से देवताओं का निस्तार नहीं। जाने रावण क्या कर बैठे यही डर लगा रहता है, और तभी रात रहते ही उदित होने चला आया। रावण की आज्ञा का अगर पालन न करू तो कुपित होकर रावण बड़ी कड़ी सजा देगा। श्रीराम के अनुरोध पर अगर मैं लौट जाऊँ तो रावण के कोप से मुझको कैसे रक्षा मिलेगी ॥ ४०६ ॥

हनुमान ने कहा, इसका भी उपाय है। मेरे निकट आओ, मैं तुमको कानों में बताता हूँ। तुम्हारा नाम भानु है और मेरा नाम है हनु, हमारे नाम यों मिल गये हैं, हम दोनों ही समान हैं। रावण के सम्मुख तुम्हारे दोष का भी खंडन हो जायगा और राम का कार्य भी साधित होगा; ऐसी तरकीब मेरे पास है। दोनों पक्षों का काम बन जायगा ऐसी मंत्रणा मैं तुमको देता हूँ।

एत शुनि दिवाकर हरषित-मन ※हनूर निकटे आसि करे सम्भाषण४०७
सूर्य्येरे धरिया हनू करे कोलाकुलि ※ सापटिया सूर्य्यरे पूरिल कक्षतलि
महातेजोमय सूर्य्य, राखिते के पारे ※ आपनि हइला बन्दी लक्ष्मणेर तरे
हनू-भानु-भंगि देखि देवगण हासे ※लंकाकाण्डे गाहिल पण्डित कृत्तिवासे४०८

हनूमान-कर्त्तृक गन्धर्व्व-निग्रह ओ गन्धमादन पर्व्वत लइया लंका-यात्रा

पुनर्व्वार हनू जाय से गन्धमादन ※ ओषध खुँजिया तथा घुरे अनुक्षण
पर्ब्बते गन्धर्व्बगण आछये हरिषे ※ नित्य करे नृत्य-गीत नारी ओ पुरुषे
गन्धर्व्बेर नारीगण परम-रुपसी ※ केह देय करतालि, केह पूरे बाँशी
गीत- वाद्य रंग-रसे आछे आनन्दित ※ हेनकाले पवन-नन्दन उपस्थित४०९
हनूमाने देखि सबे चमकित-मन ※ करजोड़े कहे कथा पवन-नन्दन
के तोमरा गीत-वाद्य कर निशाकाले ※ निवेदन करि किछु शुनह सकले
पितृसत्य पालिते श्रीराम आसे वन ※ संगेते जानकी-देवी अनुज लक्ष्मण
रावण राक्षसराज लंका-अधिकारी ※ दण्डक-कानने रामेर सीता कैल चुरि

इतना सुनकर दिवाकर हर्षित हुआ और हनु के निकट आकर उसने उससे सम्भाषण किया ॥ ४०७ ॥

सूर्य को अंकवार में लेकर हनुमान उससे मिलने लगा फिर सूर्य को समेटकर अपनी काँख में धर दबाया। सूर्य महातेज से पूर्ण है, कौन उसको रख सकता है? किन्तु लक्ष्मण के कारण वह स्वयं बन्दी बन गया। हनु-भानु का काँड देखकर देवतागण हँसने लगे और लंकाकाण्ड में कृत्तिवास ने इसका गीतों में वर्णन किया ॥ ४०८ ॥

हनुमान द्वारा गन्धर्व-निग्रह और गन्धमादन पर्वत लेकर लंका-यात्रा

दुबारा हनुमान गन्धमादन पर्वत पर गया, वहाँ औषध ढूँढ़ता फिरता रहा। पर्वत पर गन्धर्व बड़े आनन्द से रहते हैं। सदा वे नारी और पुरुष मिलकर नृत्य-गीत में रत रहते हैं। गन्धर्वों की नारियाँ बड़ी सुन्दर होती हैं। कोई तो तालियाँ दे रही हैं तो कोई बाँसुरी बजा रही हैं। गाना-बजाना रस-कौतुक में वे आनन्दमग्न हैं, ऐसे ही समय पवन-नन्दन हनुमान वहाँ जा पहुँचे ॥ ४०९ ॥

हनुमान को देखकर सभी चौंक पड़े। हाथ-जोड़ कर पवन-नन्दन ने कहा, तुम लोग कौन हो जो रात्रि के समय नाच-गाना कर रहे हो। मैं कुछ निवेदन करता हूँ, तुम लोग सुनो। पिता का सत्य पालन करने श्रीरामचन्द्र वन आए। उनके साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण और देवी जानकी आईं। लंका के अधिकारी राजा रावण ने दंडक-वन में राम की सीता का हरण

रघुनाथ करेछेन सागर-बन्धन ※ ह,तेछे विषम युद्ध श्रीराम-रावण
शक्ति शेले प'ड़ेछेन ठाकुर लक्ष्मण ※ आमि आसि औषधि करिते अन्वेषण
फिरे जाब लंकापुरे थाकिते रजनी ※औषधि चिनाये देह विशल्य करणी४१०
कुपिल गन्धर्ब्ब सब, कि बले बानर ※ काहार नफर बेटा, काहार किंकर
हाहा-हूहू महाराज, एइमात्र जानि ※ कोथाकार राम तोर,कखन ना चिनी
आसिया बानर बेटा कोन कार्य्य फिरे ※ चुलेते धरिया सबे बेड़ा-किल मारे
हस्त तुलि हनू करे देवगणे साक्षी ※ मारिब गन्धर्ब्बसब, कार बापे राखि
कोपे हनूमान हैल पर्ब्बत-आकार ※ चड़-चापड़ेते वीर करे महामार
लाफे-लाफे मारे सबे आछाड़ि आछाड़ि ※ पड़िया गन्धर्ब्बसब जाय गड़ागड़ि ११
हाहा-हूहू राजा आसे चड़ि दिब्यरथे ※ हनूमान मारिते बेड़िल चारिभिते
एक राज्ये दुइ राजा हाहा-हूहू नाम ※ हनूमान-काछे एल करिते संग्राम
लाफ दिया रथे गिया चड़े हनूमान ※ दु'जनार धनुक धरिया दिल टान
दु'जनार धनुक करिल खान-खान ※ कोपे हनूमान हैल शमन-समान
हाँटुर उपरे रखि भाँगे दुइ धनु ※ मालसाट दिया आगे दाण्डाइल हनू

किया। रघुनाथ ने सागर बाँध लिया है और श्रीराम और रावण में घोर संग्राम छिड़ा हुआ है। शक्तिशेल से आहत होकर लक्ष्मणजी गिरे हैं। मैं उनके लिए औषध ढूँढ़ने आया हूँ। रात रहते-रहते मुझको लंकापुरी लौट जाना है—मुझको बिशल्यकरणी औषधि पहचनवा दो ॥ ४१० ॥

सारे गन्धर्व कुपित हो गये कि यह वानर क्या बक रहा है। जाने किसका नौकर है या किसका चाकर है। हमलोग केवल हाहा-हूहू महाराज को जानते हैं; तेरा यह राम कहाँ का है, कभी नहीं पहचानते। यह वानर किस काम से आकर यहाँ घूमता-फिरता है क्या जानें। सभी लोग चारों ओर से घेर कर उसको घूँसा-मुक्का मारने लग गये। हाथ उठा कर हनुमान ने देवताओं को साक्षी किया और कहा सारे के सारे गन्धर्वों को मार डालूँगा, देखें कौन बचाता है। क्रोध में आकर हनुमान ने पर्वत सा आकार बना लिया और झाँपड़-मुक्कों से महामार मचा दी। उछल-उछल कर एक-एक को पकड़-पकड़ कर वह पटकने लगे। गन्धर्व जमीन पर लोटने लग गये ॥ ४११ ॥

तब दिव्य रथ पर चढ़कर गन्धर्वों के राजा आए। हनुमान को मारने के लिए उसको चारों ओर से घेर लिया। एक राज्य में दो राजा, जिनका नाम था हाहा-हूहू। वे हनुमान से लड़ने के लिए आए। उछल कर हनुमान रथ पर जा चढ़े। दोनों के धनुष खींच कर उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। गुस्से में हनुमान यम के समान बन गये, घुटने पर रखकर उन्होंने दोनों धनुष तोड़ डाले; फिर उछाल मारकर हनुमान सामने खड़े हो गये। जब संग्राम में शूरवीर हनुमान बिगड़ खड़े हुए तो मुक्का मारकर उन्होंने गन्धर्वों का सिर

कुपिल जे हनूमान संग्रामेर शूर ❋ कील मारि गन्धर्ब्बेर माथा कैल चूर
हनूमान एकेला, गन्धर्ब्ब बहु देखि ❋ हनूमान-अंगे सबे मारये मुटकि १२
मने भावे-हनूमान रात्रि ब'ये जाय ❋ गन्धर्ब्ब मारिया हबे किबा फलोदय
औषध ना पेये हनू भावे मने-मन ❋ शिखरे शिखरे भ्रमे पवन-नन्दन
भाविया चिन्तिया करि साहसेते भर ❋ डाले-मूले ल'ये जाय पर्ब्बत-शिखर
चौषट्टि-योजन सेइ गिरिवरखान ❋ एकटाने उपाड़िल वीर हनूमान
दुइ हाते धरिया पर्ब्बते दिल नाड़ा ❋ चौषट्टि-योजन उठे पर्ब्बतेर गोड़ा
बहुवृक्ष भाँगिल, छिंड़िल लता-पाता ❋ कोथाकार बृक्षशाखा पड़े गिया कोथा
नाना-जाति सर्प पलाय,शिरे मणि ज्वले❋ पर्ब्बत लइया उठे गगन-मण्डले
माथाय पर्ब्बत तुले वीर हनूमान ❋ तुलि दिले पारे बुझि आर एक खान १३

हनूमान-कर्त्तृक भरतेर परीक्षा ओ गन्धमादन-पर्ब्बत लाइया लंकाय प्रवेश

पर्ब्बत लइया चले दक्षिण-मुखेते ❋ भरते प्रशंसे राम, पड़िल मनेते
मारिलाम कालनेमि मायार पुत्तलि ❋कुम्भीरिणी मारि मुक्त कैनु गन्धकाली
तिनकोटि गन्धर्ब्बेर मारिनु सकल ❋ रामेर भाइ भरतेर बुझे जाब बल १४

चूर-चूर कर दिया। हनुमान अकेले हैं और गन्धर्व बहुत सारे हैं। सब लोग मिलकर हनुमान को मुक्का मारने लग गये ॥ ४१२ ॥

मन ही मन हनुमान सोचने लगा कि रात तो बीती जा रही है, गन्धर्वों को मारने से क्या लाभ होगा। औषध न पाकर हनुमान मन ही मन सोच करने लगा और पर्वत की चोटियों पर भटकने लगा। काफी सोचने-विचारने के बाद साहस कर उसने पेड़-पालों सहित वह पर्वत-शिखर उखाड़ लिया। चौंसठ योजन वाले उस गिरिवर को वीर हनुमान ने एक ही झटके में उखाड़ लिया। उन्होंने दोनों हाथों से जब पर्वत को पकड़ कर हिलाया तो चौंसठ योजन का वह पर्वत जड़ से उखड़ गया। बहुत सारे वृक्ष गिर गये, बेलें-लताएँ टूट गईं, कहीं की शाख कहीं जाकर गिरी। विभिन्न जाति के साँप सिर पर माणिक लिये भाग खड़े हुए। पर्वत लेकर वह गगन-मंडल में चढ़ गये। वीर हनुमान ने सिर पर पर्वत उठा लिया, यदि एक पर्वत और लाद दिया जाता तो वे उसे भी ढो सकते थे ॥ ४१३ ॥

हनुमान द्वारा भरत की परीक्षा और गन्धमादन पर्वत लेकर लंका में प्रवेश

पर्वत लेकर हनुमान दक्षिण की दिशा में चले तो उनको याद आ गया कि श्रीरामचन्द्र भरत की बड़ी प्रशंसा किया करते हैं। मैंने माया की मूर्त्ति कालनेमि को मारा, गन्धकाली नामक मादा-मगर को मारकर उसको मुक्त

एतेक भाविया हनूमान हरषित ❋ नन्दीग्राम-अभिमुखे चलिल त्वरित
पर्ब्बत लइया बीर दक्षिणेते जाय ❋ पर्ब्बत कान्तार नदी अनेक एड़ाय
ना देखि चन्द्रेर तेज, दिवा ना प्रकाशे ❋ दक्षिणेते एड़ाइल पर्ब्बत-कैलासे
बामभिते एड़ाइल नगर विस्तर ❋ अविलम्बे उपनीत अयोध्या-नगर
राजपाट छाड़ि भरत नन्दीग्रामे बैसे ❋ हनूमान चले नन्दीग्रामेर उद्देशे
नन्दीग्रामे वृक्ष-आदि देखिल विस्तर ❋ छाड़ाइया प्रवेशिल नगर-भितर१५
सारथि सुमन्त्र आर वशिष्ठ पुरोहित ❋ बसियाछे भरत ये पात्रेते वेष्टित
सिंहासन-उपरे पादुका बेड़ा नेते ❋ श्वेत-चामर व्यजन ह'तेछे चारिभिते
स्वर्ण-सिंहासन जेन शशधर-ज्योति ❋ ताहाते पादुका राखि धरे दण्ड-छाति
रत्नमय आसने पादुका शोभा पाय ❋ आपनि भरत श्वेत-चामर ढुलाय
रामेर पादुका यत्ने सिंहासने थुये ❋ धरासने र'येछेन भरत बसिये१६
पर्ब्बत लइया जाय पवन-कुमार ❋ अन्तरीक्षे थाकि देखे यत व्यवहार
पर्ब्बत-छायाते देश हैल अन्धकार ❋ सभा-सह भरतेर लागे चमत्कार
ना देखि चन्द्रेर तेज अन्धकारमय ❋ रामेर पादुका लंघे, नाहि करे भय

किया, तीन करोड़ गन्धर्वों को मार गिराया, अब राम के भाई भरत की शक्ति का भी अनुमान लगाता जाऊँ ॥ ४१४ ॥

इतना सोचकर हनुमान बड़े हर्षित हुए और नन्दिग्राम की दिशा में तत्काल चल पड़े। पर्वत लेकर वीर दक्षिण की ओर चल पड़ा—पथ में कितने ही पहाड़ और नदियों को लाँघता चला। न तो चन्द्रमा का प्रकाश दिखाई पड़ता है और न दिन का आलोक। दक्षिण की ओर वह कैलाश पर्वत को कतरा गया और बामदिशा में बहुत सारे नगर [छोड़ता हुआ] जल्द ही वह अयोध्या-नगर में जा पहुँचा। राजपाट छोड़कर भरत नन्दिग्राम में रहने लगे थे। हनुमान भी नन्दिग्राम की ओर चले। नन्दिग्राम में उसने बहुत सारे वृक्ष देखे, उनको पार कर उसने नगर के भीतर प्रवेश किया ॥ ४१५ ॥

सारथि सुमन्त्र और पुरोहित वशिष्ठ एवं अन्य सभासदों के साथ भरत बैठे हैं। सिंहासन पर पादुका शोभायमान हैं और श्वेत-चँवर उसके चारों ओर डुलाये जा रहे हैं। स्वर्ण-सिंहासन मानों चन्द्रमा की ज्योति से पूर्ण है, उसपर पादुका रखकर ऊपर राजछत्र और राजदंड धारण किया गया है। रत्नमय आसन पर पादुका शोभायमान हैं और स्वयं भरत श्वेत-चँवर डुला रहे हैं। राम की पादुका बड़े यत्न से सिंहासन पर रखकर भरत स्वयं ज़मीन पर आसन बिछाये बैठे हैं ॥ ४१६ ॥

पवनकुमार पर्वत लेकर जा रहे हैं और अन्तरिक्ष में रहकर सारा हाल-चाल देखते जा रहे हैं। पर्वत की छाया से देश-भर में अन्धकार छा गया। सारी सभा सहित भरत आश्चर्य करने लगे कि चन्द्र का प्रकाश भी नहीं देख

भरत बलेन, रात्रे कार आगुसार ❊ रामेर पादुका लंघे, एत अहंकार
महा-बुद्धिमान् भरत विक्रमे सुस्थिर ❊ एक दृष्टे चाहेन भरत महावीर१७
शत्रुघ्न करिया कोप ऊर्द्धदृष्टे चान ❊ कोथा के आकाश-पथे, ना हय सन्धान
शिशुकाले शत्रुघन करितेन केलि ❊ खेलार बाँटुल पड़े आछे कतगुलि
लोहार निर्म्मित बाँटुल आशीलक्ष मण❊ भरतेर हाते तुलि दिला शत्रुघन१८
मने भावे भरत बाँटुल ल'ये हाते ❊ विशेष ना जानि, केवा जाय शून्यपथे
शत्रुघ्न बलेन, भाइ, पाखी-हेन देखि ❊ खाइते यज्ञेर धूम एल कोन पाखी
भरत कहेन, भाइ, केन एत भय ❊ पक्ष यक्ष रक्ष कि किन्नर यदि हय
बाँटुल मारिया शास्ति करिव ताहारि ❊ रामेर पादुका येवा लंघे, तारे मारि१९
एइरूपे विस्तर करिया अनुमान ❊ पक्षी बटे बलि भरत पूरिल सन्धान
आशीलक्ष मण बाँटुल धनुगुणे जुड़ि ❊ 'जय राम' बलिया बाँटुल दिल छाड़ि
भरतेर बाँटुल से अव्यर्थ-सन्धान ❊ बाजिल हनूर लक्ष-वज्रेर समान
पदेर तालुका-भागे बाजिल बाँटुल ❊ मूर्च्छित हइल हनू, बुद्धि हैल भूल
निस्तेज हइल वीर, शक्ति नाहि आर ❊ अन्तरीक्षे घुरे बुले पवन-कुमार

पड़ता, चारों दिशायें अन्धकारमय हैं; यह राम की पादुका लाँघ कर जाता है इसको इतना डर भी नहीं। भरत ने कहा, रात को कौन आगे बढ़ रहा है, राम की पादुका लाँघ कर जाता है इतना अहंकार है इसको। बड़े ही बुद्धिमान और स्थिर पराक्रम वाले महावीर भरत टकटकी लगाये देखते रहे ॥ ४१७ ॥

शत्रुघ्न नाराज़ होकर ऊपर की ओर देखने लगे। आकाश-पथ पर कौन कहाँ है पता नहीं चलता। बचपन में शत्रुघ्न खेला करते थे, उस खेल के कुछ गेंद पड़े हुए थे। लोहे के बने गेंद अस्सी लाख मन वजन वाले थे, उन्हीं में से एक गेंद शत्रुघ्न ने भरत के हाथ में दे दिया ॥ ४१८ ॥

गेंद हाथ में लेकर भरत सोचने लगे, विशेष कुछ मालूम भी नहीं कि आकाश पथ पर कौन जा रहा है। शत्रुघ्न ने कहा, भाई पक्षी ऐसा लगता है, यज्ञ का धुवाँ पीने यह कौन सा पक्षी आ गया। भरत ने कहा, भाई इसमें डरना क्या ? पक्षी हो या यक्ष-रक्ष हो, चाहे किन्नर ही हो, गेंद मार कर उसको सज़ा दूँगा। राम की पादुका जो लाँघेगा उसी को मारूँगा ॥ ४१९ ॥

इस तरह बहुत अनुमान भिड़ाने के उपरान्त पक्षी समझकर भरत ने निशाना साधा। अस्सी लाख मन वाला गेंद धनुष पर साध कर 'जय-राम' कहकर उन्होंने छोड़ा। भरत का यह गेंद अचूक निशाने पर जा लगा और हनुमान को वह लाखों-वज्रों सा जाकर लगा। पैर के तलुवे से जाकर वह गेंद लगा। हनुमान मूर्च्छित हो गये, बुद्धि मन्द पड़ गई, तेजशून्य हो गये और उनमें शक्ति नहीं रही। अन्तरिक्ष में घूमते हुए पवन-कुमार गिरने लगे। गेंद से हनुमान मूर्च्छित हो गये, आँखों से उन्हें कुछ भी देख नहीं

बाँटुले मुच्छित हनू, च'क्षे नाहि देखे ※ मुखे रक्त उठे तार झलके-झलके
हतज्ञान ह'ये पड़े पवन-नन्दन ※ नाहि छाड़े सूर्य आर से गन्धमादन
भूमे पड़ि करे हनू श्रीरामे स्मरण ※ मस्तके पर्ब्बत आछे, घूर्णित लोचन२०
'राम-'नाम शुनिया भरत-शत्रुघन ※ निकटे हनूर एल भाइ दुइजन
भरत बलेन, कपि, थाक कोन स्थान ※रामे जे स्मरिले, ताँर जान कि सन्धान
कोथा हैते आइले हे, कह विवरण ※जान कोथा राम-सीता, कोथाय लक्ष्मण
श्रीराम लक्ष्मण सीता गियाछेन वने ※ देखा कि ह'येछे तव राम-सीता-सने२१
वाक्य नाहि सरे मुखे, व्यथाय आकुल ※ वज्रसम बाजियाछे विषम बाँटुल
सभा छाड़ि वशिष्ठ आइल सेइस्थाने ※ हनूरे सबल कैल मन्त्र-ब्रह्म-ज्ञाने
योगेते सकल कथा वशिष्ठ-गोचर ※ मुनि जाने, यत कर्म्म लंकार भितर
लोकाचारे प्रकाश ना करे महामुनि ※ भरतेर प्रति कन सचातुरी बाणी
मुनि बले, भरत, एमन बुद्धि केने ※ कि कार्य्य साधन हैल मारि हनूमाने
परम-धार्म्मिक देखि बानर-प्रधान ※ रामेर वृत्तान्त जान पवन-सन्तान२२
वशिष्ठेर मन्त्रे हनूर दूर हैल व्यथा ※ भरत-सम्मुखे कहे श्रीरामेर कथा
अवधान ठाकुर भरत-शत्रुघन ※ राम-सीता-लक्ष्मणेर शुन विवरण

पड़ता और मुँह से भल-भल खून निकलने लगा। होश गवाँकर पवन-नन्दन गिरे किन्तु सूर्य और गन्धमादन को नहीं छोड़ा। ज़मीन पर गिरकर हनुमान राम का स्मरण करने लगे—उनके सिर पर पर्वत है और आँखें घूम रही हैं॥ ४२०॥

'राम' का नाम सुनकर भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई हनुमान के निकट आए। भरत ने कहा, हे कपि, तुम कहाँ रहते हो? तुमने राम का नाम लिया, उनके बारे में क्या जानते हो? तुम कहाँ से आये हो, इसका ब्योरा दो। क्या तुम जानते हो कि राम-सीता और लक्ष्मण कहाँ हैं? श्रीराम, लक्ष्मण और सीता वन गये हैं। क्या तुम्हारी भेंट राम-सीता के साथ हुई है?॥ ४२१॥

मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकल रही है, दर्द से वह व्याकुल हैं। भयंकर गेंद उनको वज्र जैसा आघात कर चुका है। सभा छोड़कर वशिष्ठ उस स्थान पर आए और हनुमान को ब्रह्मज्ञान मंत्र से सबल बनाया। वशिष्ठ को सारी बातें योग से विदित हैं। मुनि जानते हैं लंका में क्या-कुछ हो रहा है। लोकाचार के कारण महामुनि इन बातों को प्रकट नहीं करते। चतुराई से उन्होंने भरत से कहा, भरत ऐसी बुद्धि कैसे आई तुममें, हनुमान को मारकर कौन सा कार्य सिद्ध हुआ? यह वानर-प्रधान परम धार्मिक है। यह पवन-पुत्र हनुमान राम का हालचाल जानता है॥ ४२२॥

वशिष्ठ के मन्त्र से हनुमान की पीड़ा जाती रही। भरत के सामने

बासा करि छिला राम पञ्चवटी-बने ※ शूर्पणखा-नाक-कान काटेन लक्ष्मणे
रावणेर भग्नी शूर्पणखा से राक्षसी ※ युद्ध कैला चौद्द-हाजार निशाचर आसि
सबारे मारेन राम दण्डक-कानने ※ परे योगिवेशे सीता हरिल रावणे
सुग्रीवेर संगे राम करिया मित्रता ※ बालि मारि सुग्रीवेरे देन दण्ड-छाता
बानर लइया राम बान्धिला सागर ※ मिलिल असंख्य कपि अति भयंकर
बाइश-अंकेते एक महा-अक्षौहिणी ※ इहार अधिक कपि गणिते ना जानि
राक्षस-बानरे युद्ध हइल अपार ※ तिनमास रात्रि-दिवा युद्ध महामार
कभु हारे, कभु जिने, तिनमास जुझे ※ राक्षसेर माया बल कार साध्य बुझे
रावणेर पुत्र इन्द्रजित् करे रण ※ नागपाशे बान्धिलेक श्रीराम-लक्ष्मण
श्रीराम-लक्ष्मणे बान्धि वैरीगण हासे ※ गरुड़ आसिया मुक्त कैल नागपाशे
मुक्त यदि हैल नागपाशेर बन्धन ※ अतिकाय-इन्द्रजिते मारिला लक्ष्मण
कुपिया रावण-राजा सान्धाइल रणे ※ मयदानवेर शेल मारिल लक्ष्मणे
लक्ष्मणे करिया कोले रामेर क्रन्दन ※ आमारे पाठाये देन औषध-कारण
औषधि चिनिते नाहि पारि कोनमते ※ पाड़िया ल'ये जाइ पर्ब्बत-समेते

वह राम के बारे में बताने लगे। हे भरत और शत्रुघ्न, सुनो, राम-सीता-लक्ष्मण का हाल सुनो। राम पंचवटी वन में कुटिया बनाकर रहते थे। लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काट लिये। राक्षसी शूर्पणखा रावण की बहिन है। चौदह हज़ार राक्षसों ने आकर युद्ध किया। सभी को दंडक-वन में राम ने मार गिराया। बाद में योगी का भेष धरकर रावण ने सीता का हरण किया। सुग्रीव के साथ राम ने मित्रता की और बालि को मारकर सुग्रीव को राजदंड और छत्र दिया। वानरों को लेकर राम ने समुद्र को बाँधा। सारे कपि इकट्ठे हो गये और बड़ी भयंकर सेना बन गई। बाइस अंक से एक महा-अक्षौहिणी बनती है, इससे अधिक मुझ वानर को गिनती नहीं आती। वानरों और राक्षसों में अपार युद्ध हुआ। तीन महीने तक रात दिन घमासान युद्ध होता रहा। कभी हारते तो कभी जीतते। तीन मास तक जूझते रहे। भला राक्षसों की माया कौन समझ सकता है। रावण के पुत्र इन्द्रजीत ने युद्ध किया तो श्रीराम और लक्ष्मण को नागपाश से बाँध डाला। श्रीराम-लक्ष्मण को बाँधकर शत्रु हँसने लगे। गरुड़ ने आकर उनको नाग-पाश से मुक्त किया। अतिकाय और इन्द्रजीत को लक्ष्मण ने मार डाला। तब ताव खाकर राजा रावण लड़ाई करने आ गया। उसने लक्ष्मण को मयदानव की शेल से मार गिराया। लक्ष्मण को गोद में लेकर राम रोने लगे। मुझको औषध लाने के लिए भेज दिया। किसी तरह से भी मैं औषध नहीं पहचान सका तो समूचा पर्वत उखाड़ कर लिये जा रहा हूँ। मेरे जाने पर लक्ष्मण के प्राण बचेंगे। तुम्हारे प्रहार से मैं बेहोश हो

आमि गेले लक्ष्मणेर बाँचिवेक प्राण ❋ तोमार प्रहारे आमि हाराइनु ज्ञान
निस्तेज हइनु आमि बाँटुले तोमार ❋ पर्ब्बत तुलिते शक्ति नाहिक आमार
तुमि राज्य निले हे, रावण निल नारी ❋ लक्ष्मण त्यजिबे प्राण पोहाले शर्ब्बरी
तोमार प्रशंसा राम करने सदाइ ❋ सर्ब्बदा चिन्तेन राम तोमा दुइ-भाइ
दिवानिशि सुमंगल भावेन दोंहार ❋ रामसंगे वैरीभाव देखि ये तोमार
आमारे मारिया तव एइ हैल लाभ ❋ प्रकाश हइल रामसंगे वैरिभाव
लंकार वृत्तान्त तुमि ना जान भरत ❋ सकलेते आमार चाहिया आछे पथ
फिरिया जाइते शक्ति ना हबे आमार ❋ सहजेते ना हइबे सीतार उद्धार
लक्ष्मणेर शोके राम प्रवेशिबे बन ❋ निस्कण्टके राज्यभोग कर दुइजन२३
एतेक बलिल यदि पवन-नन्दन ❋ धरातले पड़ि कान्दे भरत-शत्रुघन
शोकाकुल कान्दे दोंहे भूमितले पड़े ❋ श्रीराम-लक्ष्मण-सीता बलि डाक छाड़े
आमरा थाकिते केन एतेक दुर्गति ❋ कटाक्षे मारिते पारि लंका-अधिपति
भरत बलेन, शुन बीर हनूमान ❋ त्वरिते पर्ब्बत ल'ये करह प्रयाण
आमिओ तोमार संगे जाइ लंकापुरे ❋ थाकुक शत्रुघ्न भाइ अयोध्या-नगरे
हनूमान बले, तुमि जाइबे किमते ❋ श्रीरामेर आज्ञा नाहि तोमा ल'ये जेते
भरत बलेन तबे, शुनह मारुति ❋ पर्ब्बत लइया तुमि जाह शीघ्रगति

गया। तुम्हारे गेंद के प्रहार से मैं तेजशून्य हो गया हूँ, अब मुझमें पर्वत उठाने की शक्ति नहीं रही। तुमने राज्य ले लिया, रावण ने पत्नी ले ली और रात समाप्त होते ही लक्ष्मण प्राण त्याग देंगे। राम सदा तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं, तुम दोनों भाइयों के बारे में सदा चिन्ता किया करते हैं। रातों-दिन तुम दोनों की मंगल-कामना करते हैं। लेकिन मैं देख रहा हूँ कि राम के साथ तुम्हारा शत्रुता का भाव है। मुझको मारकर तुमको यही लाभ हुआ कि राम के साथ तुम्हारा शत्रु-भाव प्रकट हो गया। भरत, तुमको लंका का हाल मालूम नहीं। सभी लोग मेरी बाट जोह रहे हैं। मुझमें लौट जाने की शक्ति नहीं आएगी और आसानी से सीता का उद्धार भी नहीं होगा। लक्ष्मण के शोक से राम वन चले जाएँगे, तुम दोनों भाई बेखटके राज्य का भोग करो ॥ ४२३ ॥

पवननन्दन ने जब इतना कहा तो भरत-शत्रुघ्न ज़मीन पर लोटकर रोने लगे। शोक से व्याकुल होकर दोनों ज़मीन पर पड़े रोते रहे। श्रीराम-लक्ष्मण-सीता का नाम ले-लेकर पुकारते रहे। हमलोगों के रहते हुए इतनी दुर्दशा क्यों ? हमलोग पल-भर में लंका के अधिपति को मार सकते हैं। भरत ने कहा, हे वीर हनुमान सुनो, झटपट पर्वत लेकर रवाना हो जाओ। मैं भी तुम्हारे साथ लंका चलूँगा। भाई शत्रुघ्न यहीं अयोध्या में रहें। हनुमान ने कहा, तुम कैसे जा सकते हो ? तुमको ले जाने के लिए श्रीराम की कोई आज्ञा नहीं।

हनूमान बले, गिरि नाड़िते ना पारि ❋ बलहीन हइयाछि, बल ना, कि करि
योजनेक उच्चे यदि पार तुलि दिते ❋ तबे आमि पारि ए-पर्ब्बत ल'ये जेते२४
शत्रुघ्न कहिछेन हनूमान-आगे ❋ पर्ब्बत तुलिया दिते कोन भार लागे
शत्रुघ्न आनिया दिल धनु एकखान ❋ गुण दिया भरत जुड़िला ताहे बाण
भरत बलेन, बाछा पवन-कुमार ❋ पर्ब्बत-सहित उठ बाणेते आमार
आकर्ण पूरिया बाण एड़िला भरत ❋ हनूमान-सह शून्ये उठिल पर्ब्बत
शतेक योजन ऊर्ध्वे तुलि दिल बाणे ❋ हनूमान भरतेर बिक्रमे बाखाने
भरत बड़इ बीर, भावे हनूमान ❋ आमा-सह बाणेते तुलिला गिरिखान
सागर हइया पार चले वायुवेगे ❋ राखिल पर्ब्बत ल'ये सबाकार आगे४२५

सुषेण-कर्त्तृक गन्धमादन-पर्ब्बत हइते औषध-ग्रहण ओ तद्वारा लक्ष्मणेर जीवन-दान

पर्ब्बत देखिया सबे पाइल विस्मय ❋ प्रणाम करिया हनू रघुनाथे कय
औषध चिनिते नाहि पारि कोनमते ❋ एकारणे आनिलाम पर्ब्बत-समेते४२६
श्रीराम बलेन, बापु पवन-कुमार ❋ त्रिभुवने कोन कार्य असाध्य तोमार

भरत ने कहा, तो फिर सुनो मारुति, तुम शीघ्र पर्वत लेकर चले जाओ। हनुमान ने कहा मैं पर्वत को हिला नहीं पा रहा हूँ, मैं बलशून्य हो गया हूँ, बताओ मैं क्या करूँ ? यदि योजन भर तुम मुझको ऊँचा कर उठा दो तो मैं यह पर्वत लेकर जा सकता हूँ ॥ ४२४ ॥

शत्रुघ्न ने हनुमान से कहा, पर्वत को उठा देने में कौन सा भार है। शत्रुघ्न ने एक धनुष ला दिया, उसपर प्रत्यंचा चढ़ाकर भरत ने बाण साधा। भरत ने कहा, सुनो पवनकुमार मेरे बाण से तुम पर्वत के साथ ऊपर उठो। ऐसा कहकर कान तक खींचकर भरत ने बाण फेंका, हनुमान के साथ पर्वत शून्य में उठ गया। बाण ने उनको सौ योजन ऊपर उठा दिया। हनुमान ने भरत का विक्रम बखाना। हनुमान सोचने लगा, भरत बड़ा ही वीर है, मेरे साथ इस पर्वत को भी ऊपर उठा दिया। सागर पार कर वह वायुवेग से चला और जाकर सबके सम्मुख पर्वत को रख दिया ॥ ४२५ ॥

सुषेण द्वारा गन्धमादन पर्वत से औषध निकालना और उसके द्वारा लक्ष्मण को प्राण-दान देना

पर्वत देखकर सभी लोगों को आश्चर्य हुआ। प्रणाम कर हनुमान ने रघुनाथ से कहा, किसी तरह से भी औषध नहीं पहचान सका इसी कारण पर्वत ही उठाकर लेता आया ॥ ४२६ ॥

श्रीराम ने कहा, पुत्र, पवन-कुमार तुम्हारे लिए संसार में कौन सा कार्य

राम बले, हनू दिल पर्ब्बत आनिया ❋ आपनि सुषेण, लह औषध चिनिया२७
श्रीरामेर आज्ञाते सुषेण-वैद्य जाय ❋ सकल पर्ब्बतमय खुँजिया बेड़ाय
छय-शृंग पर्ब्बत से अद्भुत-निर्म्माण ❋ प्रथम शृंगेते देखे शंकरेर स्थान
द्वितीय शृंगेते देखे दिव्य सरोवर ❋ तृतीय शृंगेते पशु चरिछे बिस्तर
चतुर्थ शृंगेते देखे खरतरा-नदी ❋ नदीर दुकूले देखे बिस्तर औषधि
देवगण-आदि केलि करेन आनन्दे ❋ मृतदेहे प्राण पाय औषधेर गन्धे
औषधेर गन्धे प्राण पाय मरा कत ❋ एइजन्य नाम गन्धमादन-पर्ब्बत२८
आनन्दे सुषेण हनूमानेरे बाखानि ❋ चिनिया औषध आने बिशल्य-करणी
औषध लइया बुड़ा नामे भूमितले ❋ तखनि औषध बाटे रत्नमय शिले
स्मरण करिल मने पिता धन्वन्तरि ❋ श्रीराम-लक्ष्मण-पदे नमस्कार करि२९
औषध आनिया दिल लक्ष्मणेर नाके ❋ आनन्दे बानरगण 'राम-जय' डाके
औषधेर घ्राण जाय लक्ष्मण-उदरे ❋ क्रमे-क्रमे सर्ब्ब-अंगे औषध सञ्चारे
भग्न छिल पाँजर, से लागिलेक जोड़ा ❋ क्रमे-क्रमे लक्ष्मणेर जाना गेल साड़ा
अन्तरे अन्तरे बिन्धे औषधेर घ्राण ❋ सज्ञान हइल बीर, सञ्चारिल प्राण

असंभव है। फिर राम ने सुषेण से कहा, हनुमान ने पर्वत ला दिया है, सुषेण तुम औषध पहचान लो ॥ ४२७ ॥

श्रीराम की आज्ञा से सुषेण वैद्य चल पड़ा और सारे पर्वत भर में ढूँढ़ने लग गया। छह चोटियों वाला वह पर्वत विचित्र बनावट का है। पहली चोटी पर शंकर का स्थान है। दूसरी चोटी पर दिव्य सरोवर है। तीसरी चोटी पर बहुत सारे पशु चर रहे हैं। चौथी चोटी पर तेज धार वाली नदी देखी। नदी के दोनों तटों पर पर्याप्त औषधि दिखाई पड़ी। उस पर देवता आदि आनन्द से केलि करते हैं। औषध की गन्ध से मृतदेह में भी प्राणों का संचार हो जाता है। कितने ही मृतों को इस गन्ध से प्राण मिल जाते हैं इसी कारण इस पर्वत का नाम गन्धमादन है ॥ ४२८ ॥

इस प्रकार आनन्द से सुषेण हनुमान की प्रशंसा करने लगा। वह विशल्य-करणी औषध को पहचान कर ले आया। औषध लेकर बूढ़ा सुषेण ज़मीन पर उतरा और फ़ौरन रत्नमय सिलबट्टे पर औषध पीसने लगा। उसने मन ही मन पिता धन्वन्तरि का स्मरण किया और श्रीराम-लक्ष्मण के चरणों में नमस्कार किया ॥ ४२९ ॥

औषध लाकर उसने लक्ष्मण के नाकों से लगायी। आनन्द से सारे वानर 'राम की जय' का नारा लगाने लगे। औषध की गन्ध लक्ष्मण के हृदय में पहुँची और धीरे-धीरे सारे अंगों में औषध का संचार हुआ। पसली टूट गई थी, वह जुड़ गई और धीरे-धीरे लक्ष्मण में स्पन्दन होने लगा। रोंए-रोंए में औषध की गन्ध प्रवेश कर गई, वीर लक्ष्मण के शरीर में प्राण आ गये और

चक्षु मेलि लक्ष्मण श्रीराम-पाने चान ✻ भाये सुस्थ देखि रामेर स्थिर हैल प्राण
बिभीषण सुग्रीवेते करे कोलाकुलि ✻ चारिदिके बानरेर पड़े हुलाहुलि
भाइ भाइ बलि राम हन उतरोल ✻ पुलकेते श्रीराम लक्ष्मणे देनकोल
लक्ष्मणे लइया कोले तिलेक ना एड़े ✻ श्रीरामेर च'क्षे जल मुक्ताधारा पड़े
रामायणे शक्तिशेल शुने जेइजन ✻ अपार दुर्गति तार खण्डे ततक्षण४३०

हनूमान-कर्त्तृक सप्त-राक्षसबध, यथास्थाने गन्धमादन-गिरि-स्थापना
ओ मृत-गन्धर्व्वगणेर प्राणदान

लक्ष्मण पाइल प्राण, कपिगण देखे ✻ पर्ब्बते बानरगण उठे लाखे-लाखे
लम्फे-झम्पे पर्ब्बतेर वृक्षशाखा भाँगे ✻ फल-फूल खाइछे बानरगण रंगे
बहुदिन उपवास, जुझिया विकल ✻ उदर पूरिया खाय यत फूल-फल
फल-फूल खाइया छिंड़िल यत लता ✻ आनन्दे छिंड़िया खाय नव-नव पाता
फल-फूल खाइया बृहत् हैल पेट ✻ नड़िते चड़िते नारे, माथा करे हेंट४३१
जाम्बवान् कहिछे श्रीराम-विद्यमान ✻ कार्यसिद्धि हइल, लक्ष्मण पाइल प्राण
पर्व्वत राखिते जाक् वीर हनुमाने ✻ आज्ञा देन राम जाम्बवानेर बचने

वह होश में आ गये। आँखें खोलकर लक्ष्मण ने श्रीराम की तरफ़ देखा। भाई को स्वस्थ देखकर राम का चित्त शान्त हुआ। विभीषण और सुग्रीव एक दूसरे का आलिंगन करने लगे। चारों ओर वानरों में धूम मच गई। भाई-भाई कहकर श्रीराम व्याकुल हो उठे। पुलकित होकर श्रीराम ने लक्ष्मण को गोद में ले लिया। लक्ष्मण को अँकवार में लेकर श्रीराम की आँखों से मोतियों के दाने जैसे आँसू गिरने लगे। रामायण में शक्तिशेल वाला अध्याय जो व्यक्ति सुनता है उसकी अपार दुर्दशा भी दूर हो जाती है ॥ ४३० ॥

हनुमान द्वारा सप्त-राक्षस-वध, यथास्थान गन्धमादन गिरि-स्थापना
और गन्धर्वों को प्राणदान

वानरों ने देखा कि लक्ष्मण को प्राण मिल गये, वे लाखों की संख्या में पर्वत पर चढ़ गये। कूद-फाँद मचा कर वे पर्वत पर पेड़ों की शाखाएँ तोड़ने लगे। बहुत दिनों से अनाहार चल रहा है, लड़ते-लड़ते भी बेहाल हो गये हैं, पेट भर कर वे फल-फूल खाने लगे। फल-फूल खाकर सारी बेलें व लताएँ तोड़ डालीं, नई-नई कोंपलें तोड़कर खाने लगे। फल-मूल खाकर उनके पेट फूल गये और वे हिलने-डुलने से लाचार होकर सिर झुकाकर बैठ गये ॥ ४३१ ॥

तब जाम्बवान श्रीराम से कहने लगे, काम सफल हो गया, लक्ष्मण को प्राण मिल गये। वीर हनुमान पर्वत रखने चले जाएँ। जाम्बवान के कहने

राम-सुग्रीवेर काछे मागिया मेलानि ※ पर्व्वत लइया वीर करिल उठानि३२
पर्व्वत लइया माथे जाय अन्तरीक्षे ※ लंकार भितरे बसि दशानन देखे
सातटा राक्षस छिल कटके प्रधान ※ रावण करिल आज्ञा दिया गुया-पान
मस्तके पर्व्वत हनू, पड़िल विपाके ※ एइबेला गिया घेरि मार चारिदिके
बाँकामुख ओष्ठवक्र प्रचण्ड-लोचन ※ तालभंग सिंहमुख घोर-दरशन
उल्कामुख प्रभृति देखिते भयंकर ※ आज्ञा पेये सातबीर चलिल सत्वर
मेरु जिनि एक-एकजनेर शरीर ※ शून्यपथे हनूरे बलिछे सातबीर
देवता गन्धर्व्व नाहि मान कोनजना ※ आजि बेटा बानरा, बुझिब वीरपना
फिरिया जाइबे, बुझि वाञ्छा कर मने ※ यमालये पाठाइब आजिकार रणे३३
हनू बले, तोदेर मत लक्ष यदि आसे ※ रामेर प्रसादे मारि चक्षुर निमिषे
चारिदिके घेरि सबे जुझे एकबारे ※ माथाय पर्व्वत, बीर चाहे क्रोधभरे
हात नाहि नाड़े बीर, पर्व्वत ना फेले ※ पाक दिया सातजने जड़ाय लांगुले
लांगुले जड़ाये बीर मारिल आछाड़ ※ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़३४
तालभंग निशाचर बड़इ सेयान ※ दुइ हाते लेज धरि हेंटे दिल टान
माथा गलाइया बेटा प'ड़े गेल स'रे ※ पलाइया जाय रड़े, नाहि चाहे फिरे

पर राम ने आज्ञा दी। राम और सुग्रीव से विदा लेकर वीर हनुमान पर्वत लेकर ऊपर उठ गये ॥ ४३२ ॥

सिर पर पर्वत लेकर वह अन्तरिक्ष में जो चले तो लंका के भीतर बैठे दशानन ने देख लिया। सेना में सात राक्षस प्रधान थे, उनको पान-सुपारी देकर रावण ने आज्ञा दी—सिर पर पर्वत है, हनुमान इस समय असुविधा में है, इसी वक्त उसको चारों ओर से घेर कर मार डालो। बाँकामुख, ओष्ठवक्र, प्रचंडलोचन, तालभंग, सिंहमुख, घोरदर्शन और उल्कामुख ये भीषण-आकार वाले सात वीर आज्ञा पाकर चल पड़े। हनुमान के पास जाकर वे बोले, देवता, गन्धर्व आदि किसी को भी तुम मानते नहीं हो, अरे अबोध बन्दर, आज तुम्हारी बहादुरी देख लूँगा। शायद मन में लौट जाने की अभिलाषा लिये हो, आज के युद्ध में तुमको यमालय भेज दूँगा ॥ ४३३ ॥

हनुमान ने कहा, तुम लोगों जैसे अगर लाख भी आ जाएँ तो पल-भर में राम के प्रसाद से मार गिराऊँ। तब हनुमान को चारों ओर से घेरकर सब राक्षस एक साथ उन पर हमला कर बैठे। सिर पर पर्वत लिये वीर हनुमान क्रोध से देखने लगे। न तो वीर ने हाथ हिलाया और न पर्वत उतार कर रखा, पर उन सातों को पूँछ में लपेट लिया। पूँछ में लपेट कर वीर हनुमान ने उनको दे पटका। उनके सिर और हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं ॥ ४३४ ॥

इनमें निशाचर तालभंग बड़ा ही चतुर था। उसने दोनों हाथों से पूँछ

लंकार भितर गेल पलाइया त्रासे ❋ रावणेरे बार्त्ता कहे, घन बहे श्वासे
अवधान कर राजा लंका-अधिपति ❋ घरपोड़ार हाते कारो नाहि अव्याहति
मारिवारे दाँड़ालाम सातजन बले ❋ मस्तके पर्ब्बत, हनू जड़ाले लांगुले
आमि माथा गलाइया बाँचिलाम प्राणे ❋ लेजे बाँधि आछाड़ मारिल छयजने
आछाड़ेते चूर्ण हैल छ'जनार हाड़ ❋ आमि बेंचे आछि, किन्तु भाँगियाछे घाड़
लांगूल छाड़ाब बलि घन दिनु टान ❋ लेजेर घर्षणे छिंड़े गेछे नाक-कान
प'ड़ेछिनु ये संकटे, शंकर ता' जाने ❋ तब पितृपुण्ये बाँचि आइलाम प्राणे
राक्षस-बचने रावणेर उड़े प्राण ❋ शमन-समान बैरी बीर हनूमान
यक्ष रक्ष दानव गन्धर्ब्ब विद्याधर ❋ एके एके हनूमाने बाखाने बिस्तर३५
अन्तरीक्ष-पथे चले पवन-नन्दन ❋ यथास्थाने राखिलेन से गन्धमादन
हनूमान बले, आमि पवन-नन्दन ❋ यतेक गन्धर्ब्बगणे क'रेछि निधन
जे औषधे लक्ष्मण पेलेन प्राणदान ❋ से औषधे सबाकार बाँचाइब प्राण
दुइ हाते कचाले औषध करे गुँड़ा ❋ जले गुले गन्धर्ब्ब-उपरे देय छड़ा

पकड़कर नीचे की ओर खींचा, फिर सिर निकाल कर तेज चाल से भाग खड़ा हुआ—पीछे पलट कर भी नहीं देखा। भयभीत होकर वह लंका के भीतर चला गया और रावण से सारा समाचार कहा। उसकी साँस तेज़ चल रही थी। वह बोला, हे लंका के अधिपति राजा रावण सुनो—इस घर-फूँकने वाले वानर के हाथों से किसी का बचाव नहीं। हम सातों उसको मारने के लिए कटिबद्ध हुए तो सिर पर पर्वत लिये उसने हमें पूँछ से लपेट लिया। अपना सिर निकाल कर मैं भाग खड़ा हुआ और बच गया। पूँछ से लपेट कर छहों को उसने दे पटका। पटकनी से उन छहों की हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं। मैं जिन्दा तो हूँ लेकिन मेरी गर्दन टूट चुकी है। पूँछ हटाने के लिए मैंने जोर से गर्दन को खींचा तो पूँछ की रगड़ से मेरे नाक-कान कट गये हैं। किस संकट में मैं फँस गया था केवल शंकर जी को मालूम है, तुम्हारे पिता के पुण्य से ही जान लेकर लौट आया हूँ। राक्षस के इस वाक्य को सुनकर रावण के प्राण उड़ गये। वह बोला, यह हनुमान तो यम-सरीखा शत्रु है। यक्ष, रक्ष, दानव, गन्धर्व और विद्याधर आदि सभी एक-एक कर हनुमान की बड़ाई करने लगे ॥ ४३५ ॥

पवननन्दन हनुमान ने आकाश मार्ग से चलकर गन्धमादन को ठीक-ठौर पर रख दिया। हनुमान ने कहा, मैं पवन-नन्दन हूँ, जितने भी गन्धर्वों के मैंने प्राण लिये हैं, उनको उसी औषध से जिलाऊँगा जिससे लक्ष्मणजी को प्राण मिले हैं। दोनों हाथों से रगड़कर उसने औषध को चूर्ण किया, फिर पानी में घोल कर सारे गन्धर्वों पर छिड़क दिया। सारे गन्धर्व उठकर बैठ गये और चारों ओर देखने लगे। हनुमान को देखकर उसको खदेड़ने के लिए

उठिया गन्धर्ब्ब सब चारिदिके चाय ❊ खेदाड़िया हनूमाने मारिवारे जाय
लाफ दिया हनूमान उठिल आकाशे ❊लंकाकाण्ड गाहिल पण्डित कृत्तिवासे४३६

हनूमानेर कक्षतलस्त सूर्य्यदेवेर मुक्ति ओ ताहार पुरस्कार

हइया सागर पार अति कुतूहली ❊ सेइ रात्रे कटके आइल महाबली
कार्यसिद्धि करिया आइल हनूमान ❊ श्रीरामेर निकटे पाइल बहु मान३७
ब'सेछेन बानरे बेष्ठित रघुनाथ ❊ उपनीत हनूमान करि जोड़हात
कक्षतले ताहार देखिया दिनकरे ❊ जिज्ञासा करेन राम पवन-कुमारे
कि अद्‌भुत देखि बापु पवन-नन्दन ❊ तोमार शरीरे केन रबिर किरण३८
हनूमान बले, प्रभु, कर अवगति ❊ आनिवारे औषधि गेलाम राताराति
औषधि खुजिया आमि शिखरे बेड़ाइ ❊ पूर्ब्बदिके दिनपति देखिया डराइ
पर्ब्बत हइते गेनु भास्करेर ठाँइ ❊ जोड़ हात करि स्तव करिनु गोसाँइ
तोमार सन्तान अति कातर श्रीराम ❊ क्षणेक कश्यप-पुत्र, करह बिश्राम
यावत् लक्ष्मण-बीर ना पान जीवन ❊ तावत् उदित नाहि हइओ तपन
आमार ए बाक्य ना शुनेन दिनपति ❊ धरिया एनेछि तेंइ ना पोहाते राति३९

वे दौड़ पड़े। हनुमान छलाँग मार कर आकाश में उठ गया। कृत्तिवास ने लंकाकाण्ड में यह गीत गाया ॥ ४३६ ॥

हनुमान की काँख से सूर्यदेव की मुक्ति और उनका पुरस्कार

सागर लाँघ कर उसी रात को महाबली हनुमान अत्यन्त कौतूहल के साथ सेना में आ पहुँचे। हनुमान कार्य सिद्ध कर लौट आये, श्रीरामचन्द्र से उनको बड़ा सम्मान मिला ॥ ४३७ ॥

रघुनाथ बानरों से घिरे बैठे थे कि हनुमान हाथ जोड़कर वहाँ जा पहुँचे। उनकी काँख के नीचे दिनकर को देख कर राम ने पवनकुमार से पूछा, क्यों पुत्र पवननन्दन, यह कैसी अनोखी बात देख रहा हूँ, तुम्हारे शरीर में सूर्य की किरणें कैसे दीख पड़ रही हैं ? ॥ ४३८ ॥

हनुमान ने कहा, प्रभु, सुनो। रातों-रात औषध लाने के लिए मैं गया। औषध ढूँढ़ते हुए मैं पर्वतों के शिखरों पर घूम रहा था कि पूरब की दिशा में सूर्य को देखकर डर गया। पर्वत से मैं भास्कर के स्थान पर गया। हाथ जोड़कर मैंने उनका स्तव किया। मैंने कहा, तुम्हारा वंशज श्रीराम अत्यन्त दुखी है। हे काश्यप-पुत्र थोड़ी देर के लिए विश्राम कर लो। जब तक वीर लक्ष्मण को प्राण प्राप्त न हो जाये तब तक हे तपन, उदित मत होना। मेरा कहना दिनपति ने नहीं सुना तो उनको मैं रात समाप्त होने से पूर्व ही पकड़ कर ले आया हूँ ॥ ४३९ ॥

श्रीराम बलेन, बापु, ए कि चमत्कार ※ ना पोहाय रजनी, ना घुचे अन्धकार
सूर्य्येर उदय-हेतु संसार प्रकाशे ※ छाड़ह भास्करे, इनि उठुन आकाशे४०
रामेर बचने बीर तोले दुइ हात ※ बाहिर हइल तबे जगतेर नाथ
सूर्य्येरे प्रणाम करे पवन-नन्दन ※ यतेक बानर करे चरण-बन्दन
आदिकर्त्ता आपन-बंशेर दिबाकर ※ शत-शत प्रणाम करेन रघुबर
उदय-पर्ब्बते भानु करेन गमन ※ पोहाइल विभावरी, प्रकाशे भुवन
कपिगण कहे, धन्य धन्य हनूमान ※ त्रिभुवने बीर नाहि तोमार समान४१
श्रीराम बलेन, धन्य धन्य हनूमान ※ तोमार प्रसादे भाइ पाइलेक प्राण
तोमारे प्रसाद दिब, कि आछे एमन ※ चाह यदि, लह, करि आत्म-समर्पण
एतेक कहिया राम देन आलिंगन ※ कृतार्थ बानरबंश माने कपिगण४२
बारमासी फल छिल सुग्रीवेर पाशे ※ सुग्रीव प्रसाद दिल, यत मने आसे
दिलेक दाड़िम्ब पक्व बिदारिया सन्धि ※ नारिकेल फल दिल सहस्त्रेक कान्धि
हाँड़िया हाँड़िया ताल दिलेक मधुर ※ दिलेक खाइते बहु सुमिष्ट खेजुर
बड़ बड़ आम्र दिल खाइते रसाल ※ विघत-प्रमाण कोष दिलेक काँटाल

श्रीराम ने कहा, भाई यह भी बड़ा चमत्कार है। न रात्रि समाप्त होगी और न अन्धेरा दूर होगा। सूर्य के उदय के कारण ही सारा संसार प्रकाशित होता है। भास्कर को छोड़ दो, वे गगन में उदित हों ॥ ४४० ॥

राम का वचन सुनकर वीर ने दोनों हाथ ऊपर उठा लिये। तब जगत् को प्रकाश देने वाले भास्कर बाहर निकल आए। पवननन्दन ने तब सूर्य को प्रणाम किया। सारे वानरों ने भी उनका चरण-वन्दन किया। अपने ही वंश के आदि पुरुष सूर्य का रघुबर ने शत-शत नमन किया। भानु उदय-पर्वत पर चले गये। रात्रि समाप्त हो गयी, सारा भुवन प्रकाशित हो गया। कपियों ने कहा, धन्य हो तुम हनुमान, तुम्हारे समान तीनों लोक में कोई वीर नहीं ॥ ४४१ ॥

श्रीराम ने कहा, हनुमान तुम धन्य हो। तुम्हारी ही कृपा से मेरे भाई को प्राण मिले। तुमको कुछ प्रसाद दूँ ऐसा मेरे पास है भी क्या। कहो तो मैं अपने को सौंप सकता हूँ। इतना कहकर राम ने उसे अँकवार में ले लिया। कपिगण सोचने लगे कि वानरों का वंश कृतकृत्य हो गया ॥ ४४२ ॥

सुग्रीव के पास बारहमासी फल था। सुग्रीव ने जी भर कर प्रसाद दिया। उसने अनार को तोड़ कर दिया और एक हजार नारियल के गौद दिये। बहुत बड़े-बड़े और मीठे ताड़ दिये और बहुत ही मीठा खजूर खाने को दिया। खाने में रसभरे बड़े-बड़े आम दिये और बालिश्त भर बड़े-बड़े कोये वाले कटहल दिये। सफेद, काले, लाल आदि विभिन्न रंग के फल दिये। डोंगे भर-भर कर शहद पीने के लिए दिया। राजा ने फल-फूल

नाना वर्ण फल दिल श्वेत काल राँगा ❊ मधुपान करिबारे दिल बहु डोंगा
फल-फूल बिस्तर प्रसाद दिल राजा ❊ लक्ष बानरेते बहे फल-फूल-बोझा
राज-प्रसाद बहु फल पेये हनुमान ❊ प्राचीन बानरगण कैल कत दान
बाहक बानरे किछु-किछु दिया तोषे ❊लंकाकाण्ड गाहिल पण्डित कृत्तिवासे४४३

महीरावणेर लंकाय आगमन ओ रावणके आश्वास-प्रदान

रावण मरिबे कबे, भावे कपिगण ❊ हेनकाले श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण
कहिबार शक्ति नाहि, कन धीरे-धीरे ❊ एखनो रावण आछे जीबित-शरीरे
रावणे मारिया दुःख घुचाओ अन्तरे ❊ ना कर बिलम्ब आर, उठह सत्वरे
बिक्रम करेन राम लक्ष्मणेर बोले ❊ टलमल करे लंका कटकेर रोले४४४
कोलाहल शुनि भावे राजा दशानन ❊ मरिया मानुष बेटा पाइल जीवन
मरिया ना मरे एकि विपरीत बैरी ❊ जानिलाम, मजिल कनक-लंकापुरी
मरिल सकल बीर, शून्य हैल लंका ❊ आपनि जुझिब त्यजि मरणेर शंका
बन्धु-बान्धवादि कोथा केवा आछे आर❊ मने-मने चिन्ता करि देखि एकबार

प्रसाद में दिया। लाख-लाख वानर इन फल-फूलों का बोझ लाद कर ले गये। राज-प्रसाद से इतने फल पाकर हनुमान ने वृद्ध वानरों को कितना ही दान कर दिया। वाहक वानरों को भी कुछ-कुछ देकर उसने सन्तुष्ट किया। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकाण्ड का गीत गाया ॥ ४४३ ॥

महीरावण का लंका में आना और रावण को आश्वासन देना

वानरगण सोच रहे थे कि रावण कब मरेगा, ऐसे ही समय श्रीराम से लक्ष्मण ने कहा। उनमें अब भी बोलने की शक्ति नहीं थी इसलिए उन्होंने धीरे-धीरे कहा, अब भी रावण जीवित शरीर लिये बचा है। रावण को मार कर हृदय का दुख दूर करो। अब देर मत करो, जल्दी उठो। लक्ष्मण के वाक्यों से राम जोश में आ गये। सेनाओं के कोलाहल से लंका डगमगाने लगी ॥ ४४४ ॥

शोरगुल सुनकर राजा दशानन सोचने लगा—यह मनुष्य मर कर भी जी गया। यह कैसा विपरीत वैरी है कि मर कर भी नही मरता। समझ गया कि सोने की लंकापुरी इतने दिनों में चौपट हुई। सारे वीर मर गये और लंकानगरी सूनी हो गयी। मृत्यु का भय त्याग कर अब स्वयं ही युद्ध करूँगा। इष्ट-मित्रों में अब कौन कहाँ बचा है, मन ही मन सोचकर एकबार देख लूँ। स्वर्ग में वीरबाहु था वह यहाँ आकर मरा, समझ में नहीं आता कि युद्ध में किसको भेजूँ। इन्द्रजीत तो रहा नहीं, अब रण में कौन जायगा?

स्वर्गे छिल बीरबाहु मरिल आसिया ※ कारे पाठाइब युद्धे, ना पाइ भाविया
इन्द्रजित् नाहि, रणे जावे कोन जने ※ अश्रुधारा बहितेछे बिंशति-लोचने
अभिमाने शीर्ण अंग, मलिन वदन ※ क्षणे उठे क्षणे वैसे राजा दशानन
क्षणे-क्षणे मूर्च्छा ह'ये भूमितले पड़े ※ एतदिने पार्ब्बती-शंकर बुझि छाड़े४५
रावणेर माता से निकषा-नाम धरे ※ कान्दिते कान्दिते गेल रावण-गोचरे
सन्तानेर स्नेहवशे दुःखिता अन्तरे ※ रावणे बुझाय बुड़ी अशेष प्रकारे
तखन कहितु बापु,ना शुनिले काने ※ मजिल राक्षसकुल श्रीरामेर बाणे
बिभीषण भाइ तोर धर्म्मशील अति ※ एसेछिल बुझाइते, तारे मार लाथि
सीता दिते कहिलाम अशेष प्रकारे ※ ना शुनिले वंशनाश करिवार तरे
भाग्येते आछिल दुःख, शुनह रावण ※ आपना राखिते युक्ति करह एखन
एक युक्ति आछे बापु, कहि ये तोमारे※ दिग्विजये गेले जबे पाताल-भितरे
ब्रह्मार वरेते पेले सुन्दर नन्दन ※ महीते जन्मिल, नाम से महीरावण
पातालेते आछे पुत्र सर्ब्ब-गुणवान् ※ सेइ हैते हइबे दुःखेर अवसान४६
विषादे हरिष हैल निकषार बोले ※ मनेते पड़िल, पुत्र आछये पाताले
पाताले आछये पुत्र से महीरावण ※ महातेज धरे पुत्र, जिने त्रिभुवन

उसकी बीसों आँखों से आँसू ढरकने लगे। अभिमान से शरीर क्षीण हो गया है, वेश-भूषा मलिन हो गई है। राजा दशानन कभी बैठता तो कभी खड़ा हो जाता है, क्षण-क्षण में मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ता है, शायद इतने दिनों बाद शंकर-पार्वती उसका त्याग कर चले जा रहे हैं ॥ ४४५ ॥

रावण की माँ का नाम था निकषा। वह रोती हुई रावण के पास गई। बेटे के प्रति स्नेह के कारण बुढ़िया मन ही मन बड़ी दुखी थी, उसने रावण को कितने ही प्रकार से समझाया-बुझाया। बेटा, मैंने तभी कहा था लेकिन तुमने सुना नहीं। श्रीराम के बाणों से राक्षसों का वंश ध्वंस हो गया। तेरा भाई विभीषण जो कि धार्मिक मनोभाव का है, तुझे समझाने आया था, उसकी तूने लातों से खबर ली। मैंने कितने ही प्रकार से तुझे कहा कि सीता को लौटा दो लेकिन वंशनाश करने के लिए ही तूने मेरा कहना नहीं माना। भाग्य में दुःख लिखा था। सुनो रावण, अब अपने को बचाने के लिए मेरा परामर्श मानो। तुमसे बताती हूँ, एक सलाह है। जब तुम दिग्विजय पर निकल कर पाताल के अन्दर गये थे तब ब्रह्मा के वर से तुमको एक सुन्दर पुत्र मिला था। वहीं (धरती) में उसका जन्म हुआ इसलिए उसका नाम पड़ा महीरावण। वह सर्वगुण-सम्पन्न पुत्र पाताल में है। उसी से तुम्हारा सारा दुःख दूर होगा ॥ ४४६ ॥

निकषा के वचन से विषाद में हर्ष उत्पन्न हो गया। उसको याद आ गया कि पाताल में महीरावण नामक पुत्र है। महीरावण महातेजयुक्त पुत्र है,

हेन पुत्र थाकिते मजिल लंकापुरी ❋ ताहार सम्मुखे जुझिबेक कोन बैरी
कालिका पूजिया से पाइल वरदान ❋ अव्याहत माया जाने, सर्व्वत्र प्रमाण
आछये दुर्ज्जय पुत्र पाताल-भितरे ❋ मारिते दुर्ज्जय बैरी सेइजन पारे
पूर्व्वकथा आछे, ताहा हैल स्मरण ❋ बिपदे स्मरण क'रो, आसिब तखन४७
एकमने चिन्ते तारे राजा लंकेश्वर ❋ टनक नड़िल तार कपाल-उपर
पातिलेक अंक मही खड़ि ल'ये हाते ❋ एके-एके त्रिभुवन लागिल गणिते
सकल पाताल-पुरी चिन्ते एके-एके ❋ आकाश-पाताल गणे, किछु नाहि देखे
पृथिवी गणिया स्थिर नाहि हय चित्ते ❋ कोन जन स्मरे मोरे पड़िया बिपत्ते
सागरेर उपरे कनक-लंकापुरी ❋ ताहाते आछये पिता लंका-अधिकारी
असमय पितार जानिल से कारण ❋ तथिर कारणे पिता करिल स्मरण४८
एतेक भाविया तबे स्थिर करि मन ❋ त्वराय भेटिते जाय पिता दशानन
शनिवारेर शव जेन संगे संगी चाय ❋ इन्द्रजितेर दोसर हइते मही जाय
दैवेर निर्ब्बन्ध केह खण्डाइते नारे ❋ आपनि मरिते हाय यमे आने घरे
यात्रासिद्धि करि मन्त्र पड़िल त्वरिते ❋ ऊर्द्धवपथे सुड़ंग हइल आचम्बिते

वह तीनों लोक जीत चुका है। ऐसा पुत्र रहते हुए भी लंकापुरी ध्वंस हो गई। उसके सम्मुख कौन सा शत्रु है जो लड़ सकेगा। कालिका की पूजा कर उसको वरदान मिला है, उसको अव्याहत माया आती है और वह सर्वत्र जा सकता है। पाताल के भीतर अजेय पुत्र बैठा है, वही इस अजेय शत्रु को मार सकता है। पुरानी कथा है जो उसे अब याद आ गई—"विपत्ति में स्मरण करना, मैं तभी आ जाऊँगा" ॥ ४४७ ॥

राजा लंकेश्वर एक-मन हो उसका ध्यान करने लगा। उधर उसको भी अकस्मात् ही कुछ खटका। महीरावण ने खड़िया लेकर हिसाब लगाना शुरू कर दिया। सारे त्रिभुवन में सभी की गिनती करने लगा। एक-एक कर पाताल-पुरी में हरेक को सोचा। आकाश और पाताल गिनकर उसको कुछ भी नहीं मिला। पृथ्वी की गिनती लगाने पर उसका चित्त व्याकुल हो गया। विपत्ति में पड़कर कौन मेरा स्मरण कर रहा है। समुद्र के भीतर बनी हुई सोने की लंकापुरी है उसमें मेरे पिता लंका के अधिकारी हैं। पिता ने दुस्समय सोचकर स्मरण किया है, यह कारण उसको मालूम हो गया ॥ ४४८ ॥

इतना सोचने के उपरान्त उसने अपना मन स्थिर किया और तुरन्त पिता दशानन से भेंट करने चल पड़ा। शनिवार का शव जिस प्रकार अपना कोई साथी लेकर जाना चाहता है उसी प्रकार महीरावण भी इन्द्रजीत का साथी बनने चल पड़ा। दैव का लिखा कभी टल नहीं सकता, स्वयं मरने के लिए उसने यम को न्योता दिया। यात्रासिद्धि के लिए उसने झट मंत्रपाठ

अविलम्ब उपनीत लंकार भितर ※ सिंहासने बसि कान्दे राजा लंकेश्वर
महीरे देखिया राजा त्यजे सिंहासन ※ आलिंगन दिया कोले लइल नन्दन
कोलेते करिया शिरे करिल चुम्बन ※ मही कैल रावणेर चरण-वन्दन
सिंहासने दु'जने बसिल एकासने ※ कर जोड़ करि मही बले पितृस्थाने
कोन कार्य्ये पिता, मोरे करिले स्मरण ※ आज्ञा कर, उद्धारिब कोन प्रयोजन
कान्दिया रावण बले' च'क्षे पड़े जल ※ लंकार दुर्गति यत, कहिछे सकल४९
रावण बले, शुन बापु, दुःखेर काहिनी ※ शूर्पणखा तव पिसी, आमार भगिनी
हइया मानुष तार काटे नाक-कान ※ केमने सहिब प्राणे एत अपमान
मही बले, कह पिता, शुनि बिबरण ※ आचम्बिते नाक-कान काटे कि कारण
रावण बले, शूर्पणखा भगिनी कनिष्ठा ※ पाइया वैधव्य-दशा सदाचारे निष्ठा
लंकार ऐश्वर्य-सुख परित्याग करि ※ पंचबटी वने छिल ह'ये वनचारी
चौद्द-हाजार निशाचर खर ओ दूषण ※ दियाछिनु शूर्पणखाय करिते रक्षण
गियाछिल शूर्पणखा पुष्प-अन्वेषणे ※ एतेक प्रमाद हबे, आगेते ना जाने
दशरथ-नामे राजा, जन्म सूर्य्यवंशे ※ श्रीराम-लक्ष्मण पुत्रे दिल बनवासे

किया और एकाएक ऊपर सुरंग बन गयी। उस सुरंग से वह अविलम्ब लंका जा पहुँचा। सिंहासन पर बैठे राजा लंकेश्वर रो रहे हैं। महीरावण को देखकर राजा रावण ने सिंहासन छोड़ दिया और दोनों बाहों में भरकर महीरावण का आलिंगन किया, उसको गोद में लेकर उसका सिर चूमा। महीरावण ने रावण का चरण-वन्दन किया। दोनों सिंहासन पर एक साथ बैठे। हाथ जोड़ कर महीरावण ने पिता से कहा। हे पिता, तुमने किस काम से मुझको याद किया। मुझको आज्ञा दो, तुम्हारा क्या काम है? मैं पूरा करूँ। आँखों से आँसू बहाते हुए रावण ने रोते-रोते लंका की सारी दुर्दशा कह सुनाई ॥ ४४६ ॥

रावण ने कहा, बेटा दुःख की कहानी सुनो। मेरी बहन शूर्पनखा जो तुम्हारी बुआ है, उसके नाक-कान मनुष्य होकर इन लोगों ने काट लिये? इतना अपमान मैं कैसे सह सकता था। महीरावण ने कहा, पिता जी, पूरा ब्योरा सुनाओ, अचानक ही किस कारण उन्होंने नाक-कान काट लिये। रावण ने कहा, बहन शूर्पनखा सबसे छोटी है, विधवा होने के उपरान्त वह शुद्धाचार से रहने लगी। लंका की सुख-सम्पदा छोड़कर वह पंचवटी में वनवासिनी बन कर रहने लगी। शूर्पनखा की रक्षा के हेतु मैंने खर और दूषण के साथ चौदह हज़ार राक्षस भी नियुक्त कर दिये थे। फूलों की खोज में शूर्पनखा गई थी, ऐसी गड़बड़ी होगी यह उसे मालूम नहीं था। सूर्यवंश के एक राजा थे दशरथ, जिन्होंने अपने दोनों बेटों राम-लक्ष्मण को वनवास

संगेते बनिता तार, सीता-नामे नारी ❋ शूर्पणखा-संगे कहे बाक्य दुइ-चारि
पुष्प लागि रसाभाष नारी दुइजने ❋ कोप करि नाक-कान काटिल लक्ष्मणे
एइ अपमान कहे से खर-दूषणे ❋ सैन्य ल'ये गिया युद्ध करिल दु'जने
करिया तुमुल युद्ध दु'जनार सने ❋ राक्षस हाजार-चौद्द पड़े राम-बाणे
लंकाते आसिया भग्नी कान्दे मनोदुःखे ❋ सर्ब्ब-अंग ज्व'ले गेल काटा नाक देखे
जिज्ञासिनु, ए-दुर्गति करिलेक केटा ❋ शूर्पणखा बले; दादा, नर एक बेटा
दुइ-भाइ आसियाछे पंचवटी बने ❋ परमा-सुन्दरी एक नारी तार सने
शूर्पणखा मुखे शुनि ए सकल कथा ❋ कोपे हरि आनियाछि रामेर बनिता
वनेर बानरसब सहाय करिया ❋ सागर बान्धिल राम गाछ-पाथर दिया
सागर बन्धिया राम लंकापुरी बेड़े ❋ इद्रजित् वीरबाहु सबे रणे पड़े
सैन्य ओ सामन्त मारि दर्प कैल चूर्ण ❋ रणे मैल सहोदर भाइ कुम्भकर्ण
दुर्ज्जय लक्ष्मण-रामे जिनिते ना पारि ❋ संकटे पड़िया बापु, तोमारे ये स्मरि५०
रावण कहिला यदि एतेक काहिनी ❋ से महीरावण कहे करि जोड़पाणि
स्वर्णपुरी लण्डभण्ड हैल तव दोषे ❋ पश्चाते डाकिले सब करिया बिनाशे
सागरेर पारे जबे श्रीराम-लक्ष्मण ❋ तखन आमारे केन ना कैला स्मरण
मम डरे देव-दैत्य सबे करे शंका ❋ आमि विद्यमाने मजे स्वर्णपुरी लंका

भेज दिया। उनके साथ सीता नामक उनकी स्त्री थी। शूर्पनखा के साथ उसने दो-चार बातें हँसी-ठिठोली में कीं। ताव खा कर लक्ष्मण ने नाक-कान काट लिये। उसने आकर खर-दूषण से इस अपमान के बारे में बताया। दोनों अपनी सेना लेकर युद्ध करने गये। दोनों के साथ घनघोर युद्ध हुआ। राम के बाणों से चौदह हज़ार राक्षस खेत रहे। लंका में आकर बहन अति दुखी मन से रोने लगी, उसकी नाक कटी देखकर मेरे तनबदन में आग लग गई। मैंने पूछा, तुम्हारी यह दुर्दशा किसने की? शूर्पनखा ने कहा, दादा, एक मनुष्य ने मेरी यह दुर्गति की है। पंचवटी के वन में दो भाई आए हैं, उनके साथ एक परम-सुन्दरी नारी है। शूर्पनखा के मुँह ये बातें सुनकर मैं राम की स्त्री को चुरा लाया। वन के वानरों को अपना सहाय बनाकर राम ने पेड़-पत्थरों से समुद्र को बाँध डाला। समुद्र को बाँध कर राम ने लंकापुरी घेर ली। इन्द्रजीत, वीरबाहु सभी युद्ध में गिरे। सैन्य-सामन्त मारकर उसने मेरा घमंड चूर-चूर कर दिया। युद्ध में मेरा भाई कुम्भकर्ण भी मर गया। इन अजेय राम-लक्ष्मण को युद्ध में पराजित नहीं कर पा रहा हूँ। बेटा, संकट में पड़कर तुमको इसी लिए याद किया है ॥ ४५० ॥

रावण ने जब इतनी सारी कथा कह सुनाई तो महीरावण ने हाथ जोड़ कर कहा, तुम्हारे ही दोष से यह स्वर्ण-पुरी चौपट हुई। सब लोगों के विनाश

आमार बाणेर टान ना सहे संसारे ※ नर-बानरेते एत अपमान करे
मोर डरे देवगण जाय स्वर्ग छाड़ि ※ वान्धि आनि देवगणे गले दिया दड़ि
त्रिभुवने हेन कथा कोथाओ ना शुनि ※ जारे खाइ, सेइ खाय, अपूर्व्व काहिनी
कटाक्षे मारिब जारे, तार संगे रण ※ हेन माया करिव, ना जाने कोनजन
इन्द्र-शची थाके यदि एक सिंहासने ※ शचीरे आनिते पारि, इन्द्र नाहि जाने
नर-बानर भुलाइब कत वड़ काज ※ आर दुःख ना भाविह, शुन महाराज
श्रीराम-लक्ष्मण तव बैरी दुइजने ※ नरवलि दिब ल'ये पाताल-भुवने
राम-लक्ष्मणेरे आर नाहि तव शंका ※ सीता ल'ये भोग कर स्वर्णपुरी लंका ५१
मही यदि करिलेक एतेक आश्वास ※ हात वाड़ाइया जेन पाइल आकाश
रावण बले, पुत्र, तुमि प्राणेर समान ※ तोमा हैते आमार हइबे परित्राण
बुझिलाम, तोमा हैते बैरी हबे क्षय ※ तोमार गुणेते मोर सर्व्वत्रइ जय
मही बले शुन पिता लंका-अधिकारि ※ स्थिर ह'ये बैस तुमि, वैरी आमि मारि ४५२

के बाद तुमने मुझे बुलाया। जब श्रीराम-लक्ष्मण सागर के दूसरी ओर थे तभी मुझको तुमने क्यों नहीं बुलाया। मेरे भय से देव-दैत्य सभी काँपते हैं और मेरे रहते हुए स्वर्ण-पुरी लंका ध्वंस हो जाये! मेरे बाणों की चोट सारा संसार नहीं सह सकता और नर-वानर मिल कर तुम्हारा ऐसा अपमान कर रहे हैं! मेरे भय से देवता स्वर्ग छोड़कर भाग खड़े होते हैं, मैं देवताओं के गले में रस्सी बाँधकर ले आता हूँ। त्रिभुवन में ऐसी बात कभी सुनने को नहीं मिली कि जिसको हम खाते हैं वही हमको खाने लग जाय। जिसको कटाक्ष में मार गिराऊँ उसके साथ युद्ध कैसा? मैं ऐसी माया करूँगा जिसे कोई नहीं जानता। इन्द्र-शची यदि एक सिंहासन पर बैठे हों तो शची को उड़ा लाऊँ और इन्द्र को पता भी न चले। नर-वानर को भुलावे में डालना कोई बड़ा काम नहीं है। अब तुम दिल को छोटा मत करो महाराज! तुम्हारे दोनों शत्रु श्रीराम और लक्ष्मण को पाताल ले जाकर बलि दूँगा। अब तुम श्रीराम-लक्ष्मण से कोई भय मत करो। सीता को लेकर स्वर्ण-पुरी लंका में आनन्द भोग करो ॥ ४५१ ॥

महीरावण ने जब इतना आश्वासन दिया तो रावण को मानों हाथ बढ़ाते ही आकाश मिल गया। रावण ने कहा, बेटा तुम मेरे प्राणों के समान हो, तुम्हारे ही द्वारा मुझको इनसे त्राण मिलेगा। यह मैं समझ गया कि तुम्हारे ही द्वारा शत्रु का विनाश होगा, तुम्हारे ही गुणों के कारण मेरी सर्वत्र विजय होगी। महीरावण ने कहा, हे पिता, हे लंका के अधिकारी, तुम आराम से बैठो, मैं शत्रु का विनाश करता हूँ ॥ ४५२ ॥

विभीषण-कर्त्तृक रावण ओ महीरावणेर मन्त्रणा-श्रवण एवं राम-लक्ष्मणेर रक्षा-विधान

दुइजने कहे कथा बसि सिंहासने ❋ विभीषण निवेदिल रामेर चरणे
जोड़हाते रघुनाथे बले विभीषण ❋ निश्चिन्त हइया केन र'येछे रावण
इन्द्रजित् पड़ियाछे वीर नाहि आर ❋ कि मन्त्रणा करे रावण देखि एक बार
प्रणमिया श्रीराम-लक्ष्मण-जाम्बवाने ❋ पक्षिरूप धरिया चलिल विभीषणे
रावणेर अन्तःपुरे गेल अनिमिखे ❋ रावण-सहिते महीरावणेरे देखे
पिता-पुत्रे दुइजने बसि एकासने ❋ युक्ति करे दु'जनेते हरषित-मने
देखि महीरावणे चिन्तित विभीषण ❋ रामेर निकटे एल त्वरित-गमन५३
विभीषण कहे आसि करि जोड़हात ❋ आजि बड़ संकट ये देखि रघुनाथ
रावणेर पुत्र एक से महीरावण ❋ मायार सागर बेटा, बुद्धे विचक्षण
मन्दोदरी-गर्भे सेइ जन्मिल तनय ❋ ताहार संग्रामे सुरासुर करे भय
पातालपुरेते थाके बापेर आदेशे ❋ महा-बल-पराक्रम, सबे भय बासे
ताहार संग्रामे प्रभु नाहि कारो रक्षा ❋ त्रिभुवन-विजयी, धनुक-बाण-शिक्षा

विभीषण द्वारा रावण और महीरावण का परामर्श सुनना और राम-लक्ष्मण की सुरक्षा की व्यवस्था

दोनों (रावण-महीरावण) सिंहासन पर बैठे बातें कर रहे थे। विभीषण ने श्रीराम के चरणों में आकर निवेदन किया। रघुनाथ से विभीषण ने हाथ जोड़कर कहा, रावण यों निश्चिन्त क्यों बैठा हुआ है। वीर इन्द्रजीत मर गया है तो अब कोई वीर नहीं रहा। ज़रा देख आऊँ कि रावण क्या सलाह कर रहा है। श्रीराम-लक्ष्मण और जाम्बवान को प्रणाम कर विभीषण पक्षी का रूप धारण कर चल पड़ा। क्षणभर में वह रावण के अन्तःपुर में जा पहुँचा। वहाँ उसने रावण के साथ महीरावण को देखा। बाप-बेटे एक ही आसन पर बैठे हैं और काफ़ी आनन्दमग्न दशा में सलाह कर रहे हैं। महीरावण को देखकर विभीषण मन ही मन बड़ा चिन्तित हुआ। झट वह राम के पास वापस आ पहुँचा ॥ ४५३ ॥

लौटकर विभीषण ने हाथ जोड़ कर कहा, हे रघुनाथ, आज तो बड़ा संकट आया हुआ देख रहा हूँ। रावण का एक पुत्र है महीरावण। वह बुद्धि में विचक्षण तथा माया का समुद्र है। इस पुत्र ने मन्दोदरी के गर्भ से जन्म लिया। इसके साथ संग्राम में सुर-असुर सभी डरते हैं। बाप के आदेश से यह पाताल में रहता है। यह महा बलवान और पराक्रमी है, सभी लोग उससे डरते हैं। हे प्रभु, उसके साथ युद्ध में किसी की भी रक्षा नहीं। वह त्रिभुवन-विजयी है और धनुष-बाण की शिक्षा में निष्णात है। जिस प्रकार

माया पाति डाकिनीं छाओयाले जेन हरे ❋ सेइमत महीं माया करि चुरि करे
कत माया धरे, केह नाहि जाने सन्धि ❋ महामाया तार घरे सत्ये आछे बन्दी
जाहा मने करे, ताहा करिवारे पारे ❋ त्रिभुवन काँपे महीरावणेर डरे
हेन दुष्ट आसियाछे लंकार भितर ❋ आजि निशि जाग सबे हइया सत्वर
बुझिया सुयुक्ति कर मन्त्री जाम्बवान् ❋ महीर मायाते किसे पावे परित्राण५४
जाम्बवान् कहे, शुन वीर हनूमान ❋ विपदे नाहिक बन्धु तोमार समान
विभीषण-वचन करह अवगति ❋किरूपे निस्तार पाव आजिकार राति५५
हनूमान बले, शुन यत वीरभागे ❋ चोरा-बेटाय विनाशिब साराराति जेगे
मरिल सकल वीर, मही बेटा आछे ❋ बधि महीरावणे रावणे बधि पिछे
एखनो रावण बेटा जीते साध करे ❋ उपाड़िया लंकापुरी डुबाव सागरे
चतुर्द्दश - भुवनेते सुग्रीवेरे गति ❋ येखाने लुकाये थाके, नाहि अव्याहति
लेजेर कुण्डली-गड़ करिब निम्मर्माण ❋ सकले जागिया थाक ह'ये सावधान
रहिब सकल कपि गड़ आगुलिया ❋कार साध्य जाइबेक आमारे भाण्डिया५६
विभीषण बले, शुन पवन-नन्दन ❋ प्रतीत तोमार वाक्य हबे कोन जन

डायन मायाजाल बिछाकर बच्चा चुराती है उसी प्रकार महीरावण मायाजाल बिछाकर हरण करता है। ऐसी कितनी ही प्रकार की माया उसे आती हैं जो किसी को नहीं मालूम। वास्तव में महामाया उसके घर में बन्दिनी बनी हुई है। जो उसके दिल में आता है वही वह कर सकता है। महीरावण के डर से त्रिभुवन काँपता रहता है। ऐसा दुष्ट आज लंका के भीतर आया हुआ है। आज सभी लोग चौकन्ना होकर रात जागो। मंत्री जाम्बवान, आज समझ-बूझकर परामर्श करो कि महीरावण की माया से कैसे बचा जा सकता है ॥ ४५४ ॥

जाम्बवान ने कहा, हे वीर हनुमान सुनो, विपत्ति में तुम्हारे समान कोई मित्र नहीं। विभीषण की बातें सुनो और बताओ कि आज की रात हमें किस प्रकार से निस्तार मिल सकता है ॥ ४५५ ॥

हनुमान ने कहा, सारे वीरगण सुनो, इस दुष्ट चोर का विनाश हम सारी रात जाग कर करेंगे। सारे वीर मर चुके हैं बस यह महीरावण ही बचा है। इसको मारकर फिर हम रावण का वध करेंगे। अब भी यह रावण जीतने की आशा करता है। लंकापुरी उखाड़ कर समुद्र में डुबो दूँगा। चौदह भुवनों में सुग्रीव की गति है। कहीं पर भी कोई छिपा हो उसका बचाव नहीं। पूँछ की कुंडली बनाकर गढ़ का निर्माण करूँगा। सभी लोग सावधान होकर जागते रहो। सारे कपि इस गढ़ के पहरे में रहेंगे। देखें तो भला मुझको लाँघकर कौन चला जायेगा ॥ ४५६ ॥

विभीषण ने कहा, पवन-नन्दन सुनो। तुम्हारे वाक्यों पर कौन विश्वास

यावत् ए कालानिशि प्रभात ना हय ❋ तावत् आमार मने ना हबे प्रत्यय५७
श्रीराम बलेन, शुन पवन-कुमार ❋ आजि रात्रि उद्धारिते भरसा तोमार
हासिया हासिया कन मन्त्री जाम्बवान् ❋ हनूमान वीर बड़ कहिल प्रमाण
देखादेखि आसि यदि रणे देयहाना ❋ तब त ताहार संगे खाटे वीरपना
अलक्षिते आसि चोर जाबे चुरि क'रे ❋ देखिते ना पाबे हनू, कि करिबे तारे
अलक्षिते आसिबे से, चुरि विद्या जाने ❋ एकत्तरे सबाइ थाकह जागरणे ५८
जाम्बवान बले, तव अतुल विक्रम ❋ आजिकार रात्रि तुमि कर परिश्रम
एइबेला बैस सबे दृढ़ युक्ति करि ❋ बेला-अवसान हैल, आइल शर्व्वरी
जाम्बवान-कथा यदि हैल अवसान ❋ हेनकाले कर जुड़ि बले हनूमान
मायावी राक्षस सेइ कत माया जाने ❋ सन्धान ना पाय जेन, थाक सावधाने५९
श्रीरामेरे कहिलेन पवन-नन्दन ❋ विष्णुचक्र आकाशे करह आच्छादन
चक्र-आच्छादन यदि रहिल गगने ❋ शून्येते आसिते पारे काहार पराणे
विश्वकर्म्मा-पुत्र नल मायार निधान ❋ पाताले रहुक गिया ह'ये सावधान
सावधान ह'ये सबे रह सारि-सारि ❋लेजे गड़ बान्धि आमि ताहे रहि द्वारी६०

करेगा। जब तक यह विपत्ति-भरी रात्रि समाप्त नहीं होती तब तक मेरे मन में विश्वास नहीं होगा ॥ ४५७ ॥

श्रीराम ने कहा, पवनकुमार सुनो। आज की रात तुम्हारे ही भरोसे हमारा उबार है। हँस कर वीर जाम्बवान ने कहा, यह सिद्ध हो गया कि हनुमान बहुत बड़ा वीर है। आमने-सामने आकर यदि युद्ध करने लग जाय तब तो उसके साथ दिलेरी चल सकती है। किन्तु अनदेखे आकर अगर कोई चोर चोरी कर ले जाय और हनुमान उसको देख न सके, तो उसका वह क्या बिगाड़ लेगा। जो चौर्य-विद्या-विशारद है वह अनदेखे आयेगा। सभी लोग एक स्थान पर इकट्ठे होकर जागते रहो ॥ ४५८ ॥

जाम्बवान ने कहा, तुम्हारा पराक्रम अतुलनीय है—आज की रात तुम परिश्रम करो। सभी लोग दृढ़संकल्प होकर अभी से बैठ जाओ, दिन समाप्त हो गया और रात आ गयी। जाम्बवान की बातें समाप्त हुईं तो हाथ जोड़कर हनुमान ने कहा, वह मायावी राक्षस जाने कितनी माया जानता है। उसको कुछ भी न पता लगने दो, सावधानी से रहो ॥ ४५९ ॥

श्रीराम से पवननन्दन ने कहा, विष्णुचक्र से गगन को आच्छादित कर दो। अगर गगन में यह चक्र-आच्छादन रहेगा तो शून्य के रास्ते कौन आ सकेगा। विश्वकर्मा का पुत्र नल भी माया का निधान है। वह पाताल पहुँचकर सावधान रहे। सभी लोग सावधान होकर कतार में रहो। पूँछ से गढ़ बनाकर मैं उसी का दरवान बन जाता हूँ ॥ ४६० ॥

लेज हय दीर्घाकार शतेक योजन * गठिल विचित्र गड़ पवन-नन्दन
प्राचीर चौतार हैल अति मनोहर * सकल कटक ढोके ताहार भितर
सुग्रीवेर कोले राम कमललोचन * अंगदेर कोले र'न ठाकुर लक्ष्मण
लांगूलेर गड़े वीर जुड़िलेक देश * ताहाते ससैन्ये राम करेन प्रवेश
अपूर्व्व लेजेर गड़ निर्म्माण जे करि * विभीषण भ्रमितेछे हइया प्रहरी
सकल-कटक-माझे श्रीराम-लक्ष्मण * गाछ-पाथर हाते कपि करे जागरण
लेजेते बान्धिल गड़, ठेकिल गगन * उपरेते विष्णुचक्र फेरे घने-घन
गड़ेर द्वारेते द्वारी आपनि से रहे * कार साध्य प्रवेश करिते पारे ताहे
एइरूप सकलेते तथाय रहिल * कृत्तिवास रामायण यत्ने विरचिल४६१

महीरावण-कर्त्तृक मायाबले श्रीराम-लक्ष्मण-हरण

द्वितीय प्रहर निशि घोर अन्धकार * विभीषण बले, शुन पवनकुमार
आपनि पवन यदि आसे तव पिता * प्रवेश करिते तारे नाहि दिबे हेथा
एत बलि बाहिर हइल विभीषण * गड़ेर चौदिके देखे करिया भ्रमण४६२
रावणे प्रणाम करि से महीरावण * श्रीरामेर निकटेते करिल गमन
ठाट कटक हस्ती घोड़ा ना लय दोसर * माया करि एकाकी चलिल निशाचर

पूँछ शत योजन लम्बी हो गई, उससे पवननन्दन ने विचित्र गढ़ का निर्माण कर लिया। चारों ओर मनोहर प्राचीर बन गई। सारी सेना उसी के भीतर आ गई। सुग्रीव की गोद में कमललोचन राम लेटे और अंगद की गोद में लक्ष्मणजी। पूँछ के गढ़ से वीर ने सारा युद्धक्षेत्र घेर लिया। उसी में अपनी सारी सेना के साथ राम ने प्रवेश किया। पूँछ वाले गढ़ के निर्माण के बाद विभीषण प्रहरी बनकर चक्कर लगाने लगा। सारे कटक के बीच में श्रीराम और लक्ष्मण हैं। हाथों में पेड़ और पत्थर लिये कपि जागने लगे। पूँछ से गढ़ बाँधा जो कि गगन छूने लगा और गगन में विष्णु-चक्र बड़े जोर से घूमने लगा। गढ़ के द्वार पर द्वारी बना वह स्वयं खड़ा हो गया। किसकी शक्ति है कि उसमें प्रवेश कर ले। इस प्रकार सभी लोग वहाँ अवस्थित हो गये। कृत्तिवास ने यत्न से रामायण की रचना की ॥ ४६१ ॥

महीरावण द्वारा मायाबल से श्रीराम-लक्ष्मण का हरण

रात का दूसरा पहर था, चारों ओर घोर अंधेरा छाया हुआ था, विभीषण ने कहा, पवन-कुमार सुनो अगर स्वयं तुम्हारे पिता पवन भी आवें तो भी उनको यहाँ घुसने मत देना। इतना कहकर विभीषण बाहर निकल गया और गढ़ के चारों ओर चक्कर लगाकर देखने लगा ॥ ४६२ ॥

रावण को प्रणाम कर महीरावण श्रीराम के पास गया। हाथी, घोड़ा,

आकाशे आसिते चक्र देखिल सत्वरे ❊ ठाठ कटक देखे सब गड़ेर भितरे
मने-मने भावे मही रावण-नन्दन ❊ मायाते हरिब आजि श्रीराम-लक्ष्मण
विभीषणे देखे तथा गड़ेर बाहिरे ❊ किरूपे जाइब आमि उहार गोचरे६३
मने-मने चिन्ता महा करिया तखन ❊ मायाते हइल अज-राजार नन्दन
दशरथ ह'ये आसि दिल दरशन ❊ दशरथ बले, शुन पवन-नन्दन
आमार सन्तान दु'टि श्रीराम-लक्ष्मण ❊ श्रीराम-लक्ष्मण-सने करि दरशन
हनूमान बले, गोसाँइ करि निवेदन ❊ क्षणेक विलम्ब कर, आसुक विभीषण
हेनकाले विभीषण दिला दरशन ❊ तरासे पलाये गेल से महीरावण
हनू बले, शुनह धार्म्मिक विभीषण ❊ राजा दशरथ एसेछिलेन एखन
विभीषण बले यदि आसे तव पिता ❊ प्रवेश करिते तबु नाहि दिबे हेथा६४
एत बलि विभीषण तथा हैते जाय ❊ अन्तरे थाकिया मही देखिवारे पाय
भरत हइया एल हनूमान-काछे ❊ श्रीराम-लक्ष्मण दुइ-भाइ कोथा आछे
चौद्दबर्ष वनवासी मस्तकेते जटा ❊ दशरथ-राजार आमरा चारि बेटा
श्रीराम-लक्ष्मण कोथा करि दशरन ❊ एत शुनि कहिछेन पवन-नन्दन

सेना आदि उसने साथ नहीं लिया, अकेला मायाबल से निशाचर महीरावण चला। आकाश से आते हुए उसने चक्र देखा, गढ़ के भीतर पूरी सेना को देखा। मन ही मन रावण-नन्दन महीरावण सोचने लगा, माया से आज राम-लक्ष्मण का हरण करना है। गढ़ के बाहर उसने विभीषण को देखा, सोचने लगा मैं किस प्रकार उनके निकट जाऊँ ? ॥ ४६३ ॥

मन ही मन विचार कर महीरावण ने तब माया से अज राजा के पुत्र (दशरथ) का रूप धारण कर लिया। दशरथ बनकर उसने दर्शन दिया। दशरथ ने कहा, हे पवन-नन्दन सुनो। मेरे दो पुत्र हैं राम और लक्ष्मण, मैं उन दोनों पुत्रों का दर्शन करना चाहता हूँ। हनुमान ने कहा, गुसाईं मेरा निवेदन सुनें, तनिक ठहरें, विभीषण को आने दीजिए। ऐसे ही समय वहाँ विभीषण आ गया। तब डरकर महीरावण वहाँ से भाग गया। हनुमान ने कहा, हे धार्मिक विभीषण सुनो, अभी राजा दशरथ आये थे। विभीषण ने कहा, यदि तुम्हारा पिता भी आ जाये तो भी उसको अन्दर प्रवेश मत करने देना ॥ ४६४ ॥

इतना कहकर विभीषण वहाँ से चला गया। आड़ में रहकर महीरावण ने देखा। भरत बनकर वह हनुमान के पास आया। श्रीराम-लक्ष्मण दोनों भाई कहाँ हैं ? चौदह वर्ष से वे वनवासी हैं, उनके सिर पर जटा हैं। हम लोग दशरथ के चार बेटे हैं। श्रीराम-लक्ष्मण कहाँ है ? उनका दर्शन करना चाहता हूँ। इतना सुनकर पवन-नन्दन ने कहा, तनिक ठहरें, विभीषण को आ जाने दीजिए। इतना सुनकर महीरावण भाग गया। ऐसे ही समय

क्षणेक विलम्ब कर,आसुक विभीषण ❊ एत शुनि पाछु हाँटे से महीरावण
हेनकाले धाइया आइल विभीषण ❊ हनू बले, भरत आइल एइक्षण
हनूमाने चाहि विभीषण कहे कथा ❊द्वार ना छाड़िओ,यदि आसे तव पिता४६५
एत बलि विभीषण गेल अतिदूरे ❊ कौशल्या हइया मही आइल सत्वरे
कौशल्या बलेन, शुन पवन-कुमार ❊ श्रीराम-लक्ष्मणे मोरे देखाओ एकवार
हनूमान बले, माता, करि निवेदन ❊ क्षणेक थाकह हेथा, आसुक बिभीषण
एतेक शुनिया मही तिलेक ना थाके ❊ बिभीषण धाइया आइल दूरे थेके
बिभीषणे देखि बुड़ी जाय गुड़ि-गुड़ि ❊ ताहा देखि हनू करे दन्त कड़मड़ि
उपनीत हइल राक्षस बिभीषण ❊ कहिल सकल कथा पवन-नन्दन
बिभीषण बले, शुन आमार बचन ❊ द्वार ना छाड़िवे, यदि आइसे पवन४६६
एत बलि बिभीषण करिला गमन ❊ हइया जनक मही दिल दरशन
जनक बलेन, शुन पवन-नन्दन ❊ राम-संगे आमार कराह दरशन
आमार जामाता हन श्रीराम-लक्ष्मण ❊ चतुर्द्दश-वर्ष गत, नाहि दरशन
तोमारे ना चिनि, बले पवन-नन्दन ❊ क्षणकाल थाकह, आसुक बिभीषण
एतेक शुनिया ऋषि हनूमान-बोल ❊ हनूमान-संगेते जुड़िल गण्डगोल
हेनकाले बिभीषण दिलेक हाँकार ❊ पलाय जनक-ऋषि, देखा नाहि आर

विभीषण वहाँ आया। हनुमान ने कहा, अभी भरत आए थे। हनुमान की ओर देखते हुए विभीषण ने कहा, यदि तुम्हारे पिता भी आ जाएँ तो द्वार न छोड़ना ॥ ४६५ ॥

इतना कहकर विभीषण अधिक दूर चला गया। फिर कौशल्या बनकर महीरावण वहाँ तुरन्त आ पहुँचा। कौशल्या ने कहा, हे पवन-कुमार सुनो, श्रीराम-लक्ष्मण को मुझको एकबार दिखा दो। हनुमान ने कहा, माता मेरा निवेदन सुनो, क्षणभर ठहरो, विभीषण आ जाय। इतना सुन कर महीरावण क्षणभर भी नहीं ठहरा। दूर से विभीषण भागता हुआ आया। विभीषण को देखकर बुढ़िया चुपचाप खिसक गई, यह देखकर हनुमान दाँत पीसने लगा। राक्षस विभीषण वहाँ आ पहुँचा तो पवन-नन्दन ने सारी बातें बता दीं। विभीषण ने कहा, मेरा वचन सुनो, यदि पवन भी आ जायें तो द्वार न छोड़ना ॥ ४६६ ॥

इतना कहकर विभीषण चला गया। फिर महीरावण जनक बनकर प्रगट हुआ। जनक ने कहा, पवन-नन्दन सुनो, राम से मेरी भेंट करा दो। श्रीराम-लक्ष्मण मेरे दामाद हैं, चौदह वर्ष हो गये उनसे भेंट नहीं हुई। पवन-नन्दन ने कहा, मैं तुमको पहचानता नहीं, थोड़ा सा रुक जाओ, विभीषण आ जाएँ। हनुमान की ऐसी बातें सुनकर ऋषि (जनक) ने हनुमान के साथ विवाद करना शुरू कर दिया। ऐसे ही समय विभीषण ने हाँक लगाई

उपनीत हइल राक्षस बिभीषण ❋ बिभीषणे कहे सब पवन-नन्दन
बिभीषण बले, यदि आसे तव पिता ❋ गड़ेर भितरे जेते ना दिओ सर्व्वथा६७
एतेक बलिया बिभीषणेर गमन ❋ बिभीषण ह'ये मही दिल दरशन
हनूमान बले, तुमि गेले एइक्षणे ❋ एत शीघ्र फिरे एले किसेर कारणे
महीरावण बले शुन पवन-नन्दन ❋ चोरा-माया जाने कत से महीरावण
सावधाने थाक हनू, आजिकार निशि ❋ राम-लक्ष्मणेर हाते रक्षा बेंधे आसि
एतेक बलिया मही गड़ेते प्रवेशे ❋ अलक्षिते गेल राम-लक्ष्मणेर पाशे
सुग्रीव-अंगद-कोले आछेन दु' भाइ ❋ मायारूपे निशाचर गेल सेइ ठाँइ
महामाया स्मरि धूला दिल उड़ाइये ❋ राम-लक्ष्मण निद्रा जाय अचेतन ह'ये
अचैतन्य ह'ये पड़े यतेक बानर ❋ हात हैते खसि पड़े गाछ ओ पाथर
श्रीराम-लक्ष्मण दोंहे घुमे अचेतन ❋ सुड़ंगे लइया जाय आपन-भवन
निद्रा नाहि भाँगे, दोंहे आछेन शयने ❋ घरेर भितरे ल'ये राखिल गोपने
चारिदिके निशाचर, नाना अस्त्र हाते ❋ निजपुरे रहे मही हरिष-मनेते ६८
हेथाय गड़ेर द्वारे एल बिभीषण ❋ हनूमान-स्थाने वार्त्ता पूछे घने-घन

तो जनक ऋषि भाग खड़े हुए और दिखाई न पड़े। राक्षस विभीषण आ पहुँचे तो पवन-नन्दन ने उनसे सारी बातें बताईं। विभीषण ने कहा, यदि तुम्हारे पिता भी आ जाएँ तो भी उनको गढ़ के भीतर जाने मत देना ॥ ४६७ ॥

इतना कहकर ही विभीषण चले गये। तब महीरावण विभीषण बनकर प्रगट हुआ। हनुमान ने कहा, अभी-अभी तो तुम यहाँ से गये, इतनी जल्दी किस कारण लौट आए। महीरावण ने कहा, पवन-नन्दन सुनो, वह महीरावण जाने कितनी गुप्त-माया जानता है। आज की रात हनुमान तुम सावधानी से काटना, जाऊँ जाकर राम-लक्ष्मण के हाथों में (रक्षा की) राखी बाँध आऊँ। इतना कहकर महीरावण गढ़ में प्रवेश कर गया और अलक्षित रहकर राम-लक्ष्मण के पास पहुँचा। सुग्रीव और अंगद दोनों की गोद में दो भाई लेटे हैं। माया का रूप धरकर निशाचर उस ठाँव पहुँचा। महामाया का स्मरण कर उसने धूल फेंकी। राम-लक्ष्मण दोनों नींद में अचेतन सोने लगे। जितने वानर थे वे भी अचेतन हो गये और उनके हाथों से पेड़ और पत्थर गिर गये। राम-लक्ष्मण दोनों नींद में बेसुध पड़े हैं। उनको सुरंग के रास्ते वह अपने भवन ले गया। दोनों की नींद नहीं टूटी, दोनों ही लेटे हुए हैं। घर के भीतर ले जाकर उसने छिपाकर रख दिया। विभिन्न अस्त्र-शस्त्र हाथ में लिये निशाचर चारों ओर खड़े हैं और महीरावण हर्षमग्न होकर अपने भवन में है ॥ ४६८ ॥

यहाँ गढ़ के द्वार पर विभीषण पहुँचा। हनुमान से उसने बार-बार हाल-चाल पूछा। हनुमान जानता है कि विभीषण गढ़ के भीतर है और

हनू जाने, बिभीषण गड़ेर भितरे ❋ एबे हनू देखे तारे गड़ेर वाहिरे
हनूमान वले, के राक्षस विभीषण ❋ औषध वान्धिते तुमि गेले जे एखन
वाहिर हइया एले कोन पथ दिया ❋ तोमारे देखिया मोर स्थिर नहे हिया
बुझिते ना पारि किवा आछे तव मने ❋ रावणेर चर ह'ये आछ राम-स्थाने
रावणेर चर ह'ये आस जाह निति ❋ कपट करिया राम-सह कैले मिति
मोर ठाँइ बेटा, तोर नाहिक निस्तार ❋ लेजेर वाड़ीते ल'ब यमेर दुयार
उपाड़िया लंकापुरी डुबाव सागरे ❋ लंकार वसति पाठाइब यमपुरे
रावणेर दूत तुइ रामेर निकटे ❋ कि वलिस्, तोर वाक्ये मोर बुक फाटे६९
बिभीषण बले, नाहि एसेछि कपटे ❋ दिव्य करि हनूमान, तोमार निकटे
गोवधे ओ ब्रह्मवधे यत पाप हय ❋ यदि छले एसे थाकि, लइब निश्चय
यत पाप हय ब्रह्मवधे सुरापाने ❋ आमार से पाप, यदि खल थाके मने
हनूमान बले, तोर दिव्य किछु नय ❋ ब्रह्मवधे, गोवधे राक्षसे कोथा भय
बिभीषण बले, तुमि विचारे पण्डित ❋ विचार न करि केन बल अनुचित
केमने बलह मोरे रावणेर चर ❋ युक्ति दिया वधिलाम यत निशाचर
इन्द्रजित्-यज्ञभंग-सन्धि केवा जाने ❋ युक्ति दिया वधिलाम आपन-सन्ताने

अब देखता है कि वह गढ़ के बाहर है। हनुमान ने कहा, राक्षस विभीषण कौन है ? अभी तुम राखी बाँधने के लिए भीतर गये थे फिर किस रास्ते से बाहर निकल आए। तुमको देखकर मेरा हृदय चंचल हो रहा है। समझ में नहीं आता कि तुम्हारे मन में क्या है। रावण के चर बन कर राम के साथ हो। रावण के चर बनकर नित्य-प्रति आते जाते रहते हो, कपट से तुमने राम के साथ मित्रता की। मेरे निकट तेरा अब निस्तार नहीं, पूँछ के एक ही प्रहार से तुझे यम के घर भेज दूँगा। लंकापुरी को उखाड़ कर समुद्र में डुबो दूँगा और लंका के सारे निवासियों को यमालय भेज दूँगा। राम के निकट तू रावण का दूत है। तू क्या कहता है, तेरे वाक्य सुनकर मेरा हृदय फटा जाता है ॥ ४६९ ॥

विभीषण ने कहा, हनुमान मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मैं कपट से तुम्हारे निकट नहीं आया हूँ। यदि मैं छल-कपट कर आया हूँ तो गोवध और ब्राह्मण-वध से जितना पाप लगता है मुझ पर लगे। यदि मेरे मन में दुष्टता हो तो जितना पाप ब्राह्मणवध और मदिरापान से होता है मुझ पर लगे। हनुमान ने कहा, तेरे सौगन्ध से कुछ भी नहीं होता। राक्षस को ब्रह्मवध-गोवध से कौन सा भय है। विभीषण ने कहा, तुम विचारने में पंडित हो, विना विचारे तुम अनुचित क्यों कह रहे हो। किस प्रकार से तुम मुझको रावण का चर कहते हो, युक्ति देकर मैंने कितने ही निशाचरों का वध कराया। इन्द्रजीत के यज्ञमंत्र की गुप्तकथा कौन जानता है, युक्ति देकर मैंने अपनी

कत रूप ह'ये एल से महीरावण ※ भुलाते ना पारि शेषे हैल बिभीषण७०
हनूमान बले, कथा शुनि लागे डर ※ मायाते कि गेल मही गड़ेर भितर
लाजे हनूमान-बीर करे हेंटमाथा ※ बिभीषणे भर्त्सिलाम, अनुचित कथा
पथ छाड़ि दिया आमि कैनु विपरीत ※ बिभीषणे भर्त्सिलाम, नहे त उचित
हनूमान बले, कथा शुन बिभीषण ※ आगे गिया देखि चल श्रीराम-लक्ष्मण
मारुतिर वाक्येते राक्षस बिभीषण ※ प्रमाद पड़िल, मने जानिल तखन७१
बिभीषण बले, शुन पवन-नन्दन ※ चल तबे, देखि गिया श्रीराम-लक्ष्मण
द्रुतगति जाय दोंहे धेये ऊर्ध्वमुखे ※ श्रीराम-लक्ष्मण नाहि, शून्यमय देखे
आश्चर्य्य देखिल ताहे सुड़ंग-निर्म्माण ※ राम-लक्ष्मणेरे ना देखिया फाटे प्राण
कटकेर माझे नाहि श्रीराम-लक्ष्मण ※ भूमे गड़ागड़ि दिया कान्दे बिभीषण
सुग्रीव-अंगद-आदि घुमे अचेतन ※ प्रमाद पड़िल, उठे, बले बिभीषण
कटक-भितरे शुनि हैल महागोल ※ बानर-मण्डले उठे क्रन्दनेर रोल
कान्दिछे सुग्रीव-राजा, नाहिक संवित् ※ कोथा गेले लक्ष्मण श्रीरामचन्द्र मित
धरणी लोटाये कान्दे बीर हनूमान ※ रामेर उद्देशे आमि त्यजिब पराण

सन्तान की हत्या कराई। कितने रूप धारण कर वह महीरावण आया और भुलावा देने में असफल होकर वह अन्त में विभीषण बन गया ॥ ४७० ॥

हनुमान ने कहा, बातें सुनकर डर लगता है, कहीं माया से महीरावण गढ़ के भीतर तो नहीं चला गया। लज्जा से वीर हनुमान का सिर झुक गया। विभीषण की मैंने भर्त्सना की और अनुचित बातें भी कीं। पथ छोड़ कर मैंने विपरीत कार्य कर डाला और विभीषण को जो भला-बुरा कहा वह भी कोई ठीक नहीं। हनुमान ने कहा, विभीषण मेरी बात सुनो। पहले चलकर राम-लक्ष्मण को देख लें। हनुमान के वाक्य सुनकर राक्षस विभीषण ने मन ही मन जान लिया कि विपत्ति आ चुकी है ॥ ४७१ ॥

विभीषण ने कहा, हे पवन-नन्दन सुनो, चलो, चलकर श्रीराम-लक्ष्मण को ही देख लें। दोनों मुँह उठाये तेज़-चाल से वहाँ पहुँचे, देखा श्रीराम-लक्ष्मण नहीं हैं, जगह सूनी पड़ी है। यह देखकर वे और भी आश्चर्य करने लगे कि सुरंग निर्मित हुई है। राम लक्ष्मण को न देख कर दोनों के दिल टूक-टूक हो गये। सेना के मध्य श्रीराम-लक्ष्मण नहीं हैं यह देखकर विभीषण भूमि पर लोटकर रोने लगे। सुग्रीव, अंगद आदि नींद में अचेतन पड़े हैं। विभीषण ने कहा, विपत्ति आ गई, उठो। सेना के भीतर यह सुनकर काफी शोरगुल हुआ और वानर-मंडली में रोना-धोना मच गया। राजा सुग्रीव चेतना गँवाकर रोने लग गये, हाय मेरे मित्र रामचन्द्र और लक्ष्मण कहाँ गये। धरती पर लोट कर वीर हनुमान रोने लग गये, मैं राम के निमित्त प्राण दे दूँगा। अग्निकुंड बनाकर मैं उसमें कूद पडूँगा। इस जीवन में मन का यह

अग्निकुण्ड साजाइया ताहे दिव झाँप ॐ जीवनेते ना घुचिबे मनेर सन्ताप
शिरे हात कान्दे बालिपुत्र युवराज ॐ बृथाय शरीर, आर जीवने कि काज
आकुल हइया कान्दे सेनापति नील ॐ बाँचिते वासना आर नाहि एकतिल७२
जाम्बवान बले, सबे ना कर क्रन्दन ॐ उपाय करह, शुन आमार बचन
क्रन्दन संवर, शुन वानरेर राज ॐ जेमते निस्तार पाइ, चिन्त सेइ काज
अस्थिर ना हओ केह विपत्ति-समय ॐ सुस्थिर हइले सर्व्वकार्य्य सिद्धि हय
श्रीराम-लक्ष्मण देख जगतेर सार ॐ विनाश करिते पारे, साध्य आछे कार
सुमन्त्रणा शुन ओहे सुग्रीव-राजन ॐ मारुतिरे पाठाह करिते अन्वेषण
मारुतिर अगम्य नाहिक त्रिभुवने ॐ अवश्य पाइबे देखा श्रीराम-लक्ष्मणे
आनिते ना पारे यदि श्रीराम-लक्ष्मण ॐ तबे सबे अग्निकुण्डे त्यजिव जीवन
एतेक बलिल यदि ब्रह्मार कुमार ॐ कहिल सुग्रीव-राजा, एइ युक्ति सार४७३

श्रीराम-लक्ष्मणेर अन्वेषणे हनूमानेर पातालपुरे गमन

सुग्रीव बलेन शुन पवन-कुमार ॐ सीतार उद्देश कैले सागरेर पार
तुमि श्रीरामेर भक्त, जाने सर्व्वजन ॐ क'रे एसो श्रीराम-लक्ष्मणे अन्वेषण

सन्ताप दूर न होगा। बालिपुत्र युवराज सिर पर हाथ धरकर रोने लग गये—यह शरीर बेकार है, इस जीवन से क्या लाभ है। सेनापति नील व्याकुल होकर रोते हुए कहने लगे कि अब एक क्षण भी जीने की इच्छा नहीं है ।। ४७२ ।।

जाम्बवान ने कहा, सब लोग अब मत रोओ, मेरी बात सुनो, कोई उपाय ढूँढ़ निकालो। सुनो वानर-राज, रुदन को रोको और जिस प्रकार से निस्तार मिल सकता है वैसे ही कार्य के बारे में चिन्ता करो। विपत्ति के समय चंचल नहीं होना चाहिए, स्थिर-चित्त रहने से ही सारा कार्य सिद्ध होता है। सुनो, श्रीराम-लक्ष्मण जगत् के सार हैं, उनका विनाश कर सके ऐसी सामर्थ्य किसमें है। हे राजा सुग्रीव, मेरा परामर्श सुनो, हनुमान को ढूँढ़ने के लिए भेज दो। त्रिभुवन में कोई भी स्थान हनुमान के लिए अगम्य नहीं है। श्रीराम-लक्ष्मण से उसकी अवश्य ही भेंट होगी। वह यदि श्रीराम-लक्ष्मण को लाने में असफल हो तो सभी लोग अग्निकुंड में कूद कर प्राण दे देंगे। जब ब्रह्मा के कुमार ने यह कहा तो सुग्रीव राजा बोले कि यही युक्ति श्रेष्ठ है ।। ४७३ ।।

श्रीराम-लक्ष्मण के अन्वेषण में हनुमान का पाताल-पुर जाना

सुग्रीव ने कहा, हे पवन-कुमार सुनो। सीता के निमित्त तुमने समुद्र लाँघा। तुम श्रीराम के भक्त हो यह सभी लोग जानते हैं। रावण-पुत्र तुमको

तोमारे भुलाये गेल रावण-कुमार ※ त्रिभुवने ए-कलंक रहिल तोमार
तव बुद्धि-भ्रमेते श्रीराम निल चोरे ※ अन्वेषण करिते पाठाब बल कारे४७४
सुग्रीवेर वाक्येते मारुति महाबल ※ लाजे अभिमाने आँखि करे छल-छल
मारुति बलेन, आमि जाब अन्वेषणे ※ स्वर्ग मर्त्य पाताल खुँजिब त्रिभुवने
तथापि ना पाइ यदि श्रीराम-लक्ष्मण ※ करिव जलधि-जले ए-देह पातन७५
एत कहि कान्दे हनू पवन-नन्दन ※ कोथा पाव श्रीराम-लक्ष्मण-अन्वेषण
एइखाने थाक सबे एकत्र हइया ※ यावत् ना आसि आमि त्रैलोक्य चाहिया
सुग्रीव-राजार काछे लइया विदाय ※ सुड़ंगे प्रवेश करि हनूमान जाय
ये-पथे लक्ष्मण-रामे ह'रेछे राक्षसे ※ सेइपथे गेल बीर चक्षुर निमिषे
पातालेते गिया देखे सूर्य्येर प्रकाश ※ विचित्र-निम्मर्णि पुरी, येमन कैलास
प्रथमे देखिल बलिराजेर वसति ※ पूण्यतीर्थ गंगा देखे नामे भोगवती
महातपोवने देखे कत मुनि-ऋषि ※ नागिनी यक्षिणी यत परम-रूपसी
चतुर्भुज द्विभुज अशेषरूपी लोक ※ जरा-मृत्यु नाहि तथा, नाहि रोग-शोक
तिनकोटि पुरुषे कपिलमुनि बैसे ※ परमा-सुन्दरी कत देखे आशे-पाशे
विचित्र-निम्मर्णि देखे कत तीर्थ-स्थान ※ राम-लक्ष्मणेर सेथा ना पान सन्धान७६

भुलावा देकर निकल गया, तीनों लोक में तुम्हारा यह कलंक रह जायगा। तुम्हारे बुद्धि-भ्रम से चोर श्रीराम को चुरा ले गये। अब तुम्हीं बताओ कि तलाश करने और किसको भेजूँ ॥ ४७४ ॥

सुग्रीव के वाक्य सुनकर महाबली हनुमान की आँखें लाज और अभिमान से डबडबाने लगीं। हनुमान ने कहा, मैं खोज में निकलूँगा। स्वर्ग, मर्त्य, पाताल तीनों लोकों में ढूँढ़ूँगा। फिर भी यदि श्रीराम-लक्ष्मण नहीं मिले तो समुद्र के जल में इस शरीर को विसर्जित कर दूँगा ॥ ४७५ ॥

इतना कहकर पवन-नन्दन हनुमान रोने लगे। हाय, श्रीराम-लक्ष्मण को मैं ढूँढ़ कर कहाँ पाऊँगा। तुम सभी लोग यहाँ तब तक इकट्ठे रहो जब तक कि मैं तीनों लोक देखकर लौट न आऊँ। सुग्रीव राजा से विदा लेकर हनुमान सुरंग के रास्ते चला गया। जिस पथ से श्रीराम-लक्ष्मण को राक्षस चुराकर ले गया था उसी पथ से वीर हनुमान पलक झँपते ही चला गया। पाताल पहुँचकर उसने सूर्य का प्रकाश देखा। अद्भुत ढंग से निर्मित पुरी है, मानो कैलाश हो। पहले तो उसने बलिराजा का इलाका देखा, फिर भोगवती नामक पुण्यतीर्थ गंगा देखी। महा-तपोवन में कितने ही मुनि-ऋषि देखे। नागिनी यक्षिणी आदि कितनी ही परम रूपवती नारियाँ देखीं। चतुर्भुज और द्विभुज अशेषरूपी लोगों को देखा, वहाँ न जरा है और न मृत्यु है, रोग-शोक भी नहीं हैं। तीन कोटि पुरुषों को लेकर कपिलमुनि बैठे हैं।

सकल पाताल-पुरी भ्रमे एके-एके ॥ महीरावणेर पुरी देखिल सम्मुखे
छद्मवेश धरिया खुँजिल सब पुरी ॥ राक्षसेर पुरी येन अमर-नगरी
त्वरित-गमने गेल पुरीर भितर ॥ पाषाण-रचित कत दीघि-सरोवर
असंख्य-पुरुष-नारी परम-सुन्दर ॥ विचित्र-निर्म्माण देखे सुवर्णेर घर
बड़-बड़ वृक्ष तथा पर्व्वत-प्रमाण ॥ अश्व हस्ती रथ देखे विचित्र-निर्म्माण
मने-मने चिन्ता करे पवन-कुमार ॥ एइ पुरे आछे राम-लक्ष्मण आमार
मर्कट-रूपेते रहे वृक्षेर उपर ॥ विचित्र-निर्म्माण घाट देखे सरोवर
बहुलोक आसि तथा करे स्नान-दान ॥ वानर देखिया हय चमत्कार ज्ञान
वृक्षतले थाकि लोक नेहारिया देखे ॥ एमन वानर वल एल कोथा थेके ७७
आछिल तथाय एक वृद्धा चिरजीवी ॥ वानरे देखिया वृद्धा मने-मने भावि
वृद्धा बले, शुन सबे आमार बचन ॥ पूर्व्वेर वृत्तान्त एबे शुन दिया मन
करिल विस्तर तप मही महाराजा ॥ विस्तर-प्रकारे कैल महामाया-पूजा
करिल विस्तर पूजा, बहु उपवास ॥ अमर हइते राजार छिल बड़ आश
अमर हइते देवी नाहि दिला वर ॥ देवी बले, अन्य वर चाह निशाचर

कितनी ही परमसुन्दरी नारियाँ आस-पास दिखाई पड़ीं। कितने ही विचित्र बनावट के तीर्थ-स्थान दिखाई पड़े, लेकिन राम-लक्ष्मण के दर्शन वहाँ भी नहीं मिल सके ॥ ४७६ ॥

सारी पाताल-पुरी में क्रम से घूमते हुए उसने सामने महीरावण की पुरी देखी। छद्मवेश धारण कर उसने सारी पुरी छान डाली। राक्षस की पुरी मानों अमरावती हो। शीघ्र-गति से वह पुरी के भीतर गया। पत्थरों से निर्मित कितने ही पोखर और सरोवर मिले। असंख्य परम सुन्दर नर-नारी भी दिखाई पड़े। विचित्र रूप से निर्मित स्वर्ण-भवन देखे। वहाँ पर्वत जैसे बड़े-बड़े वृक्ष देखे। हाथी, घोड़ा, रथ, सभी विचित्र ढंग से निर्मित देखे। मन ही मन पवन-कुमार ने सोचा, मेरे राम-लक्ष्मण इसी पुरी में हैं। मर्कट का रूप धरकर वह वृक्ष पर बैठ गये। अद्भुत ढंग से बना घाटवाला सरोवर है। उसमें बहुत सारे लोग आकर स्नान-दान कर रहे हैं। वानर को देखकर उनको आश्चर्य हुआ। पेड़ तले खड़े होकर वे लोग निहार-निहार कर देखने लगे कि ऐसा वानर कहाँ से आ गया ॥ ४७७ ॥

वहाँ एक चिरजीवी वृद्धा थी। वानर को देखकर वृद्धा ने मन ही मन सोचा और कहा तुम सब लोग मेरा वचन सुनो, ध्यान से पूर्व-वृत्तान्त सुनो। महाराजा महीरावण ने घोर तपस्या की और कितने ही प्रकार से महामाया की पूजा—अर्चना की। कितना ही व्रत-उपवास किया। (किन्तु देवी ने) अमर बनने का वर नहीं दिया और कहा, निशाचर तुम और कोई वर माँगो। महीरावण ने कहा, अहि, देवता, गन्धर्व, यक्ष, रक्ष, किन्नर, पिशाच इन सबमें किसी के

महि बले, अहि किंवा देवता गन्धर्ब्ब ※ यक्ष-रक्ष-किन्नर पिशाच आदि सर्ब्ब
संग्रामेते कारो हाते मरण ना हय ※ सेइ वर दिला देवी बुझिया आशय
मही बले, प्रकारेते हइनु अमर ※ यत जाति योद्धा आछे, कारे नाहि डर
नर ओ बानर एइ दुइ बाकी आछे ※ भक्ष्यजाति कि करिबे राक्षसेर काछे
भगवती बले, भय कारे नाहि आर ※ नर, बानरेर हाते सवंशे संहार
अमर नहेन राजा, जानि विवरण ※ नर-कपि एले हबे राजार मरण
बन्दी करि आनियाछे शिशु दुइ नर ※ कोथा हैते उपनीत हइल बानर
एइकथा गुप्ते बुड़ी कहे एकजने ※ चारिदिके देखे पाछे, अन्य केह शुने
शुनि हरषित हैल पवन-नन्दन ※ कोथाय आछेन प्रभु, भावे मने-मन७८
हेनकाले नारी सब नगर-निवासी ※ जल लइबारे आसे कक्षेते कलसी
एक नारी प्राचीना महीर पुरदासी ※ ताहारे जिज्ञासा करे यतेक रूपसी
राजार बाटीते केन वाद्यभाण्ड-रोल ※ केह नाचे, केह गाय, आनन्दे विभोल
महानन्दे आसितेछे द्विजगण सब ※ राजार बाटीते आजि किसेर उत्सब
वृद्धा-नारी बले, शुन यतेक रूपसि ※ राजार बाटीर कथा कैते भय बासि
कहिते निषेध आछे, कहिवार नय ※ प्रकाश ना कर कथा दण्ड-चारि-छय

साथ भी संग्राम में मेरी मृत्यु न हो। देवी ने आशय समझ कर वर दिया। महीरावण ने कहा, एक प्रकार से मैं अमर ही बन गया, जितने प्रकार के योद्धा हैं उनसे कोई डर न रहा। बस नर और वानर रह जाते हैं। ये लोग तो हमारे भक्ष्य हैं, ये राक्षस के सामने क्या कर सकेंगे। भगवती ने कहा, किसी अन्य से और कोई भय नहीं, केवल नर-वानर के हाथ सवंश निधन होगा। राजा अमर नहीं हैं यह विवरण मैं जानती हूँ, नर और कपि के आने पर ही राजा की मृत्यु होगी। वह दो नर-बच्चों को बन्दी कर लाया है और यह वानर जाने कहाँ से आ टपका है। यह बात बुढ़िया ने एक से गुप्तरूप से कहा और चारों ओर देखने लगी, कहीं कोई सुन न ले। सुनकर पवन-नन्दन हर्ष-मग्न हो गये, वह मन ही मन सोचने लगे कि प्रभु कहाँ पर होंगे ॥ ४७८ ॥

ऐसे ही समय नगर में रहनेवाली नारियाँ पानी भरने के लिए घड़े लेकर आईं। महीरावण के भवन में एक वृद्ध नारी दासी थी, उसीसे सारी सुन्दरियाँ पूँछने लगीं—राजा के घर यह गाजे-बाजे की ध्वनि कैसी है, आनन्द से विभोर होकर कोई गा रहा है तो कोई नाच रहा है। सारे द्विज उल्लास-मग्न होकर आ रहे हैं, आज राजा के महल में कौन सा उत्सव है। वृद्धा नारी ने कहा, अरी सुन्दरियो सुनो, राजा के घर की बातें कहने में डर लगता है, कहना मना है और कहना नहीं चाहिए। इस बात को चार-छह दंड कहीं प्रगट न करना। जब तुम लोगों ने पूँछ ही लिया तो गुप्तरूप से

जिज्ञासा करिले यदि, संगोपने बलि ❊ महामाया-काछे आजि हबे नरबलि
आनियाछे शिशु-दु'टि परम-सुन्दर ❊ ना देखि एमन रूप अवनी-भितर
कोन अभागीर पुत्र, देखि फाटे प्राण ❊ दण्ड-चारि-छय परे दिबे बलिदान
बन्दी करि राखियाछे संगोपन-घरे ❊ राजार बाटीर कथा ना कहिओ कारे४७९

हनूमान-कर्त्तृक श्रीराम-लक्ष्मणेर प्रति आश्वास-प्रदान

एत बलि जल ल'ये गेल सबे बासे ❊ हनूमान शुनिलेन वृक्षोपरि ब'से
मने-मने भावे बीर, पाइलाम सन्धि ❊ एइखाने श्रीराम-लक्ष्मण आछे बन्दी
हृदये पुलक, भावे पवन-तनय ❊ एखानेते थाका आर उचित ना हय
चक्षुर निमिषे गेल राज-अन्तःपुरे ❊ श्रीराम-लक्ष्मण यथा बन्दी आछे घरे
दोहारा लोहार गड़ भितर-बाहिरे ❊ चारिदिके निशाचर नाना-अस्त्र धरे
चारिदिके निशाचर आछे अगणन ❊ घरेर भितरे आछे श्रीराम-लक्ष्मण
मक्षिरूपे प्रवेशिल घरेर भितरे ❊ शरीर-धारण करि दोंहे नमस्करे
आचम्बिते मारुति नोयाय गिया माथा❊ निद्राभंगे श्रीराम-लक्ष्मण कन कथा
लक्ष्मण बलेन, शुन पवन-नन्दन ❊ सुग्रीव अंगद कोथा, कोथा बिभीषण

बताऊँगी—महामाया के सम्मुख आज नरबलि होगी। दो बच्चों को वह ले आया है जो बड़े ही सुन्दर हैं, ऐसा रूप इस संसार में दिखाई नहीं पड़ता। देखकर मन टूक-टूक हो जाता है। जाने किस अभागिन के बेटे हैं। चार-छह दंड के बाद उनका बलिदान होगा। उनको बहुत ही गुप्त-कक्ष में बन्दी बना कर रखा गया है। राजा के घर की बातें किसी और से न कहना ॥ ४७९ ॥

हनुमान द्वारा श्रीराम-लक्ष्मण को आश्वासन-प्रदान

इतना कहकर सभी नारियाँ पानी लेकर अपने-अपने घर चली गई। हनुमान ने वृक्ष पर बैठे-बैठे सब कुछ सुना। वीर ने मन ही मन सोचा, रहस्य का पता तो लग गया, श्रीराम-लक्ष्मण यहीं बन्दी हैं। मन में पुलक लिये पवन-तनय सोचने लगे कि यहाँ रहना अब ठीक नहीं है। पलभर में वह राजा के अन्तःपुर पहुँच गया। जिस कक्ष में श्रीराम-लक्ष्मण बन्दी हैं, उसमें दोहरे लोहे के किवाड़ अन्दर-बाहर दोनों ओर बने हैं और चारों ओर विभिन्न अस्त्रों से सज्जित निशाचर पहरे पर हैं। चारों ओर अनगिनत राक्षस हैं और कमरे के भीतर श्रीराम-लक्ष्मण हैं। मक्खी का रूप धरकर हनुमान ने भीतर प्रवेश किया और अपना रूप ग्रहण कर दोनों को नमस्कार किया। हनुमान ने अकस्मात् जाकर सिर नवाया और नींद के टूटने से श्रीराम-लक्ष्मण बात करने लगे। लक्ष्मण ने कहा, हे पवन-नन्दन, सुग्रीव और अंगद कहाँ हैं और विभीषण भी कहाँ हैं। हनुमान ने कहा, प्रभु आप सुध-बुध भूल गये

हनूमान बले, प्रभु पासरिले चिते ❋ हरिया एनेछे मही दोंहे पातालेते
शुनिया कातर अति श्रीराम-लक्ष्मण ❋ प्रबोध वचन बले पवन-नन्दन ४८०
हेनकाले राजपुरे पड़िल घोषणा ❋ महामाया-पूजा हवे, बाजिल वाजना
विस्तर छागल दिवे, महिष विस्तर ❋ वलिदान दिवे राजा आर दुइ नर
नाना सुवासित पुष्प गन्ध मनोहर ❋ साजाइया ल'ये जाय महामाया-घर ८१
श्रीराम बलेन, शुन पवन-नन्दन ❋ विपाके प'ड़ेछि हेथा, हइबे केमन
नाहि सैन्य-सेनापति, धनुःशर आर ❋ केमने राक्षस-हाते पाइब निस्तार ८२
जोड़ हस्ते कहे हनू श्रीरामेर आगे ❋ राक्षस मारिते प्रभु, कोन भार लागे
त्रिभुवने ख्यात तव श्रीचरण-दास ❋ वृक्ष-प्रस्तरेते रिपु करिब बिनाश
रावण-राजार वंशे येखाने जे थाके ❋ तोमार प्रसादे सबे मारि एके-एके
अनेक ब्राह्मण हिंसे, बहु देव-ऋषि ❋ गोहत्या प्रभृति पाप कैल राशि-राशि
दुर्ज्जय राक्षसवंश हइव संहार ❋ राक्षस बधिते प्रभु, तव अवतार
अलक्षित माया तव, कोन जन जाने ❋ मरण इच्छिया तोमा आनिल एखाने

हैं। आप दोनों को महीरावण पाताल में हरकर ले आया है। यह सुनकर श्रीराम-लक्ष्मण अत्यन्त दुखी हुए। तब पवन-नन्दन उनको दिलासा देने लगे ॥ ४८० ॥

ऐसे समय राजपुर में घोषणा हुई—महामाया की पूजा होगी और बाजा बजने लगा। राजा पर्याप्त संख्या में बकरे और भैंसे बलिदान करेगा और दो नरों का भी बलिदान होगा। तरह-तरह का सुगन्धित मनोहर पुष्प सजाकर महामाया के मन्दिर ले जाया जाने लगा ॥ ४८१ ॥

श्रीराम ने कहा, हे पवन-नन्दन सुनो, यहाँ बड़ी विपत्ति में फँस गया हूँ, क्या उपाय है। न तो सेना है और न सेनापति, धनुष-बाण भी नहीं है। राक्षस के हाथ कैसे निस्तार मिलेगा ॥ ४८२ ॥

हनुमान ने हाथ जोड़कर श्रीराम के सम्मुख कहा, राक्षस मारने में प्रभु कौन सी कठिनाई है। आपके श्रीचरणों का दास तीनों लोकों में प्रसिद्ध है—मैं पेड़-पत्थरों से ही शत्रु का विनाश करूँगा। रावण के वंश में जो भी जहाँ है, आपकी कृपा से सभी को एक-एक कर मार डालूँगा। अनेक ब्राह्मण तथा देव-ऋषियों के प्रति इन लोगों ने हिंसात्मक कार्य किये, गोहत्या आदि अनेक पाप इन्होंने किये। यह दुर्जय राक्षस-वंश विनष्ट होगा। हे प्रभु, इन राक्षसों के निधन के लिए तुमने अवतार लिया है। तुम्हारी माया अपरम्पार है, कौन उसको जान सकता है। हो सकता है कि मृत्यु की कामना करते हुए ही वह आपको यहाँ ले आया है। महीरावण के गृह में संसार की माता हैं, उनसे जाकर मैं दो चार प्रेमभरी बातें करूँगा। तिस पर भी यदि वह मही-रावण का हित करना चाहेंगी तो मन्दिर समेत उनको ले जाकर समुद्र में

महीर गृहेते आछे जगतेर माता ❋ प्रीतिवाक्ये कब गिया गुटिकत कथा
ताहे यदि महीर करिते चान हित ❋ सागरे डुबाव ल'ये मन्दिर-सहित
मनोनीत बुझे आसि महेश-जायार ❋ राम बले, कत क्षणे आसिबे आबार
मारुति बलेन, एकतिल छाड़ा नइ ❋ कि बलेन कात्यायनी, कथा-दुइ कइ४८३

हनूमानेर प्रति देवीर महीरावण-वध-विषयक उपदेश

एत बलि मारुति जे हइल बिदाय ❋ महामाया-मन्दिरेते अविलम्बे जाय
मक्षिरूपे कहिलेन योगाद्यार काने ❋ महीबेटा आनियाछे श्रीराम-लक्ष्मणे
नरबलि दिबे शुनि वेला द्वि-प्रहरे ❋ आपनि कि एइ आज्ञा दियाछ महीरे
सवंशे मारिब मही, देखिबे पश्चाते ❋ डुबाव तोमारे जले मन्दिर-सहिते
रामेर किंकर आमि, सुग्रीवेर दास ❋ एत शुनि देवीर ईषत् हैल हास४८४
महादेवी कहिछेन अति संगोपने ❋ पवित्र हइल पुरी राम-आगमने
अशेष पापेर पापी ए महीरावण ❋ देव-द्विज-धर्म्म-हिंसा करे अनुक्षण
निशाचर नाशिते श्रीराम-अवतार ❋ रामेरे आनिल मही हइते संहार
मही-बिनाशेर युक्ति शुन हनूमान ❋ जखन आनिबे रामे दिते बलिदान

डुबो दूँगा। महेश-जाया महामाया का अभिप्राय समझ कर आ जाऊँ। राम ने कहा, कितनी देर में फिर आ जाओगे। मारुति ने कहा, पल भर भी मैं अन्यत्र नहीं हूँ, वस दो-चार बातें कर देख लूँ कि कात्यायनी क्या कहती है ॥ ४८३ ॥

हनुमान के प्रति देवी का महीरावण-वध-विषयक उपदेश

इतना कहकर हनुमान ने बिदा ली और अविलम्ब ही वह महामाया-मन्दिर में पहुँच गया। मक्षिका के रूप में उसने योगाद्या (महामाया) के कानों में कहा—अभागा महीरावण श्रीराम-लक्ष्मण को ले आया है और सुना है कि दोपहर को नरबलि चढ़ाएगा। आपने क्या महीरावण को यह आज्ञा दी है। मैं महीरावण को उसकी सारी सन्तति के साथ मारूँगा, यह तुम बाद में देख लेना और तुमको मन्दिर के साथ पानी में डुबो दूँगा। मैं राम का किंकर हूँ और सुग्रीव का दास हूँ। यह सुनकर देवी कुछ हँस पड़ी ॥ ४८४ ॥

महादेवी ने बड़े ही गुप्तरूप से कहा, यह पुरी राम के आने से पवित्र हो गई। यह पापी महीरावण अनेक पापों का पापी है। देव-द्विज-धर्म से यह सदा हिंसा करता है। निशाचरों के विनाश के लिए ही राम ने अवतार लिया है, स्वयं मरने के लिए ही महीरावण राम को यहाँ ले आया है। महीरावण के विनाश के लिए, हनुमान तुम मेरा परामर्श सुनो। जब राम

रामेरे कहिबे कर देवीरे प्रणाम ❊ प्रणाम ना जानि, येन कहेन श्रीराम
राम कहिबेन, शुन हे महीरावण ❊ देखाइया देह देखि प्रणाम केमन
प्रणाम करिते मही देखाबे रामेरे ❊ अष्टांग लोटाये रबे भूमिर उपरे
हेंटमुण्डे पड़ि मही प्रणाम करिबे ❊ एइ खड्ग ल'ये तुमि महीरे काटिबे
देवी बलिलेन, बाछा, एइ युक्ति सार ❊ श्रीरामेर कर्णे गिया कह समाचार
श्रीराम शिवेर गुरु, आमि ताहा जानि ❊ शिव-रामे अभेद, कहेन शूलपाणि
अनाथेर नाथ राम, जगतेर सार ❊ पलके उत्पत्ति स्थिति जगत्-संहार
योगे योगाधार राम, काले महाकाल ❊ राम-आगमने धन्य हइल पाताल
मूढ़बुद्धि मही चाहे रामे दिते बलि ❊ अवशेषे हबे जाहा, तोमारे से बलि८५
देवीरे प्रणाम करि हनूमान गेल ❊ श्रीरामेर निकटेते उपनीत हैल
येखाने आछेन बन्दी श्रीराम-लक्ष्मणे ❊ कहिल देवीर कथा दु'जनार काने
उपाय कहिया देवी दिलेन मन्त्रणा ❊ यखन करिबे मही देवी-आराधना
यखन लइया जावे तोमा-दोंहाकारे ❊ सेइक्षणे आमि गिया प्रवेशिब घरे
मक्षिरूप हइया थाकिब अलक्षिते ❊ आसिबेक महीराजा देवीरे पूजिते
प्रणाम करिते कबे समर्पिया पूजा ❊ प्रणाम ना जानि मोरा, राजपुत्र राजा

को बलिदान देने वह लाएगा तो राम से कहेगा, देवी को प्रणाम करो। राम उनसे कहें कि प्रणाम करना नहीं जानता हूँ। राम कहेंगे, ऐ महीरावण सुनो, प्रणाम कैसे किया जाता है यह दिखा दो। महीरावण राम को प्रणाम करना दिखाने लगेगा और साष्टाँग भूमि पर लेट जायगा। सिर नीचे की ओर किये महीरावण प्रणाम करेगा और यह खड्ग लेकर तुम महीरावण को काट डालोगे। देवी ने कहा, बेटा यही परामर्श श्रेष्ठ है, जाकर राम के कानों में यह समाचार बता दो। श्रीराम शिव के गुरु हैं यह मुझको मालूम है। शिव और राम में कोई भेद नहीं, यह शूलपाणि कहते हैं। राम अनाथ के नाथ हैं, संसार के सार हैं, पल भर में विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय कर सकते हैं। योग में राम योगाधार हैं और काल में महाकाल हैं, राम के आगमन से पाताल धन्य हो गया। मूढ़मति महीरावण राम को बलि देना चाहता है, अन्त में जो कुछ होगा वही तुमसे बताती हूँ ॥ ४८५ ॥

देवी को प्रणाम कर हनुमान राम के समीप वहाँ उपस्थित हुए, जहाँ श्रीराम-लक्ष्मण बन्दी बने बैठे थे। देवी की बात उसने दोनों के कानों में बता दी। देवी ने मंत्रणा दी है और उपाय बता दिया है। जिस समय महीरावण देवी की आराधना करेगा उसी समय तुम दोनों को यहाँ से ले जायगा। उसी क्षण मैं भी द्वार से प्रवेश करूँगा और मक्खी का रूप धरे अदृश्य बना रहूँगा। महीरावण देवी की पूजा करने आएगा। पूजा समाप्त कर वह प्रणाम करने को कहेगा। हम लोग राजपूत राजा हैं, हमें प्रणाम

कि रूपे प्रणाम करे, किछुइ ना जानि ❋ प्रणाम करिया राजा, देखाओ आपनि
प्रणाम करिबे राजा देवी-विद्यमान ❋ मुण्ड काटि तखन करिब दुइखान
तव वाक्ये मही यदि ना करे प्रणाम ❋ सवंशे वधिब तारे करिया संग्राम
बुके हाँटु दिया मुण्ड फेलिब छिंड़िया ❋ जाइब महीर रक्ते देवीरे पूजिया
मारुतिर बाक्य शुनि हृष्ट दुइ-भाइ ❋ तोमा हैते संकटेते परित्राण पाइ८६
एइ युक्ति करिया रहिल तिनजन ❋ देवीरे पूजिते मही करिल गमन
आदेशिया आनाइल श्रीराम-लक्ष्मणे ❋ दु'जनारे राखे आनि देवीर दक्षिणे
हेनकाले हनूमान प्रवेशिल घरे ❋ अलक्षिते रहिलेन देवीर प्रान्तरे
पूजा करिबारे मही बसिल आसने ❋ प्रतिमार आड़े थाकि हनू देखे शुने
निकट हइल काल से महीरावणे ❋ कृत्तिवास विरचिल गीत रामायणे४८७

महीरावणेर पूर्व्वजन्म-वृत्तान्त

करजोड़े ब्रह्मारे कहेन सुरपति ❋ राम-लक्ष्मणेर किसे हइबे निष्कृति
महीरावण हरिया ल'येछे दुइ-भाइ ❋ केमने उद्धार पाबे, भावि मने ताइ४८८

करना मालूम नहीं। कैसे प्रणाम किया जाता है बिल्कुल नहीं मालूम। हे राजा, तुम ही स्वयं प्रणाम करके दिखा दो। देवी के सम्मुख राजा प्रणाम करेगा और उस समय मैं उसका सिर काट कर दो टुकड़े कर डालूँगा। तुम्हारे कहने पर यदि महीरावण प्रणाम नहीं करता है तो युद्ध कर उसको सारे वंश के साथ वध कर डालूँगा। सीने को घुटने से दबा कर उसका मुंड नोच डालूँगा और महीरावण के रक्त से देवी की पूजा करूँगा। हनुमान के ये वाक्य सुनकर दोनों भाई बड़े प्रसन्न हुए, और बोले, तुम्हारे द्वारा ही हम संकट से उबरते हैं॥ ४८६ ॥

तीनों यह परामर्श किये बैठे रहे। देवी की पूजा करने महीरावण चला। आदेश देकर श्रीराम-लक्ष्मण को वहाँ मँगवा लिया। दोनों को लाकर देवी के दक्षिण में खड़ा कर दिया। ऐसे ही समय हनुमान ने कक्ष में प्रवेश किया और देवी की ओट में अदृश्य बने रहे। पूजा करने के लिए महीरावण आसन पर बैठ गया। प्रतिमा की आड़ में रहकर हनुमान ने सब देखा और सुना। महीरावण की मृत्यु निकट आ गई। कृत्तिवास ने रामायण के गीतों की रचना की॥ ४८७ ॥

महीरावण का पूर्वजन्म-विवरण

सुरपति (इन्द्र) ने हाथ जोड़कर ब्रह्मा से कहा, राम-लक्ष्मण की मुक्ति कैसे होगी। महीरावण दोनों भाइयों को चुराकर ले गया है, मन में यही सोच रहा हूँ कि कैसे वे निस्तार पाएँगे॥ ४८८ ॥

एतेक शुनिया ब्रह्मा इन्द्रेर बचन ※ हासिया बलेन, शुन सर्व्व देवगण
शत्रुधनु-नामे छिल गन्धर्व्व-सन्तान ※ बिष्णुर सम्मुखे नित्य करे नृत्य-गान
नित्य-नित्य नृत्य करे बिष्णुर सदन ※ ताहारे बड़इ तुष्ट देव-नारायण
बिष्णु सम्भाषिते गेल अष्टावक्र-ऋषि ※ बाँका मूर्त्ति-देखिया गन्धर्व्वे हैल हासि
मुनिरूप देखिया गन्धर्व्व करे व्यंग ※ मुनिरे देखिते तार हैल ताल-भंग
मुनि कहे, मोरे देखि कर उपहास ※ सुन्दर शरीर तव हइबे बिनाश
पापी ह'ये जन्म गिया राक्षसेर कुले ※ धरिया बिकट-मूर्त्ति थाकह पाताले
शुनिया मुनिर शाप चिन्ते बिद्याधर ※ कि दोषे दारुण शाप दिले मुनिवर
अज्ञान पातकी आमि, तोमा नाहि चिनि ※ त्रिभुवने पूजित आपनि महामुनि
कृपाकर, धरि आमि तोमार चरण ※ कर प्रभु, ए पापीर पाप-विमोचन ४८९
शत्रुधनु-बचन शुनिया मुनिवर ※ प्रसन्न हइया तारे करेन उत्तर
आमार बचन कभु ना हइबे आन ※ पाताले रहिबे ह'ये राक्षस-प्रधान
तपःफले महामाया थाकिबेन घरे ※ सुखेते करिबे राज्य महेशेर बरे
दुरन्त राक्षसवंश करिते संहार ※ मनुष्य-रूपेते बिष्णु हबे अबतार
सेइ राम-लक्ष्मणेरे ल'ये जाबे ह'रे ※ पाताले राखिबे ल'ये आपनार पुरे

इन्द्र का यह वचन सुनकर ब्रह्मा ने हँसकर कहा, सारे देवताओं, सुनो। शत्रुधनु नामक एक गन्धर्व-पुत्र था। वह विष्णु के सम्मुख नित्य प्रतिदिन नृत्य करता और गायन गाता था। विष्णु के सदन में वह नित्य-प्रति नृत्य करता था इससे देव नारायण बड़े सन्तुष्ट थे। विष्णु से मिलने अष्टावक्र मुनि आये। उनकी टेढ़ी-मेढ़ी मूर्त्ति को देखकर गन्धर्व को हँसी आ गई। मुनि का रूप देखकर गन्धर्व व्यंग्य करने लगा। मुनि को देखने में उसका ताल-भंग हो गया। मुनि ने कहा, मुझको देखकर उपहास करते हो। तुम्हारा सुन्दर शरीर विनष्ट हो जायगा। पापी होकर राक्षस-कुल में जाकर जन्म लो। विकट मूर्त्ति लेकर पाताल में वास करो। मुनि का शाप सुनकर विद्याधर चिन्ता करने लगा कि किस दोष से इस मुनिवर ने एक भयानक शाप दिया। वह कहने लगा मैं अबोध पापी हूँ, तुमको पहचानता नहीं हूँ। आप महामुनि त्रिभुवन में पूजित हैं। मैं तुम्हारे चरणों का स्पर्श करता हूँ, हे प्रभु कृपा करो और इस पापी को पाप से मुक्त कर दो ॥ ४८९ ॥

शत्रुधनु का वचन सुनकर मुनिवर ने प्रसन्न होकर उससे कहा, मेरा वचन अन्यथा नहीं होगा, तुम पाताल में राक्षस-प्रधान बनकर रहोगे। तुम्हारी तपस्या के बल पर महामाया तुम्हारे घर में रहेगी और तुम महेश के वर से सुख से राज्य करोगे। दुष्ट राक्षस-वंश का विनाश करने के लिए विष्णु अवतार लेंगे। उन्हीं राम-लक्ष्मण को तुम चुरा कर ले जाओगे और पाताल में अपने पुर में उनको रखोगे।

मुण्ड काटा जावे तव हनूमान-हाते ※ शापे मुक्त ह'ये पुनः आसिवे स्वर्गेते
हनूमान-हाते हवे शाप-विमोचन ※ आमार बचन मिथ्या नहे कदाचन
एतेक वलिया मुनि गेलेन स्वस्थाने ※ सेइ हैल महीरावण पाताल-भुवने
मुनिर बचन कभु नहे त अन्यथा ※ देवगण चलिगेल, दुइ-भाइ यथा४९०

हनूमान-कर्त्तृक महीरावण-वध

ब्रह्मा-आदि करिया यतेक देवगण ※ कौतुके देखिते जान महीर मरण
यतेक देवतागण रहे शून्यपथे ※ महामाया पूजे मही हरषित-चिते
राशि-राशि फूल-फल दिया राजा पूजे ※ शंख घण्टा ढाक ढोल नानाबाद्य बाजे
अर्च्चना करिल राजा खाण्डा खरशान※ प्रणाम करिते मही कैल संबिधान
श्रीराम-लक्ष्मण बले, प्रणाम ना जानि ※ केमने प्रणाम करे, देखाओ आपनि
बिधिर निर्ब्बन्ध कभु खण्डाइते नारि ※ श्रीरामे देखाये मही नमस्कार करि
शत दण्डवत् करे देवीर सम्मुखे ※ प्रतिमार आड़े थाकि हनूमान देखे
देवीर हातेर खड्ग ल'ये हनूमान ※ लाफ दिया महीरे करिल दुइखान
प्रतिमा-रूपिणी देवी महामाया हासे ※ अनुचर गण देखि पलाय तरासे
मुक्त करिलेन हनू श्रीराम-लक्ष्मणे ※ हनूर प्रताप देखि हासेन दु'जने

हनुमान के हाथों तुम्हारा मुंड काटा जायगा और शापमुक्त होकर फिर स्वर्ग में चले आओगे। हनुमान के हाथों ही तुम्हारा शाप-विमोचन होगा। मेरा वचन कभी मिथ्या नहीं होगा। इतना कहकर मुनि अपने-अपने स्थान चले गये और वह पाताल में महीरावण बन गया। मुनि के वाक्य कभी अन्यथा नहीं हो सकते। सारे देव वहीं चले गये जहाँ दोनों भाई हैं ॥ ४९० ॥

हनुमान द्वारा महीरावण-वध

ब्रह्मा आदि सारे देवता कौतुक-वश महीरावण की मृत्यु देखने चल पड़े। सारे देवता अन्तरिक्ष में रहे और महीरावण प्रसन्न चित्त महामाया की पूजा करता रहा। राजा फल और फूलों की राशि से पूजने लगा और शंख, घंटा, ढाक, ढोल आदि विभिन्न बाजे बजने लगे। राजा ने तीक्ष्ण धार वाले खड्ग की अर्चना की, फिर उसने दोनों भाइयों को प्रणाम करने का आदेश दिया। श्रीराम-लक्ष्मण ने कहा, हम प्रणाम करना नहीं जानते, कैसे प्रणाम किया जाता है स्वयं दिखा दो। विधना का लिखा कोई मेट नहीं सकता है। श्रीराम को महीरावण नमस्कार कर दिखाने लगा, देवी के सम्मुख वह दंडवत् प्रणाम करने लगा। प्रतिमा की ओट में रहकर हनुमान ने देखा। देवी के हाथ से खड्ग लेकर हनुमान कूद पड़े और एक ही वार में महीरावण के दो टुकड़े कर डाले। प्रतिमा-रूपिणी देवी महामाया हँसने लगी। सारे अनुचर

अन्तरीक्षे थाकिया बाखाने देवगण ❊ हनूमाने कोल दिला श्रीराम-लक्ष्मण
अद्भुत अश्रुत कथा राम-अवतार ❊ सेवक हइते हैल रामेर निस्तार
मुनिशापे मुक्ति हैल से महीरावण ❊ गन्धर्व्व-रूपेते गेल अमर-भुवन
कृत्तिवास-पण्डित कवित्वे बिचक्षण ❊ लंकाकाण्डे गाहिलेन गीत रामायण४९१

अहिरावण-वध

रामगुण गाइते गाइते रे तनु पतन यदि रे हय।
जाय, अमर-भुवने चापिया बिमाने शमन चाहिया रय ॥
अर्द्ध-नाभिकूपे ल'ये रे यखन डुबाय।
शत शमन आसिये तारे, (मन) कि करिते पारे,
पातकी तराते श्रीरामेर नामटि ओगो एसेछे संसारे ॥ ४९२

महीरावण मैल देखि यत निशाचर ❊ धाइया कहिल बार्त्ता पुरीर भितर
पलाय सकल लोक, केह नाहि रहे ❊ कपाले या' लेखा थाके, खण्डिवार नहे
आचम्बिते राजा ल'ये पड़िल प्रमाद ❊ अन्तःपुरे महाराणी पाइल संवाद९३

यह देखकर भय से भाग खड़े हुए। हनुमान ने श्रीराम-लक्ष्मण को मुक्त किया। हनुमान का प्रताप देखकर दोनों हँसने लगे और अन्तरिक्ष में रहकर देवता प्रशंसा करने लगे। श्रीराम-लक्ष्मण ने हनुमान को अँकवार में ले लिया। राम-अवतार की कथा बड़ी ही अद्भुत और अश्रुत है। सेवक हनुमान के द्वारा ही राम का उद्धार हो सका। महीरावण मुनि के शाप से मुक्त हो गया और गन्धर्व-रूप अपनाकर अमरलोक चला गया। कवित्व में पण्डित कृत्तिवास विचक्षण हैं, उन्होंने लंकाकाण्ड में रामायण-गीत गाया ॥ ४६१ ॥

अहिरावण वध

यदि राम का नाम लेते हुए शरीर का पतन हो तो वह विमान पर सवार होकर अमरधाम की ओर चला जाता है और यम ताकता ही रह जाता है। अर्ध-नाभिकूप में लेजाकर डुबोने वाले ये सौ-सौ यमराज भी उसका क्या बिगाड़ सकते हैं। पापियों को तारने के लिए इस संसार में श्री राम का नाम आया है ॥ ४६२ ॥

महीरावण को मरते देखकर सारे राक्षस दौड़कर पुरी के भीतर गये और यह बार्त्ता सबसे कह सुनाई। वह सुनकर सारे लोग भागने लगे, कोई भी नहीं ठहरा। जो भाग्य में लिखा होता है उसका खंडन नहीं हो सकता। अचानक ही राजा पर यह विपत्ति आ पड़ी है, यह समाचार महारानी को अन्तःपुर में मिला ॥ ४६३ ॥

राजार मरण शुनि राणी ज्वले कोपे ※ आलुथालु वेशभूषा, अधरोष्ठ काँपे
राणी बले, एइ छिल योगाद्यार मने ※ एतकाल पूजा खेये मारिल राजने
महीरे दिलेक बलि देवीर साक्षाते ※ मजिल आमार राज्य महामाया ह'ते
देवीर सहाय हय कपि आर नर ※ कि दोषेते महीरे भाविल देवी पर
आगे गिया प्रतिमा डुबाये दिव जले ※ नर-बानरेर प्राण ल'ब शेषकाले९४
एतेक बलिया महीरावणेर नारी ※ धनुक लइया उठे मार मार करि
संगेते साजिल सेना असंख्य-गणन ※ हनूर उपरे करे वाण-वरिषण
बड़-बड़ वृक्ष यत मारे हनूमान ※बाणेते काटिया राणी करे खान-खान९५
मनेते भाविया किछु ना पाय मारुति ※ कोप करि राणीर उदरे मारे लाथि
दशमास गर्भ छिल राणीर उदरे ※ प्रसवे सन्तान एक महा-भयंकरे
अष्टगोटा बाहु तार, चारिगोटा मुण्ड ※ विकट-मूरति तार, देखिते प्रचण्ड
भूमिष्ठ हइल पुत्र अद्‌भुत-विक्रम ※ दुइचक्षु रक्तवर्ण युगान्तरे यम
महायुद्ध आरम्भिल हनूमान-सने ※ सापटिया कील-लाथि मारे हनूमाने
गर्भेर रुधिर-पूंजे व्यापित-शरीरे ※ आचम्बिते संग्रामेते सिंहनाद करे
उलंग उन्मत्त येन पागल-समान ※ ताहार बिक्रम देखि हासे हनूमान

राजा की मृत्यु सुनकर रानी क्रोध से जलने लगी। अस्त व्यस्त वेशभूषा में रानी के होंठ काँपने लगे। रानी ने कहा, यही योगाद्या भगवती के मन में था, इतने दिन पूजा खाकर अब राजा को मारा। देवी के सम्मुख महीरावण का बलिदान हुआ। महामाया के कारण ही मेरा राज्य उजड़ा। देवी की सहायता कपि और नर के लिए हुई! किस दोष से देवी ने महीरावण को पराया समझा। पहले जाकर प्रतिमा को जल में डुबो दूँगी फिर अन्त में नर-वानर के प्राण लूँगी॥ ४६४॥

इतना कहकर महीरावण की नारी धनुष लेकर मार-मार कर उठी। उसके साथ अगणित सेना भी सुसज्जित हुई। वे सब हनुमान पर बाण बरसाने लग। हनुमान जितने भी बड़े-बड़े पेड़ों को फेंकता, रानी उनको बाण से काट-काट कर खंड-खंड कर देती॥ ४६५॥

हनुमान की समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय, उन्होंने गुस्से में आकर रानी के पेट पर लात मारदी। रानी के पेट में दस महीने का गर्भ था उससे एक महाभयंकर पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके चार मुंड और आठ हाथ थे। वह देखने में विकट-मूर्त्ति और प्रचंड था। अद्‌भुत विक्रम वाला पुत्र भूमिष्ठ हुआ। उसकी दोनों आँखें लाल-लाल थीं मानों वह युगान्त का यम हो। उसने हनुमान के साथ भीषण युद्ध करना आरम्भ कर दिया, हनुमान से लिपट कर उनको घूसा, मुक्का, लात जमाने लग गया। गर्भ के क्लेद रक्त से सने शरीर को लेकर वह अकस्मात् ही संग्राम में एक नंगे उन्मादी पागल के समान सिंहनाद

श्रीराम-लक्ष्मण हासे देखिया राक्षस ※ हनूमान बले, बेटार बड़इ साहस
एखनि जन्मिया पुत्र करे घोर रण ※ महीरावणेर बेटा से अहिरावण
आथालि पाथालि हाने मारुतिर बुके ※ किछु नाहि बले हनू, संवरिया थाके
हनूमान बले, बेटार आम्बा देखि अति ※ एखनि पाठाव तोरे यमेर संहति
मारिबारे हनूमान जाय उभरणे ※ धरिते ना पारे, शिशु पिछलिया पड़े
हेनकाले हनूमान चिन्तिल उपाय ※ पवन-स्मरणे रणे झड़ बहि जाय
विषम बातासे धूला लागे तार गाय ※ पाछड़िया धरे हनू, आर कोथा जाय
दुइपदे धरि तारे ल'ये फेले दूर ※ पाथरे आछाड़ मारि हाड़ कैल चूर९६
संग्रामे आइल आर यत-यत जन ※ लइल सबार प्राण पवन-नन्दन
पातालबासी मुनि-ऋषि हैल आनन्दित ※ भय दूरे गेल, सबे महा-हरषित
गेलेन देवतागण आपनार स्थान ※ हनूमाने सकलेइ करिल कल्याण९७
शत्रुरे मारिया यात्रा कैला तिनजन ※ महीर पूजिता देवी कहेन तखन
साधिया रामेर कार्य्य चलिला सत्वर ※ सेवा के करिबे मम पाताल-भितर९८
एत शुनि हनूमान करि नमस्कार ※ देवीरे पाताल हैते करिल उद्धार

कर उठा। उसका विक्रम देखकर हनुमान हँसने लगे श्रीराम-लक्ष्मण भी इस राक्षस को देखकर हँसने लगे। हनुमान ने कहा, अभागे का बड़ा साहस है, अभी-अभी जन्म लेकर घोर-रण करने लग गया। महीरावण का बेटा अहिरावण हनुमान के सीने पर ताबड़तोड़ आघात करने लगा, हनुमान उससे कुछ नहीं बोले बस अपने को संवरण (रोक) कर खड़े रहे। हनुमान ने कहा, इस निगोड़े की देख रहा हूँ बड़ी उच्च अभिलाषा है। अभी तुझे यम के निकट भेजता हूँ। मारने के लिए हनुमान जो द्रुतवेग से दौड़ा तो उस बच्चे को पकड़ न सका, वह हाथों से फिसल गया। ऐसे समय हनुमान ने उपाय सोचा और पवन का स्मरण करने से वहाँ रण-स्थल में आँधी चलने लगी। तेज़ हवा में उसके बदन पर धूल लगी तो हनुमान ने उसको कस कर पकड़ लिया, अब कहाँ जायगा। दोनों पैरों से उसे पकड़ कर दूर दे फेंका। पत्थर पर पटक कर उसकी हड्डियाँ चूर-चूर कर दीं ॥ ४९६ ॥

संग्राम में और जितने भी जन आए पवन-नन्दन ने सभी के प्राण ले लिये। पाताल के रहने वाले मुनि-ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, भय चला गया अत: वे बड़े हर्षित हुए। सभी देवता अपने-अपने स्थान पर लौट गये। सभी ने हनुमान की कल्याण-कामना की ॥ ४९७ ॥

शत्रु को मारने के बाद तीनों ने यात्रा की तो महीरावण की पूजिता देवी ने कहा, राम का कार्य सिद्ध कर तुम तो तुरन्त चल पड़े, अब मेरी सेवा इस पाताल में कौन करेगा ॥ ४९८ ॥

इतना सुनकर हनुमान ने नमस्कार कर देवी का पाताल से उद्धार

हइया हरिष-युक्त चले तिनजन ※ आगे राम, पाछे हनू मध्येते लक्ष्मण
सुड़ंगेर पथेते उठिला तिनजन ※ आपन-कटके गिया दिला दरशन९९
श्रीराम-लक्ष्मणे पेये सुग्रीव बिभीषण ※ जाम्बवाने कोल दिल एइ तिनजन
हनूर प्रशंसा करे श्रीराम-लक्ष्मण ※ हनूमाने कोल दिल सुग्रीव बिभीषण
जाम्बवान कोल दिया कैल आलिंगन ※ धन्य हनूमान, बले यत कपिगण
दुइ प्रहर आकाशे यखन दिवाकर ※ सिंहनाद छाड़े यत भल्लूक-वानर
चारिद्वार चापि कपि करे सिंहनाद ※ शुनिया रावण-राजा गणिल प्रमाद
महीरावण पड़िल शुनिया दशानन ※ जीवनेर आशा छाड़ि करिछे क्रन्दन
रामायण गाहिलेन कवि कृत्तिबास ※ जेइजन शुने, तार पूरे अभिलाष५००

रावणेर तृतीय-दिवस युद्धे गमन

राम या' कर निजगुणे, आमि भजन-साधन जानिने ।
मिछे गेल दीनेर दिन, ना ह'ल भजन, घेरिल शमने ।।
या' कर हे रामचन्द्र जगत्-गोसाँइ ※ आमार तोमा-बिने त्रिभुवने केह नाइ
मायानदीर तीरे आछि राम, तोमार चरण करि सार ।
ओ राँगा-चरण-तरणी क'रे राम आमाय करहे पार ।। ५०१

किया। तीनों हर्षमग्न होकर चल पड़े। सामने राम पीछे हनुमान और बीच में लक्ष्मण। सुरंग के रास्ते से वे तीनों चले और अपनी सेना में पहुँचकर सबको दर्शन दिया ।। ४९९ ।।

श्रीराम और लक्ष्मण को पाकर सुग्रीव, विभीषण और जाम्बवान ये तीनों उनसे गले मिले। श्रीराम-लक्ष्मण ने हनुमान की प्रशंसा की। सुग्रीव और विभीषण हनुमान से गले मिले। जाम्बवान ने उनको आलिंगन बद्ध कर डाला। जितने कपि थे सभी 'धन्य-धन्य हनुमान' कहने लगे। आकाश में जब सूर्य दोपहर चढ़ आया तो भालू और वानरों ने मिलकर सिंहनाद किया। चारों ओर से कपियों का सिंहनाद सुनकर राजा रावण ने समझ लिया कि विपत्ति आई है। दशासन ने सुना कि महीरावण का पतन हुआ है तो जीवन की आशा त्यागकर वह रोने लग गया। कवि कृत्तिवास ने रामायण गायी, जो भी उसे सुनेगा उसकी अभिलाषा पूरी होगी ।। ५०० ।।

रावण का तीसरे दिन युद्ध में जाना

हे राम, तुम जो कुछ करते हो अपने गुण से ही करते हो। मुझको भजन-पूजन नहीं आता। इस दीन का दिन यूँही व्यर्थ बीत गया; भजन भी न कर सके और यमराज ने भी घेर लिया। हे जगत् के स्वामी रामचन्द्र! जो कुछ करना है करो, तीनों लोक में तुम्हारे बिना मेरा कोई नहीं है। हे राम!

स्त्रीलोकेर क्रन्दन उठिल घरे-घरे ॐ अभिमाने शोके मत्त राजा लंकेश्वरे
जुझिबार तरे साजे राजा दशानन ॐ सब्बाँग भूषित कैल राज-आभरण
भये अभिमाने राजा आँखि छल-छल ॐ कोपमने जुझिते चलिल रणस्थल
आपनि करिछे साज लंका-अधिकारी ॐ मेघेर वरण अंगे धवल उत्तरी
दशमुण्डे रतन-मुकुट सारि-सारि ॐ परिलेक मृगमद सुगन्धि कस्तूरी
नाना-अलंकारे करे भुवन उज्ज्वल ॐ दशभाले दश-मणि करे झलमल
कोपे काँपे ओष्ठाधर, चले रणमुखे ॐ दश-हाजार राणी एसे घेरे चारिदिके
केह धरे आशे पाशे, केह धरे कर ॐ कारो पाने फिरिया ना चान लंकेश्वर
ना थाके रावण-राजा कारो उपरोधे ॐराणी मन्दोदरी गिया पश्चाते बिरोधे ५०२
मन्दोदरी बले, शुन लंका-अधिपति ॐ बुद्धिमान ह'ये केन छन्न हैल मति
परम-पण्डित तुमि, बले महाबीर ॐ विश्वश्रवा-मुनि-पुत्र परम-सुधीर
स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिले बाहुबले ॐ यम इन्द्र कम्पमान तोमारे देखिले
सर्ब्बशास्त्रे बिज्ञ तुमि लंका-अधिकारी ॐ आमि कि बुझाब तोमा हीनबुद्धि नारी
तथापि किंचित् बलि करि परिहार ॐ स्थिर ह'ये दाण्डाइया शुन एकबार

तुम्हारे चरणों का भरोसा किये मायानदी के किनारे पड़ा हूँ। अपने उन लाल-चरणों को तरणी बना कर मुझको पार लगा दो ॥ ५०१ ॥

घर-घर में नारियों का क्रन्दन गूँजने लगा। राजा लंकेश्वर अभिमान व शोक से प्रमत्त हो गया। राजा दशानन ने युद्ध करने के लिए सारे अंगों को राज-आभूषणों से भूषित किया। भय और अभिमान से राजा की आँखें सजल हो आईं। क्रोधित होकर वह रणभूमि की ओर चल पड़ा। लंका का अधिकारी स्वयं अपने को सुसज्जित करने लगा। अपने मेघ-सदृश अंग पर उसने धवल रंग की ओढ़नी डाल ली। दस मुंडों पर पंक्तियों में रत्न-मुकुट पहन लिये। मृगमद-सुगन्ध कस्तूरी का भी प्रयोग किया। विभिन्न अलंकारों से संसार उज्ज्वल हो उठा। दस माथे पर दस माणिक चमक उठे। रोष से उसके होंठ काँपने लगे और वह रणस्थल की ओर चला। दस हजार रानियों ने आकर चारों ओर से उसे घेर लिया। किसी ने आकर बाजू पकड़ लिया तो किसी ने आकर हाथ थाम लिया। किन्तु लंकेश्वर ने किसी की तरफ पलट कर भी नहीं देखा। किसी के कहने पर भी राजा रावण नहीं रुका, ऐसे समय रानी मन्दोदरी ने जाकर पीछे से विरोध किया ॥ ५०२ ॥

मन्दोदरी ने कहा, हे लंका के अधिपति, सुनो। इतने बुद्धिमान् होते हुए भी तुम्हारी मति क्यों मारी गई। तुम परम पंडित हो, शक्ति में महाबीर हो, विश्वश्रवा मुनि के पुत्र हो परम अचंचल हो। अपने बाहुबल से तुमने स्वर्ग, मर्त्य, पाताल तीनों लोकों पर विजय पाई है। यम और इन्द्र तुमको देखकर काँपने लगते हैं। हे लंका के अधिकारी, तुम सर्वशास्त्रों में पारंगत हो, मैं

मुनिगण कहे, सर्व्व-शास्त्रेते विहित ❋ रमणीर सुमन्त्रणा शुनिते उचित
बिपदे सुबुद्धि यदि रमणीते बले ❋ से बुद्धे पुरुष थाके परम-कुशले
बहुकाल लंकापुरे करिले राजत्व ❋ कोन युगे देखियाछ एमन अनित्य
कोन काले बानरेते लंघेछे सागर ❋ कोन काले सलिलेते भेसेछे पाथर
अपरूप एमन शुनेछे कोन देशे ❋ पाषाण मनुष्य हय चरण-परशे
श्रीराम मनुष्य नन, विष्णु-अवतार ❋ सीता फिरि देह, युद्धे कार्य्य नाहि आर ५०३
दशानन बले, सीता दिते पारि फिरे ❋ हासिबेक बिभीषण, ना स'बे शरीरे
कहिबेक इन्द्र-आदि यत देवगण ❋ युद्धे हारि सीता फिरि दिलेक रावण
छोट ह'ये खोंटा दिबे, बड़ भय बासि ❋ सुस्थिरा हइया गृहे बैसह प्रेयसि
बरञ्च रामेर शरे त्यजिब जीवन ❋ सीता फिरि दिते नाहि पारि कदाचन ४
मन्दोदरी बले, जानि भाग्य हैले हीन ❋ बल-बुद्धि-पराक्रम पासरे प्रवीण
आसन्न-समये बुझि घटे बिपरीत ❋ कोप ना करिह राजा, शुनह किंचित्
संसारेर कर्त्ता राम पतित-पावन ❋ त्रिभुवने सकलेरे करेन पालन
सत्वगुणे जेइ प्रभु पालेन सबारे ❋ शत्रुभावे आइलेन मारिते तोमारे

हीनबुद्धि नारी होकर तुमको क्या समझा सकती हूँ। फिर भी प्रार्थना के रूप में दो शब्द कहूँगी—केवल खड़े होकर तनिक सुनलो। मुनियों का कहना है और सर्वशास्त्रों में भी यह कहा गया है कि रमणी का सु-परामर्श सुनना उचित है। विपत्ति में यदि रमणी सुबुद्धि दे तो उस बुद्धि के कारण पुरुष कुशल से रहता है। बहुत दिनों से तुम लंका में राज्य कर रहे हो, किस युग में तुमने ऐसी असंभव घटना देखी है। किस युग में वानरों ने समुद्र लांघा है या पानी पर पत्थर तैराया है। ऐसी अनोखी बात तुमने किस देश में सुनी है। पत्थर के स्पर्श से पत्थर की मनुष्य-मूर्ति बन जाती है। श्रीराम कोई मनुष्य नहीं हैं, वे विष्णु के अवतार हैं। सीता को लौटा दो, अब युद्ध की कोई आवश्यकता नहीं रही ॥ ५०३ ॥

दशानन ने कहा, सीता को तो मैं लौटा दे सकता हूँ, किन्तु विभीषण हँसेगा इसको मैं बरदाश्त नहीं कर सकूँगा। इन्द्र आदि सारे देवता कहेंगे कि युद्ध में हारकर रावण ने सीता को लौटा दिया। यह छोटे लोग लानत-मलामत करेंगे इससे मुझको बड़ा भय है। हे प्रिये, घर जाकर आराम से बैठो। राम के बाणों से प्राण दे सकता हूँ किन्तु सीता को कदापि नहीं लौटा सकता ॥ ५०४ ॥

मन्दोदरी ने कहा, जानती हूँ कि भाग्य खोटा होने पर प्रवीण मनुष्य का भी बल-बुद्धि और पराक्रम बिसर जाता है। ऐसे आसन्न-समय में कहीं कुछ विपरीत न हो जाय। राजा, कोप न करो, तनिक सुनो। पतितपावन राम संसार के कर्ता हैं, वे त्रिभुवन में सभी का पालन करते हैं। सत्वगुण से वही

लक्ष्मीरूपा सीता देवी पूजिता भुवने * लक्ष्मीरे दितेछ दु:ख अशोकेर बने
येजन पालन-कर्त्ता, सेइजन मारे * अभाग्य तोमार मत नाहिक संसारे ५
ईषत् हासिया कहे लंका-अधिकारी * सामान्य तोमार बुद्धि, राणी मन्दोदरी
शक्तिरूषा महालक्ष्मी सीता-ठाकुराणी * तुमिकि बुझाबे मोरे, आमि ताहा जानि
जप यज्ञ पूजा करि राखिते ना पारे * विना-अर्च्चनाय पड़ि आछेन दुयारे
नीराहारे अनाहारे जपे कतजन * मृत्युकाले नाहि पाय जेइ श्रीचरण
ध्यानयोगे भाविया ना पाय मुनि-ऋषि * से राम भावेन मोरे निराहारे बसि
जागिछे आमार रूप श्रीरामेर मने * भाविछेन आमारे बधिबे कतक्षणे
मरिब रामेर हाते, भाग्ये यदि आछे * यमेर ना हवे साध्य घनाइते काछे
बिष्णुदूते, ल'ये जाबे तुलिया विमाने * समान-प्रतापे जाब जीवन-मरणे
इन्द्र-आदि देवता जीवने आज्ञाकारी * मरिया वैकुण्ठे आमि जाव सर्व्वोपरि
ना बुझिया भाग्यहीन कहिले आमारे * आमा-सम भाग्यवान् नाहिक संसारे
देखिब करिया युद्ध मरि किबा मारि * क्रन्दन संवरि गृहे जाओ मन्दोदरी ६
मरण निकटे जार, कि करे औषधे * ना रहे रावण मन्दोदरीर प्रबोधे

प्रभु सबका पालन किया करते हैं, वही शत्रु के रूप में तुमको मारने के लिए आये हैं। सीतादेवी लक्ष्मी के रूप में सारे संसार में पूजित हैं, तुम उस लक्ष्मी को अशोक-वन में कष्ट दे रहे हो। जो पालनकर्त्ता है वही मार रहा है, तुम सा अभागा इस संसार में कोई दूसरा नहीं है ॥ ५०५ ॥

लंका के अधिकारी ने मुस्करा कर कहा, हे रानी मन्दोदरी, तुम्हारी बुद्धि बहुत कम है। सीता शक्तिरूपिणी महालक्ष्मी हैं, यह तुम मुझको क्या समझाती हो, मैं यह भली-भाँति जानता हूँ। लोग इनको जप, यज्ञ, पूजा करके भी नहीं रख पाते हैं, और वह बिना अर्चना के हमारे द्वार पर पड़ी हैं। निराहार अनशन कर कितने ही लोग जप किया करते हैं किन्तु मृत्यु के समय इन चरणों की प्राप्ति नहीं हो पाती है। ध्यान में भी मुनि-ऋषि जिनको नहीं पाते हैं वह राम निराहार बैठे मेरी चिन्ता किया करते हैं। श्रीराम के मन में मेरा रूप जाग्रत है। सोच रहे हैं कि कितनी देर में मेरा वध करेंगे। अगर भाग्य में लिखा है कि राम के हाथों मरूँगा तो यम की क्या मजाल कि निकट आ सके। विमान पर बिठाकर विष्णुदूत ले जायगा। जीवन और मरण दोनों में समान पराक्रम दिखाऊँगा। जीवित दशा में इन्द्र आदि देवता मेरे आज्ञाकारी रहे और मरने के बाद मैं सबसे ऊपर वैकुंठ चला जाऊँगा। बिना जाने-बूझे तुमने मुझको अभागा कहा, मुझ सा भाग्यवान इस संसार में नहीं है। युद्ध कर यह फैसला करना है—मारूँगा या मरूँगा। मन्दोदरी, तुम रोना त्याग कर घर जाओ ॥ ५०६ ॥

जिसकी मृत्यु निकट हो उसको दवा क्या लाभ पहुँचा सकती है।

स्वामी प्रदक्षिण करि पड़िल मंगल * मन्दोदरी-च'क्षे जल करे छल-छल
अन्तरे जानिया राणी कान्दिल प्रचुर * दश-हाजार सतिनीते निल अन्त:पुर
अष्टादश वृहन्देर बाहिरे रावण * सारथि साजाये रथ योगाय तखन
कनक-रचित रथ, सुगठित चाका * उपरेते शोभा करे ध्वजेते पताका
विचित्र-निर्म्मित रथ सज्जित प्रचुर * रथेर उपरे राजा संग्रामेर शूर ७
दशानन बले, अस्त्रधारी यतजने * छोट-बड़ साजिया आसुक मम सने
महीरावण पड़िल वंशेर चूणामणि * आर कारे पाठाइब, जाइब आपनि ८
यतेक आछिल सैन्य लंकार भितर * साजिया रावण-संगे चलिल सत्वर
पश्चिम-द्वारेते आछे श्रीराम-लक्ष्मण * जुझिबारे सेइ द्वारे चलिल रावण५०९

श्रीरामेर साहाय्यार्थ इन्द्र-कर्त्तृक स्वीय-रथ प्रेरण

हाते धनु राम भ्रमिछेन रणस्थले * लंका तोलपाड़ बानरेर कोलाहले
कोलाहल शुनि रावण आइल त्वरिते * भुवनविजयी धनुर्व्वाण धरि हाते
चारि-चाका रथखान अष्टघोड़ा बहे * कनक-रचित रथ त्रिभुवन मोहे
हेन रथे उठि जुझे राजा-दशानन * श्रीराम-उपरे करे बाण-बरिषण१०

मन्दोदरी के परामर्श से रावण न रुका। मन्दोदरी ने पति की प्रदक्षिणा कर मंगल-वाक्य उच्चारित किए, उसकी आँखें सजल हो आईं। अन्तर में जान कर रानी बहुत रोई। दस हजार सौतों के साथ वह अन्त:पुर चली गई। अट्ठारह महल के बाहर रावण आया। सारथि ने आकर सुसज्जित रथ सामने रखा। सोने का बना हुआ रथ और उसके पहिए सुगठित हैं। उसके ऊपर ध्वज और पताकाएँ शोभित हैं। विचित्र ढंग से निर्मित रथ पर्याप्त रूप से सुसज्जित है, और रथ पर संग्राम के शूरवीर आसीन हुए ॥ ५०७ ॥

दशानन ने कहा, जितने भी हथियार-बन्द लोग हैं, चाहे वे छोटे हों या बड़े, सुसज्जित हो मेरे साथ चले आवें। वंश का चूड़ामणि महीरावण जब समर में गिर चुका तो फिर किसको भेजूँ, स्वयं ही जाऊँगा ॥ ५०८ ॥

लंका में जितनी सेना थी सब सुसज्जित होकर रावण के साथ शीघ्र चल पड़ी। पश्चिम द्वार पर श्रीराम-लक्ष्मण हैं। लड़ने के लिए रावण उसी-द्वार की ओर चल पड़ा ॥ ५०९ ॥

श्रीराम की सहायता के लिए इन्द्र द्वारा अपना रथ भेजना

हाथ में धनुष लेकर राम रणभूमि में घूम रहे हैं और वानरों के कोलाहल से लंकानगरी गुंजित हो रही है। कोलाहल सुनकर रावण भुवनविजयी धनुष-बाण हाथ में लिये तुरन्त वहाँ जा पहुँचा। चार पहियों वाले उस रथ को आठ घोड़े खींच रहे हैं। स्वर्ण से बना वह रथ त्रिभुवन को मुग्ध कर देता था। ऐसे रथ पर सवार राजा दशानन श्रीराम पर बाण बरसाने लगा ॥ ५१० ॥

रथेते रावण जुझे, राम भूमितले ❋ देवगण-कम्पमान गगन-मण्डले
लइया ब्रह्मार आज्ञा यतेक अमर ❋ राम लागि रथ पाठाइल पुरन्दर
स्वर्ग हैते आसे रथ, पड़िछे विजलि ❋ रथ हैते माथा नोआय सारथि मातलि
इन्द्र पाठाइल रथ दिव्य-धनु:शर ❋ आर पाठाइल एक सुवर्ण-टोपर
रावणे मारिया प्रभु कर देव-हित ❋ त्रिभुवने कीर्त्ति राख रामायण-गीत
राम-लक्ष्मण सुग्रीव राक्षस विभीषण ❋ आचम्बिते रथ देखि चमकित-मन
कोथाकार रथखान, काहार मातलि ❋ रावण-प्रेरित रथ मायार पुत्तलि
रामेरे जिनिते नारे दुष्ट दशस्कन्ध ❋ रथे तुलि कोथा लबे करिया प्रवन्ध
कृत्तिवास पण्डित कवित्वे विचक्षण ❋ रथ देखि राम-सैन्य भावे मने-मन५११

श्रीरभेर सहित रावणेर युद्ध

रसना राम-नाम भुल ना रे।
देख, मिछे-मायाजाले, बद्ध करे काले, डुबाय अकूल-पाथारे।। ५१२
इन्द्ररथ रावण देखिया रणस्थले ❋ चिन्तित हइल मने, टुटे आसे बले
रथेर सारथि रामे कैल प्रदक्षिण ❋ रथे उठे रघुनाथ संग्रामे प्रवीण

रावण रथ से युद्ध कर रहा है और राम भूमि पर खड़े-खड़े। गगन-मंडल में देवता कम्पित हो उठे। सारे देवताओं ने ब्रह्मा की आज्ञा लेकर इन्द्र का रथ राम के लिए भिजवा दिया। बिजलियाँ चमकने लगीं और स्वर्ग से रथ आ गया। रथ से उतर कर सारथि मातलि ने सिर झुकाया, और बोला आपके लिए इन्द्र ने रथ, दिव्य धनुष-बाण और एक स्वर्ण-मुकुट भेजा है। हे प्रभु आप शीघ्र रावण को मार कर देवताओं का हित करो और रामायण गीत के माध्यम से त्रिभुवन में अपनी कीर्त्ति फैला जाओ। राम, लक्ष्मण, सुग्रीव और राक्षस विभीषण ने अकस्मात् रथ देखा तो चकित रह गये। यह रथ कहाँ का है और यह सारथि भी भला किसका है ? अवश्य ही यह रथ रावण द्वारा प्रेषित माया की पुत्तलिका है। दुष्ट दशानन रथ पर राम को जीतने में असफल हो रथ पर बिठा कर कहीं ले जाने का प्रबन्ध कर रहा है। कृत्तिवास पंडित कविताई में विचक्षण है। रथ देख कर राम-सेना मन ही मन विचारने लगी।। ५११ ।।

श्रीराम के साथ रावण का युद्ध

ऐ रसना राम का नाम न भूल जाना। देखो, समय मिथ्या-मायाजाल में बाँध कर अपार समुद्र में डुबो रहा है।। ५१२।।

इन्द्र का रथ रण-स्थल में देखकर रावण मन ही मन चिन्तित हुआ और उसका साहस टूटने लगा। रथ के सारथि ने राम की प्रदक्षिणा की और

चिनिल रावण-राजा इन्द्रेर बिमान ❊ मने-मने दशानन करे अनुमान
कोथा गेल इन्द्रजित् भाइ कुम्भकर्ण ❊ एखनि देवता बेटाय करिताम चूर्ण
एतदिन करि सेवा सेवकेर मत ❊ असमय देखि हैल शत्रु-अनुगत
शत्रुके पाठाय रथ आमा-विद्यमाने ❊ एत बलि कोपदृष्टे चाहे स्वर्गपाने
कोप मने मातलिरे कहे लंकेश्वर ❊ सबलेर अनुबल यतेक अमर
एइबार युद्धे यदि बाँचये जीवन ❊ एके एके काटिब यतेक देवगण १३
कोप संवरिया राजा बसि मनो दुःखे ❊ रथ चालाइया दिल रामेर सम्मुखे
कोपेते रावण करे बाण-अवतार ❊ तिनलक्ष बाण मारे सर्पेर आकार
सर्पबाण देखि रामे लागिल तरास ❊ बुझि पुनः एड़िल बन्धन नागपाश
नागपाश-निवारणे जानेन सन्धान ❊ मन्त्र पड़ि श्रीराम एड़ेन खग-बाण
गरुड़ हइया बाण आकाशेते बुले ❊ रावणेर सर्पबाण ध'रे ध'रे गिले
सर्पबाण ब्यर्थ गेल, कुपिल रावण ❊ रामेर उपरे करे बाण-बरिषण
बाण बरषिया बिन्धे इन्द्रेर मातलि ❊ जर्ज्जर इन्द्रेर अश्व, मुखे भाँगे नालि
कोपेते रावण बज्र-जाठा लय हाते ❊ जाठा देखि देवगण लागिल चिन्तिते
जाठागाछ हाते करि तर्ज्जे लंकेश्वर ❊ डाकिया श्रीरामे तबे करिछे उत्तर

संग्राम में प्रवीण रघुनाथ रथ पर सवार हो गये। दशानन ने मन ही मन अनुमान लगाया और इन्द्र का विमान पहचान लिया। हाय! इन्द्रजीत कहाँ गया और मेरा भाई कुम्भकर्ण भी कहाँ चला गया। वे होते तो अभी देवताओं को मजा चखा देते। इतने दिनों तक सेवक की तरह सेवा करते रहे और अब बुरा समय देखकर शत्रु के अनुगत बन गये हैं। मेरी मौजूदगी में ही वे शत्रु को रथ भेज रहे हैं, इतना कहकर उसने कोप से स्वर्ग की ओर देखा। क्रोधित होकर लंकेश्वर ने मातलि से कहा, जितने देवता हैं वे सबल के ही सहायक बनते हैं। इस बार के युद्ध में यदि प्राणों से बच कर गया तो एक-एक कर सारे देवताओं को काट डालूँगा॥ ५१३॥

क्रोध को रोक कर राजा रावण ने दुखी चित्त से राम के सम्मुख रथ चला दिया। क्रोध से रावण बाण फेंकने लगा। सर्प के आकार वाले तीन लाख बाण उसने फेंके। सर्पबाण देखकर राम में त्रास का संचार हुआ, कहीं फिर से नाग-पाश का बन्धन तो नहीं फेंक रहा है। नागपाश के निवारण का उपाय वे जानते हैं। श्रीराम ने मंत्र पढ़कर खग-बाण फेंका। गरुड़ बन कर वह बाण आकाश में भ्रमण करने लगा और रावण के सर्पबाणों को पकड़-पकड़ कर निगलने लगा। सर्पबाण व्यर्थ गया देखकर रावण क्रुद्ध हुआ। वह राम पर बाण बरसाने लगा, बाणों से उसने इन्द्र के सारथि मातलि को बींध डाला। इन्द्र का अश्व भी घायल हो गया और उसके मुँह से फेन निकलने लगा। कुपित हो रावण ने हाथ में वज्र-जाठा लिया। जाठा देखकर

एइ आमि जाठा मारि पूरिया सन्धान ※ रक्षा कर देखि राम, धरि धनुर्ब्बाण
मन्त्र पड़ि दशानन जाठागाछ एड़े ※ यतदूर जाय जाठा, ततदूर पुड़े
वृक्षेर निकटे गेले वृक्ष सब ज्वले ※ आलो करि आसे जाठा गगन-मण्डले
यत बाण एड़े राम जाठा निवारिते ※ सर्ब्बअस्त्र पुड़ि जाय जाठार अग्निते
बाण पोड़ाइया जाठा जाय बायुबेगे ※ मातलि तखन कहे श्रीरामेर आगे
इन्द्र पाठाइल शेल संसार-बिजय ※ सेइ शेल मार प्रभु, जाठा हबे क्षय
एड़िलेन शेलपाट मातलिर बोले ※ रावणेर जाठा काटि पाड़े भूमितले
जाठागाछ काटा गेल, रुषिल रावण ※ रामेर उपरे करे बाण-बरिषण
बाछिया बाछिया बाण एड़े लंकेश्वर ※ बाण फुटि रघुनाथ हइल कातर
कातर हइया राम धनु दिला टान ※ रावणेर अंग बिन्धि कैला खान खान १४
दुइजने महायुद्ध संग्राम-भितरे ※ कोपे राम गालि पाड़ि बले रावणेरे
सबे बले तोमारे रावण महाराज ※ परस्त्री हरिते तोर मुखे नाहि लाज
सीता यदि आनितिस् मोर बिद्यमाने ※ सेइदिन पाठाताम खरेर सदने
बिद्यमाने ना आनिया करिलिजे चुरि ※ देख देखि आजि तोरे पाठाइ यमपुरी
दशमुण्ड साजायेछ नाना-अलंकारे ※ गड़ागड़ि जाबे मुण्ड समुद्रेर धारे

देवगण चिन्तित हो गये। हाथ में जाठा लेकर लंकेश्वर तरजने लगा। उसने श्रीराम को पुकार कर कहा, मैं यह जाठा निशाना लगाकर फेंक रहा हूँ, अपना धनुष-बाण संभाल कर भला अपनी रक्षा तो करो। मंत्र पढ़कर दशानन ने जाठा फेंका। जाठा जितनी दूर जाता सब कुछ जलाता हुआ जाता। वृक्ष के निकट जाने पर वृक्ष जलने लगे, गगन-मंडल को प्रकाशित कर जाठा आने लगा। जाठा के निवारण के लिए राम जितने भी बाण चलाते सारे अस्त्र जाठा की आग में जल जाते। बाणों को जलाता हुआ जाठा वायुवेग से चलने लगा, तब मातलि ने राम से कहा, इन्द्र ने संसार-विजय शेल भेजा है। हे प्रभु उस शेल को फको तो जाठा का क्षय होगा। मातलि के कहने पर उन्होंने वह शेलपाट (शूल्यास्त्र) फेंका तो उसने जाकर रावण के जाठा को जमीन पर गिरा दिया। जाठा व्यर्थ गया तो रावण रुष्ट हुआ और राम पर बाण बरसाने लगा। लंकेश्वर ने चुन-चुन कर बाण बरसाये तो बाणों से बिंधकर राम कातर हो उठे। कातर होकर राम ने धनुष की प्रत्यंचा खींची तो रावण का अंग बिंध कर क्षत-विक्षत हो गया ॥ ५१४ ॥

संग्राम-स्थल पर दोनों में महायुद्ध ठन गया। कोप से राम रावण को कुशब्द कहने लगे। सब लोग तुझको महाराज रावण कहा करते हैं और तुझको दूसरे की नारी चुराते लाज नहीं आई। मेरे सम्मुख यदि तू सीता को लायाहोता तो उसी दिन तुझको भी खर के साथ यम-सदन भेज देता। मेरे मौजूद न होने पर तुझने चोरी की। देख, आज तुझको यमपुरी भेजे देता हूँ।

ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर देवेन्द्र बासुकि ❊ पड़िलि आमार हाते, कार साध्य राखि
गालि दिया श्रीरामेर वल बेड़े आसे ❊ बाछिया बाछिया बाण मारेन हरिषे
बानरेते गाछ-पाथर फेले चारि भिते ❊ चारि दिके मारे, रावण ना पारे सहिते
आयुःशेष ह'ये रावण टुटे आसे वले ❊ चारिदिके रामरूप रावण नेहाले
बज्र-अस्त्र मारे राम रावण-उपर ❊ मूर्च्छित हइया पड़े रथेर भितर
हात-पा आछाड़ि राजा करे धड़फड़ ❊ सारथि लइया रथ उठि दिल रड़ १५
कतदूरे गिये राजा पाइल चेतन ❊ सारथिरे गालि पाड़े घूर्णित-लोचन
बैरी-सने रण आमि करि रणस्थले ❊ रथ ल'ये पलाइया एलि कार वोले
बले त्रुटि देखि बेटा हइलि कातर ❊ अल्पज्ञान कैलि वेटा, बुके नाहि डर
राम-सह युक्ति करि आछ मोर सने ❊ भंग दिया एलि वेटा, भय नाहि मने
भयेते सारथि कहे करि जोड़हात ❊ आमारे ना कर कोप राक्षसेर नाथ
रणे मूर्च्छा देखि तव, बिषम संग्राम ❊ रणश्रमे घोड़ार बहिल कालघाम
सारथि फिराये रथ राखे योद्धापति ❊ सारथिर धर्म्म एइ, शुन नरपति
रणे मूर्च्छा देखि तव हइनु अन्तर ❊ अविचारे केन मोरे कह कटूत्तर

अपने दशमुंडों को तूने विभिन्न अलंकारों से सुसज्जित किया है। तेरे ये मुंड समुद्र के तट पर लुढ़केंगे। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देवेन्द्र और वासुकि किसकी शक्ति है कि तेरी रक्षा करे, तू मेरे हाथों पड़ा है। इस प्रकार धिक्कारने से श्रीराम की शक्ति बढ़ गई और वे चुन-चुन कर बाण बरसाने लगे। वानर चारों ओर पेड़-पत्थर बरसाने लगे और चारों ओर से मारने लगे। रावण से इतना सहा नहीं गया। आयु समाप्त हो रही है और रावण का बल टूटने लगा है। रावण चारों ओर राम का रूप निहारने लगा। राम ने रावण पर वज्र-अस्त्र फेंका तो वह मूर्छित होकर रथ के भीतर गिर पड़ा। हाथ-पैर पटक कर राजा छटपटाने लगा। सारथि रथ लेकर भाग खड़ा हुआ ॥ ५१५ ॥

कुछ दूर पहुँचकर रावण होश में आ गया। आँख गुरेरते हुए उसने सारथि को कुवचन कहे। वरी के साथ मैं रणभूमि में युद्ध कर रहा हूँ, किसके कहने पर तू रथ लेकर भाग आया। बल में ह्रास देखकर तू घबरा गया, तूने हीनबुद्धि का काम किया, क्या तुझे इसका डर नहीं! राम के साथ सलाह कर तू मेरे साथ टिका हुआ है, रण से तू भाग आया, तुझे इसका कोई भय नहीं! भय से सारथि ने हाथ जोड़कर कहा, हे राक्षसों के नाथ, मुझ पर क्रोधित मत होओ। घोरतर युद्ध के बीच तुमको मूर्छित होते देखा— रण के परिश्रम से घोड़े भी पसीने से लथपथ हो गये थे। हे नरपति, ऐसे क्षेत्र में सारथि रथ लौटा कर योद्धा को बचाता है, यही सारथि का धर्म है। रण में तुम्हारी मूर्छा देखकर मैंने यह कार्य किया, अन्याय ढंग से मुझको कटु वाक्य क्यों कह रहे हो। तुम्हारे हित की चिन्ता करने में यह कैसा विपरीत

हित-चिन्ता करिते हइल बिपरीत ※ आमारे दितेछ दोष, नहे त उचित
कोप ना करह राजा, ना कहिओ बाड़ा ※ एत बलि चलाइया दिल अष्टघोड़ा
कोपमने अष्टपृष्ठे मारिल चाबुक ※ बेगे उत्तरिल रथ रामेर सम्मुख १६
राम बले, मातलि हे, हओ सावधान ※ आर बार रावण आइल बिद्यमान
मने-मने चिन्तिया मरण कैल सार ※ म'रेछिल आर बार, पाइल निस्तार
इन्द्रेर सारथि बड़ बुद्धे बिचक्षण ※ रथ चलाइया दिल त्वरित-गमन
रावणेर रथ उपनीत शीघ्रगति ※ दुइजने बाण बर्षे, यतेक शकति
दुइ रथ- पताका हइल ठेकाठेकि ※ अग्नि-सम बाण मारे दु'जने धानुकी
असुरे डाकिया बले, जिनुक रावण ※ रामेर हउक जय, कहे देवगण
हेनकाले रघुनाथ पूरिया सन्धान ※ रावणेर शरीरे मारिला तीक्षणबाण
सेइ बाण सहि राजा गदा निल हाते ※ तर्ज्जन करिया गदा छाड़े शून्यपथे
अर्द्धचन्द्र-बाणे राम सेइ गदा काटे ※ गदा काटि से बाण रावण-अंगे फुटे
रक्तवर्ण गदा रावण एड़े पुनर्ब्बार ※ पिशाच-अस्त्रेते राम करिला संहार
शिव-मन्त्र पड़ि रावण शिव-शूल एड़े ※ शंकर-बाणेते राम शून्ये काटि पाड़े
क्रोधे ज्वले रावणेर दु-आँखि देउटि ※ रामेर उपरे पुनः एड़े बाण जाठि

कार्य हुआ, तुम मुझ पर दोष लगा रहे हो यह तुम्हारे लिए उचित नहीं है। हे राजा, अधिक क्रोध मत करो, इतना कहकर उसने आठों घोड़े चला दिये। कुपित होकर उसने आठों घोड़ों की पीठ पर चाबुक मारा और वेग से राम के सम्मुख जा उपस्थित हुआ॥ ५१६॥

राम ने कहा, हे मातलि, सावधान हो जाओ, फिर रावण सम्मुख आ गया है। मन ही मन सोचकर उसने मृत्यु का वरण कर लिया है। यह एक बार मरा था, फिर बच गया। इन्द्र का सारथि बुद्धि से बड़ा ही विचक्षण है, उसने तुरन्त रथ चला दिया। जल्द ही रावण का रथ आ पहुँचा। अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार दोनों ही बाण बरसाने लग गये। दोनों के रथ की पताकाएँ आपस में टकराईं। दोनों ही धानुकी आग के समान बाण मारने लगे। असुर लोग ध्वनि करने लगे, रावण की जय हो; और देवगण कहने लगे, राम की जय हो। ऐसे ही समय रघुनाथ ने निशाना साध कर रावण के शरीर पर पैना बाण चलाया। उस बाण को झेल कर रावण ने हाथ में गदा ले ली और शून्य के पथ पर गर्जन करते हुए उसको फेंका। अर्धचन्द्र बाण से राम ने रावण की वह गदा काट गिराई। गदा काटने के बाद वह बाण रावण के शरीर में जा चुभा। फिर रावण ने लाल रंग की गदा फेंकी, राम ने पिशाच-अस्त्र से उसका संहार किया। शिव-मंत्र का उच्चारण करते हुए रावण ने शिव-शूल फेंका। राम ने शंकर बाण से उसको शून्य में ही काट गिराया। रावण की दोनों आँखें क्रोध से दीये की तरह

रक्तवर्ण जाठागाछ पञ्चाश-योजन ॐ स्वर्ग मर्त्य पाताल काँपिल त्रिभुवन
सूर्य्यतेज धरे जाठा, अग्नि उठे मुखे ॐ विपरीत-शब्दे आसे रामेर सम्मुखे
जाठागाछ देखि रामेर हइल विस्मय ॐ धनुके टंकार देन राम महाशय
आस्ते ब्यस्ते रामचन्द्र नाना-अस्त्र एड़े ॐ जाठार अग्निते वाण भस्म ह'ये पड़े
लक्ष-लक्ष बाण पुड़ि जाठागाछ आसे ॐ त्रासेते पर्ब्बत-बाण श्रीराम वरिषे
पवन-बेगेते जाठा आसे शीघ्रगति ॐ कर-जोड़े वले तवे मातलि सारथि
देवराज पाठयेछे, जेइ शेलपाटे ॐ झाट छाड़ सेइ शेल, जाठा पाड़ केटे१७
मातलिर वाक्ये राम शेलपाट एड़े ॐ रावणेर जाठागाछ शेले काटि पाड़े
जाठागाछ काटा गेल, रावणेर त्रास ॐ जाठा काटि शेल आसे श्रीरामेर पास
जाठा ब्यर्थ देखि राजा जुड़े नागपाश ॐ सहस्र-सहस्र फणी देखि लागे त्रास
पूर्ब्बे राम प'ड़ेछिला जेइ नागपाशे ॐ सेइ बाण देखि राम काँपिलेन त्रासे
श्रीराम गरुड़-अस्त्र एड़े बाहुबले ॐ रावणेर नागगणे ध'रे ध'रे गिले
ब्यर्थ गेल नागपाश, देखि दशानन ॐ रामेर उपरे करे बाण-वरिषण
सप्तधार-बाणे राम नाना-अस्त्रकाटे ॐ अस्त्र काटि रहे रावणेर अंगे फुटे१८
क्रोधे करे दुइजने बाण-बरिषण ॐ लेखाजोखा नाहि, बाण बरिषे दु'जन

जलने लगीं, और फिर उसने राम पर जाठा फेंका। लाल रंग का यह जाठा पाचास योजन लम्बा था। इसको देखकर स्वर्ग, मृत्यं, पाताल, त्रिभुवन काँप उठे। जाठा से सूर्य का तेज निकलता और मुख से अग्नि। घोर शब्द करता हुआ वह राम के सम्मुख आने लगा। जाठा देखकर राम को विस्मय हुआ। उन्होंने धनुष को टंकारा। अस्त-व्यस्त होकर रामचन्द्र विभिन्न-अस्त्र फेंकने लगे, किन्तु वे जाठा की आग में जल कर नष्ट हो गये। त्रास से श्रीराम ने पर्वतबाण फेंका। जाठा पवन-वेग से आने लगा। हाथ जोड़ कर सारथि मातलि ने कहा, देवराज ने जो शेलपाट भेजा है उसको झटपट फेंकिए और जाठा को काट गिराइए॥ ५१७॥

मातलि के कहने पर राम ने शेलपाट फेंका। शेलपाट ने रावण का जाठा काट गिराया। जब जाठा कट कर गिरा तो रावण त्रस्त हो उठा। जाठा काट कर शेल श्रीराम के पास लौट आया। जाठा व्यर्थ गया देखकर राजा (रावण) ने नाशपाश फेंका। हजारों सर्प देखकर राम को डर लगने लगा, क्योंकि इससे पूर्व राम इसी नागपाश से बँधे थे, इसलिए उसी बाण को देखकर वे भयभीत हुए। श्रीराम ने फिर गरुड़-अस्त्र फेंका जो रावण के नागों को पकड़-पकड़ कर लीलने लगा। नागपाश व्यर्थ गया देखकर दशानन ने राम पर बाण वरसाये। सप्तधार बाण से राम ने रावण के विभिन्न अस्त्र काट डाले और अस्त्र काट कर रावण के अंग में वह बाण चुभा रह गया॥ ५१८॥

क्रोध में दोनों ही बाण वरसाते रहे। बाणों की संख्या की कोई गिनती

चक्षु मुदि धनुक टानये दुइजने ※ अग्निमय देखि कम्प लागे त्रिभुवने
अष्टबसु सूर्य्य-आदि काँपे रसातल ※ शून्येते देवतागण पलाय सकल
घन-घन उल्कापात तारागण खसे ※ त्रिभुवन विकम्पित श्रीरामेर त्रासे
श्रीचरण-भरे लंका करे टलमल ※ सिंहनादे उथलिल सागरेर जल
आकाश भाँगिया पड़े, मने हेन गणि ※ धनुकेर टंकार बाणेर ठनठनि
रुद्ध हैल चन्द्र-सूर्य्य-गमनागमन ※ दिवानिशि सप्ताह बिच्छेद नाहि रण
सप्तदिन नाहि देखि, के आछे कोथाय ※ सुग्रीव-अंगद-आदि पलाइया जाय
नल नील सुषेण पलाय हनूमान ※ ससैन्ये पलाय सबे लइया पराण
शरभंग द्विविद पलाय उभराय ※ पनस केशरी छुटे, फिरिया ना चाय
आपन-कटके कपि पलाय अपार ※ दृष्टि नाहि चले, लंका बाणे अन्धकार
आछाड़ि फेलिल, हाते छिल शालबृक्ष ※ ऊर्द्ध्वमुखे ससैन्येते पलाय गवाक्ष
श्रीराम-लक्ष्मण क्रोधे शमन-समान ※ झाँके झाँके फेले दोंहे यम-सम बाण
यत निशाचर धाय फेलि धनुर्ब्बाण ※ आशीकोटि भल्लूके पलाय जाम्बवान
राम-रावणेर युद्ध नाहि लेखा-जोखा ※ दोंहार अंगेर माँस हैल चाका-चाका
स्वर्गे काँपे इन्द्रदेव, पातालेते बलि ※ बाणेर आगुने दीप्त हय रणस्थली

ही नहीं। आँखें मूँद कर दोनों धनुष खींचने लगे और चारों ओर अग्निमय देखकर त्रिभुवन कम्पित हो उठा। अष्टवसु सूर्य आदि काँपने लगे, रसातल काँप उठा, शून्य में सभी देवता काँपने लगे, बार-बार उल्कापात होने लगा, तारे गिरने लगे, इस प्रकार श्रीराम के त्रास से त्रिभुवन कम्पित हो उठा। उनके श्रीचरणों की चाप से लंका डाँवाडोल होने लगी। सिंहनाद से सागर के जल में उथल-पुथल मच गई। ऐसा लगने लगा कि गगन टूटा पड़ रहा है। धनुष की टंकार और बाणों की ठनाठन। चन्द्र-सूर्य का आवागमन रुद्ध हो गया। दिवा निशि, सप्ताह—रण में कोई विराम नहीं। सात दिन हो गये, कौन कहाँ है दिखाई नहीं पड़ता। सुग्रीव, अंगद आदि भाग गये। नल नील, सुषेण, हनुमान भाग खड़े हुए। अपनी-अपनी सेना लेकर प्राण लेकर सब भागे। शरभंग, द्विविद बेतहाशा भागे। पनस, केशरी भागे तो पीछे पलट कर भी नहीं देखा। अपने कटक के साथ असंख्य कपि भागने लगे। बाणों से लंका अंधकार-मयी हो गई—दृष्टि नहीं काम करती थी। गवाक्ष के हाथ में एक साखु का वृक्ष था, उसको फेंक कर ऊपर मुख किये हुए वह अपनी सेना के साथ भाग खड़ा हुआ। श्रीराम-लक्ष्मण दोनों क्रोध से यमराज के समान हो गये और दोनों ही झुंड के झुंड बाण बरसाने लग गये। सारे राक्षस धनुष-बाण फेंक-फेंक कर भागने लगे। अस्सी करोड़ भालुओं को लेकर जाम्बवान भागे। राम-रावण के युद्ध में गिनती का कोई हिसाब नहीं, दोनों के अंग के मांस ही नष्ट हो गये। स्वर्ग में इन्द्रदेव और पाताल में बलिराजा काँपने लगे।

श्रीराम एड़ेन बाण तारा येन छुटे ❊ रावणेर अंगे ताहा काँटा-हेन फुटे
मारिलेन अग्नि-बाण घोर शब्द शुने ❊ हेन बाणे दशानन किछुइ ना जाने
श्रीराम एड़ेन बाण नामे वेड़ापाक ❊ रणस्थले फिरे येन कुमारेर चाक
झञ्झना पड़िछे येन उठे महाशब्द ❊ बाण खेये दशानन ह'ये रहे स्तब्ध
वज्रसम श्रीरामेर बाण वेगे जाय ❊ निस्तेज हइल रावण सेइ बाण-घाय
गायेर भूषण गेल, माथार मुकुटे ❊ रक्त-माँस नाहि गाय, अस्थि भेदि फुटे
अस्थि बिन्धि रघुनाथ करिला जर्ज्जर ❊ तबु जुझे दशानन संग्राम-भितर१९
बिभीषण बले, राम, धर्म्म-अस्त्र एड़ ❊ रावणेर स्वर्णपाटा भूमे काटि पाड़
कक्षपाटा गेल काटा, रावण चिन्तित ❊ मने भावे भगवती छाड़िला निश्चित
विशेष जानिनु राम बिष्णु-अवतार ❊ जन्मिले मरण आछे, चिन्ता कि ताहार
सफल जीवन मम, राम यदि मारे ❊ रामेर सम्मुखे आजि त्यजि कलेवरे
जनम सफल हवे, जाब स्वर्गवास ❊ रामेर श्रीमुख देखि रावणेर हास
रावण बले, प्रीति-बाक्य ना कव रामेरे ❊ दया उपजिले नाहि मारिबे आमारे
रावण रामेरे बले, छाड़ अहंकार ❊ आजिकार रणे तोरे करिब संहार

बाणों की आग से सारी रणभूमि प्रदीप्त हो उठी। श्रीराम यों बाण फेंकते मानों नक्षत्र लपक रहा हो और रावण के अंग में वे बाण जाकर काँटों की तरह चुभते। उन्होंने अग्निबाण फेंका। चारों ओर घोर शब्द हुआ किन्तु रावण पर इस बाण का कोई असर न हुआ। श्रीराम ने वेड़ापाक नामक बाण फेंका जो कि रणस्थल में कुम्हार के चाक जैसा घूमने लगा। झनझना कर महाशब्द उठा। बाण खाकर दशानन स्तब्ध बना रहा। श्रीराम का बाण वज्र के समान लपका और उस बाण के आघात से रावण तेजशून्य हो गया। शरीर के आभूषण और सिर से मुकुट गिर गये। बदन पर रक्त-मांस नहीं रहा और अब हड्डियों में बाण बिंधने लगे। हड्डियों को बिंध कर रघुनाथ ने उसे जर्जर कर डाला फिर भी दशानन संग्राम-स्थल में लड़ता ही रहा ॥ ५१९ ॥

विभीषण ने कहा, हे राम, अब तुम धर्म-अस्त्र फेंको और रावण का स्वर्णनिर्मित कवच काट कर गिरा दो। जब कक्ष का कवच कट गया तो रावण चिन्तित हुआ। मन ही मन सोचने लगा कि भगवती ने अवश्य ही उसे त्याग दिया है। यह तो मैं जान ही गया कि राम विष्णु के अवतार हैं। जन्म लेने पर मरना ही पड़ेगा—उसकी कौन सी चिन्ता है। यदि राम मुझको मार गिराएँ तो मेरा जन्म सफल है। राम के सम्मुख आज शरीर त्याग कर जन्म सफल करता हुआ स्वर्गवास करने चला जाऊँगा। राम का सुन्दर मुख देखकर रावण के चेहरे पर हँसी आ गई। रावण ने सोचा कि मैं राम को कोई प्रेम-वचन नहीं कहूँगा, दया आ जाने से शायद वे मुझे न भी मारें। रावण

खर-दूषण नहि, आमि लंकार रावण ❋ एखनि पाठाव तोरे यमेर सदन
श्रीराम बलेन, तोर कठिन जीवन ❋ मम बाण खेये बेंचे आछिस् एखन२०
आर बार बाजे युद्ध श्रीराम-रावणे ❋ बाणेर आगुन गिया उठिल गगने
घोर अन्धकार रात्रि बाणे दीप्त करे ❋ चिकुर चमके येन संग्राम-भितरे
एड़िला शंकर-बाण राम रघुवर ❋ बुकेते बाजिया राजा हइल कातर२१
बाण खेये दशानन अन्तरेते काँपे ❋ पार्ब्बतीर महाशूल एड़िलेक कोपे
शूल फुटि रघुनाथ हैला अचेतन ❋ चेतन पाइया करे बाण-बरिषण
सहस्राक्ष-बाण रामेर चले ऊद्‌र्ध्वमुखे ❋ अविलम्बे पड़े गिया रावणेर बुके
बाणाघाते महात्रास पाइल रावण ❋ बिष्णुमन्त्रे गदा राम मारेन तखन
कालचक्रे काटे गदा राजा दशानन ❋ गदा ब्यर्थ गेल, भावे कमललोचन
पाशुपत-बाण मारे राजा दशानन ❋ बिष्णुचक्रे काटिलेन श्रीराम तखन
अतिक्रोधे एड़िलेन बाण महाकाल ❋ रावणेर बुके बिन्धि प्रवेशे पाताल२२
बाण खेये दशानन भावे मने-मन ❋ जोड़हाते स्तव करे श्रीरामे तखन
हातेर धनुक-बाण फेलि भूमितले ❋ कर जुड़ि करे स्तव बस्त्र दिया गले

ने राम से कहा, अपना गुमान छोड़ो, आज के युद्ध में मैं तेरा वध करूँगा। मैं कोई खर-दूषण नहीं हूँ, मैं हूँ लंका का रावण। अभी तुझे यम के घर भेजता हूँ। श्रीराम ने कहा, तू बड़े जीवट का है, मेरे बाण खाकर भी तू अभी तक ज़िन्दा है ॥ ५२० ॥

फिर एकबार राम-रावण में युद्ध छिड़ गया। बाण की आग गगन पर चढ़ गई। बाण घोर अँधेरी रात को प्रदीप्त करते रहे। युद्ध-स्थल पर मानों बिजलियाँ चमक रही हों। राम रघुवर ने शंकर बाण छोड़ा। रावण के वक्ष पर उसके लगने से वह कातर हो गया ॥ ५२१ ॥

बाण खाकर दशानन का मन काँप उठा। उसने गुस्से में आकर पार्वती का महाशूल फेंका। शूल चुभने से रघुनाथ अचेतन हो गये। फिर चैतन्य होकर बाण बरसाने लगे। राम का सहस्राक्ष बाण उद्‌र्ध्वमुख होकर चला और तत्काल रावण के वक्ष पर जा लगा। बाण के आघात से रावण त्रस्त हो उठा। तब राम ने विष्णुमंत्र का जाप कर गदा चलायी। राजा दशानन ने कालचक्र से उस गदा को काट गिराया। गदा व्यर्थ गयी देखकर कमल-लोचन राम सोच में पड़ गये। तब राजा दशानन ने पाशुपत-बाण फेंका। राम ने उसे विष्णुचक्र से काटा और क्रोध में आकर महाकाल बाण फेंका। रावण के वक्ष को छेदता हुआ वह बाण पाताल में प्रवेश कर गया ॥ ५२२ ॥

बाण से आहत हो दशानन ने मन ही मन सोचा तथा हाथ जोड़ गले में वस्त्र डाल कर वह श्रीराम की स्तुति करने लग गया। तुम विश्व के आराध्य हो, अगति के गति हो। पूरी सृष्टि की रचना के निमित्त तुम प्रजापति

बिश्वेर आराध्य तुमि अगतिर गति ❋ निदाने सृजिते सृष्टि तुमि प्रजापयि
तुमि सृष्टि, तुमि स्थिति, तोमाते प्रलय ❋ काले महाकाल विश्व काले कर लय
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य्य, तुमि चराचर ❋ कुबेर वरुण तुमि यम पुरन्दर
निराकार साकार सकल रूप तुमि ❋ तव महिमार सीमा कि जानिब आमि
ना जानि भकति स्तुति, जाति निशाचर ❋ श्रीचरणे स्थान-दान देह गदाधर
तुमि हे अनाद्य आद्य असाध्य-साधन ❋ कटाक्षे ब्रह्माण्ड कर खण्ड-विनाशन
आखण्डल चञ्चल चिन्तिया श्रीचरण ❋ कटाक्षे करुणा कर कौशल्या-नन्दन
जन्मिया भारत-भूमे आमि दुराचार ❋ करेछि पातक कत, संख्या नाहि तार
अपराध मार्ज्जना कर हे दयामय ❋ कुड़िहस्त जुड़ि राजा एकदृष्टे रय
कुड़िच'क्षे वारिधारा बहे अनिवार ❋ राम बले, ना हइला सीतार उद्धार
कार्य्य नाइ राजपाट पुनः जाइ बने ❋ रावण परम-भक्त, मारिब केमने
केमने एमन भक्ते करिब संहार ❋ विश्वे केह राम-नाम ना लइबे आर
केमने मारिब बाण भक्तेर उपर ❋ एत बलि त्याजेन हातेर धनुःशर
बिमुख हइया राम बसिलेन रथे ❋ इन्द्र-आदि देवगण लागिल चिन्तिते २३
स्तवे तुष्ट हैला यदि कमल-लोचन ❋ तबे त मजिल सृष्टि, ना मैल रावण

हो। तुम ही सृष्टि हो, स्थिति हो और प्रलय हो। महाकाल के रूप में विश्व का संहार भी कर डालते हो। तुम चन्द्र हो, तुम सूर्य हो और तुम्हीं चराचर हो। तुम्हीं कुबेर हो, वरुण हो, यम हो, पुरन्दर हो। तुम निराकार भी हो और साकार रूपधारी भी हो। तुम्हारी महिमा की सीमा मैं क्या जानूँ। मैं राक्षस जाति का हूँ, न भक्ति जानता हूँ और न स्तुति, हे गदाधर अपने श्रीचरणों में स्थान दो। तुम ही आदि और अनादि हो, असाध्य-साधक हो। तुम कटाक्ष मात्र से ब्रह्मांड को खंड-खंड कर उसका ध्वंस कर डालते हो। इन्द्र चंचल हो तुम्हारे चरणों का ध्यान करने लगता है। हे कौशल्या-नन्दन तुम कटाक्ष में करुणा करते हो। भारत-भूमि पर जन्म लेकर मैं दुराचारी जाने कितना पाप कर चुका हूँ जिसकी गिनती नहीं। हे दयामय, मेरा अपराध क्षमा करो। इस प्रकार बीस हाथ जोड़कर राजा रावण एकटक देखता रहा। उसके बीस नेत्रों से लगातार आँसू गिरने लगे। राम ने कहा, सीता का उद्धार न हो सका, राजपाट की कोई जरूरत नहीं, फिर से वन चला जाऊँ। यह रावण तो परम-भक्त है, इसको कैसे मारूँ। ऐसे भक्त का मैं कैसे संहार कर सकता हूँ। फिर तो विश्व में कोई भी राम का नाम नहीं लेगा। भक्त पर क्योंकर मैं बाण चलाऊँ। इतना कहकर राम ने धनुष-बाण त्याग दिया। राम विमुख होकर रथ पर बैठ गये। इन्द्र आदि सभी देवता चिन्ता करने लग गये ॥ ५२३ ॥

यदि कमललोचन (राम) स्तुति से तुष्ट हो गये तो सारी सृष्टि चौपट

एत बलि देवगण करिया जुकति ※ उत्तरिला गिया, यथा देवी सरस्वती
देवगण बले, माता, करि निवेदन ※ प्रमाद घटिल बड़, ना मैल रावण
श्रीरामे करिल स्तव दुष्ट निशाचर ※ स्तवे तुष्ट ह'ये राम त्यजिला समर
तुमि बैस रावणेर कण्ठेर उपर ※ रिपुभावे श्रीरामे बलाह् कटूत्तर २४
एत शुनि वाग्वादिनी चलिला सत्वर ※ बसिलेन रावणेर कण्ठेर उपर
डाक दिया बले रावण, शुन रघुपति ※ प्राणेर भयेते तोमा नाहि करि स्तुति
अवश्य जुझिब आमि, आइस सत्वर ※ एकवाणे भण्ड बेटा जाबि यमघर२५
श्रीराम बलेन, मृत्यु इच्छिल रावण ※ एखनि पाठाव तोरे यमेर सदन
एत बलि कोपेते कम्पित रघुबर ※ पुनर्ब्बार तुलिया निलेन धनु:शर
पुनर्ब्बार लागे युद्ध श्रीराम-रावणे ※ वाणे-वाणे काटाकाटि उठिल गगने
सिंहे-सिंहे पर्ब्बते येमन बाजे रण ※ सेइरूप वाजे युद्ध श्रीराम-रावण
पञ्चबाण जुड़े राम धनुकेर गुणे ※ से-वाण रावण काटे अग्निमुख-वाणे
गन्धर्व्बास्त्र मारे राम रावणेर गाय ※ मोह गेल दशानन सेइ अस्त्र-घाय२६
हेनकाले युक्ति दिला मित्र बिभीषण ※ ब्रह्म कवच काटि पाड़, मारुक रावण

हो जायगी और रावण नहीं मरेगा। इतना कहकर देवताओं ने परामर्श किया और वहाँ जा पहुँचे जहाँ देवी सरस्वती है। देवताओं ने कहा, हे माता हमारा निवेदन सुनो, बड़ी विपत्ति आ गई है, रावण मरा नहीं, दुष्ट निशाचर ने श्रीराम की स्तुति की। स्तुति से तुष्ट हो राम ने युद्ध करना छोड़ दिया है। तुम रावण के कंठ पर बैठ जाओ और शत्रुभाव से श्रीराम के प्रति कटुवाक्य उससे कहलाओ ॥ ५२४ ॥

इतना सुनकर वाग्देवी शीघ्र चल पड़ी और जाकर रावण के कंठ पर बैठ गई। रावण ने पुकार कर कहा, हे रघुपति सुनो, मैं प्राणों के भय से तुम्हारी स्तुति नहीं कर रहा हूँ, मैं अवश्य ही युद्ध करूँगा, झटपट आओ। ऐ ढोंगी तू एक बाण से ही यम के घर चला जायगा ॥ ५२५ ॥

श्रीराम ने कहा, ऐ रावण तूने मृत्यु की इच्छा प्रकट की, अभी तुझे यम के सदन भेजता हूँ। इतना कहकर रघुवर क्रोध से काँपने लगे और फिर अपना धनुष-बाण उठा लिया। फिर श्रीराम-रावण में युद्ध छिड़ गया और गगन में बाण आपस में टकराकर एक दूसरे को काटने लग गये। पर्वत में जिस प्रकार सिंह-सिंह में लड़ाई छिड़ जाती है, उस प्रकार श्रीराम और रावण में युद्ध ठन गया। राम ने धनुष की प्रत्यंचा पर पंचबाण जोड़ा जिसको रावण ने अग्निबाण से काट गिराया। राम ने रावण के शरीर पर गन्धर्वास्त्र फेंका तो उस अस्त्र के आघात से दशानन बेसुध हो गया ॥ ५२६ ॥

ऐसे ही समय मित्र विभीषण ने परामर्श दिया, ब्रह्म-कवच को काट कर गिरा दो, तो रावण मर जाया। ब्रह्मा-मंत्र का पाठ कर राम ने ब्रह्म-अस्त्र

ब्रह्म-मन्त्र पड़ि राम ब्रह्म-अस्त्र हाने ※ कवच काटिया पड़े श्रीरामेर बाणे
ब्रह्म-कवच काटि राम तीक्ष्ण-अस्त्रहाने ※ तबु जुझे दशानन श्रीरामेर सने
डाक दिया श्रीरामेरे बलिछे रावणे ※ कि करिते पार राम मनुष्य-पराणे
रावणेर कथा शुनि श्रीरामेर हास ※ अवश्य, रावण तोरे करिब बिनाश ५२७
यत बाण मारे राम, ना मरे रावण ※ रावण मरिबे किसे, भावे नारायण
सन्धान पूरिया राम कालचक्र एड़े ※ रावणेर माथा काटि भूमितले पाड़े
एकमाथा काटा गेल, देखे देवगण ※ आर माथा सेइखाने उठे ततक्षण
आरबार रघुनाथ अर्द्धचन्द्र-बाणे ※ दुइ-माथा काटिया पाड़िल सेइखाने
रणस्थले रावणेर उठे दुइ-माथा ※ देखिया बिस्मित हैल सकल देवता
आर बार रघुनाथ एड़े ब्रह्मजाल ※ तिन-माथा काटि बाण सन्धाय पाताल
तिन-माथा काटा गेल, देखे देवगणे ※ पुनः तार तिन-माथा उठे सेइक्षणे
आर बार सन्धान पूरिया रघुबीर ※ ऐषिक-बाणेते तार काटिलेन शिर
चारि-माथा काटा गेल, अति चमत्कार ※ ब्रह्म-वरे चारि-माथा उठे आर बार
माथा काटा गेल, नाहि मरे लंकेश्वर ※ ब्रह्म-अस्त्रे पञ्च-माथा काटेन सत्वर
पाँच-माथा काटि राम मने आनन्दित ※ सेइ पाँच-माथा तबे उठे आचम्बित

फेंका। श्रीराम के बाण से कवच कट कर गिर गया। ब्रह्म-कवच को काट कर राम तीखे अस्त्र फेंकने लगे, फिर भी दशानन राम के साथ युद्ध करता रहा। श्रीराम को पुकार कर रावण ने कहा, हे राम, मनुष्य के प्राण रखने वाले राम, तुम मेरा क्या बिगाड़ सकते हो। रावण की बात सुनकर श्रीराम ने हँसकर कहा, हे रावण मैं तेरा अवश्य ही बध करूँगा ।। ५२७ ।।

राम ने बहुत से बाण मारे किन्तु रावण की मृत्यु नहीं हुई। नारायण सोचने लगे कि रावण कैसे मरेगा। राम ने निशाना साधकर कालचक्र फेंका, रावण का सिर कटकर धरती पर जा गिरा। देवताओं ने देखा कि एक सिर कट कर गिरा और तत्काल दूसरा सिर आकर वहाँ लग गया। दूसरी बार रघुनाथ ने अर्धचन्द्र बाण फेंककर रावण के दो सिर काट कर गिराये। रावण के दोनों सिर फिर उठकर अपने स्थानों पर लग गये—यह देखकर सारे देवता विस्मित रह गये। फिर रघुनाथ ने ब्रह्मजाल फेंका, वह बाण तीन सिर काटने के बाद पाताल में प्रवेश कर गया। तीन सिर कट गये यह देवताओं ने देखा। फिर उसके तीन सिर उसी स्थान पर आकर तत्काल लग गये। बार-बार निशाना साधकर रघुवीर ने ऐषिक-बाण से उसका सिर काट डाला। चार सिर कट गये किन्तु चमत्कार देखो, ब्रह्मा के वर से चारों सिर फिर निकल आये। सिर कट जाता किन्तु लंकेश्वर मरता नहीं। ब्रह्म-अस्त्र से पाँच सिर उन्होंने फ़ौरन काट डाले। पाँच सिर काट डालने के बाद राम मन ही मन अति प्रसन्न हुए। किन्तु

आर बार रामचन्द्र एड़ि यमदण्ड ❋ मुकुट-सहित काटे छयगोटा मुण्ड
माथा काटा गेल, तबु रणे नाहि टुटे ❋ सेइक्षणे रावणेर छय-माथा उठे
धर्म्मचक्र-बाण राम जुड़ेन धनुके ❋ सात-माथा काटिलेन सर्व्वजन देखे
माथा काटा गेल, तबु जुझिछे रावण ❋ सप्तमुण्ड रावणेर उठे ततक्षण
सप्तसार-बाणे राम अष्टमुण्ड काटे ❋ ब्रह्मार वरेते तार अष्टमुण्ड उठे
नय-माथा काटिलेन रघुनाथ कोपे ❋ सेइक्षणे नय-माथा उठे एकचापे
दश-माथा काटागेल, दश-माथा उठे ❋ तथापि रावण जुझे रामेर निकटे५२८
श्रीराम बलेन, बेटा बड़इ दुर्व्वार ❋ माथा काटा गेल, तबु जुझे आर बार
अर्द्धचन्द्र-बाणे राम पूरिया सन्धान ❋ रावणेर मध्य काटि करे दुइखान
अर्द्ध-अंग पड़े येन पर्व्वतेर चूड़ा ❋ ब्रह्म-वरे अर्द्ध-अंग अंगे लागे जोड़ा
तबु नाहि पड़े रावण बड़इ दुर्व्वार ❋ रामेर उपरे करे बाण-अवतार
रावणेर बाणे राम जर्ज्जर-शरीर ❋ संवरिया तीक्ष्णबाण एड़े रघुबीर
शतबार काटिलेन रावणेर माथा ❋ काटिया-मात्रेते उठे, तिल नाहि व्यथा
ना मरे काटिले माथा, जुझये रावण ❋ कृत्तिवास रचिलेन गीत-रामायण५२९

अचानक ही वे पाँचों सिर अपने स्थान पर आकर लग गये। फिर रामचन्द्र ने यमदण्ड फेंका और मुकुट के साथ छह मुंड काट कर गिरा दिये। सिर कट जाते फिर भी युद्ध समाप्त नहीं होता। उसी क्षण रावण के वे छह मुंड उठकर जुड़ गये। राम ने धनुष पर धर्मचक्र-बाण जोड़ा और सभी लोगों ने देखा कि उन्होंने सात मुंड काटकर गिरा दिये। सिर कट गये किन्तु तब भी रावण युद्ध करता रहा और तब तक रावण के सातमुंड उठकर लग गये। सप्तसार बाण चलाकर राम ने रावण के आठ मुंड काट डाले। ब्रह्मा के वर से उसके आठों मुंड आकर जुड़ गये। परम कोप से रघुनाथ ने नौ सिर काट डाले, तत्क्षण नौ मुंड एक साथ उठकर जुड़ गये। दस सिर कट गये फिर भी रावण राम से युद्ध करता ही रहा ॥ ५२८ ॥

श्रीराम ने कहा, यह दुष्ट बड़ा ही अजेय है। सिर कट गये फिर भी लड़े चला जा रहा है। अर्धचन्द्र बाण लेकर राम ने निशाना साधा और रावण को बीच से काट कर दो टुकड़े कर डाला। आधा अंग यों गिरा मानों पर्वत का शिखर हो। ब्रह्मा के वर से आधा अंग आधे अंग से आकर जुड़ गया। फिर भी यह रावण गिरता नहीं, बड़ा ही दुर्घर्ष है, राम के ऊपर बाण-वर्षा करता रहा। रावण के बाणों से राम का शरीर जर्जर हो उठा। कुछ सँभल कर रघुवीर ने तीखे-तीखे बाण चलाये और सौ बार रावण के सिर काट कर गिराये। कटने के साथ-साथ वे उठकर जुड़ जाते, उसे कोई पीड़ा नहीं होती। सिर के कटने पर भी रावण मरता नहीं, लड़ता ही रहता। कृत्तिवास ने रामायण-गीत की रचना की ॥ ५२९ ॥

रावणेर अम्बिका-स्मरण

एत देखि कोपे काँपे बीर दशानन ※ चापे चड़ाइया बाण करे बरिषण
आच्छन्न हइल रवि, नाहि चले दृष्टि ※ बाण वर्षे, येन मेघ बरिषये वृष्टि
बाणे-बाणे क्षत-अंग यतेक बानर ※ ताहा देखि हनुमान क्रोधित-अन्तर
लाफ दिया रावणेर सम्मुखे पड़िल ※ वज्रेर समान कील रावणे मारिल
मार खेये दशानन हाराय चेतन ※ धूलाय लोटाये करे रुधिर-वमन
चेतन पाइया कील हनूमाने मारे ※ 'राम-जय' बलिया मारुति-बीर सारे३०
एइरूपे कतक्षण हइल संग्राम ※ परेते संग्राम करे आसिया श्रीराम
बाणे-बाणे क्षत-देह हैल दु'जनार ※ दशानन समर सहिते नारे आर
धूलाय धूसर राजा ह'ये अचेतन ※ चेतन पाइया करे अम्बिका-स्तवन५३१

रावणेर अम्बिका-स्तव

कोथा मा तारिनि तारा, हओ गो सदय ※ वेखा दिया रक्षा कर मोरे असमय
पतित-पावनि पापहारिणि कालिके ※ दीनजन-जननि मा जगत्-पालिके
करुणा-नयने चाह कातर किंकरे ※ ठेकियाछि घोर दाये रामेर समरे

रावण का अम्बिका स्मरण

इतना देखकर वीर दशानन क्रोध से काँपने लगा। धनुष पर बाण चढ़ाकर उनकी वर्षा करने लगा। सूर्य ढक गया, दृष्टि व्यर्थ होने लगी। बाण यों बरसने लगे मानों बादलों से वर्षा हो रही हो। बाणों से सारे वानरों के शरीर घायल हो गये, यह देखकर हनुमान मन ही मन क्रोधित हो गया। छलाँग मार वह रावण के सामने जा खड़ा हुआ और वज्र जैसा एक मुक्का रावण को मारा। मार खाकर दशानन ने चेतना खो दी। धूल में लोट कर खून की उलटी करने लगा। चैतन्य होकर उसने हनुमान को मुक्का मारा, 'राम जय' कहकर वीर हनुमान खिसक गया ॥ ५३० ॥

इसी प्रकार से कितनी ही देर संग्राम होता रहा। फिर श्रीराम आकर संग्राम में जुट गये। बाणों से दोनों के शरीर क्षत-विक्षत हो गये। दशानन से अब युद्ध अधिक सहा न गया। धूलि में लथपथ राजा अचेतन पड़ा रहा। चैतन्य पाकर वह अम्बिका की स्तुति करने लगा ॥ ५३१ ॥

रावण की अम्बिका-स्तुति

हे माँ तारिणी, तुम कहाँ हो, मुझ पर सदय हो जाओ। इस असमय पर दर्शन देकर मेरी रक्षा करो। हे कालिके, तुम पतित-पावनी और पाप-हारिणी हो। हे जगत्पालिके, तुम दीनों की जननी हो। इस दुखी सेवक

आर केह नाहि मोर भरसा संसारे ॐ शंकर त्यजिल, तेंइ डाकि मा, तोमारे
तुमि दयामयी माता, शुनेछि पुराणे ॐतुमि शक्ति तुमि तृप्ति व्याप्त सर्व्वस्थाने
नाम-गुण व्यक्त आछे ए तिन भुवन ॐ रूप-गुण अव्यक्त, नाहिक निरूपण
जे तव शरण लय, ना थाके आपद् ॐ प्रमाण, इन्द्रेर जाहे अमर-सम्पद्
आमार नाहिक आर डाकिवार लोक ॐ कृपावलोकन करि निवारह शोक
एइरूपे स्तव यदि करिल रावण ॐ आर्द्र हैला हैमवती, मन उचाटन
अम्बिकार स्तव करे आर्त्त दशानन ॐ कृत्तिवास गाहिलेन गीत रामायण५३२

रावणेर प्रति अम्बिकार अभय-दान

स्तवे तुष्टा ह'ये माता दिला दरशन ॐ बसिलेन रथे कोले करिया रावण
आश्वास करिया कन, ना कर रोदन ॐ भय नाइ, भय नाइ, वाछा दशानन
आसियाछि आमि, आर कारे कर डर ॐ आपनि जुझिब, यदि आसेन शंकर
असित-बरणा काली, कोले दशानन ॐ रूपेर छटाय घन-तिमिर-नाशन
अलका झलका उच्च-कादम्बिनी-केश ॐ ताहे श्यामा रूपे नील-सौदामिनी-वेश
कर-पद-नखे शशि अनल प्रकाशे ॐ विम्व-फल तुलित अधरे मन्द हासे५३३

की ओर करुणामय-नेत्रों से देखो। राम के साथ इस युद्ध में मैं बड़े संकट में फँस गया हूँ। संसार में और अन्य कोई सहाय नहीं। शंकर ने मुझे त्याग दिया, इसीलिए माँ तुमको पुकारता हूँ। तुम दयामयी माँ हो ऐसा पुराण में मैंने सुना है। तुम शक्ति हो, तुम तृप्ति हो, तुम सर्वत्र व्याप्त हो। इन तीनों भुवनों में तुम्हारा नाम और गुण व्यक्त है। रूप गुण अव्यक्त है, उसका निरूपण नहीं हो सकता। जो तुम्हारी शरण लेता है उस पर कोई विपत्ति नहीं आती। इसका प्रमाण है इन्द्र जिसके पास अमरत्व की सम्पदा है। अब मेरे निकट पुकारने योग्य कोई व्यक्ति नहीं। कृपादृष्टि डालकर मेरा शोक दूर करो। इस प्रकार जब रावण ने स्तुति की तो हैमवती (पार्वती) का हृदय प्रसन्न हो गया, वे दयालु हो गईं। आर्त्त दशानन अम्बिका की स्तुति करने लगा और कृत्तिवास ने रामायण गीत की रचना की ॥ ५३२ ॥

रावण के प्रति अम्बिका का अभय-दान

स्तुति से प्रसन्न होकर माँ ने दर्शन दिया और रथ पर रावण को गोद में लेकर बैठ गईं। आश्वासन देती हुई वह बोलीं, बेटा दशानन, मत रोओ, अब तुम्हें कोई डर नहीं। मैं आ गयी हूँ, अब तुमको किससे डरना है। यदि शंकर भी आ जाएँ तो मैं स्वयं युद्ध करूँगी। कृष्ण-वर्णा काली गोद में दशानन को लिये बैठी हैं, उनके रूप की छटा से घना अंधेरा छँट गया। ऊँचे बादलों जैसे केश में मानों बिजली झलक रही हो।

शोक-दुःख रावणेर गेल सेइक्षणे ❊ हइल सानन्द-चित्त देवी-दरशने
नयने गलित धारा, सबिनये कय ❊ वले, दयामयी-बिना सदया के हय
साक्षाते करिया स्तव राजा लंकेश्वर ❊ राम-सने संग्रामे चलिल अतःपुर
छाड़े घन हुहुंकार गभीर-गर्ज्जने ❊ बाण बरिषण करे भीषण तर्ज्जने ३४
आगुसरि युद्धे एल राम रघुपति ❊ देखिलेन रावणेर रथे हैमवती
विस्मित हइया राम फेलि धनुर्व्बाण ❊ प्रणाम करिला ताँरे करि मातृज्ञान
बिभीषणे कन तबे, त्रिलोकेर नाथ ❊ रावण-विनाशे मिता, घटिल व्याघात
कार साध्य बिनाशिते पारे दशानने ❊ रक्षिछे रावणे आजि हर-वरांगने
ऐ देख रावणेर रथे बिभीषण ❊ जलदवरणी-कोले राजा दशानन ३५
देखिया धार्म्मिक बिभीषण सविस्मय ❊ प्रमाद घटिल, किवा हवे दयामय
बिषण्ण हइया राम बसिला भूतले ❊ परम-विमर्ष ह'ये चिन्तित सकले
तारा यदि करिलेन एमन ब्याघात ❊ तबे आर के करिबे दशास्ये निपात

श्यामा रूप में नीली सौदामिनी का वेश। हाथ और पैरों के नाख़ून से चन्द्रमा की ज्योति प्रकट होती है और अधर पर मन्द-हास से मानों विम्ब-फल शोभा पा रहा हो ॥ ५३३ ॥

उसी क्षण रावण के सारे दुःख-क्लेश दूर हो गये। देवी का दर्शन पाते ही उसका चित्त आनन्द से पूर्ण हो गया। आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी और वह सविनय बोला, दयामयी के सिवा और कौन सदया हो सकती थी। इसी प्रकार सम्मुख स्तुति करने के उपरान्त राजा लंकेश्वर राम के साथ युद्ध करने चल पड़ा। बड़े ज़ोर से हुंकार करने और घोर शब्द से गरजने लगा। बड़े ही तर्जन-गर्जन से वह बाणों की वर्षा करने लगा ॥ ५३४ ॥

राम रघुपति आगे बढ़कर युद्ध में आए। उन्होंने रावण के रथ पर हैमवती (पार्वती) को देखा। राम ने विस्मित हो धनुष-बाण फेंक दिया और माता जानकर उनको प्रणाम किया। तब त्रिलोकीनाथ राम ने विभीषण से कहा, हे मित्र, रावण के विनाश में अड़चन आ गई। अब किसकी सामर्थ्य है कि दशानन का वध कर सके, आज स्वयं शिव की भार्या भगवती उनकी रक्षा कर रही हैं। हे विभीषण रावण के रथ की ओर देखो। स्वयं जलद-वरणी (बादल के समान श्याम रंग वाली भगवती) की गोद में राजा दशानन बैठा है ॥ ५३५ ॥

यह देखकर धार्मिक विभीषण बड़ा ही विस्मित हुआ। ऐसी विपत्ति आ गयी, हे दयामय क्या होगा। राम विषण्ण होकर धरती पर बैठ गये और सभी लोग परम दुखी होकर चिन्ता करने लग गये। जब स्वयं तारा ने ऐसा व्याघात उपस्थित कर दिया तो दशानन का विनाश कौन करेगा।

उपाय नाहिक आर, करिव केमन ※ देखिया रामेर चिन्ता चिन्ते देवगण
ए समये हैमवती कि करिला आर ※ देवारिष्ट-विनाशे व्याघात चण्डिकार
विधातारे कहिलेन सहस्र-लोचन ※ उपाय करह विधि या' हय एखन
विधि कन, विधि आछे चण्डी-आराधने ※ हइवे रावण-बध अकाल-बोधने
इन्द्र कन, कर भाइ विलम्ब ना सय ※ इन्द्रेर आदेशे ब्रह्मा करिवारे जाय ३६
रावण-वधेर जन्य बिधाता तखन ※ आर श्रीरामेरे अनुग्रहेर कारण
एइ दुइ कर्म्म ब्रह्मा करिते साधन ※ अकाले शरते कैला चण्डीर बोधन
देवगण-सहिते पूजिला महामाय ※ एखाने चिन्तत राम, कि करि उपाय
आमा हैते नाहि हैल रावण-संहार ※ जनक-नन्दिनी सीतार ना हैल उद्धार
मिथ्या परिश्रम कैनु, संचय बानर ※ मिथ्या कष्टे करिलाम बन्धन सागर
मिथ्या करिलाम यत राक्षस-संहार ※ लक्ष्मणेर शक्तिशेल क्लेशमात्र सार
अनुपाय सकलि हइल एइबार ※ बिभीषणे कहेन, कि हबे मिता आर
नयनेते बहे जल, शुकाइल मुख ※ ताहा देखि बिभीषणेर दुःखे फाटे बुक
बले, प्रभु, आमार नाहिक साध्य आर ※ आमा हैते हैले हैत उपाय इहार ३७

कोई उपाय दिखाई नहीं देता कि कैसे क्या किया जाय। राम की चिन्ता देखकर सारे देवता चिन्ता करने लग गये। ऐसे ही समय हैमवती (पार्वती) ने यह क्या कर डाला ?—देवों के शत्रु के निधन (वध) में चंडिका बाधा बन गई। सहस्रलोचन (इन्द्र) ने विधाता से कहा, हे विधाता जो कुछ भी हो, अब कोई उपाय करो। विधि ने कहा, चंडी की आराधना में ही विधि है—असमय-बोधन में ही रावण की मृत्यु है। इन्द्र ने कहा, ऐसा ही कीजिए, अब बिलम्ब सहा नहीं जाता। इन्द्र के आदेश से ब्रह्मा वैसा ही करने चल पड़े ॥ ५३६ ॥

उस समय विधाता ने रावण-वध के लिए और राम के प्रति अनुग्रह के निमित्त—इन दोनों कार्यों के लिए असमय (शरद ऋतु) में चंडी का बोधन किया। उन्होंने देवताओं के सहित महामाता की पूजा की। यहाँ राम चिन्तित हैं कि क्या उपाय किये जायँ। मुझसे रावण-वध नहीं हो सका, जनक-नन्दिनी सीता का भी उद्धार नहीं हो सका। व्यर्थ ही इतना परिश्रम किया, सारे वानरों को एकत्रित किया, व्यर्थ ही इतना कष्ट उठाया और सागर को बाँधा। व्यर्थ ही मैंने इतने राक्षसों का संहार किया। लक्ष्मण को व्यर्थ ही शक्तिशेल का क्लेश सहना पड़ा। अब सब कुछ उपाय-शून्य हो गया। उन्होंने विभीषण से कहा, हे मित्र, अब क्या होगा। उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे और मुख सूख गया। यह देखकर विभीषण का पीड़ा से वक्ष फटने लगा। उसने कहा, प्रभु मुझसे अब कुछ नहीं होगा। कदाचित मेरे ही द्वारा इसका कुछ उपाय हो सकता था ॥ ५३७ ॥

एत शुनि कान्देन आपनि रघुराय ❋ धूलाय लोटाय छिन्न नीलोत्पल-प्राय
लक्ष्मण कान्दिछे आर बीर हनूमान ❋ सुग्रीव अंगद नल नील जाम्बवान
रोदन करिछे सबे छाड़िया समर ❋ देखिया रामेर दुःख कातर अमर
देवराज बिधातारे सविनये कय ❋ श्रीरामेर दुःख आर प्राणे नाहि सय ५३८

रावण-वधार्थ ब्रह्मा-कर्त्तृक देवीर अकाल-बोधन ओ षष्ठ्यादि-कल्पारम्भ

शुनिया इन्द्रेर बाणी, कन कमण्डलु-पाणि, उपाय केवल देवीपूजा ।
तुमि पूजि ये चरण, जिनिले असुरगण, बोधिया शरते दशभुजा ॥
कैले पूजा राम ताँर, हबे रावण-संहार, शुन सार सहस्त्र-लोचन ।
शुनि कहे सुरपति, जाह तुमि शीघ्रगति, जानाओ श्रीरामे विवरण ॥
प्रेमे पुलकित-चित, पद्मयोनि आनन्दित, श्रीराम-निकटे उपनीत ।
विनय करिया कय, शुन प्रभु दयामय, रावण-वधेर जे विहित ॥
ब्रह्मार वचन शुनि, कन राम गुणमणि, कह विधि, कि उपाय करि ।
मिथ्या श्रम करिलाम, अनुपाये ठेकिलाम, रक्षिल रावणे महेश्वरी ॥

इतना सुनकर रघुनाथ स्वयं रोने लगे। धूलि में नीले कमल की नाईं वे लोटने लगे। लक्ष्मण और वीर हनुमान भी रोने लगे। सुग्रीव, अंगद, नल, नील, जाम्बवान सभी युद्ध छोड़कर रोदन करने लगे। राम का यह दुःख देखकर सभी देवता दुखी हुए। तब देवराज (इन्द्र) ने विधाता से सविनय कहा, अब श्रीराम का दुःख सहा नहीं जाता ॥ ५३८ ॥

रावण-वध के लिए ब्रह्मा द्वारा देवी का अकाल-बोधन और षष्ठ्यादि कल्पारम्भ

इन्द्र का कथन सुनकर कमंडलु-पाणि (ब्रह्मा) ने कहा कि अब केवल देवीपूजा ही एकमात्र उपाय रह गया है। हे सहस्रलोचन (इन्द्र) सुनो, शरद् ऋतु में जिस दशभुजा के चरणों की पूजा कर तुमने असुरों पर विजय प्राप्त की, राम यदि उनकी पूजा करें तभी रावण का संहार होगा। यह सुनकर सुरपति (इन्द्र) ने कहा, जाओ, शीघ्र जाकर तुम श्रीराम से यह विवरण बताओ। प्रेम से पुलकित-चित्त हो आनन्दमग्न पद्मयोनि (ब्रह्मा) श्रीराम के पास पहुँचे। विनयपूर्वक उन्होंने कहा, हे दयामय प्रभु सुनो, रावण-वध के लिए क्या उचित है। ब्रह्मा का वचन सुनकर गुणमणि राम ने कहा, विधाता! तुम्हीं बताओ कि क्या उपाय है। व्यर्थ ही मैंने इतना परिश्रम किया और आकर इस उपाय-शून्य अवस्था में पहुँच गया, रावण की रक्षा महेश्वरी करने लगी। विधाता ने कहा, हे प्रभु, एक कार्य आप कीजिए, तभी रावण का संहार हो सकेगा। असमय-बोधन कर देवी महेश्वरी का पूजन करो, तभी इस क्लेश-समुद्र को पार कर सकोगे। तब श्रीराम ने कहा, किस प्रकार पूजन करना होगा उसका क्रम बताइए। श्रीराम ने स्वयं कहा, वसन्त

विधाता कहेन प्रभु, एक कर्म्म कर विभु, तबे हबे रावण-संहार।
अकाले बोधन करि, पूज देवी महेश्वरी, तरिबे हे ए-दुःख-पाथार॥
श्रीराम कहेन तबे, कि रूपे पूजिते हबे, अनुक्रम कह शुनि तार।
श्रीराम आपनि कय, बसन्त शुद्ध-समय, शरत् अकाल ए पूजार॥
विधि आछे निरूपण, निद्रा भाँगिते बोधन, कृष्णा नवमीर दिने तार।
सेदिन हयेछे गत, प्रतिपदे आछे मत, कल्पारम्भे सुरथ-राजार॥
सेदिन नाहिक आर, पूजा हबे कि प्रकार, शुक्ला षष्ठी मिलिबे प्रभाते।
कन्याराशि मास बटे, किन्तु पूजा नाइ घटे, अल्पयोग सब हैल जाते॥
विधाता कहेन सार, शुन विधि दिइ तार, कर षष्ठी-कल्पेते बोधन।
व्याघात ना हबे ताय, विधि खण्डि पुनराय, कल्प खण्डे सुरथ-राजन॥
एइ उपदेश कन, शुनि राम सुखि-मन, विधाता गेलेन निज-धाम।
प्रभात हइल निशा, प्रकाश पाइल दिशा, स्नान-दान करिला श्रीराम॥
बनपुष्प-फल-मूले, गिया सागरेर कूले, कल्प कैला विधिर बिधान।
पूजि दुर्गा रघुपति, करिलेन स्तुति-नति, विरचिल चण्डी-पूजा-गान॥ ५३९

श्रीरामचन्द्रेर दुर्गोत्सव

चण्डीपाठ करि राम करिला उत्सब ※ गीत-नाट्य करे, जय देय कपि सब
प्रेमानन्दे नाचे आर देवीगुण गाय ※ चण्डीर अर्च्चने दिवाकर अस्त जाय

ही एकमात्र शुद्ध समय है, इस पूजा के लिए शरद् असमय है। ऐसा विधान निर्धारित है कि निद्रा भंग करने के लिए कृष्णा नवमी का दिन ठीक है। वह दिन बीत चुका है, अब प्रतिपदा पर राजा सुरथ के कल्पारंभ का योग है। वह दिन भी नहीं रहा, पूजा किस प्रकार होगी, सबेरे ही शुक्ला षष्ठी होगी। मास कन्याराशि का अवश्य है किन्तु पूजा का कोई योग नहीं, सारी त्रुटि इसी में है। ब्रह्मा ने कहा, सुनो उसका भी विधान देता हूँ, षष्ठी-कल्प पर बोधन करो। इसमें कोई व्याघात नहीं होगा, विधि का खंडन कर राजा सुरथ ने कल्प-खंड आरम्भ किया था। इतना सारा उपदेश सुनकर राम प्रसन्न हुए और ब्रह्मा अपने धाम लौट गये। रात्रि बीतने पर और दिशाओं में प्रकाश आ जाने पर श्रीराम ने स्नान तथा दान किया। वनपुष्प और फल-मूल से सागर के तट पर जाकर ब्रह्मा के विधान के अनुसार उन्होंने कल्प किया। रघुपति ने दुर्गा की पूजा कर स्तुति और नमन किया और चंडी-पूजन का गीत विरचित हुआ॥ ५३६॥

श्रीरामचन्द्र का दुर्गोत्सव

चंडीपाठ करने के उपरान्त राम ने उत्सव किया। गीत-गायन और नाटक-प्रदर्शन हुआ। सारे कपि जयध्वनि कर प्रेमानन्द से नाचने लगे और

सायाह्न-कालेते राम करिला बोधन ※ आमन्त्रण अभयार विल्वाधिवासन
आपनि गड़िला राम प्रतिमा मृण्मयी ※ संग्रामे हइते दुष्ट-रावण-विजयी
आचारेते आरति करिला अधिवास ※ वान्धिला पत्रिका नव-वृक्षेर विलास
एइरूपे उद्योग करिला द्रव्य यत ※ पद्धति-प्रमाणे आछे नियम येमत
असाध्य सुसाध्य ताहे नाहि अनुमान ※ त्रिभुवन भ्रमिया आनिल हनूमान५४०
गत हैल षष्ठी-निशा, दिवा सुप्रभात ※ उदित हइल पूर्व्वे दिवसेर नाथ
स्नान करि आसि प्रभु पूजा आरम्भिला ※ वेद-विधिमते पूजा समाप्त करिला
शुद्ध-सत्व-भावे पूजा सात्त्विकी आख्यान※ गीतनाट-चण्डीपाठे दिवा अवसान४१
सप्तमी हइल साँग, अष्टमी आइल ※ पुनर्व्वार रघुनाथ अर्च्चना करिल
निशाकाले सन्धिपूजा कैला रघुनाथ ※ नृत्य-गीते विभावरी हइल प्रभात
नवमीते पूजे राम देवीर चरणे ※ नृत्य-गीत नानामते निशि जागरणे४२
नवमीते रघुपति, पूजिवारे भगवती, उद्योग करिला फल-मूल ।
यथा वेद-विधि-मत, आनिला सामग्री यत, कपिगण योगाइछे फूल ॥
अशोक काञ्चन जवा, मल्लिका मालती धवा, पलाश पाटलि ओ बकुल ।
गन्धराज आदि यत, बनपुष्प नानामत, स्थलपद्म कदम्ब पारुल ॥

देवी का गुण गाने लगे। चंडी की आराधना में दिवाकर अस्त हो गया। संध्या समय राम ने बोधन किया। अभया को आमंत्रित कर विल्वाधिवासन किया। राम ने स्वयं मिट्टी की प्रतिमा बनाई। दुष्ट रावण पर समर में विजयी होने के लिए अधिवास के लिए यथाविधि आरती उतारी। नये वृक्ष की पत्तियाँ बाँधी। इसी प्रकार पद्धति-प्रकरण में जैसा नियम है उसी के अनुसार सारे द्रव्य जुटाये। उसमें यह नहीं देखा गया कि कौन सा अलभ्य है और कौन सा लभ्य। त्रिभुवन का भ्रमण कर हनुमान सभी कुछ ले आये ॥ ५४० ॥

षष्ठी की रात्रि समाप्त हुई, दूसरे दिन का सुप्रभात हुआ। दिनपति पूर्व दिशा में उदित हुए। स्नान करके आने के बाद प्रभु ने पूजन आरम्भ किया। और वेदोक्त विधि से उन्होंने पूजा समाप्त की शुद्ध और सात्विक ढंग से पूजा हुई। गीत-नाट्य और चंडीपाठ में दिवस का अन्त हुआ॥ ५४१ ॥

सप्तमी का दिन गया, अष्टमी आ गई। पुनः रघुनाथ ने अर्चना की। निशाकाल में रघुनाथ ने सन्धिपूजा की। नृत्य-गीत में विभावरी कट गई। नवमी में राम ने नृत्य-गीत निशा-जागरण आदि विभिन्न ढंग से देवी के चरणों की पूजा की— ॥ ५४२ ॥

नवमी में रघुपति ने भगवती की आराधना के लिए फल-मूल की व्यवस्था की। वेदोक्त-विधि के अनुसार सारी सामग्री जुटाई गई, सारे कपि फूलों का जुगाड़ करने लगे। अशोक, कांचन, अड़हुल, मल्लिका, मालती, पलाश,

रक्तोत्पल शतदल, कुमुद कह्लार नल, आमलकी-पत्र पारिजात।
शेफाली करवी आर, कनक-चम्पक सार, कोकनद सहस्रेक-पात ॥
अतसी अपराजिता, याते दुर्गा हरषिता, झम्पक चम्पक-नागेश्वर।
काष्ठमल्लिका दुपाटि, जाति यूथी आचि झाँटि, द्रोणपुष्प माधवी टगर ॥
तुलसी तिसी धातकी, भूमि-चम्पक केतकी, पद्मवक कृष्णकलि आर।
स्वर्ण-यूथिका-बाँधुली, शीर्ष शिउली आँधूली, कुड़चि गोलाप-पुष्प सार ॥
कृष्णचूड़ा चमत्कार, पुष्प राखे भारे भार, सचन्दन कदलीर दले।
नैवेद्येर आयोजन, करिल बानरगण, अपूर्ब्ब अपूर्ब्ब बनफले ॥ ५४३

नीलपद्म-आनयनेर मन्त्रणा

परम-आनन्दे राम पूजेन शंकरी ※ सात्विक भावेर भाव-विधान आचरि
तन्त्र-मन्त्र-मते पूजा करे रघुनाथ ※ एकासने सभक्तिते लक्ष्मणेर साथ
अर्च्चना करिला यदि देव भगवान् ※ थाकिते नारिला देवी, घटे अधिष्ठान
कपटे करुणामयी रहिला गोपन ※ श्रद्धाय रामेर पूजा करिला ग्रहण ५४४
बिधिमते पूजा साँग करिला श्रीहरि ※ किन्तु हैल सन्देह ना देखि महेश्वरी

पाटली, मौलश्री और गन्धराज आदि विभिन्न प्रकार के वनपुष्प, थलकमल, कदम्ब, पारुल, लाल पंखुड़ियों वाले शतदल, कुमुद, कल्हार, नल, आँवले की पत्ती, पारिजात, हरसिंगार, करवी, कनक-चम्पा, सहस्र पत्र वाला कोकनद, अतसी, अपराजिता (जिससे दुर्गा प्रसन्न होती हैं), झम्पक, चम्पक और नागेश्वर। काठमल्लिका, गुलमेंहदी, जूही, द्रोणपुष्प, माधवी, चाँदनी, तुलसी, अलसी, धातकी, भूचम्पक, केतकी, पद्मवक्र और कृष्णकलि। सोन-जूही, हरसिंगार, कुर्ची, गुलाब पुष्प, मनोहर कृष्णचूड़ा आदि पुष्पों का ढेर चन्दन चर्चित केले के गौदों के साथ रखा गया। वानरों ने अनोखे वनफलों के द्वारा नैवेद्य का आयोजन किया ॥ ५४३ ॥

नील कमल लाने का परामर्श

राम परम आनन्द से शंकरी की पूजा करते हैं। सात्विक भाव से विधान आदि के अनुसार, तंत्र-मंत्र-मत से रघुनाथ पूजा करने लगे। लक्ष्मण के साथ एकासन पर बैठ भक्तिपूर्ण भाव से जब देव भगवान् ने पूजा की तो देवी से रहा नहीं गया, वे आकर अधिष्ठित हो गईं। छल से वह करुणामयी छिपी रही और श्रद्धा से राम की पूजा स्वीकार की ॥ ५४४ ॥

श्रीहरि ने विधि के अनुसार पूजा सम्पन्न की। लेकिन महेश्वरी को न देख-कर उनको सन्देह हुआ। विभीषण से राम ने कहा, अब और क्या होगा।

बिभीषणे कन राम, कि हइबे आर ❋ आमा-प्रति दया बुझि ना ह'ल दुर्गार
वञ्चना करिला देबी, बुझि अभिप्राय ❋ सीतार उद्धारे आर नाहिक उपाय
नयने बहिछे धारा, सशोक अन्तर ❋ कान्देन करुणामय प्रभु परात्पर ४५
कातर हइया तबे कन बिभीषण ❋ एक कर्म्म कर प्रभु, निस्तार-कारण
तुषिते चण्डीरे एइ करह बिधान ❋ अष्टोत्तर-शत नीलोत्पल कर दान
देवेर दुर्ल्लभ पुष्प यथा तथा नाई ❋ तुष्टा हबेन भगवती, शुनह गोसाँइ
शुनिया ताहार बाक्य रघुनाथ कन ❋ कोथा पाब नीलपद्म, आनिब एखन
देवेर दुर्ल्लभ जाहा, कोथा पाबे नर ❋ सकलि आमार भाग्ये बिधान दुष्कर
कातर देखिया रामे हनूमान कय ❋ स्थिर हओ, चिन्ता दूर कर महाशय
दास आछे, केन प्रभु, चिन्ता कर मने ❋ थाके यदि नीलपद्म, आनिब एक्षणे
स्वर्ग मर्त्य पाताल भ्रमिया भूमण्डल ❋ एइ दण्डे आनि दिब शत नीलोत्पल
बिभीषण बले, बीर-हनूमान-काछे ❋ अवनीते देबीदहे नीलपद्म आछे
दश-वत्सरेर पथ हइबे निश्चय ❋ बीर कहे, आनि दिब, नाहिक संशय
रामचन्द्रे प्रणमिया वीर हनूमान ❋ देबीदह-उद्देशेते करिल पयान ५४६

लगता है कि दुर्गा मुझ पर प्रसन्न नहीं हुईं। देवी ने मुझसे वंचना की, उनका अभिप्राय मैं समझ रहा हूँ। सीता के उद्धार का अब कोई उपाय नहीं रहा। करुणामय प्रभु के नयनों से अश्रुधारा गिरने लगी, हृदय शोक से पूर्ण हो गया और वे रुदन करने लगे ॥ ५४५ ॥

तब दुखी होकर बिभीषण ने कहा, हे प्रभु, निस्तार के लिए एक कार्य करें। चंडी को तुष्ट करने के लिए ऐसा विधान करें। एक सौ आठ नील-कमल उनको दान करें। यह देव-दुर्लभ पुष्प जहाँ-तहाँ नहीं मिलता। हे गुसाँई, इससे भगवती तुष्ट होंगी। उसका वचन सुनकर रघुनाथ ने कहा, इस समय कहाँ से नीलकमल लाऊँ, कहाँ मिलेगा। देवताओं के लिए जो दुर्लभ है वह नर होकर मुझको कहाँ मिल सकेगा। मेरे भाग्य से सारे के सारे विधान ही दुष्कर हो रहे हैं। राम को दुखी देखकर हनुमान ने कहा, हे भगवान्! आप चिन्ता न करें, निश्चिन्त रहें। हे प्रभु, मुझ दास के रहते हुए आप क्यों चिन्ता करते हैं। अगर नील-कमल कहीं हुआ तो अभी लिये आ रहा हूँ। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तीनों लोकों में घूमकर इसी घड़ी सौ नील-कमल ला दूँगा। बिभीषण ने कहा, पृथ्वी पर देवीदह में नीलकमल हैं। अवश्य ही वह दश वर्षों का रास्ता होगा। वीर ने कहा, कोई शंका न करें, मैं ला दूँगा। रामचन्द्र को प्रणाम कर वीर हनुमान देवीदह के लिए रवाना हो गये ॥ ५४६ ॥

श्रीरामेर देवीस्तव ओ हनूमानेर नीलपद्म-आनयन

पाठाइया हनूमाने पद्म आनिवारे ※ श्रीराम करेन स्तव देवी चण्डिकारे
दुर्गे दुःखहरा तारा दुर्गति नाशिनी ※ दुर्गमे सरणि विन्ध्यगिरि-निवासिनी
दुराराध्या ध्यानसाध्या शक्ति सनातनी ※ परात्परा परमा प्रकृति पुरातनी
नीलकण्ठ-प्रिया नारायणी निराकारा ※सारात्सारा मूलशक्ति सच्चिदा साकारा
महिषमर्द्दिनी महामाया महोदरी ※शिव-सीमन्तिनी श्यामा शर्व्वाणी शंकरी
विरूपाक्षी शताक्षी सारदा शाकम्भरी ※ भ्रामरी भवानी भीमा धूमा क्षेमंकरी
काली कालहरा, कालाकाले कर पार ※ कुल-कुण्डलिनि, कर कातरे निस्तार
लम्बोदरा दिगम्बरा कलुषनाशिनी ※ कृतान्त-दलनी काल-ऊरु-बिलासिनी
इत्यादि अनेक स्तव करिला श्रीहरि ※ तुष्टा हैला हैमवती अमर-ईश्वरी
किन्तु रैला अदृश्येते नीलपद्म-आशे ※ रामेर कमल-आँखि अश्रुजले भासे ५४७
एइरूपे कतक्षण रहे भगवान ※ ओथा नीलोत्पल तुले वीर हनूमान
अष्टोत्तर-शत पद्म करि उत्तोलन ※ पवन-वेगेते वीर करे आगमन
रामचन्द्र-निकटे आसिया उत्तरिल ※ गणना करिया रामे नीलोत्पल दिल

श्रीराम द्वारा देवी-स्तुति और हनुमान द्वारा नील-कमल लाना

हनुमान को कमल लाने भेजकर श्रीराम देवी चंडिका की स्तुति करने लगे। हे दुःख हरने वाली दुर्गे, तुम दुर्गतिनाशिनी तारा हो, तुम दुर्गम विन्ध्य-गिरि की निवासिनी हो, तुम दुराराध्या, ध्यानसाध्या सनातनी शक्ति हो, तुम परात्परा परमा प्रकृति पुरातनी हो। तुम नीलकंठ-प्रिया, निराकारा नारायणी हो, तुम सारात्सारा मूलशक्ति सच्चिदा साकारा हो। तुम महिष-मर्दिनी, महामाया महोदरी हो, तुम शिव-सीमन्तिनी श्यामा, शर्वाणी, शंकरी हो। तुम विरूपाक्षी, शताक्षी, शारदा शाकम्भरी हो, तुम भ्रामरी, भवानी, भीमा, धूमा, क्षेमंकरी हो। तुम कालहरा काली हो, तुम कालाकाल को पार करती हो। तुम कुल-कुंडलिनी हो और कातर व्यक्ति का निस्तार करती हो। तुम लम्बोदरा, दिगम्बरा, कलुषनासिनी हो, तुम कृतान्त-दलनी, काल-उरु-विलासिनी हो। जब श्रीहरि ने इस प्रकार बहुत स्तुति की तो देवेश्वरी हैमवती देवी तुष्ट हो गईं। किन्तु नील-कमलों की आशा में अदृश्य बनी रहीं। राम के नयन-कमल आँसुओं से भरे रहे॥ ५४७॥

इस प्रकार कितनी ही देर तक भगवान् स्थित रहे। वहाँ वीर हनुमान नीलकमल तोड़ने गये थे। एक सौ आठ कमल तोड़ने के बाद वह वीर पवन-वेग से चला और रामचन्द्र के निकट आ पहुँचा। उन्होंने राम को गिन कर नीलकमल दिये। नीलकमल पाकर राम अत्यन्त आनन्दित हुए और देवी के सम्मुख विचित्र चित्र का समावेश हुआ।

आनन्दित हैल राम पेये नीलपद्म ※ देबीभागे करिल बिचित्र चित्र-सद्म
संकल्प करिल पद्म करिते अर्पण ※ कृत्तिबास रचिलेन गीत-रामायण ५४८

देबीर उद्देशे श्रीरामेर अष्टोत्तर-शत नीलपद्म-दानेर संकल्प एवं
देवी-कर्त्तृक एकटि पद्म-हरण

पुलकित-चित, बिधान-रचित, मूल-मन्त्र-उच्चारणे ।
क्रमे नीलोत्पल, सहस्रेक दल, सँपे-शंकरी-चरणे ॥
करिलेन छल, बुझिते सकल, देबी हर-मनोहरा ।
हरिलेन आर, एक पद्म तार, महेश्वरी परात्परा ॥
क्रमे पद्मसब, दिलेन राघव, राम जगत्-गोसाँइ ।
शेषेते बियोग, हैल अत्रयोग, एक पद्म मिले नाइ ॥
हइला बिस्मित, चित्त चमकित, संकल्प-भंगेते भय ।
हनूमाने कन, ब्रह्म सनातन, ए कि पवन-तनय ॥
संकल्प करिया, बिधान रचिया, शताष्ट आछे संख्याय ।
एक पद्म ताय, पाओया नाहि जाय, ठेकिलाम घोर दाय ॥
जाह पुनर्ब्बार, एक पद्म आर, आन गिया बाछा-धन ।
हनूमान कय, शुन महाशय, शताष्ट आछे गणन ॥
शुन हे गोसाँइ, आर पद्म नाइ, देबीदहे बनमाली ।
हेन लय चिते, तोमारे छलिते, पंकज हरिला काली ॥

राम ने कमल अर्घ्य देने का संकल्प किया, कृत्तिवास ने रामायण गीत की रचना की ॥ ५४८ ॥

देवी के उद्देश में श्रीराम का अष्टोत्तर-शत नील-कमल दान का संकल्प
और देवी द्वारा एक कमल का हरण

पुलकित चित्त से विधान के अनुसार मूल-मंत्र का उच्चारण करते हुए श्रीरामचन्द्र सहस्र-दल वाले नील-कमल शंकरी के चरणों में सौंपने लगे। शंकर-प्रिया देवी ने परीक्षा लेने के लिए छल किया और परात्परा महेश्वरी ने उनका एक कमल चुरा लिया। धीरे-धीरे जगत् के गुसाँई राघव राम ने सारे कमल चढ़ा दिये। अन्त में देखा गया कि एक कमल नहीं मिला—कम पड़ रहा है। चित्त चकित हो उठा और वे विस्मित हो गये। संकल्प-भंग का भय भी उपजा। सनातन ब्रह्म ने हनुमान से कहा, हे पवनतनय यह कैसी बात है। विधान की रचना कर, एक सौ आठ कमलों का संकल्प किया पर अब देखता हूँ कि उसमें एक कमल नहीं है, यह तो बड़ी अड़चन आ गई। जाओ बेटा, फिर जाओ और एक कमल लेते आओ। हनुमान ने कहा, हे भगवान्, गिनती में ये कमल एक सौ आठ थे। हे गुसाँई सुनो, देवीदह में

आमार विस्मय, अन्यथा ना हय, देखेछि गणना-क्रमे ।
निश्चय तारिणी, हरिला नलिनी, ना भुलिओ प्रभु, भ्रमे ॥
पवन-नन्दन, कहिल यखन, शुनिया बिस्मित राम ।
आँखि छल-छल, बहे अश्रुजल, कान्देन त्रिलोक-धाम ॥
बुझिलाम सार, कपाले आमार, आछे कतेक यन्त्रणा ।
कृत्तिवास गाय, एहेतु आमाय, अभयार विड़म्बना ॥ ५४९

श्रीरामेर पुनराय देवीस्तुति

नमस्ते शर्व्वाणि, ईशानि इन्द्राणि, ईश्वरि ईश्वर-जाया ।
अपर्णा अभया, अन्नपूर्णा जया, महेश्वरि महामाया ॥
उग्रचण्डा उमे, आशुतोषि धूमे, अपराजिता ऊर्व्वशी ।
राज-राजेश्वरी, रमा रणकरी, शंकरी शिवे षोड़शी ॥
मातंगी बगले, कल्याणी कमले, भवानी भुवनेश्वरी ।
सर्व्व-विश्वोदरी, शुभे शुभंकरी, क्षिति क्षेत्र क्षेमंकरी ॥
सहस्र-सुहस्ता, भीमा छिन्नमस्ता, माता महिष-मर्द्दिनी ।
निस्तार-कारिणी, नरक-वारिणी, निशुम्भ-शुम्भ-घातिनी ॥

अब और कमल नहीं हैं । मेरा मन यों कहता है कि आपकी परीक्षा करने के लिए काली ने एक कमल चुरा लिया है । मैंने गिनकर देख लिये थे, मुझसे कोई गलती नहीं हुई, मुझको विस्मय है । अवश्य ही तारिणी देवी ने कमल चुरा लिया है, भ्रम से भुलावे में मत आओ । जब पवन-नन्दन ने ऐसा कहा, तो सुनकर राम विस्मित हुए । उनकी आँखें सजल हो उठीं, और त्रिलोकनाथ रोने लगे, आँसू बहाने लगे । मैंने जान लिया कि मेरे भाग्य में अनेक यातनाएँ लिखी हैं । कृत्तिवास गा रहा है कि इस कारण अभया मुझको विडम्बना में डाले हुई है ॥ ५४९ ॥

श्रीराम की पुनः देवी-स्तुति

हे शर्वाणि, ईशानि इन्द्राणि, ईश्वरि, ईश्वर-जाया नमस्ते । तुम अपर्णा, अभया, अन्नपूर्णा, जया, महेश्वरी और महामाया हो । हे उमे! तुम उग्रचंडा, आशुतोषिन, धूमा, अपराजिता, उर्वशी हो । तुम राज-राजेश्वरी हो, तुम रमा, रणकरी, शंकरी, शिवा, षोडशी हो । तुम मातंगी, बगला, कल्याणी, कमला हो, तुम भवानी भुवनेश्वरी हो । तुम सर्व-विश्वोदरी, शुभा-शुभंकरी हो, तुम क्षिति-क्षेत्र-क्षेमंकरी हो । तुम सहस्र-सुहस्ता, भीमा, छिन्नमस्ता हो, हे माता तुम महिषमर्दिनी हो । तुम निस्तार-कारिणी नरक-वारिणी, शुम्भ-निशुम्भ-घातिनी हो । तुम दैत्य-निकृन्तिनी, शिव-सीमन्तिनी, शैलसुता,

दैत्य-निकृन्तिी, शिव-सीमन्तिनी, शैल सुते सुवदनी ।
विरिञ्चि-वन्दिनी, दुष्ट-निष्कन्दिनी, दिगम्बरेर घरणी ।।
देबी दिगम्बरी, दुर्गे दुर्ग-अरि, कालिके कराल-वेशी ।
शिवे शवारूढ़ा, चण्डी चन्द्रचूड़ा, घोररूपा एलोकेशी ।।
सर्ब्ब-सुशोभिनी, त्रैलोक्य-मोहिनी, नमस्ते लोल-रसना ।
दिग्-विवसना, सर्ब्ब-शवासना, विश्वा विकट-दशना ।।
सारदा वरदा, शुभदा सुखदा, अन्नदा मोक्षदा श्यामा ।
मृगेश-वाहिनी, महेश-मोहिनी, सुरेश-वन्दिता ब्रामा ।।
कामाख्या रुद्राणी, हरा हरराणी, हर-रमा कात्यायनी ।
शमन-त्रासिनी, अरिष्ट-नाशिनी, दयामयी दाक्षायणी ।।
हेर मा पार्ब्बति, आमि दीन अति, आपदे प'ड़ेछि बड़ ।
सर्ब्बदा चञ्चल, पद्म-पत्र-जल, भये भीत जड़सड़ ।।
बिपदे आमार, ना हय तोमार, बिड़म्बना करा आर ।
मम प्रति दया, कर गो अभया, भवार्णवे कर पार ।। ५०
कातरे कहेन राम देबी-पदतले ❋ आर्द्रचित्त रोमाञ्चित, भासे अश्रुजले
कृताञ्जलि ह'ये हरि स्तुति वाक्ये कय ❋ हेर गो नयने कालि, मोर असमय
परात्परा सारात्सारा बिपद्-छेदिनी ❋ महामाया-रूपे त्रिभुवन-आच्छादिनी
तुमि कर्म्म, तुमि मूल कर्म्मेर कारण ❋ तुमि कीर्त्ति वृत्ति दया लज्जा-निवारण

सुवदनी हो। तुम विरिंच-वन्दिनी, दुष्ट-निष्कन्दिनी, दिगम्बर की घरणी हो। तुम देवी दिगम्बरी दुर्गे, दुर्ग-अरि, कालिके, कराल-वेशी हो। तुम शिवे, शवारूढ़ा, चंडी, चन्द्रचूड़ा, घोररूपा, एलोकेशी हो। तुम सर्व-सुशोभिनी, त्रैलोक्य-मोहिनी, लोल-रसना हो। तुम दिग्-विवसना, सर्व-शवासना, विकट-दशना विश्वा हो। तुम शारदा, वरदा, शुभदा, सुखदा, अन्नदा, मोक्षदा, श्यामा हो। तुम मृगेश-वाहिनी, महेश-मोहिनी, सुरेश-वन्दिता वामा हो। तुम कामाख्या, रुद्राणी, हरा, हररानी, हर-रमा, कात्यायनी, हो। तुम शमन-त्रासिनी, अरिष्ट-नाशिनी, दयामयी दाक्षायणी हो। हे माँ पार्वती, मैं बड़ा दीन हूँ, बड़ी विपत्ति में पड़ा हूँ। कमल-पत्र पर जल की नाईं भय से भीत सदा चंचल हूँ। मेरी विपत्ति में तुमको मुझे और विड़म्बित नहीं करना चाहिए। हे अभया, मुझ पर दया करो और मुझे भव-सागर से तार दो ।। ५५० ।।

राम कातर होकर देवी के चरणों में कह रहे हैं और उनका हृदय विह्वल और रोमांचित है, नयन आँसुओं से भरे हैं। हाथ जोड़कर हरि स्तुतिवाक्य कहते हैं, हे काली, मेरे दुस्समय में जरा कृपादृष्टि से देखो। हे परात्परा, सारात्सारा, विपत्ति-छेदिनी, तुम महामाया के रूप में त्रिभुवन पर छायी हुई

सर्व्वमयी सर्व्व आत्मा तुमि सर्व्वशक्ति ॐ तोमाते आश्रित जीव संसारानुरक्ति
सृष्टि-स्थिति-प्रलयेर कारण मा, तुमि ॐ सजीव अजीव व्याप्ति स्वर्ग सुरभूमि
सकलि कर मा, तुमि शुभाशुभ यत ॐ आपद् सम्पद् धर्म्माधर्म्म अनुगत
तुमि कर्म्माकर्म्म भोग मोक्ष प्रदायिनी ॐ स्त्री पुरुष नपुंसक जीव-सहायिनी
योगमाया योगे मोरे आनिले भूतले ॐ विडम्बना करिया भासाले शोक-जले
चिन्तामणि नाम दिया चिन्ता समर्पण ॐ तुमि कर्म्म प्रयोजक प्रयोज्य गगन
सर्व्वभूते सर्व्वरूपे भिन्न कर देह ॐ तुमि शक्ति सर्व्वाधारा, छाड़ा नहे केह
संसार तोमार माया छायाबाजी प्राय ॐ तोमार ए नाट्य-खेला पुत्तलिका-प्राय
कारे कर राजा, कारे मन्त्री कर तार ॐ केह गजवाही, केह गज-रक्षाकार
केह दीर्घजीवी, केह अल्प दिने पात ॐ कारो शिरे छत्र, कारो शिरे वज्राघात
केह जाय शिविकाय, केह तारे वय ॐ केह सुखी महाभोगी, केह कष्टे रय
कारो स्वर्णपात्रे अन्न पञ्चाश व्यंजन ॐ कारो अन्न नाहि मिले, भिक्षाय भक्षण
केह रोगी रागी केह केह बलान्वित ॐ केह साधु चोर केह, धर्म्मे धर्म्मातीत

हो। तुम कर्म हो और कर्म का मूल कारण भी हो। तुम कीर्त्ति, वृत्ति, दया, लज्जा और निवृत्ति भी हो। तुम सर्वमयी, सर्वात्मा, सर्वशक्तिमयी हो। तुम्हीं में संसार-अनुरागी सारे जीव आश्रित हैं। तुम्हीं सृष्टि-स्थिति-प्रलय की कारण हो। सजीव, अजीव, व्याप्ति स्वर्ग सुरभूमि में है। हे माँ, तुम्हीं सब कुछ शुभाशुभ करती हो। तुम्हीं (मनुष्यों को) सम्पदा, विपदा, धर्म, अधर्म के अनुगत बनाती हो। तुम्हीं कर्माकर्म तथा भोग-मोक्ष प्रदायिनी हो। तुम्हीं स्त्री-पुरुष-नपुंसक सभी जीवों की सहायिका हो। हे योगमाया, योग के द्वारा तुम्हीं मुझे भूतल पर लाईं और आज विड़म्बित कर शोक के आँसुओं में तुमने मुझे डुबो दिया। चिन्तामणि नाम वाली होकर भी तुमने मुझे चिन्ता समर्पित कर दी। तुम कर्म की योजना की प्रयोजिका हो। तुम सर्वभूत में, सर्वरूप में शरीर को भिन्न (अनेकरूप) करती हो। तुम शक्तिमयी सर्वाधारा हो, कोई भी विच्छिन्न नहीं। इन्द्रजाल के समान यह संसार तुम्हारी माया है। तुम्हारा यह नाटक कठपुतलियों जैसा है। तुम किसी को राजा तो किसी को उसका मंत्री, किसी को कोई गज पर सवारी करने वाला तो किसी को उस गज का रखवाला बना देती हो। कोई दीर्घजीवी तो किसी को स्वल्पायु बना देती हो। किसी के सिर पर छत्र धरती हो तो किसी के सिर पर गाज गिराती हो। किसी को पालकी की सवारी करने वाला तो किसी को उसे ढोने वाला बना देती हो। कोई सुखी और महायोगी है तो कोई बड़े कष्ट से रहता है। किसी के स्वर्णपात्र में पचास पकवान होते हैं तो किसी को अन्न ही नहीं मिलता, भीख माँगकर भोजन प्राप्त होता है। कोई रोगी है, तो कोई गुस्सैल और बलवान, कोई साधू है तो कोई चोर, कोई

एइरूपे संसारेर कर मा स्थापन ※ आमारे करेछ मात्र दुःखेर भाजन
त्रिभुवने दुःख-तापे रेखेछ आमाय ※ आर दुःख दिओ ना मा, निवेदि तोमाय
सुख-भाण्ड अल्प ह'लो, दुःख ताहे भारि ※ तथापि राखिछ दुःख पूर्ब्ब ना बिचारि
निषेध करि गो ताइ यदि भेंगे जाय ※ ए दुःख राखिते स्थान पाइबे कोथाय
ब'ले अवसन्न आमि, या जान ता कर ※ कृत्तिवास कहे जीर्ण शीर्ण कलेवर ५५१

देवीर प्रति श्रीरामेर निवेदन

जन्मावधि दुःख मा गो कि कहिब आर ※ तबु दुःख दाओ, दया ना हय तोमार
क्लेशे अवसन्न तनु, शुन गो तारिणि ※ दया कर दयामयि, पतितोद्धारिणि
कत दुःख दिले माता, भेवे देख मने ※ राज्य बिनाशिया शेषे आनिला कानने
तथापि नाहिक क्षमा अरण्ये आनिले ※ रावणेर द्वारा शेषे जानकी हराले
कत कष्टे कटक-सञ्चय कपिगणे ※ शिला वृक्षे सेतु बान्धि समुद्र-तरणे
सीतार उद्धारे तारा हइनु तत्पर ※ राक्षस नाशिनु, शेष आछे लंकेश्वर
कष्टे रण करिलाम, हरेर अंगना ※ तथापि आपनि कालि करिछ वञ्चना

धार्मिक है तो कोई अधार्मिक। इसी प्रकार माँ तुम संसार का स्थापन किये हुई हो। मुझको तुमने केवल दुःख ही भोगने का पात्र बनाया है। मुझको तुमने त्रिभुवन में दुःख-क्लेश में रखा है। माँ, तुमसे निवेदन है कि अधिक दुःख मत दो। सुख-भांड थोड़ा हुआ और उसमें दुःख भारी हो गया। फिर भी पुरानी बातों का विचार किये बिना दुःख में रखे हुए हो। इसीलिए निवेदन कर रहा हूँ कि कहीं भंडा टूट न जाय, फिर यह दुःख रखने का ठाँव कहाँ मिलेगा। शक्ति से मैं अवसन्न हूँ, जैसा समझती हो वैसा ही करो। कृत्तिवास कहता है कि राम का शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया है ॥ ५५१ ॥

देवी के प्रति श्रीराम का निवेदन

हे माँ, क्या बताऊँ जन्म से ही दुःख सह रहा हूँ, फिर भी तुम दुःख देती ही जा रही हो, तुमको दया नहीं आती। क्लेश से मेरा शरीर अवसाद-पूर्ण है, हे तारिणी सुनो, हे दयामयी पतितोद्धारिणी, दया करो। माँ जरा सोच-विचार कर देख लो कितने ही कष्ट तुम देती रहीं। राज्य से हटाकर तुम मुझे जंगल में ले आईं, जंगल में लाकर भी तुमने क्षमा नहीं किया। रावण से जानकी का हरण कराया। कितने ही कष्ट से कपियों को लेकर मैंने सेना बनाई, शिला और वृक्षों से सेतु बनाकर समुद्र पार किया। सीता के उद्धार के लिए मैं तत्पर हुआ, राक्षसों का मैंने विनाश किया, केवल लंकेश्वर रावण बचा है। हे हर की अंगना, मैंने कष्ट से युद्ध किया फिर भी तुम स्वयं मेरी वंचना कर रही हो। अकाल-बोधन द्वारा मैंने तुम्हारी अर्चना की फिर

करिलाम अर्च्चना मा अकाल-बोधने ※ तबु ना हइल कृपा मोर आराधने
शेषे श्यामा नीलपद्मे पूजिब चरण ※ शत-अष्ट संकल्पेते करिनु रचन
तार मध्ये कृपणता करिले मोहिनी ※ हरिले गो हर-राणि संकल्प-नलिनी
आमि दीन हीन क्षीण अति अभाजन ※ हेर मा नयन-कोणे मानस पूरण
नीलपद्म देखाइया पूर्ण कर फल ※ ना सय यातना आर जीवन विफल५२
एइरूपे रामचन्द्र करेन बिनय ※ तथापि तारार ताहे साक्षात् ना हय
कान्दिया श्रीरघुनाथ हइला अस्थिर ※ गण्ड बहि वक्षेते पड़िछे अश्रुनीर
लक्ष्मण कान्देन आर बीर हनूमान ※ सुग्रीव सुषेण बिभीषण जाम्बवान
श्रीराम कहेन सबे किवा देख आर ※ निश्चय बुझिनु सीता ना हबे उद्धार
जाओ मिता सुग्रीव, स्वगणे ल'ये जाओ※मिछे आर केन कान्द, मिछे मुख चाओ
बिभीषणे राज्य दिब अयोध्या-भुवने ※ राखिब यतने तारे सत्येर पालने
झाँप दिब जले आमि समुद्र-भितरे ※ एत बलि कान्दे राम सशोक-अन्तरे
आकुल हइया रामे सकले बुझाय ※ कृत्तिवास बिरचिल मधुर भाषाय५५३

देवीर निकटे श्रीरामेर वर-प्रार्थना

श्रीरामे कातर देखि कहे हनूमान ※ केन एत व्याकुलता हेरि भगवान

भी मेरी आराधना से तुमने कृपा नहीं की। अन्त में श्यामा के चरणों की पूजा एक सौ आठ नील-कमलों से करूँगा ऐसा संकल्प किया। उसमें भी हे मोहिनी, तुमने कृपणता की, हे हर-रानी (शंकर प्रिया) तुमने मेरे संकल्पित एक नीलकमल का हरण कर लिया। मैं दीन-हीन हूँ और बड़ा ही अभागा हूँ। हे माँ, कृपाकोर से दृष्टिपात कर मेरी मनोकामना पूर्ण करो, इस विफल जीवन में अब और यातना नहीं सही जाती ॥ ५५२ ॥

इस प्रकार रामचन्द्र ने विनय किया फिर भी तारा ने दर्शन नहीं दिया। श्रीरघुनाथ रोकर व्याकुल हो उठे, उनके गालों से आँसू ढरकने लगे। लक्ष्मण, बीर हनुमान, सुग्रीव, सुषेण, बिभीषण और जाम्बवान रोने लगे। श्रीराम ने कहा, तुम लोग अब देखते क्या हो, सीता का उद्धार अब नहीं होगा यह मैंने निश्चय रूप से जान लिया। हे मित्र सुग्रीव, अपने गणों को तुम ले जाओ। व्यर्थ रोते क्यों हो, व्यर्थ ही मुंह ताकते हो। बिभीषण को अयोध्या क्षेत्र में राज्य दूँगा। अपने सत्य का पालन करते हुए उसे यत्न से रखूँगा और मैं समुद्र में कूद पड़ूँगा, इतना कहकर राम शोकपूर्ण हृदय से रोने लगे। सभी लोग व्याकुल होकर राम को समझाने लगे। कृत्तिवास ने मधुर-भाषा में इसकी रचना की ॥ ५५३ ॥

देवी से श्रीराम का वर माँगना

श्रीराम को कातर देखकर हनुमान ने कहा, हे भगवान्, इतनी

साधिब सकल कर्म्म आमि आपनार ※ मारिया रावणे सीता करिव उद्धार
एइरूपे सकलेते बुझाय तखन ※ ना शुनि काहारो कथा करेन रोदन
शिरे कराघात करि करेन हुताश ※ बलेन केवल मोर सकलि नैराश
भाविते भाविते राम करिलेन मने ※ 'नील-कमलाक्ष' मोरे वले सर्व्वजने
नयन-युगल मोर फुल्ल नीलोत्पल ※ संकल्प करिव पूर्ण बुझिवे सकल
एक चक्षु दिब आमि देवीर चरणे ※ एत बलि कहे राम अनुज लक्ष्मणे
आर किवा देख भाइ, करि कि एखन ※ ना हैल दुर्गार कृपा, विफल जीवन
कमल-लोचन मोरे बले सर्व्वजने ※ एक चक्षु दिब आमि संकल्प-पूरणे५४
एत बलि तूण हैते लइलेन वाण ※ उपाड़िते जान चक्षु करिते प्रदान
कान्दिते कान्दिते राम करेन स्तवन ※ देवीर हइल दुःख देखिया रोदन
चक्षु उपाड़िते राम बसिला साक्षाते ※ हेन काले कात्यायनी धरिलेन हाते
कि कर कि कर प्रभु जगत्-गोसाँइ ※ संकल्प तोमार पूर्ण चक्षु नाहि चाइ५५
कातरे श्रीराम कन देवीरे तखन ※ अविरत-जल-धारे भासिछे नयन
भाल दुःख दिले माता पेये असमय ※ किन्तु जननीर हेन उचित ना हय
पुत्र प्रति मातृ-स्नेह सर्ब्ब शास्त्रे गाय※ मोर पक्षे मीन-भुजंगेर माता-प्राय

व्याकुलता किस बात की है। मैं आपका सारा काम पूरा करूँगा। रावण को मार कर सीता का उद्धार करूँगा। इस तरह सभी लोगों ने उस वक्त उनको समझाया पर किसी की भी न सुनकर वह रोते ही रहे। सिर पर हाथ मार कर विलाप करते रहे कि मेरे भाग्य में केवल निराशा ही निराशा है। सोचते-सोचते राम की समझ में आया कि लोग मुझको 'नील-कमलाक्ष' कहा करते हैं। मेरे दोनों नयन खिले हुए नीलोत्पल के समान हैं। आज मैं अपना संकल्प पूरा करूँगा, जिससे सब लोग भलीभाँति जान लेंगे। एक आँख मैं देवी के चरणों में अर्पित करूँगा। इतना कह कर राम ने अनुज लक्ष्मण से कहा, अब क्या देखते हो भाई, अब करूँ भी तो क्या। दुर्गा की कृपा नहीं हुई, जीवन ही विफल है। मुझको सब लोग कमल-लोचन कहा करते हैं, मैं संकल्प पूरा करने में एक आँख भेंट चढ़ाऊँगा ॥ ५५४ ॥

इतना कहकर उन्होंने तूण से बाण निकाला और आँख प्रदान करने के लिए उसे निकालने को उद्यत हुए। रोते हुए राम स्तुति करते रहे, यह देख कर देवी को दुख हुआ। जब राम आँख निकालने के लिए उद्यत हुए तो कात्यायनी ने उनका हाथ पकड़ लिया और बोलीं, जगत्-गुसाईं, प्रभु क्या करते हो, तुम्हारा संकल्प पूरा हो गया, मुझको आँख नहीं चाहिए ॥ ५५५ ॥

तब श्रीराम ने कातर-भाव से दोनों आँखों से लगातार आँसू ढरकाते हुए देवी से कहा, माँ तुमने असमय देखकर खूब क्लेश दिया लेकिन जननी के लिए ऐसा उचित नहीं है। सारे शास्त्रों में पुत्र के प्रति माता के स्नेह के बारे

ठेकेछि विषम दाये जानकी-उद्धारे ❋ अनुमति कर माता रावण-संहारे
या करिले से भाल बारेक फिरे चाओ ❋ शवे अस्त्राघाते, मिथ्या आक्षेप बाड़ाओ
भरसा तोमार, आर ना कर निराश ❋आशा आछे आश्वासेते दाओ मा आश्वास
काल-निवारिणी काली कालेर मोहिनी❋ प्रकृति परमेश्वरी परमशोभिनी
अशन-विहने तनु जीर्ण शीर्ण मोर ❋कृत्तिवास कहे, मा दु:खेर नाहि ओर५५६

देवीर निकटे श्रीरामेर वरलाभ ओ दशमी पूजान्ते विसर्जन

रामेर बचन शुनि, विषादे हरिष गणि, स्तुतिवाक्ये कात्यायनी कन।
शुन प्रभु दयामय, अखिल ब्रह्माण्ड-चय, पति तुमि ब्रह्म-सनातन ॥
तुमि आदि भगवान, अखण्ड-काल समान, विश्व रहे तव लोम-कूपे।
तुमि चराचर-गति, अच्युत अव्यय अति, व्यापकता परमाणु-रूपे ॥
मायाय मनुष्य तुमि, चतुर्व्यूह आसि भूमि, नाशिते राक्षस दुराचार।
भव भाव्य प्रभु हओ, कभु कोन भावे रओ, शुद्धातत्व के जाने तोमार ॥
तोमार जानकी जिनि, परमा प्रकृति तिनि, रावणेर कि साध्य हरिते।
सीता-हरणेर छले, सेतु बान्धि सिन्धु-जले, राक्षसेरे बिनाश करिते ॥

में गाया जाता है किन्तु मेरे लिए तुम मीन या भुजंग की माता जैसी हो। जानकी-उद्धार में माँ मैं बड़ी विपत्ति में पड़ गया हूँ, रावण-संहार में माँ तुम अपनी सम्मति दो। जो कुछ किया सो अच्छा किया, अब तो कृपादृष्टि डालो, मरे के ऊपर अस्त्र चलाकर तुम व्यर्थ दुख बढ़ाती हो। अब तुम्हारा ही भरोसा है, अब मुझे निराश मत करो। मुझको बड़ी आशा है, तुम मुझको आश्वासन दो। हे काल-निवारिणी काली, तुम काल की मोहिनी हो, तुम प्रकृति, परमेश्वरी, परमशोभिनी हो। भोजन के बिना मेरा शरीर जीर्ण-शीर्ण है। कृत्तिवास कहता है, माँ मेरे दुःख का कोई ओर-छोर नहीं है ॥ ५५६ ॥

देवी से श्रीराम को वर-लाभ और दशमी पूजा के उपरान्त विसर्जन

श्रीराम के वचन सुनकर, विषाद तज हर्षित होकर कात्यायनी ने स्तुति वाक्य से कहा, हे प्रभु दयामय सुनो, इस सम्पूर्ण अखिल ब्रह्मांड के तुम पति हो—तुम सनातन-ब्रह्म हो। तुम अखंड काल के समान आदि-भगवान् हो, तुम्हारे रोएँ-रोएँ में अनन्त विश्व छिपे हैं। तुम ही चराचर की गति हो, तुम अच्युत अव्यय हो, तुम परमाणु के रूप में व्यापकता हो। तुम माया से मनुष्य हो, चतुर्व्यूह धारण कर भूमि पर दुराचारी राक्षस का वध करने आए हो। तुम भव के भाव्य (शिव के आराध्य) प्रभु हो, तुम कब किस ढंग से रहते हो, तुम्हारा यह शुद्धतत्व कौन जान सकता है। तुम्हारी जानकी परमा प्रकृति है, रावण की क्या सामर्थ्य कि उसका हरण करे।

देखह मने बिचारि, रावण तोमार द्वारी, पूर्व्वे छिल बैकुण्ठ-नगरे ।
ब्रह्म-शापे धरा एल, शत्रु-भावेते पाइल, तेंइ प्रभु तुमि धरा परे ।।
अकाल-बोधने पूजा, कैले तुमि दशभुजा, विधिमते करिला विन्यास ।
लोके जानावार जन्य, आमारे करिते धन्य, अवनीते करिले प्रकाश ।।
रावणे छाड़िनु आमि, विनाश करह तुमि, एत बलि कैला अन्तर्द्धान ।
नाचे गाय कपिगण, प्रेमानन्दे नारायण, नवमी करिला समाधान ।।
दशमीते पूजा करि, विसर्ज्जिया महेश्वरी, संग्रामे चलिला रघुपति ।
आदेशे पाइया राम, सिद्ध कैल मनस्काम, चण्डी-लीला मधुर भारती ।।५५७

रावणेर शान्ति-कामनाय बृहस्पतिर चण्डीपाठ ओ हनूमान-कर्त्तृक
चण्डीर श्लोक लोप-करण

संग्राम करिते हरि, चलिला धनुक धरि, ताहा देखि यत देवगण ।
इन्द्रेरे कहिया सबे, पवनेरे कहि तबे, पाठाइला रामेर सदन ।।
बिशेष कहिला दण्डी, अशुद्ध करिते चण्डी, परामर्श दिल रघुवरे ।
शुनिया दैव-बचन, बिभीषणे राम कन, पाठाइते पवन-कुमारे ।।

तुम सीता-हरण के बहाने समुद्र पर सेतु बाँधकर राक्षस के विनाश हेतु आए हो। मन में सोचकर देखो, वैकुंठ में रावण तुम्हारे द्वार का द्वारपाल था। ब्रह्म-शाप से वह पृथ्वी पर आया और तुमको शत्रु-रूप में पा गया, तभी प्रभु तुम धरती पर आये हो। तुमने असमय बोधन कर दशभुजा की पूजा की और समस्त विधि के अनुसार उसका विन्यास किया। मुझको धन्य करने के लिए और लोगों में प्रचारित करने के लिए धरती पर तुमने यह प्रकट किया। अब मैं रावण को छोड़कर जाती हूँ, अब तुम उसका विनाश करो, इतना कहकर वह अन्तर्धान हो गई। सारे वानर नाचने और गाने लगे, नारायण ने प्रेमानन्द में विभोर हो नवमी की पूजा समाप्त की। दशमी में पूजा करने के उपरान्त उन्होंने महेश्वरी को विसर्ज्जित किया, फिर रघुपति संग्राम करने चल पड़े। आदेश पाकर राम ने मनोकामना सिद्ध की। चंडी-लीला की यह वाणी बड़ी मधुर है ।। ५५७ ।।

रावण की शान्ति-कामना से बृहस्पति का चंडी-पाठ और हनुमान द्वारा
चंडी का श्लोक लुप्त करना

संग्राम करने के लिए धनुष लेकर जब हरि (राम) चल पड़े तो देवताओं ने यह देखकर इन्द्र से कह-सुन कर पवन को राम के पास भेजा। विशेष रूप से दंडी (यमराज) ने रघुवर को परामर्श दिया कि चंडी अशुद्ध की जाये। दैव-वचन सुनकर राम ने विभीषण से कहा, पवनकुमार को भेज

श्रीरामेरे आज्ञा पाय, बीर हनूमान धाय, उत्तरे निमिषे हाँटि बाट ।
यथा बृहस्पति आछे, उपनीत ताँर काछे, एकमने करे चण्डीपाठ ।।
मक्षिकार रूप ध'रे, चाटिलेक द्वि-अक्षरे, देखिते ना पाय बृहस्पति ।
अभ्यास आछिल ताय, पड़िल अवहेलाय, हनूमान सुचिन्तित अति ।।
छाड़ि मक्षि-कलेवरे, आपनि विक्रम धरे, देखि गुरु पाइलेन भय ।
रंगे भंग देय पाठ, चक्षे नाहि देखे बाट, हनूमान पूँथि केड़े लय ।।
प्रथम माहात्म्य स्तोक, पुँछे फेले तिन श्लोक, चण्डी हैल अशुद्ध तखन ।
रावणे निराश करि, रण छाड़ि महेश्वरी, कैलासेते करिला गमन ।।
स्तव करि दशानन, कान्दे कत शोक-मन, फिरे ना चाहिला महेश्वरी ।
हेथा राम एल रणे, इन्द्र-रथ-आरोहणे, विजय-कोदण्ड धनु धरि ।। ५५८

हनूमान-कर्त्तृक रावणेर मृत्युबाण-हरण

राम लक्ष्मण सुग्रीव धार्म्मिक बिभीषणे ❋ चारि जने युक्ति करे, रावण ना जाने
दशानन भावे, राम जुझिते ना पारे ❋ पलाइया जावे बुझि त्यजिया सीतारे
एतेक भाविया राजा सुस्थ कैल बुक ❋ एखनो पाइले सीता दुःखोपरे सुख

दो। श्रीराम की आज्ञा पाकर वीर हनुमान दौड़ पड़े और क्षण भर में सारा रास्ता पार कर गये। जहाँ बृहस्पति ध्यान लगाकर चंडीपाठ कर रहे थे वहीं पहुँच गये। मक्खी का रूप बनाकर वह दो अक्षर चाट गये और बृहस्पति इसे नहीं देख सके। किन्तु उनको अभ्यास था इसलिए अनायास उसको पढ़ गये। तब हनुमान बड़े ही चिन्तित हुए। मक्खी का शरीर त्याग उन्होंने अपने पूर्ण विक्रम वाला रूप अपनाया तो गुरु डर गये और पाठ छोड़कर भाग खड़े हुए, भय के कारण उन्हें आँखों से रास्ता नहीं देख पड़ा। हनुमान ने उनकी पोथी छीन ली। प्रथम माहात्म्य वर्णन के तीन श्लोक उन्होंने पोंछ डाले और यों चंडी अशुद्ध हो गई। रावण को निराश करती हुई महेश्वरी रण छोड़ कैलास चली गई। दशानन दुखी होकर रोते हुए कितनी ही स्तुतियाँ करता रहा किन्तु महेश्वरी ने उसकी ओर पलट कर भी नहीं देखा। इधर रामचन्द्र इन्द्र के रथ पर सवार होकर हाथ में विजय-धनुष थामे रण-क्षेत्र में पहुँचे ।। ५५८ ।।

हनुमान द्वारा रावण का मृत्युबाण-हरण

राम, लक्ष्मण, सुग्रीव और धार्मिक विभीषण, चारों मिलकर परामर्श करने लगे, पर रावण को कोई पता न चला। रावण सोचने लगा, राम युद्ध नहीं कर पा रहे हैं। शायद सीता को छोड़कर ही भाग जायें। इतना सोचकर रावण ने अपने मन को स्वस्थ किया। अब भी सीता मिल जाये तो दुःख

मरियाछे इन्द्रजित्, से महीरावण ❋ सीता पेले सब दुःख हय निवारण५५९
एत भावि दशानन हरषित रहे ❋ श्रीरामेरे उपदेश बिभीषण कहे
पूर्ब्बेर ए कथा प्रभु हइल स्मरण ❋ तपस्या करिनु जबे भाइ तिन जन
वर दिते पद्मयोनि आइल यखन ❋ चाहिल अमर-वर राजा दशानन
ब्रह्मा बलिलेन, शुन, ओहे निशाचर ❋ ना माग अमर-वर, चाह अन्य वर
दशानन बले, अन्य वर नाहि चाइ ❋ अतुल ऐश्वर्य धने किछु कार्य नाइ६०
ब्रह्मा बले, दशानन, दुःख केन भाव ❋ प्रबन्धेते दिया वर अमर करिब
दश-मुण्ड कुड़ि-हस्त काटा यदि जाय ❋ तथापि तोमार मृत्यु नाहि हबे ताय
खण्ड खण्ड करि यदि काटे कलेवर ❋ ताहे तुमि ना मरिबे शुन निशाचर
संग्रामेर रीति एइ, शुन दशानन ❋ आकिञ्चन करे माथा करिते छेदन
हस्तपद काटि फेले मारि तीक्ष्ण शर ❋ अस्त्राघाते खण्ड खण्ड करे कलेवर
अतएव बलि तोमा शुन दशानन ❋ कर-पद-मुण्ड छेदन ना हबे मरण
काटामुण्ड जोड़ा लागिबेक तव स्कन्धे ❋ सहजे अमर हबे वरेर प्रबन्धे
मर्म्मे जबे ब्रह्म-अस्त्र पशिबे तोमार ❋ तखन रावण तव हइबे संहार

के उपरान्त सुख मिले। इन्द्रजीत और महीरावण दोनों मर गये इतने पर भी यदि सीता मिल जाय तो सारे दुःखों का अन्त हो जाय ॥ ५५९ ॥

यह सोच-सोच कर दशानन हर्षित होता रहा। विभीषण ने श्रीराम से कहा—हे प्रभु एक पुरानी बात याद पड़ गई। जब तीनों भाइयों ने मिलकर तपस्या की और जब पद्मयोनि हमलोगों को वर देने के लिए आए तो राजा दशानन ने अमर होने का वर माँगा। ब्रह्मा ने कहा, हे निशाचर सुनो, अमरता का वर मत माँगो, कोई दूसरा वर माँगो। दशानन ने कहा, मुझको दूसरा कोई वर नहीं चाहिए, मुझको अतुल धन-सम्पदा की कोई आवश्यकता नहीं ॥ ५६० ॥

ब्रह्मा ने कहा, दशानन दुखी क्यों होते हो। कौशल से वर देकर तुमको मैं अमर बना दूँगा। दस मुंड और बीस हाथ भी अगर तुम्हारे कट जायें फिर भी तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी। हे निशाचर, यदि तुम्हारा शरीर कोई खंड-खंड कर काट भी डाले तो उससे भी तुम नहीं मरोगे। हे दशानन सुनो, संग्राम की रीति यह है कि वैरी लोग सिर को काट डालने की चेष्टा करते हैं तथा तीखे बाण चलाकर हाथ-पैर काट डालते हैं। अस्त्र के आघात से सारे शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं। अतः हे दशानन, मैं तुमसे बताता हूँ सुनो, तुम्हारी मृत्यु हाथ पैर और मुंड कटने से नहीं होगी। कटा हुआ मुंड फिर तुम्हारे कन्धे से जुड़ जायगा, वर के कौशल से तुम सहज ही अमर हो जाओगे। जब तुम्हारे गर्भ में ब्रह्मास्त्र प्रविष्ट हो जायगा हे रावण तभी तुम्हारी मृत्यु होगी। दूसरा कोई अस्त्र तुम्हारे शरीर में प्रवेश

अन्य अस्त्र ना हइबे प्रविष्ट शरीरे ※ तोमार जे मृत्यु-अस्त्र रबे तव घरे
सृजन क'रेछि आमि सेइ ब्रह्म-बाण ※ धर धर दशानन, राख तव स्थान
बिपक्षे ए अस्त्र यदि पाय कोन-मते ※ प्रहार करये यदि तोमार मर्म्मेते
तखनि मरिबे तुमि सन्द ताहे नाइ ※ तोमार ए मृत्यु-अस्त्र राख तव ठाँइ६१
वर शुनि अस्त्र पेये तुष्ट दशानन ※ स्वस्थाने रावण गेल, बाल्मीकिते कन
सेइ बाण राखियाछे मन्दोदरी राणी ※ कोथाय रेखेछे अस्त्र किछुइ ना जानि६२
एइ कथा बिभीषण कहे श्रीरामेरे ※ आर एकरूप कथा कहे मतान्तरे
सेइ अस्त्रे नाभिदेश भेदिबे यखन ※ तखनि से रावणेर हइबे पतन ६३
कोन मतान्तरे बले शिव दिला वर ※ रावणे राखिबे शिव संग्राम भितर
हस्त पद देह मुण्ड काटा जाबे जबे ※ शंकर कुड़ाये ल'ये अंगे जोड़ा दिबे
पुराण अनेक रूप के पारे कहिते ※ विस्तारिया कहि शुन बाल्मीकीर मते६४
बिभीषण कहिलेन रामेर गोचरे ※ रावणेर मृत्युबाण रावणेर घरे
से अस्त्र आनिते कारो नाहिक शकति ※ राम बले, ना मरिबे लंका-अधिपति
से बाण आनिते योग्य के आछे एमन ※ कोथा आछे से बाण ना जाने बिभीषण
मन्दोदरी-निकटेते आछये निर्यास ※ से बाण आनिले हय रावण-बिनाश

नहीं कर सकेगा, तुम्हारी मृत्यु का अस्त्र तुम्हारे घर पर ही रहेगा। मैंने उस ब्रह्म-बाण का निर्माण किया है, लो इसे लो और अपने स्थान पर रख दो। विपक्षी यदि यह अस्त्र किसी प्रकार पा जाये और उससे तुम्हारे हृदय पर आघात करे तभी तुम मरोगे, इसमें कोई सन्देह नहीं, अपना यह मृत्यु-अस्त्र अपने ठाँव पर ही सुरक्षित रूप से रख लो ॥ ५६१ ॥

यह वर सुनकर और अस्त्र पाकर दशानन बड़ा प्रसन्न हुआ। बाल्मीकि कहते हैं कि रावण अपने स्थान पर गया। उस बाण को रानी मन्दोदरी ने रखा है, वह अस्त्र कहाँ रखा है किसी को कुछ भी मालूम नहीं ॥ ५६२ ॥

विभीषण ने राम से इस प्रकार बातें की। अन्य मत के अनुसार उसने दूसरी बातें की। वह अस्त्र जब रावण की नाभि में प्रवेश करेगा तभी उसका पतन होगा ॥ ५६३ ॥

एक मत के अनुसार शिव ने वर दिया। शिव रावण की रक्षा संग्राम के भीतर करेंगे। हाथ पैर सिर जब कट जाएँगे तब शिव उनको लेकर धड़ से जोड़ देंगे। पुराणों में कितने ही प्रकार के वर्णन हैं—कौन बता सकता है। बाल्मीकि के अनुसार विस्तार से बताता हूँ, सुनो ॥ ५६४ ॥

विभीषण ने राम से कहा कि रावण का मृत्युबाण रावण के घर पर है। वह अस्त्र लाने की शक्ति किसी में नहीं है। राम ने कहा, लंका-अधिपति अब नहीं मरेगा। वह बाण ले आने योग्य यहाँ कौन है, विभीषण को भी मालूम नहीं कि वह बाण कहाँ है। यह तो निश्चित है कि वह मन्दोदरी के

मन्दोदरीर अन्तःपुर भयंकर स्थान ※ ब्रह्मा-आदि देवगण निकटे ना जान
रावणेर भये तथा ना बहे पवन ※ से स्थान हैते वाण आने कोन जन६५
एत यदि कहिल राक्षस बिभीषण ※ हेनकाले उपनीत पवन-नन्दन
हनूमान बले, केन भाव रघुमणि ※ आमि गिया मृत्यु-बाण आनिब एखनि
राम बले, बहुश्रम कैले बारंबार ※ ना ह'लो रावण-वध, सकलि असार
हनूमान बले, प्रभु कर आशीर्ब्बाद ※ एखनि आनिब बाण, किसेर प्रमाद६६
एत बलि रघुनाथे प्रणाम करिया ※ जाम्बवान-सुग्रीवेर पदधूलि लैया
धीरे धीरे अन्तःपुरे करिल प्रवेश ※ माया करि धरे वृद्ध-ब्राह्मणेर वेश
कक्षतले पाँजि-पुँथि, डानहस्ते बाड़ि ※ कपालेते दीर्घ फोंटा, जान गुड़ि गुड़ि
लोलित चक्षेर माँस, पाका सब केश ※ मलिन ह'येछे माँस, छाड़ि गण्डदेश
कुशमुष्टि कुशांगुरी यज्ञसूत्र गले ※ 'रावण राजार जय' घन घन बले
ज्योतिष-गणने आमि बड़इ पण्डित ※ एइ बलि राणीर अग्रेते उपनीत ६७
पार्ब्बतीर आराधने छिल महाराणी ※ चारि दिके बेड़ि दश हाजार सतिनी
वृद्ध विप्र देखि राणी पुलकित-मन ※ बैस बैस बलि दिल रत्न-सिंहासन

पास है और वह बाण लाने पर ही रावण का विनाश होगा। मन्दोदरी का अन्त:पुर बड़ा भयंकर स्थान है वहाँ ब्रह्मा आदि देवता भी नहीं जा सकते। रावण के भय से वहाँ पवन भी नहीं पहुँचता, कौन है जो उस स्थान से बाण ले आयगा ॥ ५६५ ॥

राक्षस विभीषण ने जब इतना कहा तब तक वहाँ पवन-नन्दन जा पहुँचे। हनुमान ने कहा, हे रघुमणि क्यों सोच करते हो, मैं जाकर अभी मृत्यु-बाण ले आऊँगा। राम ने कहा, बार-बार तुमने कितना ही परिश्रम किया किन्तु अभी तक रावण-वध नहीं हुआ, सभी कुछ व्यर्थ हो गया। हनुमान ने कहा, प्रभु आशीर्वाद दो, मैं अभी बाण ले आता हूँ, प्रमाद कैसा ? ॥ ५६६ ॥

इतना कह रघुनाथ को प्रणाम कर जाम्बवान और सुग्रीव की पदधूलि लेकर हनुमान ने धीरे-धीरे अन्त:पुर में प्रवेश किया। माया से वृद्ध ब्राह्मण का वेश धारण कर लिया। काँख के नीचे पोथी-पत्रा, दाहिने हाथ में छड़ी, माथे पर लम्बा तिलक लगाये वह धीरे-धीरे पग-पग आगे बढ़ने लगे। उनकी आँखों के चारों ओर माँस में झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, सारे बाल पके हुए थे, माँस का रंग मैला हो गया था, गाल लटक गये थे। मुट्ठी में कुश की पवित्री पहने और गले में जनेऊ डाले थे। वे बार-बार 'रावण राजा की जय' की ध्वनि करने लगे और बोले मैं ज्योतिष गणना में बड़ा ही प्रवीण हूँ, यह कहकर वह रानी के सामने जा पहुँचे ॥ ५६७ ॥

महारानी उस समय पार्वती की आराधना कर रही थीं। उसको घेरकर दस हजार सौतें बैठी थीं। बूढ़ा ब्राह्मण देखकर रानी का मन बड़ा प्रसन्न

राणीदिल सिंहासन, ताहे ना बसिये ※ कक्षे छिल कुशासन बसिल बिछाये
द्विज बले, आमि बड़ ज्योतिषे पण्डित ※ चिरकाल चिन्ता करि रावणेर हित
नर-वानरेते आसि पाड़िल प्रमाद ※ हउक राजार जय, करि आशीर्व्वाद
प्रत्यह ज्योतिष गणे देखि पूर्व्वापर ※ कि करिते पारिवेक नर ओ वानर
मन्दोदरी जे धन तोमार आछे घरे ※ शत रामे रावणेर कि करिते पारे६८
मन्दोदरी बले, एमन आछये कि धन ※ द्विज बले, देखिलाम करिया गणन
ज्योतिष-गणने जानि यत समाचार ※ राजार जीवन-मृत्यु गृहेते तोमार
प्रबन्धे रावण राजा ह'येछे अमर ※ प्रकाशिया ना कहिबे काहारो गोचर
एतेक कहिया उठि चले द्विजवर ※ कहे राणी मन्दोदरी करि जोड़-कर
कि धन गृहेते मम आछये एमन ※ ज्योतिषेते कि देखिले करिया गणन६९
द्विज बले, मन्दोदरी क'रो ना छलना ※ बड़ असम्भव विद्या आमार गणना
लंकापुरे जे द्रव्य आछये जेखानेते ※ ब'ले दिते पारि, यदि गणि खड़ि पेते
से सकल कथाय नाहिक प्रयोजन ※ कहिलाम जेखाने गोपने सेइ धन
ब्रह्मा आसि कहे यदि तोमार साक्षाते ※ प्रकाशिया से कथा ना बल कोन मते७०

हो गया। बैठो-बैठो कहकर उसने रत्न-सिंहासन दिया। जब रानी ने सिंहासन दिया तो वह उसपर न बैठकर अपनी बगल से कुशासन निकाल उसको जमीन पर बिछाकर बैठ गया। उस द्विज ने कहा, मैं ज्योतिष में बड़ा प्रवीण हूँ और सदा से रावण के हित की चिन्ता करता हूँ। नर-वानर ने आकर विपत्ति खड़ी कर दी, मैं आशीर्वाद देता हूँ कि राजा की जय हो। प्रतिदिन ज्योतिष से गणना कर पूर्वापर देखा करता हूँ कि नर और वानर क्या कर सकेंगे और क्या नहीं कर सकेंगे। हे मन्दोदरी, तुम्हारे कमरे में जो धन है, उसके प्रभाव से यदि राम भी आ जाये तो रावण का क्या बिगाड़ सकते हैं॥ ५६८ ॥

मन्दोदरी ने कहा, ऐसा कौन सा धन है। द्विज ने कहा, मैंने गणना करके देखा लिया है। ज्योतिष की गणना द्वारा मुझको कितने ही समाचार विदित हैं। राजा का जीवन और उसकी मृत्यु तुम्हारे ही घर में है। कौशल से रावण राजा अमर बन गया है, प्रकट रूप से यह बात किसी से भी मत कहना। इतना कहकर विप्रवर उठकर खड़ा हो गया और चल पड़ा। रानी मन्दोदरी ने हाथ जोड़कर कहा, ऐसा कौन सा धन मेरे घर में है जो कि ज्योतिष के द्वारा गिनकर आपने जाना है॥ ५६९ ॥

द्विज ने कहा, मन्दोदरी मेरे साथ छलना मत करो, मेरी गणना बहुत बड़ी विद्या है। लंकापुरी में जहाँ पर जो चीज है वह खड़िया से चारखाना बनाकर और गणना कर ठीक-ठीक से बता सकता हूँ। अब इन बातों की कोई आवश्यकता नहीं, मैंने कह दिया जहाँ वह गुप्त धन रखा है। ब्रह्मा

विप्रेर बचने राणी हइल बिस्मय * सामान्य गणक एइ द्विजवर नय
एत भावे मन्दोदरी कहे द्विजवरे * लुकाये रेखेछि ताहा परम-आदरे
द्विज बले तुष्ट आमि तोमार बचने * सावधाने रेखो येन केह नाहि शुने७१
एत बलि द्विजवर चलिला सत्वरे * पाद दुइ गिया पुनः दाण्डाइल फिरे
द्विजवर कहे, शुन, राणी मन्दोदरी * यत कह, तबु तुमि हीनबुद्धि नारी
रेखेछ गोपने सत्य, मिथ्या कथा नय * तथापि तोमार बाक्य ना हय प्रत्यय
घरभेदी बिभीषण ये दारुण वैरी * प्रमाद घटाते पारे कुमन्त्रणा करि
बिभीषण-अज्ञात लंकाते नाहि स्थान * कि रूपे रावण राजा पावे परित्राण
मन्दोदरी बले, द्विज ना भाव अन्तरे * बिभीषणेर साध्य हैत थाकिले बाहिरे
परम हितैषी तुमि राजार पक्षेते * बिशेष नाकब केन तोमार साक्षाते
तव आशीर्ब्बाद ताहा के लइते पारे * रेखेछि जड़ित एइ स्तम्भेर भितरे ७२
बिशेष नारीर मुखे शुनिया मारुति * भाँगिल स्फटिक-स्तम्भ मारि एक लाथि

भी यदि आकर तुमसे स्वयं कहें तो किसी प्रकार भी उसको प्रकट मत करना ॥ ५७० ॥

विप्र की बातों से रानी बहुत ही विस्मित हुई; यह ब्राह्मण कोई मामूली गणक नहीं है। इतना सोचकर मन्दोदरी ने विप्रवर से कहा, उसको बड़े जतन से मैंने छिपा रखा है। द्विज ने कहा, यह सुनकर मुझको बड़ी प्रसन्नता हुई। उनको सावधानी से रखना, देखना किसी को भी पता न लगने पाए ॥ ५७१ ॥

इतना कहकर द्विजवर तुरन्त चल पड़ा। दो पग जाकर ही वह फिर पलट कर खड़ा हो गया। द्विजवर ने कहा, रानी मन्दोदरी सुनो, कितना भी कहो तुम हीनबुद्धि नारी ही हो। यह सच है कि तुमने उसे छिपा कर रखा है, यह कोई झूठ नहीं, फिर भी तुम्हारे वाक्य पर विश्वास नहीं होता। घर का भेदी विभीषण बड़ा ही घनघोर शत्रु है, कुपरामर्श देकर किसी भी समय विपत्ति ढा सकता है। विभीषण को लंका में कोई स्थान अज्ञात नहीं है, तब राजा रावण किस प्रकार से छुटकारा पायेगा। मन्दोदरी ने कहा, द्विज अपने हृदय में कतई कोई चिन्ता मत करो। विभीषण की क्या सामर्थ्य कि उसको निकाल सके। तुम राजा के पक्ष में परम हितैषी हो, तुम्हारे सामने विशेष रूप से क्यों न कहूँगी। तुम्हारे आशीर्वाद से उसको कौन ले सकता है, उसको मैंने इस खम्भे के भीतर चुन रखा है ॥ ५७२ ॥

नारी के मुँह से यह विशेष समाचार सुनकर हनुमान ने विल्लौरी खम्भे पर एक लात जमाकर उसको तोड़ डाला। स्फटिक-स्तम्भ को तोड़ते ही बाण दिखाई पड़ गया। बाण लेकर वीर हनुमान ने छलाँग मारी। अपना

भांगिते स्फटिक-स्तम्भ दृष्ट हैल बाण ❋ बाण ल'ये लाफ दिल वीर हनूमान
निज मूर्त्ति धरि गिया बसिल प्राचीरे ❋ आर एक लाफे गेल श्रीराम-गोचरे ५७३

रावण-वध

बाण दिया रघुनाथे करिल प्रणाम ❋ महानन्दे हनूमाने कोल देन राम
'राम-जय' शब्द करि डाकिछे बानर ❋ केह बले मार मार, केह बले धर
श्रीराम बलेन, रावण कि भाविस् ब'से ❋ मरण निकटे तोर, युद्ध दे रे एसे ५७४
एत बलि दिला राम धनुके टंकार ❋ श्रीराम रावणे युद्ध बाजे आर-बार
हइल बिषम युद्ध, ना जाय गणन ❋ महाकोपे बाण वृष्टि करिछे रावण
मातलि सारथि बाणे हइल अस्थिर ❋ बाणे बाण निवारण कैला रघुवीर ७५
शून्य पथे थाकिया अमर-गण देखे ❋ मृत्युबाण रघुनाथ जुड़िला धनुके
हंसाकृति बाणेर जे मुखेर आकार ❋ बाण देखे देवगणे लागे चमत्कार
कनक-रचित बाण भुवन प्रकाशे ❋ बाणेर मुखेते अग्नि रहे गुप्त-वेशे
पशुपति बैसेन बाणेर मध्यखाने ❋ चालना करेन ऊनपञ्चाश पवने
धराधर गोड़ाते विराजे निरन्तर ❋ अलक्षिते यम रहे बाणेर उपर

वास्तविक रूप धारण करके वह प्राचीर पर जा बैठा और एक छलाँग मार कर वह श्रीराम के समक्ष पहुँच गया ॥ ५७३ ॥

रावण-वध

बाण देकर उन्होंने रघुनाथ को प्रणाम किया। बड़े प्रेम से राम ने हनुमान को गोद में ले लिया। सारे बानर 'राम-जय' की ध्वनि कर रहे हैं। कोई कहता है मारो-मारो तो कोई कहता है, पकड़ो-पकड़ो। श्रीराम कहते हैं, अरे रावण बैठे-बैठे सोचता क्या है आकर हमसे लड़, देख तेरी मौत तेरे सिर पर सवार है ॥ ५७४ ॥

इतना कहकर राम ने धनुष पर टंकार का शब्द किया। श्रीराम और रावण में फिर से युद्ध छिड़ गया। बड़ा घनघोर युद्ध हुआ, भीषण रूप से क्रोधित होकर रावण अगणित बाणों की वर्षा करने लगा। सारथि मातलि बाणों से विकल हो गया। तब राम ने बाण चलाकर उन बाणों का निवारण किया ॥ ५७५ ॥

शून्यपथ में रहकर देवताओं ने देखा, रघुनाथ ने अपने धनुष पर मृत्यु-बाण को स्थापित किया है। उस बाण के मुख का आकार हँस की तरह है। उस बाण को देखकर देवता आश्चर्य करने लगे। सोने का बना हुआ वह बाण सारे भूमंडल को प्रकाशमय कर रहा था। बाण के मुख में गुप्त-रूप से अग्नि स्थित है। बाण के मध्यस्थल पर पशुपति बैठे हैं और उनचास पवन द्वारा वह संचालित होता है। धरा और आकाश उसके मूल में विराजते हैं।

बाणेर गर्ज्जने त्रिभुवने लागे डर * पर्व्वत उपाड़ि पड़े, उथले सागर
कृष्णवर्ण बाणेर सकल अंगज्योति * तिलेकेते बिनाशिते पारे बसुमती
नाना पुष्प माल्य दिया बाणगोटा साजि * मन्त्र पड़ि रघुनाथ ब्रह्म-बाण पूजि
मृत्यु-अस्त्र रघुनाथ जुड़े मन्त्रवले * धूम उठे बाण-मुखे, ब्रह्म-अग्नि ज्वले
महाशब्द करिया सघने गर्ज्जे बाण * देखिया जे रावणेर उड़िल पराण ५७६
चिनिल रावण राजा देखि मृत्युबाण * जानिल जे एइ बाणे बाहिरिबे प्राण
विश्वामित्र स्मरि बाण छाड़े रघुवीर * रावणेर बुके विन्धि कैल दुइ चिर
छटपट करे राजा पड़ि भूमितले * ब्रह्मादि देवता देखे गगन-मण्डले ७७
सूर्य चन्द्र कुबेर वरुण पुरन्दर * देवता तेत्रिस कोटि ह'ये एकत्तर
जुक्ति करे काणाकाणि जत देवगण * केह बले एइबारे मरिल रावण
हस्त पद नाहि नड़े, मरिल निश्चय * केह बले रावणेरे नाहिक प्रत्यय
कतबार मरे बेटा, आर-बार बाँचे * मने करि कपट-भावेते प'ड़े आछे
कि जानि एबार यदि ना मरे रावण * तबे रावणेर हाते ना रबे जीवन
अरि-भावे कार्य्य नाहि, ना जाब निकटे * रावणेर चिताधूम यावत् ना उठे ७८

अलक्षित रूप से यम उस बाण पर स्थित हैं। बाण के गर्जन से त्रिभुवन डर जाता है, पर्वत उखड़ जाते हैं और सागर उच्छ्वसित हो उठता है। उस कृष्णवर्ण बाण की पूर्ण ज्योति क्षणभर में सारी वसुमती का विनाश कर सकती है। विभिन्न पुष्प-मालाओं से उस बाण को सुसज्जित कर रघुनाथ ने मंत्र पढ़कर पूजा की। रघुनाथ ने मंत्रबल से मृत्युबाण साधा। बाण के मुँह से धुँवा निकलने लगा और ब्रह्म-अग्नि प्रज्वलित हो उठी। महाशब्द करता वह बाण गरजने लगा, यह देखकर रावण के प्राण उड़ गये ॥ ५७६ ॥

मृत्युबाण देखते ही रावण राजा ने पहचान लिया। यह भी जान लिया कि इसी बाण से मेरे प्राण निकलेंगे। विश्वामित्र का स्मरण कर रघुवीर ने बाण छोड़ा। रावण के वक्ष में चुभ कर उसने वक्ष को चीर दिया। धरती पर गिरकर राजा छटपटाने लगा। ब्रह्मा आदि देवता गगनमण्डल में रहकर देखने लगे ॥ ५७७ ॥

सूर्य, चन्द्र, कुबेर, वरुण, पुरन्दर आदि तैंतीस करोड़ देवता एकत्र होकर आपस में बातचीत करने लगे। कोई कहता, अब रावण मर गया, उसके हाथ पैर नहीं हिल रहे हैं, अब निश्चयरूप से मर गया है। कोई कहता, रावण का कोई भी विश्वास नहीं। यह दुष्ट कितने ही बार मरता है और फिर जी उठता है। मेरा तो ऐसा विचार है कि यह छल से दुबका पड़ा हुआ है। क्या जाने इस बार अगर रावण नहीं मरा तो रावण के हाथों से प्राण नहीं बचेंगे। शत्रु चिन्ता करने लगे कि जब तक रावण की चिता का धुँवा नहीं निकलता तब तक निकट नहीं जाऊँगा ॥ ५७८ ॥

शिवदूत विष्णुदूत सबे फिरे जाय ※ बेंचे आछे ब'ले केह निकटे ना जाय
मरेछे रावण ब'ले केह केह हासे ※ बेंचे आछे ब'ले केह पलाय तरासे
केह बले रावण पड़िल कतबार ※ दश माथा काटागेल, ना ह'लो संहार७९
रामायणे बाल्मीकि लिखिल पूर्व्वकाले ※ 'महाशयन' करिबे रावण रणस्थले
रावण मरिबे हेन नाहिक पुराणे ※ अतएव ना मरिबे, भावि हेन मने
कोन देव बले रावणेर मृत्यु आछे ※ अमर हइते बर पाइल कार काछे
जानिल बाल्मीकि मुनि पुराणानुसारे ※ रावण दुर्ज्जय हबे बिख्यात संसारे
भये मुनि रावणेर मृत्यु नाहि लेखे ※ कि जानि रावण रुष्ट हय पाछे देखे
मने मुनि जाने रावण हइबे दुर्ज्जय ※ प्रकाशिये मृत्यु लेखा उपयुक्त नय
रावणेर मृत्यु मुनि लिखिला संकेते ※ एबार म'रेछे रावण, सन्द नाइ ताते८०
निर्यास करिते नारे जत देवगणे ※ हेनकाले रघुनाथ भाविलेन मने
आमार परम भक्त राजा दशानन ※ शापेते राक्षस-जोनि ह'येछे एखन
शराघाते जरजर प'ड़े रणस्थले ※ एकबार दरशन दिब एइकाले
एखनि मरिबे रावण नाहिक सन्देह ※ मृत्युकाले देखा दिया मुक्त करि देह

शिवदूत, विष्णुदूत—सभी बार-बार लौट-लौट कर चले जाते थे। सभी यह सोचकर कि वह जिन्दा है निकट नहीं फटकते थे। कोई तो 'रावण मर गया है' कहकर हँसता तो कोई जिन्दा है जानकर त्रास से भाग खड़ा होता। कोई कहता रावण तो कितनी ही बार गिरा, दसों मुंड कट गये फिर भी उसकी मृत्यु नहीं हुई ॥ ५७९ ॥

प्राचीन युग में वाल्मीकि ने लिखा था कि रावण रणस्थल पर महाशयन करेगा। पुराण में कहीं भी ऐसा नहीं लिखा है कि रावण मरेगा अत: ऐसा ही विचार है कि वह मरा नहीं। कौन सा देव है जो कहता है कि रावण की मृत्यु होगी। किससे उसको अमर होने का वर प्राप्त हुआ। पुराण के अनुसार वाल्मीकि मुनि ने जाना कि रावण अजेय के रूप में संसार में विख्यात होगा। इस भय से मुनि ने रावण की मृत्यु के बारे में नहीं लिखा कि कहीं रावण उसको देखकर रुष्ट हो जाय। मन ही मन मुनि जानते थे कि रावण दुर्जेय होगा इसलिए प्रकट रूप से मृत्यु का लिखना उचित नहीं समझा। रावण की मृत्यु के विषय में मुनि ने संकेत से लिखा है। अबकी बार रावण मरा, इसमें अब कोई सन्देह नहीं है ॥ ५८० ॥

देवता कुछ भी निश्चय न कर सके। ऐसे ही समय रघुनाथ ने मन ही मन सोचा, राजा दशानन मेरा परम भक्त है, शाप से उसको राक्षस-योनि प्राप्त हुई है। बाण की चोट से जर्जर हो वह रणभूमि में पड़ा है इसलिए मैं एक बार उसको जाकर दर्शन दूँगा। इसमें सन्देह नहीं रावण अभी मरेगा, मृत्यु के समय उसको दर्शन देकर उसकी देह को मुक्त कर दूँ। लक्ष्मण को

लक्ष्मणेरे पाठाइया जानिब सन्धान ※ सेइरूप आछे, कि ह'येछे दिव्यज्ञान ५८१

रावणेर निकटे श्रीरामेर राजनीति-शिक्षा

एत भावि' रघुनाथ कहेन लक्ष्मणे ※ कहि एक उपदेश शुन सावधाने
राजार वंशेते जन्म लभि दुइ भाइ ※ चिरदिन बनवासे भ्रमिया बेड़ाइ
कतदिन वञ्चिलाम मुनिगण सने ※ राजनीति किछु ना शिखिनु पितृस्थाने
अरण्येते बधिलाम ताड़का राक्षसी ※ बिवाह करिया दोंहे अयोध्याय आसि
राजनीति शिखिवार साध छिल मने ※ से आशा निराश ह'लो बिधि-बिड़म्बने
पितृसत्य पालिते आसिते हैल बने ※ बने बने चौद्द-वर्ष फिरि दुइ जने
भल्लूक बानर ल'ये बने बने फिरि ※ के शिखाबे राजनीति, कोथा शिक्षाकरि
अयोध्या-नगरे गिया पाब राज्यभार ※ नाहि जानि धर्म्माधर्म्म राज-व्यवहार
के शिखाबे राजधर्म्म, जाब कार काछे ※ अजोध्या-नगरे लोक निन्दा करे पाछे
रावण प्रवीण राजा, ब्याख्या करे सबे ※ क'रेछे अधर्म्म-कर्म्म राक्षस-स्वभावे
राज-धर्म्म-कर्म्मे रावण परम पण्डित ※ राजनीति रावणेरे जिज्ञास किंचित्

भेजकर जान लूँ कि उसी प्रकार है या उसको दिव्यज्ञान प्राप्त हो चुका है ॥ ५८१ ॥

रावण के निकट श्रीराम की राजनीति-शिक्षा

इतना सोचकर रघुनाथ ने लक्ष्मण से कहा, एक उपदेश देता हूँ, सावधानी से सुनो। हम दोनों भाइयों ने राजा के वंश में जन्म लिया है, सदा से वन में घूमते-फिरते रहे हैं। कितने ही दिनों तक मुनियों की सेवा करते रहे हैं, पिता से कुछ भी राजनीति नहीं सीख सके। अरण्य में मैंने ताड़का-राक्षसी का वध किया, विवाह के उपरान्त दोनों भाई अयोध्या में आए। राजनीति सीखने की मन में साध थी किन्तु विधि की विडम्बना से वह आशा निराशा बन गई। पिता का सत्य पालन करने के लिए वन आना पड़ गया। चौदह वर्ष तक दोनों भाई वनों में ही भटकते रहे। भालू और वानर लेकर वन-वन घूमते फिर रहे हैं, कौन है जो मुझको राजनीति सिखायेगा, शिक्षा लूँ भी तो कहाँ से ? अयोध्या नगर पहुँचते ही राज्यभार मिलेगा, किन्तु न तो धर्माधर्म जानता हूँ और न राज-व्यवहार। कौन मुझको राजधर्म सिखायेगा, किसके पास जाऊँ ! कहीं अयोध्या नगर में लोग मेरी निन्दा न करने लग जायें। रावण प्रवीण राजा है, सभी शास्त्रों की व्याख्या कर सकता है। राक्षस-स्वभाव के कारण उसने अधर्मकर्म किया है। राज-धर्म-कर्म में रावण परम पंडित है, रावण से तनिक राजनीति पूछो। अभी राजा शरीर त्याग कर चला जायगा, उससे पूर्व उससे दो-चार नीतिवाक्य पूछ लो।

एखनि जाइबे राजा देह-परिहरि ※ जिज्ञासह नीतिबाक्य गोटा दुइ चरि
अमूल्य-रतन जदि अस्थानेते रय ※ ग्रहण करिते पारे, शस्त्रे हेन कय५८२
श्रीरामेर आज्ञा पेये लक्ष्मण सत्वर ※ उपनीत हैल जथा लंकार ईश्वर
ब्रह्म-अस्त्रे आकुल लंकार अधिपति ※ लक्ष्मणे देखिया करे सकरुण स्तुति
दशानन वले, शुन, ठाकुर लक्ष्मण ※ ए समये एकबार देह श्रीचरण
बहु जुद्ध करिलाम हइया बिबादी ※ शत शत अपराधे आमि अपराधी
अपराध मार्ज्जना करह महाशय ※ उपस्थित एइ मोर आसन्न समय ८३
लक्ष्मण बलेन, दोष नाहिक तोमार ※ जोगाजोग जत देख, लिपि बिधातार
लंकार ईश्वर तुमि परम-पण्डित ※ पाठालेन राम मोरे सुधाइते नीत८४
लक्ष्मणेर बाक्ये कहे राजा लंकेश्वर ※ कोन नीति संसारेते राम-अगोचर
राजनीति आमि बल कि कव रामेरे ※ तबे यदि आज्ञा देन कहिते आमारे
सेवकेर मुखे जदि करेन श्रवण ※ दया क'रे एकवार दिन दरशन
भक्तिहीन हइयाछि बाहिराय प्राण ※ जाइते ना पारि आमि प्रभु-विद्यमान
दया क'रे जदि राम आसेन एखाने ※ जाहा जानि राजनीति निवेदि चरणे५८५
एतेक शुनिया तबे ठाकुर लक्ष्मण ※ श्रीरामेर अग्रे आसि सविशेष कन

अनमोल रत्न यदि कुठाँव में भी पड़ा हो तो उसको ग्रहण किया जा सकता है, शास्त्र में ऐसा कहा गया है ॥ ५८२ ॥

श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण तुरन्त लंकेश्वर के पास जा पहुँचे। लंकाधिपति उस समय ब्रह्म-अस्त्र से आहत हो व्याकुल पड़ा था। लक्ष्मण को देखते ही वह सकरुण स्तुति करने लगा। दशानन ने कहा, हे देव लक्ष्मण सुनो, इस समय एकबार अपना चरणकमल मुझे दो। झगड़ कर मैंने भयंकर युद्ध किया, मैं सैकड़ों अपराधों का अपराधी हूँ। हे महानुभाव, मेरा अपराध क्षमा कर दो, अब मेरा अन्तिम समय उपस्थित है ॥ ५८३ ॥

लक्ष्मण ने कहा, तुम्हारा कोई दोष नहीं है। ये सारे संयोग तो विधाता के लेख लिखे हैं। तुम लंका के स्वामी हो और परम विद्वान् हो, राम ने मुझको नीति सीखने के लिए आपके पास भेजा है ॥ ५८४ ॥

लक्ष्मण के ये वाक्य सुनकर लंकेश्वर ने कहा, संसार की कौन सी नीति ऐसी है जो राम को अज्ञात हो। भला बताओ मैं राम को राजनीति क्या बताऊँगा। हाँ, अगर वह मुझे कहने के लिए आदेश देते हैं, सेवक के मुँह से अगर सुनना चाहें तो कृपया एकबार दर्शन दे दें। मैं भक्तिशून्य हो गया हूँ, प्राण निकल रहे हैं, प्रभु के समक्ष नहीं जा सकता। यदि राम कृपया यहाँ आ जायें तो राजनीति जितनी जानता हूँ उनके चरणों में निवेदन करूँगा ॥ ५८५ ॥

इतना सुनकर लक्ष्मण जी श्रीराम के सम्मुख आकर बोले। दशानन ने

राजनीति आमारे ना कहे दशानन ※ बाञ्छा आछे तोमारे करिते दरशन
करिया अनेक स्तुति कहिल आमारे ※ उठिते ना पारे रावण विषम-प्रहारे
स्तुतिवाक्ये कहिलेक आमार साक्षाते ※ एकबार आनिया देखाओ रघुनाथे५८६
रावणेर साक्षाते आइला रघुपति ※ बुझि रावणेर मन उठि शीघ्रगति
उठिते शकति नाइ राजा-दशानने ※ भक्तिभावे प्रणाम करिल मने मने
आघाते आकुल अंग, वाक्य नाहि सरे ※ विनय करिया कथा कय धीरे धीरे
रामेर सर्ब्बांग राजा करे निरीक्षण ※ साक्षात् बिराट-मूर्त्ति ब्रह्म-सनातन
मायाते मानव-देह विश्वमय तुमि ※ तोमार महिमा प्रभु कि जानिब आमि
अनाथेर नाथ तुमि पतित-पावन ※ दया क'रे मस्तकेते देह श्रीचरण
चिरदिन आमि दास चरणे तोमार ※ शापेते राक्षसकुले जनम आमार
महीतले भ्रमिते ह'येछे तिन जन्म ※ आसुरिक बुद्धे नाहि जानि धर्म्माधर्म्म
अपराध क्षमा कर गोलोकेर पति ※ अनादि पुरुष तुमि आपना बिस्मृति
राजनीति तोमारे कि कब रघुबर ※ संसारेर यत नीति तोमार गोचर ८७
राम बले, जे कहिले सकलि प्रमाण ※ तथापि शुनिते हय आछये विधान

मुझको राजनीति नहीं बताई। तुम्हारा दर्शन करने की उसे आकांक्षा है। मेरी बड़ी स्तुति करते हुए उसने मुझसे यह कहा है। घनघोर आघात के कारण वह उठ नहीं सकता। मुझसे विनयपूर्वक उसने कहा कि एक बार रघुनाथ को मेरे पास लाकर दर्शन करा दो ॥ ५८६ ॥

रावण से मिलने के लिए रघुपति आए। रावण के मन में आया कि झट उठकर बैठ जायें। किन्तु राजा दशानन में उठने की शक्ति नहीं रही। उसने मन ही मन भक्तिभाव से राम को प्रणाम किया। प्रहार से उसके अंग बेकल हैं, मुँह से शब्द नहीं निकलते। धीरे-धीरे विनयपूर्वक वह बोलने लगा। रावण ने राम का सर्वांग निरीक्षण किया, यह तो साक्षात् विराट-मूर्त्ति ब्रह्म सनातन हैं। हे विश्वमय ! माया से तुम मानव-देह ग्रहण किये हुए हो, तुम्हारी महिमा भला मैं क्या जानूँ। तुम अनाथों के नाथ हो, पतित-पावन हो। कृपा कर मेरे मस्तक पर अपने चरणकमल रखो। मैं सदा से तुम्हारे चरणों का दास हूँ। शाप से मेरा जन्म राक्षस-कुल में हुआ। तीन जन्म मुझको इस संसार में भटकना पड़ा है। असुर की बुद्धि के कारण धर्म और अधर्म का ज्ञान नहीं रहा। हे गोलोकपति ! मेरे अपराध क्षमा कर दो। तुम अनादि पुरुष हो किन्तु अपने स्वरूप को भूले हुए हो। हे रघुवर तुमसे मैं राजनीति क्या बखानूँ, संसार की सारी नीतियाँ तुमको विदित हैं ॥ ५८७ ॥

राम ने कहा, जो कुछ तुमने कहा वह सभी प्रमाण-सापेक्ष है। फिर भी

प्राचीन भूपति तुमि अति विचक्षण * बाहुबले जिनेछ सकल त्रिभुवन
धर्म्माधर्म्म राजकर्म्म तोमार विदित * तव मुखे किंचित् शुनिब राजनीति८८
दशानन बले, मम संशय जीवन * कहिते बदने नाहि निःसरे बचन
यतक्षण बाँचि प्राणे आछि सचेतन * कहिब किंचित् नीति करह श्रवण८९
करिते उत्तम कर्म्म वाञ्छा जबे हबे * आलस्य त्यजिया ताहा तखनि करिबे
फेलिया राखिले कर्म्म पुनः हओयाभार * कहि शुन रघुनाथ प्रमाण ताहार ९०
एकदिन आसि आमि स्वर्गपुर हैते * यमपुरी दृष्ट हैल थाकि निज रथे
शून्य हैते देखिलाम यमेर भवन * तिन द्वारे नाना स्थाने आछे साधुजन
देखिलाम दक्षिणेते पातकीर थाना *दिवा किबा रात्रि, किछु नाहि जाय जाना
अन्धकारे चौराशीटा नरकेर कुण्ड * ताहाते डुबाये धरे पातकीर मुण्ड
परित्राहि डाके पापी विषम-प्रहारे * ना देय तुलिते माथा, यमदूत मारे
ताहा देखि बड़ दया हइल मनेते * घुचाब पापीर दुःख शमनेर हाते
पापीर दुर्गति आर नाहि देखा जाय * एत भावि सेइ दिन एलेम लंकाय

ऐसा विधान है कि गुरु से ही विद्या सीखनी चाहिए। तुम प्राचीन भूपति हो, अति विचक्षण हो, त्रिभुवन को बाहुबल से तुमने जीता है। धर्माधर्म और राजकर्म तुमको विदित हैं, तुम्हारे मुख से मैं कुछ राजनीति सुनूँगा ॥ ५८८ ॥

दशानन ने कहा, मेरे प्राण कभी भी निकल जायें, मुँह से शब्द नहीं निकल रहे हैं। जब तक प्राण हैं और मैं सचेतन हूँ, तुम्हें कुछ नीति सुनाऊँगा, सुनो ॥ ५८९ ॥

कोई भी अच्छा कार्य करने की जब भी इच्छा हो आलस्य त्याग कर तभी उसको कर डालना चाहिए। काम को छोड़ रखने से फिर से उसका पूरा होना कठिन हो जाता है। इसके प्रमाण में हे रघुनाथ सुनो, मैं तुमको सुनाता हूँ ॥ ५९० ॥

एक दिन मैं स्वर्गपुर से आ रहा था कि रास्ते में अपने रथ से मुझको यमपुरी दिखाई पड़ी। शून्य से मैंने यम का भवन देखा। उसके तीनों द्वारों पर विभिन्न साधुजनों को देखा। दक्षिण में पापियों की चौकी देखी। वहाँ दिन है या रात कुछ भी पता नहीं चलता है। अन्धकार में चौरासी नरक के कुंड बने हैं जिनमें पातकियों के मुंड पड़े हुए हैं। विषम प्रहार से पापी त्राहि-त्राहि पुकार रहे हैं। यमदूत सिर नहीं उठाने देते—पीटने लगते हैं। यह देखकर मेरे मन में बड़ी दया उपजी। मैंने सोचा, मैं यम के हाथों पापियों का यह दुःख दूर करूँगा। पापियों की दुर्गति देखी नहीं जाती। इतना सोचकर उस दिन मैं लंका चला आया। रोज सोचता रहा कि नरक-कुंडों को तोप दूँगा, लेकिन आज कल करते हुए, वह उपेक्षा में पड़ा ही रह

पूराब नरक-कुण्ड नित्य करि मने ❋ आजि कालि करिया रहिल वहु दिने
हेलाय रहिल प'ड़े ना हय पूरण ❋ तार पर तब संगे वाजिल ए रण
कुण्ड पूराइते जबे करिनु मनन ❋ तखनि पूराले पूर्ण हइते से पण
हेलाय राखिनु फेले, ना हइल आर ❋ मनेर से दुःख मने रहिल आमार ९१
आर एक कथा शुन निवेदन करि ❋ लवण-समुद्र-माझे स्वर्ण-लंका-पुरी
एक दिन मनेते हइल एइ कथा ❋ सप्तटि समुद्र सृष्टि क'रेछेन धाता
दधि-दुग्ध-घृत-आदि समुद्र थाकिते ❋ केन आछि लवण-समुद्र-सलिलेते
स्वर्ग मर्त्य पाताल आमार करतल ❋ सिञ्चिया फेलिव आमि समुद्रेर जल
क्षीरोद-समुद्र एने राखिब एखाने ❋ एइ कथा चिरदिन आछे मोर मने
यखन मनेते हय, मने करि करि ❋ अन्य कर्म्मे थाकि सिन्धु सिंचिते पासरि
एइरूपे हेलाय अनेक दिन गेल ❋ तदन्तरे तव संगे संग्राम वाजिल
समुद्र-सेचन करा ना हइल आर ❋ मनेर से दुःख मने रहिल आमार
अतएव एइ कथा शुन रघुमणि ❋ मने ह'ले शुभ कर्म्म करिवे तखनि ९२
हेलाय राखिले कोन कार्य्य नाहि हय ❋ आर एक कथा कहि, शुन महाशय
नाग-नर-भूचर-खेचर-आदि सर्व्व ❋ भूत-प्रेत-पिशाचादि आछये गन्धर्व्व

गया। फिर तुम्हारे साथ यह युद्ध छिड़ गया। कुंड भरने के लिए जब मन में विचार किया था यदि तभी उसे पूरा करदेता तो प्रण पूर्ण होता। अवहेलना से उसे रख छोड़ा, इसी लिए वह काम फिर न बन सका, मन की वह कामना मन ही में रह गई ॥ ५९१ ॥

एक और बात मैं निवेदन करता हूँ, सुनो। लंकापुरी लवण-समुद्र के बीच में है। एक दिन मन में यह बात उपजी कि सातों समुद्रों की सृष्टि विधाता ने की है। दूध, दही और घी के समुद्र रहते हुए मैं क्यों लवण-समुद्र में पड़ा हुआ हूँ। मर्त्य, पाताल मेरी हथेली पर हैं। मैं इस समुद्र का जल सोख लूँगा और क्षीरसागर को लाकर यहाँ स्थापित करूँगा, यह बात हमेशा मेरे मन में जमी रही। जब भी याद आ जाती, जब भी करने को होता, तभी कोई दूसरा काम आ जाता और सागर सोखना भूल जाता। इस प्रकार उपेक्षा में बहुत दिन निकल गये, फिर तुम्हारे साथ युद्ध छिड़ गया। समुद्र सोखना रह गया। मेरे मन में यह दुःख भी बना रहा। अतः हे रघुमणि सुनो, यदि मन में कोई शुभकर्म करने की इच्छा हो तो उसे तत्काल कर डालना चाहिए ॥ ५९२ ॥

छोड़ रखने पर कोई भी काम हो नहीं पाता। हे भगवान् मैं तुम्हें एक बात और बता रहा हूँ। नाग, नर, भूचर, खेचर, भूत, प्रेत, पिशाच, गन्धर्व, आदि सभी जीव ब्रह्मा की सृष्टि में हैं। अमरपुर जाने से सभी

ब्रह्मार सृष्टिते आछे जीवगण यत ※ जाइते अमर-पुरे सकले वञ्चित
सकलेर शक्ति नाइ जाइते तथाय ※ केह केह दैव-शक्ति-अनुसारे जाय
ए शक्ति-विहीन जारा आछे पृथिवीते ※ स्वर्गपुरे जाइते ना पारे कदाचिते
मने मने साध करे जाइते अमरे ※ दैव-शक्ति-हीन तारा जाइते ना पारे
देखि दु:ख ताहादेर भाविनु अन्तरे ※ कि रूपे जाइते जीव पारे स्वर्गपुरे
अनायासे येते सबे पारे देवलोके ※ निर्म्माब स्वर्गेर पथ विश्वकर्मा डेके
करिब एमन पथ सबे येन उठे ※ पृथिवी अवधि स्वर्गे क'रे दिब पैंठे
थाकिबे अपूर्ब्ब कीर्त्ति संसारे पौरुष ※ त्रिभुवने सबे मोर घुषिबेक यश
तखनि करिताम यदि हैल जबे मने ※ कोन काले कार्यसिद्धि हैत एत दिने
हेलाय राखिया हैल बहुदिन गत ※ तारपर तव संगे युद्ध उपस्थित
अतएव शुभकर्म्म शीघ्र करा भालो ※ हेलाय राखिया ये बासना बृथा ह'लो९३
श्रीराम बलेन, शुन लंका-अधिपति ※ शुभकर्म्म शीघ्र करा एइ से जुकति
सुकृति कर्म्मेर कथा कहिले विस्तर ※ पाप-कर्म्म-पक्षे किछु कह आर-बार
पाप-कर्म्म हेला क'रे राखे ये जन्येते ※ बलह ताहार नीति आमार साक्षाते
शीघ्र कैले पापकर्म्म कि हवे दुर्गति ※ विस्तार करिया कह सेइ राजनीति९४

वंचित हैं। वहाँ जाने की शक्ति सभी की नहीं है। कोई-कोई दैव-शक्ति के प्रभाव से जा सकते हैं। इस संसार के ये शक्तिहीन मनुष्य कभी स्वर्गपुर नहीं जा पाते हैं। अमरलोक जाने की उनकी मन ही मन साध है किन्तु दैव-शक्ति से शून्य होने के कारण वे नहीं जा पाते हैं। उनका दु:ख देखकर मैंने मन में सोचा कि किस प्रकार से ये जीव स्वर्गपुर जा सकते हैं। सभी लोग अनायास देवलोक जा सकें इस हेतु मैं विश्वकर्मा को बुलवाकर स्वर्ग का पथ निर्मित कराऊँगा। ऐसे पथ का निर्माण करूँगा कि सभी लोग स्वर्ग जा सकें, मैं पृथ्वी से स्वर्ग तक का सोपान बनवा दूँगा। संसार में अपूर्व पौरुष और कीर्ति का नमूना रह जायगा और तीनों लोकों में मेरा यश गाया जायगा। जब यह मन में आया था तभी अगर यह करवा लेता तो जाने कब के मेरी कार्य-सिद्धि हो जाती। उपेक्षा से वह पड़ा रहा और बहुत दिन बीत गये, फिर तुम्हारे साथ युद्ध आरम्भ हो गया। अत: कोई भी शुभकार्य तत्काल कर डालना चाहिए। उपेक्षा से पड़े रह जाने से संकल्प व्यर्थ हो जाता है ॥ ५९३ ॥

श्रीराम ने कहा, हे लंका के अधिपति सुनो। शुभकर्म जल्दी करना चाहिए, यह एक नीति है। अच्छे कर्मों के विषय में तुमने बहुत कुछ कहा, अब कुछ पाप-कर्मों के विषय में भी बताओ। मुझसे वह नीति बताओ जिससे पाप-कर्म को उपेक्षा से डाल रखना चाहिए। तत्काल पाप-कर्म करने से क्या दुर्दशा होती है वह राजनीति स्पष्ट रूप से बताओ ॥ ५९४ ॥

दशानन वले, ताहा कहिते विस्तर ※ कत आर विस्तारिया कव रघुवर
पापकर्म्म अनेक क'रेछि चिरदिन ※ कहिते ना पारि, तनु प्रहारेते क्षीण
आछये अनेक कथा आमार मनेते ※ कत कव रघुनाथ तोमार साक्षाते
एक कथा कहि राम देख विद्यमान ※ लक्ष्मण काटिल शूर्पणखार नाक कान
सेइ एसे उपदेश कहिल आमारे ※ ताहार बुद्धिते आमि सीता आनि ह'रे
शूर्पणखा कान्दिलेक चरणेते ध'रे ※ मन हैल सीतारे हरिया आनिबारे
एकबार भाविलाम आपन मनेते ※ आजि नहे कालि सीता आनिव पश्चाते
आबार विचार करि देखिलाम भेवे ※ हेलाय राखिले शेषे आना नाहि हवे
अतएव शीघ्रगति हरि आनि सीते ※ सर्व्वनाश हैल मोर सीतार जन्येते
एक लक्ष पुत्र मोर, सओया लक्ष नाति ※ आपनि मरिनु शेषे लंका-अधिपति
यदि सीता आनिताम भेवे-चिन्ते मने ※ तवे केन सवंशे मरिव तव वाणे
हेलाते ना हरि सीता राखिताम फेले ※ तवे मोर संहार ना हैत कोनकाले
याहा जानि कहिलाम किछु नीति-कथा ※ कहिते कहिते जिह्वाय हैल जड़ता
श्रीचरणे दृष्टि राखि प्राण-त्याग कैल ※ हेनकाले सुरपुरे जयध्वनि हइल ५९५

दशानन ने कहा, पाप-कर्म तो बहुत हैं। हे रघुवर, उनको विस्तार से कहाँ तक बताऊँ। मैंने सदा ही बहुत से पापकर्म किये हैं। अब प्रहार से मेरा शरीर दुखी है, इसलिए मैं बता नहीं पा रहा हूँ। मेरे मन में बहुत सारी बातें हैं। हे रघुनाथ, मैं तुमसे क्या-क्या बताऊँ। हे राम, एक बात तुमको बता रहा हूँ, लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काट डाले। उसी ने आकर मुझको सलाह दी। उसी की बुद्धि के अनुसार मैं सीता का हरण कर लाया। शूर्पणखा ने पैरों पड़कर रोया तो सीता को हर लाने का मन हुआ। एक बार मैंने अपने मन में सोचा, आज नहीं, कल सीता को पकड़ कर लाऊँगा। फिर सोच-विचार कर देखा कि यह काम उपेक्षा से पड़े रह जाने पर अन्त तक शायद सीता का लाना संभव न हो। अतः मैंने शीघ्रातिशीघ्र सीता का हरण किया और सीता के कारण ही मेरा सर्वनाश हुआ। मेरे एक लाख बेटे और सवा लाख पोते थे। अब वे सभी मर गये और अन्त में लंका का अधिपति मैं स्वयं मर रहा हूँ। अगर मैं सोचविचार कर सीता को लाया होता तो क्यों अपने सारे वंश के साथ तुम्हारे बाणों से मुझको मरना पड़ता। यदि उपेक्षा से सीता-हरण पड़ा रह जाता तो मेरा संहार कभी नहीं हो सकता था। जो कुछ मुझको मालूम थे वे नीति-वाक्य मैंने कह सुनाये। इतना कहते-कहते उसकी जीभ लड़खड़ाने लगी। श्रीचरणों पर दृष्टि जमा कर उसने अपने प्राण त्याग दिये। उसकी मृत्यु के समय सुरपुर में जयध्वनि हुई ॥ ५९५ ॥

विभीषणेर-विलाप

आमार आर केह नाहि भवे ।
(ओरे दयाल रामेर चरण बिने) ※ दारा-पुत्र-परिवार, केवा कोथा रवे,
आसिये शमन-दूत यखन बाँधिवे ※छेड़े संसार-माया भाव मन राघवे५९६
रावण पड़िल, देवगण हरषित ※ नृत्य करे अप्सरा, गन्धर्व्व गाय गीत
रावण पड़िल, राम कपि-पाने चान ※ पलाइया छिल कपि, एल विद्यमान
रथखान काड़ि लैल बीर हनूमान ※ अंगद लइल गदा दिया एक टान
कर्णेर कुण्डल लैल नील सेनापति ※ हातेर वलय लय नल महामति
केह केह काड़ि लय मुकुटेर फूल ※ केह उपाड़ये दाड़ि गोंप आर चूल
रावणे देखिते सबे करे मारामारि ※ पड़िल रावण राजा जगतेर बैरी९७
राम बले, कपिगण हओ एकपाश ※ रावणे देखिब आमि, आछे अभिलाष
राम लक्ष्मण सुग्रीव संगेते विभीषण ※ रावण-निकटे तबे गेला ततक्षण
पर्ब्बत जिनिया अंग धरणी लोटाय ※देखिया दयाल राम करे हाय हाय५९८
ताहा देखि बिभीषण रावणे निल कोले ※ कान्दिते कान्दिते शोके बिभीषण बले

विभीषण का विलाप

दयालु राम के चरणों के सिवा इस संसार में मेरा कोई नहीं। जब यमदूत आकर बाँध ले जायगा तब दारा-पुत्र-परिवार कौन कहाँ रहेगा, इसलिए संसार की माया छोड़ राम में मन रमाओ ।। ५९६ ।।

जब रावण गिरा तो देवता अत्यन्त हर्षमग्न हुए। अप्सरा नृत्य करने लगीं और गन्धर्व गान करने लगे। जब रावण गिरा तो राम ने कपियों की ओर देखा, जितने कपि भाग गये थे वे फिर लौटकर आ गये। वीर हनुमान ने रावण का रथ छीन लिया। अंगद ने गदा छीन ली। नील सेनापति ने कानों के कुंडल ले लिये। महामति नल ने हाथ के कड़े ले लिये। कोई-कोई मुकुट के फूल नोचने लगा तो कोई दाढ़ी-मूछ और केश नोचने लगे। रावण को देखने के लिए धक्का-मुक्की शुरू हो गयी। इस प्रकार संसार के वैरी राजा रावण की मृत्यु हुई ।। ५९७ ।।

राम ने कहा, अरे वानरों, एक किनारे हो जाओ, मेरी ऐसी इच्छा है कि मैं रावण को देखूँ। उतनी देर में राम लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषण को साथ लिये रावण के पास गये। धरती पर उसका पर्वत सा शरीर लोट रहा है यह देखकर दयालु राम हाय-हाय करने लगे ।। ५९८ ।।

यह देखकर विभीषण ने रावण को गोद में ले लिया। शोक से रोते-रोते विभीषण ने कहा, हे भाई, अपने बाहुबल से तुमने त्रिभुवन पर विजय

त्रिभुवन जिनिले भाइ निज बाहुबले ❊ सेई अहंकारे भाइ रामे ना चिनिले
ना बुझिया सीतादेवी लंकाते आनिले ❊ लक्ष्मीरे करिया चुरि सवंशे मजिले
मरण करिले सार, नाहि दिले सीता ❊ पाये ध'रे साधिलाम, ना शुनिले कथा
सवंशे आपनि एवे हाराइले प्राण ❊ ना शुनिले मम वाक्य ह'ये हतज्ञान
आपनार दोषे मैले, कलंक आमार ❊ कार करे दिया जाओ लंका-अधिकार५९९
बिभीषण बले, राम, युक्ति बल सार ❊स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तोमार अधिकार
धार्म्मिक हइला भाइ धर्म्म नष्ट करे ❊ मृत्यु लागि सीता आने लंकार-भितरे
चिरदिन भाइ मोर पूजिल शिवेरे ❊ मरण-समये शिव ना चाहिला फिरे
हित बुझाइते मोरे भाइ मारे लाथि ❊ तखनि जानिनु भायेर घटिल दुर्गति
पुरी शून्य करि भाइ त्यजिल जीवन❊तोमा बिना गति आर नाहि नारायण६००
बिभीषणेर रोदने श्रीराम दुःख-मन ❊ राम बले ना कान्द धार्म्मिक विभीषण
भुवन जिनिया सुख भुञ्जिल अपार ❊ पड़िया आमार वाणे गेल स्वर्गद्वार
रामेर वचने तबे संबरे क्रन्दन ❊ कृत्तिवास विरचिल गीत-रामायण६०१

पाई। उसी अहंकार के कारण तुम राम को नहीं पहचान सके। तुम नासमझी से सीतादेवी को लंका ले आये। लक्ष्मी को चुराकर तुम अपने वंश के साथ नष्ट हो गये। तुमने मृत्यु को ही अपना लिया, लेकिन सीता को नहीं दिया। पैरों पड़कर मैंने तुमसे अनुरोध किया किन्तु तुमने मेरी एक भी न सुनी। अब अपने वंश के साथ तुमने अपने प्राण गँवाये, लेकिन ज्ञानभ्रष्ट होने के कारण मेरी बात नहीं मानी। मरे तो तुम अपने ही दोष से लेकिन मुझ पर कलंक लग गया, आज लंका का अधिकार तुम किसे सौंपे जा रहे हो ।। ५९९

विभीषण ने कहा, राम मुझको नीति बताओ। तुम्हारा स्वर्ग-मर्त्य-पाताल पर अधिकार है। धार्मिक होते हुए भी भाई धर्म-नष्ट कर रहा था, मृत्यु के लिए सीता को लंका में ले आया। सदा से मेरा भाई शिवजी की पूजा करता रहा; लेकिन मृत्यु के समय शिव ने पलट कर भी नहीं देखा। जब मैं उसे समझाने गया तो उसने मुझ पर लात जमा दी, तभी मैंने जान लिया कि भाई के भाग्य में दुर्दशा लिखी है। नगरी को सूनी करते हुए मेरे इस भाई ने प्राण दिये। हे नारायण, अब तुम्हारे बिना मेरी कोई गति नहीं ।। ६०० ।।

विभीषण के रोदन से श्रीराम का मन दुखी हुआ। राम ने कहा, धार्मिक विभीषण, मत रोओ। रावण ने भुवनों को जीत कर अपार सुख का भोग किया और मेरे बाण से मर कर स्वर्गद्वार को गया। राम के वचन से विभीषण ने रोना बन्द किया। कृत्तिवास ने रामायण-गीत की रचना की ।। ६०१ ।।

मन्दोदरीर-विलाप

एकबार बदन तुले फिरे चाओ हे,
उठ उठ लंकार अधिकारी ※ आमार शून्य ह'लो लंका-पुरी
ओहे त्यजे शय्या मनोहर ※ केन धूलाय धूसर-कलेवर ६०२
अन्तःपुरे जानाइल पड़िल रावण ※ देखिवारे धाइल यतेक नारीगण
रक्त-उत्पल जिनि कोमल चरण ※ रणस्थले छुटे जाय ह'ये अचेतन
रावणे बेड़िया कान्दे चौद्द हाजार नारी ※ शशधरे येन तारागण आछे घेरि
सोनार कमल अंग धूलाते मगन ※ मन्दोदरी कान्दे धरि स्वामीर चरण
आमारे छाड़िया प्रभु जाओ कोन स्थाने ※ केमने धरिब प्राण तोमार मरणे
केन वा आनिले सीता ए काल-सापिनी ※ स्वर्ण-लंका-पुरे ना रहिल एक प्राणी
कि काज करिल तव शंकर-शंकरी ※ राम-लक्ष्मण संहारिल स्वर्ण-लंका-पुरी
आपद् पड़िले देख केह कारो नय ※ सीतार कारणे ह'लो एतेक प्रलय
शमन हइल तव शूर्पणखा भग्नी ※ तार वाक्ये आनि सीता हाराले पराणी
भुवनेर बीर प्रभु पड़े तव बाणे ※ प्राण हाराइले नर-बानरेर रणे

मन्दोदरी का विलाप

हे लंका के अधिकारी, उठो-उठो, एक बार मुँह उठाकर पलट कर देखो। मेरी लंकापुरी सूनी हो गई है। मनोहर शय्या त्यागकर धूल में धूसरित हो लोट क्यों रहे हो॥ ६०२॥

जब अन्तःपुर में यह प्रसिद्ध हो गया कि रावण का पतन हो गया है तो उसको देखने के लिए सभी नारियाँ दौड़ पड़ीं। जिनके पदतल लाल-कमल जैसे थे वे नारियाँ सुध-बुध खोकर रणभूमि में दौड़ने लगीं। रावण को घेर कर उसकी चौदह हज़ार नारियाँ रोने लगीं, मानों तारिकाएँ चन्द्र को घेरे हुए हों। उसका सोने के कमल जैसा शरीर धूल से सन गया, किन्तु मन्दोदरी पति का चरण पकड़े रोती रही। हे प्रभु, मुझको छोड़कर तुम कहाँ जा रहे हो, तुम्हारी मृत्यु के बाद मैं यह प्राण कैसे रख सकूँगी? इस काली-नागिन सीता को तुम क्यों ले आए, सोने की लंकापुरी में एक भी प्राणी नहीं बच सका। तुम्हारे शंकर-शंकरी ने क्या किया? राम-लक्ष्मण ने स्वर्ण की लंकापुरी का विनाश किया। विपत्ति आ पड़ने पर किसी का कोई नहीं होता। सीता के कारण इतना बड़ा प्रलय हो गया। तुम्हारी बहन सूर्पणखा तुम्हारे लिए यम बन गई। उसी के कहने पर सीता लाकर तुमने अपने प्राण गँवाये। तीनों भुवनों के वीर तुम्हारे बाणों से गिरते थे, पर तुमने नर-वानर के युद्ध में प्राण गँवा दिये। यह सोने की लंका तुम किसको दिये जा रहे हो, हे प्रभु, अपनी रानी मन्दोदरी तुम किसे दिये जा रहे हो। व्यर्थ ही तुम्हारी अतुल

कारे दिया गेले ए कनक-लंका-पुरी ❊कारे दिया जाओ प्रभु राणी मन्दोदरी
अतुल ऐश्वर्य्य तव गेल अकारणे ❊ सब छारखार हैल तोमार बिहने
पति पुत्र मरिल, केमने प्राण धरि ❊धरणी लोटाये कान्दे राणी मन्दोदरी३
बिभीषण बले, शुन राणि मन्दोदरि ❊ आर ना बिलाप कर, चल अन्त:पुरी
एत बलि बिभीषण राणी नमस्कारे ❊ आपनि सकल ज्ञात दैवे यत करे
सीता दिते कहिलाम करिया मिनति ❊ सभा बिद्यमाने मोरे मारिलेन लाथि
पदाघाते हइलाम जलनिधि पार ❊ सकल वृत्तान्त तुमि जानह आमार
एतेक बचन यदि कहे बिभीषण ❊ जुड़िल से मन्दोदरी द्विगुण क्रन्दन६०४

श्रीरामेर निकटे मन्दोदरीर अवैधव्य-वरलाभ

रावणेर मुण्ड कोले कान्दे उच्चै:स्वरे ❊ दश हाजार सतिनीते प्रबोधिते नारे
ना कान्द ना कान्द राणि, मन कर स्थिर❊ तोमार क्रन्दने सबार बुक हय चिर५
मन्दोदरी बले, राजा मारिल जे जने ❊ सेइ जने एकबार देखिब नयने
मनुष्य नहेन राम देव-नारायण ❊ अवश्य देखिब आमि ताँहार चरण

सम्पदा नष्ट हो गई, तुम्हारे बिना सब कुछ छिन्न-भिन्न हो जायगा। मेरे पति-पुत्र सभी मर गये, अब मैं कैसे प्राण रखूँ, यह कहकर रानी मन्दोदरी पृथिवी पर लोट-लोट कर रोने लगी ॥ ६०३ ॥

विभीषण ने कहा, रानी मन्दोदरी सुनो। अब और विलाप न करो, अन्त:पुर चली चलो। इतना कहकर विभीषण ने रानी को नमस्कार किया और कहा तुम खुद सभी कुछ जानती हो, यह सब दैव का किया हुआ है। अनुनय-विनय करके जब मैंने सीता दे देने को कहा तो सभा के सम्मुख उन्होंने मुझ पर लात जमा दी। लात खाकर मैं समुद्र पार पहुँच गया। मेरा सारा विवरण तो तुम जानती ही हो। जब विभीषण ने इतना कहा तो मन्दोदरी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी ॥ ६०४ ॥

श्रीराम से मन्दोदरी का अवैधव्य वर-लाभ

रावण का मुंड गोद में लिये मन्दोदरी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उसकी दस हज़ार सौतें भी उसको धीरज देने में असमर्थ रहीं। हे रानी, मत रोओ, मत रोओ, धीरज धरो। तुम्हारे रुदन से सभी का हृदय टूक-टूक हुआ जा रहा है ॥ ६०५ ॥

मन्दोदरी ने कहा, जिसने राजा को मारा है उसको एक बार अपनी आँखों से देखना चाहती हूँ। राम मनुष्य नहीं हैं, नारायण देव हैं। मैं उनके चरण अवश्य ही देखूँगी। ऐसा कहकर अस्त-व्यस्त वस्त्रों में और खुले

वस्त्र ना संवरे राणी आउदर-चुली ❋ श्रीरामे देखिते जाय ह'ये उतरोली६
कटके वेष्ठित ब'से आछेन श्रीराम ❋ हेनकाले मन्दोदरी करिल प्रणाम
सीता-ज्ञाने भावि राम राणी मन्दोदरी ❋'जन्मायती' हओ बलि आशीर्व्वाद करि
रामेर चरणे राणी बले ततक्षण ❋ हेन वर दिले केन कमल-लोचन
चन्द्र-सूर्य्य-पृथिवी-समुद्र यदि छाड़े ❋ तबु रघुनाथ, तव वाक्य नाहि नड़े
श्रीरामेरे मन्दोदरी परिचय दिल ❋ कृत्तिवास पण्डित कवित्वे बिरचिल६०७

मन्दोदरीर परिचय-दान ओ अवैधव्य-विषयक व्यवस्था

संसारे असीमा, जाँहार महिमा, शुनेछ मय-दानव ।
जाँर महाशेले, त्रिभुवन टले, लक्ष्मणेर पराभव ॥
ताँहार नन्दिनी, रावण-धरणी, नाम मम मन्दोदरी ।
एलेम चरण, करिते दर्शन, त्यजिया जे अन्त:पुरी ॥
शुन महाशय, जानिनु निश्चय, तुमि त्रिदिवेर नाथ ।
लंकार ईश्वरी, नाम मन्दोदरी, कहि जोड़ करि हात ॥
देवेर ईश्वर, देव पुरन्दर, तारे जे बान्धिया आनि ।
जेइ इन्द्रजित्, देवे माने भीत, आमि जे तार जननी ॥

बिखरे बालों सहित रानी उतावली सी होकर राम को देखने चल पड़ी ॥ ६०६ ॥

सेना से घिरे राम बैठे हैं। ऐसे समय मन्दोदरी ने आकर प्रणाम किया। रानी मन्दोदरी को सीता समझकर 'अखण्ड सौभाग्यवती' होओ, यह कहकर राम ने आशीर्वाद दिया। तब तक रानी ने राम के चरणों को पकड़कर कहा, हे कमललोचन तुमने ऐसा वर क्यों दिया। चन्द्र, सूर्य, पृथ्वी, समुद्र सभी अपना स्थान छोड़ सकते हैं किन्तु हे रघुनाथ, तुम्हारा वचन नहीं टल सकता है। ऐसा कहकर श्रीराम से मन्दोदरी ने अपना परिचय बताया। इस प्रकार पंडित कृत्तिवास ने कवित्त में रचना की ॥ ६०७ ॥

मन्दोदरी का परिचय-दान और अवैधव्य-विषयक व्यवस्था

संसार में जिसकी असीम महिमा है ऐसे मयदानव का नाम आपने अवश्य सुना होगा। जिसके महाशेल के प्रहार से तीनों लोक हिल जाते हैं तथा लक्ष्मण का भी पराभव होता है, मैं उन्हींकी बेटी और रावण की पत्नी हूँ, मेरा नाम मन्दोदरी है। मैं अन्त:पुर त्याग कर तुम्हारे चरणों का दर्शन करने आई हूँ। हे महाशय, मैंने निश्चय रूप से जान लिया है कि तुम तीनों लोकों के नाथ हो। मैं मन्दोदरी नामक लंका की रानी तुम से हाथ जोड़ कर कहती हूँ। जो देवताओं के ईश्वर पुरन्दर को बाँध लाता था, तथा

'जन्मायती' करि, वर दिले हरि, ए वचन नहे आन ।
स्वामी एइ हत, आमार आयत, किरूपे कर बिधान ।।
तुमि सत्यवादी, ओहे गुणनिधि, मिथ्या नहे तव वाणी ।
दारुण प्रहारे, मारिये पतिरे, कि कथा कह आपनि ।।
सूर्य्य-वंश-जात, प्रभु रघुनाथ, कहेन ह'ये लज्जित ।
सत्य मोर कथा, रावणेर चिता, ज्वालिया राख आयत ।।
शुन मन्दोदरि, जाओ निज पुरी, मने ना कर विलाप ।
मोरे हाते म'रे, गेल स्वर्गपुरे, खण्डिल सकल पाप ।।
शुन मोर राणी, गृहे जाओ राणि, दुःख ना भाविओ चिते ।
रामणेर चिता, रहिवे सर्व्वथा, चिरकाल थाक आयते ।।
रहिबेक चिता, मिथ्या-नहे कथा, शुन मन्दोदरी राणि ।
आयत स्वभावे, सर्व्वकाल रवे, मिथ्या ना हइबे वाणी ।।
रामेर बचने, सुखी ह'ये मने, गृहे जाय ततक्षण ।
लंका-काण्ड गीत, भाषा सुललित, कृत्तिवास-विरचन ।।६०८

श्रीरामेर स्थाने वर पे'ये मन्दोदरी * प्रणति करिया रामे गेल निजपुरी

जिसके भय से देवता भीत थे, उस इन्द्रजीत की मैं जननी हूँ। 'अखंड सौभाग्यवती रहो' यह कहकर तुमने वर दिया है, यह बचन भी व्यर्थ नहीं हो सकता। मेरा पति तो मृत पड़ा है तब किस प्रकार से मेरा सुहागिन बने रहने का आशीर्वाद दे रहे हो। हे गुणों के निधि, तुम सत्यवादी हो, तुम्हारी वाणी मिथ्या नहीं हो सकती। प्रचंड प्रहार से मेरे पति को मारकर तुम स्वयं यह कैसी बात कर रहे हो। तब सूर्यवंशजात रघुनाथ ने लज्जित होकर कहा, मेरा वचन सत्य रहेगा, रावण की चिता सदा के लिए प्रज्वलित रहेगी। हे मन्दोदरी सुनो, तुम अपने घर जाओ, विलाप मत करो। मेरे हाथों से मरकर रावण स्वर्ग गया और उसके सारे पाप धुल गये। मेरी बात सुनो, हे रानी, तुम अपने घर जाओ, मन में दुखी मत होओ। रावण की चिता सदा के लिए जलती रहेगी और तुम भी चिरकाल के लिए सधवा बनी रहोगी। हे मन्दोदरी रानी, यह बात झूठ नहीं है, यह चिता यों ही बनी रहेगी। तुम सधवा रूप में चिरकाल तक जीवित रहोगी। हे रानी, मेरी वाणी मिथ्या नहीं होगी। राम के वचन से रानी प्रसन्न होकर घर चली गई। लंकाकांड के गीत सुललित हैं, जिनकी रचना कृत्तिवास ने की है ।। ६०८ ।।

रावण का सत्कार और उसकी मुक्ति

श्रीराम से वर पाकर मन्दोदरी राम को प्रणाम कर अपने घर चली

रावणेर सत्कार ओ मुक्ति

रावणे बधिया दुःख हइल अपार ※ ना धरिब धनु, राम कैला अंगीकार ६०९
राम बले, बिभीषण, ना भाविओ मने ※ आपनार दोषे मैल राजा दशानने
रावणेर अग्निकार्य्य कर बिभीषण ※ आर केह नाहि तार करिते तर्पण
क्रन्दन संवर मिता, शुन मम बाणी ※ रावणेर तर्पण तुमि करह एखनि १०
श्रीराम-आज्ञाय जाय सत्कार करिते ※ नाना द्रव्य बस्त्र आने भाण्डार हइते
अगुरु चन्दन-काष्ठ आने भारे-भार ※ सुगन्धि चन्दन आने गन्ध मनोहर
पर्व्वत-समान बीर दुर्व्वह-शरीर ※ रावणे बहिते एल सहस्त्रेक बीर
सकल राक्षस आसि रावणेरे धरे ※ पर्व्वत-समान बीरे तुलिवारे नारे
दुर्ज्जय-प्रताप हनूमान महाबीर ※ कोले क'रे ल'ये गेल सागरेर तीर
रावणेरे स्नान कराइल सिन्धु-जले ※ सुगन्धि चन्दन लेपे कण्ठ-बाहु-मूले
दिव्य वस्त्र पराइल सोणार पइते ※ सागरेर कूले खुले रावणेर चिते
हाते अग्नि करिया कान्देन बिभीषण ※ दश-मुखे अग्नि दिया पोड़ाय रावण
रावणेर चिता-धूम उठे ततक्षण ※ मुक्त ह'ये गेल रावण वैकुण्ठे-भुवन
कृत्तिवास पण्डितेर कबित्व-सुसार ※ लंकाकाण्डे-गाइलेन रावण-उद्धार ६११

गई। रावण का वध कर राम को अपार दुःख हुआ। राम ने प्रतिज्ञा की कि फिर कभी धनुष नहीं पकड़ेंगे ॥ ६०९ ॥

राम ने कहा, विभीषण मन में कोई सोच न करना। राजा दशानन अपने ही दोष से मरा। विभीषण, रावण का अग्निकार्य करो। उनका तर्पण करने के लिए अब कोई दूसरा नहीं बचा है। मित्र अपनी रुलाई रोको, मेरी बात सुनो, तुम अभी रावण का तर्पण करो ॥ ६१० ॥

श्रीराम की आज्ञा पाकर विभीषण उसका पालन करने चला। भंडार से वस्त्र आदि विभिन्न द्रव्य ले आया। ढेर के ढेर अगुरु चन्दन की लकड़ी लाई गई। मनोहर सुगन्ध वाला चन्दन लाया गया। वीर रावण का शरीर पर्वत के समान दुर्वह है—उसको कन्धा देने के लिए एक हज़ार वीर आए। सब राक्षसों ने आकर रावण को पकड़ा, लेकिन पर्वत समान वीर को उठाने में सभी असमर्थ रहे। परम पराक्रमी महावीर हनुमान ने उसको गोद में उठा लिया और समुद्र के किनारे पहुँचा दिया। रावण को समुद्र के जल में नहलाया गया, सुगन्धित चन्दन गले एवं बगल में लेप दिया गया। सुन्दर वस्त्र और सोने का बना जनेऊ पहनाया गया। सागर-तट पर रावण की चिता बनी। हाथों में आग लेकर विभीषण रोने लगे। दस मुखों में आग लगा-कर रावण को जलाया। रावण की चिता से धुँआ उठा और तबतक रावण मुक्त होकर वैकुंठ चला गया। पंडित कृत्तिवास का कवित्व सर्वोत्कृष्ट है। इन्होंने लंकाकांड में रावण-उद्धार का गीत गाया ॥ ६११ ॥

श्रीराम कर्तृक विभीषणके लंकाराज्ये अभिषेक

एकवार डाक मन राम-राम बलियेरे ✽ देख एतिन भुवने, सीतानाथ विने,
के आर तरिवे तोमारे ६१२
रणे अवसर पे'ये कमल-लोचन ✽ लक्ष्मण सहित गिया वसिल तखन
इन्द्रेर मातलि आसि मागिल मेलानि ✽ मातलिरे कहिलेन सुमधुर वाणी
देवराजे कहिवे आमार परिहार ✽ ताँर शत्रु रावणेरे करिनु संहार
रामेरे प्रणाम करि मातलि चलिल ✽ रामेर वचन गिया इन्द्रेर कहिल १३
सुग्रीवे देखिया राम हरषित-मन ✽ वाहु पसारिया तारे दिला आलिंगन
तुमि हेन मिता हइओ जन्म-जन्मान्तरे ✽ भुवन जिनिते पारि पाइले तोमारे
तोमार प्रसादे हइलाम सिन्धु पार ✽ तोमार प्रसादे सीता करिनु उद्धार
एक धार आमार र'येछे शुधिवार ✽ बिभीषणे ना दिलाम लंका-अधिकार
एवे बिभीषणे करि' लंका-अधिपति ✽ चारियुगे थाकिवेक आमार सुख्याति
आमार बचने मित्र कर आगुसार ✽ बिभीषणे देह शीघ्र-लंका-अधिकार
हनूमान अंगद प्रभृति कपिवर ✽ सबे कर बिभीषणे लंकार ईश्वर १४
श्रीरामेर आज्ञा लंघिबे कोन जना ✽ बिभीषण राजा हवे पड़िल घोषणा

श्रीराम द्वारा विभीषण का लंका-राज्य में अभिषेक

हे मन, एक बार राम-राम कहकर पुकारो। देखो, इन तीनों लोकों में सीतानाथ के बिना तुमको तारने वाला कौन है ॥६१२॥

युद्ध से अवकाश पाकर कमललोचन राम लक्ष्मण के साथ जाकर बैठ गये। इन्द्र के मातलि ने आकर बिदा माँगी। मातलि से उन्होंने मधुर वचन में कहा, देवराज इन्द्र से मेरा निवेदन कहना, उनके शत्रु रावण का मैंने संहार कर डाला है। राम का नमन कर मातलि चला गया और राम के वाक्यों को जाकर इन्द्र से कहा ॥ ६१३ ॥

सुग्रीव को देखकर राम बड़े प्रसन्न हुए। हाथ फैला कर उससे गले मिले और कहने लगे जन्म-जन्मान्तर में तुम जैसा मित्र मुझे मिला। तुम्हे पा जाऊँ तो मैं पृथ्वी जीत सकता हूँ। तुम्हारी ही कृपा से मैं समुद्र पार कर सका, तुम्हारी ही कृपा से सीता का उद्धार कर सका। मुझको अभी एक ऋण चुकाना है। विभीषण को अभी तक मैंने लंका का अधिकार नहीं दिया है। अब विभीषण को लंका का अधिपति बनाऊँ। चारों युगों में मेरा सुयश बना रहेगा। हे मित्र, मेरे कहने पर तुम आगे बढ़कर विभीषण को जल्दी से लंका का अधिकार दे दो। हे हनुमान तथा अंगद आदि कपिवर! तुम लोग जाकर विभीषण को लंका का ईश्वर बनाओ ॥ ६१४॥

कौन है जो श्रीराम की आज्ञा का उल्लंघन कर सकता है। विभीषण

गन्धादि औषध दिल नाना तीर्थ-जल ※ लंका-मध्ये स्त्री-पुरुषे गाइल मंगल
नाना बिध धन-रत्न जेखाने आछिल ※ राक्षस-बानरे-सब वहिया आनिल
गायकेते गीत गाय, नटे करे नाट ※ शुभक्षणे बिभीषणे देन राज्यपाट
आपनि माथाय जल ढालेन लक्ष्मण ※ 'रामजय' शब्द करे जत कपिगण
नाना शब्दे बाद्य बाजे शुनिते सुन्दर ※ आनन्देते नृत्य करे सकल बानर
एक लक्ष दगड़, द्विलक्ष करताल ※ दुइलक्ष घण्टा बाजे, शुनिते बिशाल
भेउरि झाँझरि बाजे, तिन लक्ष काड़ा ※ चारि लक्ष जयढाक, छयलक्ष पड़ा
बाजिल चौरासी लक्ष शंख आर बीणा ※ तिन लक्ष तासा बाजे दमामार साना
ढेमचा खेमचा बाजे, तिन लक्ष ढोल ※ तिन लक्ष पखोयाज विस्तर मादोल
जयढाक रामकाड़ा बाजे जगझम्प ※ शुनिया वाद्येर शब्द त्रिभुवन कम्प
बाजिल राक्षसी-ढाक पंचाश हाजार ※ दुन्दुभि डमरु शिंगा संख्या करा भार
तूरी भेरी खञ्जनी खमक आर बाँशी ※ दगड़े रगड़ दिते लक्ष लक्ष काँसि
टिकारा टंकार आर चौतारा मोचंग ※ वाद्य शुनि बानरेर बेड़े गेल रंग
'रामजय' शब्द करे जत कपिगण ※ बिभीषणे अभिषेक कैला नारायण

राजा होगा, ऐसी घोषणा कर दी गई। विभिन्न तीर्थों का जल, गन्ध और औषधि लाए गये। लंका में नर-नारियों ने मंगल-गीत गाया। तरह-तरह के धन-रत्न जहाँ भी जो कुछ था राक्षस और वानर सब ढोकर ले आए। गायक गीत गाने लगे और नर्त्तक नृत्य करने लगे। शुभ घड़ी पर विभीषण को राजपाट सौंपा गया। लक्ष्मण स्वयं उसके सिर पर जल डालने लगे। सारे वानर 'राम जय' का शब्द करने लगे। विभिन्न प्रकार के शब्द करते हुए वाद्य बजने लगे और वानर आनन्द से नाचने लगे। जब एक लाख दगड़, दो लाख करताल और दो लाख घंटे बजने लगे तो प्रचंड शब्द होने लगा। भेरी और झांझर, तथा तीन लाख कड़े बजने लगे। चार लाख जयढाक और छह लाख पड़ा, चौरासी लाख शंख और बीणा बजने लगे। तीन लाख तासे नगाड़े के साथ बजने लगे। ढेमचा, खेमचा और तीन लाख ढोल बजने लगे। तीन लाख पखावज और पर्याप्त संख्या में मादल बजने लगे। जयढाक, रामकाड़ा और जगझम्प बजने लगे। इस प्रकार सभी वाद्यों की ध्वनि से तीनों लोकों में कँपकँपी होने लगी। पचास हजार राक्षसी ढाक बजाये गये, दुन्दुभि डमरू और तुरहियों की तो कोई संख्या ही नहीं। तुरही, भेरी, खंजड़ी, खमक और बाँसुरी बजीं। नगाड़े से ताल-लय मिलाते हुए लाख-लाख घड़ियाल बजाये जाने लगे। टिकारे की टंकार और चौतारा मोचंग का वादन सुनकर बन्दरों को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। जितने कपि थे सब 'राम जय' की ध्वनि करने लगे और नारायण ने विभीषण का अभिषेक किया। छत्र और दंड दिया और स्वर्ण-लंकापुरी का राज्य भी दिया। अभिषेक करने के

छत्रदण्ड दिला आर स्वर्ण-लंका-पुरी ❋ अभिषेक करि दिल राणी मन्दोदरी
बिभीषण राजा हैल, राज्यखण्ड सुखी ❋रहिल रामेर कीर्त्ति, बिभीषण साक्षी१५
पुनर्ब्बार श्रीराम कहिला बिभीषणे ❋ मन्दोदरी लागि किछु ना भाविह मने
मन्दोदरी दिब तोमाय मम अंगीकार ❋ राज-स्त्री राजाते लय, आछे व्यवहार
अतएव ना भाविओ मित्र बिभीषण ❋ राणी मन्दोदरी तोमा दिलाम एखन
लंकापुरे भूपति हइल बिभीषण ❋कृत्तिवास बिरचिल गीत-रामायण६१६

हनूमान कर्त्तृक सीता-समीपे रावण-बध-वार्त्ता-ज्ञापन

पात्रमित्र ल'ये राम बसिल देओ याने ❋ सीतारे आनिते पाठाइल हनूमाने
सीतारे आनिते जाय पवन-नन्दन ❋ हनूरे प्रणाम करे निशाचर-गण
सबे बले, आचम्बिते एल हनूमान ❋ ना जानि काहार एबे लइबे पराण
एइ कथा रक्षोगण भावे मने-मन ❋ हनूमान प्रवेशिल अशोकेर वन
सीतारे देखिया हनू नोङाइल माथा ❋ जोड़-हाते कहे बीर श्रीरामेर कथा
दुष्ट निशाचर दिल तोमारे ए ताप ❋ सबान्धवे पड़िल रावण महापाप
श्रीराम पाठाये दिला मोरे तव पाश ❋ समाचार कहिवारे मनेते उल्लास१७

बाद रानी मन्दोदरी को भी दिया। विभीषण राजा हो गया, सारा राज्य सुखी हो गया, राम की कीर्त्ति बनी रही और विभीषण उसका साक्षी बना रहा ॥ ६१५ ॥

फिर राम ने विभीषण से कहा, मन्दोदरी के लिए मन में कुछ सोच मत करो। यह मेरा निश्चय कि मैं तुमको मन्दोदरी दूँगा। राजा की स्त्री को राजा ही ग्रहण करता है, यही नियम है। इसलिए मित्र विभीषण, चिन्ता मत करो। अब मैं तुम्हारे हाथों में रानी मन्दोदरी को सौंपता हूँ। इस प्रकार विभीषण लंकापुरी का राजा हुआ। कृत्तिवास ने रामायण-गीत की रचना की ॥ ६१६ ॥

हनुमान द्वारा सीता के समक्ष रावण-वध की सूचना देना

पात्र-मित्र लेकर राम सभा में बैठे। सीता को लाने के लिए हनुमान को भेज दिया। पवननन्दन सीता को लेने चल पड़े। सारे निशाचर हनुमान को प्रणाम करने लगे। सभी लोग बोले, अचानक ही हनुमान आया, जाने किसके प्राण ले ले। सारे राक्षस यही बात मन ही मन सोचने लगे। हनुमान ने अशोकवन में प्रवेश किया। सीता को देखकर हनुमान ने सिर नवाया। हाथ जोड़ कर बीर ने श्रीराम की बात बताई। जिस दुष्ट निशाचर ने तुमको इतना कष्ट दिया, अपने सारे सम्बन्धियों के साथ वह महापापी रावण विनष्ट हो गया। श्रीराम ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। यह समाचार सुनाते हुए मेरे मन में उल्लास हो रहा है ॥ ६१७ ॥

हनूर निकटे शुनि एतेक काहिनी ※ आनन्द-सागरे भासे सीता-ठाकुराणी
हनूमान बले, माता, कि भाविछ मने ※ शुभ कथार उत्तर ना देहकि कारणे
सीता बले, जे बार्त्ता कहिले हनूमान ※ नाहि धन ताहार सदृश दिते दान
जद्यपि तोमारे करि राज्य-अधिकारी ※ तथापि तोमार धार शुधिवारे नारि
हनू बले, राज्य-धने नाहि प्रयोजन ※ राज्य-धन सब माता तव श्रीचरण
तबे यदि दान दिबे सीता-ठाकुराणी ※ एइ दान तव स्थाने मागि गो जननि
तोमार रक्षक आछे रावणेर चेड़ी ※ आमार साक्षाते तोमा उठाइत वाड़ि
करियाछे तोमार दुर्गति अपमान ※ ए सबार प्राण लव, मागि एइ दान
दन्त उपाड़िया चुल छिड़ि गोछे गोछे ※ आछाड़िया प्राण लव बड़ बड़ गाछे
समुद्रेर तीरे आछे बालि खरषाण ※ ताते मुख घषाड़िया लइब पराण
शुनिया हनूर वाक्य जत चेड़ीगण ※ भये सब चेड़ी धरे सीतार चरण
चेड़ीसब बले, शुन सीता-ठाकुराणी ※ हनूमान प्राण लय, राख गो आपनि १८
जानकी बलेन, तुमि विचारे पण्डित ※ जत दुःख पाइ आमि, कपाले लिखित
महाबीर हनू, तुमि बुद्धे बृहस्पति ※ स्त्री-बध करिया केन राखिबे अख्याति
जतदिन छिल चेड़ी रावण-अधीन ※ दियाछे आज्ञाय तार दुःख ततदिन

हनुमान से इतनी कथा सुनने के बाद सीताजी आनन्द-सागर में बहने लगीं। हनुमान ने कहा, हे माता तुम मन में क्या सोच रही हो। इस शुभ-समाचार का कोई उत्तर क्यों नहीं दे रही हो। सीता ने कहा, हे हनुमान! तुमने जो समाचार सुनाया, उसके समान दान देने को मेरे पास धन नहीं है। यदि तुमको राज्य का अधिकारी भी बना दे सकूँ फिर भी तुम्हारा ऋण चुका नहीं सकती। हनुमान ने कहा, मुझको न तो राज्य की आवश्यकता है और न धन की। मेरे लिए राज्य, धन आदि सभी कुछ तुम्हारे चरणकमल हैं। लेकिन हे सीतादेवी कुछ दान करना ही चाहती हो तो तुम से एक ही दान माँगना चाहता हूँ। माता! रावण की बाँदियाँ तुम्हारी पहरेदारी करती थीं, मेरे ही सामने ये तुम पर हाथ उठाती थीं। तुम्हारी बड़ी दुर्दशा और अपमान इन्होंने किया है। तुमसे केवल यही दान माँगता हूँ कि इनके प्राण लूँगा। इनके दाँत उखाड़ लूँ और बालों के गुच्छे नोंच लूँ और बड़े-बड़े पेड़ों पर पटक कर इनको मार डालूँ। समुद्रतट पर धार-दार बालू है उसी पर उनके मुँह रगड़कर इनके प्राण ले लूँ। हनुमान के वाक्य सुनकर जितनी भी चेरियाँ थीं डरकर सीता के पैर पकड़ने लगीं। चेरियाँ कहने लगीं, तुम ही हमारी रक्षा करो ॥ ६१८ ॥

जानकी ने कहा, हनुमान तुम पंडित हो, जितना भी मुझको क्लेश मिल रहा है यह सब मेरे भाग्य का लेखा है। हे महावीर हनुमान, तुम बुद्धि में बृहस्पति के समान हो, नारी का वध कर क्यों बदनामी मोल लोगे।

म'रेछे सवंशे दुष्ट रावण एखन ❋ चेड़ीगण करे एबे आमार सेवन
कहिबे आमार दुःख श्रीरामेर स्थाने ❋ प्रणाम करिब गिया रामेर चरणे ६१९
चलिलेन हनूमान सीतार बचने ❋ कहिला सकल कथा श्रीरामेर स्थाने
जे सीतार लागिया करिला महामार ❋ से सीतार हइयाछे अस्थि-चर्म्म सार
चेड़ीर ताड़ने सीतार कण्ठागत प्राण ❋ तबु राम-बिना ताँर मने नाहि आन
एत जदि कहिलेन पवन-नन्दन ❋ श्रीराम बलेन, सीता आने कोन जन ६२०

सीतार राम-सम्भाषणे यात्रा ओ सीतार प्रति मन्दोदरीर अभिशाप-प्रदान

एत भावि रघुनाथ विचारिया मने ❋ सीतारे आनिते पाठाइला बिभीषणे
चलिलेन बिभीषण रामेर बचने ❋ माथा नोङाइला गिया सीतार चरणे
बिभीषण बले, माता, निवेदि चरणे ❋ तोमारे जाइते हबे राम-दरशने
आनिला सुबर्ण-दोला रतने मण्डित ❋ सीतार सम्मुखे आनि कैला उपस्थित
बिभीषण बले, शुन जनक-नन्दिनी ❋ सुबर्ण-दोलाते आसि उठह आपनि
पर रत्न-आभरण, जेवा लय चिते ❋ राम-दरशने माता, चलह त्वरिते

जितने दिन तक ये चेरियाँ रावण के अधीन थीं उसी के आदेश से मुझको कलेश पहुँचाती रहीं। अब दुष्ट रावण अपने वंश के साथ मर चुका है, अब ये चेरियाँ मेरी सेवा करती हैं। मेरा दुःख श्रीराम से जाकर कहना। मैं राम के चरणों में जाकर प्रणाम करूँगी ।। ६१९ ।।

सीता के कहने पर हनुमान राम के पास गये और सारी बातें उनको बता दीं। जिस सीता के लिए तुमने महायुद्ध किया वह सीता अब हड्डियों का ढाँचा भर रह गई है। चेरियों की ताड़ना से सीता की जान साँसत में है, फिर भी तुम्हारे बिना, उनके मन में अन्य कोई नहीं है। जब पवननन्दन ने इतना कहा तो श्रीराम बोले, सीता को कौन ले आयेगा ।। ६२० ।।

राम-सम्भाषण के निमित्त सीता की यात्रा और सीता के प्रति
मन्दोदरी का शाप-प्रदान

इतना सोच कर रघुनाथ ने मन ही मन विचार किया और सीता को लाने के लिए विभीषण को भेज दिया। राम के कहने पर विभीषण चल पड़े। जाकर सीता के चरणों पर सिर झुकाया। विभीषण ने कहा, माँ तुम्हारे चरणों में निवेदन करता हूँ, तुमको राम के दर्शन के लिए चलना पड़ेगा। रत्नों से जड़ी हुई सुवर्ण की डोली लाकर सीता के सम्मुख रखी गई। विभीषण ने कहा, हे जनकनन्दिनी स्वयं आकर सुवर्ण-डोली पर बैठ जाओ। जो जी में आवे रत्न-आभूषण पहन लो, और हे माता, राम-दर्शन के लिए जल्दी चलो। रावण मर गया और तुम्हारे दुःख का अन्त हुआ। अब अच्छी

मरिल रावण, तव दुःख हैल शेष ※ राम-सम्भाषणे चल करिया सुबेश
स्नान करि पर माता, बिचित्र बसने ※ सोनार दोलाय चल राम-सम्भाषणे
सीता बले, किबा स्नान, किबा मोर बेश ※ अशोकेर बने दुःख भुञ्जिनु अशेष
बिभीषण बले, कथा कहिले प्रमाण ※ केमने ए बेशे जाबे आमा-बिद्यमान २१
बिभीषण-परिवार सरमा-सुन्दरी ※ स्नान द्रव्य ल'ये तथा एलो त्वरा करि
सिंहासने बसाइल सीता चन्द्रमुखी ※ केह तैल देय गाय, केह आमलकी
पिठालि माखाये केह अंग-मलि तुले ※ रत्नेर कलसे केह शिरे जल ढाले
नेतेर बसने केह मुछाइछे वारि ※ यतने पराय बस्त्र यतेक सुन्दरी
जानकीर रूपे तथा पड़िछे बिजुलि ※ सीतारे परान केह कनक-पाशुलि
रतने जड़ित बान्धे विचित्र कवरी ※ नाना चित्र लेखा ताहे आछे सारि-सारि
नयने अंजन दिल अति सुशोभित ※ नाना-अलंकार विश्वकर्म्मार निर्म्मित
अंगराग सिंदूर दिलेक अंगे भाले ※ मरकत-निर्म्मित बिचित्र हार गले
बिचित्र-निर्म्माण दिल शंख दुइ बाइ ※ पूर्ण शशधर जेन देखिबारे पाइ
लुकाते चाहेन रूप, ना हय गोपन ※ जानकीर रूपे आलो करे त्रिभुवन २२
रत्नमय चतुर्द्दोल योगाइल आनि ※ सानन्दे बसिला ताहे जनक-नन्दिनी

वेश-भूषा में राम से सम्भाषण करने चलो। हे माता, स्नान कर विचित्र वस्त्र पहन लो और सोने की डोली पर बैठकर राम-सम्भाषण करने चल पड़ो। सीता ने कहा, मेरा स्नान करना भी क्या और वेश-भूषा भी क्या! अशोकवन में मैंने अशेष दुःख झेला है। विभीषण ने कहा, यह बात तो तुमने ठीक कही। इस वेश में मेरे समक्ष कैसे जा सकती हो ॥ ६२१ ॥

तब विभीषण की पत्नी सुन्दरी सरमा झटपट स्नान के सामान लेकर आई। चन्द्रमुखी सीता को सिंहासन पर बिठा दिया। कोई वदन पर तेल मलने लगी तो कोई आँवला। कोई उबटन लगाकर अंग का मैल निकालने लगी। कोई रत्नजड़ित घड़े से सिर पर पानी उँडेलने लगी, तो कोई नेत-वस्त्र से जल पोंछने लगी। सारी सुन्दरियों ने मिलकर वस्त्र पहनाये। जानकी का रूप यों खिल उठा, मानों बिजली चमकी हो। कोई सीता को सोने की पायल पहनाने लगी। कोई रत्नों से जड़ा हुआ जूड़ा बाँधने लगी, जिसमें कि विभिन्न चित्र अंकित किये गये थे। नयनों में सुशोभन अंजन लगाया गया। विश्वकर्मा द्वारा बनाये हुए अनेक अलंकार पहनाये गये। अंगों पर अंगराग और माथे पर सिन्दुर लगाया गया। पन्ने का बना विचित्र हार गले में पहनाया गया। दो शंख निर्मित चूड़ियाँ पहनायीं गयीं। मानों पूर्णचन्द्र दिखाई पड़ने लगा। सीता ने अपना रूप छिपाना चाहा किन्तु वह छिप न सका। जानकी के रूप से त्रिभुवन प्रकाशित होने लगा ॥ ६२२ ॥

घेरिलेक चतुर्द्दोल नेतेर वसने ❋ यात्रा कैला सीतादेवी राम-सम्भाषणे
जतने पातिल पथे नेतेर पाछड़ा ❋ राक्षसेते देय पथे चन्दनेर छड़ा
मल्लिका मालती पारिजात राशि-राशि ❋ पथेते बिस्तार कैल राक्षसेरा आसि
राक्षस-बानरे आसि बेड़े चारि भिते ❋ बिभीषण अग्रेते सुबर्ण-वेत हाते
जतेक बानर-सेना चारिभिते घेरे ❋ परस्पर द्वन्द्व सीता देखिबार तरे२३
देखिते ना पाय केह, च'क्षे वहे नीर ❋ लंकार जतेक नारी हइल बाहिर
बाल-बृद्ध-युवती लंकाय जत छिल ❋ सीतारे देखिते सबे धाइया चलिल
ना संबरे अन्तर, धाइया जाय एड़े ❋ बृद्ध-नारी द्रुत जेते उछटिया पड़े
शोकाब्धिते मग्न जत राक्षसेर नारी ❋ वेगे धाय द्रुतगति लज्जा परिहरि२४
मन्दोदरी प्रणाम करिल हेनकाले ❋ धूलाय धूसर अंगे, आलुलित चूले
मन्दोदरी बले, शुन जनक-नन्दिनी ❋ तोमा लागि हइलाम आमि अनाथिनी
पुरी-सह रावणे नाशिया कोपगुने ❋ आनन्दे च'लेछ तुमि राम-सम्भाषणे
ए आनन्दे निरानन्द हबे अकस्मात् ❋ बिषदृष्टे तोमारे देखिबे रघुनाथ
जदि सती हइ, थाके पति-प्रति मन ❋ कखनो आमार शाप ना हबे खण्डन

रत्नमय चौदोल लाया गया और उसपर जनकनन्दिनी सानन्द बैठ गई। डोली को नेतवस्त्र से घेर दिया गया। सीतादेवी राम से मिलने के लिए चल पड़ीं यत्न से पथ पर सूक्ष्म रेशमी वस्त्र निर्मित चद्दरा बिछा दिया गया। राक्षस पथ पर चन्दन छिड़कने लगे। पथ पर राक्षसों ने मल्लिका, मालती और पारिजात के फूल बिछा दिये। राक्षस और बानर चारों ओर से घेर कर चले। सामने बिभीषण सोने का बेंत हाथ में लिये चले। बानर सेना ने चारों ओर से घेर लिया। सीता को देखने लिए उनमें होड़ लग गई ॥ ६२३ ॥

जिनकी आँखों से आँसू ढरक रहे हैं, इस प्रकार सीता को देखने के लिए लंका की सारी नारियाँ निकल आईं। बच्चे, बूढ़े और युवती जितने भी लंका में थे सीता को देखने के लिए दौड़ पड़े। दौड़ कर जाने में वदन के कपड़े अस्त-व्यस्त हो जाते थे। वृद्धा नारी जल्दी चलने में ठोकर खा जाती थीं। राक्षस-नारियाँ शोक सागर में निमग्न हो लाज छोड़कर तेज़ गति से चलने लगीं ॥ ६२४ ॥

ऐसे ही समय मन्दोदरी ने आकर प्रणाम किया। उसका अंग धूल से धूसरित था और बाल बिखरे हुए थे। मन्दोदरी ने कहा, हे जनकनन्दिनी, तुम्हारे ही कारण मैं अनाथिनी बनी। सारी नगरी के साथ रावण को क्रोध की आग में जलाकर तुम आनन्द से राम से संभाषण करने जा रही हो। यह आनन्द तुम्हारा अकस्मात् ही निरानन्द में बदल जायगा। रघुनाथ तुमको विषदृष्टि से देखेंगे। अगर मैं सती हूँ और पति के प्रति ही मेरा मन रहा

एत बलि अन्तःपुरे गेल मन्दोदरी ❋ सीता ल'ये बिभीषण गेल त्वरा करि २५
किछुदूर थाकिते ना जाय चतुर्द्दोले ❋ सीता देखिबारे बेड़े बानर-सकले
कनक-रचित ताँर श्रवण-कुण्डल ❋ लेगेछे ताहार छाया गगन-मण्डल
नाना बनपुष्प-माला-गन्धे अमोदित ❋ स्कन्धे करि आने दोला कनक-रचित
चलिलेन सीतादेवी राम-सम्भाषणे ❋ लंकार रमणी कान्दे सीतार गमने
राक्षस-रमणी-अंग दुःखे सदा दहे ❋ रोदन करिया सबे जानकीरे कहे
सुखे चलियाछ तुमि पति-सम्भाषणे ❋ एककाले बिधवा हइनु सर्व्बजने
अशुभ-नयने राम तोमारे देखिबे ❋ आमादेर वाक्य कभु खण्डन ना हबे
कान्दिते कान्दिते सबे निजघरे नड़े ❋ राम-सम्भाषणे सीता चतुर्द्दोले चड़े २६
बाहिर हइल दोला लंकापुर-गड़े ❋ नेतेरे वसने दोला ल'येछेन बेड़े
दुइ ठाटे हुड़ाहुड़ि हैल ठेलाठेलि ❋ बहिते ना पारे बाट जत चतुर्द्दोली
राजा हये बिभीषण भूमे बहे बाट ❋ कटकेर चाप देखि हाते निल छाट
छाट हाते लइल बानर कोटि-कोटि ❋ चारिदिके पड़े छाट, लागे चटचटि
फुटिया गायेर मांस रक्त पड़े धारे ❋ तबु देखिबारे जाय आपना पासरे

हो तो मेरा यह शाप खंडित नहीं हो सकता। इतना कह कर मन्दोदरी अन्तःपुर चली गई। विभीषण तुरन्त सीता को लेकर चला गया॥ ६२५॥

जब कुछ दूर रह गया तब चतुर्दोल आगे न बढ़ सका। सीता को देखने के लिए, सारे वानर घेर कर खड़े हो गये। उनके कानों के कुंडल सोने के बने हैं जिसकी छाया गगन-मंडल में जा पड़ी है। विभिन्न वन-फूलों की माला की सुगन्ध से महमहाती हुई स्वर्णनिर्मित डोली कन्धे पर लाद कर ले आई गई। सीतादेवी राम-सम्भाषण के लिए चलीं। सीता के चलने पर लंका की रमणियाँ रोने लगीं। राक्षस-रमणियों के शरीर दुख से सदा दहकते रहते हैं। वे सब रोती हुई जानकी से बोलीं, बड़े सुख से तुम पति-सम्भाषण करने जा रही हो। हम सभी एक ही साथ विधवा हो गई हैं। राम तुमको अशुभ नयनों से देखेंगे, हम लोगों के वाक्य कभी झूठे नहीं पड़ सकते! इस प्रकार रोती हुई सभी नारियाँ अपने-अपने घरों में चली गईं। राम-सम्भाषण के लिए सीता फिर चतुर्दोल पर बैठ गईं॥ ६२६॥

सीता की डोली लंकापुरी के गढ़ से बाहर निकल आई। नेत के वस्त्र से डोली घिरी हुई है। दोनों सेनाओं में ठेलमठेल और धक्कम-धक्का शुरू हो गया। वाहकों से डोली ढोना मुश्किल हो गया। राजा होकर भी विभीषण डोली का डंडा थामे हुए हैं। सेना का दबाव देखकर उन्होंने हाथ में छड़ी ले ली। छड़ी हाथ में लेकर वे कोटि-कोटि वानरों पर चटा-चट लगाने लगे। इससे वानरों के बदन का माँस कट कर खून निकलने लगा, फिर भी वे अपने को भुला कर सब देखने के लिए लपकते रहे।

परिश्रमे बिभीषणेर घन वहे श्वास ❋ बहुकष्टे गेल दोला श्रीरामेर पाश२७
वसिया आछेन राम गुणेर सागर ❋ दक्षिणे वसिया मित्र सुग्रीव वानर
वामभिते बसियाछे अनुज लक्ष्मण ❋ निकटेते जाम्बवान् जोड़हस्ते रन
पथ बाहि जाइते कटके ठेलाठेलि ❋ छाट मारि विभीषण मध्ये करे गलि
कटकेर दुःखे राम कोप कैला मने ❋ कोपे राम कहिलेन राजा बिभीषणे
राजार गृहिणी हय प्रजार जननी ❋ माताके देखिबे पुत्र, इहाते कि हानि
केन वा घेरेछ दोला, आमि त' ना जानि❋ केन वा करिछ तुमि एत हानाहानि
घुचाओ दोलार बस्त्र, छाड़ छाड़ छाट❋ देखुक सकले सीता, घुचाओ झंझाट
जारे उद्धारिणु, तारे देखुक् सर्व्वलोके ❋ सती जे हइबे, से राखिबे आपनाके२८
बुझिलेन हनूमान श्रीरामेर मन ❋ सीतार परीक्षा-हेतु ह'येछे मनन
देखिया रामेर क्रोध भीत बिभीषण ❋ परीक्षा करेन किंवा देन बिसर्ज्जन
घुचान दोलार बस्त्र राजा बिभीषण ❋ करिलेन जानकी भूमिते पदार्पण२९
दोला छाड़ि जानकी नामेन भूमितले ❋ बिद्युतेर छटा जेन अबनी-मण्डले
सीमन्ते सिंदूर-चिह्न, रंग बड़ लागे ❋ चन्दन-तिलक शोभे कपालेर भागे

परिश्रम से विभीषण की साँस तेज चलने लगी। इस प्रकार बड़े कष्ट से डोली श्रीराम के पास पहुँची ॥ ६२७ ॥

गुणों के सागर राम बैठे हुए हैं। उनके दाहिनी ओर मित्र वानर सुग्रीव बैठा है। बाईं तरफ छोटे भाई लक्ष्मण बैठे हैं। निकट ही जाम्बवान हाथ जोड़े खड़ा है। पथ पर चलते समय सेना में ठेलमठेल होने लगा। छड़ी मार कर विभीषण बीच में रास्ता बनाता रहा। सेना के इस कष्ट पर राम के मन में क्रोध आया। राम ने क्रोधित होकर विभीषण से कहा, राजा की गृहिणी प्रजा की जननी के समान होती है, पुत्र माँ को देखेंगे इसमें कौन सी हानि है। मुझे नहीं मालूम कि डोली क्यों घेर रखी है और तुम इतनी मार-पीट भी क्यों कर रहे हो। डोली पर से कपड़ा हटा दो और छड़ी फेंक दो। सभी लोग सीता को देख लें और झंझट खत्म हो जाय। जिसका उद्धार किया उसको सभी लोग देखें। जो सती होगी वह अपनी रक्षा कर लेगी ॥ ६२८ ॥

हनुमान ने समझ लिया कि श्रीराम का मन सीता की परीक्षा करने को हो रहा है। राम का क्रोध देखकर विभीषण भयभीत हुए कि वे परीक्षा करते हैं या विसर्जन। राजा विभीषण ने डोली का वस्त्र हटाया। जानकी ने भूमि पर पैर रखा ॥ ६२९ ॥

जब डोली छोड़कर जानकी धरती पर उतर आईं तो ऐसा प्रतीत हुआ मानों भूमंडल पर बिजली की छटा फैल गई हो। उनकी माँग में सिन्दूर की रेखा देखने में कितनी सुन्दर लगती है। माथे पर चन्दन का टीका शोभा दे रहा है।

देखिते सुन्दर अति सीतार अधर ❋ पक्व-बिम्बफल जिनि अति शोभाकर
नाना रत्न परिधाने, रूपे नाहि सीमा ❋ चराचरे नाहि देखि सीतार प्रतिमा
पूर्णिमार चन्द्र जेन उदित गगने ❋ मूर्च्छित हइला सबे सीता-दरशने
जानकीरे देखे जेइ, से हय मूर्च्छित ❋ अन्येर कि कब कथा, देवता बिस्मित
केह भावे, आइलेन आपनि शंकरी ❋ श्रीरामेरे देखिते कैलास परिहरि
अन्ये बले, त्यजिया बिष्णुर बक्ष:स्थल ❋ लक्ष्मी अवतीर्णा बुझि देखिते भूतल
केह बले, आपनि सावित्री मूर्त्तिमती ❋ केह बले, बशिष्ठ-गृहिणी अरुन्धती
देखियाछे सीतारे ये, से-इ सीता बले ❋ अन्यलोके कत तर्क करे नानास्थले
पाद-स्पर्शे पवित्र करेन बसुन्धरा ❋ बसुन्धरा-सुता सीता कृश-कलेवरा
उपस्थित हइलेन सभा-बिद्यमान ❋ हेरिया हरिषे सबे हय हतज्ञान
रामेर चरणे सीता करे नमस्कार ❋ करिलेन लक्ष्मणे वात्सल्य ब्यवहार
करपुटे सीता रहिलेन सभास्थाने ❋ लक्ष्मण प्रणाम करे ताँहार चरणे६३०

सीतार अग्नि-परीक्षा

श्रीराम ब्याकुल अति हरिष-विषादे ❋ सती-स्त्री छाड़िते चान लोक-अपवादे
कारे किछु ना बलेन जानकी सभाय ❋ मने-मने भाविछेन, कि हबे उपाय६३१

सीता के अधर देखने में कितने सुन्दर हैं मानों पके हुए बिम्बफल हों। विभिन्न रत्न-आभूषण पहने सीता के रूप की कोई सीमा नहीं। चराचर में सीता जैसी कोई प्रतिमा नहीं दिखाई पड़ती। गगन में मानों पूर्णचन्द्र का उदय हुआ हो। सीता का दर्शन करते ही सब मूर्च्छित हो गये। दूसरों का क्या कहना, देवता भी विस्मित हुए। कोई सोचने लगा कि स्वयं शंकरी राम को देखने के लिए कैलास से चली आई है। दूसरों ने कहा, विष्णु का वक्षस्थल त्याग कर स्वयं लक्ष्मीदेवी भूतल पर अवतीर्ण हुई हैं। कोई कहता, यह मूर्त्तिमती सावित्री है, तो कोई कहता कि यह वशिष्ठ की गृहिणी अरुन्धती है। जिन्होंने सीता को देखा है, केवल वही लोग कहने लगे कि सीता है, बाकी लोग जगह-जगह पर तर्क करने लग गये। पैरों के स्पर्श से वसुन्धरा को पवित्र करती हुई वसुन्धरा की बेटी कृश-काया सीता सभा के सम्मुख आ पहुँची। उसकी कान्ति देखकर सभा में सभी अपने होशहवास गँवा बैठे! राम के चरणों में सीता ने नमस्कार किया। लक्ष्मण से वात्सल्य का आचरण किया। हाथों पर हाथ रखे सीता सभा-स्थल के बीच खड़ी रही। लक्ष्मण ने सीता के चरणों में प्रणाम किया ॥ ६३० ॥

सीती की अग्नि-परीक्षा

हर्ष और विषाद से श्रीराम बड़े व्याकुल हो गये। लोकनिन्दा के हेतु

बहिछे चक्षुर जल, श्रीराम कातर ※ सीतारे बलेन किछु निष्ठुर उत्तर
आमार ना छिल केह सीता, तव पाश ※ व्यवहार तोमार ना जानि दशमास
सूर्य्यबंशे जन्म, दशरथेर नन्दन ※ तोमा-हेन नारिते नाहिक प्रयोजन
तोमारे लइते पुनः शंका हय मने ※ यथा-तथा जाओ तुमि, थाक अन्यस्थाने
एइ देख सुग्रीव बानर-अधिपति ※ इहार निकटे थाक, यदि लय मति
लंकार भूपति एइ देख बिभीषण ※ इहार निकटे थाक, यदि लय मन
भरत शत्रुघ्न मम देशे दुइ भाइ ※ इच्छा हय, थाक गिया से-सबार ठाँइ
यथा-तथा जाह तुमि आपनार सुखे ※ केन कान्द दाँड़ाइया आमार सम्मुखे
थाकिते राक्षस-घरे, ना ह'तो उद्धार ※ त्रिभुवने अपयश गाहित आमार
घुचिल से अपयश तोमार उद्धारे ※ एखन मेलानि दिनु सभार भितरे३२
यतेक बलेन राम ताँरे रुक्षवाणी ※ रोदन करेन तत श्रीराम-घरणी
केह किछु नाहि बले, स्तब्ध सर्ब्बजन ※ धीरे धीरे कन सीता मुछिया नयन
जनक-राजार बंशे आमार उत्पत्ति ※ दशरथ श्वसुर जे, तुमि-हेन पति
भालमते जान प्रभु, आमार प्रकृति ※ जानिया शुनिया केन करिछ दुर्गति

वे सीता का त्याग करना चाहते थे। जानकी ने सभा में किसी से कुछ भी नहीं कहा। मन ही मन वह सोचती रही कि क्या उपाय है॥ ६३१॥

आँखों से आँसू निकल रहे हैं और श्रीराम बड़े दुखी हैं। सीता से उन्होंने कुछ कठोर बातें कीं। सीता! मेरा कोई भी व्यक्ति तुम्हारे पास नहीं था, दस महीने से तुम्हारे आचरण के बारे में कुछ नहीं जानता हूँ। मेरा जन्म सूर्यवंश में हुआ है, मैं दशरथ का पुत्र हूँ, तुम जैसी नारी की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। तुमको फिर से ग्रहण करने में मेरे मन में शंका हो रही है। जहाँ भी तुम्हारा जी चाहे चली जाओ, और कहीं जाकर रहो। यह देखो वानरों का राजा सुग्रीव है, अगर मन चाहे तो इसके साथ रह सकती हो। यह विभीषण लंका का राजा है, अगर चाहो तो इसके साथ रह सकती हो। देश में मेरे दो भाई भरत और शत्रुघ्न हैं, जी चाहे तो उनके साथ जाकर रहो। जहाँ भी जी चाहे वहाँ तुम सुख से चली जाओ, मेरे सामने खड़ी होकर रो क्यों रही हो। अगर तुम राक्षस के घर में पड़ी रहतीं और तुम्हारा उद्धार न हो सकता तो तीनों लोकों में मेरी बदनामी होती! तुम्हारे उद्धार से मेरा वह अपयश दूर हुआ। अब सभा के बीच तुमको त्याग रहा हूँ॥ ६३२॥

राम जितना ही उससे रूखी-रूखी बातें करते जाते उतना ही राम-महिषी रोती जाती थीं। कोई कुछ भी नहीं कह पाया, सभी स्तब्ध बने रहे। धीरे-धीरे आँखें पोंछ कर सीता ने कहा, जनक राजा के वंश में मेरा जन्म है, दशरथ मेरा श्वसुर है और तुम मेरे पति हो। हे प्रभु, तुम भली भाँति मेरा

बाल्यकाले खेलिताम बालक मिशाले ❋ स्पर्श नाहि करिताम पुरुष-छाओयाले
सबे मात्र छुँइयाछे पापिष्ठ रावण ❋ इतर नारीर मत भाव कि कारण
हनूके आमार काछे पाठाले जखन ❋ आमारे बर्ज्जन केन ना कैले तखन
करिताम विषपान अनल-प्रवेश ❋ लंकार भितरे एत ना पेताम क्लेश
कटक पाइल दुःख सागर-बन्धने ❋ आपनि विस्तर दुःख पाइला से रणे
एतेक करिया कर आमारे वर्ज्जन ❋ तुमि-हेन स्वामी वर्ज्ज,वृथा ए जीवन
निमिकुले जन्मिया पड़िनु सूर्य्यकुले ❋ आमार कि एइ छिल लिखन कपाले
वेश्या नटी नहि आमि, परे कर दान ❋ सभा विद्यमाने कर एत अपमान
कृपा करि लक्ष्मण, ए करह प्रसाद ❋ अग्निकुण्ड साजाह, घुचुक् अपवाद ३३
लक्ष्मण रामेर स्थाने चाहेन सम्मति ❋ श्रीराम बलेन, कुण्ड साजाह सम्प्रति
सीतार जीवने भाइ, किछु नाहि काज ❋ अग्निते पुडुक् सीता, दूरे जाक् लाज ३४
लक्ष्मण रामेर वाक्ये साजाइल कुण्ड ❋ वानर-कटक बहु आनिल श्रीखण्ड
काष्ठ पुड़ि उठिल ज्वलन्त अग्निराशि ❋ प्रवेश करिते जान श्रीराम-महिषी
सातबार रामेर चरणे प्रदक्षिण ❋ प्रदक्षिण अग्निके करेन बार तिन

स्वभाव जानते हो। जानबूझ कर मेरी यह दुर्दशा तुम क्यों कर रहे हो। जब मैं बचपन में बालकों के साथ खेला करती थी तब भी पुरुष-बच्चों का स्पर्श नहीं करती थी। केवल पापी रावण ने मेरा स्पर्श किया है, कैसे तुमने मुझको नीच नारी जैसी समझ लिया! हनुमान को जिस समय तुमने मेरे पास भेजा था उसी समय तुमने मेरा वर्जन क्यों नहीं कर दिया। या तो मैं जहर खा लेती या अग्नि में प्रवेश कर जाती, लंका में इतना क्लेश न झेलती रहती। सारी सेना को समुद्र बाँधने में अपार क्लेश मिला, तुमको भी युद्ध में काफ़ी कष्ट मिला। इतने पर भी मेरा वर्जन कर रहे हो। तुम जैसे पति का परित्याग कर यह जीवन व्यर्थ है। निमिकुल में जन्म लेकर सूर्यकुल में आई। क्या यही मेरे भाग्य में लिखा था। मैं कोई वेश्या या नटी नहीं हूँ जो दूसरों को दान दिये दे रहे हो और सभा के सम्मुख मेरा इतना अपमान कर रहे हो। हे लक्ष्मण, कृपा कर मेरे लिए कष्ट करो। अग्निकुंड सजाओ, मेरा अपयश दूर हो॥ ६३३ ॥

लक्ष्मण ने सम्मति के लिए राम की ओर देखा। श्रीराम ने कहा, अब अग्निकुंड सजाओ। सीता के जीवन से अब कोई काम नहीं, सीता को आग में जल जाने दो, लज्जा दूर हो जाय॥ ६३४ ॥

राम के कहने पर लक्ष्मण ने अग्निकुंड सजाया। वानर सेना बहुत सारी चन्दन की लकड़ी ले आई। लकड़ी जलने पर आग लपलपाने लगी। श्रीराम-महिषी उसमें प्रवेश करने चलीं। सात बार उन्होंने राम के चरणों की प्रदक्षिणा की। अग्नि की उन्होंने तीन बार प्रदक्षिणा की। अग्नि पर

कनक-अंजलि दिया अग्निर उपरे ※ जोड़हाते जानकी बलेन धीरे-धीरे
शुन देव बैश्वानर, तुमि सर्ब्ब-आगे ※ पाप-पुण्य लोकेर जानह युगे-युगे
कायमनो वाक्ये जदि हइ आमि सती ※ तबे अग्नि, तव ठाँइ पाव अव्याहति
शिरे हात दिया कान्दे सबे सविशेष ※ सीता-सती अग्नि मध्ये करेन प्रवेश ३५
अग्निते प्रवेशमात्र रामेर महिषी ※ ढालिया दिलेक ताहे घृतेर कलसी
घृत पेये अनल अधिक उठे ज्व'ले ※ कुण्डेर भितरे राम सीतारे नेहाले
कुण्डमध्ये चाहि राम सीतारे ना देखि ※ झरिते लागिल ताँर दु'टि पद्म-आँखि
देखेन संसार शून्य, जेमन पागल ※ भूमे गड़ागड़ि जान हइया विकल
कि करि लक्ष्मण भाइ, सीतार कि हइल ※ सागर तरिया नौका तीरेते डुबिल
सीतार बिहने मोर सकलि असार ※ अयोध्याय छत्र-दण्ड ना धरिब आर
अग्नि हैते उठ सीता जनक-कुमारि ※ तोमार बिहने प्राण धरिते ना पारि
तोमार मरणे आमि पाइ बड़ दुःख ※ अग्नि हैते उठ प्रिये, देखि चाँदमुख
चतुर्द्दश-वर्ष भ्रमिलाम नानादेशे ※ सब दुःख घुचित, थाकिते जदि पाशे
लंकार रावण-राजा दशमुण्डधर ※ कुड़ि हाते जुझे जेन यमेर सोसर
ताहाके मारिया तोमा करिनु उद्धार ※ अग्निते पुड़िया सीता कैला छारखार ३६

कनक-अंजली देकर जानकी ने हाथ जोड़ कर धीरे-धीरे कहा, हे देव बैश्वानर (अग्नि), तुम युग-युग से लोगों के पाप-पुण्य को सबसे पहले जान लेते हो। मैं यदि मन, वचन और कर्म से सती हूँ तो तुमसे मुझे मुक्ति मिल जायगी। सिर पर हाथ रख कर सभी लोग रोने लगे और सती सीता आग में प्रवेश कर गईं ॥ ६३५ ॥

राम की महिषी के आग में प्रवेश करते ही उसमें घड़ाभर घी डाल दिया गया। घी पाकर आग जोरों से धधक उठी। राम ने कुंड के भीतर सीता की ओर देखा। कुंड में सीता को न देखकर राम के कमल-नयनों से आँसू झरने लगे। पागल-सरीखा वे संसार को सूना देखने लगे और बेकल होकर जमीन पर लोटने लग गये, और कहने लगे लक्ष्मण भाई, अब मैं क्या करूँ, सीता को क्या हो गया। सागर पार करने के बाद नाव किनारे आकर डूब गई। सीता के बिना मेरे लिए सभी कुछ निस्सार है। फिर मैं अयोध्या में छत्र-दंड धारण नहीं करूँगा। जनककुमारी सीता तुम अग्नि से निकल आओ, तुम्हारे बिना मैं प्राण नहीं रख सकता। तुम्हारी मृत्यु से मुझे बड़ा दुख मिलेगा। आग से निकल आओ, मैं तुम्हारा चाँद सा मुखड़ा देखूँ। चौदह वर्ष मैं देश-देश में भटकता रहा, सारा दुख मेरा दूर हो जाता यदि तुम मेरे पास होतीं। दस मुंडों वाला लंका का नरेश रावण यमराज के समान अपने बीस हाथों से जूझता रहा। हे सीता, उसको मार कर मैंने तुम्हारा उद्धार किया। हाय सीता, आग में जलकर तुम राख हो गईं ॥ ६३६ ॥

रामेर क्रन्दने कान्दे सर्ब्ब देवगण ※ कान्दिछे वरुणदेव शमन पवन
जत लोकपाल कान्दे, देव-पुरन्दर ※ जलेर भितरे थाकि कान्देन सागर
नल नील कान्दे आर सुग्रीव बानर ※ जाम्बवान् सुषेण ओ बालिर-कोङर
हनूमान बले, केन काँद हे लक्ष्मण ※ आमि जानि, जानकीर नाहिक मरण
श्रीरामेरे डाकिया बलेन देवगण ※ ना कान्द, ना कान्द, सीता पाइबे एखन
कान्दिते कान्दिते राम छाड़ेन निश्वास ※सीतार परीक्षा-गीत गान कृत्तिवास ६३७

श्रीरामेर सीता-ग्रहण

कान्दिया श्रीरामचन्द्र हन अचेतन ※ धाइया आइल ब्रह्मा-आदि देवगण
कुबेर वरुण यम आइल पुरन्दर ※ जतेक देवता, सब आइल सत्वर
हस्त तुलि कन ब्रह्मा श्रीरामेरे डाकि ※कार बाक्ये अग्निमध्ये राखिला जानकी
सीतादेबी ना मरेन अग्निते पुड़िया ※एखनि पाइबा सीता, कान्द कि लागिया
देवेर ठाकुर तुमि, संसारेर सार ※ सामान्य मनुष्य-सम कर ब्यवहार
तोमार गायेर लोमावली देवगण ※ सीतादेबी लक्ष्मी, तुमि स्वयं नारायण
श्रीराम बलेन, मम मानुषेते जन्म ※ मानुष हइया करि मानुषेर कर्म्म ६३८

राम के रुदन से सारे देवता रोने लगे। वरुण, पवन, शमन (यम), सभी रोने लगे। लोकपाल और देव पुरन्दर रोने लगे। पानी के भीतर रहने वाला सागर रोने लगा। नल, नील और सुग्रीव जैसे वानर रोने लगे। जाम्बवान, सुषेण और बालि-पुत्र अंगद रोने लगे। हनुमान ने कहा, लक्ष्मण, तुम क्यों रो रहे हो, मैं जानता हूँ कि जानकी की मृत्यु नहीं होगी। श्रीराम को पुकार कर देवता कहने लगे, मत रोओ मत रोओ, अभी तुमको सीता मिली जाती है। तब रोते-रोते राम ने दीर्घश्वास ली। इस प्रकार कृत्तिवास ने सीता-परीक्षा का गीत गाया ॥ ६३७ ॥

श्रीराम का सीता-ग्रहण

रोते-रोते श्रीरामचन्द्र मूर्च्छित हो गये। ब्रह्मा आदि सारे देवता-भागते हुए आए। कुबेर, वरुण, यम और पुरन्दर आ गये, सारे देवता बहुत शीघ्र आ पहुँचे। हाथ उठाकर ब्रह्मा ने श्रीराम को पुकार कर कहा, किसके कहने पर तुमने जानकी को आग में रखा। आग में जलकर सीतादेवी नहीं मर सकती हैं। अभी तुमको सीता मिल जायगी, रोते किस लिए हो। तुम देवताओं के प्रभु हो और संसार के सार हो, तुम तुच्छ मनुष्य जैसा आचरण कर रहे हो। तुम्हारे शरीर के रोएँ ही देवगण हैं, सीतादेवी लक्ष्मी हैं, और तुम स्वयं नारायण हो। श्रीराम ने कहा, मेरा जन्म मनुष्य से हुआ है इसलिए मनुष्य होकर मनुष्य जैसा काम कर रहा हूँ ॥ ६३८ ॥

बिरिञ्चि बलेन,राम, वलि सारोद्धार ※ तव अवतारे प्रभु कौतुक अपार
मत्स्य-अवतारे कैला वेदेर उद्धार ※ कूर्म्म-अवतारे तुमि स्थापिला संसार
अवतार-तृतीये वराह-रूप धरि ※ धरारे धरिले तुमि दशन-उपरि
हिरण्यकशिपु-नामे दैत्य महाबल ※ स्वर्ग आदि त्रिभुवन जिनिल सकल
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल ताहार भये काँपे ※ तारे संहारिला तुमि नरसिंह-रूपे
धरिया वामन-वेष पञ्चमावतारे ※ बलिके छलिया द्वारी हैला तार द्वारे
षष्ठेते परशुराम हैला भृगुपति ※ तिन सप्तवार निःक्षत्रिया कैला क्षिति
सप्तमेते राम-रूप धरि नारायण ※ बधिया राक्षसे रक्षा कैला त्रिभुवन
हलधर-रूपे राम, हल धरि हाते ※ दलिला असुरगण ताहार आघाते
जत जत अवतार अंशरूप धरि ※ राम-अवतारे तुमि आपनि श्रीहरि
आपनि श्रीराम, तुमि पूर्ण अवतार ※ सबंशे रावणे तुमि करिला संहार
जत जत क्षत्रिय पालिल भूमण्डल ※ सवार अधिक राम, तुमि धर बल
ना मरित दशानन अन्य कारो बाणे ※ बैकुण्ठ छाड़िला राम, सेइ से कारणे
तुमि ब्रह्मा, तुमि शिब, तुमि नारायण ※ सृष्टि-स्थिति प्रलयेर तुमिइ कारण
जेइजन शुने प्रभु, तव अवतार ※ इह-पर-लोके तार हइबे उद्धार

ब्रह्मा ने कहा, राम, तुम्हारे अवतार में अत्यधिक कौतुक का निर्वाह हुआ है। मत्स्य-अवतार में तुमने वेद का उद्धार किया। कूर्म्म अवतार में तुमने संसार की स्थापना की। तीसरे अवतार में तुमने वराह का रूप धारण किया और पृथ्वी को दाँत के ऊपर उठा लिया। हिरण्यकशिपु नाम से एक महाबलवान दैत्य था जिसने स्वर्ग-मर्त्य-पाताल को जीत लिया था। उसके भय से तीनों लोक काँपने लगे। तुमने नरसिंह का रूप धर कर उसका संहार किया। पंचम अवतार में तुमने वामन का वेश ले लिया और बलि राजा को छल कर उसके द्वार पर दरवान बन गये। छठे में भृगुपति परशुराम बने और इक्कीस बार धरती को क्षत्रिय-शून्य किया। सातवें अवतार में राम का रूप धारण कर हे नारायण, तुमने राक्षस का वध कर त्रिभुवन की रक्षा कर ली। हलधर का रूप लेकर राम तुमने हाथों में हल ले लिया और उसके आघात से असुरों को नष्ट किया। राम-अवतार में तुम स्वयं श्रीहरि हो, तुम स्वयं ही पूर्णावतार हो। तुमने रावण का सवंश संहार किया। जितने क्षत्रियों ने भूमंडल का पालन किया, हे राम, तुम उन सबमें सबसे अधिक शक्तिशाली हो। किसी और के बाण से दशानन नहीं मर सकता था। इसी कारण राम तुमने वैकुंठ त्यागा। तुम्हीं ब्रह्मा हो, तुम्हीं शिव हो, और तुम्हीं नारायण हो, तथा तुम्हीं सृष्टि, स्थिति और प्रलय के कारण हो। हे प्रभु, जो कोई भी तुम्हारे अवतार की कथा सुन लेता है उसका इहलोक, परलोक दोनों का उद्धार हो जाता है। ऐसा कौन है जो तुम्हारी माया को समझ सके, तुम

के बुझे तोमार माया, तुमि लोकपति ❋ तुमि नारायण, सीता लक्ष्मी मूर्त्तिमती
हेन लक्ष्मी अग्निमध्ये राख कि कारण ❋ मनुष्येर कर्म्म केन कर नारायण३९
ना शुनेन ब्रह्मार से प्रबोध-वचन ❋ 'सीता सीता' वलि राम हन अचेतन
ब्रह्मा वलिलेन, अग्नि, उठह सत्वर ❋ समर्पण कर सीता रामेर गोचर
ब्रह्मार आज्ञाय अग्नि उठिया सत्वर ❋ आपनि प्रवेशे अग्नि-कुण्डेर भितर
आकाश-पाताल जुड़ि अग्नि शिखा ज्वले❋ आपनि उठिला अग्नि सीता ल'ये कोले
अग्नि हैते उठिलेन सीता-ठाकुराणी ❋ जेमन तेमन आछे पटवस्त्रखानि
मस्तकेर पञ्चफूल, सेह ना आओरे ❋ जोड़हाते रहिलेन रामेर गोचरे ४०
अग्नि बलिलेन, आमि पाप-पुण्य-साक्षी ❋ लुकाइया पाप करे, ताहे आमि देखि
भाण्डाइते आमारे ना पारे कोनजन ❋ ना देखि सीतार कोन पापेर कारण
आजि हैते राम, मोर सफल जीवन ❋ करिलाम आजि सीता-सती-परशन
बलि राम, सीतारे ना दिओ मनस्ताप ❋ राज्य दग्ध हइबे जानकी दिले शाप
जेइ नारी शुनिबेक सीतार चरित्र ❋ सर्व्वपाप खण्डिया से हइबे पवित्र
श्रीरामेर हाते सीता करि समर्पण ❋स्वस्थाने प्रस्थान अग्नि करेन तखन६४१

लोकपति हो। तुम नारायण हो, और सीता मूर्त्तिमती लक्ष्मी हैं। ऐसी लक्ष्मी को तुम किस कारण अग्नि में जला रहे हो। हे नारायण, तुम मनुष्य जैसा आचरण क्यों कर रहे हो ॥ ६३९ ॥

ब्रह्मा के सान्त्वना भरे ये वाक्य राम ने नहीं सुने। 'सीता-सीता' कहकर वे मूर्च्छित हो गये। ब्रह्मा ने कहा, हे अग्नि जल्दी उठो और सीता को राम के हाथों में सौंप दो। ब्रह्मा की आज्ञा से अग्नि झट उठकर स्वयं अग्निकुंड में प्रवेश कर गये। आकाश-पाताल को छूती हुई अग्नि शिखा जल रही थी। स्वयं अग्निदेव सीता को गोद में लिये हुए निकले। सीताजी आग से निकल आईं, उनके शरीर का पट्टवस्त्र ज्यों का त्यों बना हुआ है। मस्तक पर गूँथा हुआ पंचफूल तक नहीं मुरझाया। वे राम के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं ॥ ६४० ॥

अग्नि ने कहा, मैं पाप-पुण्य का साक्षी हूँ। जो आदमी छिपकर पाप करता है उसको भी देख लेता हूँ। मुझको कोई धोखा नहीं दे सकता। मैं तो सीता में कोई पाप का कारण नहीं देख पाता हूँ। हे राम, आज से मेरा जीवन सफल है कि मैंने सीता सती का स्पर्श किया। हे राम, तुम से मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम सीता के दिल को न दुखाना। जानकी यदि शाप दे दे तो तुम्हारा राज्य भस्म हो जायगा। जो भी नारी सीता का चरित्र सुनेगी उसके सारे पाप दूर हो जाएँगे और वह पवित्र हो जायगी। श्रीराम के हाथों में सीता को सौंप कर अग्निदेव अपने स्थान वापस चले गये ॥ ६४१ ॥

दशरथेर श्रीराम-सम्भाषण ओ भरतेर प्रति वरदान

बिरिञ्चि बलेन, राम, करिले जे काज ※ ताहाते पाइल रक्षा देवता-समाज
तोमा लागि आछे अजोध्यार प्रजागण ※ देशे गिया सबाकारे करह पालन
तोमा लागि भरत-शत्रुघ्न प्राण धरे ※ चारि-भाइ मिलि राज्य करह संसारे
नाना-यज्ञ करह, करह नाना-दान ※ बंशे राजा करिया आइस निजस्थान
दशरथ मरिलेन तोमा-अदर्शने ※ मृत पिता एसेछेन तोमा-सम्भाषणे
पिता देख रामचन्द्र, अपूर्ब्ब-दर्शन ※ दुइ-भाइ कर पितृ-चरण-बन्दन
देव-रथारूढ़ राजा देव-बेशधारी ※ करिलेन प्रणाम लक्ष्मण रावणारि
पुत्रवधू श्वशुरेर बन्देन चरण ※ राजा दशरथ किछु कहेन बचन६४२
दग्ध हइलाम आमि कैकेयी-बचने ※ देह छाड़िलाम राम, तोमा-अदर्शने
पिता उद्धारिला, जथा अष्टाबक्र-ऋषि ※ तोमार प्रसादे राम, स्वर्गे आमि बसि
देवगण जुक्ति करे, सब आमि शुनि ※ दशरथ-गृहे अवतीर्ण चक्रपाणि
लक्ष्मणेर गुण-व्याख्या करे देवगण ※ रामेर जेमन सेवा क'रेछे लक्ष्मण
सफल हइबे अजोध्यार पुरजन ※ तुमि राजा ह'ये सबे करिबे पालन

दशरथ का श्रीराम से सम्भाषण और भरत के प्रति वरदान

विरिंचि (ब्रह्मा) ने कहा, राम, तुमने जो काम किया उससे देवता-समाज की रक्षा हुई। तुम्हारे लिए अयोध्या की प्रजा प्रतीक्षा कर रही है। देश जाकर प्रजा-पालन करो। तुम लोगों के लिए ही भरत-शत्रुघ्न प्राण-धारण किये हुए हैं, जाओ, चारों भाई मिलकर संसार में राज करो। जाकर विभिन्न यज्ञ करो, तरह-तरह का दान करो और वंश में राजा छोड़कर अपने स्थान लौट आओ। तुम्हारे अदर्शन से दशरथ ने प्राण त्यागा था, वही मृत पिता तुमसे बात करने आए हैं। हे रामचन्द्र, अपने पिता को देखो, वे कितने दिव्य रूपधारी हैं, तुम दोनों भाई मिलकर पिता के चरणों की वन्दना करो। तब देव-रथ पर देव-वेश धारण किये राजा दशरथ को राम और लक्ष्मण ने प्रणाम किया। पुत्रवधू ने श्वसुर के चरणों की वन्दना की। तब राजा दशरथ ने कुछ वाक्य कहे ॥ ६४२ ॥

हे राम, कैकेयी के वचन से मेरा हृदय भस्म हो गया था, फिर तुम्हारे वियोग से मैंने देह त्याग दी। अष्टावक्र ऋषि ने जिस प्रकार अपने पिता का उद्धार किया था, हे राम, उसी प्रकार तुम्हारे प्रसाद से मैं स्वर्ग में वास कर रहा हूँ। देवता आपस में बातें करते रहते हैं, सभी कुछ मैं सुनता रहता हूँ कि दशरथ के घर में चक्रपाणि ने जन्म लिया है। देवता लक्ष्मण का गुण बखानते रहते हैं। जैसी सेवा लक्ष्मण ने राम की की है वैसी कोई नहीं कर सकता। अयोध्या के निवासी धन्य होंगे। तम राजा बनकर सबका

जानकीर चरित्रे आमार चमत्कार ※ शुद्ध ह'ये करिलेन कुलेर उद्धार
भरत कनिष्ठ भाइ प्राणेर सोसर ※ आमा तुल्य ताहारे पालिबे बहुतर
बलिल तोमारे जे कैकेयी कुबचन ※ माता-पुत्र दुइजने करेछि बर्ज्जन ६४३
एतेक बलेन जदि राजा दशरथ ※ कृताञ्जलि श्रीराम कहेन ताँर मत
मम दुःखे भरत जे ह'येछे दुःखित ※ तारे तव बर्ज्जा आर ना हय उचित
भरतेरे वर देह देव-बिद्यमान ※ ताहाते हइबे तृप्त, जुड़ाइबे प्राण
रामेर बचने राजा करेन बिधान ※ भरतेर श्राद्ध मम अमृत-समान
भरतेरे बरदान देबगण शुने ※ आलिंगने तुषिलेन आत्मज लक्ष्मणे
करिया रामेर सेबा पाइले उद्धार ※ घुषिबे तोमार जस सकल संसार
बलेन सीतार प्रति प्रबोध-बचन ※ आमार बचने तुमि संबर क्रन्दन
दशमास छिले माता राक्षसेर घरे ※ तेंइ से तोमाय राम देशे निते नारे
हइला गो अग्निशुद्धा, देबलोक जाने ※ श्रीरामेर सह जाह आपनार स्थाने
जे कामिनी शुनिबेक तोमार चरित्र ※ सर्ब्बपाप घुचिबेक, हइबे पबित्र
देब-रथे चड़ि राजा देब-बेश धरि ※ पुत्रबधु सान्त्वाइया जान स्वर्गपुरी ६४४

पालन करोगे। जानकी के चरित्र से मैं आश्चर्यचकित हो रहा हूँ, उसने अपने को शुद्ध सिद्ध कर वंश का उद्धार किया है। छोटा भाई भरत प्राणों के तुल्य है। उसको मेरे समान ही पालो-पोसोगे। जिस कैकेयी ने तुमको कुबोल बोले थे उन दोनों माँ-बेटे का मैंने त्याग कर दिया ॥ ६४३ ॥

जब राजा दशरथ ने इतना कहा तो हाथ जोड़ कर श्रीराम ने अपना अभिमत प्रगट किया। मेरे दुःख से भरत दुखी हुआ है, इसलिए अब उसका वर्जन करना आपके लिए उचित नहीं है। देवताओं के सम्मुख भरत को वर दें जिससे मेरे मन को सन्तोष और तृप्ति मिले। राम के कहने पर राजा ने यह विधान दिया कि भरत का श्राद्ध मेरे लिए अमृत के समान होगा। भरत के प्रति वरदान सभी देवताओं ने सुना। अपने आत्मज लक्ष्मण को उन्होंने गले लगा कर सन्तुष्ट किया। और बोले, राम की सेवा कर तुमको निस्तार मिला तुम्हारा यश सारा संसार गायेगा। इसके बाद वे सीता के प्रति (दशरथ) सान्त्वना की बात करने लगे। हे पुत्री मेरे कहने पर तुम अपना रोना बन्द करो। हे पुत्री तुम दस महीने राक्षस के घर में रहीं, इसी कारण राम तुमको घर नहीं ले जा रहे थे। तुम अग्नि द्वारा शुद्ध हो गईं यह देवता लोग जानते हैं, श्री राम के साथ तुम अब अपने स्थान जाओ। जो भी नारी तुम्हारी चरित्र-कथा सुनेगी उसके सारे पाप धुल जाएँगे और वह पवित्र हो जाएगी। इतना कह कर देव-वेश पहने हुए राजा देव-रथ पर सवार हो, पुत्रवधू को सान्त्वना देने के उपरान्त स्वर्ग चले गये ॥ ६४४ ॥

इन्द्र कर्त्तृक वानरगणेर जीवन-दान

हइल राक्षस क्षय, हृष्ट पुरन्दर ※ बलिलेन रामचन्द्रे, माग तुमि बर
देबे रक्षा करिला मारिया दशानन ※ बर माग, व्यर्थ राम, ना हबे बचन४५
श्रीराम बलेन, इन्द्र यदि दिबे बर ※ तव बरे जीये उठुक मृत जे बानर
धन-जन ना दिलाम, नहे भूमि-गाँति ※ एड़िया स्त्रीपुत्र एल आमार संहति
हृता सीता पाइलाम, हइलाम सुखी ※ बानरेर भार्य्या-पुत्र केन हबे दुःखी
एत जदि इन्द्रेरे बलेन रघुनाथ ※ बलिछेन पुरन्दर करि जोड़हात
भुबनेर नाथ तुमि स्वयं नारायण ※ मारिया जीयाते पार ए तीन भुबन
तुमि जान आपना, तोमारे जाने के ※ मरिया ना मरे, तव नाम जपे जे
आपनि चाहिले बर के करिबे आन ※ रूपे बेशे सबे होक देबता समान४६
इन्द्रेर आज्ञाय मेघ अमृत संचारे ※ सुधाबृष्टि हय मृत बानर-उपरे
काटा हात, काटा पद, सब लागे जोड़ा ※ चारिद्वारे उठे सैन्य दिया गात्रझाड़ा
जे बानर पड़ियाछे राक्षसेर रणे ※ मार मार करि उठे जुद्ध करि मने
कुम्भकर्णे मार बलि केह डाक छाड़े ※ इन्द्रजिते मार बलि केह डाक पाड़े

इन्द्र द्वारा वानरों का प्राण-दान

राक्षसों का नाश हुआ तो पुरन्दर (इन्द्र) अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने रामचन्द्र से कहा, वर माँगो : दशानन को मार कर तुमने देवताओं की रक्षा की ! राम, तुम वर माँग लो तुम्हारी याचना व्यर्थ नहीं जायगी ॥ ६४५ ॥

श्री राम ने कहा, हे इन्द्र ! यदि वर ही देना है तो तुम्हारे वर से सारे मृत वानर जी उठें। न तो उनको मैंने धन-दौलत दी और न जमीन-जायदाद, वे अपने बाल-बच्चों को पीछे छोड़ कर मेरे संग चले आए। चुरायी हुई सीता को पाकर मैं सुखी हुआ। तब वानरों की स्त्रियाँ और उनके बच्चे क्यों दुखी हों। जब रघुनाथ ने इन्द्र से इतना कहा तो इन्द्र ने हाथ जोड़कर कहा, तुम स्वयं नारायण हो, संसार के नाथ हो, मार कर इन तीनों लोकों को फिर से जिला सकते हो। तुम स्वयं अपने बारे में जानते हो, तुमको कौन जान सकता है, तुम्हारा नाम जप करने पर मरने वाला भी जी उठता है। स्वयं ही तुमने वर माँगा अब इसको कौन अन्यथा कर सकता है। ये लोग रूप और वेश में देवता के समान बन जायें ॥ ६४६ ॥

इन्द्र की आज्ञा से मेघ अमृत बरसाने लग गया, मृत वानरों पर सुधा-वृष्टि हुई। कटे हाथ, कटे पैर सभी जुड़ गये, चारों द्वारों पर मरी पड़ी हुई वानर सेना बदन झटक कर उठ खड़ी हुई। जो वानर राक्षसों से लड़ता हुआ मरा था वह उठते ही युद्ध समझकर मार-मार करने लग जाता। कोई तो हाँक लगाता कि कुम्भकर्ण को मार डालो तो कोई चिल्लाने लगता, इन्द्रजीत

देबान्तक नरान्तक मार रे त्रिशिरा ❋ रावनेरे मारो झाट परनारी चोरा
उन्मत्त पागल सबे हैल रणस्थले ❋ इष्ट-मित्र बुझाय चापिया धरि कोले
कारे मार, कारे काट, किसेर संग्राम ❋ हइल राक्षस नाश, शत्रुजयी राम
श्रीरामेर बामे देख जानकी सुन्दरी ❋ देबगणे देख हेथा, एइ स्वर्गपुरी
हरिषेर कथा जदि शुनिल बानर ❋ माथा नोङाइल गिया रामेर गोचर
त्रिभुवने नाहि देखि तोमार समान ❋ मरिया प्रसादे तब पाइ प्राणदान
तोमा हेन प्रभु जेन पाइ जुगे जुगे ❋ सेवा करि थाकि हे तोमाय राखि आगे
मरिल बानर जत, पेल प्राणदान ❋ जिज्ञासा करेन राम देव-विद्यमान४७
राम बले देवराज, जिज्ञासि तोमारे ❋ एक कथा सन्द बड़, आमार अन्तरे
उभय दलेते युद्ध हइल बिस्तर ❋ पड़िल उभय सैन्य राक्षस-बानर
उभय सैन्येते हैल सुधा-बरिषण ❋ बानरेर मृतदेह पाइल जीबन
अतएव जिज्ञासा हे करि तब स्थाने ❋ प्राणदान राक्षसे ना पायकि कारणे४८
इन्द्र बले राक्षसे ना पाइल जीवन ❋ इहार बृत्तान्त शुन कमललोचन
'रावणेरे मार' बलि कपिगण मरे ❋ उद्धार पाइबे बल कि नामेर जोरे
'रामे मार' शब्द करि मरेछे राक्षसे ❋ राम-नाम करे मरि गेछे स्वर्गबासे

को मार डालो। देवान्तक, नरान्तक, त्रिशिरा को मार डालो, परनारी चुराने वाले रावण को झट मार डालो। सभी रणभूमि पर बावले से हो गये, इष्टमित्र उनको बाहों में बाँधे समझाने लग गये। किसको मार रहे हो, किसको काट रहे हो, युद्ध भी कैसा है, राक्षसों का नाश हो गया है, राम शत्रु पर विजय पा चुके हैं। देखो श्री राम के वाएँ सुन्दरी जानकी बैठी हैं, देवताओं को देखो, यहीं स्वर्गपुरी बन गयी है। जब वानरों ने यह हर्षभरी बात सुनी तो सभी जाकर राम के सम्मुख सिर झुका कर खड़े हो गये। त्रिभुवन में तुम्हारे समान किसी को नहीं देख पाता हूँ। तुम्हारे प्रसाद से मर कर भी प्राण मिल गया। युग युग में तुम जैसा ही प्रभु मिले, तुमको सामने बिठा कर सदा तुम्हारी सेवा करता रहूँ। जितने बानर मर गये सभी को प्राण मिल गये। तब राम ने देवताओं की उपस्थिति में पूछा ॥६४७॥

राम ने कहा, देवराज, तुमसे पूछता हूँ। एक बात में मुझे बड़ा सन्देह है। दोनों दलों में काफी युद्ध हुआ राक्षस-वानर दोनों के सैन्य गिरे। तुमने सभी के ऊपर अमृत वर्षण किया। असंख्य वानर प्राण पाकर उठ खड़े हुए। अत: तुमसे यह पूछता हूँ कि किस कारण राक्षसों को प्राण नहीं मिले ॥ ६४८ ॥

इन्द्र ने कहा, हे कमल-लोचन राम, राक्षसों को क्यों प्राण नहीं मिला इसका विवरण सुनो। 'रावण को मारो' कह कर वानर मर गये इसलिए किस नाम के बल पर उनको मुक्ति मिल सकती थी। 'राम को मारो' यह

श्रीराम बलिया प्राण बाहिराय जार ※ अक्लेशे बैकुंठे जाय पाइया उद्धार
मुक्तिपद पाइयाछे रामनाम गुणे ※ उद्धार पाइया गेछे बाँचिबे केमने
इन्द्र बलिलेन, सबे जाह निजबास ※ एतदिने सबाकार पूर्ण अभिलाष
चौद्दबर्ष वने, दशमास उपवास ※ श्रीराम जानकी दोंहे हउक सम्भाष
अबिराम संग्रामेते ना छिल विश्राम ※ विश्राम करह राम जाइ स्वर्गधाम
श्री रामे सीतारे तबे करि समर्पण ※ देवगण चलिलेन आपन भवन ६४९
जखन जे कर्म्म, ताहा बिभीषण जाने ※ एगार-श बृहन्दे नेतेर कापड़ टाने
कांचन-निर्मित घर अपूर्ब्ब-गठन ※ रत्न-सिंहासने पाते नेतेर वसन
उपरे चाँदोया दोले, खाटे शोभे तुलि ※ घर शोभा करे, जेन पड़िछे बिजली
स्वर्णमय प्रदीप ज्वलिछे चारिभित ※ पारिजात-पुष्प पाते, गन्धे आमोदित
बिश्व ब्याप्त करे गन्धे एक पारिजाते ※ एकलक्ष पारिजात सिंहासने पाते
बिभीषण आपनि जे रहिल प्रहरी ※ आवासेर बाहिरे वानर सारि-सारि
बैकुंठ छाड़िया लक्ष्मी हैल अवतार ※ सीता-सह राम प्रवेशेन से आगार

शब्द कह कर राक्षस मरे, राम का नाम लेकर मरने के कारण वे सीधे स्वर्ग गये। श्री राम का नाम लेकर जिसके प्राण चले जाते हैं वह अनायास ही मुक्त होकर बैकुंठ चला जाता है। राम नाम के गुण से वे मुक्त हो गये हैं। जब वे उद्धार हो चुके हैं तो फिर जिएँगे कैसे। इन्द्र ने कहा, सब लोग अपने अपने निवास स्थानों को चले जाओ; इतने दिनों में सभी अभिलाषाएँ पूर्ण हुई; चौदह वर्ष वन में फिर दस महीने से उपवास चल रहा है। श्री राम और जानकी आपस में बातें करें। अविराम संग्राम में आराम नहीं कर सके। राम अब तुम आराम करो, मैं स्वर्गधाम जाता हूँ। सारे देवता श्री राम के हाथों में सीता को सौंप कर अपने अपने भवन के लिए चल दिए॥ ६४६ ॥

जिस समय जो कार्य करना चाहिए वह विभीषण को ज्ञात है। ग्यारह सौ बृहन्दों ने रेशमी कपड़ा तान दिया। अनोखे आकार का कांचन-निर्मित भवन बना। रत्न-सिंहासन पर रेशमी कपड़ा बिछाया गया। ऊपर चँदवा है तो नीचे पलंग पर रुई भरी तोशक है। कमरा यों शोभायमान है मानों बिजली की आभा पड़ रही हो। चारों ओर स्वर्णमय दीपक जल रहे हैं। पारिजात पुष्प बिछाये गये जिनकी सुगन्ध से चारो दिशा महमहाने लगीं। एक पारिजात की गन्ध से विश्व भर महमहा उठता है, वैसे एक लाख पारिजात सिंहासन पर बिछाये गये। विभीषण स्वयं प्रहरी बना रहा और आवास के बाहर वानर भी कतारों में खड़े रहे। वैकुंठ छोड़ कर लक्ष्मी ने अवतार लिया। सीता के साथ राम ने उस गृह में प्रवेश किया। श्री राम के बगल में सीता जी बैठीं जिस प्रकार श्रीपति के बगल में लक्ष्मी

श्रीरामेर पाशे बसिलेन ठाकुराणी ❊ श्रीपतिर पाशे लक्ष्मी जेमन, तेमनि
राम-सीता दुइजने बसि सिंहासने ❊ पूर्ब्बदुःख स्मरिया बिषण्ण दुइजने ६५०
श्रीराम बलेन प्रिय तोमार बिच्छेदे ❊ जे दुःख पेयेछि, से कहिते मरि खेदे
तुमि धन, तुमि प्राण, तुमि से जीवन ❊ तोमार बिरहे शून्य देखि त्रिभुबन
दश मास तोमार बदन-अदर्शने ❊ डुबेछिनु अन्धकारे मानि इहा मने
सुधाकरे ज्ञान करिताम दिवाकर ❊ तापभये न ह'ताम ताहार गोचर
भ्रमर-झंकार आर कोकिलेर ध्वनि ❊ शुनिले हइत ज्ञान, दंशे जेन फणी
जानकी पाइब आमि सागर-बन्धने ❊ ए आशाय प्राण राखियाछि एतदिने
पूर्ब्बे जत दुःख पाइलेन देबी सीता ❊ रामेरे कहेन ताहा ह'ये हर्षान्विता
उभयेर मनेते बेदना जत छिल ❊ परस्पर आलापे सकल दूरे गेल ५१

विभीषण कर्त्तृक बानरगणेर सन्तोष-विधान

प्रभात हइल निशा, उदित भास्कर ❊ एके-एके सबे गेल रामेर गोचर
चतुर्द्दिके दाँड़ाइल शाखामृग गण ❊ योड़हात करि बले राजा बिभीषण
बहुकाल अनाहार, बहु पर्यटन ❊ करिया हयेछे श्रान्त श्रीरघुनन्दन

बैठती हैं। सिंहासन पर बैठ कर राम सीता दोनों पूर्वदुःख का स्मरण कर विषादमग्न हो गये ॥ ६५० ॥

श्री राम ने कहा, प्रिये, तुम्हारे विरह में इतना क्लेश मिला कि कहने में भी कष्ट हो रहा है। तुम ही धन हो, तुम ही प्राण हो और तुम ही जीवन हो। तुमसे बिछुड़कर तीनों लोकों को मैं सूना देखने लगा। दस महीने तक तुम्हारे मुख के अदर्शन से मैं अन्धकार में डूबा हुआ था। सुधाकर (चन्द्र) दिवाकर (सूर्य) सा लगता था और उत्ताप के डर से मैं उसके सम्मुख नहीं जाता था। भौंरों की झंकार और कोयल की कूक यों लगती थी मानों नागिन ने डस लिया हो। सागर को बाँधने के बाद जानकी मिल जायगी इसी आशा में इतने दिनों तक मैंने अपने प्राण बचा रखे। सीता देवी ने इससे पूर्व जितना दुःख भोगा था, उसका वर्णन वे राम से हर्षमग्न होकर करने लगीं। दोनों के मन में जितनी पीड़ा थी वह सब परस्पर बातचीत से दूर हो गई ॥ ६५१ ॥

विभीषण द्वारा वानरों को सन्तुष्ट करना

रात्रि बीत गई, प्रभात हुआ, सूर्य उदित हुआ। एक-एक कर सभी राम के निकट गये। चारों ओर वानर खड़े हो गये। राजा विभीषण ने हाथ जोड़ कर कहा, बहुत दिनों से अनाहार चल रहा है और बहुत परिश्रम करने से हे रघुनन्दन तुम थक गये हो। दासियाँ तुम्हारी परिचर्या करें।

करुक तोमार परिचर्या दासीगण ※ आनुक कस्तुरी आर सुगन्धि-चन्दन
दूर्ब्बादल-श्याम तनु हयेछे समल ※ से मल करिया दूर करुक निर्म्मल
सहस्र युवती-कन्या आछे मम पाश ※ करिया तोमार सेबा पुराउक आश
श्रीराम बलेन, ओहे राक्षसाधिपति ※ आमार बचन तुमि कर अबगति५२
लोके बले, विभीषण, तुमि धर्म्ममय ※ परनारी-चोर तुमि, मम मने लय
परपत्नी नाहि देखि नयनेर कोने ※ स्पर्शसुख दूरे थाक्, ना चाहि नयने
कोटि-कोटि देबकन्या एकठाँइ करि ※ सीता-तुल्य तार केह ना हय सुन्दरी
राजकुले जन्मिया भरत भाइ सुखी ※ केवल आमार दुःखे हये आछे दुःखी
हेन भरतेरे अग्रे करि आलिंगन ※ तबे से परिब बस्त्र सुगन्धि-चन्दन
चौद्द-बर्ष भ्रमिलाम बहु क्लेशे ※ हेन युक्ति कर, जेन झाट जाइ देशे६५३
बिभीषण बले, प्रभु, पेले बड़ क्लेश ※ एकदिन मध्ये तुमि जाबे निजदेश
कुबेरेर रथ जे, पुष्पक तार नाम ※ एकदिने तोमारे लइबे निज धाम
एक दान चाहि आमि, बितर सम्प्रति ※ किछुदिन लंकापुरे करह बसति
सकल सैन्येर प्रभु करिब सेबन ※ लंकामध्ये भोग भुंजि करह गमन५४

कस्तूरी और सुगन्धित चन्दन ले आवें। तुम्हारा दूर्वादल सा साँवला तन मलिन पड़ गया है, उस मल को दूर कर वे निर्मल बना दें। मेरे निकट हजार-हजार युवती कन्याएँ हैं, तुम्हारी सेवा कर वे अपनी साध पूरी कर लें ॥ ६५२ ॥

श्री राम ने कहा, हे राक्षसों के अधिपति विभीषण, मेरा वचन सुनो। लोग कहते हैं कि विभीषण तुम धार्मिक हो लेकिन मेरा मन कहता है कि तुम पर-नारी-चोर हो। मैं नैनों के कोर से भी पर-पत्नी को नहीं देखता, उनका स्पर्श सुख पाना तो दूर उनकी ओर आँखें उठा कर भी नहीं देखता हूँ। करोड़ों देवकन्याओं को यदि एक स्थान में एकत्रित किया जाय तो भी सीता के समान एक सुन्दरी नहीं मिलेगी। राजवंश में जन्म लेकर भाई भरत सुखी है किन्तु मेरे दुःख से वह दुखी बना हुआ है। ऐसे भरत के साथ पहले आलिंगन कर फिर मैं वस्त्र और सुगन्धित चन्दन धारण करूँगा। चौदह वर्ष पथ-पथ भटकता रहा, कितने ही नद नदी सागर पार किये। ऐसी व्यवस्था करो कि मैं झट देश पहुँच जाऊँ ॥ ६५३ ॥

विभीषण ने कहा, प्रभु तुमने बड़े दुःख झेले। तुम एक दिन में अपने देश पहुँच जाओगे। वह कुबेर का रथ है—जिसका नाम है पुष्पक। वह तुमको एक दिन में अपने घर पहुँचा देगा। तुमसे एक दान माँगता हूँ, दे दो। कुछ दिन लंकापुरी में वास करो। हे प्रभु मैं सारे सैन्य की सेवा करूँगा। लंका में रह कर कुछ सुख भोग कर फिर जाना ॥ ६५४ ॥

श्रीराम वलेन, प्रीत हइनु तोमाते * बिलम्ब ना कर तुमि आमारे तुषिते
आहार ना करे जारा, मरण ना गणे * हेन बानरेर प्रीति भालबासि मने
सुगन्धि चन्दन कपिगणे देह दान * भुंजाइया नाना भोग करह सम्मान
बानर-प्रसादे तुमि लंकापुरे राजा * भालमते कर तुमि बानरेर पूजा ५५
पाइया रामेर आज्ञा राज बिभीषण * नाना सुखे स्नान कराइल कपिगण
स्वर्णखाटे बानर वसिल सारि सारि * स्नानद्रब्य लइया आसिल विद्याधरी
देव-दानवेर कन्या गन्धर्व्व रूपसी * देखिया सबार मुखे नाहि धरे हासि
कंकन-झंकार आर अँगेर सुगन्ध * पाइया बानरगण सकले सानन्द
दिब्य नारायण-तैल सुगन्धि चन्दन * हाते हाते माखे सबे आनन्दे मगन
स्नान करि परे सबे विचित्र वसन * गलाय पुष्पेर माला, नाना आभरण
लंकार सामग्री जत भुबनेर सार * राजार आज्ञाय द्रब्य आने भारे भार
अपूर्ब्ब से भक्ष्य-द्रब्य, दिब्यनारी ताय * स्वर्णथाले परिबेषे, बानरेरा खाय
क्षीर लाडु पाँपड़ मोदक राशि राशि * पाका काँटालेर कोष खाय सबे चुषि
मधु पिये कपिगण भरि स्वर्णगाडु * गाल भरि कपिगण खाय झाल-लाडु
झाल-लाडु खाइते दु चक्षेते पड़े लोह * बाप-मा मरिले जेन पाइलेक मोह
गला आँचड़ाय केह, करे थो थो * बुड़ा बुड़ा कपि बले, हात बाड़िये थो

श्री राम ने कहा, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। मुझको प्रसन्न करने में तुम देर नहीं लगाते हो। जो लोग भोजन नहीं करते, मृत्यु की परवाह नहीं करते ऐसे वानरों के प्रति मेरा प्रेम सर्वाधिक है। सुगन्धित चन्दन वानरों को दो और विभिन्न प्रकार को विलास-सामग्रियों से तुष्ट कर उनका सम्मान करो। वानरों के कारण ही तुम आज लंकापुरी के राजा बने हो इसलिए अच्छी तरह से वानरों की पूजा करो ॥ ६५५ ॥

राम की आज्ञा पाकर राजा विभीषण ने वानरों को विभिन्न सुख देते हुए स्नान कराया। सोने के खाट पर वानर पंक्तियों में बैठ गये। विद्याधरियाँ स्नानद्रव्य ले आईं। देव-दानव और गन्धर्व की रूपवती कन्याओं को देखकर सभी के चेहरे हँसी से चमक उठे। कंगन की झंकार और अंग की सुगन्ध पाकर सभी वानर आनन्द से विभोर हो गये। दिव्य नारायण-तैल और सुगन्धित चन्दन लेकर आनन्द से मग्न होकर अपने बदनों पर चुपड़ने लगे, स्नान करने के उपरान्त सभी ने विचित्र वस्त्र पहने, गले में फूल-माला और अन्य आभूषण धारण किये। लंका की वे सारी सामग्रियाँ जो कि संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं, राजा की आज्ञा से ढेर के ढेर आने लगीं। वह भोजन-सामग्री भी अनोखी है और उनको स्वर्ण की थालियों में परोसने-वाली भी दिव्य नारियाँ हैं। वानर खाने लगे। खीर, लड्डू, पापड़, मोदक पर्याप्त मात्रा में। वे पके हुए कटहल के कोये चूसने लगे।

सोनार डाबरे तारा करे आचमन ❋ रतन-बाटाय करे ताम्बुल भक्षण
रत्न-सिंहासने तारा करिल शयन ❋ पदसेवा करिते आइल कन्यागण
स्वर्णखाटे शुइल वानर शय्या मेले ❋ दश-दश दिव्यनारी प्रत्येकेर कोले
रावण हरियाछिल जतेक नागरी ❋ कालवशे तारा शेषे वानरेर नारी
सुखेते वंचिल निशा निशाचर-पुरे ❋ निशा ना प्रभात हय भाविछे अन्तरे
से आशाय निराश हइल कपिगण ❋ पूर्व्वदिके चेये देखे, उदित तपन
आइल वानरगण श्रीराम-गोचर ❋ प्रणाम करिया कहे, शुन रघुवर
तुमि हेन ठाकुर हइओ जुगे जुगे ❋ सदा सेवा करि जेन तव पदयुगे
जे सुखे छिलाम कल्य करि निवेदन ❋ बड़ प्रीत कराइल राज विभीषण
कन्यागुलि लये करि देशेते गमन ❋ एइ आज्ञा कर प्रभु कमल-लोचन
आज्ञा कर, लंकाय आरो थाकि दुई मास ❋ वानरेर कौतुकेते श्रीरामेर हास ६५६
श्रीराम बलेन शुन मित्र विभीषण ❋ कन्यादान करि तुमि तोष कपिगण

सोने की गड़ई भर-भर कर वानर मधु पीने लगे। मिर्च पड़े लड्डू वानर मुँह भर-भर कर खाने लगे। कड़वे लड्डू खाकर उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे मानों माता-पिता के मरने से शोकग्रस्त हो गये हों। कोई तो गला खुजलाने लगा तो कोई "थुह-थुह" करने लगा तो बड़े-बूढ़े वानरों ने कहा कि उनको हाथ बढ़ाकर अलग रख दो। सोने की चिलमची से उन्होंने अपने मुँह हाथ धोये। रत्न निर्मित पानदान से पान खाये और रत्न-सिंहासन पर लेट गये। उनकी पदसेवा करने के लिए कन्याएँ आईं। सोने के पलंगों पर वानरों के बिस्तर बिछाये गये। हर एक की सेवा में दस-दस दिव्य-नारियाँ लग गईं। रावण ने जितनी नारियों का हरण किया था कालवश वे सभी अब वानरों की नारियाँ बन गईं। निशाचरों की नगरी में वानरों की रात्रि सुखपूर्वक बीती। वे मन ही मन सोचने लगे कि रात समाप्त न हो। किन्तु कपि निराश हुए, पूरब की ओर ताक कर देखा कि सूरज निकल आया है। वानर श्री राम के पास आए और प्रणाम कर कहने लगे, हे रघुवर सुनो—तुम जैसा ही प्रभु हमें युग-युग में मिले, सदा हमें तुम्हारे चरणों की सेवा करने को मिले। हम निवेदन करते हैं कि कल हम लोग बड़े सुख से रहे। राजा विभीषण ने हमलोगों को बड़ा प्रसन्न कर दिया। हे कमल-लोचन प्रभु ऐसी आज्ञा दो कि हम इन कन्याओं को लेकर देश लौट चलें या यह आज्ञा दो कि लंका में और दो महीने रह जायें। वानरों का कौतुक देखकर श्रीराम हँसने लगे॥ ६५६॥

श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण सुनो, इन कन्याओं का दान कर

बानरेर प्रसादे लंकाय हैला राजा ※ भालमते कर तुमि बानरेर पूजा६५७
पाइया रामेर आज्ञा राजा बिभीषण ※ दिल नाना-रत्न गज-मुकुता कांचन
बसन-भूषण कत दिलेक माणिक ※ कुबेरेर धन बुझि ना हबे अधिक
नानाद्रब्ये बानरेर करिल सम्मान ※ समान-बयस-वेश कन्या करे दान
अन्य दाने नाहि गणे आनन्द तेमन ※ कन्यादाने यथा हय हृष्ट कपिगण
एकैक बानरे पेये दश दश नारी ※ निबेदन करे, प्रभु, देशे जात्राकरि६५८

श्रीरामेर स्वदेश जात्रा

आनिल पुष्पक-रथ देव-अधिष्ठान ※ तदुपरि आओयास कुठरि स्थाने-स्थान
रथ दश-योजन थाकये सर्ब्बक्षण ※ बाड़िते चाहिले हय से कोटि-योजन
पुष्पक-रथेते बहु राजहंस जोड़े ※ चक्षुर निमिषे रथ योजनेक पड़े
चड़ेन पुष्पके राम सीता कुतूहले ※ मुख ढाकिलेन सीता नेतेर अंचले
सुमित्रा नन्दन वीर चड़िलेन ताते ※ एकपाशे रहिलेन धनुर्ब्बाण हाते६५९
रथोपरि श्रीराम, भूमिते सैन्य गण ※ प्रसन्न बदने राम कुहेन बचन

कपियों को तुष्ट करो। वानरों की कृपा से तुम लंका के राजा बने। अच्छी तरह से वानरों की पूजा करो ॥ ६५७ ॥

राम की आज्ञा पाकर राजा विभीषण ने गज-मोती तथा विभिन्न रत्न और कांचन दिये। वस्त्र, आभूषण और माणिक इतने दिये कि कुबेर के पास भी इससे अधिक धन न होगा। विभिन्न द्रव्यों से उसने वानरों का सम्मान किया। समान अवस्था वाली कन्याएँ भी दान में दीं। वानर अन्य दान से उतने हर्षित नहीं हुए जितना कन्या-दान से। एक-एक वानर को जब दस-दस नारियाँ मिल गईं तो उसने निवेदन किया, हे प्रभु अब देश जाने की आज्ञा मिल जाय ॥ ६५८ ॥

श्री राम की स्वदेश-यात्रा

देवता पुष्पक रथ ले आए। उस रथ पर जगह-जगह विभिन्न कमरे बने हैं। यह रथ सदा दस-योजन की गति से चलता है, गति बढ़ाने पर तो वह कोटि-योजन की गति से भी चलने लगता था। पुष्पक रथ में बहुत से राजहंस जोते गये और पलक झँपते ही रथ एक योजन आगे बढ़ गया। राम-सीता कौतूहल से पुष्पक रथ पर सवार हुए, रेशमी आँचल से सीता ने मुँह ढाँप लिया। वीर सुमित्रा-नन्दन भी रथ में चढ़े और एक किनारे धनुष-बाण हाथ में लिये बैठ गये ॥ ६५९ ॥

रथ के ऊपर श्री राम और भूमि पर सारी सेना खड़ी है। राम ने प्रसन्न-बदन होकर कहा, सुग्रीव की शक्ति, वानरों का स्वार्थत्याग और विभीषण

सुग्रीबेर शक्ति आर वानरेर हानि ❋ गुणे विभीषणेर दुर्ज्जय लंकाजिनि
सर्व्व सेनापतिर करिव गुणगान ❋ सर्व्वकार्य सिद्धि मोर कैल हनुमान
आपनार देशे गिया कर अधिकार ❋ मेलानि मागिनु आमि करि परिहार
राक्षसे वानरे राम दिलेन मेलानि ❋छल-छल करिया पड़िछे चक्षे पानि६६०
जोड़हाते बले निशाचर कपिगणे ❋ श्रीराम हइबे राजा देखिब नयने
कौशल्यार चरणे करिव प्रणिपात ❋ चारि भाइ तोमरा देखिव एक साथ
ए चक्षे ना देखिलाम तोमार सम्मान ❋बिदाय करिले नाहि जाव निजस्थान६६१
श्रीराम बलेन इथे बड़इ आनन्द ❋ अयोध्याय जाबे जदि, चलह स्वच्छन्द
देशे तोमा-सबार जाइते नाहि चिते ❋ जे जावे से चड़ एसे ए पुष्पक रथे
पाइया रामेर आज्ञा राक्षस-बानर ❋ लाफे लाफे चड़े गिया रथेर उपर
रथोपरे दिव्य दिव्य बहु बाड़ी बेड़ा ❋ एकैक वानरे करे दश वाड़ी जोड़ा
जेइ कपि पाइयाछे दश-दश नारी ❋ सेइ कपि जोड़े गिया दश-दश बाड़ी
बने डाले बेड़ाइत जारा जूथे जूथे ❋ देवकन्या लइया चड़िल गिया रथे६६२
तिनकोटि राक्षसे चलिल बिभीषण ❋ रथेर एक कोने गिया रहिल तखन

के गुण से मैंने लंका पर विजय प्राप्त की। मैं सभी सेनापतियों का गुण बखानता हूँ। मेरे सारे कार्यों को हनुमान ने सफल किया है। अपने देश जाकर अपना अधिकार जताओ। मैं तुम लोगों से बिदा-प्रार्थना करता हूँ। राक्षस और बानरों से राम ने विदा ली, उनकी सजल आँखों से आँसू गिरने लगे ॥ ६६० ॥

तब हाथ जोड़ कर निशाचर और कपि कहने लगे, श्री राम राजा होंगे यह हम अपनी आँखों से देखेंगे। हम कौशल्या के चरणों में प्रणाम करेंगे। तुम चारों भाइयों को एक साथ देखेंगे। इन आँखों से हमलोग आपका राज्याभिषेक नहीं देख सके इसलिये यदि आप मुझे बिदा भी दे दो तो भी हमलोग अपने-अपने स्थानों को लौट कर नहीं जायेंगे ॥ ६६१ ॥

श्री राम ने कहा, इसमें बड़ा ही आनन्द है। अगर अयोध्या ही जाना है तो प्रसन्नता पूर्वक चलो। यदि देश लौट जाने की इच्छा तुमलोगों में नहीं है, तो जो भी साथ चलना चाहते हों आकर पुष्पक रथ पर सवार हो जायें। श्री राम की आज्ञा पाकर राक्षस-वानर कूद-कूद कर रथ पर चढ़ गये। रथ के ऊपर काफी घर और कमरे बने थे। एक-एक वन्दर ने दस-दस मकान घेर लिया। जिन-जिन बानरों को दस-दस नारियाँ मिली हुई हैं उन्होंने जाकर दस-दस मकानों पर कब्जा कर लिया। जो लोग जत्थों में जंगलों में डालियों पर घूमा फिरा करते थे वे देवकन्याओं को लेकर रथ पर सवार हुए ॥ ६६२ ॥

तीन करोड़ राक्षसों को साथ लेकर विभीषण चल पड़े और रथ के एक

चड़िल छत्रिश-कोटि राक्षस-बानर ※ एतेक चड़िल गिया रथेर उपर
सीता उद्धारिया राम जान निजदेशे ※ लंकाकांड रचिल पंडित कृत्तिवासे ६६३

लक्ष्मण कर्त्तृक सेतुभंग

नेतेर कानात् दिया घेरिल चोउरि ※ तार मध्ये रहिलेन रामेर सुन्दरी
श्वेतबर्ण राजहंस पबनेर गति ※ रथे आनि जुड़िलेक करि पाँति पाँति
लइया पुष्पक रथ राजहंस उड़े ※ चक्षुर निमिषे रथ योजनेते पड़े
पबन-गमने रथ जाय जथा-जथा ※ सीतारे कहेन राम संग्रामेर कथा ६६४
उठिल पुष्पक रथ गगन-मंडल ※ सीतारे देखान राम संग्रामेर स्थल
रणस्थली सीता, तुमि देख भालमते ※ रांगा हैल बानर ओ राक्षस-शोणिते
एइखाने कुम्भकर्ण हइल निधन ※ इन्द्रजित एखाने पड़िल करि रण
हेथा पड़िलाम नागपाशेर बन्धने ※ नागपाशे मुक्त हैनु गरुड़-दर्शने
पड़िल लक्ष्मण हेथा रावणेर शेले ※ औषध आनिल हनू सुषेणेर बोले
पड़िल राबण हेथा जगतेर बैरी ※ एइस्थाने कान्दिल से राणी मन्दोदरी
शोन सीता, सागरेर कल्लोल भीषण ※ मम पूर्ब्बपुरुषेते करिल खनन

कोने में ही समा गये। कुल छत्तीस करोड़ राक्षस और वानर रथ पर जाकर चढ़ गये। सीता का उद्धार कर राम अपने देश जा रहे हैं। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड की रचना की ।। ६६३ ।।

लक्ष्मण द्वारा सेतुभंग

सूक्ष्म वस्त्र के परदे से एक घेरा सा बनाया गया और उसके भीतर राम की पत्नी सीता बैठीं। सफेद रंग के राजहंस जिनकी गति पवन जैसी थी उनकी पाँत लाकर रथ में जोत दी गयी। पुष्पक रथ को लेकर राजहंस उड़ चले, पलक झँपते ही रथ अनेक योजन पार कर जाता था। जब रथ वायु-वेग से चलने लगा तो राम सीता से संग्राम की बातें बताने लगे ।। ६६४ ।।

पुष्पक रथ गगन-मंडल में चढ़ गया। राम सीता को संग्राम की भूमि दिखाने लगे। हे सीता, यह रणभूमि तुम अच्छी तरह से देख लो। यह भूमि राक्षस और वानरों के खून से लाल हो गई थी। यहीं कुम्भकर्ण का निधन हुआ। यहीं इन्द्रजीत लड़ता हुआ मरा। यहीं हमलोग नागपाश के बन्धन में पड़ गये थे। गरुड़ के दर्शन से हमलोग नागपाश से मुक्त हुए। यहीं लक्ष्मण रावण के शेल से घायल होकर गिरा और सुषेण के कहने पर हनुमान दवा ले आया था। सारे संसार का शत्रु रावण भी यहीं गिरा और यहीं रानी मन्दोदरी रोती रही। सुन रही हो सीता, सागर कैसा भीषण कल्लोल कर रहा है। मेरे पुरखों ने इसे खोदा था।

तोमार लागिया सीता, बान्धिनु जांगाल ✻ उपरे पाथर हेंटे तमाल पियाल६६५
जानकी बलेन प्रभु कमल-लोचन ✻ सागर बाँधिया देशे करिला गमन
राबण आनिल मोरे ललाट-लिखन ✻ बिनादोषे करियाछ सागर-बन्धन
जांगाल बाहिया जे राक्षस हबे पार ✻ पृथिबीते ना थाकिबे जीबेर संचार६६६
राम-सीता दुइजने कहेन काहिनी ✻ पाताले थाकिया ता सागर-देब शुनि
उठिया कहेन जोड़ करि निज हात ✻ आमार बचन शुन, प्रभु, रघुनाथ
आमारे बान्धिया कैला सीतार उद्धार ✻ श्रीराम, बन्धन केन रहिल आमार
तुमि जदि ना घुचाओ आमार बन्धन ✻ तीन जुगे घुचाय, एमन कोन् जन
सागरेर बोले राम लक्ष्मणे नेहाले ✻ लक्ष्मण लइया धनु नामिल जांगाले
धनु-हुले तिनखानि पाथर खसाय ✻ करि दश योजन एकैक पथ हय
जांगाल मांगिल, जल बहे खरस्रोते ✻ लाफ दिया लक्ष्मण उठिल गिया रथे
कृत्तिबास पंडितेर लंकाकांड सार ✻ अनायासे सकले सागर हैल पार६६७

सेतु-मूले शिब-पूजान्ते श्रीरामेर भरद्वाजाश्रमे गमन

श्रीराम बलेन, शुन जानकी एखन ✻ शिबपूजा करि देशे करिब गमन

सीता, तुम्हारे लिए नीचे साखू और आम के लट्ठे और ऊपर पत्थर रखकर हमने इस पर सेतु बनाया ॥ ६६५ ॥

जानकी ने कहा, हे कमललोचन प्रभु, सागर को बाँध कर तुम अपने स्वदेश चले जा रहे हो। भाग्य का फेर है कि रावण मुझको ले आया। बिना अपराध के ही तुमने सागर को बाँध रखा है। इस सेतु से होकर यदि राक्षस समुद्र पार चले गये तो संसार में कोई जीव नहीं बचेगा ॥ ६६६ ॥

जब राम-सीता दोनों मिलकर इस प्रकार बातें करते थे तो पाताल में स्थित रहकर सागर-देव ने यह सुन लिया। ऊपर उठ, हाथ जोड़कर उन्होंने कहा, हे प्रभु रघुनाथ मेरी बात सुनो। मुझको बाँधकर तुमने सीता का उद्धार किया फिर मेरा यह बन्धन क्यों रह गया। हे श्रीराम यदि तुमने मुझे इस बन्धन से मुक्त नहीं किया तो तीन युग में कौन ऐसा आयेगा जो मुझको इससे मुक्त करेगा। सागर के इतना कहने पर राम ने लक्ष्मण की ओर देखा। धनुष लेकर लक्ष्मण सेतु पर उतर पड़े। धनुष के सिरे से उसने तीन पत्थर खिसका दिये और दस योजन का एक रास्ता बन गया। सेतु टूट गया और तेज धारा से पानी बह निकला। छलाँग मार कर लक्ष्मण रथ पर चढ़ गये। पंडित कृत्तिवास का यह लंका-कांड तत्त्वपूर्ण है। सभी लोग अनायास सागर पार कर गये ॥ ६६७ ॥

सेतु-मूल में शिव पूजा कर श्री राम का भरद्वाज आश्रम जाना

श्री राम ने कहा, सुनो जानकी, अब शिव-पूजा कर ही स्वदेश जाऊँगा।

शिबपूजा करिते रामेर हैल मन * बुझिया पुष्पक-रथ नामिल तखन
गड़िया बालिर शिब दिलेन लक्ष्मण * हनुमान आनिलेन कुसुम चन्दन
स्नान करि बसिलेन सीता ठाकुराणी * जांगालेर उपरे पूजेन शूलपाणि
जांगाल-उपरे शिब स्थापिलेन राम *से कारणे सेतुबन्ध रामेश्वर नाम६६८
पुनः राम चड़िलेन रथे कुतूहले * राम-सीता दुइजने स्वर्ण-चतुर्द्दोलि
चतुर्द्दोलि द्वारी मात्र रहेन लक्ष्मण * राम-सीता दोंहे हय कथोपकथन
दृष्टि कर जानकि, समुद्र तीरे हेथा * घर साजाइनु मोरा दिया लता-पाता
लतार बन्धन घर, पातार छाउनि * एक योजनेर पथ घर एक खानि
एइखाने विभीषण-सहित मिलन * एइखाने सागर दिलेन दरशन
किष्किन्ध्यार देख एइ गाछेर मयालि* सुग्रीव हइल मित्र, हेथा मारि बालि
ऋष्यमूक-पर्व्वत जे अत्युच्च शिखर * सुग्रीव मितार घर उहार उपर६६९
सीता बलिलेन, राम, कमल-लोचन * ए पर्व्वते देखिनु वानर पंचजन
बस्त्र छिँड़ि फेलिलाम गात्र-आभरण * श्रीराम लक्ष्मण बलि करिनु क्रन्दन
लता-पाता धरि आमि रहिवार मने *छाड़ छाड़ बलि दुष्ट चुले धरिटाने६७०

राम को शिवपूजा करने का मन है यह समझकर पुष्पक-रथ नीचे उतर आया। लक्ष्मण ने बालू से शिवलिंग बना दिया। हनुमान फूल और चन्दन ले आए। स्नान कर सीता जी भी बैठ गईं। सेतु के ऊपर शूलपाणि शिवजी की पूजा होने लगी। सेतु के ऊपर राम ने शिव जी की स्थापना की। इस कारण इसका नाम सेतुबन्ध रामेश्वर पड़ा ॥ ६६८ ॥

फिर राम कौतूहल से रथ पर बैठ गये। स्वर्ण-चौडोल में राम और सीता बैठे। चतुर्दोल के द्वार पर केवल लक्ष्मण प्रहरी रहे। राम ने सीता से कहा, जानकी ! जरा समुद्र के किनारे तो देखो। यहाँ हम लोगों ने पत्तियों और बेलों से कुटिया बनाई थी। लता के बन्धन और पत्तों का छावन रहा। (तुम्हारे वियोग के समय यहाँ का) एक-एक घर (एक-एक पैग) योजन भर रास्ते के समान रहा। यहीं पर विभीषण से भेंट हुई। यहीं सागर ने दर्शन दिया। किष्किन्ध्या के वृक्षों का पुंज देखो, यहीं सुग्रीव मेरा मित्र बना और यहीं मैंने बाली को मारा। ऋष्यमूक पर्वत पर जो ऊँची चोटी देख रही हो उसी पर मित्र सुग्रीव का घर है ॥ ६६९ ॥

सीता ने कहा, हे कमललोचन राम, इस पर्वत पर मैंने पाँच वानर देखे थे। कपड़ा फाड़ कर और शरीर का आभूषण निकालकर मैंने फेंका था और श्री राम-लक्ष्मण कह कर रोती रही। रुकने के लिए मैं बेल और पत्तियों से चिमटने लगी तो दुष्ट रावण ने बालों के झोंटे पकड़कर मुझे खींचा था ॥ ६७० ॥

श्रीराम बलेन, नाहि कह से वचन ※ तोमारे हरिया तार हइल मरण
चौद्दयुग छिल रावणेर परमायु ※ तव चुल धरिया से हइल अल्पायु
पम्पा-सरोवर सीता कर निरीक्षण ※ छिलेन उहार तीरे मतंग-ब्राह्मण
स्नान-वस्त्र राखिलेन मुनि बृक्ष-डाले ※ हइल सहस्त्र वर्ष तबु नाहि गले
मरिल कबन्ध हेथा घोर-दरशन ※ जाहार एकैक हाथ एकैक योजन
जटायु-पक्षीर स्थान देखह जानकि ※तोमा लागि जुद्ध करि प्राण दिल पाखी
प्रमोदिया घर देख करिल लक्ष्मण ※ एइ घर हैते तोमा हरिल रावण
तोमा हाराइया मोर हइल हुताश ※ एइ घरे करिलाम दुइ उपवास
ओइ आर रणस्थली देखह सुन्दरि ※ चौद हाजार राक्षसे खर-दूषणेरे मारि
अगस्त्य-मुनिर स्थान देख पंचबटी ※ जथा शूर्पणखार नासिका कान काटि
ओइ देख मुनि-पाड़ा शरभंग घर ※ जथा धनुर्ब्बाण मोरे दिला पुरन्दर
अत्रिमुनि-गृह सीता नहे बहु दूर ※ जेखाने परिला तुमि सुन्दर सिन्दुर
कुन्ती-नदी-तीर एइ कर प्रणिधान ※ करिलाम जेखाने पितार पिंडदान
हाते पिंड निते पिता एलेन गोचरे ※ शास्त्रमत थुइलाम कुशेर उपरे
चित्रकूट गिरि सीता, ऐं देखा जाय ※ भरत आइल जथा लइते आमाय

श्री राम ने कहा, यह बातें मत करो। तुम्हारा हरण कर उसकी मृत्यु हुई। रावण की आयु चौदह युगों के बराबर थी, तुम्हारे बालों को छूते ही वह अल्पायु बन गया। हे सीता, यह देखो पम्पा सरोवर है। इसी के तट पर मतंग नामक ब्राह्मण रहते थे। उस मुनि ने वृक्ष की डाली पर स्नान-वस्त्र रख दिया था जो कि सहस्त्र वर्ष बीत जाने पर भी गला नहीं। यहाँ एक भीषण रूपवाला कबन्ध मरा जिसका एक-एक हाथ, एक-एक योजन लम्बा था। जानकी, यह देखो जटायु पक्षी का स्थान। उस पक्षी ने तुम्हारे लिए लड़कर प्राण दे दिये। देखो लक्ष्मण ने प्रसन्नतापूर्वक तुम्हारे लिए वह कुटी बनायी थी और उसी कुटी से रावण ने तुम्हारा हरण किया था। तुमको खोकर मैं बिकल हो गया और इसी कुटी में मैंने दो दिन तक उपवास किया। हे सुन्दरी, यह देखो एक दूसरी रणभूमि है। यहाँ चौदह हजार राक्षसों के साथ मैंने खर-दूषण को मारा था। यह अगस्त्य मुनि का स्थान पँचवटी देखो जहाँ मैंने शूर्पनखा के नाक-कान काट लिये थे। वह देखो मुनियों का आश्रम है, शरभंग का घर है जहाँ पुरन्दर (इन्द्र) ने मुझको धनुष-बाण दिया था। हे सीता, अत्रि-मुनि का घर यहाँ से थोड़ी दूर पर है जहाँ तुमने भव्य सिन्दूर लगाया था। यह कुन्ती नदी का तट है यहीं मैंने पिता को पिंडदान किया था। यहाँ हाथों में पिंड लेने के लिए मेरे पिता साक्षात् आये थे। किन्तु शास्त्र के अनुसार मैंने पिंड को कुश पर रखा। हे सीता, वह देखो, चित्रकूट पर्वत दिखाई पड़ रहा है जहाँ

नारद बशिष्ठ एल कुल-पुरोहित * भरत विनय करिलेक जथोचित
शुनिले भरत-बाक्य पितृसत्य नड़े * कार्य्य-सिद्धि हइले सकले मने पड़े
शृंगबेर-पुरे देख गाछेर मयाल * जाहे आछे मित्र मोर गुहक-चंडाल
नन्दिग्रामे देख सीता, गाछेर मयालि * जेखाने भरत भाइ आछे महाबली ६७१
नन्दिग्राम नाम शुनि बानर कौतुकी * रथे थाकि देखे तारा दिया डँकि झुँकि
नन्दिग्राम-नामे सबे हरिष विशेष * सबे बले, प्रभु, आजि जाब बुझि देश
श्रीराम बलेन, हेथा मुनि भरद्वाज * तार सह सम्भाषिते हइबेक ब्याज ६७२
बन्दिते मुनिर पद श्रीरामेर मन * बुझिया आपनि रथ नामिल तखन
मुनि-तपोवने राम करिया प्रबेश * देखिलेन सर्व्वत्र सकल सन्निबेश
मुनिर चरणे राम करि नमस्कार * जिज्ञासेन, कह मुनि शुभ-समाचार
बहुकाल बनबासी, ना जानि कुशल * कह आगे भरतेर राज्य बलाबल
माता कि विमाता कि पितार जत राणी * के केमन आछेन, ता' किछु नाहि जानि
मुनि बले, राम, तुमि ना हओ उतरोल * सकले आछेन भाल, आसि देह कोल
माता कि बिमाता तब केह नाहि मरे * देशे गिया सबारे देखिबे घरे-घरे

मुझको भरत लिवा ले जाने के लिए आये थे। कुल-पुरोहित बशिष्ठ और नारद आए और भरत ने भी यथोचित विनय किया। भरत का कहना मानने पर पिता के बचन का लंघन हो जाता। काम सफल हो जाते सब कुछ याद आ जाता है। शृंगवेर-पुर में वृक्षों का जमघट देखो जहाँ मेरा मित्र चंडाल गुहक रहता है। हे सीता, वह देखो नन्दी ग्राम है, जहाँ पेड़ों का झुंड है वहाँ मेरा महाबली भाई भरत है ॥ ६७१ ॥

नन्दीग्राम का नाम सुनकर बानर कौतुक से भर गये। वे रथ में रहकर झाँक-झाँक कर देखने लगे। नन्दी ग्राम नाम से सभी को विशेष हर्ष हुआ, सभी कहने लगे, प्रभु आज शायद हमलोग देश पहुँच जाएँगे। श्री राम ने कहा, यहाँ मुनि भरद्वाज हैं, उनसे सम्भाषण करने में कुछ समय लगेगा ॥ ६७२ ॥

मुनि की पद-वन्दना करने को श्री राम का मन हुआ तो यह आभास पाकर स्वयं रथ नीचे उतर आया। मुनि के तपोवन में प्रवेश कर राम ने सब कहीं सारी व्यवस्था देखी। फिर मुनि के चरणों में प्रणाम कर राम ने पूछा, हे मुनिवर, अपना कुशल-मंगल सुनाइये। मैं बहुत दिनों से बनवासी हूँ इसलिए मुझे कोई कुशल समाचार ज्ञात नहीं। पहले भरत के राज्य की शक्ति और दुर्वलता के बारे में बताओ। मेरी माँ, विमाता और पिता की जितनी रानियाँ थीं वे कैसी हैं मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ। मुनि ने कहा, राम, उतावले मत होओ, सभी कुशल से हैं, आओ गले मिलो। तुम्हारी माँ या विमाता कोई भी मरी नहीं, देश जाकर सभी को अपने-अपने घरों में पाओगे।

राजकार्य्ये भरतेर अपूर्व्व काहिनी ❊ चारिजुगे त्रिभुवने कोथाओ ना शुनि
चतुर्द्दोल सिंहासन छाड़ि खाट पाट ❊ हस्ती घोड़ा आछे, तबु भूमे वहे बाट
गाछेर बाकल परे, जटा धरे शिरे ❊ अगुरु चन्दन चुया ना माखे शरीरे
भरत हइया राजा नहे राजभोगी ❊ मुनि-व्यवहार करे जेन महाजोगी
रत्न-सिंहासनेते नेतेर वस्त्र पाति ❊ तोमार पादुका थुये धरे दंड-छाति
पादुकार हेंटे वैसे कृष्णसार-चर्म्मे ❊ वशिष्ठ नारदे लये थाके राजकर्म्मे
देओआन सारिया भरत घरे जबे जाय❊ तव पादुकार ठाँइ मागये विदाय६७३
शुनिया मुनिर कथा रामेर उल्लास ❊ आग्रह हइल ताँर करिते सम्भाष
मुनि बले, श्रीराम, आइला निकेतन ❊ तव दरशने मम सफल जीवन
मुनिगण जज्ञ करे बिष्णु प्रीति-फले ❊ सेइ विष्णु आसियाछ कि तपेर बले
रामरूपे श्रीहरि, आइला मम पाश ❊ कि करिब प्रार्थना, हेथाइ स्वर्गबास
जत दुःख पेले राम दंडक-कानने ❊ ततोधिक दुःख तव सीतार हरणे
पाइला बिस्तर दुःख राक्षसेर रणे ❊ सर्व्वदुःख पासरिला मारिया रावणे

भरत के राजकार्य की कथा अनोखी है, चारों युगों में तीनों लोकों में कभी ऐसी शासन व्यवस्था नहीं सुनी गई। भरत सिंहासन, खाट, चतुर्दोल आदि सभी छोड़े हुए हैं, उनके पास हाथी है, घोड़ा है, फिर भी पैदल चलते हैं। पेड़ की छाल पहनते हैं और सिर पर जटा रखे हुए हैं। शरीर पर अगुरु चन्दन आदि का लेप नहीं करते, भरत राजा होकर भी राजभोग नहीं करते, मुनियों जैसा आचरण करते हैं मानों महायोगी हो। रत्न-सिंहासन पर रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर तुम्हारी पादुका रख उस पर दंड और छत्र लगाते हैं। पादुका से नीचे काले हिरन की चाम पर बैठकर वशिष्ठ और नारद को लेकर राजकर्म में लगे रहते हैं। राज-सभा का कार्य समाप्त कर जब भरत घर जाते हैं तब तुम्हारे खड़ाऊँ से वह बिदा माँगते हैं॥ ६७३ ॥

मुनि की बात सुनकर राम अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनसे और भी बातें करने का आग्रह प्रकट किया। मुनि ने कहा, श्री राम ! तुम हमारे आश्रम में आए, तुम्हारे दर्शन से मेरा जीवन सफल हो गया। विष्णु की प्रीति प्राप्त करने के लिए मुनि यज्ञ किया करते हैं, जाने मेरे किस तप के फल से वही विष्णु तुम आज यहाँ आए हो। हे श्री हरि तुम आज मेरे पास राम का रूप धारण कर आए हो, तुमसे भला क्या प्रार्थना करूँ, मुझको इसी लोक में स्वर्गवास का आनन्द मिल रहा है। हे राम तुमको दंडक-वन में जितना दुःख मिला, उससे अधिक दुःख तुमको सीता-हरण पर मिला। रावण के साथ युद्ध में तुमको कितना ही कष्ट मिला लेकिन अब रावण को मारने के बाद तुम्हारा सब दुःख जाता रहा। हे राम तुमने

तुमि राम, उद्धारिला पृथिवीर भार ❋ जे कर्म्मेर कारणे तोमार अबतार
से सकल जानियाछि राम आमि ध्याने ❋ एक भिक्षा देह प्रभु, चाहि तव स्थाने
जदि आसियाछ तुमि आमार आगारे ❋ भुंजाइब सबाकारे अतिथि-आचारे
तोमार प्रसादे दुःखी नहे एइ मुनि ❋ आज्ञा कर भुंजाब सत्तर अक्षौहिणी
दिव्य आओवास दिब, दिव्य दिव्यबासा ❋ भालमते करिब जे सैन्येरे सम्भाषा
आलापे तोमार संगे बंचिब रजनी ❋ रजनी प्रभाते दिब तोमारे मेलानि ६७४
श्रीराम बलेन, तव अलंध्य बचन ❋ आजि हेथा थाकि, कालि देशेते गमन
बानरेर भक्ष्यबस्तु फल से केबल ❋ तपोबृक्षे तोमार फलये नाना फल
एइ देशे आछे जत काँटाल रसाल ❋ अकाले धरुक फल-फुल डाले-डाल
शुष्कवृक्ष मंजरुक फल-फूल-पाते ❋ लागुक मधुर चाक डाले चारिभिते
नन्दिग्राम छाड़िया जाइते अजोध्याय ❋ पथे जेन बानरेरा फल खेते पाय
जत बर चान राम, तत देन ऋषि ❋ आलापे दोंहार मन दुइजने तुषि ६७५
जज्ञशाले भरद्वाज करिलेन ध्यान ❋ सर्ब्ब-अग्रे बिश्वकर्म्मा हन आगुयान
बिश्वकर्म्मा निर्म्माइला सोनार चोउरि ❋ स्वर्ण-घाट बान्धिलेन दीघल पुखरी

पृथ्वी का भार दूर किया, इसी कार्य के लिए तुमने अवतार लिया। राम, मैंने यह सब ध्यान में जान लिया है। हे प्रभु, मुझको एक भिक्षा दो, तुमसे चाहता हूँ। अगर तुम मेरे निवास-स्थान पर आये हो तो मैं सभी को अतिथि के रूप में भोजन कराऊँगा। तुम्हारी कृपा से मुझे कोई कष्ट न होगा, आदेश दो मैं तुम्हारी सत्तर अक्षौहिणी सेना को भोजन कराऊँगा। उनके लिए सुन्दर वासस्थान दूँगा अच्छे-अच्छे घर दूँगा और अच्छी तरह से सेना की आवभगत करूँगा। तुम्हारे साथ बातचीत करते हुए रात काट दूँगा और सवेरे तुमको बिदा दे दूँगा ॥ ६७४ ॥

श्री राम ने कहा, आपके वचन मैं लांघ नहीं सकता। आज यहाँ रहूँगा और कल स्वदेश जाऊँगा। वानरों का भोजन है फल, तुम्हारे तपोवन के वृक्षों में तरह-तरह के फल फले हैं। इस देश में जितने आम-कटहल के वृक्ष हैं उनमें असमय फल-फूल पत्तियाँ निकल आवें। सूखे पेड़ भी फल-फूल पत्तियों से मँजरित हो उठें। चारों ओर की डालियों पर मधु-मक्खियों के छत्ते लग जायँ। नन्दीग्राम छोड़कर अयोध्या जाने के रास्ते वानरों को फल खाने को मिले। राम ने जो-जो वर माँगा ऋषि ने वही-वही वर दिया और बातचीत से एक दूसरे के मन को प्रसन्न करने लगे ॥ ६७५ ॥

यज्ञशाला में भरद्वाज मुनि ने ध्यान किया तो सबसे पहले विश्वकर्मा आगे बढ़ आए। विश्वकर्मा ने सोने का चबूतरा बनाया फिर बड़े पोखर पर सोने का घाट बनाया। अस्सी योजन का रास्ता निकालकर उन्होंने

आशी-जोजनेर पथ करि आयतन ❋ द्वितीय अमराबती करिला गठन
संसार आनिते मुनि पारेन धेयाने ❋ देवकन्यागणे मुनि आनिला सेखाने
ठाँइ ठाँइ बिचित्र सोनार नाट्यशाला❋ देवता--गन्धर्ब्ब–बिद्याधरादिर मेला
मुनिर तपेर फले त्रिभुवन मोहे ❋ जान्हवी-जमुना नदी सेइखाने बहे६७६
आर बार भरद्वाज जुड़िलेक ध्यान ❋ आपनि कमलादेवी कैला अधिष्ठान
लक्ष्मीदेबी जज्ञे गिया करेन रन्धन ❋ देब कन्यागणे करे से परिबेषण
स्वर्णथाले परिबेषे, सबे बसि खाय ❋ केबा अन्न दिया जाय देखिते ना पाय
कि कब अन्नेर कथा कोमल मधुर ❋ खाइले मनेते हय, कि रस मधुर
कि मनोरंजन से ब्यंजन नानाबिधि ❋ चर्ब्य चूष्य लेह्य पेय भक्ष्य चतुर्ब्बिध
जथेष्ट मिष्टान्न से प्रचुर मतिचुर ❋ जाहा निरखिबा मात्र हय मति चूर
निखुँत निखूँत मंडा आर रसकरा ❋ दृष्टिमात्र मनोहरा दिव्य मनोहरा
सरु-चाकलिर राशि लबण-ठिकरि ❋ गुड़पिठे रुटि लुचि खुरमा कचुरि
क्षीर क्षीरसार क्षीर-लाडु मुगेर साउलि❋ अमृता चितुइ पुलि नारिकेल पुलि
कलाबड़ा तालबड़ा आर छानाबड़ा ❋छानाभाजा खाजा गजा जिलापि पाँपड़ा

एक दूसरी अमरावती का निर्माण कर डाला। मुनि ध्यान द्वारा संसार को ला सकते हैं, उन्होंने तपोबल से देवकन्याओं को बुलाया। जगह-जगह पर सोने की विचित्र नाट्यशालाएँ बनीं जहाँ देवता-गन्धर्व तथा विद्याधरियों का मेला लग गया। मुनि के तपोबल से संसार मुग्ध हो गया, गंगा और यमुना दोनों वहीं बहने लगीं॥ ६७६ ॥

फिर भरद्वाज मुनि ध्यान पर बैठ गये तो स्वयं देवी कमला आ उपस्थित हुईं। लक्ष्मी देवी ने जाकर यज्ञ में अन्न पकाया और देवकन्याएँ परोसने लग गईं। सोने की थाली, सोने का कटोरा, जलपात्र और पीढ़ा सब सजा दिये गये। अस्सी योजन लम्बे पथ पर सब कतारों में बैठ गये। सोने की थालियों में भोजन परोसा गया और सब बैठकर खाने लगे। कौन अन्न दे जाता कोई देख नहीं पाता। इस अन्न का क्या कहना, इतना कोमल और मधुर है कि खाते ही लगता कितना रसपूर्ण और मिठासभरा है। विविध प्रकार के व्यंजन सबका मनोरंजन करने लगे। चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय चारों प्रकार के खाद्य-पदार्थ मिले। पर्याप्त मात्रा में मिठाई मिली। ऐसा मोतीचूर मिला जिसे देखते ही क्षणभर में मति मारी जाय। मंडा और रसकरा नामक मिठाइयों में कोई भी दोष नहीं। मनोहरा नामक मिठाई देखने में भी मनोहर है। महीन चाकली (चावल की बनी मिठाई) और ढेर सारी लवण-ठिकरी (नमक मिला चावल और नारियल का बना पिष्टक)। गुड़ की बनी मिठाई, रोटी, पूड़ी, कचौड़ी और खुरमा। खीर, खीरसा, खोवे का लड्डू, मूँग का लड्डू, इमरती, चितुइ, नारियल

सुगन्धि कोमल अन्न पायस पिष्टक ❊ भोजन करिल सुखे रामेर कटक
देबयोग्य भक्ष्य भोग रसाल सुमृदु ❊ जत पाय तत खाय, खाइते सुस्वादु
आकंठ पुरिया खाय जत धरे पेटे ❊ नड़िते चड़िते नारे, पेट पाछे फाटे
उलटिया डाबरे करिल आचमन ❊ स्वर्णखाटे शुये करे ताम्बूल भक्षण
ऊर्ध्वदृष्टे रहे सबे, नाहि चाय हेंटे ❊ कोनरूपे चित हये शुइलेक खाटे
देब-कन्या कोले करि निद्रा जाय सुखे ❊ सुखे रात्रि बंचे सबे मनेर कौतुके
श्रीराम लक्ष्मण सीता करेन आहार ❊ भरद्वाज-मुनिर जे फल तपस्यार
नाना सुखे हइल निशार अबसान ❊ श्रीराम स्मरिया सबे करे गात्रोत्थान ६७७

श्री रामेर स्वदेश—गमन ओ स्वजन सम्भाषण

हनुमाने श्रीराम करेन आज्ञादान ❊ भरतेरे समाचार देह हनुमान
नन्दिग्रामे जाह हनू, भरत-उद्देशे ❊ कहिबे सकल कथा अशेष-विशेषे
शृंगबेर-पुरे तुमि जाबे आगुयान ❊ चंडाल-मितारे मम जानाबे कल्याण ६७८
चक्षुर निमिषे हनू उठिल गगन ❊ भरत सम्भाषे जाय त्वरित गमन

की बर्फी। केले का बड़ा, ताड़ का बड़ा और छेने का बड़ा। छेनाभाजा, खाजा, गजक, जलेबी, पँपड़ी। सुगन्धित कोमल अन्न, पायस और पिष्टक। इन सभी खाद्य-पदार्थों का राम के कटक ने सुख से भोजन किया। देवताओं के योग्य रसभरा और स्वादिष्ट खाद्य जितना भी मिला खाते गये। आकंठ पेट भर कर उन लोगों ने खाया, सब लोग हिलने-डुलने से भी लाचार हो गये कि कहीं पेट न फट जाय। चिलमची उलट कर मुँह धोया और सोने की पलंग पर लेट कर पान चबाने लगे। सभी ऊपर की ओर दृष्टि किये हैं नीचे की ओर नहीं देखते। किसी प्रकार से चित्त होकर खाट पर लेटे रहे। गोद में देवकन्या लेकर सभी सुख से सोने लगे। सभी परमानन्द से रात्रि काटने लगे। श्रीराम-लक्ष्मण और सीता भी भोजन करने बैठे, यह भरद्वाज मुनि की तपस्या का फल था जो ऐसा हुआ। इस प्रकार तरह-तरह के सुखभोग के साथ रात्रि समाप्त हुई। श्रीराम का स्मरण कर सभी बिस्तर से उठे ॥ ६७७ ॥

श्री राम का स्वदेश गमन और स्वजन सम्भाषण

श्रीराम ने हनुमान को आदेश दिया, हनुमान, तुम जाकर भरत को समाचार दो। भरत से मिलने तुम नन्दीग्राम जाओ। सारी बातें उन्हें विस्तार से बता देना। तुम पहले शृंगवेर पुर पहुँचोगे वहाँ मेरे चण्डाल-मित्र से मेरा कुशल बताना ॥ ६७८ ॥

पलक झँपते ही हनुमान आकाश में उड़ गये। वह फुर्ती से भरत से

मने-मने चिन्ते वीर पवन-नन्दन ※ कि रूप धरिया गुहे दिब दरशन
स्वभावे चंडाल जाति, बड़इ चंचल ※ वानर देखिया मोरे करिबेक बल
भेटिब मनुष्य रूपे तार विद्यमान ※ एइ जुक्ति मने-मने करे हनूमान
चक्षुर निमिषे गेल शृंगबेर-पुरे ※ निज रूप त्यजिया मनुष्य रूप धरे
गजमुखी घर से छाउनी सब नाड़ा ※ हनूमान भावे एइ चंडालेर पाड़ा
बसियाछे गुहक से, आपन देओयाने ※ नर-रूपे हनूमान गेल विद्यमाने
गुहक चंडाल तार गले पुष्पमाल ※ हनूमान कहे वार्त्ता, शुन हे चंडाल
जानाइला रामचन्द्र तोमारे कल्याण ※ मित्र-सम्भाषणे चल त्यजिया देवान
हरिषे चंडाल पुछे गदगद-भाषे ※ श्रीराम लक्ष्मण सीता कतदूर आसे
हनू कहे राम छिला भरद्वाज-पुरे ※ पथे देखा पावे तार चलह सत्वरे६७९
श्रीराम आइसे देशे, पड़े गेल साड़ा ※झागुड़-गुड़ वाद्य बाजे,नाचे चंडाल-पाड़ा
उभ करि झुंटि बान्धे, टानि परे धड़ा※ नाना-अस्त्रे साजे जाठि शेलओ झकड़ा
चतुर्द्दिके हात तुलि बाजाय चामुचे ※ उफड़-धाफड़ करि चंडाल-फौज नाचे
नाचये चंडाल सब आनन्द करिये ※ देखिया आनन्दे नाचे चंडालेर मेये

मिलने चल पड़े। पवन-नन्दन मन ही मन यह सोचते हुए चले कि गुह चण्डाल को मैं किस रूप में दर्शन दूँ। चण्डाल जातिवाले स्वभाव से बड़े चंचल होते हैं, मुझको वानर देखकर मुझसे बल आजमाने लगेगा। हनुमान ने मन ही मन निश्चित कर लिया, उसके साथ मनुष्य का रूप लेकर ही भेंट करूँगा। यही युक्ति हनुमान ने मन ही मन की। आँख झपकते ही वह शृंगबेरपुर जा पहुँचे अपना रूप त्याग कर उन्होंने मनुष्य का रूप रख लिया। गजमुख जैसा घर जिसकी छावन ढीली थी उसे देखकर ही हनुमान जान गया कि यही चण्डालों का टोला है। गुहक अपनी सभा में बैठा था कि हनुमान नर-रूप धारण किये उसके सम्मुख जा पहुँचे। चण्डाल गुहक के गले में फूलों की माला है। हनुमान ने कहा, हे चण्डाल, सन्देशा सुनो। रामचन्द्र ने तुमको अपना कुशल समाचार भेजा है। अपनी सभा छोड़ कर मित्र से सम्भाषण करने चलो। हर्ष से चण्डाल ने गदगद होकर पूछा, श्रीराम-लक्ष्मण और सीता कितनी दूर तक आ गये हैं। हनुमान ने कहा, राम भरद्वाज पुर में थे, जल्दी चलो रास्ते में भेंट हो जायगी ॥ ६७९ ॥

श्रीराम आ रहे हैं यह सुन कर चारों ओर हलचल मच गई। "झाँय-गुड़-गुड़" के शब्द करके बाजा बजने लगा और चण्डाल-टोला नाचने लग गया। बालों का झोंटा ऊँचे बाँध कर और धोती कसके पहनकर जाठि, शेल और झकड़ा जैसे अस्त्रों से सुसज्जित हो वे चल पड़े। चारों ओर हाथ फैला कर वे चामुचे नामक बाजा बजाने लगे। उछल-

गुह वले, धना मना दासी जे सकल ❋ मित्र-सम्भाषणे लवे शालुकेर फल
ओड़ा भरा मत्स्य लवे कै ओ उत्पल ❋ पद्मेर मृणाल लवे, आर पानिफल
चलिल गुहेर फौज दगड़े दिया सान ❋ सातकोटि चंडाल हइल आगुयान
एकैक चंडाल जाय देखिते पर्ब्बत ❋ जुड़िया चलिल सात-प्रहरेर पथ
नाना द्रव्य गुहक रामेर काछे एड़े ❋ रामेर इंगित पेये वानरेरा नड़े ६८०
श्रीराम बलेन, मित्र, आछ त कुशले ❋ गुह बले, राम, तुइ आइलि भाले भाले
शुनिया गुहेर कथा रामेर सन्तोष ❋ भक्तिमात्र लन राम, नाहि लन दोष
श्रीराम गुहेर मनस्तुष्टिर कारण ❋ रथ हैते उलिया दिलेन आलिंगन
श्रीरामेर जगते एहेन ठाकुरालि ❋ चंडाले वानरे आर राक्षसे मिलालि
सात-कोटि चंडाल देखिल राम-रूप ❋ अनायासे उत्तीर्ण हइल भव-कूप
राम-सह सम्भाषणे लभि दिव्यज्ञान ❋ सर्ब्बलोक स्वर्गे गेल चड़िया बिमान
'राम राम' बलिया पराण जाय जार ❋ चरमे से स्वर्गे जाय, जन्म नाहि तार ६८१
निजरूपे हनूमान उठिल गगने ❋ भरत समीपे चले त्वरित-गमने

उछल कर चण्डालों की फौज नाचने लगी। सारे चण्डालों को आनन्द से नाचते देखकर चण्डाल की बेटी भी खुशी से नाचने लगी। गुह ने कहा, धना मना आदि जो दासियाँ हैं वे मेरे मित्र-सम्भाषण में कुमुद के फल ले चलें। टोकरा भरकर कवई और उत्पल मछली ले चलें। कमल के मृणाल और सिंघाड़े ले चलें। गुह की फौज नगाड़े पर चोट कर आगे बढ़ी। सात करोड़ चण्डाल चल पड़े। एक-एक चण्डाल ऐसे चलता मानों पर्वत चल रहा हो। सात पहर का रास्ता घेर कर वह चलता। विभिन्न द्रव्य लेकर गुहक राम के पास आया। राम का इशारा पाकर वानर जरा खिसक गये ॥ ६८० ॥

श्रीराम ने कहा, मित्र, कुशल से तो हो? गुह ने कहा, राम, तुम कुशल मंगलपूर्वक वापस आ गये। गुह की बात सुनकर राम को बड़ा सन्तोष हुआ, उन्होंने केवल भक्ति के वश, बुरा नहीं माना। श्रीराम गुह के सन्तोष के लिए रथ से उतर कर उससे गले मिले। श्रीराम की संसार में ऐसी प्रभुता है कि चण्डाल, वानर और राक्षस में मित्रता हो गई। सात करोड़ चण्डालों ने राम का स्वरूप देखा और अनायास ही वे संसार रूपी कूप से उबर आए। राम से सम्भाषण कर उनको दिव्य-ज्ञान प्राप्त हुआ और सारे के सारे लोग विमान में चढ़कर स्वर्ग चले गये। राम-राम कह कर जिसके प्राण निकलते हैं वह सीधे स्वर्ग जाता है और उसका फिर जन्म नहीं होता ॥ ६८१ ॥

अपना स्वरूप अपना कर हनुमान गगन पर चढ़ गये और तेज चाल से भरत के पास चल पड़े। विभिन्न तीर्थों को पार किया, कितनी

नाना तीर्थ एड़ाइल, नदी नाना स्थानी ❋ हइल गोमती पार परम सन्धानी
हेंटे शालगाछ एड़े त्रिशत् जोजन ❋ नन्दिग्रामे उत्तरिल पवन नन्दन
गगने-मंडले बीर रहे अन्तरीक्षे ❋ तथाय थाकिया वीर नन्दिग्राम देखे
गड़ेर प्राचीर देखे पर्व्वतेर सार ❋ हस्ति-अश्व देखे वीर पर्व्वत-आकार
सिंहासने पादुका वेष्टित शुभ्र नेते ❋ श्वेत-चामरेर वायु पड़े चारिभिते
त्रियोजन प्रशस्त प्राचीर सुनिर्म्माण ❋ सिंहद्वार शोभा करे बिचित्र-बिधान
पृथिबीते राजा आछे अजुत-अजुत ❋ अष्ट-आशी कोटि राजा द्वारेते मजुत
बिचित्र-निर्म्माण घर बिचित्र आवास ❋ अत्युच्च एकैक घर ठेकेछे आकाश
मरकत-स्तम्भे शोभे माणिक-रतन ❋ हाति-घोड़ा संख्या नाइ, के करे गणन
ठाँइ ठाँइ बिचित्र सोनार नाट्य-शाला ❋ देब-दैत्य-गन्धर्ब्ब-आदिर जत मेला
रत्न-सिंहासनोपरि नेतबस्त्र पाति ❋ तदुपरि पादुका राखिया धरे छाति
भरत ताहार नीचे कृष्णसार-चर्म्मे ❋ बशिष्ठ नारदे लये थाके राजकर्म्मे ६८२
भरत साक्षात हन विष्णु-अधिष्ठान ❋ अनुमाने भरते चिनिल हनूमान
उलिया तथाय वीर करिल प्रणाम ❋ जोड़हात करि बले आपनार नाम
हनूमान नाम मोर, जातिते बानर ❋ सुग्रीबेर पात्र आमि पवन-कोङर

ही नदियाँ लाँघ गये। परम सन्धानी गोमती भी पार कर गये। नीचे तीस योजन वाला साखू भी वह लाँघ गये। तव पवन-नन्दन नन्दीग्राम आ पहुँचे। गगन मंडल में शून्य में स्थित होकर उस वीर ने नन्दीग्राम देखा। किले की दीवार मानों पहाड़ सी ऊँची हो। वीर ने पर्वत के आकार वाले घोड़े और हाथी देखे। सिंहासन पर सफेद सूक्ष्मवस्त्रों से लिपटी हुई पादुकाएँ देखीं। श्वेत चँवर की हवा चारों ओर वह रही थी। तीन योजन प्रशस्त सुनिर्मित प्राचीर देखा। विचित्र गठन का सिंहद्वार शोभा दे रहा था। संसार में करोड़ों राजा हैं। अट्ठासी करोड़ राजा द्वार पर मौजूद हैं। विचित्र निर्माण के भवन और आवास अनोखे हैं। एक-एक मकान इतना ऊँचा है कि आकाश छू रहा है। पन्ने के बने स्तम्भों में माणिक जड़े हुए हैं। हाथी-घोड़ों की कोई गिनती नहीं, कौन गिने। जगह-जगह पर विचित्र सोने की नाट्यशालाएँ बनी हुई हैं जहाँ देव-दानव-गन्धर्व आदि का जमघट है। रत्न सिंहासन पर रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर पादुका रखकर छतरी थामे हैं। उससे नीचे कृष्णसार हिरण के चमड़े पर बैठकर भरत, वशिष्ठ और नारद के साथ राजकार्य में व्यस्त हैं ॥ ६८२ ॥

भरत साक्षात् विष्णु के अधिष्ठान हैं। अनुमान से हनुमान ने भरत को पहचान लिया। वहाँ हेल कर वीर ने प्रणाम किया और हाथ जोड़कर कहा—मेरा नाम हनुमान है, मैं जाति से वानर हूँ, राजा सुग्रीव

स्वयं विष्णु रघुनाथ, आमि ताँर दास॥ एइ पुण्ये पाइलाम तोमार सम्भाष
रघुवंशे भरत आपनि नारायण ॥ तोमा-दरशने हय पाप-विमोचन
केकय-राजेर कन्या तोमार जननी ॥ दशरथ-भूपतिर मध्यमा गृहिणी
राजार महिषी तिनि, राजार नन्दिनी ॥ सौभाग्ये ताँहार समा नहे अन्य राणी
करिला राजार सेबा प्रधाना महिषी ॥ जन्मिला जाँहार गर्भे तुमि पूर्णशशी
वर मागिलेन तिनि अति से अनार्य ॥ श्री रामेर बनबास, भरतेर राज्य
से दुर्नाम गेल ताँर तोमा-पुत्र-गुणे ॥ तोमार चरित्रे चमत्कृत त्रिभुवने
हस्ती घोड़ा रथ एड़ि भूमे बाट बह ॥ राजा हये भ्रातृ-भक्त हेन नहे केह
भरत, भूपाल हये नह राज्यभोगी ॥ मुनि-व्यवहार कर, जेन महाजोगी
जाँहारे आनिते गेले ल'ये राज्यखंड ॥ जाँहार पादुका'परि धर छत्रदंड
बहुकाल दुःखी आछ जाँहार आश्वासे॥ सेइ राम पाठालेन तोमार उद्देशे६८३
शुभवार्त्ता कहे जदि पवन-नन्दन ॥ उठिया भरत तारे देन आलिंगन
हनूमाने कोल दिया छाड़िवारे नारे ॥ मुक्तार गाँथनि जेन चक्षे जल झरे
भरतेर नेत्रजले हनूमान तिते ॥ भरत प्रसाद दिते भाबिछेन चिते

का मैं सभासद हूँ और पवन का पुत्र हूँ। स्वयं विष्णु रघुनाथ का दास हूँ और इसी कारण तुम्हारे साथ सम्भाषण हो सका। हे भरत तुम रघुवंश में स्वयं नारायण हो, तुम्हारे दर्शन से सारे पाप धुल जाते हैं। तुम्हारी माँ राजा केकय की बेटी हैं जो कि राजा दशरथ की मँझली रानी हैं। वे राजा की नन्दिनी हैं और सौभाग्य में उनके समान कोई दूसरी रानी नहीं है। प्रधानमहिषी के रूप में उन्होंने राजा की सेवा की और उन्हीं के गर्भ से तुमने पूर्णचन्द्र के समान जन्म लिया। उन्होंने बड़ा अनुचित किया जो श्रीराम का वनवास और भरत को राज्य का वर माँगा। उनकी वह बदनामी तुम जैसे पुत्र के गुण से दूर हो गयी। तुम्हारे चरित्र को सुनकर त्रिभुवन में सब आश्चर्य करते हैं। हाथी, घोड़े की सवारी त्याग कर तुम भूमि पर पैदल चलते हो। राजा होकर कोई भी ऐसा भ्रातृभक्त नहीं रहता। भरत, तुम भूपाल होकर भी राज्य-भोग नहीं करते, मुनि जैसे आचरण करते हो मानों महायोगी हो। तुम राज्यखण्ड साथ लेकर जिनको लिवा लाने गये थे, जिनकी पादुका के ऊपर छत्रदंड थामे हुए हो, जिनकी प्रतीक्षा में बहुत दिनों से दुखी बने हुए हो उन्हीं राम ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है ॥ ६८३ ॥

जब पवन-नन्दन ने यह शुभ-सन्देश सुनाया तो भरत ने उठकर उनको बाँहों में बाँध लिया। हनुमान को बाँहों में बाँधकर वह छोड़ नहीं पाये उनकी आँखों से मोतियों के समान झर-झर आँसू गिरने लगे। भरत के आँसुओं से हनुमान भीग गये। मन ही मन भरत उनको कोई पुरस्कार देने की सोच रहे हैं।

तिनशत गामी दिल बाछि भाल भाल ॐ दुइशत गाछ दिल रसाल काँटाल
अग्निबर्ण स्वर्ण दिल आशीलक्ष तोला ॐ मणिमुक्ता दिल कत मध्ये गाँथा पला
रूपे गुणे कुले शीले जाहार बाखान ॐ एमन एगार शत कन्या दिल दान
कन्यागणे देखि हासे पबन नन्दन ॐपशु आमि, कन्याय कि मोर प्रयोजन६८४
भरत, जे दान देह, किछुइ ना मानि ॐरामेर मंगल जाहे,ताहा आमि गणि६८५
एत जदि हनूमान कहिल बचन ॐ पुनश्च भरत तारे दिला आलिंगन
बहुदिने शुनिलाम अपूर्ब्ब काहिनी ॐ तुमि नहे बानर देबेर मध्ये गणि
भरत बलेन, वीर, जिज्ञासि तोमाय ॐ कि कार्य्ये बानरगण रामेर सहाय
कोन कोन सेनापति, कि तार व्याख्यान ॐदेशे एले सबाकार करिब सम्मान६८६
एत जदि पूर्ब्बकथा जिज्ञासे भरत ॐ जथाक्रमे हनूमान कहिछे तावत्
राज्य छाड़ि गेला राम पंचवटी बन ॐ शूर्पणखा नाक-कान काटिला लक्ष्मण
मारिलेन तथा खर त्रिशिरा दूषण ॐ मायामृगच्छले सीता हरिल रावण
सुग्रीवेर सह सख्य सीता-अन्वेषण ॐ बालिरे मारिया राज्य सुग्रीवे अर्पण
समस्त बानर जड़ सुग्रीव-आदेशे ॐ सीता अन्वेषिते सबे जाइ देशे देशे

तीन सौ चुनी हुई अच्छी गाय दीं और आम व कटहल के दो सौ पेड़ दिये। आग के रंग वाला सोना अस्सी लाख तोला दिया। कितने ही मोती, मूँगे और माणिक दिये। रूप, गुण, कुल, शील से युक्त उच्चकोटि की ग्यारह सौ कन्याएँ भी दान में दीं ॥ ६८४ ॥

कन्याओं को देखकर पवन-नन्दन हँसने लगे और बोले मैं पशु हूँ, मुझको इन कन्याओं की क्या आवश्यकता है। भरत जो दान दे रहे हैं उसका कुछ भी मुझको स्वीकार नहीं। जिसमें राम का कल्याण हो उसी का मैं विचार करता हूँ ॥ ६८५ ॥

जब हनुमान ने यह कहा तो भरत फिर उनके गले लग गये और बोले बहुत दिनों में मुझे यह कहानी मालूम हुई। तुम वानर नहीं हो, तुम्हारी गणना मैं देवताओं में करता हूँ। भरत ने कहा, वीर तुमसे पूछता हूँ, किस कार्य में वानर राम के सहायक बने। कौन-कौन सेनापति थे उनका ब्योरा बताओ। उनके इस देश में आने पर सभी का सम्मान करूँगा ॥ ६८६ ॥

इतना कहकर भरत ने पूर्ववृत्तान्त सुनना चाहा। हनुमान भी ब्योरेवार सुनाने लग गये। राज्य छोड़ कर राम पंचवटी गये। लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काट डाले। वहाँ (राम ने) खर, त्रिशिरा और दूषण का वध किया। माया-मृग के छल से रावण ने सीता का हरण किया। सीता की खोज करने निकल कर सुग्रीव के साथ मित्रता हुई। बाली को मार कर (राम ने) सुग्रीव को राज्य सौंपा। सुग्रीव के आदेश से हम सारे

एकमास मध्ये राजा करिल निश्चय ※ मासेर अधिक हैले प्राणेर संशय
पाताले प्रबेश करि महा अन्धकार ※ मारिब बानर-सैन्य, जुक्ति करि सार
अन्धकार पातालेते करिनु प्रबेश ※ चाहिया पाताल सप्त ना पाइ उद्देश
बिन्ध्याचले सम्पातिर सह हय देखा ※ राम-नाम बलिते उठिल तार पाखा
जटायूर ज्येष्ठ पक्षिश्रेष्ठ से सम्पाति ※ तार बाक्ये भरत डिंगाइ सरित्पति
सागरेर कुले गेनु सकल बानर ※ एकाकी भरत आमि डिंगाइ सागर
एकाकी लंकार मध्ये करिनु प्रबेश ※ अन्त:पुरे सीतार न पाइनु उद्देश
आवासे आवासे चाहि, सीता नाहि देखि ※ प्राचीरे बसिया कान्दि हये बड़ दु:खी
दुप्रहर रात्रि गेल तृतीय प्रहरे ※ सीता देखि अशोकेर कानन-भितरे
कोथा हैते आलि, जिज्ञासिलेन बैदेही ※ रामेर बृत्तान्त जत, ताहा आमि कहि
रामेर अंगुरी जे दिलाम निदर्शन ※ अंगुरी पाइया सीता करिला क्रन्दन
दिलेन रामेर तरे मस्तकेर मणि ※ कहिलेन जानाइते श्रीरामे काहिनी
से मणि आनिया दिनु राम-बिद्यमाने ※ मणि पेये कान्दिलेन भाइ दुइजने
बानरेर सहायता करि सेतुबन्ध ※ मारिलेन श्रीराम सवंशे दशस्कन्ध
प्रहस्त मरिल नील बानरेर तेजे ※ नागपाशे मुक्त करिलेन पक्षिराजे

वानर सीता की खोज में कितने ही देशों में गये। राजा ने एक महीने का समय दिया। महीना भर से अधिक हो जाने पर प्राणों के लाले पड़ जाएँगे। पाताल में प्रवेश कर देखा कि वहाँ बड़ा अँधेरा है, यह समझ लिया कि वानर-सेना सहित यहीं मर जाऊँगा। सातों पाताल ढूँढ़ने के बाद भी कोई पता नहीं चला। विन्ध्याचल में सम्पाति के साथ भेंट हो गई। राम का नाम लेते ही उसके पंख जम आये। वह सम्पाति जटायु से बड़ा और पक्षियों में श्रेष्ठ था हे भरत, उसी के कहने पर मैंने सागर लाँघा। हम सभी वानर समुद्र तट पर गये और मैंने अकेले ही समुद्र लाँघा और लंका में प्रवेश किया किन्तु अन्त:पुर में सीता का पता न चला। घर-घर में मैं देखता रहा किन्तु सीता नहीं मिली। तब दीवार पर बैठकर दुखी होकर मैं रोने लगा। रात के दो पहर बीत गये, तीसरे पहर में सीता को अशोक कानन में देखा। वैदेही ने मुझसे पूछा, कहाँ से आए हो। राम का सारा विवरण मैंने कह सुनाया। निदर्शन (निशानी) के रूप में मैंने राम की अंगूठी दी तो सीता रोने लगी। राम के लिए उन्होंने अपने मस्तक की मणि दे दी और अपनी सारी कथा श्रीराम से सुनाने के लिए कहा। वह मणि मैंने श्रीराम को लाकर दे दी। मणि पाकर दोनों भाई रोते रहे। वानरों की सहायता से सेतु का निर्माण कर श्रीराम ने दशानन का परिवार सहित विनाश किया। नील वानर के प्रहार से प्रहस्त मारा गया, पक्षीराज गरुड़ ने नागपाश से मुक्त किया।

इन्द्रजिते अतिकाये मारेन लक्ष्मण ※ श्रीरामेर हाते हत हइल रावण
शत्रुक्षय करिलेन राम बाहुबले ※ श्रीराम लक्ष्मण सीता आसेन कुशले
आसिलेन सुग्रीव राक्षस विभीषणे ※ पात्र मित्र लये चल राम-सम्भाषणे
छिलेन श्रीराम कल्य भरद्वाज-घरे ※ पथेते पाइबे देखा, चलह सत्वरे६८७
शुभबार्त्ता कहे जदि बीर हनूमान ※ शत्रुघ्नेरे भरत डाकेन सन्निधान
सुदिन हइल भाइ, दुःख अवशेष ※ बहु दिवसेते राम आइलेन देश
प्रस्तर-प्रतिमा जत आछे स्थाने-स्थान ※ सुगन्धि चन्दने कराओ से सबारे स्नान
देबतार स्थाने बाद्य बाजाक बाइति ※ देह धूप नैबेद्य, घृतेरे ज्वाल वाति
फल-मूल नैबेद्य भरिया देह डाला ※ सुगन्धि चन्दन-काष्ठे ज्वालह पाँजाला
उच्च-नीच स्थान कर एकइ सोसर ※ पथ परिष्कार कर बाछह कंकर
प्रतिपुरे द्वारे द्वारे पोत बृक्ष-कला ※ गाछे गाछे पताका बान्धह पुष्पमाला
आलगोछे टाँगा बान्ध नेतेर उयाड़े ※ पुरनारी देखे जेन थाकि तार आड़े
रामेर चरण जे करिबे निरीक्षण ※ कोटि-कोटि-जन्म-पाय हइबे मोचन६८८
जा बलिल भरत, करिल शत्रुघन ※ नन्दिग्राम हैल जेन अमर भुवन

इन्द्रजीत और अतिकाय को लक्ष्मण ने मारा। और श्रीराम के हाथों से रावण मारा गया। राम ने अपने बाहुबल से शत्रुओं का नाश किया। अब श्रीराम-लक्ष्मण और सीता सकुशल आ रहे हैं। सुग्रीव और राक्षस बिभीषण भी आये हैं। अपने सभासदों के साथ राम की अगवानी करने चलो। कल राम भरद्वाज मुनि के घर पर थे। रास्ते में ही भेंट हो जायगी, जल्दी चलो ॥ ६८७ ॥

जब वीर हनुमान ने यह शुभ सन्देश सुनाया तो भरत ने शत्रुघ्न को निकट बुलवाया और कहा भाई, अब दुःख का अन्त हुआ, शुभदिन आ गया। बहुत दिनों के बाद राम देश आ रहे हैं। स्थान-स्थान पर जितनी प्रस्तर-प्रतिमाएँ बनी हुई हैं उनको सुगन्धित चन्दन से नहलाओ। जितने वादक हैं वे देवताओं के स्थानों में बाजा बजावें। धूप नैवेद्य दो और घी के चिराग जलाओ। फल, फूल, नैवेद्य डलिया भर कर दो। सुगन्धित चन्दन की लकड़ी से अग्निकुंड जलाओ। ऊबड़-खाबड़ जमीन को सपाट बना दो। रास्ते को साफ करो और कंकर चुनकर फेंक दो। प्रत्येक भवन के द्वार पर केले का वृक्ष लगा दो और पेड़ों पर पुष्पमाला और पताकाएँ लगा दो। हल्के से महीन रेशमी कपड़े के परदे टाँग दो, पुरनारियाँ उसकी आड़ में रहकर देखेंगी। श्रीराम के चरणों का जो दर्शन करेगा वह कोटि-कोटि जन्मों के पापों से मुक्त हो जायगा ॥ ६८८ ॥

भरत ने जो कुछ कहा, शत्रुघ्न ने पालन किया। नन्दीग्राम देवलोक सा बन गया। राम के खड़ाऊँ सिर पर धर कर भरत अपने सैकड़ों

रामेर पादुका शिरे करिया भरत ※ चलिलेन सामन्त-सहित शत-शत
पादुकार उपरे धरिल छत्रदंड ※ चाम ढुलाय ताय, आनन्द अखंड
प्रतिपद क्षेपेते करेन नमस्कार ※ भरत आनिते रामे सानन्द अपार
नारद बशिष्ठ चले कुल-पुरोहित ※ संसारेर लोक चले हये आनन्दित
मुद्रित हइल दोला नेतेर उयाड़े ※ सातशत सतीने कौशल्या देबी नड़े
ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य शूद्र चारिवर्ण ※ श्रीरामे देखिते लोक चलिल अगण्य
ऊर्ध्ववासे धाइया चलिल गर्भवती ※ लज्जा-भय त्यजि जाय कुलेर जुवती
काणा खोंड़ा शिशु बुड़ा लये अन्यजने ※ अन्धजन चक्षु पाय श्रीराम दर्शने
अनेक ब्राह्मण चले, अनेक ब्राह्मणी ※ ताहादेर घरे नाहि रहे एक प्राणी
अबधूत सन्यासी चलिल ऊर्द्धमुखे ※ नपुंसक चलिल, जे अन्तःपुर राखे
गाछे पाखी ना रहे, ना रहे पशु बने ※ स्थाबर जंगम कीट चलिल सघने
भूत प्रेत पिशाच जे थाके अन्तरीक्षे ※ रामेरे देखिते जाय, केह नाहि थाके
तेरशत बृहन्दे बाहिर हैल पथे ※ भरत श्रीरामचन्द्रे ना पान देखिते ६८९
भरत बलेन, हे, चंचल हनूमान ※ जत किछु बलिला, हइल सब आन
हनूमान बलेन, ना हओ उतरोल ※ गोमतीर पारे शुन कटकेर रोल

सामन्तों के साथ चल पड़े। खड़ाऊँ के ऊपर छत्र और दंड लगाये गये और चँवर डुलाये जाने लगे। अखंड आनन्द विराजने लगा। चलते हुए प्रति पग पर भरत नमस्कार करने लगे, अपार आनन्द से भरत राम को लेने के लिए चल पड़े। कुल-पुरोहित वशिष्ठ और नारद भी साथ चले। सभी पुरवासी लोग भी आनन्द से चलने लगे। डोलियाँ नेत (सूक्ष्म वस्त्र) के परदों से ढक दी गईं, अपनी सात सौ सौतों के साथ कौशिल्या चल पड़ीं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्णों के अनगिनत लोग श्रीराम को देखने चल पड़े। गर्भवती नारियाँ भी बेतहाशा दौड़ कर चलीं। लोक-लाज और भय त्याग कुलनारी भी चल पड़ी। काने, लंगड़े, बच्चे, बूढ़े इन्हें लेकर दूसरे लोग चले। श्रीराम के दर्शन से अन्धे को आँखें मिल गईं। बहुत से ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ भी चल पड़ीं। उन लोगों के घरों में एक भी प्राणी नहीं रुके। अवधूत संन्यासी मुँह उठाकर दौड़े अन्तःपुर का रक्षक नपुंसक भी चल पड़ा। न वृक्षों पर पक्षी रहे और न वनों में पशु। स्थावर जंगम कीट भी सवेग चले। अन्तरिक्ष में रहनेवाले भूत, प्रेत, पिशाच भी अपने स्थान छोड़ राम को देखने चल पड़े। तेरह सौ महलों के निवासी पथ पर निकल आए, भरत श्रीरामचन्द्र को नहीं देख सके ॥ ६८९ ॥

भरत ने कहा, हे चंचल हनुमान, जो कुछ तुमने कहा वह सभी झूठा पड़ता जा रहा है। हनुमान ने कहा, व्याकुल मत होओ, गोमती के

भरद्वाज-मुनिर वरेते विद्यमान ❋ शुष्कगाछे फल-फुल, लह एइ दान
ओइ देख रथखान आसिछे आकाशे ❋ ब्रह्मार रचित रथ बहे राजहंसे
कि कब रथेर कथा अपूर्व्व काहिनी ❋ उहार उपरे सैन्य सत्तर अक्षौहिणी
तीन कोटि राक्षस सहित विभीषण ❋ एक कोने रथेर रयेछे तुष्टमन
रथखान देख सबे ढाकिछे गगन ❋ ढाकिल सूर्य्येर तेज रथेर किरण६९०
एमत उभये हय कथोपकथन ❋ हेनकाले रथ लये आसिल पवन
भरते देखिया राम हलेन कातर ❋ अस्थि-चर्म्म-सार अति क्षीण कलेवर
चलिया आसिते पद उखड़िया पड़े ❋ हनूमान कोले करि रथे गिया चड़े
रथोपरि चारि भाये हैल दरशन ❋ चतुर्द्दश वत्सरान्ते देन आलिंगन
प्रेमे पूर्ण, आनन्दे बहिछे अश्रुधार ❋ श्रीरामेरे भरत करेन नमस्कार
जानकीरे प्रणिपात करेन भरत ❋ आशीर्व्वाद जानकी करेन शत-शत
ज्येष्ठ ज्ञाने भरत लक्ष्मणे नाहि वन्दे ❋ परस्पर कोलाकुलि परम आनन्दे
तिनेर अनुज बटे वीर शत्रुघन ❋ चारि भाइ एकवारे कैला आलिंगन
एक बिष्णु चारि अंश मायार कारण ❋ देवगण वले, पाछे हय वा मिलन

अन्य तट पर सेना का कलरव सुनाई पड़ रहा है। भरद्वाज मुनि के वर से सूखे पेड़ों पर भी फल-फूल आ गये हैं, वह देखो आकाश में रथ आ रहा है। ब्रह्मा द्वारा निर्मित रथ राजहंस चला रहे हैं। रथ की बात क्या बखानूँ, उस पर सत्तर अक्षौहिनी सेना बैठी हुई है। तीन करोड़ राक्षसों के साथ विभीषण रथ के एक कोने में तुष्ट बैठा है। देखो, रथ आकाश को तथा सूर्य की किरणों को ढाँपे ले रहा है ॥ ६९० ॥

दोनों में ऐसी बातचीत होने लगी। ऐसे ही समय रथ लेकर पवन आ पहुँचा। भरत को देखकर राम बड़े व्याकुल हो गये। भरत के हाड़-पंजर निकल आए हैं और वे बड़े दुबले हो गये हैं। चलने में उनके पैर बारबार लड़खड़ा जाते हैं। हनुमान ने उन्हें गोद में ले लिया और रथ पर चढ़ गये। रथ के ऊपर चारों भाइयों में भेंट हो गई, चौदह वर्षों के बाद सब एक दूसरे से गले मिले। प्रेम से गद्गद हो गये, आनन्द के आँसुओं की धारा बहने लगी। भरत ने श्रीराम को नमस्कार किया और जानकी को प्रणाम किया। जानकी ने सैकड़ों आशीर्वाद दिये। ज्येष्ठ होने के कारण भरत ने लक्ष्मण को प्रणाम नहीं किया दोनों बड़े आनन्द से गले मिले। वीर शत्रुघ्न तीनों के ही अनुज हैं इसलिए चारों भाइयों ने एक ही बार में उनका आलिंगन किया। वे चारों एक ही विष्णु के अंश हैं जो माया के कारण चार रूपों में हो गये हैं। देवगणों को शंका हुई कि कहीं एक ही में न मिल जायें। एक स्थान पर चारों भाइयों में मिलन हुआ तो आनन्द से सारे देवताओं ने फूल

एकठाँइ चारि भाये हइल मिलन * आनन्दे अमर करे पुष्प बरिषण
श्रीराम बशिष्ठ गुरु करेन बन्दन * सबारे बन्देन राम कुलेर ब्राह्मण६९१
पुत्रशोके कौशल्यार अस्थिचर्म्म सार * राम-राम बिना ताँर मुखे नाहि आर
सुमित्रार नेत्रे बारि झरे झर-झर * सर्ब्बदा कान्दिछे बलि 'राम रघुवर'
हेनकाले सीता सह श्रीराम लक्ष्मण * रथ हैते नामि एल जननी-सदन
माता बिमातारे राम करेन प्रणाम * आशीर्ब्बाद करे चिरजीबी हओ राम
अन्धेर नयन जेन हय पुनर्ब्बार * सेइरूप आनन्द सतिनी दुजनार६९२
पुलके पूर्णित हये कान्दे दुइ राणी * दुइजने प्रणमिला सीता ठाकुराणी
कान्देन सुमित्रा राणी सीता लये कोले* तिनजने तितिलेन नयनेर जले६९३
सुमित्रार आगे राम जोड़हाते कन * एइ लह माता, तब प्राणेर लक्ष्मण
बनेते गमन आमि कैनु जेइकाले * हाते हाते लक्ष्मणेरे सँपि दियाछिले
प्राणेर दोसर मम लक्ष्मण जे भाइ * लक्ष्मणेर गुणे बने दुःख जानि नाइ
पितृसत्य पालिया आइनु देशे फिरे * तोमार लक्ष्मणे आनि दिलाम तोमारे
सुमित्रा बलेन, राम, कत कह आर * लक्ष्मण आमार नहे, जानिओ तोमार

बरसाये। श्रीराम ने गुरु बशिष्ठ को प्रणाम किया और कुल के सारे ब्राह्मणों का वन्दन किया ॥ ६९१ ॥

पुत्रशोक से कौशिल्या हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गई थीं, उनके मुँह से सिवाय राम नाम के और कोई शब्द नहीं निकलता था। सुमित्रा के नयनों से झर-झर आँसू गिर रहे हैं और वे 'राम रघुवर' कहकर रो रही हैं। ऐसे ही समय सीता को साथ लिये श्रीराम-लक्ष्मण रथ से उतर कर जननी के पास आए। माता और बिमाता को राम ने प्रणाम किया। उन्होंने आशीर्वाद दिया—हे राम चिरंजीवी होओ। मानों अन्धों को फिर से नयन मिल गये हों, दोनों सौतों को ऐसा ही आनन्द प्राप्त हुआ ॥ ६९२ ॥

दोनों रानियाँ पुलक से भरकर रोने लगीं। दोनों को सीता जी ने प्रणाम किया। सीता को गोद में लेकर रानी सुमित्रा रोने लगी। तीनों आँसुओं से भीग गयीं ॥ ६९३ ॥

सुमित्रा के सम्मुख राम ने हाथ जोड़ कर कहा, माँ, अपने लक्ष्मण को लो। जिस समय मैं वन जा रहा था, तुमने लक्ष्मण को मेरे हाथों में सौंप दिया था। भाई लक्ष्मण मेरे प्राणों का साथी रहा। लक्ष्मण के गुण के कारण मुझको वन में कोई कष्ट न मिला। पिता का सत्य पालन कर देश लौट आया हूँ—तुम्हारा लक्ष्मण, मैं तुमको लौटाये देता हूँ। सुमित्रा ने कहा, राम यह तुम क्या कह रहे हो। लक्ष्मण मेरा नहीं है, यह जान लो कि वह तुम्हारा ही है। राम, मैं तुमसे एक बात पूछती हूँ, लक्ष्मण के

एक कथा राम, आमि जिज्ञासि तोमाके ※ केन ए शेलेर चिन्ह लक्ष्मणेर बुके
श्रीराम बलेन, माता, करि निवेदन ※ लंकापुरी-मध्ये हयेछिल महारण
रावणेर पुत्र इन्द्रजित नाम धरे ※ महाधनुर्द्धर सेइ भुवन-भितरे
ताहारे लक्ष्मण भाइ करे विनाशन ※ महाक्रोधे समरे आइल दशानन
महारणे लक्ष्मणेरे शक्ति प्रहारिल ※ सेइ शक्ति लक्ष्मणेर वक्षेते बाजिल
अचेतन हये भाइ पड़े रणस्थले ※ हइया व्याकुल आमि करिलाम कोले
हनूमान औषध आनिया तदन्तर ※ लक्ष्मणेर प्राणदान कैल वीरवर
अतएव एइ चिह्न शक्तिर प्रहार ※ से सब कहिते दुःख बाड़ये अपार
सुमित्रा बलेन, राम, शुनह बचन ※ शेलचिन्ह परे केन ना दिले चरण
जे पद-स्पर्शने स्वर्ण हैल काष्ठतरी ※ लक्ष्मणेर बुके केन नाहि दिले हरि
लक्ष्मणेर वर्ने स्वर्ण हइत मिलन ※ तबे शेल-चिह्न ना थाकित कदाचन ६९४
हेंट मुखे रहे राम हइया लज्जित ※ भरत पादुका आनि जोगाय त्वरित
सम्मुखेते राखिल पादुका दुइ पाट ※ रथ त्यजि रघुनाथ भूमे वहे बाट
भरत बलेन, गोसाइँ, करि निवेदन ※ महाव्रत करेछिनु पादुका-सेवन
व्रत सांग हैल मम तब आगमने ※ बारेक पादुका देह ओ रांगा चरणे

सीने पर यह शेल का दाग कैसा है। श्रीराम ने कहा, माँ, बताता हूँ। लंकापुरी में महायुद्ध हुआ था। रावण के पुत्र का नाम था इन्द्रजीत—वह संसार में महा धनुर्धर था। भाई लक्ष्मण ने उसका विनाश किया। महाक्रोध से रावण समर में आया और लक्ष्मण पर उसने शेल से प्रहार किया। वह शक्ति लक्ष्मण के सीने पर जा लगी। अचेतन होकर भाई लक्ष्मण रण-स्थल में गिर पड़े। व्याकुल होकर मैंने उन्हें गोद में ले लिया। इसके उपरान्त हनुमान ने औषध लाकर दिया। वीरवर ने लक्ष्मण के प्राण बचा लिये। यह दाग शेल के प्रहार से पड़ा है। यह सब कहते हुए क्लेश बढ़ता ही है। सुमित्रा बोली, राम, मेरी बात सुनो। तुमने शेल के चिन्ह पर अपना चरण क्यों नहीं रखा। जिन चरणों के स्पर्श से लकड़ी की नाव सोने की बन गई, उनको तुमने लक्ष्मण की छाती पर क्यों नहीं रख दिया। लक्ष्मण के शरीर का वर्ण और स्वर्ण घुलमिल जाता और शेल का चिह्न कतई न रह जाता ॥ ६९४ ॥

राम लज्जित होकर सिर झुकाये रहे। भरत ने आकर झट पादुका रख दी। सामने पादुका की जोड़ी रख दी गई तो रथ छोड़कर रघुनाथ भूमि पर उतर आए। भरत ने कहा, हे स्वामी, निवेदन करता हूँ कि मैंने पादुका-सेवा का महाव्रत ग्रहण किया था। तुम्हारे आने के साथ-साथ मेरा व्रत समाप्त हो गया। अपने लाल-लाल चरणों में यह पादुका पहन लो।

प्रजारा नोङाय माथा पादुका देखिये ❋ पादुका दिलेन पाये हरषित हये
राज्यखंडे जान राम परम हरिषे ❋लंकाकांड गाइल पंडित कृत्तिबासे६९५

श्री रामेर कैकेयी—सम्भाषण

आइल देशेते राम, आनन्द सबार ❋ शुनिल कैकेयी राणी शुभ-समाचार
अभिमाने कैकेयीर वारिपूर्ण आँखि ❋ कथा कि कबेन राम मा बलिया डाकि
जदि राम पूर्व्वमत करे सम्भाषण ❋ राखिब ए देह, नहे त्यजिब जीवन
एतेक भाबिया राणी हैल अधोमुख ❋ करेते राखिल एक बिषेर लड्डुक
जदि राम मा बलिया ना डाके आमारे❋त्यजिब ए पाप प्राण बिषपान करे६९६
एतबलि अभिमाने रहिलेन राणी ❋ अन्तरे जानिला ताहा राम रघुमणि
ब्यथित हइल प्राण बिमातार तरे ❋ अग्रेते चलिला राम कैकेयीर घरे६९७
धूलाय बसिया राणी बिरस-बदन ❋ हेनकाले राम गिया बन्दिला चरण
कैकेयीरे श्रीराम कहेन जोड़करे ❋ देशेते आइनु माता चौद्दबर्ष परे
अरण्ये पड़ियाछिनु अनेक प्रमादे ❋उद्धार हयेछि सबे तब आशीर्व्बादे६९८

प्रजा पादुका देखकर सिर झुकाने लगी, राम ने सहर्ष पादुका पहन ली। परम हर्ष से राम ने अपने राज्य में प्रवेश किया। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड का गायन किया ॥ ६९५ ॥

श्रीराम-कैकेयी-संभाषण

राम स्वदेश लौट आए हैं इससे सभी को अपार आनन्द हुआ। रानी कैकेयी ने यह शुभ-समाचार सुना। अभिमान से कैकेयी की आँखें आँसुओं से भर गईं। यदि राम माँ कहकर पुकारें तो मैं क्या कहूँगी। यदि राम पहले ही की तरह सम्भाषण न करेंगे तो यह शरीर त्याग दूँगी, प्राण छोड़ दूँगी। इतना सोचकर रानी मुँह लटकाये बैठी रही और हाथों में जहर का एक लड्डू रख लिया। अगर राम ने मुझे माँ कहकर नहीं पुकारा तो मैं यह विष खाकर पापी प्राण त्याग दूँगी ॥ ६९६ ॥

इतना कह कर रानी रूठ कर बैठी रही। राम ने हृदय में यह जान लिया। विमाता के लिए उनके प्राण व्यथित हो उठे। राम सबसे पहले कैकेयी के ही कक्ष की ओर चल पड़े ॥ ६९७ ॥

उदास चेहरा लिये रानी धूल में बैठी है। ऐसे ही समय राम ने जाकर उनके चरणों की वन्दना की। हाथ जोड़ कर राम ने कैकेयी से कहा, माँ चौदह वर्ष के बाद स्वदेश लौट आया हूँ। वन में बड़ी विपत्ति में फँस गया था, तुम्हारे आशीर्वाद से उन सब से उबर आया हूँ ॥ ६९८ ॥

लज्जाय कैकेयी कहिछेन रघुनाथे ❋ कोन दोषे दोषी आमि तोमार अग्रेते
बने गेले देवतार कार्यसिद्धि लागि ❋ आमारे करिले केन निमित्तेर भागी
तुमि गोलोकेर पति, जाने ए संसार ❋ अवतार हयेछ हरिते क्षिति-भार
संसारेर सार तुमि, के चिनिते पारे ❋ सूर्यवंश पवित्र तोमार अवतारे
अरि मारि देवतार वांछा पूराइलि ❋ आमार माथाय दिया कलंकेर डालि
वाछा राम, वलि तोरे आर एक कथा ❋ एत जे दितेछ दुःख जानिया बिमाता
चिरकाल भरत-अधिक स्नेह करि ❋ कुकथा वलिनु मुखे, तोमार चातुरी
सर्ब्बघटे स्थायी तुमि, सुख-दुःख-दाता ❋ एतेक दुर्गति कैले जानिया बिमाता ६९९
लज्जित हइया राम हेट कैल माथा ❋ जोड़हात करि राम कहिछेन कथा
कैकेयीरे तोषे राम बिनय-वचने ❋ तव दोष नाहि माता, दैव विड़म्बने
कालेते सकलि हय, बिधिर निर्ब्बन्ध ❋ तोमार प्रसादे वधिलाम दशस्कन्ध
तोमा हैते पाइलाम सुग्रीव सुमित ❋ संकटेते सुग्रीव करिल वड़ हित
तोमार प्रसादे करि सागर-बन्धन ❋ रावणे मारिया तुषिलाम देवगण
जानिलाम लक्ष्मणेर जतेक भकति ❋ जानिलाम सीतादेवी पतिव्रता सती

लज्जा से कैकेयी ने रघुनाथ से कहा, तुम्हारे सम्मुख मैं दोषी हूँ। देवताओं की कार्य-सिद्धि के लिए तुम वन गये और मुझको निमित्त का भागी वना गये। यह सारा संसार जानता है कि तुम गोलोक के पति हो, संसार का भार दूर करने के लिए अवतार लिये हुए हो। तुम संसार के सार हो। तुमको कौन पहचान सकता है। तुम्हारे अवतार लेने से सूर्यवंश पवित्र हो गया। शत्रु को मार कर देवताओं की अभिलाषा पूरी की और [इसके निमित्त] मेरे सिर पर सारा कलंक थोप गये [संकोच न किया]। बेटा राम, तुम जो मेरे को इतना दुःख पहुँचा रहे हो उसका कारण है कि मैं विमाता हूँ। सदा से तुमको भरत से अधिक स्नेह करती हूँ। तुमको जो कुबोल वोली सो तुम्हारी ही माया थी। तुम सर्व स्थानों में स्थित हो, सुख-दुख-दायक हो, तुमने जो मेरी इतनी दुर्दशा की वह केवल विमाता समझकर ही की ॥ ६९९ ॥

राम ने लज्जित होकर सिर झुका लिया। हाथ जोड़कर राम कहने लगे। विनय वचन से राम कैकेयी को प्रसन्न करने लगे। तुम्हारा कोई भी दोष नहीं है माँ, सभी कुछ दैव की विडम्बना है। समय पर सभी कुछ होता है, विधि का लेखा है। तुम्हारी ही कृपा से दशानन का वध किया। तुम्हारे ही कारण मुझको सुग्रीव जैसा मित्र मिला। संकट में सुग्रीव ने मेरा वड़ा उपकार किया। तुम्हारी ही कृपा से मैंने सागर वाँधा। रावण को मारकर देवताओं को तुष्ट किया। लक्ष्मण का सारा भक्तिभाव जानने को मिला। यह भी जान सका कि सीता पतिव्रता और सती है। माँ तुम्ही

तोमा हइते धर्म्माधर्म्म जानिलाम माता ❋ छलबाक्ये कैकेयी द्विगुण पाइल व्यथा
सबार आनन्द हैल राम-दरशने ❋ आनन्दे रहिल राम मातार भवने
केह नाचे केह गाय मनेर हरिषे ❋ लंकाकांड गाइल पंडितकृत्तिबासे ७००

श्रीरामेर राज्याभिषेक

बाहिर चौताराय राम करेन देओयान ❋ छत्रिश कोटि सेनापति दांडाय प्रधान
सबाकारे आसन जोगाय शीघ्रगति ❋ बसिल छत्रिश कोटि श्रेष्ठ सेनापति
भरते करान राम सैन्य-परिचय ❋ देखह सुग्रीबराज सूर्य्येर तनय
युवराज अंगद जे बालिर कुमार ❋ सुग्रीब दिलेन जारे सर्ब्ब अधिकार
देखह गबाक्ष गय से गन्धमादन ❋ महेन्द्र देबेन्द्र देख सुषेण-नन्दन
ऋषभ कुमुद देख पनस सम्पाति ❋ नल नील देख एइ मुख्य सेनापति
ऐ देख सुषेण ओ मंत्री जाम्बबान ❋ औषधे ओ मंत्रणाते दोंहे सावधान
एइ देख हनूमान पवन-नन्दन ❋ जाहार बिक्रमे मारिलाम दशानन
इहार गुणेर कथा कि कब बिशेष ❋ हनूमान करियाछे सीतार उद्देश
हनूमान आमार सकल कार्य्ये दड़ ❋ चारि भाइ हैते मम हनूमान बड़
ऐ देख लंकेश्वर मित्र बिभीषण ❋ जाहार मंत्रणा गुणे मरिल रावण

से मैं धर्म-अधर्म, सभी कुछ जान सका। व्याजस्तुति पूर्ण ये वाक्य सुनकर कैकेयी को दुगुनी व्यथा मिली। सभी को राम के दर्शन से आनन्द प्राप्त हुआ। राम आनन्द से माँ के भवन में रहे। हर्ष से कोई नाचने लगा तो कोई गाने लगा। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड का गायन किया ॥ ७०० ॥

श्रीराम का राज्याभिषेक

बाहर चबूतरे पर राम ने सभा की। छत्तीस करोड़ प्रधान सेनापति खड़े हो गये। सभी को झटपट आसन दिया गया। छत्तीस करोड़ श्रेष्ठ सेनापति बैठ गये। राम, भरत से सेना का परिचय देने लगे। वह देखो सूर्य का तनय राजा सुग्रीव है। वह देखो बालि का पुत्र अंगद है जिसे सुग्रीव ने सारा अधिकार दे रखा है। वह देखो गवाक्ष, गय और गन्धमादन हैं। महेन्द्र, देवेन्द्र और सुषेणनन्दन को देखो। ऋषभ, कुमुद और पनस, सम्पाति को देखो। मुख्य सेनापति नल और नील को देखो। वह देखो सुषेण है जो कि औषध और मंत्रणा में कुशल हैं, और यह मंत्री जाम्बवान है। यह हैं पवननन्दन हनुमान जिनके प्रताप से मैंने दशानन का वध किया। इनके गुण को मैं क्या बखानूँ, इन्होंने ही सीता को खोज निकाला था। मेरा यह हनुमान सारे कार्यों में कुशल है। यह हनुमान मेरे लिए चारों भाइयों से भी अधिक बड़ा है। वह देखो लंका के राजा मित्र विभीषण हैं जिनके

कहिलेन रघुनाथ जार जत गुण ※ सर्व्वलोके ताँर पाने चाहे पुनः पुनः
राक्षस-वानर सब धरे नाना माया ※रामेर इंगिते तारा धरे नर-काया७०१
भरत बलेन, साक्षी हओ सर्व्वजन ※ प्रभुर चरणे आमि करि निवेदन
भरत प्रणाम करि रामेर चरणे ※ जोड़हाते बलेन सबार विद्यमाने
स्थाप्य धन मम ठाँइ आछे पितृराज्य ※ तोमार आज्ञाते करियाछि राजकार्य्य
आज्ञा कर, राज्य लह, बैस सिंहासने ※ सेवा करि थाकि राम सीतार चरणे
महाराज्य राखिते आमार शक्ति नहे ※ केशरीर विक्रम शृगाले कोथा वहे
सबलेर बोझा कि दुर्ब्बले निते पारे ※ महाराज्य महावीर पारे राखिबारे
अद्य हैते राज्यभार आमारे ना लागे ※ क्रमागत राज्य राम, भुंज जुगे-जुगे७०२
भरतेर कथा शुनि श्रीराम हासिया ※ भरते करेन कोले बाहु पसारिया
भरत बलेन पुनः विनय-वचन ※ भरतेर प्रति राम कहेन तखन
तव ब्यबहारे भाइ, हइलाम वश ※ पृथिवी जुड़िया तब घुषिबेक जश७०३
जानाइल गणके उत्तम तिथि-बार ※ काटिते माथार जटा हइल सबार
चारि भाइ बसिलेन कांचनेर खाटे ※ शुभक्षणे नापित शिरेर जटा काटे

परामर्श से ही रावण की मृत्यु हो सकी। रघुनाथ ने जिसका गुण बखाना लोग उसी की ओर बार-बार देखने लगे। राक्षस और वानर लोग अनेक प्रकार की माया के जानने वाले थे, इसलिए राम के इशारे से सभी ने मनुष्य की काया धारण कर ली ॥ ७०१ ॥

भरत ने कहा, तुम सभी लोग साक्षी रहो। प्रभु के चरणों में मैं निवेदन करता हूँ, ऐसा कहकर चरणों में भरत ने प्रणाम किया। फिर सभी लोगों की उपस्थिति में हाथ जोड़कर कहने लगे, मेरे पास पिता का राज्य धरोहर के रूप में है। तुम्हारी आज्ञा से मैं राजकार्य चलाता रहा। अब आज्ञा दो, अपना राज्य स्वीकार करो और सिंहासन पर बैठ जाओ। मैं राम-सीता की सेवा करने हेतु रह जाऊँ। इस महान् राज्य को रखने की शक्ति मुझमें कहाँ है। सिंह का पराक्रम सियार में कहाँ होगा। बलवान का बोझ दुर्बल कैसे ढो सकता है। महाराज्य की रक्षा केवल महावीर ही कर सकता है। आज से राज्यभार मुझ पर न रहा। हे राम, तुम युग-युग तक इस राज्य का भोग करो ॥ ७०२ ॥

भरत की बात सुनकर राम ने हँसकर और बाँह पसार कर भरत को गले लगा लिया। भरत ने फिर विनय-वचन कहे। तब राम ने भरत से कहा, भाई, तुम्हारे आचरण से मैं तुम्हारे वशीभूत हो गया। संसार भर में तुम्हारा यश प्रसिद्ध होगा ॥ ७०३ ॥

ज्योतिषियों ने उत्तम तिथि लग्न बतायी। सभी को अपनी जटाएँ कटानी पड़ीं। चारों भाई स्वर्ण के पलँग पर बैठे और शुभघड़ी में

जटा-जूट मुंडन करिया सुबिधान ※ सुबासित गंगाजले कराइल स्नान
अत:पर करिया बल्कल बिसर्ज्जन ※ करिलेन परिधान विचित्र बसन
जानकीरे स्नान कराइला जत राणी ※ बैकुंठ हइते लक्ष्मी आइला आपनि
करेछिला रामचन्द्र जेमत आचार ※ बल्कल परिया सब आछिल संसार
अजोध्यार मनुष्य तपस्वि-बेशधारी ※ परिल बसन से बल्कल परिहरि
श्रीरामेर दु:खे लोक छिल सब दु:खी ※ ताँहार सुखेते लोक हइलेक सुखी
आनन्दे कौशल्या देबी करिला रन्धन ※ चारि भाइ करिलेन अमृत-भोजन
जज्ञस्थाने सीतादेबी गेलेन आपनि ※ भोजन करिल सैन्य सत्तर अक्षौहिणी
सुखे गेल बिभाबरी हइल प्रभात ※ आइल सकल लोक रामेर साक्षात७०४
श्रीराम भूपति हन गिया अजोध्याय ※ बासना करिया सबे चलिल तथाय
चलिल रामेर संगे हाती घोड़ा चड़ि ※ देखिबारे स्त्री-पुरुष आइल रड़ारड़ि
जे जेमन भावे छिल, सेइ भावे धाय ※ बृद्ध काणा खोंड़ा शिशु केह नाहि रय
काणा खोंड़ा धरिया त आने अन्यजने ※ सर्ब्ब दु:ख घुचे तार राम दरशने
ऊर्द्धश्वासे धाइया आइसे गर्भवती ※ लज्जा परिहरि सबे आइसे जुबती
कि करिबे स्वामी, कि करिबे धने-जने ※ सर्ब्बपाप घुचिबेक राम दरशने

नाई ने सिर की जटाएँ काट डालीं। जटाजूट काट कर मुंडित करके विधिपूर्वक सुगन्धित गंगाजल से उनको नहलाया गया। इसके बाद पेड़ के वल्कलों को उतार कर विचित्र (दिव्य) वस्त्र पहन लिये। जानकी को सभी रानियों ने नहलाया। बैकुंठ से स्वयं लक्ष्मी चली आईं। रामचन्द्र स्वयं जिस प्रकार रहते थे सभी लोग उसी प्रकार रहते थे। सारा संसार वल्कल पहने हुए था। अयोध्या के निवासी तपस्वी का वेश धारण किये हुए थे। वल्कल छोड़कर सब लोगों ने वस्त्र पहन लिये। श्रीराम के दु:ख से जितने लोग दुखी थे वे सभी उनके सुख से सुखी हुए। देवी कौशल्या ने आनन्द से भोजन राँधा। चारों भाइयों ने अमृत समान भोजन किया। यज्ञस्थल पर सीतादेवी स्वयं गईं। सत्तर अक्षौहिणी सेना ने भोजन किया। रात सुख से बीत गई, सवेरा हुआ और सभी लोग राम से मिलने चले आये ॥ ७०४ ॥

अयोध्या में राम राजा बन रहे हैं। सभी लोग यही वासना लिये वहाँ के लिए चल पड़े। हाथी, घोड़े पर सवार हो वे राम के दर्शन के लिए चल पड़े। देखने के लिए नर-नारी दौड़ते हुये आये। जो जिस दशा में था उसी दशा में दौड़ पड़ा। बूढ़ा, काना, लंगड़ा, बच्चा कोई भी पीछे नहीं रहा। अन्धे लूले को तो लोग सहारा देकर ले आते और राम के दर्शन से उनका सारा दु:ख दूर हो जाता। गर्भवती नारी बेतहाशा भागती हुई आतीं, युवती नारी लज्जा और भय त्याग कर चली आतीं। भला पति से क्या होगा और धन-जन से भी क्या होगा, सारा पाप राम के दर्शन से दूर हो

चल सबे, देखि गिया रामेर बदन ※ जुड़ाइबे नयन, सुतृप्त हबे मन
मातंग छत्रिश कोटि आइल दन्ताल ※ बानर छत्रिश कोटि बिक्रमे बिशाल
हाती घोड़ा चड़ि सबे अजोध्याय जाय ※ शुष्क वृक्षे फल फुल छिड़ि सबे खाय५
सुमंत्र जोगाय रथ जय-जय-नादे ※ रथोपरि चारि भाइ दिव्य परिच्छदे
धरेन भरत तबे अश्व-कड़ियाली ※ चामर ढुलाय श्री लक्ष्मण महाबली
शत्रुघ्न रामेर गाये करेन ब्यजन ※ चारि अंशे बिराजित रथे नारायण
दुई दिके सर्ब्ब लोक राम-पाने चाहे ※ श्रीरामेर जत गुण शत मुखे कहे
बहुपुण्ये पाइ प्रभु, तोमा हेन राजा ※ जन्मे जन्मे रघुनाथ करि तब पूजा
सर्ब्बलोक मुग्ध हय करिया दर्शन ※ सर्ब्बक्षण हेरि येन तब चन्द्रानन
हेरिया रामेर रूप भुबन-मोहन ※ पुर वनितार मन मजिल नयन
श्रीरामेर मन नहे, अन्येर जेमन ※ जे मन सीतार प्रति, के पाय से मन
जथा राम, तथा सीता, शोभे दुइजन ※ अन्य-पाने श्रीराम ना चान कदाचन
सीतार सौभाग्य, तारा बलिया अन्तरे ※ आपना निन्दिया सबे गेल घरे-घरे
घरे गिया नारीजने प्राण नहे स्थिर ※ अजोध्याय प्रवेश करेन रघुबीर
भरतेर प्रति राम करेन आदेश ※ कटक रहिते स्थान करह उद्देश

जायगा। चलो, सभी लोग चलकर राम का मुख देखें, उससे नैन शीतल हो जाएँगे और मन प्रसन्न होगा। दाँत वाले छत्तीस करोड़ हाथी आये। अति पराक्रमी छत्तीस करोड़ वानर आये। हाथी, घोड़े पर सवार होकर सभी अयोध्या को चल पड़े। सूखे पेड़ों से फल-फूल तोड़ते खाते, सब चलने लगे ॥ ७०५ ॥

जय-जय की ध्वनि करते हुए सुमन्त्र रथ लेकर आया। रथ पर चारों भाई दिव्य-वस्त्र पहन कर बैठे। भरत ने घोड़े के गले की कौड़ियों की बनी पट्टी थाम ली। महावली लक्ष्मण चँवर डुलाने लगे। शत्रुघ्न राम के शरीर पर पंखा झलने लगे। अपने चारों अंशों में नारायण विराजने लगे। दोनों ओर सारे लोग राम की ओर देखते रहे। श्रीराम के सारे गुणों को बढ़-चढ़ कर बखानते हुए कहने लगे, हे प्रभु, बड़े पुण्य से तुम जैसा राजा मिला है। हे रघुनाथ, हम लोग जन्म-जन्म तुम्हारी पूजा करते रहें। सभी लोग राम का दर्शन कर मुग्ध हो गये, सारा समय वे उनके चन्द्रानन को ही देखते रहे। राम का भुवनमोहन रूप देखकर पुर-वनिताओं का मन मुग्ध हो गया। श्रीराम का मन दूसरों के मन जैसा नहीं। जो मन सीता में रमा हुआ हो उसको दूसरा कौन पा सकता है। जहाँ राम हैं, वहीं सीता हैं, दोनों शोभा पा रहे हैं। श्रीराम कभी दूसरी ओर नहीं देखते। सभी नारियाँ मन में यह कहती हुई कि यह सीता का सौभाग्य है, अपनों को कोसती हुई अपने-अपने घर चली गयीं। घर जाकर भी नारियों के प्राण शान्त नहीं हुए। रघुवीर ने अयोध्या में प्रवेश किया। राम ने भरत को आदेश दिया कि

पाइया रामेर आज्ञा भरत सत्वर * करिलेन निर्द्दिष्ट छत्रिश कोटि घर
एकबृन्द आओयास से देखिते रूपस * चाले शोभा करितेछे रत्नेर कलस
रत्नमय घरखान धरे नाना ज्योति * एइ घरे रहुक सुग्रीव नरपति
आर जे आवास देख निर्मल-कांचन * तिनकोटि राक्षसे रहुक बिभीषण
देख एइ घरे मणि-माणिक्य प्रस्तर * रहुक सैन्येर सह बालिर कोङर
आर जे आबास देख मुकुता-गठनि * एइखाने हनूमान थाकुक आपनि
सिन्धुनद-तीरे आर सरजूर तीरे * एतदूर चापि बैसे राक्षसे बानरे
सिन्धुनद सरजूते चल्लिश जोजन * एतदूर ब्यापिया रहिल सैन्यगण
स्वर्णखाटे शुइल बानर शज्या तले * देबकन्या लइया बसिल कुतूहले ६
कहेन भरत गिया सुग्रीबेर घर * कालि छत्र दंड धरिबेन रघुबर
पुनर्ब्बसु नक्षत्र ओ पूर्ण चैत्र मास * श्रीराम हबेन राजा, आजि अधिबास
अन्य द्रब्य आनिब से कोन कार्ज्य गणि * आनिते नारिब चारि सागरेर पानी
दिलाम चारिटि रत्न निर्म्मित कलसी * चारि सागरेर जल आन, नहे बासि
सातशत नदी आछे पृथिबी-मंडले * श्रीरामेर अभिषेक हबे सेइ जले
सातशत स्वर्णकुंभ दिनु तब ठाँइ * सकल नदीर जल कालि जेन पाइ ७

सेना के रहने के स्थान की व्यवस्था करो। राम की आज्ञा पाकर भरत ने झटपट छत्तीस करोड़ घर निश्चित कर दिये। एक पंक्ति में बने आवास देखने में बड़े ही सुन्दर थे जिनकी छतों पर रत्न के कलश शोभायमान हो रहे थे। वे बोले, यह रत्नमय घर विभिन्न ज्योतियों से पूर्ण है, इसी घर में नरपति सुग्रीव रहें। निर्मल कांचन का बना दूसरा घर देखो, तीन करोड़ राक्षसों के साथ उसमें विभीषण रहें। इस घर में देखो मणि-माणिक्य बहुतायत से लगे हैं, इसमें बालि का बेटा अंगद अपनी सेना के साथ रहे। और मोती के आकार का जो आवास देख रहे हो वहाँ हनुमान स्वयं रहे। सिन्धुनद के तट से लेकर सरयू के तट तक की भूमि पर राक्षस और वानर डट कर जम गये। सिन्धुनद और सरयू में चालीस योजन का फासला है, इतनी दूर तक सेना फैली पड़ी रही। वानर सोने के पलंग पर लेटा और विस्तर पर देवकन्या को गोद में लेकर कौतूहल से बैठा ॥ ७०६ ॥

सुग्रीव के निवास में जाकर भरत ने कहा, कल रघुवर छत्र-दंड धारण करेंगे। चैत का महीना है और पुनर्वसु नक्षत्र का योग है। श्रीराम राजा होंगे, आज अधिवास है। दूसरे सारे द्रव्य मैं लेता आऊँगा—वह कोई बड़ा काम नहीं है लेकिन चार समुद्रों का जल मैं नहीं ला सकूँगा। रत्न-निर्मित चार घड़े दे रहा हूँ। चार समुद्रों का ताजा जल लाओ—बासी नहीं। पृथ्वीमंडल में सात सौ नदियाँ हैं, श्रीराम का अभिषेक उसी जल से होगा। सात सौ स्वर्णकुंभ तुमको दे रहा हूँ, कलतक सब नदियों का जल मिल जाये ॥ ७०७ ॥

सुग्रीव बानर-पाने चाहे कटाक्षेते ※ धाइया बानर सैन्य कुम्भ निल हाते
राजा बले, सागरेर जले चिन्ह आछे ※ नालि-जुलि जल भाँडाओ जे पाछेद
पाठाइला सुग्रीब बानर चतुर्भित ※ अधिबास रामेर करेन पुरोहित
बशिष्ट नारद-मुनि करेन बेदध्वनि ※ अखिल भुबने 'रामजय' शब्द शुनि
राम-सीता दुइजने कहेन काहिनी ※ आर एकदिन प्रभु, छिलाम एमनि
शुनिया सीतार कथा श्रीरामेर हास ※ मधुर बचने ताँरे करेन सम्भाष
पूर्ब्बदिने राम-सीता छिलेन संयत ※ परदिन राम राजा हन शास्त्रमत१०
प्रभात हईल, पूर्ब्बदिकेर प्रकाश ※ बानर कलसी हाते उठिल आकाश
अग्नि हेन उड़ि जाय नील जे बानर ※ चक्षुर निमिषे गेल से पूर्ब्ब सागर
अजोध्या सागर-पूर्ब्ब चारि-श योजन ※ राम-तेजे नील-बीर गेल ततक्षण
कलसी भरिया राख सागरेर घाटे ※ चिन्ह चाहि नीलबीर भ्रमे तार तटे
रक्त-चन्दनेर डाल दिलेक ढाकनि ※ सुग्रीबेर काछे राखे प्रभात-रजनी११
जाम्बवान तार बाक्ये साहसे करि भर※ चक्षुर निमिषे गेल पश्चिम सागर
अजोध्या पश्चिम सिन्धु आट-श जोजन※ श्रीरामेर तेजेते से गेल ततक्षण

सुग्रीव ने वानरों की ओर कटाक्ष से देखा। वानर-सेना ने दौड़ कर हाथों में घड़े ले लिये। राजा ने कहा, समुद्र के जल में अपने लक्षण हैं, कहीं नहर या गढ़ैया का पानी लाकर धोखा देने की कोशिश न करना ॥ ७०८ ॥

सुग्रीव ने चारों दिशाओं में वानरों को भेजा। पुरोहित राम का अधिवास कराने लगे। वशिष्ठ और नारद मुनि वेदमंत्र पाठ करने लगे। अखिल ब्रह्मांड में 'राम-जय' का शब्द गूँजने लगा। राम और सीता दोनों उपवास से रहे और सारी नगरी जागती रही ॥ ७०९ ॥

राम-सीता दोनों बातें करने लगे। एक दिन और था जब प्रभु ! हमलोग इसी प्रकार रहे। सीता की बात सुनकर राम हँसने लगे। मधुर वचनों से उससे बोलने लगे। पूर्व दिन राम और सीता संयम से रहे और अगले दिन राम शास्त्रानुसार राजा बन गये ॥ ७१० ॥

सबेरा हुआ, पूरब की दिशा में प्रकाश हो गया। वानर घड़ों को हाथ में लिए गगन पर चढ़ गये। वानर नील अग्नि के समान उड़ चला और पलक झँपते ही वह पूर्वी सागर पर पहुँच गया। अयोध्या और पूर्वी सागर में चार सौ योजन की दूरी है। राम के प्रताप से नीलवीर उतनी देर में पहुँच गया। घड़ा भर कर उसने समुद्र-तट पर रख दिया और निशानी के लिए किनारे भटकने लगा। रक्त-चन्दन के वृक्ष की टहनी से उसने घड़े को ढक दिया और ले जाकर सवेरा होते ही सुग्रीव के सम्मुख रख दिया ॥ ७११ ॥

उसके वाक्य से साहस पाकर जाम्बवान आँखों के झपकते ही पश्चिम-सागर जा पहुँचा। अयोध्या और पश्चिम-सिन्धु में आठ सौ योजन की दूरी

राखिल कलसी भरि सागरेर पाड़े ❋ चिन्ह अन्वेषिया बुड़ा भ्रमे उभरड़े
देबदारु डाल भांगि आच्छादिल पानि ❋राखिल सुग्रीब-काछे प्रभात-रजनी१२
दक्षिण-सागरे गेल नल महाबीर ❋ जेखाने से बाँधियाछे समुद्र गभीर
दक्षिण-सागर पाँच शत जे जोजन ❋ श्रीरामेर तेजे नल गेल ततक्षण
नले देखि सागरेर उड़िल जीवन ❋ आर बार नलबीर एल कि कारण
सागरेर त्रास देखि नले हइल हास ❋ हासिया सागर-प्रति करिछे आश्वास
छिलाम रामेर संगे, तेंइ मम बल ❋ कार शक्ति बान्धिबारे पारे तब जल
श्रीराम हबेन राजा अजोध्या-नगरे ❋ जल-हेतु आसियाछि तोमार सागरे
मने तोलापाड़ा करे नल महाबल ❋ रत्नकुम्भे भरिलेन सागरेर जल
कलसी भरिया राखे सेतुर उपरे ❋ चिन्ह चाहि नलबीर भ्रमे तीरे-तीरे
सम्मुखे देखिल गाछ धबल चन्दन ❋ डाल भांगि जलोपरि दिल आच्छादन
श्वेत-चन्दनेर डाले आच्छादिल पानि ❋ सुग्रीबेर काछे राखे प्रभात-रजनी१३
उत्तर-सागर-पथ हाजार जोजन ❋ कोन बीर जाइबे भाबिछे मने-मन
श्रीराम सुग्रीब दोंहे करे अनुमान ❋ हाते कुम्भ आकाशे उठिल हनूमान
शों शों शब्दे जाय बीर बायु करि भर❋ उपाड़े लेजेर टाने पादप-प्रस्तर

है। श्रीराम के पराक्रम से वह उतनी देर में पहुँच गया। सागर के किनारे घड़ा भर कर रखने के बाद बूढ़ा जाम्बवान् चिह्न ढूँढ़ता हुआ घूमने लगा। देवदारु की डाली तोड़कर उसने पानी को ढक लिया और रात समाप्त होते ही होते सुग्रीव के पास लाकर रख दिया॥ ७१२॥

महावीर नल दक्षिणसागर में गया जहाँ उसने सेतु बाँधा था। दक्षिण-सागर पाँच सौ योजन दूर है। श्रीराम के पराक्रम से वह उतनी देर में पहुँच गया। नल को देखकर समुद्र के प्राण सूख गये। फिर यह नलवीर किस कारण आ गया। सागर का त्रास देखकर नल को हँसी आ गई। हँस कर उसने सागर को ढाढ़स बँधाया। मैं राम के साथ था तभी मुझमें इतनी शक्ति थी, वर्ना तुम्हारे जल को कौन बाँध सकता है। अयोध्या नगरी में श्रीराम राजा होंगे, जल लेने के लिए तुम्हारे पास आया हूँ। महाबली नल मन में उथल-पुथल लिये समुद्र का जल भरने लगा। रत्नकुंभ में समुद्र का जल भर कर उसने सेतु के ऊपर घड़ा रख दिया और तट पर चिह्न के लिए घूमने लगा। सामने उसने श्वेतचन्दन का वृक्ष देखा तो डाली तोड़ कर पानी को ढक कर सुग्रीव के सम्मुख प्रभात होते ही लाकर रख दिया॥ ७१३॥

उत्तरी समुद्र का पथ हजार योजन है। मन ही मन सब सोच रहे हैं कि कौन सा वीर जायगा। श्रीराम और सुग्रीव दोनों ने अनुमान लगाया, और हाथ में कुम्भ लेकर हनुमान आकाश में उड़ गया। वायु पर सवार होकर वीर साँय-साँय शब्द से चलने लगा। पूँछ के प्रहार से पेड़-पत्थर उखड़ आये।

आकाशे उठिया गाछ जले-स्थले पड़े ※ वन्धु अनुर्बज्जि जेन बान्धब बाहुड़े
पवन-गमने जाय पवन-नन्दन ※ मुहूर्त्तेर मध्ये गेल हाजार जोजन
कलसी भरिया राखे सागरेर पाड़े ※ चिन्ह चाहि हनूमान भ्रमे उभरड़े
चन्दनेर डाल ताहे दिलेक ढाकनि ※ सुग्रीवेर काछे राखे प्रभात रजनी
सबाकार पाछे गेल बीर हनूमान ※ आइल लइया जल सर्ब्ब-आगुयान १४
शरभ गबाक्ष गय ओ गन्धमादन ※ केशरी कुमुद आर सुषेण-नन्दन
महेन्द्र देबेन्द्र आर बानर पनस ※ आनिल तीर्थेर जल हाजार कलस १५
सीता-सह श्रीराम बैसेन सिंहासने ※ अभिषेक करिल सुग्रीब-बिभीषणे
स्वर्ग-मर्त्त्य-पातालेते दु-राजा संचरे ※ दुई राजा छत्र धरे रामेर उपरे
पृथिबीते जत राजा आछे चतुर्भित ※ श्रीरामेर अभिषेके द्वारे उपस्थित
स्वर्गलोक मर्त्त्यलोक आइल पाताल ※ अजोध्याय त्रिभुवन हइल मिशाल
रहिबार स्थान नाहि, सैन्य-कलकलि ※ नाना शब्दे बाद्य बाजे आर करतालि
चारिभिते चामर ढुलाय राजगण ※ रामेर सम्मुखे स्थित भाइ तिनजन १६
बिरिंचि बलेन, नाहि जाब राम स्थान ※ देबकन्यागण गिया करुक कल्याण
देबता तेत्रिश कोटि रहे अन्तरीक्षे ※ देबकन्यागण गेल रामेर सम्मुखे

ये पेड़ आकाश में चढ़कर यों जल-स्थल पर गिरने लगे ज्यों मित्रगण मित्र को विदा करने कुछ दूर साथ जाकर फिर लौट आते हैं। पवन-नन्दन पवन-गति से चले और क्षणभर में हजार योजन पार कर गये। घड़ा भर कर उन्होंने समुद्रतट पर रखा और चिह्न के लिए इधर-उधर घूमने लगे। चन्दन की टहनी तोड़ कर उसको ढक दिया और प्रात: होते ही सुग्रीव के सम्मुख लाकर रख दिया। वीर हनुमान सबसे बाद में गया और पानी लेकर सबसे पहले आ गया ॥ ७१४ ॥

शरभ, गवाक्ष, गय, गन्धमादन, केशरी, कुमुद, सुषेण-नन्दन, महेन्द्र, देवेन्द्र, पनस आदि वानर हजार घड़े तीर्थों का जल ले आये ॥ ७१५ ॥

सीता के साथ श्रीराम सिंहासन पर बैठ गये। सुग्रीव और विभीषण ने उनका अभिषेक किया। दो राजा स्वर्ग-मर्त्य-पाताल में संचरण करते रहते हैं—दोनों राजा राम के ऊपर छत्र थामे रहे। संसार में चारों ओर जितने राजा थे सभी श्रीराम के अभिषेक के समय द्वार पर आ पहुँचे। स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और पाताललोक से सब आये—और अयोध्या में तीनों लोक घुल-मिल गये। रहने का कोई ठौर न बचा, सेना की कलकल ध्वनि से मुखरित है। विभिन्न शब्दों वाले बाजे और ताली के शब्द सुनाई पड़ने लगे। चारों ओर सारे राजा चँवर डुलाने लगे और राम के सम्मुख तीनों भाई खड़े रहे ॥७१६॥

विरिंचि ने कहा, मैं राम के स्थान पर नहीं जाऊंगा। देवकन्याएँ जाकर उनका कल्याण करें। तैंतीस करोड़ देवता अन्तरिक्ष में रहे और देवकन्याएँ

कृत्तिवास-कबिर कबित्व सुधाभांड ❋ 'राम राजा' गाइलेन गीत-लंकाकांड७१७
रति सती हैमबती, लीलाबती भानुमती, इत्यादि अनेक देब रामा।
आइलेन अजोध्याय, दास-दासी संगे जाय, बसने-भूषणे निरुपमा॥
हाते ल'ये दूर्ब्बा-धान, रामेर सम्मुखे जान, श्रीरामेर करिते कल्याण।
जय जय रघुबीर, पति हओ पृथिबीर, पृथिबीते तव गुणगान॥
पृथिबीते जन्म निला, नरलीला प्रकाशिला, तुमि लक्ष्मीपति नारायण।
कि करिब आशीर्ब्बाद, पूरिल मनेर साध, करिलाम तव दरशन॥
आसिया किन्नरीगणे, अभिषेक निमंत्रणे, करिल रामेर गुण-गान।
बिद्याधर बिद्याधरी, आसिया अजोध्यापुरी, नृत्य-गीत बाद्येर बिधान॥
जत राजा प्रजागण, सकलि सानन्द मन, श्रीरामेर अभिषेक-दिने।
नाना अर्थ-बितरणे, तुषिला ब्राह्मणगणे, कृत्तिबास अभिषेक भणे॥ ७१८

सीता-राम-कर्त्तृक बानरगणके पुरस्कार-प्रदान

फेलिया दिलेन ब्रह्मा स्वर्णपद्म माला ❋ अलक्ष्ये करिल शोभा श्रीरामेर गला
स्वर्ण-मणि-माणिक्ये निर्म्मित दिब्य हार❋इन्द्र पाठाइया दिला आरो अलंकार

राम के सम्मुख आईं। कवि कृत्तिवास का कवित्व मानो सुधा का पात्र हो; उन्होंने लंकाकांड-गीत में 'राम-राजा' का गायन किया॥ ७१७॥

रति, सती, हेमवती, लीलावती, भानुमती आदि अनेक देवकन्याएँ अयोध्या में आईं। उनके साथ मनोरम वस्त्रों से सुसज्जित दास-दासियाँ भी आईं। हाथों में धान और दूब लेकर वे राम के सम्मुख श्रीराम के कल्याण के लिए गईं। हे रघुवीर! तुम्हारी जय हो, तुम पृथ्वी के पति बनो, पृथ्वी में तुम्हारा गुण गाया जाय। तुम लक्ष्मीपति नारायण हो, पृथ्वी पर जन्म लेकर तुमने नरलीला दिखाई। मैं भला आशीर्वाद क्या दूँ, तुम्हारा दर्शन कर लिया इसी से हम लोगों के मन की साध पूरी हो गई। किन्नरियाँ अभिषेक-निमंत्रण में आकर राम का गुणगान करने लगीं। विद्याधर और विद्याधरियाँ अयोध्यापुरी में आकर नृत्य, गीत और वादन की व्यवस्था में जुट गईं। जितने राजा और प्रजा हैं, सभी राम के अभिषेक-दिवस पर आनन्दपूर्ण हैं। तरह-तरह के धन के वितरण द्वारा ब्राह्मणों को तुष्ट किया गया। कृत्तिवास ने अभिषेक का बखान किया॥ ७१८॥

सीता-राम द्वारा वानरों को पुरस्कार प्रदान

अदृश्यरूप से ब्रह्मा ने स्वर्ण-कमलों की माला आकाश से फेंकी, जो श्रीराम के गले की शोभा बढ़ाने लगी। इन्द्र ने स्वर्ण-मणि-माणिक्य से बना हुआ दिव्य हार आदि अलंकार भेजे। नाना प्रकार के मणि-माणिक्य, पारस-पत्थर से

नानाबिध मणि-मुक्ता परश पाथर ❋ कुबेरेर हार शोभे कंठेर उपर
देबतार भूषणेते ह'ये विभूषित ❋ राम राजा हइलेन जगते पूजित
श्रीरामेर अभिषेक शुने जेई नरे ❋ ऐहिक सम्पद बाड़े, परलोके भरे७१९
कोटि कोटि द्विज जाय श्रीरामेर स्थान ❋ जाहार जे अभिलाष, ताहा पाय दान
ग्राम भूमि स्वर्ण दान करेन श्रीराम ❋ विमुख ना हय केह, सबे पूर्णकाम
पूर्ण चैत्र मास, पुनर्ब्बसु सुनक्षत्र ❋ शुभक्षणे श्रीराम धरेन दंड-छत्र
स्वर्ण-पद्म-माला गले सूर्य्य सम ज्वले ❋ से माला दिलेन राम सुग्रीबेर गले
अंगदेर काछे राम छिलेन लज्जित ❋ अपूर्ब्ब भूषणे तारे करेन भूषित
छत्रिश कोटि सेना पाय श्रीरामेर दान ❋ अभिमाने नीरब रहिला हनूमान
श्रीरामेर दानेते सकले हैल सुखी ❋ हनूमान केबल मुदिल दुइ आँखि
अपराध कि करिनु प्रभुर चरणे ❋ सबारे तोषेन, मोरे ना तोषेन केने२०
बाहिर करेन सीता आपनार हार ❋ कि कब ताहार मूल्य भुबनेर सार
से हार देखिया सबे चाहे परस्पर ❋ नाना रत्न मणि ताहे परश पाथर
बड़ बड़ सेनापति परस्पर चाय ❋ ना जानि सीतार हार कोनजन पाय२१
हाते हार करि सीता राम-पाने चान ❋ अभिप्राय मने, इहा कारे देन दान

बना कुबेर का हार कंठ में शोभा देने लगा। देवताओं के आभूषण से सज्जित हो राजा राम संसार में पूजित हुये। जिस मनुष्य ने भी श्रीराम के अभिषेक के बारे में सुना उसी की पार्थिव सम्पदा बढ़ी और परलोक बन गया॥ ७१९ ॥

करोड़ों ब्राह्मण श्रीराम के पास चल पड़े। जिसको जिस किसी वस्तु की अभिलाषा है उसको वही दान में मिलता। श्रीराम गाँव, भूमि, स्वर्ण आदि दान करते रहे, किसी को भी निराश नहीं होना पड़ा, सभी की मनोकामना पूरी हुई। चैत का महीना और पुनर्वसु नक्षत्र का योग, शुभघड़ी पर श्रीराम ने दंड-छत्र को धारण किया। गले में स्वर्ण-कमल की माला सूर्य सी चमचमा रही है। वह माला निकाल कर राम ने सुग्रीव के गले में डाल दी। अंगद के सम्मुख श्रीराम ने लज्जित होकर उसको अनोखे आभूषणों से भूषित किया। छत्तीस करोड़ सेना को राम के दान मिले। हनुमान रूठ कर चुप बने रहे। श्रीराम के दान से सभी सुखी हुए, केवल हनुमान ने दोनों आँखें मूँद लीं। मैंने कौन ऐसा अपराध किया कि प्रभु सबको तुष्ट कर रहे हैं किन्तु मुझे नहीं॥ ७२० ॥

सीता ने अपना हार निकाल लिया। उसका मूल्य क्या कहा जाय, भुवन में वह अनमोल वस्तु थी। वह हार देखकर सब लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे। उसमें तरह-तरह के मणि और रत्न जड़े हैं और पारस पत्थर भी हैं। बड़े-बड़े सेनापति एक दूसरे को देखने लगे। जाने किस व्यक्ति को सीता का यह हार मिल जाय॥ ७२१ ॥

यह हार किसको दिया जाय, इस अभिप्राय से हाथों में हार लेकर सीता

बुझिया श्रीराम तार करेन बिधान ❊ जारे तव इच्छा जाय, तारे कर दान
अनुद्देश समयेते उद्देश जे करे ❊ मरेछिनु सबे, प्राण दिल बारे-बारे
एमत बुझिया सीता, हार कर दान ❊ कोनजन ना करिबे इथे अभिमान
जानकी हनूर पाने चान बारे-बार ❊ धेये गिया हनूमान गले परे हार
मारुतिर गले शोभे जानकीर हार ❊ प्रणमिल हनूमान चरणे सीतार
सीता बले जतकाल थाकिबे पृथिबी ❊ रोग-शोक-हीन तुमि हओ चिरजीबी
जाबत् थाकिबे चन्द्र-सूर्य्येर प्रचार ❊ जाबत् रामेर नाम घुषिबे संसार
तत काल हओ तुमि अक्षय अमर ❊ हनूमान तोमारे दिलाम एइ बर
राम-नाम-प्रसंग हइबे जेइ स्थाने ❊ जथा-तथा थाक तुमि, आसिबे सेखाने७२२

हनूमानेर वक्षो-बिदारण ओ अस्थिमध्ये राम-नाम-प्रदर्शन

हासिते हासिते हनू हार लये हाते ❊ छिन्न-भिन्न करे हार चिबाइया दाँते
देखिया हनूर कर्म्म हासेन लक्ष्मण ❊ कुपित रहस्य- भाबे बलेन तखन७२३
लक्ष्मण बलेन, प्रभु, करि निबेदन ❊ मारुतिर गले हार दिला कि कारण
सहजे बानर गण्य पशुर मिशाले ❊ रत्न-हार दिले केन बानरेर गले७२४

राम की ओर देखने लगीं—यह समझ कर राम ने अपना मत सुना दिया—जिसे जी चाहे तुम दे दो। जब कहीं कोई पता नहीं चल रहा था, तब जिसने सब पता लगाया, जब हम सब मर चुके थे उस समय जिसने हम सबको बार-बार प्राण दिये—ऐसा समझ-बूझ कर सीता इस हार को तुम दान करो—इससे किसी का भी मन छोटा नहीं होगा। जानकी बार-बार हनुमान की ओर देखने लगीं। दौड़कर हनुमान जानकी के पास पहुँच गये और गले में हार पहन लिया। मारुति के गले में हार शोभित होने लगा। सीता के चरणों में हनुमान ने प्रणाम किया। सीता ने कहा, जितने दिन तक यह पृथ्वी रहेगी—तुम रोग-शोक से रहित हो चिरजीवी बने रहो। जब तक चन्द्र-सूर्य रहेगा, जब तक राम का नाम संसार में घोषित होता रहेगा उतने दिनों तक तुम अक्षय अमर बने रहोगे। हनुमान, तुमको मैं यह वर देती हूँ। जिस किसी स्थान पर राम के नाम का प्रसंग होगा—चाहे तुम कहीं भी रहो, वहीं पहुँच जाओगे ॥ ७२२ ॥

हनुमान का वक्ष चीरकर हड्डियों में राम-नाम का प्रदर्शन

हाथों में हार लेकर हनुमान ने हँसते-हँसते उसको दाँतों से चबाकर तोड़ डाला। हनुमान का यह कार्य देखकर लक्ष्मण हँसने लगे। वह कोप से मर्म भरे शब्दों में बोले ॥ ७२३ ॥

हे प्रभु, निवेदन करता हूँ कि हनुमान के गले में तुमने यह हार क्यों

श्रीराम बलेन, शुन, प्राणेर लक्ष्मण ❊ कि हेतु छिंड़िल हार पवन-नन्दन
इहार बृत्तान्त हनूमान भाल जाने ❊ जिज्ञासह हनूमाने सभा-विद्यमाने२५
हनूमान बले, शुन ठाकुर लक्ष्मण ❊ बहुमूल्य हार बलि करिनु ग्रहण
देखिलाम बिचार करिया तार परे ❊ राम-नाम नाहि एइ हारेर भितरे
राम-नाम-हीन जाहा, एमन जे धन ❊ परित्याग करा भाल, नाहि प्रयोजन२६
लक्ष्मण बलेन, शुन पवन-कुमार ❊ राम-नाम-चिन्ह नाहि देहेते तोमार
तबे केन मिथ्या देह करेछ धारण ❊ कलेबर त्याग कर पवन-नन्दन२७
एतेक शुनिया तबे पवन-कुमार ❊ नखे चिरि बक्षस्थल करिल बिदार
सभामध्ये देखाइल बिदारिया बक्ष ❊ अस्थिमय राम-नाम लेखा लक्ष-लक्ष
देखिया सभार लोक हैल चमकित ❊ अधोमुखे रहिलेन लक्ष्मण लज्जित२८
लक्ष्मण बलेन, शुन बीर हनूमान ❊ श्रीरामेर भक्त नाहि तोमार समान
तोमारे जानेन राम, रामे जान तुमि ❊ तव महिमार सीमा कि जानिब आमि
हनूमान बले, आमि बनेर बानर ❊ रामेर दासानुदास तोमार नफर
शुनिया हनूर कथा श्रीरामेर हास ❊लंकाकांडे गाइल पंडित कृत्तिबास७२९

दिया ? ये वानर स्वाभाविक रूप से पशुओं में गिने जाते हैं। यह रत्न-हार वानर के गले में क्यों दिया ? ॥ ७२४ ॥

श्रीराम ने कहा, हे प्राणों के समान लक्ष्मण सुनो। पवननन्दन ने हार क्यों तोड़ डाला इसका विवरण हनुमान ही भलीभाँति जानते हैं—सारी सभा के सम्मुख हनुमान से ही पूछ लो ॥ ७२५ ॥

हनुमान ने कहा, हे महाराजा लक्ष्मण सुनिए—अनमोल समझकर मैंने यह हार ले लिया। फिर बाद में विचार कर देखा, इस हार में राम का नाम नहीं है। ऐसा धन जिसमें राम का नाम न हो उसको त्याग देना ही उचित है, उसकी कोई आवश्यकता नहीं ॥ ७२६ ॥

लक्ष्मण ने कहा, हे पवनकुमार सुनो, तुम्हारे शरीर पर राम का नाम नहीं। तब क्यों नाहक यह शरीर धारण किये हुए हो। हे पवननन्दन, यह कलेवर त्याग दो ॥ ७२७ ॥

पवनकुमार ने इतना सुना तो नाखून से सीना चीर कर उसको सामने कर दिया। सभा के भीतर वक्ष चीर कर उसने दिखाया कि सारी हड्डियों पर लाख-लाख राम नाम लिखे हैं। सभा के सारे लोग यह देखकर आश्चर्य करने लगे और लक्ष्मण ने लज्जित होकर सिर झुका लिया ॥ ७२८ ॥

लक्ष्मण ने कहा, हे वीर हनुमान, सुनो। तुम्हारे समान श्रीराम का कोई दूसरा भक्त नहीं। तुम राम को जानते हो और राम तुमको जानते हैं। तुम्हारी महिमा का ओर-छोर भला मैं क्या जानूँ। हनुमान ने कहा, मैं वन का वानर हूँ, राम का दासानुदास और तुम्हारा चाकर हूँ। हनुमान की बात पर राम हँस पड़े। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड का गायन किया ॥ ७२६ ॥

बानर-भोजन ओ बिभीषणादिर स्वदेश-गमन

बिभीषणे कन राम करिया आदर ※ आजि हैते तुमि मम भाइ सहोदर
चारि भाइ छिनु मोरा, हैनु पंचजन ※ पंचजन मिलि राज्य करिब पालन७३०
दान भिक्षा दिया सबे कर परिहार ※ दाने शून्य कैल जत रामेर भांडार
सीता ठाकुरानी गिया करिला रन्धन ※ चारि भाइ एक ठाँइ करिला भोजन
हनूमाने अन्न देन सीता ठाकुराणी ※ कपिगणे अन्न देन जतेक रमणी
अन्न दिया जान सीता आनिते ब्यंजन ※ शुधु अन्न खाय सब पबन-नन्दन
शून्य पात्रे ब्यंजन केमने दिबे पाते ※ ब्यंजन लइया फिरे जान देबी सीते
पुनर्ब्बार देन अन्न आनिया हनूके ※ ब्यंजन आनिते अन्न खेये बसे थाके
एइरूपे यातायात तिन चारि बार ※ देखिया सीतार मने लागे चमत्कार
सीता भाबे, आमि किछु बुझिते ना पारि ※ बिश्वेर पालने अन्नपूर्णा नाम धरि
दृष्टे सृष्टि पूर्ण करि नाना उपहारे ※ अन्न दिते हारिलाम बनेर बानरे
बुझिते ना पारि आमि एइ कोन् जन ※ स्वर्णथाल फेलि कैला हस्त-प्रक्षालन
ध्यान जोगे मा जानकी देखिला सत्वर ※ बानर-रूपेते अबतीर्ण गंगाधर
कपिरूपे बसेछेन कैलासेर पति ※ उदर पूराते पारे काहार शकति
ऊर्द्धमुखे अर्घ्य बिना ना पुरे उदर ※ एतेक भाबिया सीता चलिल सत्वर

वानर-भोजन और विभीषण आदि का स्वदेशगमन

विभीषण से राम ने स्नेहपूर्वक कहा, आज से तुम मेरे सहोदर भाई हो। हम चार भाई थे, अब पाँच हो गये। पाँचों मिलकर राज्य पालन करेंगे ॥७३०॥

दान देकर सबको बिदा करो। दान से राम का सारा भंडार सूना कर दिया गया। सीताजी ने जाकर खाना पकाया। चारों भाईयों ने मिलकर एक स्थान पर भोजन किया। हनुमान को सीताजी खाना देने लगीं। अन्य वानरों को बाकी अन्य रमणियाँ खाना देने लगीं। अन्न देकर सीता व्यंजन लाने गईं तो पवननन्दन ने भात ही खा डाला। सूने पात्र पर कैसे व्यंजन दिया जाय, यह सोचकर सीता अन्न लाने लौट गईं। पुनः लाकर उसको अन्न दिया और व्यंजन लेने गईं तो वह अन्न खाकर बैठा रहा। इस प्रकार तीन-चार बार आने-जाने के बाद सीता आश्चर्य करने लगीं, मैं कुछ भी समझ नहीं पा रही हूँ। विश्व का पालन करती हुई मैं अन्नपूर्णा नाम रखती हूँ। केवल मात्र दर्शन से सारी सृष्टि को पूर्ण कर देती हूँ और वन के वानर को मैं अन्न देने में हार गई। समझ में नहीं आता कि यह कौन है। स्वर्ण-थाली अलग फेंककर सीता ने हाथ धो लिया और ध्यानयोग से माँ जानकी ने देखा कि वानर का रूप लेकर स्वयं गंगाधर बैठे हैं। कपि का रूप अपनाये स्वयं कैलाशपति बैठे हैं। उनका पेट भर सके, ऐसी शक्ति

गोपनेते गिया माता हनूर पश्चाते ※ 'नमः शिवाय' बलि अन्न दिला माथे
हासिया सम्मुखे आसि कहेन बचन ※ कत अन्न हनूमान, करिया भोजन
मस्तक फुटिया अन्न उपरे उठिल ※ हनूमान बले, माता, परिपूर्ण हैल ३१
आचमन कैला गिया पवन-कुमार ※ सीतार चरणे हनु कैल परिहार
आमि कि जानिब माता, तोमार महिमा ※ ब्रह्मा, बिष्णु महेश्वर नाहि जाने सीमा
तोमार महिमा माता, कि बलिते जानि ※ बिष्णुर प्रकृति तुमि लक्ष्मी ठाकुराणी ३२
एतेक शुनिया सीता हरषित मन ※ सबारे बिदाय राम दिलेन तखन
राक्षसे-बानरे राम दिलेन मेलानि ※ गाहिया रामेर गुण चलिल तखनि
लता-पाता खेत कपि, परित काछटि ※ श्रीरामेर प्रसादे कोंचार परिपाटी
केमने रामेर सब गुण पासरिब ※ आर कबे श्रीरामेर चरण हेरिब ३३
एइरूप सर्ब्बत्र करिया सुबिहित ※ चारि भाइ राज्य करे जगते पूजित
करेन अजुत बर्ष लोकेर पालन ※ ज्येष्ठ-सत्त्वे कनिष्ठेर नाहिक मरण
राम-राज्ये केह कारे नाहि करे हिंसा ※ जत राजगण करे रामेर प्रशंसा
राम-राज्ये शोक नाहि जाने कोनजना ※ 'राम-राज्य' बलि लोके हइल घोषणा ३४

किसमें है। उर्ध्वमुख अर्घ्य के बिना उनका उदर भर नहीं सकता। इतना सोचकर सीता झटपट चल पड़ीं। माँ जानकी चुपके से हनुमान के पीछे जाकर 'नमः शिवाय' कहकर उसके सिर पर अन्न रख दिया। हँसकर सामने आकर कहने लगीं, हनुमान तुमने कितना अन्न खा लिया कि सिर फोड़कर निकलने लगा है। हनुमान ने कहा, माँ पेट भर गया ॥ ७३१ ॥

पवनकुमार ने जाकर आचमन किया। सीता के चरणों में हनुमान ने निवेदन किया, मैं तुम्हारी महिमा भला कैसे जानूँ माँ, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर भी उसकी टोह नहीं लगा सकते। माँ तुम्हारी महिमा मैं क्या कह सकता हूँ, तुम विष्णु की प्रकृति हो, लक्ष्मीजी हो ॥ ७३२ ॥

इतना सुनकर सीता प्रसन्न हो गईं। तब सब लोगों को राम ने बिदा कर दिया। राक्षसों और वानरों को राम ने बिदा दी, राम का गुण गाकर वे तुरन्त चल पड़े। ये कपि पेड़ की पत्तियाँ चबाते और लंगोट पहनते थे। श्रीराम की कृपा से अब वे कछाना मारकर धोती पहनते हैं। राम के गुणों को कैसे भूल सकता हूँ—जाने कब श्रीराम के चरणों का फिर दर्शन हो ॥ ७३३ ॥

इस प्रकार सब-कहीं उचित व्यवस्था कर चारों भाई संसार में पूजित होकर राज्य करने लगे। अयुत (१० हजार) वर्ष तक वे प्रजा-पालन करते रहे। राम के राज्य में ज्येष्ठ के रहते हुए कनिष्ठ की कभी मृत्यु नहीं हुई। राम-राज्य में कोई किसी से डाह नहीं करता था। सभी राजा राम की प्रशंसा करते थे। राम-राज्य में किसी को भी शोक का अनुभव नहीं हुआ। लोगों में 'राम-राज्य' की घोषणा हो गई ॥ ७३४ ॥

पात्र-मित्र-सह राम जुक्ति अनुमानि ❋ पुष्पक रथेरे तबे दिलेन मेलानि
कुबेरेर रथ तुमि, जाने सर्व्वजन ❋ कुबेरे जिनिया तोमा निलेक रावण
ताहाके मारिया तोमा करिनु उद्धार ❋ कुबेरे जानाओ गिया एइ परिहार३५
चलिल से रथखान श्रीराम-आदेशे ❋ चक्षुर निमिषे गेल पर्व्वत कैलासे
कुबेर बलेन रथ के दिल विदाय ❋ रावण लइल तोमा जिनिया आमाय
शुन बलि रथ, तोमा निल लंकेश्वर ❋ करिल कुकर्म्म कत तोमार उपर
रबे राम एकादश सहस्र बत्सर ❋ रामेर सेवाय कर शुद्ध कलेबर
श्रीराम करिबे जबे बैकुंठे-गमन ❋ फिरिया आमार काछे आसिओ तखन७३६
रथखान चलिल से कुबेर-आदेशे ❋ आइल रामेर काछे चक्षुर निमिषे
रथ बले, रघुनाथ, कर अबधान ❋ किछुकाल चरण-निकटे देह स्थान
रामेर आज्ञाय रथ रहिल तथाय ❋ सर्व्वक्षण श्रीरामेर दरशन पाय७३७
जे दु:ख पाइयाछिल राम गेले बने ❋ प्रजालोक पासरिल सदा दरशने
एइरूपे श्रीराम हइया आनन्दित ❋ राजत्व करेन तीन भ्रातार सहित
कृत्तिबास कबिर कबित्व सुधा-भांड ❋ एतदूरे समाप्त हइल लंका-कांड७३८

लंकाकांड समाप्त

पात्र-मित्रों से परामर्श कर राम ने पुष्पक रथ को बिदा कर दिया। सभी लोग जानते हैं कि तुम कुबेर के रथ हो, कुबेर को पराजित कर रावण ने तुमको ले लिया था। उसको मार कर मैंने तुमको मुक्त किया। कुबेर से जाकर मेरा यह निवेदन सूचित करना ॥ ७३५ ॥

श्रीराम की आज्ञा से वह रथ चल पड़ा। पलक झपकते वह कैलाश-पर्वत पर जा पहुँचा। कुबेर ने कहा, किसने यह रथ भेज दिया। रावण ने मुझको पराजित कर तुमको छीन लिया था। हे रथ, मेरी बात सुनो, तुमको लंकेश्वर ने लिया था, उसने तुम पर जाने कितने कुकर्म किये होंगे। राम ग्यारह हज़ार वर्ष रहेंगे—उनकी सेवा में अपने शरीर को शुद्ध-पवित्र कर डालो। श्रीराम जब वैकुंठ चले जाएँ गे तब तुम लौटकर मेरे पास चले आना ॥ ७३६ ॥

कुबेर की आज्ञा से वह रथ चल पड़ा, और पल भर में राम के पास आ गया। रथ ने कहा, रघुनाथ सुनो, कुछ दिनों तक अपने चरणों में स्थान दो। राम की आज्ञा से रथ वहीं रह गया। सदा उसको राम का दर्शन मिलता रहा ॥ ७३७ ॥

राम के वन चले जाने पर प्रजाओं को जो क्लेश मिला था राम के दर्शन से वे सब भूल गये। इस प्रकार से आनन्दित हो श्रीराम तीनों भाइयों के साथ राजकाज करने लगे। कवि कृत्तिवास का कवित्व अमृत भरे पात्र के समान है। इतनी दूर आकर लंकाकांड समाप्त हुआ ॥ ७३८ ॥

लंकाकांड समाप्त